राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

[illegible] द्वारा प्रकाशित

[illegible] तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
[illegible], हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
[illegible] विशिष्ट-ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक
[illegible], एम० ए०, डी० लिट्०
[illegible], राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर.

ग्रन्थाङ्क १०३

देवीचरित

प्रथम भाग

[illegible]
[illegible] राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
[illegible]

प्रधान-सम्पादकीय

हिन्दी और उसकी उपभाषाओं में राम तथा कृष्ण-चरित को आधार मानकर अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है और इधर शिव-चरित्र पर आधारित महाकाव्य भी लिखे गये हैं, परन्तु देवी के चरित पर आश्रित कोई भी महाकाव्य अभी तक प्रकाश में नहीं आया था। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य की अद्वितीय कृति मानी जायगी। यह ग्रन्थ मूलतः संस्कृत के देवीभागवत-पुराण पर आश्रित होकर भी अपनी पृथक् विशेषता रखता है। देवी द्वारा महिषासुरादि शत्रुओं का विनाश किये जाने के विविध वृत्तान्त तो इसमें दिये ही गये हैं, परन्तु इसके साथ ही लेखक ने उस दार्शनिक पृष्ठभूमि को भी दृष्टि में रखा है जिस पर उक्त कथानक अवलंबित है।

कवि-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता कविराजा ठाकुर श्री बुधसिंहजी राजस्थान के ही एक रत्न थे। उनका जन्म वि० सं० १८८६ में जोधपुर-राज्य के मोगड़ा-ग्राम में चारणों की सिंहढायच-शाखा में हुआ था। इनके पूर्वज मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़-राज्य में परमारवंशी शासकों के कृपापात्र रहे। उनको वहां महाराजाधिराज श्री हनवंतसिंहजी, श्री प्रतापसिंहजी एवं श्री महताबसिंहजी ने विविध प्रकार से सम्मानित किया और प्रथम श्रेणी के ताजीमी जागीरदारों में स्थान दिया। ठा० बुधसिंहजी को महाराजाधिराज श्री हनवंतसिंहजी ने कविराजा की उपाधि देकर उनकी कवित्व-शक्ति को सम्मान प्रदान किया।

विक्रमी सं० १९२९ में नरसिंहगढ़ नरेश महाराजा हनवन्तसिंहजी की सुपुत्री विजयकुंवर बाईजी का विवाह जोधपुर के महाराजकुमार जसवन्तसिंहजी से, कविराजा ठा० बुधसिंहजी की मध्यस्थता में सम्पन्न हुआ। फलस्वरूप बाईजी ने अपने पिताश्री से निवेदन कर, कविराजा को नरसिंहगढ़ से मांग कर जोधपुर में, अपने कामदार के रूप में नियुक्त किया। यद्यपि ये इस पद पर उनके जीवनपर्यन्त रहे, फिर भी इनका नरसिंहगढ़ राज्य से निरन्तर संपर्क बना रहा।

विक्रमी सं० १९४६ में महाराजाधिराज जसवन्तसिंहजी ने जोधपुर रियासत की ओर से इन्हें ताजीम एवं पैर में स्वर्णाभूषण प्रदान किया। नरसिंहगढ़ के महाराजा महताबसिंहजी के देवलोकवासी होने पर विक्रमी सं० १९५२ में ये 'रिजेन्सी' कौन्सिल के सदस्य रहे थे।

[illegible]

डा० [illegible] पिंगल तथा डिंगल-काव्य के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने संस्कृत-काव्यग्रन्थ 'देवीभागवत' का काव्यानुवाद ब्रजभाषा में किया जो काव्य-प्रेमियों के समक्ष है।

[illegible] की कवित्व-शक्ति इतनी प्रखर थी कि वे एक दिन में, ब्रजभाषा के लगभग दो सौ दोहे अथवा डिंगल के कई 'गीतों' की रचना कर देते थे। इनका प्रस्तुत विशाल ग्रन्थ 'देवीचरित' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन्होंने [illegible] वर्ष की अवस्था में ही सर्वप्रथम ईश्वर-भक्ति-विषयक एक 'गीत' की रचना [illegible] में की थी जो इनके फुटकर काव्य के अन्तर्गत संकलित है। इनके फुटकर काव्य में कुछ रचनाएँ भक्तिरस की हैं तथा वीररस की कविताओं में [illegible] राजा-महाराजाओं के शौर्य एवं औदार्य के प्रसंग वर्णित हैं। [illegible]-नरेश [illegible]सिंहजी के महाराजकुमार चैनसिंहजी, जो विक्रमी सं० [illegible] में (स्वातंत्र्य-संग्राम की प्रथम क्रान्ति सं० १९१४ के पूर्व) अंग्रेजी [illegible] के विरुद्ध रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए थे, इसी प्रसंग को लेकर [illegible] ने वीररस की सुन्दर काव्य-रचना की जिसमें युद्ध-वर्णन एवं [illegible] जनमानस की स्वतंत्रता की भावना का भव्य चित्रण हुआ है। [illegible] की यह काव्य-रचना निःसन्देह कवि के देश-प्रेम, राष्ट्रीयता [illegible] निर्भीकता की परिचायक है।

[illegible] विशेषताएँ

[illegible] स्वतंत्र प्रकृति के निर्भीक सत्यवक्ता, स्वामिभक्त तथा [illegible] पुरुष थे। उनमें इन कविजनोचित दुर्लभ गुणों के अतिरिक्त [illegible] का विशिष्ट गुण भी विद्यमान था। फलस्वरूप विभिन्न अवसरों [illegible] राजा-महाराजाओं द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया, जिसके प्रमाण [illegible] के पास उपलब्ध हैं। इनके रुचिवैचित्र्य का यह [illegible] के साथ-साथ योगाभ्यास, वैद्यक एवं स्वरोदय [illegible] में पारंगत था। ये प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में [illegible] (रुपये छोटे) घरेलू चिकित्सालय [illegible] उपचार किया जाता [illegible] है कि दीन-दुखियों के लिये भोजन [illegible] नहीं।

कविराजा ठा० बुधसिंहजी इस भौतिक संसार में रहते हुए भी इससे कितने निर्लिप्त थे, यह उनके जीवनकाल की एक प्रमुख घटना से स्वतः सिद्ध हो जाता है—'एक बार इनके अपने गांव मदौरा के घर में भयंकर आग लग गई। ऐसी स्थिति में ये अपने इसी स्वरचित ग्रन्थ 'देवीचरित' की पाण्डुलिपि को लेकर घर से बाहर निकल पड़े तथा सीधे अपने 'बाग' में चले गये, जहाँ 'करणीमाता' के चबूतरे पर बैठ कर काव्य-रचना में तल्लीन हो गये।' हजारों की सम्पत्ति को अपने समक्ष स्वाहा होते देखकर अनदेखी कर देना एवं उस ओर ध्यान तक नहीं देना, कविराजा की अद्भुत 'ईश्वर इच्छा प्रबल' की भावना, काव्यानुरागिता, धीरता एवं भौतिक निःस्वार्थता की द्योतक है जो वास्तव में स्तुत्य है।

देहावसान—

कविराजा ठा० बुधसिंहजी का देहावसान वि० सं० १९५८ में आश्विन शुक्ला नवमी को हुआ। इन्होंने अपने देहावसान का दिन एवं समय पहिले ही सूचित कर दिया था तथा ये अपने देहत्याग के एक मास पूर्व अन्नग्रहण करना छोड़ केवल गाय का दूध सेवन करने लगे थे। अन्त समय के पन्द्रह दिन पूर्व इन्होंने दूध भी त्याग दिया तथा केवल 'गंगाजल' ग्रहण करते हुए, योगाभ्यास एवं इष्ट (भक्ति) में लीन रहने लगे। अपने देहान्त के दस दिन पूर्व इन्होंने एक कठोर आदेश दिया कि उनके पास कोई स्वजन (पुत्र-पौत्र आदि तक) नहीं आवें।

इस अवधि में केवल एक अठारह वर्ष का स्वामिभक्त एवं विश्वसनीय सेवक—'विरदा दरोगा' उनकी इच्छानुसार निरन्तर उनकी सेवा में उपस्थित रहा। देहावसान से पूर्व ही इन्होंने अपने द्वादशकर्म का कार्यक्रम निश्चित कर दिया था, जिसमें हरिद्वार में अस्थि-विसर्जन तक का स्पष्ट उल्लेख है। वह लिपिबद्ध कार्यक्रम आज भी इनके पौत्र के पास सुरक्षित है। कविराजा के निर्देशानुसार 'मातमपोशी' का आयोजन नरसिंहगढ़-नगर के 'रघुनाथजी के मन्दिर' में किया गया, जिसमें तत्कालीन नरेश एवं राज्य के गण्य-मान्य व्यक्तियों ने परम्परानुसार भाग लिया।

वंश-परम्परा—

कविराजा के तीन पुत्र हुए थे, जिनमें से एक का देहान्त युवावस्था में ही हो गया था। इस घटना ने उनके हृदय पर चोट पहुँचाई, अतः वे सांसारिक मोह-माया से विरक्त होने लगे थे। इनके बड़े पुत्र पीरदानजी नरसिंहगढ़-नरेश

महाराजा अर्जुनसिंहजी एवं विक्रमसिंहजी के कृपापात्र रहे। इनके छोटे पुत्र शक्तिदानजी ग्राम में ही निवास करते थे। पीरदानजी के तीन पुत्र इस समय विद्यमान हैं जिनमें से सबसे बड़े नाथूसिंहजी तथा छोटे कुमेरसिंहजी (भू० पू० नरसिंहगढ राज्य) मध्यप्रदेश में अपने ग्राम मदौरा में निवास करते हैं तथा मध्य के पुत्र माधोसिंहजी राजस्थान-राज्य के जोधपुर-जिलान्तर्गत अपने मूल निवास स्थान-मोगड़ा ग्राम में ही रहते हैं। ये स्वयं विद्या-प्रेमी एवं अच्छे कवि हैं। शक्तिदानजी के पौत्र चैनसिंहजी हैं जो अपने (उक्त) ग्राम मदौरा में ही रहते हैं। आज भी इनके परिवार में प्रायः सभी व्यक्ति शिक्षित एवं विद्याप्रेमी हैं।

इस ग्रन्थ के संपादक पं० हुक्मचन्द चतुर्वेदी न केवल इस ग्रन्थ की भाषा से भली-भाँति परिचित हैं, अपितु संस्कृत के विद्वान् होने के कारण उनके लिये संस्कृत की देवीभागवत की परम्परा भी सुलभ रही है जिसको लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। श्री चतुर्वेदीजी स्वयं देवी के परमभक्त और साधना के रहस्यों में रुचि रखने वाले हैं। अतः उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में देवीतत्व की जो व्याख्या अपनी भूमिका में प्रस्तुत की है, वह बड़े महत्व की है। आशा है विद्वान् सम्पादक इस विषय को और अधिक विस्तार के साथ दूसरे भाग में प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने अनेक कठिनाइयों के होते हुये भी, जिस लगन और तत्परता के साथ इस ग्रंथ का सम्पादन कर, ठीक समय पर प्रेस में भेज दिया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी और विनयसागर ने जो परिश्रम किया है, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। कवि के जीवन-परिचय देने के लिये जो सामग्री देवीचरितकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंह चारण से हमें प्राप्त हुई है, उसके लिये उनके हम बहुत आभारी हैं। मोगड़ा-ग्राम निवासी डा० माधोसिंहजी के हम विशेष रूप से कृतज्ञ हैं, जिन्होंने यह ग्रन्थ हमें उपलब्ध कराया और लेखक की फुटकर अन्य कृतियों से भी परिचय कराया। श्री माधोसिंहजी देवीचरितकार कविराजा श्री बुधसिंहजी के पौत्र हैं और स्वयं अच्छे विद्वान और कवि हैं। मुझे खेद है कि वे अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इस ग्रंथ के संपादन का भार स्वयं नहीं स्वीकार कर सके। आशा है, उनकी विद्वता और अनुभव से प्रतिष्ठान को आगे लाभ प्राप्त होता रहेगा।

मार्गशीर्ष-अमावस्या वि० सं० २०२५.
जोधपुर

—फतहसिंह



कविराजा ठा० बुधसिंहजी

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना करते हुये

[ग्रन्थकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंहजी चारण के सौजन्य से प्राप्त]

विषयानुक्रम

प्रथम-स्कंध

द्वितीय-स्कंध

तृतीय-स्कंध

चतुर्थ स्कंध

छंद से छंद तक

भूमिका

स्वनामधन्य श्री बुद्धसिंहजी चारन द्वारा रचित 'देवीचरित' का आधार प्रधान-रूप से देवीभागवत है। प्रथम स्कंध के आरम्भ में ही कवि ने इस आभार को व्यक्त किया है :—

भाषा देवी भागवत, पावन कथा प्रवाय।
कहत सोई विस्तार कर, छन्द बन्द चित चाय ॥

किन्तु तीसरे स्कंध के अंत में कवि की निम्नलिखित स्वीकारोक्ति यह स्पष्ट करती है कि इस देवीचरित का एक मात्र आधार देवीभागवत ही नहीं है :—

कछु ऊक्त तुलसी कही, व्यास ऊक्त कछु बात।
जुद्ध कथा बरनी जिती, बालमीक बचनात ॥

इसका कारण भी स्पष्ट है। देवी-भागवत में राम का चरित संक्षेप में वर्णन किया गया है और वह भी इस प्रसंग में कि किष्किंधा में सीताहरण के पश्चात् नारदजी के उपदेश से श्री राम ने देवी-यज्ञ किया जिसके फल-स्वरूप वे समुद्र पर पुल बाँधने एवं रावण का वध करने में सफल हुए तथा अपहृत सीता को पुनः प्राप्त कर सके। किन्तु जन-जन में व्याप्त रामकथा का विस्तृत वर्णन देवीचरित के रचयिता को अभीष्ट था; अतएव बालमीकि-रामायण को आधार बनाने में कवि ने संकोच नहीं किया।

देवीचरित की शैली देवीभागवत तथा अन्य पुराणों के समान ही है। पुरातन प्रश्नोत्तर प्रणाली को ही अपनाया गया है। प्रश्नोत्तर प्रणाली आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में भी यत्र-तत्र रूपान्तर के साथ चलती है। गूढ़तम रहस्यों के उद्घाटन एवं शंकाओं के समाधान का यह व्यापक, सरल और सर्वग्राह्य तरीका है।

देवीचरित में कवि ने सर्वसाधारण की भाषा का प्रयोग किया है। यहां यह भी स्पष्ट हो जाता है कि देवीचरित देवीभागवत का अक्षरशः अनुवाद मात्र नहीं है। हृदयंगम करने के उद्देश्य से जहां देवीभागवत का अनुक्रम अपनाया गया है, वहां कवि ने जहां आवश्यक समझा है और विशेषतया कथा-प्रवाह को

बनाये रखने के लिये काट-छाँट, हेर-फेर भी की है; किन्तु साथ ही कवि ने यह सावधानी बरती है कि ये न्यूनतम हों।

देवी-भागवत में 'देवीमाहात्म्य' के स्कंध के अतिरिक्त बारह स्कंध ही हैं। देवीचरित में भी बारह स्कंध ही हैं। 'देवीमाहात्म्य' का पृथक् स्कंध नहीं है। प्रथम स्कंध में ही कवि ने संक्षेप में गणपति, सरस्वती तथा अपनी इष्टदेवी 'करणी देवी' की स्तुति कर देवी-चरित का समारम्भ किया है।

देवी-भागवत के समान देवीचरित में भी व्यास-जनमेजय तथा सूत-सौनकादिक की प्रश्नोत्तरी-रूप में कथा चलती है। न देवी-भागवत किस्से कहानियों का संग्रह मात्र है और इसीलिये न देवी-चरित ही। जितने कथानक एवं आख्यान-उपाख्यान हैं उन सब को हृदय की उन गुत्थियों को सुलझाने के लिये लाया गया है जिनमें मनीषी और विचारक बुद्धि-प्रस्फुटन काल से उलझते आये हैं।

सूत-सौनकादिक-संवाद व्यास-जनमेजय-संवाद के उद्धरण मात्र हैं। केवल वे संवाद व्यास-जनमेजय-संवाद के उद्धरण रूप में दिखाई नहीं देते जो स्वयं व्यासजी के जन्म तथा उनके जीवन से सम्बन्धित हैं। तत्त्व-निरूपण, सृष्टि-उत्पत्ति एवं कतिपय अत्यंत पुरातन आख्यान-उपाख्यान ऐसे हैं जो देवर्षि नारद के माध्यम द्वारा स्वयं ब्रह्मा से प्राप्त हुए हैं। इन सबका यथास्थान उल्लेख किया जायेगा।

द्वादश स्कंधों में विभिन्न आख्यान और उपाख्यान जो जहाँ तहाँ बिखरे हुए हैं, उनके संबंध में कुछ लिखने से पूर्व देवी, उसके स्वरूप एवम् उसके विभिन्न चरित्रों का जहाँ जहां प्रत्यक्ष उल्लेख हुआ है, उसका विवरण देना समीचीन होगा।

प्रथम स्कंध की निम्नलिखित पंक्तियाँ मनन-योग्य हैं :—

अविनाशी विभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप।
चेतन सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यक रूप॥ छं० २. स्कं० १
जुगल नाम इक जानीये, मङ्गल रूप महाँन।
भरम छांड जिय परम भज, नित्त लहहु निर्वान॥ छं० ३. स्कं० १

इसी स्कंध में व्यासजी द्वारा नारदजी से यह प्रश्न करने पर कि पुत्र-प्राप्ति के लिये मैं किस देवी या देवता की आराधना करूँ, उन्होंने जो ब्रह्मा-विष्णु

संवाद उद्धृत किया वह देवी की सर्वोच्च स्थिति के संबंध में अच्छा प्रकाश डालता है। विष्णु ने ब्रह्मा से कहा :

राजसी सक्ति लै तुम रचंत, सातुकि हम पालन अनुसरंत।
मृत्युंजय सक्ती सृष्टि माँहि, तामसी पाय संघरत ताहि ।। छं० ४८. स्कं० १
बिन सक्ति तुमहु हम शिव विशेस, लोकेश काज पावहि न लेस । छं० ४६. स्कं० १
भगवती कृपा कौ पाय भाव, पुन भये पूज्य ताही पसाव । छं० ५२. स्कं० १
सुनियै अज नाहिं न हम सुतंत्र, परियाय पिछानहु पारतंत्र । छं० ५४. स्कं० १

इसी स्कंध में एक प्रकरण और आया है जिसमें ब्रह्मा द्वारा प्रेरित वेदों ने आदिशक्ति देवी की स्तुति की जिससे ऐसा कुछ उपाय निकल आये कि विष्णु का कटा हुआ मस्तक फिर प्राप्त हो सके। कथा विवरण इस प्रकार है :—

एक बार ब्रह्मा, रुद्र आदि देवता यज्ञ अनुष्ठान करने के लिये विष्णु के पास मन्त्रणा के लिये गये। विष्णु कहीं अन्यत्र दैत्यों से दीर्घकालीन युद्ध से श्रांत हो धनुष का सहारा लेकर पद्मासन पर बैठे हुए निद्रा में निमग्न थे। सोये हुए व्यक्ति को जगाना अनाचार है अतएव उनकी निद्रा-भंग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। अंत में ब्रह्मा ने वम्रियों (दीमकों) से यह कहा कि तुम धनुष की डोरी खा डालो। डोरी काटने पर जो भयंकर ध्वनि होगी उससे विष्णु जाग जायेंगे। इससे एक अप्रत्याशित घटना घट गई। रस्सी के कटने पर धनुष की नोक से जिसका विष्णु सहारा लिये हुए थे उनका मस्तक कट कर समुद्र में जा गिरा। उस समय किंकर्तव्यविमूढ़ ब्रह्मा आदि देवताओं ने वेदों द्वारा उस देवी की स्तुति कराई जो :

जग-जननी माया रूप जोत, इहि सबहि जक्त तातै उदोत । छं० ८५. स्कं० १

देवी स्तुति से प्रसन्न हुई और यह आकाशवाणी हुई :—

कट्यौ सीस कोऊ कारना, देवन नहि तुम दोख। छं० १०६. स्कं० १
त्वष्टा हय सिर ताहि तें, जोरहु विष्णु जगाय।
सुफल होय कारज सकल, नीत रीत इहि न्याय ।। छं० ११२. स्कं० १

इसी स्कंध में देवी के संबंध में स्पष्ट उल्लेख वहाँ आता है कि जब मधुकैटभ के तप से प्रसन्न हो आकाशवाणी हुई और उन दानवों को यह वाञ्छित वर मिला :—

'वरदान देहु मोहि जक्त बीच, मुख मागै जब ही होय मीच'। छं०१३३. स्कं०१

इन्हीं मधुकैटभ से युद्ध करते करते जब विष्णु श्रांत हुए तो यह सोचने लगे कि ये दानव पराजित क्यों नहीं होते। उन्हें योगदृष्टि से यह ज्ञात हुआ कि वे देवी के वरदान प्राप्त हैं। उन्होंने तब देवी की भावनायुक्त आराधना की। देवी प्रकट हुई और मधुकैटभ को मारने की यह युक्ति बतलाई :—

आजानि भुजा जुध करहु ऊठ, अंगना बनहुँ मैं दुति अनूठ।
बरदान लेहु तुम कहहुँ बात, मति हरन करहु मैं अकसमात ॥ छं० १५९. स्कं० १
मुख तें जब लैहे माग मीच, बिन सीस करहु तुम जुद्ध बीच। छं० १६०. स्कं० १

अंत में देवी की बतलाई हुई युक्ति से विष्णु मधुकैटभ का सहार करने में सफल हुए।

द्वितीय स्कंध में व्यास, कौरव-पांडव, परीक्षित, जनमेजय आदि संबंधी जीवन-वृत्त का विवरण है। वैशम्पायन से भारत के श्रवण के पश्चात् भी जब जनमेजय का चित्त शांत नहीं हुआ तो व्यासजी ने उन्हें देवीभागवत सुनने के लिये प्रेरणा दी जिससे उनके चित्त का भ्रम मिटे। उन्होंने कहा :—

सुनें भागवत कथा सयानें, जिय संका मिट है हिय जानें। छं० ३१५. स्कं० २
सब पुरान को सार सुधासम, आद अंत सो लखहु अनुक्रम। छं० ३१६. स्कं० २

द्वितीय स्कंध में देवी संबंधी केवल इतना ही उल्लेख है।

तृतीय स्कंध में देवीचरित संबंधी निम्नलिखित आख्यान आये हैं :—

१. देवी के ब्रह्मा, विष्णु, महेश को दर्शन, उसके द्वारा आदेश एवं उनके द्वारा उसकी स्तुतियाँ।
२. देवदत्त का आख्यान।
३. शत्रुजित और सुदर्शन की कथा।
४. एक वणिक् की कथा।
५. राम द्वारा किष्किंधा में देवीव्रत जिसके फलस्वरूप रावण-वध एवं सीता की पुनः प्राप्ति हुई।

इनका क्रमानुसार संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

१. सृष्टि की रचना में स्वयं ब्रह्मा कमलासन पर आश्चर्य-चकित हो इधर उधर देखने लगे और विचार करने लगे कि मेरा आधार क्या है? वे

कमल-दंड के सहारे-सहारे चले और उन्हें विष्णु के दर्शन हुए। वहीं महेश भी आ गये। उस समय इन तीनों को एक उज्वल स्वरूप के दर्शन हुए जो विष्णु के शब्दों में 'मनोहर देवीय मूरत मूल, थिती जग-कारन सुक्षम थूल' (छंद०३२. स्कं०३) थी। उसने उन तीनों को सृष्टि के कार्य में अर्थात् यथाक्रम उत्पत्ति, पालन और संहार में प्रवृत्त होने का आदेश दिया। जब उन्होंने कुछ विस्तृत आदेश की प्रार्थना की तो देवी ने एक विमान मँगाया तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश सहित उस पर आरूढ़ होकर रवाना हुई। उस विमान पर विहार करते हुए जब जल पार होने पर थल आया तो नाना प्रकार के पशु-पक्षियों, देवों, गंधर्वों तथा ब्रह्मलोक, वैकुंठ, कैलाश, इन्द्रपुरी आदि के वैभव को देखते हुए वे ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ उन्हें आदि-शक्ति के दर्शन हुए। विष्णु ने कहा :—

'सनातन देवीय आद स्वरूप, इहैं जग-कारन बीज अनूप। छं० ५२. स्कं० ३

उसने उन्हें संबोधन करते हुए कहा :—

कह्यौ हरि जेम करचौ जहाँ कांम, विरंचन संकर छांड़ विराम। छं० ५५. स्कं० ३

वहाँ इन तीनों की यह स्थिति हुई कि स्त्री-रूप में उसकी सेवा करते हुए वे सौ वर्ष तक वहाँ रहे।

भई त्रहु देवन की गत भाय, मिले हुय अंगना अंगना माहि।
रहे पग सेवन में अनुरत, समापत ह्वै गये बच्छर सत ॥ छं० ५८. स्कं० ३

दोहा—सुध भूल जहाँ हमहु सिव, नारिन मिल हुय नार।
कहाँ तैं आये कौन हैं, नहीं जान्यौ निरधार ॥ छं० ६१. स्कं० ३

उस समय तीनों ने उसका स्तवन किया और आदि-शक्ति देवी ने उत्तर दिया। इनके कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जाते हैं :—

विष्णु की स्तुति से—

विधात्री तुहीं प्रक्रती रूप वामां।
महा सच्चदारूपनी आद माता ॥ छं० ६३. स्कं० ३

स्थिती व्यापकं ब्रह्म की तूं सथाई।
नही तूं जहाँ ब्रह्म हूँ ना रहाई ॥ छं० ६७. स्कं० ३

हितू येक तूं स्वामिनी है हमारी।
महंमा कहाँ लौं कहैगे तुमारी ॥ छं० ७३. स्कं० ३

महंमाय तू वेद की आदमाता। छं० ७७. स्कं० ३

शिव की स्तुति से—

तुही त्रगुनी तै रचे देव तीनूं।
खै ज्ञान सौं ह्वै सबै सु प्रवीनूं ॥ छं० ८०. स्कं० ३
स्त्रज पालना और तूंही सँघारं।
निमित्तं व्रती मात्र आपौ निहारै ॥ छं० ८१. स्कं० ३
दसंद्री तुही तत्त्व पाँचू दिपावैं।
अहंकार बुद्धी सुभावं उपावैं ॥ छं० ८२. स्कं० ३
हीयें अग्यता ग्लान कौं दूरहे री।
तरे आदमाया कृपा पाय तेरी ॥ छं० ८६. स्कं० ३

ब्रह्मा की स्तुति से –

करता जग हमकों कहै, पोखत सारंगपान।
सिभु ताहि कह संघरत, ये सब परम अयान ॥ छं० ९२. स्कं० ३०
करता सब तेरी कला, संघरता पुन सोय।
जानहु पालन रीत जिहि, जीय जानी द्रग जोय ॥ छं० ९३. स्कं० ३

भुजंगप्रयात—कहै अद्वती ब्रह्म है येक कोऊ।
स्वयं आपको रूप है दिव्य सोऊ ॥
तथा और कोऊ जहाँ भिन्न तामें।
उपज्जै हृदै बीच संदेश यामें ॥ छं० ९५. स्कं० ३

देवी के उत्तर से—

परंमातमा येक हूँ ओत प्रोतं।
वहूं अद्वती रूप जानौ उदोतं ॥ छं० ९७. स्कं० ३
अहूं अद्वती ब्रह्म ना भेद यातें।
निहारैं कछू भेद उत्पात्र नातें ॥ छं० ९८. स्कं० ३
सची श्री धृती कीरती सुमृती हूँ।
छिमा और मेधा पिपासा छती हूँ ॥ छं० १०१. स्कं० ३
गनी ब्राह्मी रुद्री सिवा और गौरी।
कुबेरी इंद्रानी कुमारी किसोरी।
बराही तथा वैस्नवी वारनी हूँ।
नृसंघी कराली सु नारायनी हूँ ॥ छं० १०४. स्कं० ३

अंत में आदिदेवी अंबिका ने ब्रह्मा को सरस्वती, विष्णु को लक्ष्मी तथा शिव को गौरी प्रदान कीं और उन्हें त्रिगुणी सृष्टि रचने का आदेश दिया। तत्पश्चात् वे सब उसी विमान पर आसीन हो गये तथा बीज-मंत्र का जप करते हुए [illegible] हुए।

(२) अयोध्यापुरी में देवदत्त नामक ब्राह्मण रहता था। वह पुत्रहीन था। तमसा नदी के तट पर पुत्रप्राप्ति की इच्छा से एक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें याज्ञवल्क्य, गोभिल आदि सम्मिलित हुए। गोभिल ने सामवेद के मंत्र का उच्च स्वर से गायन प्रारम्भ किया। उसमें उनका स्वर भंग हो गया। देवदत्त ने ऋषि गोभिल से कहा कि आप यह कैसे पढ़ते हैं? इस पर क्रोधित होकर गोभिल ने शाप दिया कि तुम्हारे जो पुत्र होगा वह बहरा होगा। देवदत्त द्वारा अनुनय विनय करने पर ऋषि गोभिल द्रवीभूत हुए। उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में तो पुत्र मूर्ख ही होगा किन्तु बाद में पंडित होगा और देवी का कृपापात्र बनेगा।

कालान्तर में ऐसा ही हुआ। उस मूर्ख पुत्र से पीडित होकर देवदत्त ने उसे वन में छोड़ दिया। मूर्ख तो था किन्तु वह तपस्वी और सच्चा था। अतएव उसके नाम सत्यतपा और सत्यव्रत पड़ गये। इसी प्रकार सत्य आचरण और तप में वन में उसके चौदह वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन उसके आश्रम के निकट एक निषाद ने एक सूकर के तीर मारा। घायल और पीडित सूकर को देखकर उस मुनि के मुख से 'ऐं ऐं' शब्द निकले। सरस्वती के इस बीज मंत्र के मुख से निकलते ही वे मुनि तत्काल मेधावी हो गये। वे सत्यव्रत मुनि वाल्मीकि के समान कवि हुए। यह देवी की अनुकम्पा से हुआ। सत्यव्रत के माता पिता को जब ये समाचार प्राप्त हुए तो वे उसे घर ले गये।

(३) अयोध्या-नरेश ध्रुवसंध के दो पत्नियाँ थीं–मनोरमा तथा लीलावती। मनोरमा ज्येष्ठ थी। इन दोनों के एक-एक पुत्र था। सुदर्शन मनोरमा का पुत्र था और सत्रुजित लीलावती का। एक बार ध्रुवसंध आखेट के लिये गये। वहाँ सिंह से मुठभेड़ हो गई। राजा ने सिंह को मार दिया किन्तु स्वयं भी मारे गये। अब प्रश्न उपस्थित हुआ उत्तराधिकार का।

मनोरमा अपने पिता कलिंग-नरेश के यहाँ पहुँची और लीलावती अपने पिता अवंती-नरेश के यहां। कलिंग-नरेश वीरसेन और अवन्ती अथवा मालवा-नरेश जुधाजित में घोर संग्राम हुआ। अंत में मालवा-नरेश की विजय हुई और सत्रुजित का राज्याभिषेक हुआ। मनोरमा अपने पुत्र सुदर्शन के साथ भारद्वाज मुनि के आश्रम में चली गई। वहां मुनि-बालकों ने विनोद में सुदर्शन से क्लीब कहा। सुदर्शन की शैशव अवस्था थी। वह क्लीब शब्द का अर्थ न समझा किन्तु क्ली शब्द को रटता रहा। अनुस्वार रहित क्ली देवी का उत्तम मंत्र है और एक प्रकार

से उनका जाप होता रहा । सुदर्शन का भारद्वाज मुनि के आश्रम में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तथा उसकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई । वहाँ उसे सरस्वती के दर्शन हुए और उसी के मंत्र के प्रताप से वह धनुर्विद्या में पारंगत हुआ ।

कालान्तर में काशी-नरेश ने अपनी कन्या शशिकला का स्वयंवर रचा और विभिन्न राजाओं को निमंत्रण भेजा । स्वयंवर से बहुत पहले शशिकला को स्वप्न में सरस्वती के दर्शन हुए । उस कन्या ने सुदर्शन की चर्चा सुनी थी और उसे वरण करना चाहती थी । सरस्वती ने स्वप्न में यह वरदान दिया कि जिसे तू अपना पति बनाना चाहती है वह तुझे प्राप्त होगा ।

इधर शशिकला ने एक ब्राह्मण को भेज कर सुदर्शन को स्वयंवर में अवश्य उपस्थित होने के लिये संदेश भेजा । भारद्वाज मुनि का आशीर्वाद लेकर तथा अंबा का ध्यान करके वह अपनी माता मनोरमा के साथ स्वयंवर में पहुँचा । वहाँ अनेकों राजा एकत्र हुए जिनमें मालवा नरेश जुधाजित भी था । उसने काशी-नरेश से स्पष्ट कह दिया कि यदि संघर्ष नहीं चाहते तो कन्या को यह परामर्श दो कि वह सत्रुजित को वरण करे । शशिकला इस पर तैयार नहीं हुई । अन्त में अपनी पुत्री के परामर्श को मानकर उन्होंने उसी रात्रि को शशिकला का सुदर्शन के साथ पाणिग्रहण संस्कार कर दिया । प्रभात होते ही वे वर-वधू को बिदाकर गंगापार करने के लिए रवाना हुए । जब जुधाजित तथा अन्य राजाओं को इनका पता चला, तो वे अपनी सेनाएँ लेकर उनका मार्ग अवरोध करने के लिये पहुँचे । छः दिन तक घोर युद्ध हुआ और अन्त में शत्रुओं ने काशी-नरेश सुबाहु तथा सुदर्शन को घेर लिया । तब उन्होंने देवी की स्तुति की--

> [illegible] अबलो, पाहि देवी पाहिकै । छं० २९९. स्कं० ३
> [illegible] तारदो ग्राह सों ।
> [illegible] बिरद उछाह सों ॥ छं० ३००. स्कं० ३

और तब [illegible] में सिंह-वाहिनी देवी प्रकट हुईं । उन्हें [illegible] ने [illegible]
[illegible]

काशी-नरेश सुबाहु की स्तुति से प्रसन्न हो याचना करने पर देवी ने उन्हें यह वर दिया कि दुर्गा-नाम से हम तुम्हारे द्वार पर निवास करेंगी :

'देवी कह्यौ बसत तुव द्वारहु, दुर्गा-नाँम धाँम ध्रुव धारहु' । छं० ३१०. स्कं० ३

सुदर्शन को भी आश्वस्त कर तथा मार्ग-दर्शन करके देवी अंतर्धान हो गई और सुदर्शन अयोध्या आकर वहाँ का न्याय-नीति से शासन करने लगे।

(४) अयोध्या में सुशील नाम का एक वैश्य था। उसका परिवार बड़ा था। अपने धर्म के अनुकूल आजीविका-उपार्जन करने का भरसक प्रयत्न करता किन्तु उसका दारिद्रय दुःख मिटता न था। वह इस कारण चिन्ता-निमग्न रहता था। एक दिन कुछ ब्राह्मण उसके यहाँ आये। उसने उनसे दरिद्रता-निवारण का उपाय पूछा। तब ब्राह्मणों ने उसे बीज-मंत्र दिया और नवरात्रि-व्रत करने को कहा। नौ वर्ष तक विधिपूर्वक व्रत करने पर देवी ने उसे दर्शन दिये तथा भवानी की कृपा से वह सम्पन्न हो गया।

(५) राम-कथा अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णित की गई है। इस कथा के विस्तृत वर्णन का कारण निम्नलिखित पंक्तियों में निहित है। जनमेजय ने पूछा :—

राँवन की रघुवीर पै, विपत परी कहा बात।
किसकंधा कैसे करचौ, राम-वरत नव-रात॥ छं० ३६६. स्कं० ३
देवी जैसैं बर दयौ, मिल कपि पुरी मुकाँम।
पुल बाँध्यौ पाथोद पै, राँवन मारचौ राम॥ छं० ३६७. स्कं० ३
वैदेही पाई विजय, अवध पधारे ईस।
ब्यास देव इह बारता, बरनहु बिसवा-बीस॥ छं० ३६८. स्कं० ३

इक्ष्वाकु-वंशी अयोध्या-नरेश महाराज दशरथ के कौशल्या, कैकेई तथा सुमित्रा—ये तीन रानियाँ थीं। कौशल्या सबसे बड़ी थी। कौशल्या के राम, कैकेई के भरत तथा सुमित्रा के दो पुत्र हुए-लक्ष्मण और शत्रुघ्न। राम ईश्वर के अवतार थे।

एक दिन विश्वामित्र उनके यहाँ आये तथा राम और लक्ष्मण को मारीच, सुबाहु आदि राक्षसों से यज्ञ की रक्षा के निमित्त उनके साथ भेजने की प्रार्थना की। दशरथ ने अपने दोनों पुत्रों को ऋषि विश्वामित्र को सौंप दिया। वन में राम ने सुबाहु का संहार किया तथा मारीच को उछाल कर दक्षिण दिशा में

दूर फेंक दिया। इस प्रकार विश्वामित्र तथा अन्य ऋषियों का यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ।

मिथिला-नरेश जनक के यहाँ सीता-स्वयंवर के समाचार पाकर विश्वामित्र भी राम और लक्ष्मण के साथ स्वयंवर देखने गये। वहाँ एकत्रित सभी प्रत्याशी नरेश महादेवजी के धनुष को उठाने और उसे तोड़ने में असफल रहे। अन्त में विश्वामित्र की आज्ञा से राम उठे और उस धनुष को चढ़ाकर उसे तोड़ दिया। सीता ने वरमाला उनके गले में डाल दी।

जनकजी ने विश्वामित्र से परामर्श करके यह निश्चय किया कि अपने भाइयों की अन्य पुत्रियों का विवाह भी अयोध्या-नरेश के अन्य पुत्रों के साथ कर दिया जाय तो कितना उत्तम रहे। अस्तु, उन्होंने इसी प्रकार का पत्र राजा दशरथ के पास भेजा। अतः दशरथ भी बरात लेकर आये और राम का सीता, भरत का मांडवी, लक्ष्मण का उर्मिला तथा शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। बरात वर-वधुओं के साथ अयोध्या लौट आई।

कुछ समय पश्चात् राजा दशरथ ने राम को युवराज बनाने का निश्चय किया। कैकेई ने जब यह सुना तो वह रुष्ट हो गई। उसने राजा दशरथ से दो वरदान जो उनके पास धरोहर थे, माँगे। उसने एक वर तो यह माँगा कि भरत युवराज बनें और दूसरा वर यह माँगा कि राम तपस्वी के वेश में चौदह वर्ष वन में निवास करें। दशरथ किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गये।

अपने पिता के वचनों को सत्य करने के लिये राम सहर्ष वन को चले। साथ में लक्ष्मण और सीता भी गये। जब भरत अपनी ननिहाल से लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि राम के वियोग में दशरथ स्वर्गवासी हो चुके थे। अंतिम क्रिया करने के पश्चात् भरत, शत्रुघ्न, गुरु वसिष्ठ आदि वन में गये। भरत ने राम से अयोध्या लौटने का आग्रह किया किन्तु राम ने लौटना अस्वीकार कर दिया। उनकी चरण-पादुका लेकर भरतजी अयोध्या लौट आये।

लक्ष्मण और सीता के साथ राम चित्रकूट-पर्वत पर रहने लगे। वहाँ राक्षस-कुमारी शूर्पणखा आई और उनके सौंदर्य पर मुग्ध हो उनके साथ विवाह करने का प्रस्ताव रखा। जब उसका प्रणय-प्रस्ताव ठुकरा दिया गया तो प्रतिशोध की भावना से वह सीता को भक्षण करने के लिये दौड़ी। अन्त में राम

की आज्ञा से लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक और कान काट दिये और इस प्रकार रावण को चुनौती दी।

शूर्पणखा अपने भाई खर और दूषण के पास गई और उन्हें दल-बल-सहित ले आई। राम ने दल-बल-सहित खर और दूषण का संहार कर दिया। तदनंतर शूर्पणखा रावण के पास गई। रावण ने विचार कर मारीच की सहायता ली। मारीच स्वर्ण-मृग बनकर राम की कुटी के निकट पहुँचा। सीता के आग्रह पर राम उसे मारने के लिये चले। मारीच ने बाण लगने पर मरते समय लक्ष्मण को पुकारा कि मेरी रक्षा करो। सीता ने भयभीत हो कर लक्ष्मण से भाई की सहायता के लिये जाने को कहा। सीता का शासन मानकर लक्ष्मण राम की खोज में चले और इधर रावण पर्णकुटी से सीता का हरण कर ले गया।

जटायु ने उसका मार्ग अवरुद्ध किया किन्तु रावण ने उसे घायल किया और उसके पंख काट डाले तथा उसे वहीं पड़ा छोड़, वह सीता को लंका ले गया और उन्हें अशोक वाटिका में रखा। राम-लक्ष्मण जब वापिस लौटे तो पर्णकुटी में उन्हें सीता नहीं मिली। खोजते हुए वे दक्षिण दिशा की ओर चले। मार्ग में जटायु मिला। उससे यह समाचार मिला कि रावण बलपूर्वक सीता को ले गया और उसी ने उसकी वह दशा की। आगे चलने पर सुग्रीव से भेंट हुई, हनुमान् के माध्यम से राम और सुग्रीव में अग्नि को साक्षी देकर मित्रता हुई। राम ने वाली को मार कर और सुग्रीव को राजा बनाकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

वर्षा व्यतीत होने पर वानर और रीछ विभिन्न दिशाओं में सीता की खोज के लिये भेजे गये। हनुमान, अंगद, जामवंत आदि दक्षिण दिशा में भेजे गये। किन्तु जब वर्षा प्रारम्भ हुई थी तो राम और लक्ष्मण प्रवर्षण-पर्वत पर रहने लगे थे। वहाँ एक दिन देवर्षि नारद उनके पास आये और कहा कि आपका जन्म ही आततायी रावण के संहार के लिये हुआ है। उन्होंने उनसे नवरात्रि-व्रत करने के लिये अनुरोध किया जिससे वे कृतकार्य हों और रावण का संहार कर सकें। आश्विन-मास निकट होने के कारण नवरात्रि-व्रत करने का स्वर्ण अवसर भी उपस्थित हो गया है। जब अष्टमी की रात्रि आई तो राम ने आदिशक्ति की आराधना की। सिंह पर आरूढ हो चंडी स्वयं प्रकट हुई और कहा—

केऊ बार भक्त सहाय कीनी अवनी भार उतारनै।
अब अेह दसरथ अवतरे महाँराज रावन मारनै॥ छं० ८१७. स्कं० ३

चढ़ जाहु लंक निलंक चत्वर धंख रन की धारीयै।
संधार खल सीय संग लै प्रभु फेर अवध पधारीयै।। छं० ८१८. स्कं० ३

देवी भी वरदान देकर वहां से अपने स्थान को चली गई।

सीता की खोज में हनुमान, अंगद आदि जो दक्षिण दिशा में गये, उनकी समुद्र-तट पर पहुँचने पर जटायु के भाई संपाती से भेंट हुई। सपाती ने कहा कि जो समुद्र को लांघ कर लंका पहुँच सके वह सीता की खोज ला सकेगा। अंत में हनुमान् को यह काम सौंपा गया। वे छोटा रूप धारण कर लंका में पहुँचे। खोज करते-करते उनकी वहां विभीषण से भेंट हुई। उनसे ज्ञात होने पर कि सीता अशोक वाटिका में हैं, हनुमानजी वहां पहुंचे और जिस वृक्ष के नीचे वे बैठी थीं उसके ऊपर बैठ गये। जब रावण तथा अन्य राक्षसियाँ वहां से चली गईं तो अवसर पाकर हनुमान् ने राम की मुद्रिका नीचे डाल दी। सीता को पहले तो आशंका हुई किन्तु अन्त में विश्वास होने पर राम के समाचार प्राप्त करके उन्हें प्रसन्नता हुई।

हनुमान्, सीता से आज्ञा ले उद्यान में लगे फलों को खाने के लिये गये। रक्षकों ने उन्हें रोका इस पर संघर्ष छिड़ गया। जब रावण के पास समाचार पहुंचे तो उसने अपने पुत्र अक्षयकुमार को भेजा गया। जब उसका भी वध हो गया तो मेघनाद को भेजा गया। अंत में मेघनाद हनुमान् को नागपाश में बाँध लाया। रावण ने हनुमान् को यह दंड दिया कि कपड़ा लपेट कर उसकी पूँछ में आग लगा दी जाय। दूत होने के कारण उन्हें प्राणदंड नहीं दिया गया। इस का परिणाम यह हुआ कि हनुमान् लंका-दहन करने में सफल हुए। अंत में समुद्र में कूद तथा अपनी पूंछ बुझाकर वे सीता के सम्मुख उपस्थित हुए। चिह्नस्वरूप कंगन लेकर और सीता से विदा लेकर हनुमान् ने वहाँ से प्रस्थान किया।

हनुमान् से समाचार प्राप्त होने पर राम-लक्ष्मण, सुग्रीव तथा वानर और रीछों की विशाल सेना लेकर रवाना हुए और शीघ्रातिशीघ्र समुद्र तट पर पहुँचे। वहाँ रावण से तिरस्कृत उसका अनुज विभीषण उनकी शरण में आया जिसे राम ने लंकेश के रूप में स्वीकार किया। तदुपरान्त नल और नील की सहायता से समुद्र पर पुल बाँधा गया और सेना सहित राम समुद्र-पार हुए।

अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजा गया किन्तु व्यर्थ। अंत में भयंकर संग्राम छिड़ गया। कई दिनों तक घमासान युद्ध हुआ जिसमें रावण के

अनेकानेक योद्धा, भाई और पुत्र सब रणकौशल दिखाकर एक-एक कर मृत्यु को प्राप्त हुए। इस युद्ध का अत्यंत विशद वर्णन किया गया है। कुछ अवसर ऐसे भी आये जब राम की विजय अत्यन्त संदिग्ध दिखाई देने लगी। मेघनाद ने अदृश्य रूप से युद्ध करते हुए राम और लक्ष्मण दोनों को नागबाणों से वेधकर मूर्छित कर दिया। इस स्थिति में पड़े हुए राम और लक्ष्मण को जब पुष्पक विमान में बैठाकर सीता को दिखाया गया तो सीता ने सहज रूप से जो करुणा-क्रंदन किया उसका वर्णन अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। इसी प्रकार हतोत्साहित हनुमान् द्वारा यह समाचार मिलने पर कि जब युद्ध होरहा था मेघनाद ने सीता को उनकी आँखों के सामने वध कर के फेंक दिया, राम अत्यंत विह्वल होकर मूर्छित होगये। विभीषण ने अन्त में यह कह कर शंका का समाधान किया कि मायावी मेघनाद की यह माया-लीला है। जब तक रावण जीवित है वह सीता का वध कर नहीं सकता, इसी प्रकार ब्रह्मास्त्र-प्रहारों से जब सभी वानरी सेना, जामवंत आदि यूथपति तथा स्वयं राम और लक्ष्मण भी निर्जीव से हो गये तो जामवंत की प्रेरणा से कैलाश-पर्वत के निकटवर्ती औषध सहित पर्वतशृंग को हनुमान् उखाड़ लाये। उन औषधियों की गंधमात्र से सब सजीव और सबल हो गये। जब मेघनाद की ब्रह्मशक्ति से लक्ष्मण निष्प्राणप्राय हो गये तो सुखेन की प्रेरणा से पुनः हनुमान् संजीवनी जड़ी-सहित नील-गिरि से पर्वतशृंग उखाड़ कर लाये और लक्ष्मण को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ। इस अवसर का बंधु-वियोग की आशंका से राम का विकलता-जनित भावावेश-प्रसूत प्रलाप पठनीय है। अन्त में रावण का वध होने पर राम की विजय हुई और विभीषण लंका के राजा बने। जब सीता को ससम्मान लाया गया तो राम ने उन्हें अग्नि-परीक्षा के पश्चात् ही स्वीकार किया।

लक्ष्मण, सीता तथा अन्य यूथपतियों सहित राम पुष्पक-विमान पर आरूढ़ होकर अयोध्या के लिये रवाना हुए। मार्ग में सीता को सभी महत्व-पूर्ण स्थलों को दिखाते हुए वे अयोध्या पहुंचे। अयोध्या में अत्यंत उत्फुल्लता से उनका स्वागत हुआ। इन सभी का विशद वर्णन किया गया है। शुभ मुहूर्त में राम का राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने एक सहस्र ग्यारह वर्ष न्यायनीति से शासन किया।

इसी स्कंध में विष्णु द्वारा आयोजित देवी-यज्ञ का विशद वर्णन आया है जिसमें अन्यान्य देवता सम्मिलित हुए।

चतुर्थ स्कंध में विशिष्ट रूप से कृष्णावतार की कथा है किन्तु तीन प्रकरण ऐसे आये हैं जिनमें देवी ने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर मार्ग-दर्शन किया।

प्रथम प्रकरण उस समय का है जब दैत्यराज भगवद्भक्त प्रह्लाद के नेतृत्व में दैत्यों ने देवताओं को परास्त कर दिया तो इंद्र आदि देवताओं ने शक्ति की स्तुति की। वह प्रकट हुई और देवताओं की अग्रणी बनकर दैत्यों की सेना के सम्मुख चलीं। जब दैत्यों ने शक्ति को आते देखा तो भयभीत हुए किन्तु प्रह्लाद ने उनका स्तवन करते हुए आदेश मांगा। आदि शक्ति प्रसन्न हुई और दैत्यों से कहा कि तुम निर्भय होकर पाताल में जाकर बसो। इस प्रकार देव और दैत्यों में शांति हुई।

दूसरा प्रकरण उस समय का है जब द्वापर-युग की समाप्ति के पूर्व मदांध क्रूर राजाओं से पीडित पृथ्वी ने ब्रह्मा आदि देवताओं से अपने भार को दूर करने के लिये प्रार्थना की। ब्रह्मादिक देवता विष्णु के पास गये। विष्णु ने उनसे स्पष्ट कहा कि हम स्वतंत्र नहीं हैं। जैसी आदिदेवी की आज्ञा होती है वैसा करते हैं। अंत में आदिशक्ति की आराधना की गई और उसने प्रकट होकर कहा—

मगधाधिप आदक मंद मती, जिह भार दयौ अतसं जगती।
तिह मारन कारन देव तितै, अवतार लहौ तुम जाय ईतै ॥ छं० ३२८. स्कं० ४
सगती हम जुक्त चलौ सबही, मिल भार उतारहि जाय मही।
अदती सुत कस्यप जाय वहाँ, जदुवंस लहै अवतार जहाँ ॥ छं० ३२९. स्कं० ४
वसुदेव रु देवकी होय ससं. दिती श्राप निवारन त्यौं दरसं।
हुय है भृगु श्राप सौं पुत्र हरी, पुन होवहु मैं जसुदा पुतरी ॥ छं० ३३०. स्कं० ४
महिमाय कही जब बात सुखी, सब देव चले सुन होय सुखी।

तीसरा प्रकरण उस समय का है जब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न को सूतिका-गृह में अवसर पाकर शंबासुर उठा ले गया। कृष्ण ने व्याकुल होकर महामाया का स्मरण किया। जब देवी ने दर्शन दिये तो स्तुति करने के पश्चात् अपने पुत्र प्रद्युम्न के सम्बन्ध में पूछा कि वह कहाँ अदृष्ट हो गया तो अम्बिका ने कहा—

सुत रावरो सुत-दान, मत करहु सोच मुरार। छं० ५०९. स्कं० ४
यह दीन दो अवतार, हर संबरासुर हाथ।
मद रीत दुमन सुभाय, सो सुता हित सरसाय ॥ छं० ५१०. स्कं० ४
मोहै दवर मोग संग वह करहि व्याह अनंग। छं० ५११. स्कं० ४
कैलास है सुत पास, उर नहिन होहु उदास। छं० ५१२. स्कं० ४

पंचम स्कंध में जनमेजय द्वारा यह प्रार्थना करने पर :

'कछु चरित्र देवी कहौ, सुभ गुन ज्ञान समथ्थ' ।

व्यासजी ने निम्न लिखित चरित्रों का वर्णन किया :

(१) महिषासुर, उसकी उत्पत्ति और देवी द्वारा उसका वध ।

(२) शुभ-निशुंभ-उनके तप तथा उनके एवम् रक्तबीज आदि उनके सहायकों का देवी द्वारा वध ।

(१) पुत्रेच्छा से यज्ञ तथा मंत्र जप में निरत रंभक और रंभ नामक दो दैत्य बंधुओं में से रंभक को इन्द्र ने ग्राह बनकर भक्षण कर लिया । इससे रंभ को महान् दुःख हुआ और वह खड्ग लेकर अपना सिर काटने तथा उसे अग्नि में होमने के लिये उद्यत हुआ । उस समय अग्नि देव ने प्रकट होकर आत्म हत्या के जघन्य पाप से उसे रोक उससे वर माँगने को कहा । रंभ ने यह वर मांगा कि मेरा पुत्र इतना बली हो कि वह त्रिलोकी को विजय करे तथा सुर अथवा असुर उसे कोई भी न मार सके । अग्निदेव से उसे वाञ्छित वर प्राप्त हुआ ।

रंभ पुत्र-कामना से घूमता रहा किन्तु कोई स्त्री उसे उपयुक्त नहीं जची । एक दिन उसने एक पुष्ट प्रचंड पराक्रम मतवाली महिषी को देखा । उसके साथ रंभ ने सहवास किया और वह महिषी गर्भवती होगई । एक महिष ने उसे देखा और उस पर झपटा । रंभ ने उसे रोका और इस प्रयास में वह महिष द्वारा मारा गया । भयभीत महिषी ने यक्षों की शरण ली । जब यक्ष रंभ का दाह-संस्कार करने लगे तो वह महिषी भी स्नेह वश अग्नि में कूद कर जल गई । उस महिषी के गर्भ से तत्काल अतुल पराक्रमी महिषासुर प्रकट हुआ । साथ ही रंभ से रक्तबीज उत्पन्न हुआ ।

महिषासुर ने एक लाख वर्ष तक घोर तप किया । हंस पर आरूढ़ हो ब्रह्मा वहाँ पहुँचे और उस से वर माँगने को कहा । उसने यह वर माँगा कि मैं अमर हो जाऊँ; किन्तु ब्रह्मा के यह कहने पर कि ऐसा तो संभव ही नहीं है, महिषासुर ने यह वर माँगा कि मुझे सुर, असुर और नर कोई न मार सके, स्त्रियां अबलाएँ होती हैं उनका मुझे भय नहीं है । ब्रह्मा ने उसे वाञ्छित वर दिया ।

असुरों को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसे अपना राजा बना दिया । शनैः शनैः दैत्यों का बल बढ़ने लगा तथा देवों की स्थिति गिरती गई । दैत्यों

के हृदय में देवताओं को विजय करने और स्वर्ग के सुख भोगने की इच्छा प्रबल हुई। महिषासुर ने अपना दूत इन्द्र के पास भेजा और उसके द्वारा संदेश कहलाया कि या तो वह वन में चला जाय अथवा दासत्व स्वीकार करे। परिणाम यह हुआ कि देवों और दानवों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। देवताओं की ओर से इन्द्र के अतिरिक्त वरुण, कुबेर, पवन आदि तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी सम्मिलित हुए। अंत में ब्रह्मा, विष्णु, और महेश के युद्ध-स्थल से चले जाने के पश्चात् विजयश्री दैत्यों को मिली। समस्त देवता पर्वत-कंदराओं में जाकर रहने लगे। देवपुरी में महिषासुर का राज्य हो गया। देवता जब यज्ञभाग से भी वञ्चित हुए तो पुनः उन्होंने अपनी रक्षा के लिये ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा महेश के पास गये तथा वे दोनों वैकुठ-पुरी में विष्णु के पास पहुँचे। विष्णु ने कहा—

मरै न पुरसहु मात्र तैं विध दीनों वरदांन।
जानत हौ सब देवजन, महिष बली अप्रमांन॥ छं० २८६ स्कं० ५
ऐसी कौन त्रीया अवर, जिह मारै तहां जाय।
तेज अंस सब देवतन, प्रगटै करहु उपाय॥ छं० २८७ स्कं० ५
तातैं बनहै एक त्रीय, संकट मिटहै सोय।
याद करौ सुरराय कौं, करुणा कर सब कोय॥ छं० २८८ स्कं० ५

विष्णु द्वारा बतलाई हुई विधि से कार्य करने पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम वरुण और इन्द्र आदि सभी देवताओं के ईश्वरीय अंश से एक देवी प्रकट हुई।

सब देवन तेज ही की समुदा, प्रगटी इक देवीय ह्वै प्रमुदा।
दस आठ भुजा दनु कौं दहनी, विकराल मनो प्रलया वहनी॥ छं० २९४ स्कं० ५
महा लछीय स्वछछीय रूप महा, कहीयै तिनकी उपमा जु कहा।
तिह के प्रतिअंग रु अंग तथा, जिह जांनहु देवीय रूप जथा॥ छं० २९५ स्कं० ५

सभी देवों ने उसे वस्त्र और आयुध भी अर्पण किये।

महिषासुर ने जब ये समाचार सुने तो उसने अपने दूतों को उसकी खोज में भेजा। दूतों ने यह समाचार दिया कि अष्टादश भुजाओं वाली एक अनुपम सुन्दरी स्त्री है जो आकाश में स्थित है। वह न सुरी है न दानवी, न किन्नरी है और न नरी। देवतागण घेरे हुए उसका जयकार कर रहे हैं। महिषासुर ने तब उसके पास यह संदेश भेजा कि वह दैत्यराज के साथ विवाह करने की कृपा करे। किन्तु उनका जन्म तो दैत्यों के विनाश के लिये हुआ था, उनके साथ [illegible] सम्बन्ध स्थापित करने के लिये नहीं।

अंत में उस महाशक्ति को कामिनी-मात्र समझ कर उसे बल से प्राप्त करने के लिये दैत्यगण तत्पर हो गये। अत्यन्त भयंकर संग्राम हुआ जिसमें महिषासुर के अनेकानेक प्रचंड पराक्रमी योद्धा एक-एक कर मारे गये। अंत में महिषासुर स्वयं आया और उसने भी वही प्रस्ताव रखा जिसकी आवृत्ति अनेकों बार की जा चुकी थी, तो उस सिंहवाहिनी महाशक्ति ने उत्तर दिया—

नही तुम मोर पिछानत नाह, रचै सोई स्रष्ट चलावत राह। छं० ५१८. स्कं० ५
वही पुरसोतम ऊत्तम् अंग, सदाँ सुख पाय रहूँ तिह संग॥
मजूँ नहिं और कहूँ भरतार, निरंजन संग रहूँ निरधार। छं० ५१९. स्कं० ५
अचेतन रूप सदा मुहि अंग, सचेतन होय ग्रहूँ तिह संग। छं० ५२०. स्कं० ५
रमा मोहि नाँम तथा सुरराय, सदाँ सुर आरूव ताहि सिहाय। छं० ५२१. स्कं० ५
होयँ तुम जीवन की कछु हाँम, बसो अधलोकही लैं बिसराँम। छं० ५२२. स्कं० ५
अरूपा जाँन अजन्माँ ऊह, बनूँ कोई कारन कायक व्यूह। छं० ५२४. स्कं० ५

अन्त में अत्यंत भीषण युद्ध हुआ और उस महाशक्ति ने महिषासुर का वध कर डाला। अवशिष्ट दानव पाताल-लोक को भाग गये। देवों की रक्षा हुई और उन्हें देव-लोक प्राप्त हुआ।

(२) शुम्भ निशुम्भ दो दैत्य बंधुओं ने पुष्कर में दशसहस्र वर्ष तक उग्र तप किया। ब्रह्मा उनके तप से प्रसन्न हुए और उनसे वर मांगने को कहा। उन्होंने भी प्रथम तो अमर होने का वर मांगा। किन्तु ऐसा होना तो असंभव था, अतएव उन्होंने यह वर मांगा कि सुर, असुर, मनुष्य, पशु कोई भी हमें न मार सके। स्त्रियाँ अबला होती हैं, उनका हमें भय नहीं है। ब्रह्मा ने 'तथास्तु' कहकर वहाँ से प्रस्थान किया।

भृगु ने शुभ मुहूर्त में शुंभ का राज्याभिषेक किया। दशों दिशाओं में दैत्यों का प्रभुत्व बढ़ने लगा। दैत्य योद्धा चंड और मुंड भी अपनी सेना सहित उससे आ मिले। वहाँ रक्तबीज भी आगया।

दानवों ने मदोन्मत्त हो अपने राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया और पुराने वैर का स्मरण कर देवताओं से युद्ध किया और उन्हें परास्त कर दिया। देवेन्द्र इन्द्र भी भाग गये। और देवगण ज्यों-त्यों अपना समय-यापन करने लगे। देवगुरु बृहस्पति से जब उन्होंने परामर्श किया तो उनकी मंत्रणा से उन्होंने महिषासुर को वध करने वाली महाशक्ति का आराधन किया। महाशक्ति प्रकट हुई और देवताओं को आश्वस्त करके वहाँ से रवाना हुई।

चढ़ सिंघ चली ईक रंग छटा, घट कालका सोहत स्याँम घटा। छं० ६५४. स्कं० ५
भजमांन विचारत दर्प-भरी, पहुँची जुगरूपा य संभुपुरी।
गहरै स्वर गावत राग गरै, वर वाटका पुष्प जहाँ विहरै॥ छं० ६५५. स्कं० ५

जब शुंभ को यह ज्ञात हुआ तो उसने अपना प्रणय-संदेश उसके पास भिजवाया। तब –

मुस्काय कह्यौ सुरराय मुखा, सब जांनतहू मति की समुखा। छं० ६६७. स्कं० ५
वर-दायक सुंभ निसुंभ बली, थित खोस करी जिह देवथली।
सुभ लछ्छन की गुन-रास सही, जग जांनत सूर उदार सही। छं० ६६८ स्कं० ५
सुर जीत लये भिर संगर में, झपकै पल ना गिर झंगर में।
अपनै बल ऊन्नत जांन अहो, करहै वर तो कँह जाय कहो। छं० ६७१. स्कं० ५
होय हेर ईहै मम दर्प हरो, फर मंगल फेर विवाह करो॥ छं० ६७४. स्कं० ५

दूत ने यह संदेश शंभु को दिया। पहले तो शुंभ ने इसे दूत की वाचालता-मात्र समझा किन्तु जब दूत ने बल देकर कहा तो उसकी बात का विश्वास करना ही पड़ा।

वच कहत व्याज विधांन, सोई सुनहु नृपत सुजांन।
विच कही सखियन बात, बलवंत वीर विख्यात॥ छं० ६९५ स्कं० ५
जिह संग करहु जुद्ध अवलोक पौरख ऊद्ध।
पश्चात् करकै प्यार, भजहू सोई भरतार। छं० ६९६ स्कं० ५
मिथ्या न आश्रम मोर, कर लेहु जतन करोर। छं० ६९८. स्कं० ५

एक अबला की चुनौती स्वीकार न करके क्या हँसी करायेंगे, यह विचार कर शुंभ ने धूम्रलोचन, चंड और मुंड आदि महापराक्रमी योद्धाओं को क्रम-क्रम से भेजा किन्तु वे सभी उस कालिका देवी के हाथों मारे गये। फिर उसने रक्तबीज को भेजा जिसकी विशेपता यह थी कि उसके रक्त की जितनी बूँदें भूमि पर गिरतीं उतने ही रक्तबीज उत्पन्न होजाते थे। ऐसी स्थिति में—

जब रक्तबीज तैं भयो जंग, सुर मिली सक्तीयां आय संग। छं० ९१९. स्कं० ५
कोऊ हंस चढ़ी कोऊ धीर कंध, चढ़ गरुड दनुज कहिं चिघ चिघ।
कोई सु कोलक केकी अरोह, संट पै चढ़ी कोऊ मंड छोह॥ छं० ९२०. स्कं० ५
गह सूर पीठ बैठी गजिंद्र, देखी हम सुनीयं दानविंद्र।
नर-प्रष्ट चढ़ी कोऊ सखी नार, प्रेत की प्रष्ट कोऊ बल प्रचार॥ छं० ९२१. स्कं० ५
दह-आनन आनन कोऊक ग्वार, नव-दून भुजा नीकै निहार। छं० ९२२. स्कं० ५
[illegible] सोय देवता जितो जात, देवीयां तिती संगर दिखात।
[illegible] इक [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] न पराक्रम आद अंत॥ छं० ९२५. स्कं० ५

साथ ही उस कालिका देवी ने अपने मुख का विस्तार करके कृत्रिम रक्त-बीजों का भक्षण कर लिया। रक्तबीज का रक्त भूमि पर गिरने ही न दिया गया। कालिका देवी उसे उदरस्थ कर उस सब को पचा गई। इस प्रकार रक्तबीज का भी वध हुआ। तदनंतर निशुंभ युद्ध-क्षेत्र में गया किन्तु वह भी वीर-गति को प्राप्त हुआ। दैत्यराज शुंभ भी यह सोचकर युद्ध में गया कि :

नास्यौ खेत निसुंभ कौं, मम भ्राता कुल-मौर।
बिसरै ऐसे बैर कौं, वह कातर कोई और।। छं० १०६२. स्कं० ५
जैहै धन तन जायगो, रहै न आसुर राज।
जस तौहू नहि जायगो, आखर ईहौ इलाज।। छं० १०६३. स्कं० ५

अत्यंत भयंकर युद्ध हुआ किन्तु अन्त में शुंभ भी मारा गया। अवशिष्ट दानव पाताल-लोक को चले गये।

इसी स्कंध में कतिपय ऐसे व्यक्तियों का भी वृत्तान्त आया है जिन्हें मधु-कैटभ आदि से संबधित कथाओं के श्रवण, पाठ एवम् देवी की आराधना से महत् फल प्राप्त हुआ। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) स्वारोचिष मन्वंतर में एक अत्यंत धर्म-परायण राजा थे जिनका नाम सुरथ था। पर्वत-प्रदेशीय म्लेच्छ राजा ने उन पर आक्रमण किया। राजा को ऐसा आभास हुआ कि उनके मन्त्रिगण भी शत्रु से मिल गये हैं। चिन्तित और व्यथित सुरथ वहाँ से चल दिये और सुमेधा ऋषि के आश्रम में पहुँच, वन में रहने लगे। वहाँ पुत्र-कलत्र द्वारा निष्कासित समाधि-नामक एक वैश्य भी आ गया। दोनों ने उस ऋषिवर से अपनी-अपनी दुःख-कथाएँ कहीं। ऋषि-श्रेष्ठ ने उन्हें देवी की आराधना-विधि बतलाकर उन्हें नवाक्षर-मन्त्र भी दिया। तीन वर्ष तक उन दोनों ने तपस्या की। अन्त में महादेवी ने प्रकट होकर उनसे वर माँगने को कहा। राजा ने यह इच्छा व्यक्त की कि मेरा राज्य पुनः प्राप्त हो जाय। देवी ने मनोवाञ्छित वर दिया और यह कहा कि तुम दस हजार वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् सूर्य से जन्म लेकर सावर्णि-नामक मनु होंगे। वैश्य ने केवल ज्ञान-प्राप्ति का वर माँगा, वह उसे प्राप्त हुआ।

छठे स्कंध में निम्नलिखित आख्यान आये हैं जो देवी के प्रत्यक्ष प्रकट होने, उसके द्वारा वरदान देने एवं संकटों के निवारण से संबधित हैं।

पहला प्रकरण वृत्रासुर के वध का है। वृत्रासुर को विश्वकर्मा ने तप करके यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न किया था। वृत्रासुर ने वरुण, कुवेर, देवताओं सहित इन्द्र को पराजित कर उसे भगा दिया। वृत्रासुर ने तप करके ब्रह्मा से वर भी प्राप्त किया और देवपुरी का शासन करने लगा। विष्णु से जब देवताओं ने प्रार्थना की तो उन्होंने देवी की आराधना करने का परामर्श दिया। साथ ही विष्णु ने यह भी कहा कि इन्द्र के वज्र में प्रवेश करके मैं वृत्रासुर के वध में सहायक हो जाऊंगा।

जब देवताओं ने महाशक्ति की आराधना की तो उन्होंने प्रकट होकर उन्हें सफल होने का वर दिया। साथ ही उन्होंने यह भी वचन दिया कि मैं वृत्रासुर की वुद्धि को मोहित कर दूंगी।

इधर देवलोक-वासी ऋषियों और मुनियों की मध्यस्थता से वृत्रासुर और इन्द्र में संधि हुई जिसके अनुसार इन्द्र ने यह प्रतिज्ञा की कि गीले या सूखे किसी अस्त्र-शस्त्र या वज्र से मैं वृत्रासुर पर आघात नहीं करूँगा।

किन्तु यह संधि तो काल-यापन का एक तरीका था। एक दिन जब वृत्रासुर अकेला समुद्र तट पर गया हुआ था तो इन्द्र ने अवसर देखकर समुद्र के फेन में डूबे हुए वज्र से उसे मार डाला। विष्णु ने वज्र में प्रवेश करके और देवी ने वृत्रासुर को इन्द्र का विश्वास करने के लिए प्रेरित करके तथा सागर को फेन-प्लावित करके सहायता की। तदनंतर इन्द्र देवपुरी के शासक हुए।

दूसरा प्रकरण उस समय का है जब इन्द्र ब्रह्महत्या के पाप और निन्दा से निस्तेज हो गये और प्रायश्चित्त करने के लिये मान-सरोवर के निकट अज्ञात वास करने लगे। इन्द्र की अनुपस्थिति में नहुष को इन्द्रासन प्राप्त हुआ। इन्द्रासन पर बैठ, नहुष इन्द्रपत्नी शची की इच्छा करने लगे। पतिव्रता शची ने देवी की आराधना की। देवी ने दर्शन दिये और उसे इन्द्र के अज्ञातवास का स्थान भी बतलाया। साथ ही देवी ने यह भी आश्वासन दिया कि उसके पातिव्रत-धर्म के पालन में वह सहायक होंगी। देवी की अनुकम्पा से शची अज्ञात स्थान में काल-यापन करने वाले अपने पति के दर्शन कर सकी। अश्वमेध यज्ञ द्वारा इन्द्र की ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति हुई किन्तु शची का संकट तब भी दूर नहीं हुआ।

शची बहुत विचार के पश्चात् अन्त में नहुष के पास गई और उनसे यह विनती की कि यदि वे सप्त-ऋषियों द्वारा वहन की हुई पालकी में आरूढ होकर

आयें तो वे उन्हें ग्रहण करेंगी। कामांध नहुष ने ऋषियों की अनुनय-विनय की तथा उन्हें पालकी ले चलने के लिये मना लिया। जाते समय नहुष ने ऋषियों से शीघ्र चलने के लिये 'सर्प-सर्प' कहा। ऋषियों ने क्रोधित होकर उसे शाप दिया कि तू सर्प हो जा। नहुष इन्द्रासन से च्युत हो गये और तदनंतर इन्द्र के वापिस आने पर शची के कष्ट की निवृत्ति हुई।

तीसरा प्रकरण हैहय-वंशीय क्षत्रिय राजाओं से संबधित है, जिन्होंने भृगु-वंशी सभी ब्राह्मणों को पीड़ित कर दिया। सभी ब्राह्मण-स्त्रियाँ दुःखी हो, हिमाचल पर जाकर, गौरी की एकान्त आराधना करने लगीं। तब देवी ने प्रकट होकर उन्हें यह वर दिया कि तुममें से किसी एक के उरःस्थल से मेरे अंश से संतति होगी, वह तुम्हारे संकट दूर करेगी। कालान्तर में उन ब्राह्मण-स्त्रियों को देख, हैहय-वंशीय क्षत्रिय उनके पीछे भागे। उस समय उस कातर स्त्री के उरःस्थल से एक अत्यंत तेजस्वी पुत्र निकला जिसके देखते ही वे सब क्षत्रिय अंधे हो गये। अंत में अनुनय-विनय करने पर उस तेजस्वी ऊर्व ऋषि ने उन क्षत्रियों को दृष्टि प्रदान तो की किन्तु साथ ही उनसे यह प्रतिज्ञा कराई कि भविष्य में वे ऐसा अनाचार नहीं करेंगे।

सप्तम स्कंध में सूर्य और सोम-वंशों का विवरण है। त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र आदि के आख्यान आये हैं। एक प्रकरण ऐसा भी आया है जिसमें देवी को शताक्षी के रूप में प्रकट होकर रक्षा करनी पड़ी। कथानक इस प्रकार है—

हिरण्याक्ष के वंश में दुर्गम नाम का दैत्य उत्पन्न हुआ। उस ने यह विचार किया कि देवों का बल ब्राह्मण हैं और ब्राह्मणों का बल वेद है। यदि ब्रह्मा की आराधना करके मैं उनसे वेद प्राप्त करलूं तो ब्राह्मण वेद-ज्ञान-विहीन हो जायेंगे, यज्ञादि न कर सकेंगे तथा देवता इस प्रकार यज्ञ-भाग से वञ्चित होकर क्षीणबल हो जायेंगे। यह विचार कर एकसहस्र वर्ष तक उसने कठोर तप किया। ब्रह्मा प्रकट हुए और उस दैत्य ने यही वर माँगा :—

हमकौं हु दीजै वेद हंसग विप्र जानत जिह विधी।
जग बीच जेतक मंत्र जप सुर असुर साधत जिह सिधी।
सब जीत कै हम ह्वै सुखी विस्तारहूँ जस बसुमती।
रुचि भक्ति करहू रावरी सतधृती दाता सुकती॥ छं० ८३३. स्कं० ७

वाञ्छित वर उस दैत्य को मिला किन्तु ब्राह्मण स्नान, संध्या, वेद, स्मृति आदि सब को भूल गये तो दानवों ने देवपुरी को घेर लिया। देवता-गण वहां से भाग कर पर्वत-कंदराओं में समय-यापन करने लगे। यज्ञ के अभाव में त्राहि-त्राहि करने लगे। जब ब्राह्मणों ने विचार कर आदिशक्ति की आराधना की तब प्रसन्न होकर आदिशक्ति ने पार्वती के रूप में उन्हें दर्शन दिये—

मनि नील-सम जिह नैन निर्मल नील रंग निरंजनी।
उन्नत उरोज अनूप आकृत भूख जन-गन भंजनी॥ छं० ८३९. स्कं० ७
नव रात लौं जल नयन सौं बरसाय चहु दिस विथ्थुरयो।
परभाव उत्तम औखधी उपजी भई दुरभिख दूरयो। छं० ८४०. स्कं० ७

तब देवता और ब्राह्मण सभी ने उस महाशक्ति का स्तवन किया जिसका कुछ अंश इस प्रकार है :

कूटस्थ सतचित-रूप कारन नित्य तूँ निर्दोखनी।
भुवनेश्वरी तूँ भगवती परमात्मनी जग-पोषनी।
इन छुधा-आतुर हेर हीय द्रग दिव्य रूप दिखाय कै।
जल-धार नैनन धार संचर वार दीय बरसाय कै॥ छं० ८४२. स्कं० ७
माता सताक्षी भूँम-मंडल नाम कल्पत सुर-नरा। छं० ८४३. स्कं० ७

जब दैत्याधिपति दुर्गम को यह समाचार मिला तो वह सेना-सहित वहां पहुँचा। देवता और मुनियों में भगदड़ मच गई। उस समय—

संतोष देवी सुरन कौ अवलंब दैन उतावरी।
पुन [illegible] प्रगट समुझ माया सावरी।
चहूँ ओर फेरी चक्र दै थिर देवजात बचाय कै।
[illegible] बाहर कढ़ी रमनीक रूप रचाय कै॥ छं० ८४८. स्कं० ७

दानवों से युद्ध करने के लिये उस निरंजनी देवी ने अनेकों रूप प्रकट किये। [illegible] तारा, त्रिपुरा, कालिका, मातंगी, भैरवी, बगलामुखी, रमा, [illegible], त्रिपुरसुन्दरी, कामाक्षी, मोहिनी, तुम्बिनी आदि उत्पन्न हो गईं।

[illegible] सम्भार कै।
[illegible] विचार कै॥ छं० ८५२. स्कं० ७

[illegible] संग्राम हुआ जिसमें सभी दानव-सेना नष्ट हो गई। [illegible] दुर्गम [illegible] पर उपस्थित हुआ। उसने सभी [illegible] दिया। [illegible] ने तीक्ष्ण बाणों से उसका [illegible]

सुर और ब्राह्मणों की स्तुति से संतुष्ट होकर शताक्षी ने श्रीमुख से कहा—

चिद वेद है मोहि अंग च्यारहु, ध्यांन धारहु धारना। छं० ८५७. स्कं० ७
वैधेय भये सब वेद बिन, निज हृदय में निरधारीयै।
दुरगम संघारयौ खेत दांनव मोह दुर्गा मानीयै॥ छं० ८५८. स्कं० ७
दुर्गा कहौगे माहा दुख में आय करहुँ ऊबेल कौं।
साकंभरी कहि करहु सुमरन अन्न देहुँ ऊझेल कौं।
सुमरन सताक्षी करहु साधन वृष्ट करहुँ वारकौ॥ छं० ८५९. स्कं० ७

अष्टम स्कंध में देवी की आराधना-विधि के साथ सृष्टि-वर्णन आया है। साथ ही ब्रह्मा-पुत्र स्वायंभुव मनु की सृष्टि-रचना के उद्देश्य से महाशक्ति की आराधना का उल्लेख है। आराधना से प्रसन्न हो देवी प्रकट हुई और उन्हें यह वर दिया कि उनका सृष्टि-रचना-कार्य निर्विघ्न समाप्त होगा।

नवम स्कंध में दान-धर्म-फल, नरक, कुंडों और पातकों आदि का विवरण है। साथ ही उस महाशक्ति के एकांगी स्वरूपों से संबंधित जैसे दक्षिणा देवी, षष्ठीदेवी, मंगलचंडी, मानसी देवी, सुरभि देवी आदि के महत्व का विवरण है।

दशम स्कंध में मन्वंतरों का विवरण है। इन मन्वंतरों में स्वायंभुव मनु, स्वारोचिष मनु, चाक्षुष मनु तथा सार्वणि मनु का विवरण कुछ अधिक विस्तार के साथ दिया गया है। इसी स्कंध में भ्रामरी देवी का चरित्र भी दिया गया है जो इस प्रकार है :—

अरुण नामक एक दैत्य पाताल-लोक से आगया। उसने गंगा-तट पर प्राणायाम एवं गायत्री-मंत्र के द्वारा अत्यंत उग्र तप किया। यहाँ तक कि उसके शरीर से भीषण ज्वाला निकलने लगी जिससे सभी दग्ध होने लगे। देवगण ब्रह्मा की शरण गये। ब्रह्मा ने आकर अरुण को मनोवाञ्छित वर दिया। उसने मांगा—

जुध मरूँ न मैं सस्त्र जोग सौं, रत ह्वै आधी व्याध रोग सौं। छं० १६६. स्कं० १०
सुर नर नारी घात न साधै, बपु चौपद द्वीपद नही बाधै। छं० १५०. स्कं० १०

वर प्राप्त करके जब वह दैत्य विख्यात हुआ तो सभी दैत्यों ने एकमत से उसे अपना राजा बना दिया। देवगण त्रस्त हो शिव की शरण गये। उनके पीछे पीछे दैत्यगण भी गये। किंकर्तव्यविमूढ़ हो जब वे सोचने लगे तो आकाश-वाणी हुई कि आप भवानी की आराधना करें। आकाश-वाणी यह भी हुई—

विबुधन गिरा कहीं फिर वाचा, सुत दिती इहै भक्त है साँचा।
जप गायत्री करत है जौलौं, तुम सौं इहै मरै नहीं तौलौं ॥ छं० १५४. स्कं० १०

देवगण तब गुरु वृहस्पति के पास गये। उन्होंने उन से कोई ऐसा उपाय करने की प्रार्थना की कि जिससे अरुण दैत्य गायत्री-जप को त्याग दे। गुरु वृहस्पति दैत्यराज के पास गये और उससे कहा—

गायत्री जप करयौ गोय कै, जान्यौ नहीं जजमान जोय कैं।
आयो मैं करने उपदेसा, रह्यौ न राग द्वेष को रेसा ॥ छं० १५७. स्कं० १०
स्वर्ग भोग भोगहु सुखदाई, बसहु होय निर्भय वरदाई। छं० १५८. स्कं० १०

इतना कहकर गुरु वृहस्पति तो चले गये किन्तु दैत्यराज के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया तथा उसने गायत्री-जप छोड़ दिया।

इधर देवगणों ने देवी भवानी को आराधना करना प्रारम्भ कर दिया। देवी प्रसन्न हुई और प्रकट हुई। देवताओं ने स्तुति के पश्चात् यही इच्छा प्रकट की कि आप अरुण दैत्य से हमें मुक्ति दिलाइये जिससे हम निर्भय हों। भवानी ने प्रकट होकर अपनी मुट्ठी खोली। मुट्ठी के खुलते ही असंख्य विषैले भ्रमर निकल पड़े। उन्होंने चुन-चुन कर सभी दैत्यों का विनाश कर दिया। वह देवी भ्रामरी देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

एकादश स्कंध में शौच स्नान, संध्योपासन, गायत्री-पुरश्चरण आदि का वर्णन है।

द्वादश स्कंध में गायत्री, उसके ऋषि, उसके हृदय आदि के साथ अन्त में जनमेजय के देवी-यज्ञ का वर्णन है।

देवीचरित्र-सम्बन्धी आख्यानों के अतिरिक्त देवीचरित के विभिन्न स्कंध में अन्य आख्यान, उपाख्यान भी प्रसंगवश आये हैं

देवीभागवत और इसी कारण देवीचरित के वक्ता और श्रोता के रूप में दो प्रमुख पात्र द्वैपायन व्यास तथा जनमेजय हैं। उनके जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में विवरण आना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त सत्-असत्, पाप, पुण्य, कर्तव्य-अकर्तव्य-सम्बन्धी जनमेजय की शंकाओं का आधार भी तो प्रमुखतया वे जीवन वृत्त थे जिनमें उनकी अभिरुचि थी। उनका विवरण आना भी स्वाभाविक है। उनका संक्षिप्त कथा-वृत्त देवीचरित के आधार पर निम्नलिखित है-

द्वैपायन व्यास

द्वैपायन व्यास के पिता पाराशर मुनि तथा उनकी माता सत्यवती थी। पाराशर मुनि को एक दिन गंगा-पार जाना था। केवट की कन्या वासवी अथवा मत्स्यगंधा उन्हें अपने पिता की आज्ञा से नाव द्वारा पार करने गई। संयोग से पाराशर मुनि काम-पीडित होगये। उस कन्या ने कतिपय आपत्तियाँ उपस्थित कीं। पहली आपत्ति तो यह थी कि उसके शरीर से मछली की गंध आती है और दूसरी आपत्ति यह थी कि दिन का समय है। अपने तप के प्रभाव से पाराशर मुनि ने उसकी दुर्गंध ही दूर नहीं की, उसे योजनगंधा बना दिया। दिन के प्रकाश को कृत्रिम कुहरा उत्पन्न करके दूर कर दिया। सहवास के पश्चात् बासवी ने जब यह पूछा कि अब मेरा क्या होगा तो उन्होंने कहा कि तेरा कन्यात्व यथावत् बना रहेगा और जो पुत्र होगा वह विष्णु का अवतार अत्यंत यशस्वी होगा। उस दिन से बासवी अथवा मत्स्यगंधा सत्यवती हुई। उसके जो पुत्र हुआ वह जन्म के पश्चात् ही तप करने चला गया और कालान्तर में द्वैपायन व्यास के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शंका यह रह जाती है कि बासवी के शरीर से मछली की गंध क्यों आती थी। इसका विवरण इस प्रकार दिया गया है। महाराज उपरचर जो वसु-उपरचर के नाम से प्रसिद्ध हैं, एक बार आखेट खेलने गये। घर पर उनकी पत्नी ऋतुमती थी। वन में पहुँच कर उनका वीर्य-स्खलन हुआ। उन्होंने उस वीर्य को अपनी पत्नी के पास श्येन पक्षी द्वारा भेजा। मार्ग में दूसरा श्येन मिल गया जिससे उसका युद्ध हुआ। वह वीर्य घृताची नाम की अप्सरा जो शापवश मछली के रूप में रहती थी, निगल गई। कालान्तर में मछलहारे ने उसे पकड़ा और जब उसके पेट को चीरा तो दो शिशु उसमें से निकले—एक पुत्र और दूसरी पुत्री। पुत्र को राजा ले गया किन्तु पुत्री उसी केवट के पास रही। मछली के गर्भ से जन्म लेने के कारण उसके शरीर में मछली की गंध आती थी और इसी कारण इसे बासवी अथवा मत्स्यगंधा कहते थे।

कालान्तर में इसी सत्यवती का विवाह महाराज शांतनु से हुआ।

जनमेजय

जनमेजय प्रसिद्ध पांडव अर्जुन के प्रपौत्र, वीर अभिमन्यु के पौत्र, तथा परीक्षित के पुत्र थे। उन्होंने उत्तंक मुनि द्वारा प्रेरित होकर नागयज्ञ किया।

इस यज्ञ को करने का उनका उद्देश्य यह था कि उनके पिता परीक्षित को डसने वाले तक्षक से प्रतिशोध लिया जा सके। तक्षक का अपराध यह नहीं था कि उसने परीक्षित को डसा किन्तु उसका अपराध यह था कि उसने कश्यप ऋषि को जो तक्षक द्वारा डसे जाने के पश्चात् परीक्षित को पुनर्जीवित करने को जा रहे थे, द्रव्य देकर अर्धमार्ग से ही वापस लौटा दिया। इस घटना से शाप की घटना गौण होगई और तक्षक की कुप्रवृत्ति प्रमुखरूप से सम्मुख आगई।

शान्तनु

भरतवंशी नरेशों में शांतनु का स्थान अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। कौरव और जनमेजय के पूर्वज पांडव जिनके मध्य महाभारत युद्ध हुआ—उन दोनों के ये प्रपितामह थे। यदि वे सत्यवती के साथ विवाह करने के लिये अत्यंत इच्छुक न होते तो महाभारत जैसे महायुद्ध की संभवतः बुनियाद ही न पड़ती और न गांगेय को आजन्म अविवाहित रहने तथा राजसिंहासन के त्याग की प्रतिज्ञा करने का अवसर ही आता और न संभवतः ययाति के वंश की रक्षा के लिये नियोग द्वारा संतति-उत्पन्न करने की आवश्यकता पड़ती। शांतनु एवं जनमेजय के अन्य पूर्वजों का संक्षिप्त विवरण निम्न लिखित है—

इक्ष्वाकुवंशी महाभिख नरेश को तपस्वी जीवन तथा वाजपेय यज्ञ करने के कारण स्वर्ग की प्राप्ति हुई। एक बार ये ब्रह्मा के यहाँ गंगा तथा अन्य देवताओं के साथ बैठे हुए थे। वायु के वेग से गंगा का वस्त्र खुल गया। अन्य देवताओं ने अपनी आँखें नीची करलीं। महाभिख नरेश गंगा को यथापूर्व देखते रहे। गंगा की आँखों में भी प्रेम की झलक थी। ब्रह्मा ने यह देखकर दोनों को शाप दिया कि तुम दोनों मृत्युलोक में जन्म लेकर सुख-दुःख भोगो। ये महाभिख नरेश ययातिवंशी प्रतीप के पुत्र शांतनु हुए।

गंगा को भी शाप के कारण स्त्रीरूप धारण करके भार्या बनना पड़ा। किन्तु स्वयं शापित होते हुए भी गंगा ने अष्टवसुओं की उनके शाप-परिपालन में सहायता की।

वसिष्ठ मुनि ने आठों वसुओं को पृथ्वी पर जन्म लेने का इस कारण शाप दिया कि उन्होंने उनकी नंदिनी-नामक गाय को चुरा लिया था। इन अष्ट-वसुओं में द्यौ नामक वसु प्रधान अपराधी था अतएव वसिष्ठजी ने अनुनय-विनय

करने पर अन्य सात वसुओं का दंड घटा दिया और कहा कि वे एक-एक वर्ष में ही शापमुक्त हो जायेंगे किन्तु प्रधान अपराधी द्यौसु की शाप की अवधि यथावत् रहेगी।

गंगा ने शाप को सत्य करने के लिये स्त्रीरूप-धारण किया। शांतनु ने उसे देखा, मोहित हुए और विवाह की इच्छा व्यक्त की। गंगा ने इस शर्त पर विवाह करने की स्वीकृति दी कि जिस समय वे उसके इच्छापूर्वक काम करने में बाधा डालेंगे, वह उन्हें छोड़ कर चली जायगी।

गंगा के शांतनु से आठ पुत्र हुए जो अष्टवसु थे। जन्म होते ही गंगा उन्हें गंगा नदी में प्रवाहित कर देती थी। जब अष्टम पुत्र का जन्म हुआ तो शांतनु ने बाधा उपस्थित की। गंगा पूर्वप्रतिज्ञा के अनुसार शांतनु को छोड़कर चली गई। यह अष्टम पुत्र ही गांगेय अथवा भीष्मपितामह थे।

कुछ समय पश्चात् योजनगंधा सत्यवती को शांतनु ने देखा और उस पर मोहित होगये। सत्यवती के पिता ने यह शर्त्त रखी कि यदि उसका दौहित्र राज-गद्दी को प्राप्त करे तो वह विवाह करने को तय्यार है। शांतनु तो किंकर्तव्य-विमूढ होगये किन्तु जब गांगेय को यह ज्ञात हुआ तो वह आजन्म अविवाहित रहने एवं सत्यवती के पुत्र को ही राजा बनाने की प्रतिज्ञा करके उसे ले आये और उन्होंने अपने पिता की इच्छापूर्ति की।

कौरव और पांडव

शांतनु के सत्यवती से दो पुत्र हुए—चित्रांगद और विचित्रवीर्य। एक दिन चित्रांगद आखेट के लिये गया। वन में गंधर्वपति से उसका संघर्ष होगया जिसमें वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ थीं—अंबा और अंबालिका। नौ वर्ष वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के पश्चात् भी उसके कोई संतति नहीं हुई तथा उसकी क्षयरोग से मृत्यु होगई।

स्थिति विचित्र होगई। अंत में गांगेय के अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहने के कारण यही उपाय सोचा गया कि वंश-रक्षा के लिये नियोग द्वारा संतति की उत्पत्ति की जाय। द्वैपायन व्यास अपनी माता की आज्ञा से इस कार्य के लिये तैयार हुए। विचित्रवीर्य की पत्नियों से धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ। धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे और पांडु पीतवर्ण के थे। तीसरी वार जब प्रयत्न

किया गया तो विचित्रवीर्य की कोई भी पत्नी व्यास के पास नहीं गई। उन्होंने एक दासी को भेज दिया जिससे विदुर का जन्म हुआ।

धृतराष्ट्र के गांधारी से सौ पुत्र हुए। पांडु को एक मुनि ने, जब वह आखेट को गये हुए थे तब यह शाप दे दिया कि जब तुम विषय-भोग करोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। पांडु के दो पत्नियां थीं-कुँती और माद्री; किन्तु शाप के कारण संतति की सम्भावना ही समाप्त होगई। ऐसी स्थिति में देव-आह्वान के उस मंत्र का जो कुँती को दुर्वासा ऋषि की कृपा से प्राप्त हुआ था, उपयोग किया गया। पांडु की अनुमति से कुँती ने क्रम से यम, पवन और इन्द्र का आह्वान किया और उसके युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन हुए। इसी प्रकार माद्री के अश्विनीकुमारों से नकुल और सहदेव हुए।

जब महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु तथा पांडवों के अन्य पुत्र भी मारे गये तो कृष्ण ने अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में स्थित शिशु की रक्षा की। यह पुत्र परीक्षित हुआ। राज्यपद प्राप्त करने के कुछ वर्षों के पश्चात् एक दिन संयोगवश उन्होंने एक तपस्वी के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया। उस तपस्वी के पुत्र ने यह शाप दिया कि जिस व्यक्ति ने यह अनाचार किया है, उसे एक सप्ताह में तक्षक डस लेगा।

इन परीक्षित नरेश के पुत्र ही जनमेजय थे जो देवीभागवत और इसलिये देवीचरित्र के प्रधान श्रोता हैं। यह संपूर्ण विवरण प्रथम तथा द्वितीय स्कंध में आया है।

कृष्ण

कृष्ण नारायण अथवा विष्णु के अंशावतार थे। उनके जीवन की अनेक घटनाओं के सम्बन्ध में जनमेजय के हृदय में अनेकों शंकाएं थीं। कृष्ण अवतारी पुरुष तो थे ही, साथ ही उसके प्रपितामह अर्जुन के सखा और मार्गदर्शक थे। उनके जीवनवृत्त में जनमेजय की अभिरुचि का होना स्वाभाविक थी। चतुर्थ स्कंध में उनका जीवनवृत्त विस्तार से चित्रित किया गया है। अत्यन्त संक्षेप में उनका जीवनवृत्त निम्नलिखित है।

कृष्ण वसुदेव और देवकी के पुत्र थे। देवकी का भाई कंस मथुरा-नरेश था। विवाह सम्पन्न होने पर जब वसुदेव-देवकी की विदा हो रही थी तो

आकाश-वाणी हुई कि देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवां पुत्र कंस का हनन करेगा। रंग में भंग होगया। देवकी और वसुदेव के संकटपूर्ण जीवन का श्रीगणेश होगया। कंस ने देवकी को इस शर्त पर जीवित रहने दिया कि देवकी की प्रत्येक संतति को वसुदेव अविलंब उसे सौंप देंगे। आशंकावश उन्हें कारागार में भी डाल दिया गया।

कृष्ण का जन्म मध्यरात्रि को हुआ। मायावश सभी द्वारपाल सो गये और कारागार के द्वार भी खुल गये। वसुदेव कृष्ण को लेकर मथुरा से गोकुल गये। वहां से पूर्वयोजना के अनुसार नन्द-यशोदा की नवजात पुत्री को ले आये। वसुदेव के वापिस आने पर ही द्वारपाल जागे। कंस को जब पुत्री के जन्म का समाचार मिला तो वह तत्काल आया और जब उसका बध करने को था तो वह उसके हाथ से छूटकर आकाश में विलीन होगई। उस समय यह आकाश-वाणी भी हुई कि तेरा मारने वाला उत्पन्न होगया।

कंस ने विकल हो यह व्यवस्था की कि जितने भी उसके राज्य में नवजात शिशु हैं उनका संहार कर दिया जाय। इस अभियान में पूतना मारी गई। अंत में कृष्ण और उनके भाई बलदेव को कंस ने मथुरा बुलवाया। कृष्ण ने कंस का संहार करके उसका राज्य उसके पिता उग्रसैन को दे दिया।

कृष्ण द्वारिका-पुरी चले गये। वहां उन्होंने राज्य स्थापित किया। उनके सोलह हजार रानियां थीं। ये वे अप्सराएं थीं जिन्हें अपनी पत्नी बनाने का नारायण ने वर दिया था।

कृष्ण ने अपनी पत्नी जामवती द्वारा अनुनय-विनय करने पर उसके पुत्र होने की कामना से शिवजी की आराधना की। पार्वती ने उन्हें यह वर दिया कि केवल जामवती के ही नहीं, उनकी प्रत्येक पत्नी के दश-दश पुत्र होंगे। किन्तु साथ ही उनसे यह भी कहा कि अहंकार और परस्पर द्वेष के कारण वे सभी बड़े होने पर नष्ट हो जायंगे, उस समय वे दुःखी न हों।

कृष्ण का अवतार जिस उद्देश्य से हुआ था (अर्थात् अनाचारी उद्दंड राजाओं के विनाश के लिये) उसके पूर्ण होने पर तथा यादववंश के जिस विनाश का पूर्वसंकेत पार्वती ने उन्हें दिया था, उसका आभास होने पर कृष्ण ने अपना शरीर-त्याग दिया।

वंश-वर्णन आदि की संगति

देवीचरित का प्रधान आधार देवीभागवत है जो एक महापुराण है। प्रत्येक पुराण के पांच अंग होते हैं—सर्ग, उपसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित। इन पांचों की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार है।

निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा।
योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता॥ १९, स्कं० १
तस्यास्तु सात्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा।
महालक्ष्मीसरस्वतीमहाकालीति ताः स्त्रियः॥ २०, स्कं० १
तासां तिसृणां शक्तीनां देहांगीकारलक्षणः।
सृष्ट्यर्थं च समाख्यातः सर्गः शास्त्रविशारदैः॥ २१, स्कं० १
हरिद्रुहिणरुद्राणां समुत्पत्तिस्ततः स्मृता।
पालनोत्पत्तिनाशार्थं प्रतिसर्गः स्मृतो हि सः॥ २२, स्कं० १
सोमसूर्योद्भवानां च राज्ञां वंशप्रकीर्तनम्।
हिरण्यकशिप्वादीनां वंशास्ते परिकीर्तिताः॥ २३, स्कं० १
स्वायंभुवमुखानां च मनूनां परिवर्णनम्।
कालसंख्या तथा तेषां तत्तन्मवंन्तराणि च॥ २४, स्कं० १
तेषां वंशानुकथनं वंशानुचरितं स्मृतम्। २५, स्कं० १

देवीचरित के प्रथम स्कंध के छंद २३ से छंद २८ तक इन्हीं पांच अंगों की व्याख्या की गई है जो इस प्रकार है—

सक्ती निर्गुन त्रगुणस्वरूपा, रुचिर देह धारिक सुचरूपा॥ छं० २३, स्कं० १
यह पुरान महि सर्ग उचारै, विदुष भेद बहुरूप विचारै।
बिस्व करत उतपत्ति बिरंचन, पुन हरि करत ताहि को पालन॥ छं० २४, स्कं० १
शिव सृष्टी ताही संघारै, यह प्रतिसर्ग विचार उचारै।
बंस सोम अरु सूरजवंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन अंसी॥ छं० २५, स्कं० १
इहि बंसहु की कथा अनेकहु, इहो बंस कहियत अवरेखहु।
मनवंतर स्वायंभुव मानहु, दृग आदक औरं अनमानहु॥ छं० २६, स्कं० १
इहि मनवंतर नाम उचारै, विवध भांत गन समय विचारै।
तिन मनुअन को बंस तहांहो, किय बरनन इहि कथा कहांही॥ छं० २७, स्कं० १
इहि बंसानुचरित्त अनूपहु, लख पुराण इहि तत्पहु लेखहु॥ छं० २८, स्कं० १

देवीचरित में भी देवी के चरित्र के अतिरिक्त उपरोक्त सभी का वर्णन देवीभागवत के अनुसार आया है जिसका उल्लेख संक्षेप में ऊपर किया जा चुका है।

मूल प्रश्न

जनमेजय के सम्मुख एक बड़ी समस्या यह थी कि वह किसे आप्त पुरुष माने जिसके वाक्यों और चरित्रों को जीवन के लिये प्रमाण एवं प्रकाशस्तंभ माना जा सके। देवाधिदेवों के चरित्रों में भी जब छिद्र दिखाई देते हैं तो कौन ऐसा है जिसे आप्त माना जा सके। यदि लब्धज्ञान ऋषियों, मुनियों तथा देवाधिदेव इन्द्र, विष्णु आदि के जीवन में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं तो ऐसा क्यों है?

ये दोनों प्रश्न संग्रथित हैं। सृष्टि के चक्र में आने पर कोई भी देव हो, मनुष्य हो या तिर्यक् योनि में हो, ब्रह्मा हो, विष्णु हो, इन्द्र हो अथवा कोई ऋषि, मुनि हो—सब त्रिगुणात्मक प्रकृति के अधीन हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि सत्, रज अथवा तम सदैव ही मिश्रित रूप में उपलब्ध होते हैं। जिस गुण की प्रधानता होती है उसी के आधार पर सुविधा की दृष्टि से वर्गीकरण कर लिया जाता है। यही कारण है कि श्रेष्ठतम व्यक्तियों, देवताओं तथा देवाधिदेवों के चरित्र में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं।

सृष्टि का मूल ही कर्म है। इसके बंधन में पड़कर जन्म लेने पड़ते हैं और भोग भोगने पड़ते हैं। इन्द्र, कश्यप और विष्णु जब सत्पथ से गिरे तो उन्हें भी उसका फल भोगना पड़ा। कर्म का फल तो सभी को भोगना पड़ता है—छोटा हो अथवा बड़ा। इन्द्र ने जब अकारण ब्रह्महत्या की तो वे निस्तेज हो गये। विष्णु ने जब बलि को छला तो वामन तो हुए ही, उन्हें द्वारपाल का काम भी करना पड़ा। कर्म की सार्वभौम प्रधानता के स्पष्टीकरण के लिये इन विभिन्न दृष्टान्तों का समावेश किया गया है।

त्रिगुणात्मक होने के कारण इस सष्टि का आधार ही अहंकार है जिससे मोह उत्पन्न होता है और जब जो अहंकार के कारण इस त्रिगुणात्मक माया में ग्रसित हो जाता है, चाहे अल्प काल के लिये ही हो, वह सत्पथ से विचलित हो जाता है। महानतम व्यक्तियों और देवाधिदेवों के चरित्र के दुर्बल स्थलों का यही कारण है। जैसा ब्रह्माजी ने नारद से धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म, सृष्टि आदि के संबंध में प्रश्न करने पर उत्तर दिया है—

इहाँ नहीं रागीय कौ अधिकार।
विरागीय जानत जाहि विचार॥ छं० २२, स्कं० ३

वंश-वर्णन आदि की संगति

देवीचरित का प्रधान आधार देवीभागवत है जो एक महापुराण है। प्रत्येक पुराण के पांच अंग होते हैं—सर्ग, उपसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित। इन पांचों की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार है।

निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा।
योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता॥ १६, स्कं० १
तस्यास्तु सात्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा।
महालक्ष्मीसरस्वतीमहाकालीति ताः स्त्रियः॥ २०, स्कं० १
तासां तिसृणां शक्तीनां देहांगीकारलक्षणः।
सृष्टचर्थं च समाख्यातः सर्गः शास्त्रविशारदैः॥ २१, स्कं० १
हरिद्रुहिणरुद्राणां समुत्पत्तिस्ततः स्मृता।
पालनोत्पत्तिनाशार्थं प्रतिसर्गः स्मृतो हि सः॥ २२, स्कं० १
सोमसूर्योद्भवानां च राज्ञां वंशप्रकीर्तनम्।
हिरण्यकशिप्वादीनां वंशास्ते परिकीर्तिताः॥ २३, स्कं० १
स्वायंभुवमुखानां च मनूनां परिवर्णनम्।
कालसंख्या तथा तेषां तत्तन्मवंन्तराणि च॥ २४, स्कं० १
तेषां वंशानुकथनं वंशानुचरितं स्मृतम्। २५, स्कं० १

देवीचरित के प्रथम स्कंध के छंद २३ से छंद २८ तक इन्हीं पांच अंगों की व्याख्या की गई है जो इस प्रकार है—

सक्ती निर्गुण त्रगुणस्वरूपा, रुचिर देह धारिक सुचरूपा॥ छं० २३, स्कं० १
यह पुरान महि सर्ग उचारै, विदुध भेद बहुरूप विचारै।
विश्व करत उतपत्ति विरंचन, पुन हरि करत ताहि को पालन॥ छं० २४, स्कं० १
शिव सृष्टी ताही संघारै, यह प्रतिसर्ग विचार उचारै।
बंस सोम अरु सूरजवंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन अंसी॥ छं० २५, स्कं० १
इहि वंसहु की कथा अनेकहु, इही बंस कहियत अवरेखहु।
मनवंतर स्वायंभुव मानहु, दृग आदक औरै अनमानहु॥ छं० २६, स्कं० १
इहि मनवंतर नाम उचारै, विवध भांत गन समय विचारै।
तिन मनुअन को वंस तहांही, किय वरनन इहि कथा कहांही॥ छं० २७, स्कं० १
इहि बंसानुचरित्त अनूपहु, लख पुराण इहि तत्यसु लेखहु॥ छं० २८, स्कं० १

देवीचरित में भी देवी के चरित्र के अतिरिक्त उपरोक्त सभी का वर्णन देवीभागवत के अनुसार आया है जिसका उल्लेख संक्षेप में ऊपर किया जा चुका है।

मूल प्रश्न

जनमेजय के सम्मुख एक बड़ी समस्या यह थी कि वह किसे आप्त पुरुष माने जिसके वाक्यों और चरित्रों को जीवन के लिये प्रमाण एवं प्रकाशस्तंभ माना जा सके। देवाधिदेवों के चरित्रों में भी जब छिद्र दिखाई देते हैं तो कौन ऐसा है जिसे आप्त माना जा सके। यदि लब्धज्ञान ऋषियों, मुनियों तथा देवाधिदेव इन्द्र, विष्णु आदि के जीवन में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं तो ऐसा क्यों है ?

ये दोनों प्रश्न संग्रथित हैं। सृष्टि के चक्र में आने पर कोई भी देव हो, मनुष्य हो या तिर्यक् योनि में हो, ब्रह्मा हो, विष्णु हो, इन्द्र हो अथवा कोई ऋषि, मुनि हो—सब त्रिगुणात्मक प्रकृति के अधीन हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि सत्, रज अथवा तम सदैव ही मिश्रित रूप में उपलब्ध होते हैं। जिस गुण की प्रधानता होती है उसी के आधार पर सुविधा की दृष्टि से वर्गीकरण कर लिया जाता है। यही कारण है कि श्रेष्ठतम व्यक्तियों, देवताओं तथा देवाधिदेवों के चरित्र में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं।

सृष्टि का मूल ही कर्म है। इसके बंधन में पड़कर जन्म लेने पड़ते हैं और भोग भोगने पड़ते हैं। इन्द्र, कश्यप और विष्णु जब सत्पथ से गिरे तो उन्हें भी उसका फल भोगना पड़ा। कर्म का फल तो सभी को भोगना पड़ता है—छोटा हो अथवा बड़ा। इन्द्र ने जब अकारण ब्रह्महत्या की तो वे निस्तेज हो गये। विष्णु ने जब वलि को छला तो वामन तो हुए ही, उन्हें द्वारपाल का काम भी करना पड़ा। कर्म की सार्वभौम प्रधानता के स्पष्टीकरण के लिये इन विभिन्न दृष्टान्तों का समावेश किया गया है।

त्रिगुणात्मक होने के कारण इस सष्टि का आधार ही अहंकार है जिससे मोह उत्पन्न होता है और जब जो अहंकार के कारण इस त्रिगुणात्मक माया में ग्रसित हो जाता है, चाहे अल्प काल के लिये ही हो, वह सत्पथ से विचलित हो जाता है। महानतम व्यक्तियों और देवाधिदेवों के चरित्र के दुर्बल स्थलों का यही कारण है। जैसा ब्रह्माजी ने नारद से धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म, सृष्टि आदि के संबंध में प्रश्न करने पर उत्तर दिया है—

> इहाँ नहीं रागीय कौ अधिकार।
> विरागीय जानत जाहि विचार॥ छं० २२; स्कं० ३

इसलिये राग और द्वेषरहित स्थिति होने पर ही आप्त-वाक्य की प्रामाणिकता आती है और दुर्बलताओं से मुक्ति होती है। कवि की वाणी में ये भाव इस प्रकार व्यक्त हुए हैं :—

सब माया अधीन गनो सुर कौं, अरु मानवहू फिर आसुर कौं।
उतपत्त करै ब्रहमंड अजा, पुन पालन नासन आज प्रजा ॥ छं० १६ स्कं० ५.
जग में जड़ जंगम जीव जिते, रचना प्रकृती कृत कर्म रते।
प्रकृती अहंकार ऊपावत है, जड़ जंगम जीव जनावत है ॥ छं० १७ स्कं० ५.
विध और हरी हर देव बने, गुन तीनहु सौं उतकृष्ट गने।
अहंकार बिना त्रहु होत इहै, गुनहू कौ सुभाव सु कैसे गहै ॥ छं० १८ स्कं० ५
अहंकार तें मोहहु होत उदै, विच बंधन कै कहि जीव बँधै।
जग पालक सोय जनार्दनहू, गुन और अहंकार जुतै गनहू ॥ छं० २२ स्कं० ५.
अहंकार की धार में विस्नु इही, ममता बस बूढत मोह मँही। छं० २३ स्कं० ५.

प्रश्न यह है कि सृष्टि का आधार ही जब अहंकार है और बहुधा अहंकार से जब मोह उत्पन्न होता है तो इससे मुक्ति कैसे संभव है? एक बात जो इस संबंध में विचारणीय है वह यह है कि गुणों के क्रम से अहंकार भी सात्विक, राजस और तामस होता है।

.... गुनहू क्रम सौं अहंकार गनी। छं० २४, स्कं० ५

स्पष्ट है कि शनैः शनैः तामस और राजस अहकार का शमन करके सात्विक अहंकार को प्रबल बनाने में साधक की साधना है। किन्तु सात्विक अहंकार से भी तो मोह उत्पन्न हो सकता है जिसके लिये महामाया की आराधना अपेक्षित है।

आधुनिक शब्दावली का प्रयोग करें तो कहा जा सकता है कि व्यष्टि की सत्ता का आधार ही 'अहं' अथवा 'मैं' है। जब तक व्यष्टि की सत्ता है 'मैं' रहेगा। 'मैं' अहंकार का पर्यायवाची है। अहंकार शुभभावना-प्रेरित भी हो सकता है और अशुभभावना-प्रेरित भी, संकीर्ण भी हो सकता है और व्यापक भी, लोकहित-साधक भी हो सकता है और लोकहित-बाधक भी। लोकहित-साधक, व्यापक और शुभभावना-प्रेरित अहं को उत्तरोत्तर प्रबल बनाना तथा लोकहित-बाधक, संकीर्ण और अशुभभावना-प्रेरित अहं के शमन करने का अभ्यास करना ही साधना है। शुभ कार्य में भी अधिक वासना होने पर उस कार्य की सफलता-हेतु असन्मार्गों का अनुसरण करने की प्रवृत्ति हो जाती है—यही

सात्विक अहंकारजनित मोह है। विष्णुसंबंधी आख्यानों में जिन दुर्बल स्थलों का उल्लेख है वे इसी मोह के प्रतीक हैं।

महामाया

माया, मैया, माता, अंबा—ये सभी शब्द पर्यायवाची प्रतीत होते हैं और इस दृष्टि से मायाशब्द की व्युत्पत्ति माँ, मैया अथवा माता से मानना युक्ति-संगत है। अधिक प्रचलित अर्थ में माया शब्द भ्रम, मिथ्या, 'जो नहीं है' का पर्याय है। इस प्रचलित अर्थ के मूल में वह द्वंद्व प्रतीत होता है जिसके आधार पर पुरातन काल में समाजों का गठन मातृ-प्रधान अथवा पितृ-प्रधान हुआ था। इस विचार के मूल में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष धारणाएँ हैं। प्रत्येक जीवधारी की उत्पत्ति माँ के गर्भ से होती है। प्रत्यक्ष रूप से किसी जीवधारी की माँ को ही जाना जा सकता है। जहाँ तक पिता का संबंध है वह अप्रत्यक्ष है और उसके पिता होने की प्रामाणिकता का आधार भी माँ ही है। वीर्य को प्रधानता देने वाले व्यक्ति माँ के गर्भ को भूमि के सदृश मान कर यह कह सकते हैं कि संतति को माँ की मानना एक भ्रम है और इसी कारण जो प्रत्यक्ष है वह भ्रम है, उत्पत्ति का वास्तविक कारण तो पुरुष का वीर्य है। संभवत: इसी कारण माया का अर्थ भ्रम, मिथ्या आदि समय के प्रवाह के साथ हो गया।

इसी व्यष्टि-प्रधान विचार को जब समष्टिरूप प्राप्त हुआ तो जगत् की सृष्टि के विवेचन में प्रकृति और पुरुष का प्रादुर्भाव हुआ। मूल कारण की कल्पना में ब्रह्म और परा-प्रकृति की कल्पना हुई। निम्नलिखित पंक्तियां उस समन्वय की प्रतीक हैं जिसके बिना सृष्टि-संबंधी कोई भी विवेचन अपूर्ण था—

अविनाशी विभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप।
चेतन-सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यकरूप॥ छं० २. स्कं० १

जगत्-जननी महामाया जगदंबा है, सब की माता है, शक्तिस्वरूपिणी है। उन्हीं की आराधना से संसार में सब कुछ संभव है।

सत्, रज, तम की साम्य-स्थिति में सृष्टि का मूल कारण महामाया है एवं इन गुणों की विषमता में ही सृष्टि की उत्पत्ति निहित है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश, सरस्वती, लक्ष्मी और भवानी-रूपिणी शक्तियों से युक्त होने पर ही शक्ति-सम्पन्न होते हैं।

बीजमन्त्र

देवीचरित के विभिन्न आख्यानों में बीजमन्त्रों का उल्लेख हुआ है। उदाहरण के लिये तृतीय स्कंध में यह आख्यान आया है कि सत्यव्रत तपस्वी और सच्चा तो था, किन्तु था मूर्ख। उसके मुख से 'ऐ ऐ' इस सरस्वती के बीजमन्त्र के उच्चारित होते ही उसके मेधावी बनने का श्रीगणेश हो गया। इसी स्कंध में यह आख्यान भी आया है कि राजकुमार सुदर्शन शैशव-अवस्था में 'क्ली' अक्षर का जप करता रहा। अनुस्वाररहित 'क्ली' देवी का उत्तम बीजमन्त्र है। इसके प्रभाव से उसके सभी कार्य सिद्ध हुए। देवी ने प्रत्यक्ष सहायता भी की। इसी प्रकार और भी बीजमन्त्र हैं।

इन बीजमन्त्रों के संबंध में अधिक लिख सकना संभव नहीं है किन्तु इतना स्पष्ट है कि विशिष्ट ध्वनियां मस्तिष्क के शिराजाल में विभिन्न प्रकार के स्पंदन उत्पन्न करती हैं। यदि कोई शिशु मूढ हो, अस्थिर चित्त हो अथवा उसमें किसी अन्य प्रकार की मानसिक या बौद्धिक त्रुटि हो और यदि अभीष्ट प्रकार का स्पंदन शिराक्षेत्र में उत्पन्न किया जाय तो संभव है कि जिस प्रकार की उपलब्धियों का आख्यानों में उल्लेख है—उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु यह प्रयोग से संबंधित है। प्रयोग द्वारा ही किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचा जा सकता है कि किस आयु में, कितने समय तक और किस प्रकार इन बीजमन्त्रों का जप करने पर कितनी सफलता प्राप्त हो सकती है।

काव्यसंबंधी साधारण विवेचन

देवीचरित के रचयिता चारण थे, अतएव उनकी रचना में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप आजाना स्वाभाविक है। जहां-जहां युद्धों, मनोरम स्थानों तथा शृंगार आदि का वर्णन आया है कवि की मुक्त लेखनी विशद चित्रण करने में [illegible] हुई है।

देवीचरित एक विशाल ग्रंथ है जिसमें बारह हजार से अधिक विभिन्न प्रकार के छंद हैं। देवी-भागवत के अनुक्रम को अपना कर इतनी बड़ी रचना करना ही इस बात की साक्षी है कि श्री कुशलसिंहजी उच्च कोटि के कवि थे।

देवीचरित की भाषा ब्रज और डिंगलमिश्रित है जिसमें स्थानीय [illegible] के शब्द भी यथास्थान आये हैं। इसमें दोहा, सोरठा, हरिगीतिका,

त्रोटक, नाराच, कवित्त, उधोर, मुक्तादाम, द्वं अखरी, भुजंगप्रयात, पद्धरी आदि विभिन्न प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है। विषयविवेचन के प्रसंग में जो उद्धरण दिये गये हैं उनसे काव्य-शैली एवं भाषा की कुछ झलक प्राप्त हो जायगी। यदि रस और भाषा-संबंधी सोदाहरण विशद विवेचन किया जाय तो भूमिका का कलेवर बहुत अधिक बढ़ जायगा। इस आशंका से हम इतना लिख कर ही संतोष कर लेते हैं।

संपादन-संबंधी संकेत

संपादन करने में मूल प्रति के पाठ को अपनाया गया है। अर्थ की संगति बैठाने की दृष्टि से पदच्छेद करने में आवश्यक सावधानी बरती गई है। प्रतिलिपि में निम्नलिखित न्यूनतम संशोधन किये गये हैं—

१. अनुस्वार में आवश्यकतानुसार ँ का चिह्न लगा दिया गया है।

२. कहीं कहीं गति-भंग दोष को दूर करने के लिये 'ई' की मात्रा के स्थान पर 'इ' की मात्रा करदी गई है।

३. जहां मूल प्रति में अक्षर स्पष्ट नहीं हैं अथवा अक्षर मिटे हुए हैं वहां [ ] का चिह्न लगा दिया गया है।

४. मूल प्रति से जहां पाठ-भेद किया गया है वहाँ पाद-टिप्पणी में इसका स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है।

५. प्रत्येक पृष्ठ के अन्त में पाठकों की सुविधा के लिये कुछ पाद-टिप्पणियाँ दी गई हैं।

इसी प्रसंग में देवीचरित की मूल प्रति के विषय में भी कुछ निवेदन करना आवश्यक है। यह मूल प्रति लेखक के वंशजों ने बड़ी अच्छी तरह से सुरक्षित करके रखी, परन्तु फिर भी प्रारंभ के कुछ पृष्ठ किसी कारणवश क्षत-विक्षत हो गये, अतः उनको उन्होंने पुनः लिखवाकर मूल प्रति में जोड़ दिया। प्रति में लिपिकार ने कुछ वर्तनी की अशुद्धियां अवश्य करदी हैं, परन्तु कुल मिलाकर प्रति शुद्ध और सुन्दर है। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ने इस प्रति को संगृहीत करके हिन्दी के लिये बहुत उपयोगी कार्य किया है, क्योंकि यही एक मात्र ग्रन्थ है जो कि देवी के चरित्र को आधार बनाकर लिखा गया है।



बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

प्रथम स्कंध

श्रीगणेशाय नमः । श्रीसरस्वती नमः । श्रीगुरुदेवाय नमः ।

अथ श्रीदेवीचरित ग्रंथ राजश्री जागीरदार बुद्धसिंहजी चारन सँडायच-मोंजा मदौरा रियासत नरसिंहगढ़ सो० आ० कृत प्रारंभ—

दोहा— श्रीसरस्वति गणपति सुमिर, बरजत विघन[1] विशाद[2]।
मङ्गल - हित बन्दत मुनी, यह परिपाटी आद[3] ॥१
अविनाशी विभु अलख अज, आतम- ब्रह्म अनूप।
चेतन - सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यक[4] रूप ॥२
युगल नाम इक जानिये, मङ्गलरूप महाँन।
भरम छाँड़ जिय परम भज, नित्त[5] लहहु निर्वान ॥३

कवित्त— करनी तें इन्द्र सुरवृन्द हू सुधारचौ स्वर्ग,
करनी तें शेश[6] सीस धार राखी धरनी।
करनी-प्रभावहू से रंक ही तें राव होत,
करनी की कर्मकथा वेद-हू नें बरनी।
द्रव्य[7] देह धार सोई करनी प्रगट भई,
चारन के वंश आय तारन-हू तरनी।
ताहि को उचारें नाम बिघन विलाय जाय,
मङ्गल को करन अमङ्गल की हरनी ॥४

दोहा— इही समय बिच अवतरी, करनी नाम कहाहि।
जङ्गलधर गङ्गाजु ही, जग कीरति है जाहि ॥५
देवल देवी दूसरी, प्रगटी देस पछाहि[8]।
देवल करनी द्रव्य दुति[9], जग पुज्जत[10] है जाहि ॥६

---

१ विघ्न। २ विषाद। ३ आदि। ४ एक। ५ नित्य। ६ शेष। ७ दिव्य। ८ पश्चिम में। ९ द्युति। १० पूजत।

हिंगलाज अवतार हुय[1], सकव[2] भल्ल-गृह सोय ।
इस्ट[3]देव मानत यहै, मङ्गल-दायक सोय ॥७
करनी वन्दन चरण कर, ध्यान सुदेवल धार ।
आद्या देवी ईश्वरी, वरनत कथा विचार ॥८
निमसारन[4] में आन निथ, सूत कही समुझाय ।
सोनकादहू श्रुत सुनी, सबहि रिषन समुदाय ॥९
भाषा देवी-भागवत, पाँवन कथा प्रवाय ।
कहत सोई बिस्तार कर, छन्द-बन्द चित चाय ॥१०

छन्द द्वैपायन श्रीव्यास विमल दुति, बिय[5] कर जोर चरन तिह बन्दति ।
हेमसरी—प्रथम व्यास संख्या कहि पाछै रुचिर कथा देवी चित राचै ॥११
†प्रथम व्यास ब्रह्मा परजापति[6], शुक्र व्यास अरु व्यास बृहसपति ।
सविता मृत[7] मघवा वासिस्टहु[8], सुनहु सारसुत[9] व्यास सपस्टहु ॥१२
[ता पाछे][10]भये व्यास त्रधामा[11], त्रवृख[12]व्यास किय काज तमाम्ब ।
भरद्वाज अरु अंतरिक्ष भय, धर्म त्रयारुण[13] व्यास धनंजय ॥१३
मेधातिथ वृती अत्री गोतम, उत्तम हरियातमा[14] अति उत्तम ।
वेनों वाजश्रवा[15] किये वरनन, पुन सुन लेउ सोस पुस्पायन[16] ॥१४
त्रनहि विन्दु[17]भार्गव अरु सक्ती, जात करन[18] किय पावन जगती ।
सत्ताईस व्यास उत्तर सुन, द्रड मति भये व्यास द्वीपायन[19] ॥१५
सतवती पारासर संभव, भये अवतार विस्नु तारन भव† ।
अस्टादसहु पुरान उचारे, सुभग ज्ञान विज्ञान सुधारे ॥१६
‡जिनके नाम अनुक्रम जानहु, मच्छे[20] मारकानडेय[21] प्रमानहु ।
विमल भागवत काया वखानी, सुधा समान श्रवन सुखदानी ॥१७
अरु भवस्य[22]ब्रहमंड अखंडत, मुदित ब्रह्म-वैवृत किय मंडत ।
मत्स्य और वामन वाराहा, विष्णु वायु अग्नी निरवाहा ॥१८

---

१ हुआ । २ सुकवि । ३ इष्ट । ४ नैमिशारण्य । ५ बिय=दोनों । †-† चिह्नान्तर्गत २८ व्यासनाम । ६ प्रजापति । ७ मृत्यु । ८ वसिष्ठ । ९ सारस्वत । १० प्रति में नहीं है । ११ त्रिधामा । १२ त्रिवृष । १३ त्रय्यारुणि । १४ हर्यात्मा । १५ वेन वाजश्रवा । १६ सोम शुष्मायण । १७ तृणबिन्दु । १८ जातुकर्ण । १९ कृष्ण द्वैपायन । ‡३८ १७ से १९ तक अट्ठारह पुराणों के नाम । २० मत्स्य । २१ मार्कण्डेय । २२ भविष्य ।

नारद पद्म लिंग जिह नामा, गरुड पुराँन कथा गुनग्रामा।
कूरम[1] और सकन्धहु[2] कीना, परम अरथ हित जान प्रबीना ॥१९
†उपरानन बरनै जिन येते, सनतकुम्हार[3] नृसंघ[4] सहेते।
नारदीय शिव[5] जान निधाँना, पुन दुरवासा[6] कपिल पुराँना ॥२०
मानव और ओसनस[7] मानहु, बारुन काली साम्ब बखानहु।
नन्दीश्वर सूरज कों जानौ, पारासर आदत्त[8] प्रमानौ ॥२१
माहेश्वर भागवत महाना, पुन वासिस्ट पुराँन प्रमाना।
सर्ब पुरांन सर्ग प्रति - सर्गा, बंस कथा मनवंतर बरगा ॥२२
चर बंसानु-चरित जुत[9] बरनत, पुन पंचहु लक्षन सोइ परनित।
सक्ती निरगुण अगुण-स्वरूपा, रुचिर देह धारिक सुच-रूपा ॥२३
यह पुरांन महि[10] सर्ग उचारै, विदुष भेद बहु रीत बिचारै।
विश्व करत उतपत्ति बिरंचन, पुन हरि करत ताहि कौ पालन ॥२४
शिव सृष्टी ताही संघारै यह प्रति-सर्ग विचार उचारै।
बंस सोम अरु सूरज वंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन[11] अंसी ॥२५
इति बंसहु की कथा अनेकहु, इही बंस कहियत अवरेखहु।
मनवंतर स्वायंभुव मानहु, इन आदक और अनमानहु ॥२६
[इहि मन][12]वंतर नाम उचारै, विवध भाँत गन समय विचारै।
तिन मनुअन कौ वंस तहां ही, किय बरनन [इहि क][13]था कहां हीं ॥२७
इहि बंसाँनुचरित्त[14] अनूपहु, लख पुरान इहि तत्व सुलेखहु।
स्याम[15] अथरबन[16] रघु[17] जजुसारा[18], चार वेद खट आय बिचारा ॥२८
अक्षर अंक सिखावन शिक्षा, पुननिन[19] मिलवन कल्प प्रतक्षा।
सब्द अर्थ पहचांन सु कीजै, कवि-मति सौं व्याकर्न[20] कहीजै ॥२९
सब्द चाल जुत छन्द सकोई, जोतिस[21] तिथि नक्षत्र गृह जोई।
आवै बोलन जुक्ति अभंगा, इहि निरुक्त जानहु खट अंगा ॥३०
वेद च्यार कौ सार विचारहु, उपनिसदन[22] सारह ओंकारहु (ॐ)।
वेदव्यास के वचन विचारा, अमृत-पाँन तें सरस अपारा ॥३१

---

१ कूर्म। २ स्कन्द। ३ सनत्कुमार। ४ नारसिंघ। ५ शैव। ६ दुर्वासा। ७ औशन। ८ आदित्य। ९ जुत। †पद्य २० से २२ तक उपपुराण-नाम। १० में। ११ दैत्य। १२-१३ प्रति में नहीं है। १४ चरित्र। १५ साम। १६ अथर्व। १७ ऋग्। १८ यजु। १९ पुण्यों। २० व्याकरण। २१ ज्योतिष। २२ उपनिषद।

विहत कर्म मुनिवर विज्ञानी, धरम-धुरंधर परम धियानी।
अमित उदार विष्णु अवतारा, विविध रीत नय नीत बिचारा ॥३२
सरसति[1] तटनी तीर सुहावन, परम पुनीत महाथल पावन।
बैठे जह मुनिवर विज्ञानी, निज आस्रम जीवन निर्वानी ॥३३
सुभग सुहावनी पावनि सूरत, मनहु सांत रस माधुर मूरत।
जहां वरती इक बात जबै ही, ताकह देखी व्यास तबै ही ॥३४
दुइ चिटिका पक्षी पति दारा, चाँचन तनय चुगावत चारा।
चुम्बुन करत पुत्र मुख चितवत, रहत सदाँ सोइ प्रीत रीत रत ॥३५
व्यास देख इहि चरित विहंगम, भये मोहबस छाय हृदय भ्रम।
धर मन ध्यान धीर्य तव धरहू, करत विचार हृदय कछु करहू ॥३६
स्वारथ[2] विगत विहंगम सुत सों, माया मोह लख्यौ जिह मतिसों।
उपजी व्यास हियें इहाँ आई, विना पुत्र जग सुन्न[3] बसाई ॥३७
पालन लालन सुत सुख प्रीती, पूरी लखी न रीत प्रतीती।
वेद पुरान अनेक बखाना, सार सवन को एक समाना ॥३८
पावै गत[4] एकहु नहि प्रानी, पिंड-दान दीनै विन पानी।
जीवत सुख सुत को नहि जान्यौ, मृतक अदेसौ[5] सोउ उर मान्यौ ॥३९
विकल भई मति व्यास बशेशा[6], इहि उपजी मन क्षोभ अशेशा[7]।
व्यास विकल हुय तनय विचारा, नारद आये व्यास निहारा ॥४०
पांव अरघ[8] वंदन कर प्रीती, नारद व्यास सनातन नीती।
नारद कही व्यास सों[9] नीकी, जांन विविध घवराहट जी की[10] ॥४१
किहि कारन मुनि विकल कहीजें, लाभ सकल मन वांछत[11] लीजें।
व्यास कही नारद सुन वानी[12], सुनियें मेरी वात सुज्ञानी ॥४२
चिन्तातुर हम इही विचारा, सुत विन सकल सुन्य[13] संसारा।
कौन देव समरथ[14] इहि कहिये, लाभ पुत्र को तासें लहिये ॥४३
नारद कही व्यास सुन लीजें, कर विचार साधन पुन[15] कीजें।
बहु दिन की इक कथा बखानत, सावधान होय सुनहु सोय श्रुत ॥४४

---

१ सरस्वती। २ स्वार्थ। ३ शून्य। ४ गति। ५ अंदेशा = आशंका।
६ विशेष। ७ अशेष। ८ अर्घ। ९ प्रति में ताहि। १० हृदय की। ११ वांछित।
१२ वाणी। १३ शून्य। १४ समर्थ। १५ पुनि।

छन्द पद्धरी

बिध जुक्त कही नारद विचार, सुन लेहु व्यास इहि समाचार।
विध[1] गये विष्णु के लोक बीच, मधुसूदन बैठे आँख मीच ॥४५
विधि-पूर्वक पूंछी ध्यान बात, तुम नाभ[2] कमल तें प्रगट तात।
हम रचत जगत कों सहित हेत, दृढ़ ज्ञान सोइ तुम सदाँ देत ॥४६
आप तें बड़ो को देव आन[3], धर बैठे ताको हृदय ध्यान।
बैकुंठ[4] कही सुनिये बिरंच, राखहुँ नहिं हिय में व्याज[5] रंच[6] ॥४७
राजसी सक्ति ले तुम रचंत, सातुकि हम पालन अनुसरत।
मृत्युंजय सक्ती सृष्ट माहिं, तामसो पाय संघरत[7] ताहि ॥४८
बिन सक्ति[8] तुमहु हम शिव विशेस[9], लोकेश काज पावहिं न लेस[10]।
सोवत हम सेज्या शेश[11] सोय, हिय विगत ज्ञान तें विवस होय ॥४९
कबहूं पुन[12] सूकर धरत काय[13], कहुं कच्छ मच्छ वामन कहाय।
तिरियक योनी लहि हमहु तात, बध करत दनुज सोइ जग विख्यात ॥५०
इन्दरा सयन सुख छाँड ऐंम[14] नित भ्रमत रहत क्यों सहित नेंम[15]।
मनिद्वीप त्रिया इक प्रथम मित्त[16], विष्णू हम ह्वै गये सहित बित्त ॥५१
भगवती - कृपा कौ पाय भाव, पुन भये पुज्य[17] ताही पसाव।
मधु कैटभ दानव सोइ मदंध, काट्यौ हम ताकौ तबहिं कंध ॥५२
बस माया कीन्है तिहो बेर, जब दुष्टन कों हम किये जेर।
तुम द्रगन[18] लखी सब सुरन तथ्थ[19], मुर्वी धनु कट्यौ हमहि मथ्थ ॥५३
सिर तुष्टा जोर्‌यौ जबहि सोय, हम उठे हयानन-रूप होय।
सुनियें अज नाहिन हम सुतंत्र[20], परियाय पिछानहु[21] पारतंत्र ॥५४
विधि सन इमि भाखी विष्णु बात, महिमा इहि जानहु आद मात[22]।
आराधन देवी करहु आप, जिग होंम, तथा तप मंत्र जाप ॥५५
नारद सुनाय आख्यान नीत, पुन व्यास हृदय आनी प्रतीत।
इहि सुनी वादरायन[23] उदंत[24], सिर परबत[25] पहुचे महाँ संत ॥५६
सोनकादिकन सों कह्यौ सूत, उर बाढ्यौ विस्मय अत अभूत।
दाँमोदर सुनियत आद देव, भल रीत पिछानहु जास भेव[26] ॥५७

---

१ विधि=ब्रह्मा। २ नाभि। ३ अन्य। ४ वैकुंठ में रहने वाले विष्णु। ५ कपट। ६ किंचित्। ७ संहार करते हैं। ८ शक्ति। ९ विशेष। १० लेश। ११ शेष। १२ पुनि। १३ काया शरीर। १४ इमि=इस प्रकार। १५ नियम। १६ मित्र। १७ पूज्य। १८ दृगों से। १९ तथ्य। २० स्वतंत्र। २१ पहिचानों। २२ आदिमाता। २३ द्वैपायन व्यास। २४ वृत्तांत। २५ पर्वत। २६ भेद।

सिर कट्यौ प्रतंचा[1] तिहि सधीर, पुन देवन के उर भई पीर।
सब कहहु कथा समुझाय सोय, हमहू विसमय तें विगत होय ॥५८
कहि तबहि सूत दै सुनहु कान, श्रोता सब होवउ सावधान।
बीती कोउ वासर प्रथम बात, संग्राम कियौ हरि दनुज साथ ॥५९
अनुबच्छर[2] बीते अयुत येक[3], बपु श्रमत भये तातै विसेक[4]।
अति भये प्रमीला लीन अंग, सुभ सांत रूप तम श्रम प्रसंग ॥६०
थिर चित्त देख साँमान थान[5], सुखपूर्वक कीनै समाधान।
मन मुदित पद्म आसन मुरार, धनुकोटी बैठे कंठ-धार ॥६१
सब देव रुद्र विध सुर समाज, कछु सप्ततंतु कौ करन काज।
बयकुंठ[6] गये पूंछन विचार, मध[7] ग्रेह मिले नाहिन मुरार ॥६२
सुर ध्यान-जोग तें लख्यौ साथ, निर्भय होय पोढ़े रमानाथ।
जह[8] पहुचे आतुर सबहि जाय, निद्रागत देखे सुर-निकाय ॥६३
इहि अवसर कछु कीन्हौ उपोह, मन विभ्रम छायौ अधिक मोह।
पुरहूत[9] कही तब मन उपंग, भव[10] करहु जतन ह्वै नीद भंग ॥ ६४
दीनौ इहि उत्तर महादेव, भल सोचहु हिय में धर्मभेव[11]।
पुन निद्रा मेंटन महापाप, कछु हम तौ नहिं बोलहै कदाप[12] ॥६५
सुन सक्र[13] कियौ विध[14] सों सबाल, कछु और जतन[15] कीजै कृपाल[16]।
बिब सोचे हिय तें जुत बिबेक, कीनी उपनिद्रा प्रगट केक ॥६६
कहि देवन कौ तुम करहु काज, मुरवी[17] धनु काटहु महाराज।
ज्याघात-सब्द ह्वै है जरूर, दामोदर[18] निद्रा[19] होय दूर ॥६७
बम्री[20] तब बोली हिय[21] बिचार, यैसौ न करहु हम अनाचार।
सुप्तक जगाय कर कथा छेद, भरतार नार[22] डारै सुभेद ॥६८
पितु मात पुत्र कौ हथन[23] प्यार, येते सब कहियत अनाचार।
कह लाभ हमहिं इहि करहिं काम, सुनकें हिय बोले लोक स्याँम[24] ॥६९
भुव[25] होय पतित सोइ लेहु भक्ष, पावसा आद जानहु प्रतक्ष।
जिग[26] करन काज देवन जरूर, द्रुत करहु हमारौ दुख्य[27] दूर ॥७०

१ प्रत्यंचा। २ अनुवत्सर। ३ एक। ४ विशेष। ५ स्थान। ६ बैकुंठ। ७ मध्य। ८ जहाँ। ९ इंद्र। १० महादेव। ११ भेद। १२ कदापि। १३ इन्द्र। १४ विधि—ब्रह्मा। १५ यत्न। १६ कृपालु। १७ मौर्वी। १८ विष्णु। १९ निद्रा। २० बम्री = दीमक। २१ हृदय। २२ पति—पत्नी। २३ हत करना—नष्ट करना। २४ स्वामी। २५ भूमि। २६ यज्ञ। २७ दुःख।

बलमीक[1] पितामह लहि विचार, धनु-अग्रभाग कौं चित्त धार ।
सिज्या दिये भक्षन लारा साथ, निहसंक[2] होव को रमानाथ ॥७१
घन प्रलय जेम[3] हुय प्रबल घोर, भइ दूर प्रतंचा प्रबल घोर ।
छित होय चतुर्दस चहूँ छोभ[4] , उलकान पात बाढी असोभ ॥७२
चल चंड प्रभंजन दिसा चार, डगमगत भूमि गिर पर दरार ।
खलभलिय[5] सात सामुद्र खीर, भइ अंधकार जग अधिक भीर ॥७३
मकराकृत कुंडल सहित मथ्थ, उड गयौ सुरन पायौ न अथ्थ[6] ।
उतमंग[7] हीन हरि देख अंग, भयभीय भये सब चित्त भंग ॥७४
कर रोदन हाहा रव करंत, सब रमानाथ के परम संत ।
अच्छेद अधोक्षज तनि अभेद, भवतव्य कछू पायौ न भेद ॥७५
हरि कौ धनु तूट्यौ पनन्चहूत, बिधि रुद्र आदि जान्यौ न ब्यूत[8] ।
कहाँ जाँय करें कोसौं पुकार, निरबल[9] हुय बैठे निराधार ॥७६
लख सके पलादन[10] असुर लाग, इहि देवन मिल कीनौ अभाग[11] ।
कासीन कऊ भुनकीन फाँक, आपकी अँगुरिया फुटी[12] आँख ॥७७
सुर येक[13] विष्णु तें ह्वै सनाथ, इक[14] नाथ बिना सब ही अनाथ ।
बिलपत सब मिल-मिल देव वृंद, द्रग[15] देख कह्यौ गरु[16] छाड़ द्वंद ॥७८
दहु जानहु सम पौरुष दईब[17], जुर[18] जतन करहु थिर[19] राख जीव ।
सुन चित्र[20] सिखंजक कही श्रौन, मघवान[21] दियौ उत्तर महान ॥७९
निरसंसय पौरुष उर निहार, ध्रक[22] क्रिया प्रतज्ञा कहत धार ।
हरि करन[23] त्रान तें भये हीन, द्रग लखत देव सब भये दीन ॥८०
बिध युक्त बात बोलत विचार, है ईस अधीनहि हौनहार ।
बोले विरंच बाचा बहोर, माहेश विडार्यौ सीस मोर ॥८१
दुर[24] बैठ्यौ पंकज मध्य देस[25], श्रीचिन्ह सहित सोही सुरेस ।
त्रपुरारि बुद्धि बिपरीत तौर, मेहन बिन बैठे सुरन सौर[26] ॥८२
सब उमाँनाथ जानहु सुभाय, पुन लौंन-उदध में परचौ पाय ।
बन आवै जैसी तज विराम, कीजिये समय अनुसार काम ॥८३

१ दीमक। २ निःशंक। ३ जिमि। ४ क्षोभ। ५ खलबली। ६ अर्थ, आदि। ७ उत्तम-अंग=मस्तक। ८ ब्योंत-उपाय। ९ निर्बल। १० दैत्य। ११ अभाग्य—भाग्यहीनता। १२ फूट गई। १३,१४ एक। १५ दृग। १६ गुरु, बृहस्पति। १७ देव। १८ मिलकर। १९ स्थिर। २० चित्त। २१ इन्द्र। २२ धिक्कार। २३ कर्ण। २४ छिपकर। २५ मानसरोवर प्रदेश में। २६ शोर।

जग में शंचर धर[1] जिते जीव, सुख दुख्य[2] उभय होवत सदीव[3] ।
वेदन सौं[4] बोले पुन बिरंच, इहि अमर काज जानहु उदंच[5] ॥८४
जग जननी माया रूप-जोत[6] , इहि सबहि जक्त[7] तातें उदोत ।
शुर[8] करहु ध्यान साधन समाध, बहु वेद करहु तुम अर्थवाद ॥८५
प्रत छन्द धार तहाँ छन्द पेख, बर्नना[9] करन लागे बिशेख ।

सोरठा— हाथ जोड़[कर]ध्यान(अ),आद सक्ति निरंजनी ।
माता करहु सहाय, सबहि देव आधीन तव ॥८७

छन्दवद्ध ताराच वेद स्तोत्र

नमो नमो निरंजनी समस्त बिस्व स्वामनी,
अदभ्र् दभ्र् जोव जे जनेसु जक्त जाँमनी ।
समष्टि व्यष्टि रूप तूं अद्रष्टि की प्रभावनी,
रचे मलष्ट मष्ट के प्रविष्ट द्रष्ट पावनी ॥८८
त्वमेव भूत भूँमका प्रमेय प्राँनदा[10]तुही,
क्षिमाँ[11]उमा रमाँ क्षती शशक्ति सक्ति[12]तूँ सही ।
समाध ध्यान साधना सिथती[13] तुहीं अतिस्थरी,
प्रथग्विधी प्रकाम[14]पुज्ज[15]मातु तूं महेस्वरी[16] ॥८९
अलिष्ट में अलिष्ट तूँ वलिष्ट में बलिष्टता,
सपष्ट[17] में सपष्ट तूँ अधिष्ट में अधिष्टता ।
अकार औ उकार पै मकार अर्ध मात्रका,
बिरंच बिष्णु बाँमदेव अद्वती[18] अमात्रका ॥९०
सपक्ष दक्ष तूँ सदा प्रतक्ष पिंड पोषनी,
अलक्ष लक्ष आक्रती समक्ष ताप सोखनी ।
हृदय अखंड हेय ज्ञाँन गृ(गे)य सृ(श्रे)य सिद्धदा ।
अजेय अप्रमेय तूँ विधेय मंत्र वृद्धिदा ॥९१
अनेक रूप एक तूँ अनेक नाम आवली,
अनेक देव शेव में भूमें मनो भूमावली ।

१ शरीरधारी, पृथ्वी पर विचरने वाले । २ दुःख । ३ सदैव । ४ से । ५ उदंत । ६ ज्योति । ७ जगत् । ८ सुर । ९ वर्णन । १० प्राणदा । ११ क्षमा । १२ सशक्ति । १३ स्थिति । १४ प्रकाश । १५ पुञ्ज । १६ महेश्वरी । १७ स्पष्ट । १८ अद्वितीय ।

प्रकाश ज्ञाँन आसपास बनास कौं बिनासनी,
अगाध तू अबाध तू प्रमाद कौं प्रनासनी ॥९२
स्वछन्द मात तू सदाँ अनन्द कौं उपावनी[1],
बिनोद के बिकास सौं सदां तुहीं सुहावनी।
असाध[2] आध[3] व्याध कौं समाध हेत साधनी।
अभेद तू अछेद तू अखेद तू अराधनी ॥९३॥
घटाह के मठाह के कटाह इंड केकरी।
प्रवाह पंच तत्व में सुभाव होय संचरी।
अनेक भेक[4] आकृती अनेक जीव ऐरकं।
रमाय तू रही रमा घुमाय घेर घेर कैं ॥९४॥
अचिन्त चित्त आपने रचंत केक[5] रूप कौं,
अनंत संत उद्धरे सुचित कैं स्वरूप कौं।
पवित्रहू चरित्र कौं विचत्रहू बिचार कैं,
गहैन ज्ञान गमता[6] पहै[7] न वार-पार कैं ॥९५॥
त्वमेव पाय तर्पणा समर्पणा सुधार कौं,
करै न कर्पणा[8] कहूं विसर्पणा बिकार कौं।
सुसप्त[9] जागृ[10] स्वप्न वस्थ[11] सत्त रूप सावरी,
अलोक लोक एकसी विभाँत[12] हू बिभावरी ॥९६
बनाय चार खांन वानि पंच प्राँन पालनी,
दरिद्री देवहू दुधा करै सदां क्रपालनी।
बिजोग[13] औ शँजोग[14] बीच भोग जोग भ्यासनी,
सुधर्म कर्म सत्य पर्म[15] प्रांन को प्रकाशनी ॥९७
सदस्क[16] जोबना सदाँ सदस्क देह सुन्दरी,
रचाय स्टष्ट में रमें उपाय कें अन्दरी।
अनंग मेखला अलो अली अनग आतुरी,
अनेक शेव देवियाँ चितै प्रशाद चातुरी ॥९८

१ उत्पन्न करने वाली। २ असाध्य। ३ आधि। ४ वेष। ५ अनेक। ६ गंभीरता। ७ प्राप्त करे। ८ कृपणता। ९ सुसुप्ति १० जागृति। ११ अवस्था। १२ अनेक भाँति या प्रकार से। १३ वियोग। १४ संयोग। १५ परम। १६ सदा।

श्रुती पुराँन सुंमृती उदार नीत उद्धरी,
मृजाद सौं अजादि लौं प्रजाद रीत पद्धरी।
अभाव भाव ईक्षणा[1] प्रवाह पुन्य पार सौं,
बंधे अनेक बन्ध में उपाय जीव आप सौं ॥९९
त्वमेव मात पुष्टि तुष्टि मञ्जुला मनोहरी,
सुधा श्रधा[2] दया सुसांति उगृ(ग्र) कांति ईश्वरी।
सती सती धृती महांन प्रक्रती उरा पुरा,
सुभा अनूप सोहनी बिमोहनी विसंभरा ॥१००
बिलंभ बित्त बिस्व कौ वितीत दंभ बिक्रिया,
पसाव[3] पाव पायकें धरंन ध्यांन धि क्रिया।
करै प्रपूर्ण काँमना ललाम कञ्ज लोचनी,
प्रकास पुञ्ज तेज कौ मलीन अंघ मोचनी ॥१०१
जनायहू जनाय ना गनाय कै बहू गुनी,
अनाद अंवका अछेह अंबका तिलोचनी।
सहाय काज शंकरै सुर्व सर्व संजुरै,
वरात[4] हीन देख विष्णु भीत चित्त में भरे ॥१०२
लखै तऊ लखी न जाय अग्नु कस्त[5] आदकौं,
चरन्न[6] की सरन्न[7] चाह वीसरै[8] विवाद कौं।
सुधा समुद्र वीच साल नित्त तूं निवासिनी,
विलास वेश विस्तरै हुलास चारु हासिनी ॥१०३

दोहा— वेद करी अस्तुत[9] तवै, आराधन पुर आँन।
श्रीपति करन सहाय कौं, विमल भई नभ-वांन[10] ॥१०४
इहि स्तोत्र मम उच्चरहि, पुन करहै कोउ पाट[11]।
महां ताप संकट मिटहि, उतपाटन उच्चाट[12] ॥१०५
आद-देव है विष्णु यह, पालत सृस्टी पोख।
कट्यौ सीस कोउ कारना, देवन नहि तुम दोख ॥१०६

१ इच्छाएं। २ श्रद्धा। ३ कृपा। ४ मस्तक। ५ किंचित्। ६ चरण।
७ शरण। ८ विसरना=भूलना। ९ स्तुति। १० आकाशवाणी। ११ पाठ।
१२ उच्चाटन।

रमाँ देख मुख रहस[1] सों, हरी हँसे कँहु हेर।
प्रकृत[2] ताँमसी पाय पुन, बिकल भई तिहि बेर ॥१०७
अच्युत सिर धरतें अलग, होंनहार बस होय।
कहे इन्दरा[3] को कट्यौ, श्राप प्रतापहि सोय ॥१०८
बासर कछु बीतें जबै, ह्वैहै अरथ[4] तुम्हार।
बिबुध सुनहु इहि हेत से, भये हयग्रीव भुवार[5] ॥१०९
दरसन हम ताकों दियौ, वह माग्यौ बर एहु[6]।
हम सद्रस[7] मोकह हनै, देवो वाचा देहु ॥११०
तथा ग्रस्तुतरि कह तहाँ, गयौ कह्यौ सोइ ग्रेह।
काल पाय बिग्रह करहि, सुरन नांहि संदेह ॥१११
त्वष्टा[8] हय सिर ताहितें, जोरहु विष्णु जगाय।
सुफल होय कारज सकल, नीत रीत इहि न्याय ॥११२
कह्यौ गिरा तैसौ कियौ, समुझ सबै सुर साथ।
जागे श्रीपति नींद जिम, सबही करत सनाथ ॥११३
जब मार्‌यौ हरि जाय कैं, हयग्रीवा हयग्रीव।
देवो के वरदान तें, सुरन सिसांयस[9] दीव[10] ॥११४
सौंनकाद सुन सूत सों, सबही परम सयान।
मधु कैटभ के मरन कौ, अरु[11] पूछ्यौ आख्यान ॥११५
सौनकाद सों[12] सूत कहि, सुनहु चित्त दै सोय।
कथा बिबिध बिध कहत हूँ, जुक्त उक्त हिय जोय[13] ॥११६
पाँच ज्ञान इन्द्री प्रगट, उत्तम दोय अनूप[14]।
सुनैं श्रवन लोचन सुलभ, रुचर लहै सोइ रूप ॥११७
श्रवनहु तीन प्रकार सौं, सातुक[15] राजस सोय।
तांमस जानहु तीसरो, कह कोबिद सब कोय ॥११८
बेद सास्त्र आपत[16] बचन, ईहि सातुकि अभिराम।
राजस साहित[17] श्रीरमन, ता हित कथा तमाम ॥११९

---

१ रहस्य। २ प्रकृति। ३ लक्ष्मी = शक्ति। ४ अर्थ = कार्य। ५ भूमि पर। ६ यह। ७ सदृश। ८ एक देवता। ९ साँस। १० दी। ११ और। १२ सों = से। १३ देखकर। १४ अनुपम। १५ सात्विक। १६ आप्त। १७ साहित्य।

तामस जुद्ध कथा तिती. परदोखाद[1] प्रकास।
उत्तम मध्यम[2] अधम ये, अनुक्रम इतिहास ॥१२०
साहित तीन प्रकार सौं, सुक्रिया उत्तम संग।
गनका मध्यम अधम गन, सदाँ परक्रिया[3] संग ॥१२१
तामस पुन जानहु त्रधा, उत्तम उत्तम आय।
मधम[4] सुनहु बैरी [सौं][5] अधम कह मुनिवरन निकाम[6] ॥१२२
मोक्षदाय उत्तम मधम, स्वर्गदाय फल संग।
भोगदाय मध्यम[7] भनत, समुझहु त्रधा प्रसंग ॥१२३
इहि पुरांन इतिहास कौ, उत्तम गनहु उदत[8]।
सौंनकाद सुनिये समुग[9], सबहि सयाने संत ॥१२४

छन्द इहि सूत कहन लागे उदंत, सोनकादिकहु तुम सुनहु संत।
द्वै अक्षरी- बीती सोइ जानहु प्रथम बात, त्रय लोक भये जलमग्न तात ॥१२५
जगदीस जनार्दन समय जान, नागाधिप[10] संस्तर[11] थिर निदाँन।
निद्रांगत पौढ़े रमाँनाथ, तहा गिरयौ पिजूखाँ[12] श्रवन ताथ ॥१२६
मधु कैटभ दानव अत मदंध, सो भये प्रगट ताही समंध[13]।
बीते दिन केतक जल निहार, पुन लह्यौ नाहि कछु वार-पार ॥१२७
सोचे उर अंतर दनुज सोय, कहतै हम आये हमहि कोय[14]।
उतपत्त[15] भूम का कौंन आहि, जव नीय कहां लग पार जाहि ॥१२८
उर उपज्यौ विस्मय जवहि आय. विस्र भ[16] भयो कछु सक्ति भाय।
विद्दुत[17] तव चमको दुति[18] विसेस, द्रढ रूप ग्रहन किये हृदय देस ॥१२९
तिहि सब्द मंत्र कौ लह्यौ तंत[19], उरमँय प्रीत बाढ़ी अतंत[20]।
जव लागे ताकौ करन जाप, तन तै जव नासन भयो ताप[21] ॥१३०
विस्वास बढ्यौ [तव तव][22] विसेस, दरसी इक मूरत दिव्य देस।
पासांकुस पुस्तक धरै पांन[23], सरस्वती-रूप विद्या सुजाँन ॥१३१

---

१ परदोष आदि। २ मध्यम। ३ पर-स्त्री। ४ मूल प्रति में अधम है। ५ मू. प्र. में अंश अधिक होने से यति भंग होती है। ६ मू. प्र. निकाम = धर्म का युद्ध। ७ मू. प्र. मध्यम। ८ वार्ता। ९ समोद। १० शेष। ११ शय्या। १२ मल। १३ समंध = संबंध। १४ कौन। १५ उत्पत्ति। १६ विश्वास। १७ विद्युत। १८ द्युति। १९ तत्व। २० अत्यंत। २१ दुःख। २२ मूल प्रति में अस्पष्ट है। २३ पाणि = हाथ।

हिरदैं विचार भये निराहार, धर ध्यान प्रतज्ञा रहे धार।
बच्छर[1] सहस्र तप करत बीत, आकाशबाँन[2] तब भइ अभीत ॥१३२
बंचल[3] वर मागहु उभय बीर, पुन जो कछु तुम्हरे[4] हृदय पीर[5]।
वरदान देहु मोह जक्त[6] बीच, मुख मागै जब हीं होय मीच[7] ॥१३३
कहि तथा-अस्तु देवी कृपाल, तहां दनुज प्रबल भये तातकाल।
मधु कैटभ बिचरत जल मझार, चितवन प्रसिद्ध लख बदन च्यार[8] ॥१३४
थित पद्मासन थित पद्मथान, गुन सांत रूप उर उदित ज्ञान।
बैठे निहार दनु कही बात, तुम लायक आसन नहिन[9] तात ॥१३५
हम भुजा खुजावत इहीं हेत, संगर उठ कीजे बल सहेत।
समता न लरन की परम संत, तज देहु पद्म-आसन तुरंत ॥१३६
बिध सोचे उर अंतर बिसेक, ऊदम[10] उपाय नहि फुरयौ एक।
हरि करी सलाघा[11] विध सहेत, अत पाय प्रमोला सोइ अचेत ॥१३७
जागे न रमांपति हृदय जाँन, बस भये जोग निद्रा विधाँन।
जाचंन्या[12] कीनी जोगमाय, मारियें दनुज कौं जुद्ध माय ॥१३८
अथवा कि जगांवहु सुरन-ईस, सोइ करहे ताकौ दूर सीस।
बिध बिकल देख निद्रा बिहाय, उपदेस बिरंचहु दियौ आय ॥१३९
जब जाचे हरि सौं करन जोर, ठिक[13] आय दरस दिय तिहीं ठौर।
बिनये बिध हरि सौं कही बात, मधु कैटभ दानव अकसमात[14] ॥१४०
आयकें इहाँ हम कही ऐहु[15], दुति धाम ग्रेह छुड़काय देहु।
संगर नत कीजें उभय सथ्थ[16], मिल कें दल काटहि च्यार[17] मथ्थ[18] ॥१४१
हम बिकल भये इहि देख हाल, कीजिये स्याय जल-सय[19] कृपाल।
विध बात करन लागी न बार, यिक संगर की उर बोच धार ॥१४२
दनु[20] उभय आय पहुचे तुरंत, हाकार पुकारत हंत-हंत।
बिध सौं सोइ बोले उभय बीर, और की सरन ताकत अधीर ॥१४३
हन प्रथम तोहि स्याहिक[21] हकार, उभय के हाथ लैहूँ उखार।
चतुरानन दूसर भुजा च्यार, बिप्रीत[22] रीत देख्यौ बिचार ॥१४४

१ बत्सर। २ वाणी। १३ वाञ्छित। ४ तुम्हारे। ५ पीड़ा। ६ जगत्। ७ मृत्यु। ८ ब्रह्मा। ९ नहीं है। १० उद्यम। ११ मंत्रणा। १२ याचना। १३ ठीक। १४ अकस्मात्। १५ यह। १६ साथ। १७ चार। १८ मस्तक। १९ जलाशय अथवा जलशायी विष्णु। २० दनुज। २१ सहायक। २२ विपरीत।

नहिं डरत तुम्हारे सॉंग देख, द्रग लख तुमहीं हम बढ्यौ द्वेस[1]।
बिध विष्णु उभय हम उभय वीर, सक्ष करहु जुद्ध आतुर सधीर ॥१४५
विष्णु तब बोले उर बिचार, तुम उभय एक हमहू तयार।
सिर पद्म जहां अंतर समंद, मधु आय भिरयौ दानव मदंध ॥१४६
जाजुल्य[2] लग्यौ तहां होन जुद्ध, बनमाली मधु बाढ्यौ विरुद्ध।
इक थकत येक भिर परत आय, सरसावत पौरुस ज्यूं सिवाय[3] ॥१४७
देवी बिध देखत धाव दाव, भये अतुल जुद्ध दारुन अमाव।
घन प्रलय जेम रव होत घोर, हलचलत सिंधु बाढ़त हिलोर ॥१४८
अकुलाय भिरत पौरुस उदग्ग[4], उठी जल अंतर मनहु अग्ग[5]।
खलभलत जंतु बहु आयु खुट्ट, अत मच्छ कच्छ खावत उलट्ट ॥१४९
जल उछल अद्ध आकास जात, अधगिरत मनहु बरखत अघात।
उठ चले नु बुद-बुद अनंत, गर-गरी मनहु दधि छुटी गंथ[6] ॥१५०
मधुसूदन मधु जूटत महॉंन, मिल खीर[7] उदध मंड्यौ मथॉंन।
बिध लखत हियें बाढ्यौ बिरोग, जल-प्रलय बीच हुव प्रलय जोग[8] ॥१५१
परवच्छर बीते सहस पंच, अत भिरत करत आहव उदंच।
दनु उभय एक हरि समर दाव, उर विजय हेत उपज्यौ अभाव ॥१५२
इहि कारन कछु कीनो उपोह[9], मन विसमय छायौ अधिक मोह।
मधु कैटभ बोले लख मुरार, हम सौंनि युद्ध तुम गये हार ॥१५३
दासोसिम[10] कहु हम छांड़ देत, खंभ कौं होर नत[11] लरहु खेत।
हरि कह्यौ नाहिं कछु जीत हार, बिधयुक्त हृदय में लहि बिचार ॥१५४
जुग तुमहि येक हम करत जुद्ध, इहि तें हम पौरुस गनहु उद्ध[12]।
बहु काल भये संगर बहाल, करहैं बिलंब कछु अलप काल ॥१५५
संगर[13] फिर करहैं उभय साथ, वर जानहु बिसवा वीस वात।
विस्रंभ[14] पाय तब उभय वीर, स्वस्ताय रहे दानव सधीर ॥१५६
उर ध्यान जोग हरि लखी ऐह, इहि देवी वर तें दनुज ऐह।
देवी की अस्तुत देव-देव, भल रीत करन लागे सभेव[15] ॥१५७

---

१ द्वेष। २ जाज्वल्य। ३ सवाया। ४ मू. प्र. उद्दंग। ५ अग्नि। ६ गांठ। ७ क्षीर। ८ अवसर। ९ बिचार। १० दासोस्मि=दास हूं। ११ नहीं तो। १२ अधिक। १३ संग्राम। १४ विश्राम। १५ भाव सहित, अनेक प्रकार से।

तब दियौ दरस देबी तुरंत, कल बिथत[1] देख तब रमां-कंथ[2] ।
विष्णु सौं आद माया विचार, सुख पाय कहे इहि समाँचार ॥१५८
आजाँन भुजा जुध करहु ऊठ, अंगना[3] बनहु मैं दुति अनूठ ।
बरदान लेहु तुम कहहु बात, मति हरन करहु मैं अकसमात ॥१५९
मुख तें जब लैहै माग मीच, बिन सोस करहु तुम जुद्ध बीच ।
उपदेस दियौ देबी उंदत, किय काज ज्युही[4] पुन रमाँकंत ॥१६०
कछु काल कियौ हरि जुध करूर, पुन देखत देबी प्रेमपूर ।
मति हरन लखे दांनव मदंध, किल मृतु[5] आय बैठो सुकंध ॥१६१
मधु कैटभ सौं बोले मुरार, सब भाँत जुद्ध लायक सुरार ।
जुध बीच करे हम कैऊ जेर, बलवान लखे तुम इहीं बेर ॥१६२
मागहु बर दैहैं तुम महाँन, करहै हम तातैं जुद्ध कांन ।
सुन श्रवन दनुज संगर सधीर, बाचा तब बोले महावीर ॥१६३
हम कहा वनायक गनैं हेर, जुध बीच किये हम तुमहि जेर ।
चितबहु हमहीं कब होव चाह, आश्रव[6] जुत बोले हरि उछाह ॥१६४
इहि सुनत रमाँपति कहि उचार, मम हाथन सें तुम सहहु मार ।
वाँनी सुन विष्णू उभय बीर, अकुलाय चित्त बोले अधीर ॥१६५
नहि बंचक जानें प्रथम न्याय, हम छले गये कहा कहैं हाय ।
बर मागत तुमसां उभय बीर, निभ देस होय तहां विगत नीर ॥१६६
तुम करहु निसूदन हमहिं तात, बरदान देहु हमसौं बिख्यात ।
जीव तैं अधिक हम बचन जान, प्रन तजैं नाहि इहि जाहु प्रान ॥१६७
इहि सुदर्शन कियौ याद, अत चंड तेज मंडत अगाध ।
बिस्तारी जंघा हरि बिसाल, मस्तक जल मानहु सयल[7] माल ॥१६८
निरजल[8] थल आवहु इहि निहार, करतत सिर करहू जुत करार ।
सुन ऐह[9] दनुज जोजन[10] सहंस[11], पुन देव दिद्ध[12] कीनी प्रसंस ॥१६९
जब द्वै सहस्त्र हरि जंघ देस, बिस्तार करी दुइ गुन बिसेस ।
मायक[13] हरि जानै दनु महांत, उतमंग[14] जंघ पर दयौ आँन ॥१७०

---

१ व्यथित । २ कंत । ३ अप्सरा । ४ उसी प्रकार । ५ मृत्यु । ६ प्रतिज्ञा, विश्वास । ७ शैल । ८ निर्जल । ९ यह । १० योजन । ११ सहस्त्र । १२ दीर्घ । १३ मायिक = मायावी । १४ उत्तम अंग = मस्तक ।

मधु कैटभ भ्राता अत मदंध, किय कलपन ताही समय कंध।
भय पूर अवुधी[1] मेद भाग, थित भई उरवरा थित अथाग ॥१७१
मेदनी नाम तातैं महंत, उच्चार करहि जग आद अंत।
मृत्यका[2] भक्ष सम भक्ष मेद, नय रीत बिदुख[3] मानत निसेद[4] ॥१७२
सुकदेव जन्म आख्यान सोय, सब आद अंत जानहु सकोय।
परवत सुमेर[5] कै जाय पास, हित पुत्र बिचारहु जुत हुलास ॥१७३
उर ध्यान धरचौ देवी अखंड, मुनि एकाक्षर जप मंत्र मंड।
हट[6] जोग करत भये निराहार, बीते सत बक्षर तप बिचार ॥१७४
सिर जटाजूट पावक समान, भये तेज-पुञ्ज तप उदित भान[7]।
अकुलाय सिंभु सौं कही इंद्र, मन पुरीन लैहै इहि मुनिंद्र ॥१७५
फर इंद्र सबोधन शिव कराल, हित व्यास देवकौ जान हाल।
पुन आये शङ्कर व्यास पास, वरदान दियौ व्यासहि बिसास[8] ॥१७६
तुम पुत्र हेत इहि करत जाप, सोइ पैहौ पुन पूरन[9] प्रताप।
वरदान पाय शिव चरन-वन्द, मन मुदित धाम आये मुनिंद ॥१७७
बीते कैऊ वासर धाम व्यास, अग्नी हित अरनी किय अभ्यास।
सोचे उर अंतर तँह सभाग, अरनी तें परगट होत आग ॥१७८
इम[10] होय पुत्र उतपत्त[11] अंग, पुन त्रिया हमारैं कहा[12] प्रसंग।
इहि उपजत ईक्षा[13] मुनि अधीस, अपछरा घृताची सुरन ईस ॥१७९
अत रूप मनोहर अंग अंग, ऊरध नव जोवन[14] जुत अनंग।
द्वइपायन[15] देवी ताहि द्रष्ट, वपु काम-कला बाढ़ी बलिष्ट ॥१८०
संगम नहि वाच्यौ मुनि सधीर, पुन सहन करी तन समर पीर।
वन सुकी घृताची निकट वास, नभ तें थल आई तिहिं निवास ॥१८१
रोक्यौं न रुक्यौ मुनिराज-रेत, निज गिरचौ सोई अरनी निकेत।
सुकदेव पुत्र व्यासहि समांन, गुन प्रगट रूप उर उदित ज्ञान ॥१८२
गंगाजल मज्जन सुद्ध गात, जिहि वेद रीत किय कर्मजात।
वृंदारक जय जय करत वांन, गंधृव(धर्व)मिल किन्नर मधुर गांन ॥१८३

---

१ अंबुधि=समुद्र। २ मिट्टी। ३ बिदुख=विद्वान्। ४ निषेध। ५ सुमेरु। ६ हठ।
७ भानु=सूर्य। ८ विश्वास। ९ पूर्ण। १० इमि। ११ उत्पन्न। १२ कहाँ।
१३ इच्छा। १४ यौवन। १५ कृष्ण द्वैपायन।

अत बोलत जन बिध बिध असीस, सुभ सुमन-वृष्ट ह्वै डिंभ[1] सीस।
आनक बढ़ ऐहृट की अवाज, बर बांनक केउ बादित्र बाज ॥१८४
विस्वाबसु नारद रिसी बृन्द, आवत सब पावत अनन्द।
बिद्याधर तुम्मर-गन बशेस[2], आये व्यासृम[3] सुख असेस ॥१८५
सुत सौं घृताची सुकी संध[4], सुकदेव नाम दिय इंहि समंध।
नभ सौं कृष्णाजन[7] गिरे निंच, अरु दंड कमंडल चिब[5] उदंच ॥१८६
सुकदेव अरंनज व्यास अंस, परकास[6] तपोबल हिय प्रशंस।
तन पीन भयौ तातें तुरंत, सुभ रूप मनोहर परम संत ॥१८७
जग्योपवीत किय कर्म-जुक्त, भग्वती चरन जुत प्रेम भक्त।
गुरु चित्र सिखंडज[8] किय गंभीर, धर बृह्मचरिय[9] बृत महाँधीर ॥१८८
पढ़ वेद धरम अरु नीत-पंथ, गत हृदय अविद्या छुटी ग्रं(गृं)थ।
दक्षना गुरू कों भेंट दीन, पुन पिता ग्रेह आये प्रबीन ॥१८९
पद बंद ब्यास कौं कर प्रनाम, जुत प्रेंम नेंम सिर सूघ जाँम।
बिद्याँ पढ़वे की सुनत बात, आँनन्द पाय नाहिन अघात ॥१९०
सुत पिता बढ़त नित-नित सनेह, दुति[10] अमित पुत्र-मुख उदित देह।
पितु कहत एक दिन सहित प्यार, निगम की रीत जुत करहु नार ॥१९१
संततहि बढ़हि तातें सदीव[11], जब पित्रन मुक्तिय होय जीव।
ऊरन[12] जब रन तें होय ऐंम, पेंहें गत हमहू सहित प्रेंम ॥१९२
तिहि हेत कियौ हम उग्र ताप, सुत अबस मोहि मेंटहु संताप।
सुत कथा व्यास दीनी सुनाय, जिह रीत तपस्या करी जाय ॥१९३
अनुकंपा देबी बरहु ईस, रचना वृतंत नारद रिषीस।
सुख पाय सुनी सुकदेव आंन, गुन रीत प्रकास्यौ हृदय ज्ञाँन ॥१९४
संसार सुख्य[13] जेतक सपष्ट, दुख गर्बत[14] देखहु हृदय द्रष्ट।
परतंत तिया कौं कंठ पास[15], रहिं तौ नहिं फांसत तजहु आस ॥१९५
हतकरिया वैरी बन्द होय, सोइ छूट जात जानत[16] सकोय।
प्रिय पुत्र त्रिया की बिखम[17] पास, नहिं बंध सुगम होवत विनास ॥१९६

१ शिशु। २ विशेष। ३ व्यास-आश्रम। ४ संयोग। ५ छवि=सुन्दर। ६ प्रकाश। ७ कृष्णाजिन=काले मृग की चर्म। ८ बृहस्पति। ९ ब्रह्मचर्य। १० द्युति=कांति,शोभा ११ सदैव। १२ उऋण। १३ सुख। १४ गर्भित=युक्त। १५ पाश=फांसी। १६ मू. प्र. में जाननत है। १७ विषम=कठोर।

हृप आर अजोनी[1] हर होय, जौनौं[2] किम भजहै भाव जोय।
कोउ दिस्नोतर[3] पितु पुत्र कोन, पर पुत्र न मानी ज्ञान पीन[4] ॥१९७
पुन व्यास पुत्र सौं लाय प्रेम, नइ रीत कहत हम सहित नेम।
वेदोक्त विहृत[5] कर्महि विधान, मन तनय बीच हिय विगत मान ॥१९८
नित वित्त करत उतपत्त न्याय, सुर पित्र आस पुज्जत सुभाय।
ऐसे ग्रहस्थ सम नाहिं और, करहू तिय धारन वय किशोर ॥१९९
संतत हित साधहु सुत सयान जुत जुवा अवस्था धर्म जान।
तप कीनहु कौसक मुनिह तेम, पर बधे मैनका पास प्रेम ॥२००
कन्या सकुन्तला प्रगट कीन, खट अर्ध अब्द तप भयौ खीन[6]।
भये पारासर मुनि वृत भंग, पुन छले दास कन्या प्रसंग ॥२०१
निज कन्या जोबन दुति निहार, चित बिकल भये सोइ बदनचयार[7]।
सुत कह्यौ हमारौ सुनहु आन, गृह-आश्रम साधहु परम ज्ञान ॥२०२
तुम जुवा अवस्था करत त्याज[8], मम तजहु ग्रहस्थाश्रम समाज।
हिय लोचन तें हम कहत हेर, बोलें कहा तातें बेर-बेर ॥२०३
प्रत पढ़हु भागवत सुन पुरान, नव धर्म रीत लैहौ सुजान।
पुन पढ़े भागवत सुक[9] पुनीत, चाह्यौ न ग्रेह आश्रमहु चीत[10] ॥२०४
जब व्यास कही सुक मुनी जान, मेरौ निदेस इहि लेहु मान।
सुत जावहु मिथला-पुर सकाज, राजा विदेह तहा करत राज ॥२०५
जीवन-मुक्तौ सोउ लखहु जाय, पैहौ प्रतीत जाके पसाय[11]।
जिम सुक व्यास सौं सुनी बात, पुन ऊठ चाले[12] ताही प्रभात ॥२०६
देखत सोउ अंतर पंथ देस, बन पर्वत आदिक पुर विसेस।
बीच में लगी मुनि सुकहि बेर, सोइ दोय वर्ष लंघत सुमेर ॥२०७
इक वर्ष हिम-गिर चले सुद्ध, पुर मिथला पहुँचे सुक प्रबुद्ध।
[illegible] पास [illegible] सहेत, सुर बाग रची उपवन निकेत ॥२०८
[illegible] मंत्री लिये संग, आये मुनि-दर्शन-हित उमंग।
[illegible] आसन दे सुभाव, पुन बन्दन कीनें परस[13] पाय ॥२०९

[illegible]

बजुला[1] इक तंबा तिहीं बेर कीनो सुभेंट सुकदेव केर।
कुसलात पूँछ अरु विनय कीन, धिन[2] भाग[3] पधारे गित अधीन ॥२१०
धर धीरज कहिये सुमत धाँम, कछु लायक जो मम होय काँम।
बोले मुनि तासौं बिमल बाँन, मम पिता व्यास जानत महाँन ॥२११
हित व्याह चहत कारन हमेस, उर उपज्यौ मेरे कछु अंदेस[4]।
भेज्यौ सोइ मेटन काच भूप, सुध पाय लख्यौ तेरौ स्वरूप ॥२१२
तुम जीवन मुक्तो[5] सुनै तात, विप्रीत[6] यहै नृप समुझ बात।
हम आगम जानहु इही हेत, निरससय[7] कीजे मति-निकेत ॥२१३
समुझाव कहहु नृप तुमहु सोय, हिय संसय सौं हम विगत होय।
तप तीरथ बृत अरु जिज्ञ[8] तात, स्वाध्याय आन बिज्ञान साथ ॥२१४
हित साधन मुक्ती जुक्त होय, समुझाय कहहु नृप हमहु सोय।
जब बोले राजा जनक जान, सुनियें मुनि ह्वै कें सावधान ॥२१५
मोक्ष के मार्ग आश्रतहु[9] मित्त, चाहियें विप्र कौं इहै चित्त।
जग्योपबीत कर प्रथम जाय, पुन विद्या गुरु के शेव पाय ॥२१६
अध्ययन[10] बेद करकें उधार, दक्षना समर्पन कर सुधार।
निज ग्रेह आय कुल सुद्ध नार, ब्याहिये बेद-रीतहु बिचार ॥२१७
बृति संतोखहु[11] ग्रह साथ बित्त, थिर चित्त करै अगनोत्र[12] थित्र[13]।
सत बचन प्रकाशत रहै सुद्ध, अविरोध होय अघ - रहित उद्ध ॥२१८
उतपत्त पुत्र पोत्राद[14] आद. स्त्री सौंप अष्ट धारे समाध।
अथवा कि लहै संगहु उदास, बन बीच करै सोइ जाय वास ॥२१९
जहाँ काम क्रोध रिपु लोभ जीत, मद मछर[15] आदक सुनहु मीत।
इंद्री सुख साँतहु होय ऐम, निज होय बिरागी सहित नेम ॥२२०
सन्यास धरम थित[16] होय सत्त, अभलाख[17] काँम कौ तजै अत्त।
सन्यास ग्रहन अधकार[18] सोय, जानहु बिरक्त कौं निगम जोय ॥२२२
सुभ निस्सेकादिक[19] संसकार, चालीस अष्ट जानहु विचार।
जिहि प्रथम ग्रहस्थहु हेत जान, चालीस प्रमुख लीजै पिछान ॥२२३

---

१ पात्र। २ धन्य। ३ भाग्य। ४ अंदेशा = आशंका। ५ मुक्त। ६ विपरीत। ७ निःशंसय। ८ यज्ञ। ९ आश्रित। १० मूल प्रति में अधयन है। ११ संतोष। १२ अग्निहोत्र। १३ स्थित होकर। १४ पौत्रादि। १५ मत्सर = ईर्ष्या। १६ स्थित। १७ अभिलाषा। १८ अधिकार। १९ निषेकादिक।

सम दमहु आद है अष्ट सोय, सोइ मुक्ति निमत[१] जानहु सकोय ।
आश्रम सौं आश्रम गवन अग्र, सुख-पूर्वक जानहु मुनि समग्र ॥२२४
बोले विदेह प्रति सुक विचार, दीजै हम उत्तर मति-अधार ।
बैराग ज्ञाँन विज्ञाँन वास, नित करत हियैं जाकै निवास ॥२२५
ग्रह वास गहै किन विपन गौंन, समुझाय करावहु नृपति श्रौंन ।
बोले विचार कर तहाँ बिदेह, उत्तर हम ताकौ कहत एह ॥२२६
वपु इन्द्रिय ग्राँमहु है वलिष्ट, करत है बिक्रिया[२] अमित कष्ट ।
आपक्व[३] जती कै तन अनेक, विघ्न कौं करत मधृत[४] बिबेक ॥२२७
सुख संयन पेख समियानुसार[५], पुन पुत्र नार सौं उपज प्यार ।
बृत भंग करै हुय जती वेष, बृत भंग भये हानी बिशेष ॥२२८
भय पाय करै जौलौं न भोग, रुच भोग बढ़ावत जाल रोग ।
वासना नास कै हित विचार, नित क्रम क्रम सौं त्यागै निहार ॥२२९
सयनीय[६] उद्ध सुख चहै सोय, हिय पतित हौन सौं दुखत हाय ।
अधसाई[७] नाँहिन भीत येक, बिध जुक्त विचारहु लहि बिवेक ॥२३०
सन्यास तजै जो समाधांन, है उभय लोक की अँभय हाँन ।
हीनांगी तरवर साख हेर, फल सनै-सनै सुख लहै फेर ॥२३१
आतुर हुव[८] पंखी लहि उडांन, थक बैठत देखहु थाँन[९]-थाँन ।
क्रम-क्रम सौं जो कोउ करै काज, सुभ दायक जाँनहु सुख समाज ॥२३२
मनकौं अजेय जाँनहु महाँन, आस्रम क्रम-क्रम तै आस्रमाँन ।
मद कांम जीत कै जीत मोह, दुख दुंद[१०] छाँडकै छाँड द्रोह ॥२३३
चित सांत सुमत गत हृदय चाह, हाँन में सोक लाभ न उछाह[११] ।
क्रम वेद-विहत चिंतत करत, उतपत्त न्याय-पथ अनुसरत ॥२३४
संतुष्ट रहै लहि समाधांन, सोइ आतमवांन जानहु सुज्ञाँन ।
आस्रम ग्रह ग्रेही सोइ अनूप, सर्वथा मुक्त जाँनहु स्वरूप ॥२३५
तज कांम क्रोध गहि नीत-तत्व, महि प्रजा आद पालन महत्व ।
निरपक्ष[१२] होय कै करत न्याय, सत्रु पा दंड लायक सुभाय ॥२३६

---

१ निमित्त । २ विपरीत क्रिया । ३ अपरिपक्व । ४ मध्य में । ५ समयानुसार । ६ भोग । ७ अधःस्थायी = अपरिपक्व । ८ होकर । ९ स्थान । १० द्वन्द्व । ११ उत्साह । १२ निष्पक्ष ।

विभबाद[1] राज की नहिन बाध, उरमी[2] न करत कोउ हिय उपाध।
बित बिलसत इद्री करत भोग, अनुसार समय जोगहु अजोग ॥२३७
अबिचरत जहाँ तहाँ छाँड़ आस, फाँसै न चित्त काँ[3] बंध फाँस।
कछु ग्रहन कियौ नहिं तज्यौ कोय, हम ग्रहो न त्यागी रहे होय ॥२३८
जीवन-मुक्ती तउ[4] कहत जक्त बितराज[5] गहै मांनत बिरक्त।
हमरौ जिह बिध साँ लिख्यौ हाल, कोजियै ग्रहन मुनिवर क्रपाल ॥२३९
संसार पदारथ द्रस्य[6] सोय, किय करै अद्रस्य[7] हि बस्य[8] कोय।
संसार अचेतन द्रव्य साथ, इति जीव सचेतन बंधै आथ[9] ॥२४०
नभ मुष्टी जाँनहू ग्रहन न्याव, आतमा बंध मानहु अभाव।
नित मुक्त निरंजन निराकार, पुन आद अंत नहिं बार-पार ॥२४१
जड़ पंच तत्त[10] बाँधे न जाहि, अनबद्ध अखंडत गनहु आहि।
परकास करत दीपक पतंग, ढ़क सकै पदारथ कवन ढंग ॥२४२
सुख दुखः प्रांन सूक्षम[11] सथूल[12], मन तरबर साखा सोइ मूल।
मन निर्मल निर्मल सकल मान, ह्वै उदय आय सुक्रत महाँन ॥२४३
मन जौलौं निर्मल नहीं मित्त, बिध जुक्त फलै तीरथ न व्रत्त।
जीव कौ मोक्ष कारन न जाँन, इन्द्रीगन देहन लखहु आँन ॥२४४
ब्रह्म अरु जीव में भेद बुद्धि, यह लखहु अविद्या बल असिद्ध।
ब्रह्म अरू जीव जाँनै अभेद, बिद्या सो गावत च्यार वेद ॥२४५
जानबै जोग[13] इहिं उभय जाँन, छाया रु धूप सुख दुख समाँन।
जौलौं न अबिद्या लखी जाय, बिद्याजुत आदर नहिं बसाय ॥२४६
पथ बेद सदाँ ऊतम प्रयाँन[14], कीजै नहिं तातै कबहु काँन[15]।
बोले तहाँ सुकमुनि हिय बिचार, तुम कहत बेद-पथ तत्वसार ॥२४७
तामैं बहु हिंसा गनहु तात, बाढ़ै अधर्म हिंसा बसात।
जाँनहु अधर्म कौ बढ़ै जोर, मुक्त कौं लहै न्हो[16] सुनहु मोर ॥२४८
बिध जुक्त दयौ ऊतर बिदेह इहि, बेद-रीत सिद्धांत एह।
हिंस्या[17] हू अहिंस्या जग्य हेत, उपजत नहिं जातै कछु अहेत ॥२४९

---

१ वैभव आदि। २ राग द्वेष आदि। ३ को। ४ तो भी। ५ वीतराग। ६ दृश्य। ७ अदृश्य। ८ वश्य=वश में। ९ अथ=प्रारम्भ में। १० तत्व। ११ सूक्ष्म १२ स्थूल। १३ जानने योग्य। १४ प्रमाण। १५ उपेक्षा। १६ नहीं। १७ हिंसा।

तब सुक मुनि बोले समय जाँन, संदेह हमारौ सुनहु स्याँन ।
अविद्या विदेह जो सुनत आद, वंसानुरीत परिभ्राय-बाद[1] ॥२५०
वपु सार्थक निर्मल गुन विसेस, अथवा क नाम-मात्र ही असेस ।
अवलोक राज-वैभव अनेक, आपनौ परायौ गिनत एक ॥२५१
कटु मिष्ट राज-काजहु अकाज, तन सुख दुख आदिक ग्रहन त्याज ।
सब हय गय वित सैना सँभार, निज रूपवती ग्रह बसत नार ॥२५२
हिय जुद्ध पराजय हित अहेत, लो रकैं द्रोह बट प्रजा-लेत ।
इहि राज-काज कारन उपाध, सुख होय ग्रहन कैसैं समाध ॥२५३
चिन्तातुर जौलौं रहै चित्त, तब लौं[2] नहि पावै तुरिय तत्त ।
भल जीवनमुक्ती लह्यौ भेव, इहि बात असंभव नृप अजेव[3] ॥२५४
मुनि बांनी सुनकैं नृप महांन, संका कौ कीनौ समाधांन ।
तुमरे पितु हमरे गुरु तात, व्यास कौ कही सोइ सत्य बात ॥२५५
बन गवन करहु पितु छांड वास, घर मांडहु पत्रन[4] तथा घास ।
जल अग्न चाह ल्हैहै जरूर, पुन ऊपल[5] ईंधन समय पूर ॥२५६
तरु-वल्ली छाया धूप तेज, पुन ग्रहन करन अथवा परेज ।
सुख दुखः देह कैं सदा संग, पुन तजै न मन ताही प्रसंग ॥२५७
बन में हू[6] संग खग मृग निवास, सुभ असुभ रूप बांनी बिलास ।
आहार कंद फल फूल आद, इह जीवन[7] की चित में उपाध ॥२५८
गुन अवगुन पांचन [illegible] गरिष्ट, मन मांनत ताकौ कटुक मिष्ट ।
मृगछाला दंड अरनी समान, जल-पात्र कमंडल आद जांन ॥२५९
चिन्ता है तुमरैं इहीं चित्त, विध इहीं हमारै राज वित्त ।
[illegible] ग्रहन संग, आये इहीं जाग्रा मुनि प्रसंग ॥२६०
[illegible] हमेस, दुविधा नहीं राखत हृदय देस ।
[illegible] उदास, [illegible] बिपन[8] वास ॥२६१
[illegible] सदा [illegible] ।
[illegible] आवै न संग जैहै [illegible][9] ॥२६२

[illegible]

हम चिंता त्यागी देख हाल, करियै नहिं चिंता मुनि क्रपाल।
चिंता अभाव तैं इही चित्त, निर्बान लहै पद जीव नित्त ॥२६२
सब सुनी ब्यास पितु कही आँन, उपदेश जनक नृप दयौ आँन।
गवनै सुक-मुनहू पिता ग्रेह, सुक लह्यौ निबारन उर सँदेह[२] ॥२६३
पितु हुकम जनक उपदेस पाय, 'पीवरी' पित्र कन्या पसाय।
बिध बेद कियौ सोउ मुन बिबाह पुन संतति कौ बाढ्यौ प्रबाह ॥२६४
रत जोग जुक्त अरु भक्त रीत, पावन पद ध्यावन पर्म प्रीत।
दुति क्रस्न गौर प्रभ भूर देब, स्रुती पुत्र च्यार जानहुँ सभेव ॥२६५
कीर्ति इक कन्या सुभग काय, सुक संतति जानहु इँह सुभाय।
कन्या का बिबांही आज केर, अंगज[१] अनूह के संग एर ॥२६६
बर बीर प्रतापी राजबंस, पुन ब्रह्मदत्त सुत तिह प्रसंस।
राजा प्रनीत[२] सब नीत रीत, बहु काल किये सुखमय बितीत ॥२६७
उपदेस पाय नारद अनूप, भुय[३] राज पुत्र कौं सूंप[४] भूप।
सो गयौ बद्रकास्रम सिधाय भगवती भक्त जाँनहु सुभाय ॥२६८
जहाँ बीज-मंत्र कौ करत जाप, पद सोई पायौ तप प्रताप।
सुकदेवहु त्यागन कियौ संग, अष्टापद[५] पहुचे गिर उतंग ॥२६९
धर हृदय अखंडत जोग ध्यांन, सब रीत पर्म पद सावधाँन।
अष्टहू सिद्ध[६] अनिमाद[७] आद, पाये मुनिंद्र माया प्रसाद ॥२७०
मुन नभग्रह होवत ब्राजमान[८], भ्राजत प्रदीप्त मनु दुतिय भाँत।
उठुकैं[९] जब जावन लगे उद्ध[१०], मुनिराज भये केउ मोह मुद्ध[११] ॥२७१
भये सब्द असंभव महा भूर, डगमगिय अद्र हुय संध दूर[१२]।
पोहमी प्रसिद्ध उलकान पात, पितु ब्यास हियैं बाढ़ी प्रबात ॥२७२
हित पुत्र पुकारत कहत हाय, अवलंब न पावत कहु उपाय।
बनजंतु आद खग मृग वियोग, सबहिन सुक पायौ महा सोग[१३] ॥२७३
बस सोक अनास्रय[१४] देख ब्यास, बहु रीत सदाँसिव दिय बिसास[१५]।
समभाय ब्यास नहिं सोच नाय, जस लायक जानहु पुत्र जाय ॥२७४

---

१ पुत्र। २ प्रणीत। ३ भूमि। ४ सौंप। ५ पर्वत के शिखर का नाम। ६ सिद्धियां। ७ अणिमा आदि। ८ विराजमान ९ उठ कर। १० ऊर्द्ध्व = ऊपर। ११ मुग्ध। १२ संधि = जोड़। १३ शोक। १४ आश्रयरहित। १५ विश्वास।

बिनती सिव कीनी बेदव्यास, आँनन बिन देखे मन उदास।
कर कृपा सिंभु बोले कृपाल, हिय बेदव्यास कौ जान हाल ॥२७५
चित होय पुत्र की दरस चाह, छाया सुक देखहु जुत उछाह।
बिलपत कछु पायौ उर बिसास, वर पाय सिंभु सौं चले व्यास ॥२७६
मुनिवर तब आये निज निकेत, हिय सोक-ग्रस्त अति पुत्र-हेत।
सिख बैसंपायन असित सोय, जैमनि सुमंत देबल सु जोय ॥२७७
बहु किओ संबोधन तिन बहोर, ठहरे न ब्यास निज भवन ठौर।
माता के दरसन हित मिलाप, उठ चले भूम का जन्म आप ॥२७८
दासन नै भासन करयौ देख बय-वृद्ध हमहि जननी विसेख।
हित दरसन आये इहाँ हाल, तुम हमहि दिखाबहु तातकाल[1] ॥२७९
तब कह्यौ दास जातन तुरंत, [2] सांतन नृप ब्याही सुनहू संत।
तब गये सरस्वति नदी तीर, साधन तप लागे मुनि सधीर ॥२८०
चित्रांगद बीरज बिचत्र[3] चाहि, माँने निज भ्राता चित्त माहि।
सांतन जब कीनौ बास सग[4], बर पाछै तीनहु बंधु-वर्ग ॥२८१
गंगेव[5] पुत्र गंगा गरिष्ट[6], तिह लह्यौ राज पद नाँहि तिष्ट।
सुत सत्यवती रहि उभय सेख[7], भय चित्रांगद राज्याभिसेख ॥२८२
सब राज काज पूरन समथ्थ, उतपत्त न्यायसीलहु अरथ्थ।
म्रघिया[8] हित चित्रांगद महीप, सो पँहुचे कुरक्षेत्र हि समीप ॥२८३
चित्रांगद गंध्रब[9] पत च छोह दहु कैकिह कारन बढ्यौ द्रोह।
भिर परे जहां संगर भयान, सुर[10] अब्द[11] तहाँ बीते महाँन ॥२८४
पाछै नहि दीनै नैक पाँव, भूपन तन त्यागौ बीर भाव।
भीसम विचत्रवीरज हि भूप, सिंघासन दीनौ तिही सूँप ॥२८५
भज गंध्रव-पत सौं वयरभाव[12] चित चाह करन लागे चढ़ाव।
मंत्रीगन भीसम कह्यौ माँन, जाकौं रन दीनै नहीं जाँन ॥२८६
कछु औध[13] वतीतत राज-काज, राच्यौं सु सुयंवर कासिराज।
जहाँ देस-देस के नृपत जाय, भये जमा स्वयंवर बीच भाय ॥२८७
कन्या त्रय भीसम हरन कीन, पौरुख प्रभाव जहां भुजा पीन ॥२८८

---

१ तत्काल। २ शान्तनु। ३ विचित्रवीर्य। ४ स्वर्ग। ५ गांगेय = भीष्म। ६ कठोर वृत्ति। ७ शेष। ८ मृगया। ९ गंधर्व। १० तीन। ११ वर्ष। १२ वैर-भाव। १३ अवधि।

दोहा— इक अंबा अंबालका, अबर अंबका एहु।
ब्याहन लगे बिचित्र कों, सब लघुभ्रात सनेहु ॥२८९
बोली अंबा विनय कर, मैं चाह्यौ पति मोर।
सालु[1] स्वयंबर के समय, बरहूं ताहि बहोर ॥२९०
पन[2] मेरौ पालहु प्रथम, परम धुरंधर धीर।
समज भीस्म ताही समय, बिदा करी बर बीर ॥२९१
ब्याही है लघु बीर कौं, बिध-बत वेद-बिधान।
पँहुची अंबा साल्व पँह, मन सौं निज पति मान ॥२९२
साल्व नटूयौ ताही समय, आई चित उपराँम।
पत जाचे गंगेव पुन, नटे ब्याह के नाम ॥२९३
पितु कै गेह गई न पुन, अंबा परम उदास।
तप बपु साधन हेत तिह, बिपन कियौ निज बास ॥२९४
राजयचछमा[3] रोग तैं, मरचौ बेस सुकमार ॥२९५
बीते संगहि नव बरस, संतत भई न सोय।
सत्यवती कहि भीस्म सौं, करहु राज सहकोय ॥२९६
तेरै लघु भ्राता त्रियन, ग्रहन करहु निज ग्रेह।
संतति-उतपत हित समुझ, यामें कारन येह ॥२९७
जैहै बंस जजात[4] कौ, तुमहि छतै[5] इह तात।
पन बीतै पछताहुगे, बिध जुत मानहु बात ॥२९८
सत्यबती की बात सुन, बोले भीसम बांन।
अनुचित काम न आदरु, निरनय कहत निदान ॥२९९
पितु के सनमुख कीन पन, सो गये स्वर्ग सिधाय।
पितु आबहि तौ तजहु पन, निज जननी यह न्याय ॥३००
बिप्र कुलीन बुलाय कैं, सौंपहु त्रिया समाज।
तातैं ह्वैहै संतती, अब तौ इंही इलाज ॥३०१
सत्यबती सुत समुझ कें, ब्यास बुलाय बिचार।
हित संतति कीनौं हुकम, नटे न ब्यास निहार ॥३०२

---

१ शालु, शाल्व। २ प्रण=प्रतिज्ञा। ३ राजयक्ष्मा=क्षय रोग। ४ ययाति। ५ क्षत होने पर, रहते हुए।

अंध जन्म भये अंबका, सुत धृतराष्ट्र सधीर।
येक जन्यौ अंबालका, सुवरन[1] पन्डु सरीर ।।३०३
व्यास बुलाये विपन तें, गये सु सैनागार।
रानी गई न रमन कौं, उभयन किय अनुकार[2] ।।३०४
दासी मिल भेजी दहुन[3], सुत भये विदुर सुजान।
जातै वंस जजात कौ, हुई न नैकहु हांन[4] ।।३०५

——

१ सुवर्ण। २ इनकार। ३ दोनों ने। ४ हानि।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय स्कंध

दोहा— सुनी सौंनकादिकन स्त्रुत[1], देहु सूत उपदेस।
जिह विध सत्यवती जने, व्यास कुमारी वैस[2] ॥१
सोई सत्यवती सती, सांतनु राजा संग।
कियौ ब्याह पूरन कथा, पुन इह कहऊ प्रसंग ॥२

छंद उधोर—सुन कहन लागे सूत, ईतिहास परम अभूत।
ध्रुव चेदपुर तिह धाम, नृप सो ऊपरचर[3] नाम ॥३
द्वज[4] भक्त पर्म दयाल, सुभ कर्म धर्म सुचाल।
सोई सत्य बाचा सूर, दुरबिस्न[5] तै चित दूर ॥४
तप बृद्ध जानति नूह, सब भाँत सुखद समूह।
परहूत[6] प्रीत पछाँन, मनि फटिक दीव्य[7] बिमान ॥५
बिच अंतरीक्ष बिराज, बिचरंत सोइ निर्व्याज।
निज त्रिया गिरकाँ नाम, अनुराग जुत अभिराम ॥६
सुत पांच तिह समरथ्थ, अनदेस सोंपे अथ्थ।
भइ रितुमती सोइ भाँम, हित स्राध[8] पितु कर हाँम ॥७
म्रघ[9] कह्यौ लावहु मंस,[10], पापार्ध जाँउ प्रसंस।
निज रितुमती तज नार, आखेट गयेउ उजार[11] ॥८
उर काँम की अभिलास, तिय रह्यौ सुमरन तास।
जिह गिरच्यौ ताही जोग, आनन्द प्रभव अमोघ ॥९
बहु पत्र-पत्र बिचार, नलका धरच्यौ हित नार।
संग सैन काज सिकार, सौंप्यौ सु ताहि सभार ॥१०

---

१ श्रुति=कान। २ वयस=अवस्था। ३ राजा का नाम—वसु उपरचर। ४ द्विज। ५ दुर्व्यसन। ६ पुरुहूत=इन्द्र। ७ दिव्य, दिया। ८ श्राद्ध। ९ मृग। १० मांस। ११ उजाड़=वन।

गिरका सिजावहु[1] ग्रेह, द्रुत ताहि कौं तुम देह।
सुन भूप बायक[2] सैन, गहि उड्यौ नलका गैन ॥११
लाग्यौ सुँ तिह इक लार, सौचाँन पलल सुमार।
आकास मारग उद्ध, जम[3] भयौ दारुन जुद्ध ॥१२
निम्नगा जमुना नीर, पुन पतित ह्वै रन पीर।
अद्रका अच्छ्छर[4] एक, बस बिप्र - स्राप बसेख ॥१३
भई श्वेत कोलक-भेस, निगल्यौ सु रेत नरेस।
जोइ परो धीवर जाल, बस काल होय बिहाल ॥१४
जिह सुद्धि कारन जास, तिह उदर फारयौ तास।
सिसु दोय एकहि संग, पुन निकर ताहि प्रसंग ॥१५
सब रीत दास सु जाँन, लै गये नृप निजराँन[5]।
नृप उपर-चर सुत लीन, द्रढ़मच्छ संग्रा दीन ॥१६
दिय कंनका सोइ दास, हिय दास पाय हुलास।
आयौ सु निज ग्रह येह, लरकी सु सुंदर नेह ॥१७
निज सुता लालन नेंम, पालन करी जुत प्रेम।
कन्या सुलोचन कंज, मन - मोहनी च्रिव[7] मंजु ॥१८
अत उदित जोवन अंग, सोइ रहत पितु के संग।
कालिंद्री नद की कूल, क्रम जीवका अनुकूल ॥१९
भर पथक-जन की भीर, नवका[8] उतारन नीर।
मुनि परासुर महाराज, कर तीर्थ जात्रा काज ॥२०
तिह आय तटनी तीर, कही पार करहू कीर।
तिह कह्यौ भोजन त्यार, इहि काज रहउ अवार ॥२१
कही वासवी[9] कौं कीर, तटनीहु जानत तीर।
रय[10] कन्यका मुनिराज, जल पार करहुं जहाज ॥२२
जब वासवी मुनि जाँन, प्रेरी सु नाव प्रयाँन।
जल बीच नवका जात, ह्वै काम आतुर हाथ ॥२३

---

१ सिधावहु, सजावो। २ वाक्य। ३ यम, युग्म=दोनों। ४ अप्सरा। ५ रनिवास।
६ संज्ञा। ७ छवि। ८ नौका। ९ मत्स्यगंधा। १० रय=शीघ्र।

पकरयौ जहाँ मुनि पेख, द्रग प्रेमजुत तिह देख।
कन्या कह्यौ मुसकाय, निरधार[1] सोचहु न्याय ॥२४
दासेर[2] हम तौ दीन, कृत कर्म आप कुलीन।
अनव्याहता[3] दिन और, मोह लखत है पितु मोर ॥२५
दुरगंध जुत इह देह, अरदास[4] दासी येह।
पुन कह्यौ मुनि हित पूर, दुरगंध ह्वैहै दूर ॥२६
सो गंध तन सरसाय, जोजन प्रमानहि जाय।
इह लख्यौ अचरज अंग, पुन विनय कीन प्रसंग ॥२७
दिन रत निसेध[5] दयाल, कीजे विभावरी काल।
किय प्रगट तप करतूत, अत कुहर छाँहि अभूत ॥२८
सुख पाय कीनो संग, अकुलाय बाँन अनंग।
मुनि भये लज्यामांन[6], हित बासवी लख हान ॥२९
बिनती करी तिह बेर, कर जोर मुनिवर केर।
हम कहा ह्वैहै हाल, कर कृपा कहहु कृपाल ॥३०
जब कह्यौ मुनिवर जाहि, सतमती[7] सुनहु सुभाय।
पन कन्यका जुत पेम, नहि होय खंडित नेम ॥३१
सुत होय मोहि समाँन, विद्या विवेक विधाँन।
अरु विस्नु कौ अवतार, सब कहहि ताहि संसार ॥३२
बरदान दै तपवृद्ध, सुख पाय बाचा सिद्ध।
कर सलल[8] मंजन काय, सो गयउ पार सिधाय ॥३३
गुरबनी[9] आई ग्रेह, उर बनी चित अछेह।
दस मास बीतत देर, वै जनम समुझी बेर ॥३४
सुत जन्यौ कुंज समीप, दुर[10] बैठ जमुना दीप[11]।
सुत जनम तैं ही साथ, मुख बोल कै कहि बात ॥३५
हम जात बनमें हाल, तप करन हेत त्रकाल।
कछु होय हमसौं काँम, तुम याद करहू ताँम ॥३६

---

१ निर्धार = निश्चय। २ दासपुत्री। ३ अविवाहिता। ४ अर्ज, प्रार्थना। ५ निषेध = मनाही। ६ लज्जावान्। ७ सत्यवती = मत्यगंधा। ८ सलिल = जल। ९ गुर्विणी = गर्भिणी। १० दुरि—छिप कर। ११ द्वीप।

मैं आय कै निज माय, पग बंदहूं सुख पाय।
गई बासवी पितु गेह, दक[1] धोय कै निज देह ॥३७
अवतार विस्नु अनूप, स्वछंद व्यास - स्वरूप।
वासष्ट[2] मुनि के बंस, अबदात मति अवतंस ॥३८
जिह रचे कलजुग जान, पुन अष्टदसहु पुरान।
बहु वेद भेद बिचार, चिद भाग किय जिह च्यार ॥३९
अनुसार मति के उद्ध, जस पांडुवन - कुरु जुद्ध।
तिन कीन भारत[3] त्यार सब वेद कौ लहि सार ॥४०
इह व्यास की उतपत्त, सुखरूप जानहु सत्त।

दोहा— सत्यवती सांतन सुनहु, बिधवत कीनौ ब्याह।
कहत कथा बिसतार कर, अनुभव सहित उछाय[4] ॥४१
उपजे कुल ईख्याक[5] में, महाभिख[6] अपत महान।
अस्वमेध किय सहस इक, सुनहू परम सयान ॥४२
बाजपेय इक सत बहुर, जग्य किये नृप जास।
इन्द्रपुरी अमरावती, बसे जाय सोइ बास ॥४३
दरस पितामह[7] देवता, सोउ नृप पहुचे संग।
सेव करत ताही समय, ग्रेह प्रमेष्टी[8] गंग ॥४४
पवन लाग उछ[9] द्योसु[10] पट, उघरचौ गंगा अंग।
दृगन नमाये देख कै, सब देवन इक संग ॥४५
राजा सोइ देखत रह्यौ, गत्तर[11] अंग चिब गंग।
दृगन गंगहू देख कै, पायौ प्रीत प्रसंग ॥४६
दीनौ उभयन देख कै, सरोरुहासन[12] स्राप[13]।
मृत्यु - लोक में मृत्यु ह्वै, सुख दूख सहहु सँताप ॥४७
चाह्यौ गंगा चित्तबन, पितू हित नृपत प्रतीप।
बीच मिले अष्टहु बसू, स्राप बसिष्ट समीप ॥४८
अष्ट बसहु उद्यान में, बिचरत करत बिलास।
दोउ वसु तिय उपदेस तैं, नंदनि लई निकास ॥४९

१ उदक = जल। २ वसिष्ठ। ३ महाभारत। ४ उत्साह = उछाह। ५ इक्ष्वाकु। ६ राजा का नाम। ७ ब्रह्मा। ८ परमेष्ठी। ९ उछल कर, ऊपर उठ कर। १० दिवस। ११ गोर। १२ ब्रह्मा। १३ शाप।

दियौ स्राप वासिष्ट द्रुत, अष्ट बसू अबरेख।
परपंथ के रत पाप पथ, द्रगन लेय हम देख ॥५०
द्यौ आदक मृत देह कै, सुख दुख भोगहु संग।
परासकंधी[1] पाप कौं, इह फल लेहु अभंग ॥५१
बसु बोले वासिष्ट सौं, द्यौउ पर मोखी[2] देख।
पसितोहर[3] हम सात पुन, बिधबत न्याय बिसेख ॥५२
दंडनीत लख दीजियै, करहै अंगीकार।
मुनिवर आप महान मति, न्याव करहु निरधार ॥५३
बोले मुनहुं बिचार कै, सातहु कौं मम स्राप।
अल्प काल में उद्धरहु, प्रत दोउ[4] दीरग पाप ॥५४
जैसी करनी जाहि की, भुगतै जैसोइ भोग।
इही न्याव घर ईस कै, जनहु सुख दुःख जोग ॥५५
पापहु में बसु पुन्य तैं, भई गंग सों भेंट।
अरज करी हम उधरहुं, पोषहु तोषहु पेट ॥५६
कह्यौ वसुन मंदाकनी[5], करहु न सोक कदाप।
इक इक बच्छर उद्धरहू, सात पुत्र कौ स्राप ॥५७
विस्नुपदी[6] महमा बड़ी, निज प्रभाव रत न्याय।
आप स्राप बस अनुसरत, जीव उधारत जाय ॥५८
भूँकौ तौ पाँनी भलौ, करता आतिथ[7] काज।
स्रापत गंगा वसुन कौं, किय पन तारन काज ॥५९
पुन महांभिसहु प्रतीप कै, भये सुत सांतन भूप।
पितु गमन्यौ बन हेत तप, सबहि राज कौं सूंप ॥६०
सांतनु नृपत सिकार कौं, गये बिपन लहि गैल।
खोजन लागे मृगन खग, सैवलनी[8] तट सैल ॥६१

छंद मुक्तादाम
हीयै जब गंग उमंगीय हेत, कीयौ नृप अंग अनंग निकेत।
प्रभाव सु पुन्य पराक्रम-पुंज, मनो मकरध्वज दूसर मंजु ॥६२
बनी तब गंगहु अंगना[9] बेस, अलंकृत धारन कीन असेस।
अनूपम भीन टंबर आँन, मनोहर आँनन की मुसकान ॥६३

१ चोरी। २ मुक्ति। ३ पश्यतोहर = चोर। ४ द्यौसु नामक वसु। ५-६ गङ्गा। ७ आतिथ्य। ८ शैवालिनी = नदी। ९ स्त्री।

रह्यो अत सोभन जोवन रंग, उहासत[1] चंद्रमनी द्युति अंग।
लिया लोह्न गंग तरंगनी[2] तीर, धरी नृप आवत देखत धीर ॥६४
पहुँचीय आय कै ताहि समीप, पुकारीय ता कह नंद प्रतीप।
कहौ तुम मानुखी देविय कौन, जु पै तुम किन्नरी गंध्रबी जौन ॥६५
लियौ मन मोह कै संग लगाय, जगाय कै काँम कहाँ तुम जाय।
कह्यौ तब नार सुनौ नृप कान, भये तुम बंस जजात के भाँन[3] ॥६६
कहै हिय प्रांजल होय कै कथ्य, सबै बिध नीतहु रीत समथ्थ।
कियौ कछु आस्रव[4] चाहत कोय, सुनौ हिय प्रांजल ह्वै तुम सोय ॥६७
करै हम जोय सुभा-सुभ काँम, निसेध न कीजियै लीजियै नाम।
सुनै लुत अप्रिय बानीय सोर, चलौ हम जावँहगी तुम छोर ॥६८
करयो पन भूपहू अंगियकार[5], विसारद हारद[6] चित्त बिचार।
लियै अवरोधन[7] वीच ललाँम, बसाइय चंदमुखी निज बाँम ॥६९
बिधोबिध राचत भोग बिलास, हियै नित बाढ़त प्रेम हुलास।
सजै तन अंबर भूखन सैंन, रमै सुख पाय रहै दिन रैन ॥७०
इतै बिच धारिय गर्भ-अधाँन[8], जम्यौ हिय आँनद अंकुर जाँन।
विसर्जन औध[9] के मास वसाय, ऊपजिय अंगज[10] गंगहु आय ॥७१
वही सुत बार की धार बहाय, अनंदत ही अवरोधन आय।
जनै सुत सातहु अब्द जितेक, इहीं किय सातन की गत एक ॥७२
रह्यौ नृप देखत रानिय राह, प्रनासत पुत्रन तोय[11] प्रवाह।
भयौ सुत अष्टम द्यैवसु भेस निहार कै बोलेयु गंग नरेस ॥७३
जनै सुत नीर में बोरत जाय, अहै कुल बृद्धिय कौन उपाय।
बिनासन देहुँ न मो सुत बाँम, करौ मन मानत जो कछु कांम ॥७४
निहार कै गंग कही नृप नीक, कियौ तुम आस्रव मोर अलीक।
हमैं नहिं जानिय ना कछु हाल, भई बस स्राप कें गंग भुवाल ॥७५

---

१ खिलना, प्रकाशमान होना। २ नदी। ३ भानु, भुवन=सूर्य, भुवन। ४ आश्रव= आश्वासन। ५ अंगीकार=स्वीकार। ६ हार्द=हृदय का, प्रेम। ७ अवरोध= तट, रुकावट, बन्धन। ८ आधान=रहना, धारण। ९ अवधि=सीमा। १० पुत्र। ११ जल।

बसी तुव ग्रेह विचारहु बाँम, महा अघ मैटन कीन मुकाँम।
बसू भये मो सुत अष्टहु बीर, अभैपद[1] हेत बहावत नीर ॥७६
भये अघ मोचन सात भुआल, लहौ इह अष्टम मो सुत लाल।
पलै नहि मात बिनां कोउ पूत, इहै परपाटिय आद अभूत ॥७७
विचार कै सौंपहु मोर बरिष्ट, इहै लहि सिद्ध करौ तुम इष्ट।
जबै सुत होवहै बेस जवान, इहै तुम सौंपहुगी फिर आन ॥७८
नरेश्वर तोरहु[2] के पन न्याय, बसू पन मोरहु जेम बसाय।
तज्यौ तुम त्याँनहि[3] त्यागत तौंन, भली बिध जानत जाबत मौन ॥७९
इहै कहि गंग गई निज ऐन[4] बिसास न पावत आबत बैन।
विचारत रानीय पुत्र बिजोग, सोइ हिय भूप बढ्यौ अत सोग ॥८०
हृदै लख आश्रव की फिर हाँन, विमासत सासत सांज[5] बिहांन।
समै इक भूपत काज सिकार, नदी तट गंगा गये निरधार ॥८१
तही बन हात(थ) गहै धनु तीर, बिलोकिय डिंभ महा बरबीर।
निहारिहु आक्रत[6] ताहि निदान, इहै मम पुत्रन है अनुमान ॥८२
कह्यौ नृप कौन के राजकुमार, महातनु दीसत[7] के सुकमार।
नहीं तिह उत्तर दीन नरेस, पयोनद अंतर कीन प्रबेस ॥८३
जबै सुत आपुन जानिय जांन, सलाघाय[8] गंग करी सुखदान।
मिली धर संचर[9] गंग उमंग, इहै सुत रावरौ लेहु अभंग ॥८४
नृभै इह बिस्नुपदोदत नाम, धराबहु मो सुत कौ चिब धाम।
संबोधन दै गइ गंग सिधाय, लयौ सुत भूप ही कंठ लगाय ॥८५
पिता सुत बाढ़त नेह परीख[10], सिखावत नीत तनं-धय[11] सीख।
भये कौंउ काल बितीत भुबाल, अहेरन हेरन चाल उताल ॥८६
जोई रविनंदनी के तट जाय, सिकार कौं खेल खिलै सुख पाय।
जहाँ इक द्यौस भयौ इह जोग, उपज्जय आय सुगंधोय ओघ ॥८७
धरचौ नृप ध्यान सुगंधिय घोर, बहीं हित चाह चल्यौ जिह ओर।
जहां तहाँ भूपत देखत जाय, अहै कहुं मालती चंपक आय ॥८८

---

१ निर्भयपद। २ तुम्हारे। ३ उन्हें। ४ अयन=स्थान। ५ सायं। ६ आकृति। ७ देखने में। ८ श्लाघा=प्रशंसा। ९ शरीर। १० परख कर=देखकर। ११ स्तनन्धय=बालक, पुत्र।

लई रथ हेर प्रभजन लार, निरखीय [स][1] सुंदर संचर नार।
मलीनस अंबर अंग मझार, सुसोभत[2] नाहिन कोय स्रंगार[3] ॥८९
प्रकासत जोवन की दुति पिंड, महा रमनीय पयोधर मंड।
निहारिय कंजन[4] गंजन नैन, अनूपम इंदुमुखी चिब अैन ॥९०
कह्यो तिह भूप अहो तिय कौन, तलासत जात पिता हम तौन।
कुमारिय दीसत वेस किसोर, छल्यौ हय देख लयौ चित चोर ॥९१
चलो मम तीय गई कर छंद[5], अहो पटरानीय होहु अनंद।
कह्यो तव सत्यवती सुन कान, नरेश्वर आप तौ नीत निधांन ॥९२
कहाँ तुम छत्रीय जात कुलीन, अहो हम धीवर जात अलीन।
बनै हमरो तुमरो किम व्याह, सपेखहु नीक बिचार सलाह ॥९३
हुई कछु चाह तुमैं हिय हेर, विचारहु मो पितु तैं इह वेर।
चले नृप दास के पास बिचार, अधेलन[6] कारन कथ्थ उचार ॥९४
दहूँ कर जोर कही तब दास, कहो नृप लेहु न, होहुं उदास।
तथा इक बीनती या महु तौन, जिहीं विध आसव[7] जानहु जौन ॥९५
सुता-सुत[8] होय कहूँ सुख साज, रहै सोइ पट्टप[9] पावहि राज।
सुनै नृप दास के वायक अौन, भये मन भंग गये निज भौन ॥९६
उपज्जिय आयकै चित अछेह, दहै निस वासर हौं दुख देह।
प्रका[10] उदयांन भयौ मन ताहि, थिरावत नाँहि न पावत थाह ॥९७
बिना जल ज्यों सितकोलक[11] वृंद, रहै अकुलावत चित्त नरिंद।
निहारिय बिलुपवीदत नैन, उपज्जिय नूपत कौन अचैन ॥९८
समासन[12] बोल कह्यो अकुलाय, कहा दुख मो पितु कैं इह काय।
न आवत नैनन नींद निसाह[13], लहा तन खाद न ओदन लाह ॥९९
गयै जिन पूछहु नूपत तथ्य, कह्यो मम आय कहै सोइ कथ्थ।
समागहु उठ चले अकुलाय, जुहारिय नूपत के ढिग जाय ॥१००
कह्यो तव प्रसून[14] राजकुमार, संबोधन धीनस[15] बुद्ध सुमार।
कह्यो नृप सचिव सौं निज काज, सुनौ सुत मंत्रीय और समाज ॥१०१

१ पु॰ [illegible] में यह अधिक है। २ सुशोभित। ३ शृंगार। ४ खंजन। ५ छल। ६ [illegible]। ७ आसव—आश्वासन, प्रतिज्ञा। ८ दौहित्र। ९ सिंहासन पर। १० [illegible]। ११ एक प्रकार की मछली। १२ समासन=मंत्री। १३ निशा=रात्रि। १४ प्रसून, प्रसूनि=पुत्र, [illegible]। १५ मंत्री।

नही इक पूत में पूत निदान, ज्युही इक आँख में आँख न जाँन।
उपज्जिय मो चित येह अँदेस, निरंतर बात प्रकास नरेस ॥१०२
निरखीय ब्रिस्नुपदी सम नार, कुमारीय बेस नई सुकमार।
मनोरथ सिद्ध करौ मिल मोहि, सुता तुम दास की लाबहु सोय ॥१०३
दीये वह कन्यका सुंदर दाँन, विचारहु जायकै ताहि बिधाँन।
गये सब मंत्रीय पास गंगेव, भलो बिध भूप कह्यौ इह भेव ॥१०४
मिले तब मंत्रीय राजकुमार, गये सोइ दास के पास अगार[1]।
अहो तुम पुत्रीय माँगन आय, मनोरथ पुज्ज बनावहिं माय ॥१०५
निहार कै उत्तर दीन निखाध[2] उपज्जीय जो कछु चित्त उपाध।
सबै मिल मेटहु मोर संदेह, अमातन बात सुनौ श्रुत एह ॥१०६
जिही घर जानवी-पुत्र[3] जवान, नरेश्वर यंभन[4] राज निदान।
दीयै कछु भाग न दास दुहित्र, परामुख होवहै पुत्रीय-पुत्र ॥१०७
कछू इह जत्न प्रकासहु कोय, ततौ[5] हम पुत्रीय देवह तोहि।
कही सुन मंत्रीहु राजकुमार, बिसासीय[6] धीवर बात बिचार ॥१०८
सुता तुहि होवहिगे सुत सोय, समापहि[7] ताकहु राज स कोय।
करै पन[8] दूसरहू सुन काँन, बढ़ावहि संतति नाहि बिधांन ॥१०९
सँबेसन[9] नारन तै तज सुद्ध, इहै हम आश्रब धारेउ उद्ध।
सधै कहु स्वप्नहु नारीय संग, लहै असि-पुत्रीय[10] छेदन लिंग ॥११०
कियौ पन भीसम येह करूर[11], सराहन लागीय स्वांतक सूर।
सुकन्याय दास दई तिह सूप, बिबाहन कारन सांतनु भूप ॥१११
बिबाह कै सत्यवती तिह बेर, करी पटरानीय राजन केर।
उभै[12] सुत सत्यवती नृप अंस, बढ़े नहिं ताहीय तै कछु बंस ॥११२
भयौ सोइ सत्यवती सुत भूप, स को रजधानीय भीसम सूंप।
मरयो रुज[13] एक मरयौ रन मंड, रही नृप एक कै द्वै तिय रंड[14] ॥११३
तबै सुत ब्यास कौं बासबी टेर, बिचार कै भीसमहू तिह बेर।
तहाँ कहि सत्यवती तुम तात, जजात के बंस कौं राखहु जात ॥११४

१ आगार=गृह। २ निषाद=धीवर। ३ जाह्नवीपुत्र=गांगेय, भीष्म। ४ यमराज
५ तब तो। ६ विश्वासार्थ। ७ समर्पित कर। ८ प्रण। ९ संवेशन=सम्बन्ध १० तलवार, कटार। ११ क्रूर=कठोर। १२ उभय=दोनों। १३ रोग। १४ रंडा=विधवा।

करी सुन व्यासहु मात की काँन[1], दीयै त्रहुँ भ्रात तीया सुत दान।
विचत्रहुवीरज[2] की कुल वृद्ध, सोई सुत क्षेत्रज तैं भई सिद्ध ॥११५
भयौ धृतराष्ट्रहु जेष्टन भूप, सोई निज अक्षमिताक्ष[3] स्वरूप।
सिंघासन साँतनु राज समस्त, हुयौ सोइ पंडु नरेसुर हस्त ॥११६

दोहा — भीसम की मति सौं भवौ[4], पांडुय-राज प्रतिष्ठ।
बिमल राजमंत्री बिदुर, कीनैं भ्रात कनिष्ठ ॥११७
रमनी द्वै धृतराष्ट्र कै, गंधारी निज ग्रेह।
वैस्या[5] दुती[6] बखानियै, निपुन तीया जुत नेह ॥११८
कुंती माद्री पांडु कै, रूपवती रमनीय।
राजा मन रंजन रहस, कंज-नयन कमनीय ॥११९
सुत गंधारी येक सत, सुत बैसी मति सुद्ध।
नाम जुजूछू[7] जानियै, पितु धृतराष्ट्र प्रसिद्ध ॥१२०
सूरसैन कन्या सुवर[8], कुँती तन सुकमार।
कुँतभोजनिह कन्यका, पुत्रीय लीय जुत प्यार ॥१२१
अग्नहोत्र थित ऊद्धवैंह, सूरसैन कीय सूप।
अवसर दुरवासा वहीं, आये परम अनूप ॥१२२
कुंती मुनि सेवा करी, च्यार मास रहि छाय।
कुँती कों करकै क्रपा, मंत्र दीयौ समुझाय ॥१२३
जिह देवन कौं जाचहै[9], ऐहै करत ही याद।
सिद्ध मनोरथ फलहि सब, विघ्न न करह विखाद[10] ॥१२४
मुनि दुरवासा महत गति, सोइ पुन गये सिधाय।
कुँती आवाहन कियौ, परख[11] अरक[12] सुख पाय ॥१२५

छंद कुमारीय कुंतीय वेस किसोर, जगै तन जोवन की दुति जोर।
मुक्तादाम-करै मन रंजन मंजन काय, दियै चख[13] खंजन गंजन दाय ॥१२६
छुटे कच साईय वस सरीर, भ्रमै भृ(भ्र)मरावल मानहु भीर।
दमंकत दीपसिखा सम देह, ठमंकत लागत पायल ठेह ॥१२७

---

१ वचन, आज्ञा। २ विचित्रवीर्य। ३ अन्ध। ४ हुआ। ५ वैश्या=वैश्यकन्या। ६ द्वितीय। ७ युयुत्सु। ८ सुघड़—सुंदर। ९ याचना करेगी। १० विषाद। ११ परीक्षा। १२ अर्क=सूर्य। १३ चक्षु=आंख।

उरोजन बाढत सोभ अहीन, जगै चिब पाट पटंबर झीन।
उहांसत आनन पूरन इंदु, बनी तिह भाल में रंजन बिंदु ॥१२८
भली बिध सोध करी सुच भूँम, धुकाय कै गंधपिसोचका-धूम।
सुधारीय सिंदल[1] तेल सुगंध, धरे कहुँ कुंकम धूलीय गंध ॥१२९
पसारीय गुंफत माल प्रसून, करी निरहारीय च्यारहु फून।
प्रचारीय ठौरई कंत प्रयोग, जपे रबि-मंत्र निमंत्रन जोग ॥१३०
बने नर संचर[2] सुंदर बेस, दयौ दरसाबहु आय दिनेस।
भई अवलांचत[3] कुंतीय भेख, दहूं द्रग सूरज कौ तप देख ॥१३१
कियौ अभिबंदनहू कर जोर, नमाय कै सीस प्रसंग निहोर।
करी तुम पावन दासीय केर, बिभावर[4] आय मिले इह बेर ॥१३२
कियौ मन-बंच उदंचत कांम, सिधावहु मंडल कौं जगसाँम।
दियौ तब सूरज देव निदेस, बिचारहु आस्तिक नास्तिक बेस ॥१३३
निमंत्रण बेमुख[5] देत निकार, इहीं मम नीक कीयौ अपकार।
उपज्जीय मो तन आय अनंग[6], सु भामनि पाय लहौ सुखसंग ॥१३४
भयौ मन बंचत[7] तोरहू भांम, करौ मन बंचत मोरहु कांम।
कह्यौ तब कुंतीय वेस कँवार[8], दिनेसम जानत मोहि उदार ॥१३५
इहै तुम सासन[9] देत अजोग, भये वृत-भंग कहा सुख भोग।
दयौ तिह ऊत्तर सूरज देव, भली विध कन्यका जानत भेव ॥१३६
लगै वृत-भंग न पाप लगार, करौ मन-बंचत राजकुमार।
पराक्रम मो सम दाँनीय पूत, उपज्जहै तोहि पिचंड[10] असूत ॥१३७
न तौ तुम मंत्र बतावन-हार, सराप कै जावहै गेह सिधार।
सुनी इह कुंतीय बात दिनेस, नमाय कै नैनन मान निदेस[11] ॥१३८
दयौ रतिदान सु सूरज देव, उदारनो कुंतीय होय अभेव।
गये रवि मंडलहूँ निज ग्रेह, इहाँ गत कुंतीय की भई एह ॥१३९
बसी सोई जाय इकंत में बास, अनूपम देख कै गुप्त अवास।
लखे नहीं मात पिता अरु लोय,[12] सिवाय न दासीय कै इक सोय ॥१४०

---

१ चन्दन। २ शरीर। ३ अवलोचित, अभिलाञ्छित, अभिलाषित। ४ सूर्य। ५ विमुख। ६ कामदेव। ७ वाञ्छित। ८ कुमारी। ९ शासन=आज्ञा। १० प्रचण्ड। ११ निदेश=आज्ञा। १२ लोक, लोग।

[illegible] कुंडल कंकट अंग, उपज्जीय संग ही धार अभंग।
लख्यौ सुत आनन मात ललाँम, अनूरम सूर ज्युही अभिराँम ॥१४१
भयो मन व्याकुल तागन[1] भाय, उचारीय दासीय साँ अकुलाय।
[illegible] पेटीय कै धर बीच, नहावहु मोहि अभागनि नीच ॥१४२
[illegible] तब दासीय जैन कहाय, जहाँ तट गंग तरंगनि जाय।
[illegible] कै पुत नहाय कै वार[2], सबै तन आईय गेह सँवार ॥१४३
[illegible] सोई पेटीय जावत नीर, तिहो अधरथ्य[3] गहो नृप तीर।
[illegible] निज रानीय कौं सोई दत्त, अपुत्रहु पुत्र लह्यौ अधरथ्य ॥१४४
[illegible] तिहू राधका रानीय जोय, कीये सुत मंगलहु सह कोय।
[illegible] पालन लालन आद, विसंभर[4] मेटीय मोर विषाद ॥ १४५
[illegible] कै या विध नूप विचत्र, महामुद पोषीय अंगज मित्र।
[illegible][5] हू नाम धर्यो निह केर, वदै जस ताहि विभात की बेर ॥१४६
[illegible] कुंतीय पंडुव[1] साथ, विवाहित कीनोय वीर विख्यात।
[illegible] निह दूसर मद्र नरेस, विचच्छन रूपवती नव वेस ॥१४७
[illegible] नृप कांतर[6] बीच सिकार, आयांतर आंतर देस उजार।
[illegible] नहीं [illegible] भई गति गूढ, महा [illegible] जोग लई मति मूढ ॥१४८
[illegible] मुनि एक [illegible] जनीन, क्रिया पसुतानि प्रसारत कीन।
[illegible] मृग [illegible] बान कौं तान, हन्यो जिह प्रान कौ कारक हान ॥१४९
[illegible] निह भूप भयो बहुलाय, कटो मुनि बैन कै ज्वाल बलाय।
[illegible] मुनि देन, [illegible] गत नेवहुगे अवरेत[8] ॥१५०
[illegible] जावहुगे तब नाव, नृसंग सौं जावहुगे जम साथ।
[illegible] भयो निज भौन, गह्यौ मन सोक भयो वन गौन[10] ॥१५१
[illegible] मग सीय, गनोपुन-साधन सैन सुकीय।
[illegible] कीन, [illegible] नाम लगो बिन प्रान[11] ॥१५२
[illegible] कुमरहीं[12] [illegible] और, [illegible] दिन पंचही रनधीर।
[illegible] गह [illegible], [illegible] सुत [illegible] जोग [illegible] ॥१५३

[illegible] ४ [illegible] । ५ [illegible] । ६ [illegible] ।
[illegible] । ९ [illegible] । १० [illegible] । ११ [illegible] ।
१२ [illegible] । १३ [illegible] ।

सुनै कहु बेद पुराँनन आँन, धरैं कहु ईस - बिसंभर ध्यान।
सुन्यौ कहु सुमृती[1] कौ तत सार, बिना सुत मुक्त न होय बिहार ॥१५४

दोहा–
सुन कै नृप पांडू श्रबन, अति चित भयौ उदास।
तियन[2] कह्यौ समुझाय कै, परम मंत्र परकास ॥१५५
तज्यौ राज बपु करत तप, जप साधन अरु जोग।
बिना पुत्र सब ही बिफल, पद निर्वान प्रियोग[3] ॥१५६
तिह उतपत सुनहू तीया, दस प्रकार कहि देत।
बेद सुमृति आपत[4]–बचन, सब कोई कहत सहेत ॥१५७
आप तीया के उदर में, उपजत अपनै अंस।
जाकौं अंगज जानीयै, बिबध बढ़ावत बंस ॥१५८
जाच[5] करै जामात तैं, सुता बिवाहत साथ।
सुत लावै हित सतती, बिदुष बिचारत बात ॥१५९
पत[6] ह्वै रोगी पिड सौं, और बीज उपजाय।
जाकौ क्षेत्रज जानीयै, सबहि कहत समुझाय ॥१६०
पत जावत परलोक कौ, त्रीय बिधवा ह्वै तत्र।
उपजै ऊतम अंस सौ, पुन वह गोलक पुत्र ॥१६१
पति जीवत जाकी त्रीया, पुरुष और परसंग।
सोई पुत्र कुंडज समुझ, बिदुष बखानत व्यंग ॥१६२
गरभ कँवारी तीय गहै, परनैं जनै सपूत।
सो सहोढ़ समुझहु सकल, सूत तथाँ अनसूत ॥१६३
पिता गेह कन्यापनहि, उपजत जार अधीन।
जनै सु सुत एकांत जिह, कहत बिदुष कानीन ॥१६४
उचत गरथ दै अपुन कौं, विक्रीय अरथ बसाय।
क्रीत पुत्र ताकौं कहत, विधवत[7] रीत बसाय ॥१६५
बन में परचौ सुभाग बस, ग्रहि कै लावै ग्रेह।
प्रापत ताहिं प्रमानीये, अनुक्रम जानहु एह ॥१६६

---

१ स्मृति। २ मू०प्र० में = स्त्रीयन है। ३ प्रयोग = अनुष्ठान। ४ आप्त = विश्वस्त।
५ याचना। ६ पति। ७ विधिवत्।

मात पिता असमर्थ ह्वै, पलै न जासां पुत्त ।
औरन कौं देवे अरप[1], दसम सोय सुत दत्त ॥१६७
इह विध पांडू औयन सौं, कहो न्याय जुत कथ्थ ।
तपसी द्विज तैं अवस[2] तुम, पुत्र करहु उतपत्त ॥१६८

छंद तोमर— तब कह्यौ कुंतीय तीय, दृढ़ मुनि कुसारनि[3] दीय ।
पुन करत मंत्र प्रीयोग, जिह सुर निमंत्रन जोग ॥१६९
सोई आय करहि सिद्ध, उर कांमना अविरुद्ध ।
तब कही पांडु तीय, क्रत काज है करनीय ॥१७०
कीय जाप मंत्र कृतंत[4], तिह आय साध्यौ तंत ।
तिह जोग ह्वै गौ ताय, उपज्यौ जुजुष्टर[5] आय ॥१७१
तिन भयौ पुष्ट सरीर, घर औव केतक धीर ।
पुन कियोहु मंत्र प्रयोग, जिय जानकै रितु जोग ॥१७२
यह दौर येह विध आय, वपु धार कै पुन वाय[6] ।
भय लह्यौ अंगज भीम, सुत पवन तैं बल सीम ॥१७३
पुन कुंती सुत भय पुष्ट, अरु मंत्र साधेउ इष्ट ।
पुन आय इंद्र पुनीत, पहचांन कुंती प्रीत ॥१७४
सुत भयौ अर्जुन सूर, कलि विजय की अंकूर[7] ।
सुत भये तीन समांन, विख्यात जग बलवान ॥१७५
[illegible] कुंतीय आंन, दीय मंत्र माद्रीय दांन ।
[illegible] पाय प्रसंग, इक जीव जिह दुई अंग ॥१७६
[illegible] सहदेव, सुत भए पन्नु समेव ।
[illegible] उपनि कीय [illegible] ॥१७७
[illegible] कुंतीय [illegible] ।
[illegible] ॥१७८
[illegible] ।
[illegible] ॥१७९

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ कृतांत—[illegible] ५ युधिष्ठिर । ६ [illegible]
७ [illegible]

पति संग गई जुत प्यार, बपु जार कै तिह बार।
निज पुत्र कुंतीय लेह, गई हस्तनापुर गेह ॥१८०
जब भीस्म बिदुर सुजांन, पुर बासीयन परधांन।
कुंती सु कियेउ कहाय, भय पुत्र इह किह भाय ॥१८१
दस स्राप पंडू बिलेस, सुत भये किह बिध सेस।
सुर बोल बोलीय सोय, सुन लेह बात स कोय ॥१८२
भल कह्यौ देवन भेव, सुत पांच हमकौ सेव।
इह पुत्र लीय उपजाय, नृप पांडू सासन न्याय ॥१८३
ध्रुव धार कै हीय धीर, गंगेव बिदुर गँभीर।
थिर राख लीनैं थांन, इहि जान बाहु आजांन[1], ॥१८४
द्रोपद स्वयंबर दाय, जहां पांच बंधव जाय।
जहां द्रोपदी लीय जोय, सामांन तीय कीय सोय ॥१८५
नव जोबना तिह नार, लघु जेष्ट अनुक्रम लार।
सुत जने पांच समांन, पति पांचहू परबान ॥१८६
श्रीकृस्न भगनी साथ, पुन ब्याह कीनौ पाथ[2]।
अभमन्यु[3] कुवर उदार, महारथिनि लीय तिह मार ॥१८७
सुत द्रोपदी के सुद्ध, जो मरे बीच ही जुद्ध।
अभमन्यु तीय उतराहि[4], तिह उदरमें सुत ताहि ॥१८८
जिह अस्वथांमा जोग, पर अस्त्र कीन प्रयोग।
श्रीक्रस्नचंद सिहाय[5], तिह चक्र तै कीय ताय[6] ॥१८९
सुत अंधनृप[7] सत संग, जे मरे ताहो जंग।
ध्रतराष्ट्र दुहु कर धोय, बैठे रहे कुल बोय ॥१९०
गंधारी जा तिह ग्रेह, इह अंध नृप तीय एह।
जिह पितु जुजुष्टर[8] जान, सोई करन सेव सुग्यान ॥१९१
लघु भ्रात बिदुर ही लार, सो करत अंध सँभार।
कटु बाद भीम कहंत, सुन अंध भूप सहंत ॥१९२
इहि अब्द दस अरु अष्ट, कीय टेर घोर कलिष्ट।
कहनी जुजुष्टर कीन, हित क्रीया पुत्रन हीन ॥१९३

१ आजानु=घुटनों तक। २ पार्थ=अर्जुन। ३ अभिमन्यु। ४ उत्तरा। ५ सहाय ६ ताहि। ७ धृतराष्ट्र। ८ दुबाकर। ९ युधिष्ठिर।

कीय वृकोदर[1] जुत कोह[2], मन मोह उपजत मोह।
कछु द्रव्य हम इह काज, तुम देहु नृप सिरताज ॥१९४
सुत क्रीया करकै साध, बन बसहिगे निरबाध[3]।
जब जुजुष्टर पितु जाँन, दीय द्रिव्य कारन दाँन ॥१९५
गये अंध नृप कर गाँन, सँग बिदुर भ्रात सयान।
संजय गयौ फिर साथ, अरु सुबलजा[4] तीय आथ ॥१९६
अरु गई कुंती आप, तिह संग में हित ताप[5]।
नद गंग पावन नीर, अन[6]-कुटी कर-कर तीर ॥१९७
बस रहे बन में वास, अत होय जक्त उदास।
रहे बरख पट तज राग, परलोक हित होय पाग ॥१९८
नृप जुजुष्टर जुत नेम, इक स्वप्न देख्यौ ऐन।
कुँती सु दुर्बल काय, वन रही वास बसाय ॥१९९
जब कह्यौ बंधुन जोय, होय मोहि बिस्मय होय।
तुम चलहुगे वन तात, मुख देखहौं पितु मात ॥२००
सुभद्राहु द्रोपदी संग, अभमन्यु की अरधंग[7]।
निज पंच बंधु नरिंद, वहाँ गये जहाँ नृप अंध ॥२०१
पितु–मात परसे पाय, सुखरूप सबन सुहाय।
ध्रतराष्ट नृप सौं धर्म[8], पूँछ्यौ वृतंत सु पर्म ॥२०२
पित्रव्य[9] विदुर पवित्र, तिह दरस चाहत तत्र।
ध्रतराष्ट बोले धीर, वन इहीं विचरत वीर ॥२०३
नही ताहो है थित नेम, तपसी विरक्तही तेम[10]।
कहुँ बैठ ठौर इकंत, आराध भक्ति अनंत ॥२०४
सुन प्रथम दिन इह ग्याँन, दिन दूसरै सुख-दाँन।
गंगा सु न्हावत गेल, मन तनहि धोवन मैल ॥२०५
मिल गये विदुर महांन, जिह दरस दोनो जांन।
कर जोर बंदन कीन, पुन धर्म नृप प्रवीन[11] ॥२०६

१ कोम। २ कोप। ३ निरबाधि=निर्विघ्न। ४ धृतराष्ट्र की पत्नी सौबली, गान्धारी। ५ तपस्या। ६ तृण। ७ अर्धांगिनी=स्त्री। ८ युधिष्ठिर। ९ पितृव्य=चाचा। १० वह। ११ प्रवीण=श्रेष्ठ, चतुर।

जहाँ बिदुर निकसी जोत[1], द्रग लखत सबही उदोत[2]।
मिल जुजुष्टर तन माँहि, सो गई बदन समाय ॥२०७
जिह दाह कारन जाँन, उपलाद[3] इँधन आँन।
जब भई जिह लख जेम, आकास-बानी ऐम ॥२०८
नही देहु दाघ[4] नरेस, इह पर्म हंस असेस।
जब जिय जुजुष्टर जान, सुरनदी करकै स्नान ॥२०९
तत आय आस्रम ताँम, पितु मात कीय परनाँम।
ध्रतराष्ट्रहू धर धीर, सुन बिदुर त्याग सरीर ॥२१०
पूछी सु नृप जुत प्रेम, जिह कही देखी जेम।
जब व्यास अवसर जाँन, मुनि कालकर्म[5] महाँन ॥२११
आये सुजन केऊ और, ठिक जहाँ आस्रम ठौर।
जब बादरायन[6] जाँन, कुँती कह्यौ तज काँन ॥२१२
सुत जन्यौ रवि सैं सोय, हथ भयौ परबस होय।
तिह मुख दिखावहु तात, मन मोद मानहूँ मात ॥२१३
जब सुबलजा कहि जाहि, मैं सुजोधत[7] की माय।
निज पुत्र आनन नेह, अभिलाष नैनन एह ॥२१४
तब कहि सुभद्रा तात, मैं कुँवर अभमन-मात।
सिसु हन्यौ दुज्जन सोय, मुख तिह दिखावहु मोहि ॥२१५
सुन बादरायन त्याँन, धर जोग माया ध्याँन।
सब को दिखाये संग, जो मरे बीचहि जंग ॥२१६
पुन कीय बिसर्जन पेख, अभिलाष पूर असेख।
सब करत व्यास सराह, उर जोगबल अवगाह ॥२१७
गये व्यासहू बन ग्रेह, द्रग मोद सबकाँ देह।
पितु मात अग्या पाय, सब भवन चलेउ सिधाय ॥२१८
गये जुजुष्टर कर गाँन, अह[8] तीन पाछै आँन।
बिकराल आग बलाय, तागी सु तिह थल लाय ॥२१९
ध्रतराष्ट्र जुत अरधंग, अरु जरचौ कुंती अंग।
इहि बच्यौ संजय एक, लाचार बिध कै लेख ॥२२०

१ ज्योति=प्रकाश। २ उद्योत, उदित। ३ उपलादि=गोबर के ऊपले आदि। ४ दाह। ५ कालकर्मा=नारद (?)। ६ व्यास। ७ सुयोधन=दुर्योधन। ८ दिन।

जो गयौ तीरथ जात, अत देख कै उतपात ।
इह कही नारद आय, सुत धर्म कौ समुझाय ॥२२१
कीय सोक सुनकै कथ्थ, सुख दुखः भावी सथ्थ ।
भये जब ही कुरु भारथ्थ, छतीस हायन[1] छत्त[2] ॥२२२
मदरा पीयै बस मोह, दल बढ्यौ जादव द्रोह ।
ह्वै मूढ अपने हाथ, सब ही कटे इक साथ ॥२२३
पुन क्रस्न बारुनी-पेय[3], दुख इही त्यागी देह ।
बसुदेव सुन इह बात, तन त्याग कीनौ तात ॥२२४
अरजुन गयौ अकुलाय, परभास क्षेत्र पलाय[4] ।
ससपराबिक[5] इह सुद्ध, अंतहुं क्रीया कर उद्ध ॥२२५
अठ राँनीयै-पट अंग, सो जरी क्रस्नहीं संग ।
रेवत-सुता[6] बलराँम, लै जरो सग ललाँम ॥२२६
पुन द्वारका गये पाथ, सब जननि कारन साथ ।
अबरोध[7] सहित उदास, बिप्र जुक्त दै बिसवास ॥२२७
सब काँ निकासत साथ, पाथोद[8] उभले पाथ[9] ।
लीय पुरी ताही लील, इहि भयौ तहाँ असलील ॥२२८
लै चल्यौ सब कौं लार, मग इंद्रप्रस्थ मझार ।
पुन मिले बीच पुलंद[10], द्रढ घेर कीनौ द्वंद ॥२२९
लीय लूट कै संग लाग, उर सोक बाढी आग ।
नर[11] इंद्रपस्थ निकेत, हीय हेर कै कर हेत ॥२३०
अनरुद्ध सुवन[12] अनूप, भल बज्र[13] कीनौ सूप ।
पुर हस्थना गये पाथ, इहि कह्यौ सब उतपात ॥२३१

दोहा— ब्यास कही बहु बारता, मेंटन सोक महाँन ।
ब्यास किरीटी[14] बचन सुन, पुन कीय प्रस्न प्रमाँन ॥२३२
मग आवत तसकर[15] मिले, करी लूट तज काँन ।
कहा कहूँ मेरी कथा, हुई सकल बल हाँन ॥२३३

---

१ वर्ष । २ व्यतीत । ३ मदिरा पीने वाले=बलराम । ४ पलायन कर=भाग कर । ५ अन्त क्रिया । ६ रोहिणी । ७ जनाना, रनिवास । ८ समुद्र । ९ जल । १० पुलिन्द=भील । ११ अर्जुन । १२ सुत, पुत्र । १३ नाम (१) । १४ अर्जुन । १५ तस्कर=चोर, डाकू ।

उत्तर दीनौ व्यास इहि, नर सुनहू निरधार।
गये नारायन संग गयौ, उर सज कौ आधार ॥२३४
जब नारायन जनमहै, अवतरहै नर आय।
कैहै तोर पराक्रमहु, निसचय जाँनहु न्याय ॥२३५

छंद त्रोटक— हयनापुर पथ्थ गयौ हलकै, महाराज जुजुष्टर साँ मिलकै।
कर जोर हकीकत क्रस्न कही, सुन लीन जुजुष्टर बात सही ॥२३६
जिस देह रहो जीय जावत पै, पिछतावत थाह न पावत पै।
सिसि[1] जोत सरोज समाजहु कौं, जिम राह गह्यो दुजराजहो[2] कौं ॥२३७
बहुरै रितु दीसत है बरसा, निरबद्दर बिद्धत[3] जाँन निसा।
अरु आवत बूड़ीय ज्यौं अध में, नवका कहु साह पयोनिध में ॥२३८
मनु सेस[4] गई फन तें मन[5] ज्यौं, धनवत कौ चोर लयौ धन ज्यौं।
सुकीया मनु सीलवती सतिही, परदेस में छाँड़ चल्यौ पति हो ॥२३९
रनवास सबै सुन रोवत है, निज नैनन नीर निचोवत है।
उमड़े द्रुपदी अत आँसुरबा, धुर के मनु आय झुके धुरबा[6] ॥२४०
रसना इक क्रस्नही क्रस्न रटै, कहो क्रस्न बिना दुख कौन कटै।
स्रवनाँ सुभद्रा इँह बात सुनी, बिललावत सोक बढ़ी बँहनी[7] ॥२४१
बनधार मनौ सफरी[8] बिछुरी, घन के रस[9] तैरत डूबी घरी।
महाराज जुजुष्टर कीन मतौ, चित तै बहुलाय कै सोक छतौ ॥२४२
सब मंत्रिन बोल समाजन कौं, लीय कुंकुम थारीय लाजन[10] कौं।
हीय माझ बिचार घनै हित कै, कीय चर्चक[11] भाल परीछत कै ॥२४४
अनु बछर सो छब-तीसई[12] तै, छितराज कीयौ ध्रमराज छतै।
जोई छोड़ चल्यौ हरि जावत ही, गुन क्रस्नहो के पुन गावत हो ॥२४५
तत भ्रात गये द्रुपदा तरुनी, धर ध्याँन हिमाचल की घरनी।
तहाँ जाय कै त्याग कीयौ तन कौं, क्रम क्रस्न लगाय जिहीं मन कौं ॥२४६
छित[13] में भयौ राज परीछत कौ, बिध नीत लहै परजा[14] बित[15] कौं।
परबछछर साठ बितीत परै, धर भूप रह्यौं सोइ छत्र धरै ॥२४७

---

१ शशि=चन्द्र। २ द्विजराज=चन्द्र। ३ विद्युत=बिजली। ४ शेषनाग। ५ मणि। ६ छोटे बादल। ७ भगिनी=बहिन। ८ शफरी=मछली। ९ जल। १० लाजा=अक्षत, चावल। ११ तिलक। १२ छत्तीस। १३ क्षिति=पृथ्वी। १४ प्रजा। १५ वित्त=धन।

तट गंग चिता रच ताहिय कौ, अगनी कीय दाहन वाहीय कौ।
जनमेजय बालक जाँन जीया, कुल प्रोहित भूपत कोन कीया ॥२७४
तदनंतर देख महूरत कौं, सुभ काल परीछत के सुत कौं।
जन मंत्रि मिले जनमेजय कौं, उर माझ बिचार कै आसय[1] कौं ॥२७५
थिर राज-सिंहासन थर्प दीयौ, क्रत कुंकुम चर्चक भाल कीयौ।
हथनापुर देस सबै हरषा, बरषै अत्रप्राह मनौ बरषा ॥२७६
धनुबेद क्रपा क्रपधारन तै, कुल रीत पढ्यौ नृप कारन तै।
जिह कै सतसील जुजुष्टर ज्यौं, बपु जाँन बरिष्ट व्रकोदर ज्यौं ॥२७७
गुरुकर्म बिसारद बीर गनौ, मृध बाँन सरासन जिस्नु[2] मनौ।
सहदेव प्रबुद्ध-पनै[3] सरसै, दुत-रूप ज्युहीं नाकुल दरसै ॥२७८
दुहिता पुन कासीयराज दई, नयनी-म्रघ नारीय बेस नई।
बिहरै नृप मंदर बागन कौ, रुचि पाय सुनै कहुँ रागन कौं ॥२७९
परजा नय-रीत सौं पालन में, लहि कै सुख संपत लालन में।
गन मंत्रीय सूर विदग्ध गुनी, निज कारज राज बड़े निपुनी ॥२८०
नृप मंत्रन सीख लहै नित ही, जन मंत्रीय सासन लेत जिही।
परजा बढ़ बैभव नीति पखै, सठ धूरत चोर न बोल सकै ॥२८१
जनमेजय राज बढ्यौ जगती, पितु ज्यौं नयनीत महाँ प्रभुती।

दोहा— येक कथा येसी भई, वही समय बिच आय।
महिला गुरु ऊतंक मुनि, हुकम दीयौ हरकाय ॥२८२
कुंडल इक रानी अमुक, मोहि आँन दै मित्त।
मुनि चाले रानी मिली, वह दोय कुंडल अथ ॥२८३
आवत लै कुंडल उलट, मग सरवर तट मेल।
मंजन हित ऊतंक मुनि, करत रहे जल-केल[4] ॥२८४

छंद दुमक्षरी— इह अवसर तक्षक जहाँ आयौ, पहन आप कुंडल सुख पायौ।
मुनि ऊतंक आये इतनै में, तसकर करम कीयौ तितनै में ॥२८५
वहु प्रकार कीनी मुनि विनती, गनै कहासग ताको गिनती।
जब दीने मुसकल ते जाकौं, सरसे मुनि मन में लख ता कौं ॥२८६

१ आशय = रहस्य। २ जिष्णु = अर्जुन। ३ पाण्डित्य। ४ जलकेलि = जलक्रीडा।

अन अपराध करी उपहांसी, उपजो हिय मुनि अमित उदासी।
बेर-भाव तिह दिन तें बाढ्यौ, देखौ छली परीछत दाढ्यौ[1] ॥२८७
इह जनमेजय बाल अग्यानी, जब तै अब तौ लई जबानी।
किँहू कारन भए ऐसे कातर[2], पितु कौ बैर गयौ सो पांतर[3] ॥२८८
मिल नृप बेर लेंहुँगौ मैं हुँ, दोष जताय जायकै देहुँ।
इह कर मतौ नृपत ढिग आयौ, जनमेजय कौं सुवत जगायौ ॥२८९
कह्यौ नृपत तुम बैठे कैसें, जागतहू सोवत पुन जैसें।
काज अकाज गिनतहौ एकै, प्रीय अप्रीय हीय समहीं परेखै ॥२९०
सज्जन दुज्जन येक समाना, जानत कैसे भये अजाना।
जब बोले मुनि सों जनमेजय, रहस कहूँ भूले सोई रय ॥२९१
पूछहु मंत्रिन काज पधारो, महाराज तोह पितु कौ मारौ।
जनमेजय सौं कही मंत्रिजन, या मैं कहा तक्षक कौ औगुन ॥२९२
द्रुजवर श्राप भूप कौ दीनौं, कारन पाय हथन[4] तिह कीनौ।
बोले मुनि उतंक जन बाँनीं, राज सुनहु मंत्रिन रजधानी ॥२९३
कस्यप चले जिवावन कारन, इह नह कीनौ कहा अकारन।
बित दैकै ताही बगदायौ[5], आप छली हथनापुर आयौ ॥२९४
क्रतंम द्रुज ताके हित कीनै, छल ताकें तुमने नही चीनै।
दंड मिलै बित दीरघ द्रोही, कहा सत्रुथपन कहहु सकोही ॥२९५
इह सुन भई सकल मति ऊनी, मंत्री साध रहे चुप मूंनी[6]।
मुनि उतंक मतिवान महाँना, धरम-सास्त्र कौ कीय हीय ध्यांना ॥२९६
समुझहु राजा बात सयानी, है यामें तुमरी बहु हानी।
पुत्र लहै नहि बैर पिता कौ, जीवन निसफल जानहु जा कौ ॥२९७
इँह कारन देखत पितु अटके, भूप फिरौ कहा भटके भटकें।
जिग अंबा कीजै जाही में, अहि तक्षक होंमहु याही में ॥२९८
बैर करहुगे जबही निबेरौ, तब मुक्ति पैहै पितु तेरौ।
इह सुन राजा लीन उदासी, पुन मंत्रिन कौं बात प्रकासी ॥२९९
सामग्री तुम जिग्य सुधारौ, बैर पिता कौ लैन बिचारौ।
राजा हुकम दीयौ जिह रीती, पुन मंत्री लाये परतीती[7] ॥३००

---

१ डस लिया। २ भयभीत, विह्वल। ३ भूल। ४ हनन=मारना। ५ वापस कर दिया। ६ मौन। ७. प्रतीति=विश्वास।

मृघीया हित भूप गयौ बन में, मति मूढ़ भयौ उपजी मन में।
मुनि ध्यांनीय देख कै कंठ मही, अरुझाय दीयौ इक मृत्यु अही[1] ॥२४८
मुनि की तँऊ नाहीं समाध मिटी, गव जात लख्यौ सुत ताहि घटी।
अति क्रोध भयौ तिह तें उर में, कहि कै जल अंजुली लै कर में ॥२४९
कुमती पितु मो अपमान करचौ धमनो[2] पवनासन[3] ताहि धरचौ।
वह दुष्ट सही जमलोक बसै, दिन सप्त तक्षक आय डसै ॥२५०
सोइ श्राप उदंत[4] नरिंद्र सुनी, घट ताहि उपज्जीय पीर घनी।
तिह धीसख बोल लीये तबही, कहा कीजीयै ताहि उपाय कही ॥२५१
मिल मंत्रिन मंत्र विचार महा, कर संमत कै मुख गौर कहा।
मुन श्राप क्षमापन मागन कौं, गविजात के जावहु आँगन कौं ॥२५२
मुन कौं उत भेज कही मिल कैं, हितगार रु आय किते हल कैं।
स्रोत जालीय मूँद सँकेतन में, नृप बैठ निकेत इकतन में ॥२५३
श्रवना इँह कस्यप बात सुनी, मिखहारक[5] मंत्र अभग्य[6] गुनी।
चित में वित की कर चाह चले, मग में तिह तक्षक आय मिले ॥२५४
कर विप्र कौ रूप तिहीं कपटी, छलि कस्यप पूँछ उदंत छटी।
जुत आतुरता कँहाँ जावत है, कछु कारज मोहि कहावत है ॥२५५
कहुँ मित्र सुन्यौ नृप काटन कौं, द्रुत तक्षक के बिष दाटन[7] कौं।
हम जात परीक्षत के हित कौं, वहुरै बहु लावहिगे बित कौं ॥२५६
इन तैं दुज बोलहु होय अही, निसचै सिध कारज तोहि नहीं।
हम कौं तुम जानोय तक्षकहू, सुन लीजीयै बात सपक्षकहू ॥२५७
जिह काटहिगे सोऊ फेर जीयै, कोउ कोटक मंत्र इलाज करै।
कहि कै वट वृक्ष कौं काटतहीं, इह भस्म भयौ उतपाटत हीं ॥२५८
इस वृक्ष कौ फेर उगावहिगे, जब तौ ममहू[8] विष जावहिगे।
जव कस्यप हात[10] लयौ जल कौं, थित सींचत हीं वट के थल कौं ॥२५९
वट पल्लव पत्र सहेत बन्यौ, गरुआई[11] में तक्षक विप्र गन्यौ।
अहि विप्र कह्यौ सुनोये अरजी, मनवंचत है धन सौं मुरजी ॥२६०

१ अहि=सर्प। २ गर्दन। ३ पवनाशन=सर्प। ४ वृत्तान्त। ५ स्रोत=मार्ग। ६ विषहारक। ७ अभंग्य=अमोघ, अचूक। ८ मिटाने, उतारने। ९ उत्पाटित=उखाड़ कर। १० मेरा ही। २ गौरव।

हम सौं तुम लै अभिलाष हरौ, करकै सिध कारज गौंन करौ।
मुनिराज लख्यौ तब ध्यॉंन मंही, नृप की कछू आयुर सेस नही ॥२६१
बित लै द्वज ग्रेहहु कौं बहुरयौ[1],क्रम तक्षक अग्र प्रयॉंन करयौ।
जब और भुजंग स्वजातन कौं, भट जोर कह्यौ निज भ्रातन कौं ॥२६२
मुनि स्राप दीयौ अत क्रूर तै, चिर आयु अजौं[2] नृप मूढ चितै।
कर बंध प्रवेसन[3] संध[4] कुटी, करकै बहु जत्न दुरयौ[5] कपटी ॥२६३
अपराध बिना अपकार कीयौ, द्वज ताहितैं दारुन स्राप दीयौ।
द्वज दोषीय कौं निसचै डसहूँ, कछु और उपाय करौं सु कहूँ ॥२६४
तुम बिप्र कौ भेष करौ तन मै, पहुचौ सब राज-प्रबेसन में।
हम होय क्रमी तनके हरुवा, पहचान सकै नाहिं पाहरुवा[6] ॥२६५
फल बीच तथा कहु फूलन में, दुर बैठुहुगौ अथवा दल में।
अहिजात बिचार कै मंत्र इही, मति मान सुतंत्रहु चित्त मही ॥२६६
कहि तक्षक औरन ब्याज कीयौ,महाराज के धाम कौ मग्ग लियौ।
पहुचे द्वज ते हथनापुर में, पुन राज गये चल गोपुर में ॥२६७
तहाँ राज प्रवेसन-पाल[7] तहो, कहि कै अटके द्वज कृत्तम[8] ही।
द्वज वृंद कही दरबारिन सौं, कुल रीत तजी किह कारन सौं ॥२६८
तपसी द्वज द्वार खरे तरसै, सनमानहु दाँन नहीं सरसै।
बिन आदर जाय बिरादर में, कहा बात कहै चित कादर में ॥२६९
अरंजी तुम जाय करौ अब हीं, समुझाय कै राजन कौं सब ही।
अवकासही दै कहुँ आवन कौं, मुरजी कहु भेंट मगावन कौं ॥२७०
कहै भूप सोई हम आय कहौ, अन आदर होत उदास अहौ।
सुन कै इह बिप्रन बात सही, कहु जाय हकीकत भूप कही ॥२७१
जीय जाँनतै भेंट चहौ जिन तै, वहुँ आय कही तिह बिप्रन तैं।
द्वज भेंट जबै फल फूल दये, निज आदरतैंसोइ भूप लये ॥२७२
फल बीच क्रमी[9] सोई होय फनी[10],नृप कौ बपु काट चल्यौ निगुनी।
हथनापुर हा-रव[11] घोर हुयौ, गहिकै अहिराजन गैल गयौ ॥२७३

---

१ वापस गया। २ अद्यापि=अब भी। ३ प्रवेशन=घुसना। ४ संधि=जोड़, छिद्र।
५ छुप गया। ६ पहरेदार। ७ द्वारपाल। ८ कृत्रिम=बनावटी। ९ कृमि=लट।
१० फणी=सर्प। ११ हारव=हाहाकार।

सुच गंगा-तट भूम सँवारी, मंडिप छायौ ताहि मझारी।
सत सतंभ[1] कीनौ जिगसाला[2], वेदी कुंड बनाय बिसाला ॥३०१
होता मुनि उतंक जहाँ होई, जारन लये नाग-कुल जोई।
भए कुलाहल[3] जहाँ भयंकर, कुल नागन सह कोय खयंकर[4] ॥३०२
तक्षक भाग चल्यौ सुन ताही, सरन इंद्र तज सकल सिधाई।
सक्र ताहि कौं अभय सुनायौ, उर बिसास कर नही अकुलायौ ॥३०३
सुन उतंक जनमेजय साँनी, इंद्र सहित जारहु अभिमानी।
इह प्रयोग सुन भागौ आतुर, कौसक[5] सरन छाँड़ कै कातर ॥३०४
सरन लयौ अस्तिक मुनि सोई, दुरचौ जाय सोई नरपत द्रोही।
मुनि ढिग आय अरथना[6] मंगी, इह सुन भूप करी क्रत अंगी ॥३०५
कीजै जग्य बंध मुनि कहिऊ, रिष बानी सुन नृप चुप रहिऊ।
है यामें तुमरी नही हाँनी, बात विचार लेहु विग्याँनी ॥३०६
औगुन पै गुन कौ उपकारा, सब कोई जानत संसारा।
मुनि की बात नृपत सुन माँनी, जिग्य बंध कीनौ जीय जाँनी ॥३०७
पुन आये मुनि बैसंपायन, भारथ श्रवन कराय सुभायन।
तउ मन नृपत विकल्प न त्याग्यौ, अरु दरसन व्यास ही अनुराग्यौ ॥३०८
बिनती कर नृप व्यास बुलाये, अनुकंपा[7] करकै तहाँ आये।
कर पूजा वंदन पद कीनौ, दरसन कहौ परम हित कीनौ ॥३०९
मै कछु पूंछ्यौ चहत महाँना, दीजै तिह उत्तर कह दाँना।
भासन सुन्यौं भली विध भारथ, पुन छत्रिन जान्यौ पुरसारथ ॥३१०
पितु मो मृतु अकाल ही पाई, इँह संका मेरे मन आई।
रन में मृतक होत तौ रूरौ, पद मुकुती भेटत भरपूरौ ॥३११
विधवत मुकती हेत बतावै, जीय संका मेरी मिट जावै।
पारासरीय जान पितु-प्रीती, निगम पंथ जानी नृप नीती ॥३१२
उत्तर दीयौ व्यास सुन ऐसौ, इंमृतरस ही भागवत ऐसौ।
प्रीय पुरान सुकदेव पढ़ायौ, मन कौ तातै भरम मिटायौ ॥३१३
भारथ स्रवन कीयौ तुम भूपहि, अरु दीनै बहु दान अनूपहि।
तुम कीनी पूजा बहुतेरी, कर कर भाव बहुत मुनिकेरी ॥३१४

१ स्तंभ। २ यज्ञशाला। ३ कोलाहल=शोरगुल, हाहाकार। ४ क्षयंकर=नाश करने वाले। ५ कौशिक, इन्द्र। ६ अर्थना=प्रार्थना। ७ दया।

येक पिता कहा तरे अनंता, माता पिता पक्ष धीमंता[1]।
सुनै भागवत कथा सयानै, जोय संका मिटहै हीय जानैं ॥३१५
सब पुरान कौ सार सुधासम[2], आद अंत सो लखहु अनूंकम[3]।
मडप येक बनावहु तामहि, सुनहु भागवत बैठ सभा सहि ॥३१६

---

१ धीमान्—बुद्धिमान्। २ अमृत के समान। ३ अनुक्रम।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

तृतीय स्कंध

छंद मुक्तादाम

सुने नृप व्यास के वायक स्याँन, बनायहु मंडप तान बिताँन।
खरे कीय तास्महि केलीय खंभ, अनूपम चंदन पल्लब अंब ॥१
मिलाय कै लायकै फूलन माल, मढी बहु द्वारन वंदनमाल।
नहायकै अंगन गंग के नीर, बलू[1] सुच कीन महा बरवीर ॥२
रची तिह ऊपरहू फिर रेख, बिचित्रहु चित्र अबीर बिसेख।
कहूँ मृग-चर्म कुसासन कीन, जुपै कहु तल्प[2] पटांबर झींन ॥३
जथा जिह आसन जाँनेउ जोग, लहे नृप सासन ज्ञाँनीय लोग।
ठये सब आपनी आपनी ठौर, आमात्यहु भ्रातहु जातहु और ॥४
मिले कैऊ चाहिकै आय मुनिंद्र, बिचछ्छन छाय रहे जनबृंद।
जमाय के ऊरध आसन जास, बिराजेऊ जाही के ऊपर व्यास ॥५
जहाँ नृप प्रस्न करयौ कर जोर, निहार कै व्यास की ओर निहोर।
जथा कछू भाखहु देवीय जग्य, अनंदत होय सबै सुन अग्य ॥६
प्रकासहु देवीय भेव पुराँन, कहो यहँ देवीय है पुन कौन।
भई ऊतपति कहा गुन भेस, प्रकासहु रूप जिहों परवेस[3] ॥७
वही फिर जग्य की कोंन बिधान, निरंतर जाँनहूं काज निदाँन।
मँडी बृहमंड[4] की जा बिध मंड, ऊपज्जीय कारन तै किह अंड ॥८
त्रहूँ गुन[5] देव भये पुन तींन, इही जग राचत कोंन अधीन।
चिरायुस है किधु आयुस छेह, दहै सुख दुःखन ता कहँ देह ९ ॥९
विभूतीय है कहाँ देवन वास, इहै ऊर जाँनन की अभीलास।
दसिंद्रीय द्रव्यन को समुदाय, बने तन सप्तक धातु बसाय ॥१०
बिलछ्छन है इन तें कहुँ वेष, विचार कै कारन आदि विसेष।
जिते हम प्रस्न कीये सुन जास, विचार कै ऊतर देवहु व्यास ॥११

---

१ वसुधा=पृथ्वी। २ शय्या, आसन। ३ प्रवेश। ४ ब्रह्मांड। ५ त्रिगुण=सत्व, रज, तम।

कहे दुईपायन भूप कथंन, सुने हम प्रस्न भये सुप्रसंन।
जजात के बंस को रीत कौं जाँन, भये तुम आय उदै जनु भाँन ॥१२
ईहै ऊर संक उपज्जोय आय, तबै मुनि नारद पूछीय ताहि।
कही हमहुँ प्रत[1] नारद कथ्थ, सुनावत ताहीय कौं इक सथ्थ ॥१३
समै[2] ईक नारद आय मुनेस, बिसारद बुद्ध बिचार बिसेस।
जिहीं हम पूछीय [एक][3] जबाब, सुनाबहु ऊत्तर म हि सताब ॥१४
इहीं बृहमंड भई उतपत्य, निरंतर नित्य इहैं क अनत्य[4]।
इहै करता बिध[5] श्रीधर[6] ईस[7], सुभाखत केक[8] सहस्त्रक सीस ॥१५
कहै कोऊ सूरज कौं सिसी केक, बिनायक[9] स्याहिक पाय बिबेक।
बृखा[10] इक-पिंग[11] परंजन[12] वाय, सवारत त्रष्ट हो काल सुभाय ॥१६
कहै कोऊ कर्महो कौं करतार, निरंजन केक कहै निरधार।
कोऊ कह प्रकृति ही करनीय, जोई परपञ्च उपाजत जोय ॥१७
सदाँ उर अंतर पाय सँदेह, दहै दुःख ताप ह्रदै[13] मम देह।
थिरावत नाहन[14] एकहु ठौर, भयौ मन पोत[15] समुद्रहु भौंर ॥१८
अधर्महू धर्म न जाँनत एक, अकर्महु कर्मन कौं अवरेख।
हटै इंह भर्म[16] जितै नही होय, करै कहा पर्म तितै करनीय ॥१९
भयौ उदयाँन त्रकामन भाव, निकेतन केतन के पट न्याव।
करौ ऊर संसय-हींन क्रपाल, बिचार कै आरत बुद्ध बिसाल ॥२०
सुनी मम नारद कथ्थ सुजाँन, प्रकासीय ऊत्तर एह प्रधाँन।
पिता बिध मोरहु तैं तिह प्रस्न, ईहीं गत जाँन कीयौ मति ऊस्न[17] ॥२१
जबै समुझाय कही पितु जाहि, तिहीं सुत सोच बिचारहु ताहि।
ईहाँ नहीं रागीय कौ अधिकार, बिरागीय जाँनत जाहि बिचार ॥२२
कह्यौ इतीहास तिहीं सुन काँन, धरचौ ऊर अंतर ताही कौ ध्याँन।
भयौ जग पूरब-काल में भंग, सोई जललीन भयौ ईकसंग ॥२३
नहीं रहे सूरज ईंदु[18] नछत्र, तहाँ कोऊ बिवन देखेऊ तत्र।
बढ़ी चित चिंतन चित्त बिसेष, अधारह[19] पंकज दीसत एक ॥२४

---

१ प्रति। २ समय। ३ मूल प्रति में अस्पष्ट है। ४ अनित्य। ५ बिधि = ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ महेश। ८ कोई। ९ गणेश। १० इन्द्र। ११ कुबेर। १२ वरुण। १३ हृदय। १४ नहीं। १५ जहाज। १६ भ्रम। १७ उष्ण—उग्र बुद्धिमान १८ इन्दु = चन्द्र। १९ आधार।

बिचार कै देख चहूँ दिस बार[1], इहै मम आसन कोंन अधार।
रहे हीय सोचत एहु रहंस[2], समापत ह्वै गये अब्द[3] सहंस[4] ॥२५
भई नभ बाँनीय साँनन भाँन, गहौ तप देह लहौ हीय ग्याँन।
कीयौ तप अब्द सहंस करूर, प्रकासत फेर गिरा भई पूर ॥२६
ऊपावहु[5] स्त्रष्ट सपष्ट अबेर[6], बिचार कै उद्यत ह्वै तिह बेर।
ईतै मधु कैटभ दाँनव आय, कीये भयभीत महाबल काय ॥२७
चले हम पंकज-नालीय चाह, अभिंतर[7] बुद्धि हीयै अवगाह।
लखे तब लोचन कंज ललाँम, सुवासित पीत जहाँ घनस्याँम ॥२८
ऊजागर सागर के अयनीय, सोई हरि सेख[8] रजे[9] सयनीय।
सुदर्सन चक्र गदा अरु संख, निरंतर पद्म सुधार निसंक ॥२९
लहै सुख जोग-प्रमीलाय[10] लीन, प्रभू सोइ पौंढ़ रहे भुज पीन।
जुहारीय जोग सु नींद[11] जगाय, भई थित अंवर ग्रेहि सुभाय ॥३०
तहाँ हरि जाग कै ऊठ तुरंत, बिचार कै मोहीय सौं बिरतंत[12]।
अरे मधु कैटभ सौं अवगाहि, करयौ सिर चक्र सौं दारत काय ॥३१
महेसहु आय मिले सुरमौर, ऊजागर[13] रूप लख्यौ इक ओर।
मनोहर देवीय मूरत मूल, थिती जग कारन सूक्षम थूल ॥३२
जिही सु प्रसंन करी कर जोर, बिलोक कै नायक बोल बहोर[14]।
करौ अहु देव[15] बिचार कै काँम, तिहीं फिर उतपत पालन ताँम ॥३३
तथा लय आद अनूक्रम तीन, प्रकासहु आर तै आप प्रबीन।
कही हम तीनहु नै फिर कथ्थ, थिर गुन-मात्रन इंद्रीय थित्त ॥३४
बिभूतीय भूतन कौ कहु भेद, बिचारन भाव कहै निरबेद।
मगाय कै ऊतम एक बिमाँन, अरोह कै[16] संग चढो असमाँन ॥३५
लीयै हम तीनहु देवन लार, बिमान में देखत जात बहार।
भये जल पार लहो थल भूँम, लखे तरु फूलनहू फल लूम ॥३६
बिहंगम कूँजत मंजुल बूंद, मधुकर फूल गहै मकरंद।
अनुक्रम कांतर[17] स्त्रंग उतंग, तरंगनी तोय तड़ाग तरंग ॥३७

---

१ वारि=जल। २ रहस्य। ३ वर्ष। ४ सहस्त्र=हजार। ५ उत्पन्न करो। ६ अविलम्ब। ७ अभ्यन्तर=मध्य। ८ शेषनाग। ९ सुशोभित। १० योगप्रमीला=योगनिद्रा। ११ निद्रा। १२ वृत्तान्त। १३ उजागर=उज्वल। १४ फिर। १५ त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु, महेश। १६ आरोह कर=चढ़कर। १७ कान्तर=वन।

बने उदपा(या)न[1] सु बापीय[2] बेस, पसू नर नार सु पुज्जत पेस।
निहारीय नैनन एक र्नारद, बिमान पैं संग त्रीयाजन बृंद ॥३८
निहारेऊ देबीय संग नरेस, बिमान में ताही के जाँन बिसेस।
चलावत जावत यान चछोह, मही चित देख उपज्जीय मोहि ॥३९
चले कछू अग्र बढ़ो उर चाह, तितै बन नंदन देखीय ताहि।
बिलोकीय फूल जितै कलवृछ[3], सरोजहु नीर नदी सर स्वछ ॥४०
अपछर गंध्रब किन्नर आँन, मनोहर सामुंज औ मघवाँन[4]।
परंजन और लखे इकपिंग, प्रकाशत पावक सोम पतंग[5] ॥४१
घनास्त्रय[6] बीच रहे हम घूंम, भई द्रग गोचर उत्तम भूँम।
जहाँ बिधलोक परयो द्रिग जाय, लखे चतुरानन चित्त लगाय ॥४२
बढ़े फिर ताहि तै अग्र बिमान, पंचानन सिभु लखे दस-पान[7]।
सिलोचय[8] दिव्य लख्यौ कईलास[9], प्रभा चहूँ ओर रही परकास ॥४३
अवाज़न बाजन की चहु ओर, सुनें जय-सब्द नमो नम सोर।
चले फिर आन[10] चछोह चलाय, लखो बयकुंठ पुरी चित लाय ॥४४
फबै तन स्याँम उमा[11] रंग फूल, दिपै पर चाहीय पीत दुकूल[12]।
भुजा चहु दिव्य अलंकृत भेस, बिराजत बिस्नु सनातन बेस ॥४५
गये तिह देखत देखत गैल, सुधादध द्रष्ट परे बन सैल।
रमै जल जंतु किते रमनीय, करै रव[13] कोकलहू कमनीय ॥४६
मिले ध्वन चातक हंस मयूर, रटै चलचंच[14] फलादन रूर।
मनोहर तल्प रही इक मंड, अमोलख अंबर झीन अखंड ॥४७
तहाँ इक ऊतम बैठीय तीय, कीयैं पट धारनहू कमनीय।
मजिष्टहु[15] रंगत फूलन माल, बिराजत रंजन बैंदीय भाल ॥४८
सुलोचन रोहित[16] संघ सरोज, उदंचत उन्नत पींन[17] ऊरोज[18]।
रजै तल हाथ ऊदंबर रंग, सुहावन अंघ्रीय[19] मूल सुचंग ॥४९
दमंकत विद्वत[20] ज्यौं द्वति[21] देह, चमंकत भूषन भार अछेह।
प्रभा परकासत पूरन चंद, मुखा मुसकावत मंदही मंद ॥५०

१ उद्यान=बाग। २ बापी—बावड़ी। ३ कल्पवृक्ष। ४ इन्द्र। ५ सूर्य। ६ आकाश। ७ पाणि=हाथ। ८ शिलोच्चय—पर्वत। ९ कैलाश। १० यान=जहाज। ११ पार्वती। १२ दुपट्टा, वस्त्र। १३ रव=शब्द। १४ चकोर। १५-१६ लाल। १७ स्थूल। १८ उरोज:=स्तन। १९ अंघ्रि=चरण। २० विद्युत्=बिजली। २१ द्युति।

ह्रीयंजप पच्छनि[1] को रव होत, करापता बोलत कीर कपोत।
सहस्त्रक आनन सीरख[2] स्राँन, प्रकासत नैन सहस्त्रन पाँन ॥५१
भये बिध ईस सु अद्‌भुत भाव, कीयौ तब श्रीपत एह कहाव।
सनातन देबीय आद स्वरूप, इहै जग कारन बोज अनूप ॥५२
हुई परपंच[3] जबं जग हाँन, प्रलै निस पौढ रहे बट पाँन।
भई भगवंतीय साँ सम भेंट, अंगुष्ठ कौं पावन काज अमेठ ॥५३
महा सुद पाय दीयौ मुख माँहि, ईहीं हम घावत[4] पोख पसाय।
भये अबलंचित[5] नाँहिन भेस, बिसास कौं पाय कै ताहि बिसेस ॥५४
करौ अभिबंदन पायक ईस, समाय कै हस्त नमाय कै सीस।
कह्यौ हरि जेम करयौ जिहाँ काँम, बिरंचन[6] संकर छांड बिराम ॥५६
लहै बरदान ईडा[7] चित लाय, ऊचारत पाय गए ऊमगाय।
पलोटत दासि खबासनि पग, सुसोभत सुन्दर रूप समग[8] ॥५६
निधोनिध[9] बाँनक वेस बिचित्र, प्रकासत नैनन बैन पवित्र।
फबै रंग अंसुक[10] किंसुक[11] फूल, भूकै नव जोबना भूलन भूल ॥५७
भई त्रहुँ देबन की गत भाय, मिले हुय अँगना[12] अँगना माहि।
रहे पग सेवन में अनुरत, समापत ह्वै गये बच्छर सत ॥५८
पलोटत पावन पाव पसाय, लखे नख दर्पनहूँ चित लाय।
जहा बिध आदक देव जितेक, तहाँ प्रतबिंबत बीच तितेक ॥५९

दोहा—

फेतक देखे चमतक्रत[13], बरनै कहा बिसतार।
ऊतपत वित आसन अमल, कमल लख्यौ करतार ॥६०
सुध भूले जहाँ हमहु सिव, नारिन मिल हुय नार।
कहाँ तै आये कौन है, नहीं जाँन्यौ निरधार ॥६१
रमाँनाथ अस्तुत रची, आराधन अवगाह।
प्रेम भक्ति जुत पालनी, नित्य सक्ति निरगाह ॥६२

---

१ पक्षिगण। २ शीर्ष=शिर। ३ प्रपंच=जगत्। ४ ध्यावत। ५ अभिलाञ्छित। ६ ब्रह्मा। ७ स्तुति। ८ समग्र। ९ विविध। १० वस्त्र। ११ पलाश। १२ अङ्गना=स्त्री। १३ चमत्कृति=चमत्कार।

छंद भुजंग प्रयात

बिधात्री तुहीं प्रक्रती-रूप बाँमा, कल्याँनी सदाँ पूरना चित्तकाँमा।
तूहीं बृद्ध सिद्धी समृद्धी बसाता, महाँ सच्चदारूपनी[1] आदमाता ॥६३
सही नित्य संसार-जोंनी-स्वरूपा, रचै स्रष्ट कौं पालना लीन-रूपा।
तुहीं स्याँमनी[2] है त्रहूँ लोक ताकी, जिही कारनाहू अधिष्ठान जाकी ॥६४
सदाँ चेतना अर्धमात्रा समाई, ह्रींयंकार ऊँकार ऊर्द्धं रहाई।
लख्यौ रूप तेरो प्रतक्षं[3] ललाँमं, धरै रावरी सक्ति संसार धामं ॥६५
सबै जक्त की जुक्त बिस्तार जाँनी, प्रकासै तुही पिंड कौं पोष प्राँनी।
परा-प्रक्रती[4] पौरुषं भोग पासै, कला काँम ते ईस तत्वं प्रकासै ॥६६
स्थती व्यापकं बृह्म की तूँ सथाई, नहीं तूँ जहाँ ब्रह्म हूँ ना रहाई।
रमा रूप तूंब्रह्म ही काँ रमाँबै सता[5] सक्त[6] ह्वै जक्त माही समाबै ॥६७
प्रभावं सदाँ बिस्व काँ पालना की, छती[7] तूँ रती द्रष्ट लेखै छिमा[8] की।
समै-कल्प[9] के तू जबै तल्प सोबै, गती गूढ़ साँ जीव लै अंक[10] गोबै[11] ॥६८
मधू कैटभं दैते[12] कै भीत मारे, परे आपदा में असाता पुकारे।
छलै तै भयौ चक्र साँ कंठ छेदं, भली भाँत जान्यौ सोई तोर भेदं ॥६९
दिखायौ मनीदीपहूदिब्य देसं, बिभौ[13] रावरो जाँन लीनौ बसेसं।
श्रीहूं देव जाँन्यौ नमै भेव ताकौं, पिछाँनै कहा और तेरी प्रभा कौं ॥७०
दिखाए त्रहूँ देव तै दिब्य द्रष्टी, पिनाकी[14] रिषीकेस[15] और प्रमेष्टी[16]।
छते[17] हैं तऊ आज लाँ नाहि छीनै[18], किते इंद्र-के-जाल[19] ज्यौं ख्याल कीनै ॥७१
करै बंदना जाचना[20] केर काजा, चहैंचरन की सर्नहूं[21] काँ समाजा।
हियै ध्याँन तेरो प्रकासै हमारै, अजा[22] आँनन[23] नाँम तेरौ ऊचारै ॥७२
चितै भावना पुत्र ज्यौं छत्र छाँही[24], निबाजै हमै पास के दासि नाँही[25]।
हितू येक तूँ स्वामिनी है हमारी, महंमा कँहाँ लौ कहैगे तुमारी ॥७३
जनै जक्त कै जीवं तै सक्त जोई, सुता रावरी साँ करै काँम सोई।
जही रीत साँ भूधराधार[26] जक्ती[27] सुधारी ज्युही भूंम-आधार सक्ती ॥७४

---

१ सच्चिद्रूपिणी। २ स्वामिनी। ३ प्रत्यक्ष। ४ परा प्रकृति। ५ सत्ता। ६ शक्ति ७ क्षिति। ८ क्षमा। ९ प्रलयकाल। १० गोद, हृदय। ११ गोपन करती है, छुपा लेती हैं। १२ दैत्य। १३ वैभव। १४ शिव। १५ हृषीकेश = विष्णु। १६ परमेष्ठी = ब्रह्मा। १७ क्षत। १८ क्षीण। १९ इन्द्रजाल = कौतुक। २० याचना। २१ शरण। २२ अजन्मा। २३ आनन = मुख। २४ छत्रछाया। २५ नांइ = समान। २६ पर्वताश्रय २७ जगती = पृथ्वी।

भिरें अंतरीक्षं[1] जिते बिंब[2] भासं, प्रभा चंद्र ध्वांतार[3] में तू प्रकासै।
कला चंचला[4] रूप नित्या कुमारी, निलै जोत नौ-जोबना बेस नारी ॥७५
बिभू[5] ब्रह्म कौं तू अदोषं बसाबै, अविद्या असीमं ससीमं न आबै।
बसै आप्तरूपं हियै होय बिद्या, दिखाबै प्रतीभाँन[6] तं सक्त दद्या ॥७६
तुही कीरती काँति लछी[7] तु लज्या, लखावै छिमा-रूप तू रूप लज्या।
सहंसाय तू बेद की आद माता, गनै दक्ष चिद्रूपहू छंद-गाथा ॥७७
सुधा बुद्धि तू स्त्रद्धयारूप[8] स्वाहा, प्रमा अद्ध[9] तू ऊद्ध[10] बृद्धी प्रबाहा।
महाँ मग्न ह्वै मोह पाथोद[11] मांही, भ्रमै आप रूप ही कौ भुलाँ ही ॥७८
दया देख कै मो अभैदाँन दीजै, लगूं पाय मातेस्वरी सर्न लीजै।
सिवा रूपनी भूपनी तू सबाँ हो, हृदै ध्याँन तेरौ अखंड रहाँ हो ॥७९
प्रसंसा करी बिस्नु त्यौंही कपाली, बनै मात ब्रह्मा तुही बेस वाली।
तु ही अगुनी तैं रचे देव तीनूं, पखै ग्यान सौं ह्वै सबैहु प्रबीनूं ॥८०
स्रजै पालना और तूं ही सँघारै, निमंत्तं ब्रतो मात्र आपौ निहारै।
कला काम तेरी करै नाम काँकौ, रमाँ[12] अस्मिता दोष तैं दूर राखौ ॥८१
दसिंद्री तुही तत्व पाँचू दिपावै, अहंकार बुद्धी सुभाव ऊपावै।
जनै थावरं जंगम जीव जेते, तिहारै सबै ख्याल है मात तेते ॥८२
महाँ पंच हू भूत[13] की पंचमत्ता[14], सँवारै तु ही एक साँ एक सत्ता।
करै पाय तेरी रजा[15] काँम केते, अहूं बिस्नु लोकेसहू देव एते ॥८३
तमं-रूप में हूँ सतं-रूपु तैसै, उपाये रमाँनाथहू फेर ऐसै।
रजो-रूप तै बेद-गर्भा[16] रचाये, नटै पुत्तरी[17] नाच तेरे नचाये ॥८४
बतायौ हमैहू बिदाँनं बिहारं, लखे लोक अन[18]लोकहू केक लारं[19]।
बृहंमा हरी सिंभु औरै बनाये, नहीं ख्याल तेरे बिना ये निपाये ॥८५
नियंत्री[20] इदंभाव साँ जाँन लीनी, भली भाँत साँ मात तू प्रेम भीनी।
हीयै-अग्यता म्लान कौं दूर हेरी, तरै आद-माया क्रपा पाय तेरी ॥८६

---

१ आकाश। २ सूर्य, चन्द्र आदि। ३ ध्वान्तारि=सूर्य। ४ बिजली। ५ विभु=व्यापक। ६ प्रतिमा, सामर्थ्ययुक्त। ७ लक्ष्मी। ८ श्रद्धारूपा। ९ अधः। १० ऊर्ध्व। ११ मोहसागर। १२ अहंभाव। १३ महापञ्चभूत-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश। १४ पंचमता, पञ्चमात्रा। १५ आज्ञा। १६ ब्रह्मा। १७ पुत्रिका=काठ पुतली। १८ अन्य। १९ कई एक समूह। २० नियन्त्रण करने वाली, प्रेरक।

त्रीया-भाव कौं पाय कै सोक त्यागे, लखी मात कौ नैन सौं पाय लागे।
सदाँ सेव तेरी करै नेम सेती, अधारै हीयै बीनती जाँन येती ॥८७
जपै जाप त्रैताप[1] इंद्रीन जीतै, कहा जग्य औ दाँनहू ध्याँन कीतै।
बसै चित्त तेरे न पादारविंदं, ऊपज्जै न निर्बांन[2] जौलौं अनंदं ॥८८

दोहा

करी स्तुती हरी जोर कर, बाँमदेव[3] पद बंद।
मात नवाक्षर-मंत्र कौं, देहु मेंट दुख-द्वंद[4] ॥८९
दीयौ सिंभु कौं भक्ति द्रढ़, मंत्र नवाक्षर मात।
जिही पाय लागे जजन[5], ऊर धर मति अवदात[6] ॥९०
बिनती करी बिरंचहू, मात कीये हिय मोख।
अस्मिदाद[7] कौ आद लै, दूर गये सब दोख ॥९१
करता जग हमकौ कहै, पोषत सारंग-पाँन[8]।
सिंभु ताहि कह संघरत, ये सब परम अयाँन[9] ॥९२
करता[10] सब तेरी कला, संघरता[11] पुन सोय।
जाँनहु पालन रीत जिहि, जीय जाँनी द्रग जोय[12] ॥९३
अहंमत मैटी ईश्वरी, किय मोटौ ऊपकार।
हिय कौ हरहु विषाद हम, निगम[13]न्याय निरधार ॥९४

छंद भुजंग-प्रयात

कहै अद्वती[14] ब्रह्म है येक कोऊ, स्वयं आपकौ रूप है दिव्य सोऊ।
तथाँ और कोऊ जथाँ भिन्नता में, ऊपज्जै हदै बीच संदेह यामें ॥९५
सुखी ह्वै परं धाम नांही समावे, घटी-जंत्र[15] ज्यौं चित्त-वृत्ती घुमावै।
बिचारै करौ दूर मेरौ बिषादं, अटी[16] हीय अग्याँनहीं की ऊपाधं ॥९६
दीयौ अंबका ऊतरं एह दानं, प्रमेष्टी सुनौ सिद्धता[17] कौ प्रमानं।
परंमातमा येकहूँ ओत-प्रोतं, दहूँ अद्वती-रूप जानौ उदोतं ॥९७

---

१ त्रिताप=दैहिक, दैविक तथा, भौतिक कष्ट। २ निर्वाण=मोक्ष। ३ शिव। ४ दुःख-द्वन्द्व=जन्म-मरण रूप। ५ यजन=पूजा, याग। ६ उज्वल। ७ असमदादि=अहंभाव। ८ शार्ङ्गपाणि=विष्णु। ९ अज्ञान=अबोध। १० कर्त्ता। ११ संहर्त्ता। १२ देख कर। १३ वेद। १४ अद्वैत। १५ घटीयंत्र=घड़ी, रहट। १६ अड़ी हुई है, फैली हुई। १७ सिद्धावस्था।

जतावै कछू भेद अल्पीय जामें, पिछाँनै सोई धाँम निर्बान पामें।
अहूँ अद्वती ब्रह्म ना भेद यातैं, निहारैं कछू भेद ऊत्पादना तैं[1] ॥९८
ऊजासै सहू जोयकै दीप एकौ, उपाधी कहूँ जोग भासै अनेकौ।
फुटे एक आदर्स[2] के अंस फेरा, वही एक में बिंब दीसै अनेरा[3] ॥९९
प्रबर्ती[4]-समै भेद एही पिछानौ, जिही कल्प के काल में येक जानौ।
प्रबर्ती-समै रूप बिष्टी[5] प्रकासै, भये एक तै जीव अन्नेक भासै ॥१००
समष्टी[6] मिलै कल्प में सृष्ट सारी, नहीं पोरसं[7] रूपहू षंड[8] नारी।
मती श्री धृती कीरती सुमृती हूँ, छिमा और मेधा पिपासा छती[9] हूँ ॥१०१
दया और क्षुधा लाज्या औ राग तंद्रा, नृतं[10]अनृतं[11]बंचना मोह निद्रा।
जरा[12]निर्जरा साँती काँती जतावै, बिसेसं अबिद्या सुबिद्या बतावै ॥१०२
असक्ती ससक्ती बिचारं अनेका, लहै सप्रहा[13] निप्रहा[14] कोंन लेखा।
बसा प्रष्टी[15] मज्जा तुचा[16]बाक बाँनी, कहौ मैं नहीं सो न मानौ कहाँनी ॥१०३
गनी ब्राह्मी रुद्री सिवा और गौरी, कुबेरी इंद्रानी कुमारी किसोरी।
बराही तथा[17] बैस्नबी बारनी हूँ, नृसंधी क्रतंती[18]सु नारायनीहूँ ॥१०४
धरा धारना सीलता बार (रि) धारा, अरू ऊस्नता आग धारै अँगारा।
ज्युहीं पौंन[19]में गौन[20]की सक्ति जाँनौ, महाँकास में पोल ज्युहीं प्रमाँनौ ॥१०५
ज्युहीं चंद में सूर[21]में जोत जागै, इहीं रीत साँ जानीयै भेद आगै।
प्रकासै सबै सृष्टि मेरी प्रभा तैं, कलाहीन कोऊ करैंगे कहाँ तैं ॥१०६
त्रहूँ देव कौं बोध दीनौ तबै हीं, सुन्यौ आद-माया कह्यौ सो सबै ही।
रह्यौ नाहि अग्याँन कौ अंस रेहा[22], बिचारयौ कपर्दी[23] हीयै बिस्नु बेहा ॥१०७
प्रसनं भये देव देवी-प्रसादं, बिसारयौ जबै ही बिषादं बिबादं।
बिधाता दई सरसुती दिव्य बाँमा, लई लक्ष्मी तीय बिस्नू ललाँमा ॥१०८
गही सूलपाँनी[24] महाँसक्त गौरी, जुरी तीन हूँ सक्ति की दिव्य जोरी।
कहौ अंबका त्रैगुनी सृष्ट कीजै, रजा पाय कै दिव्य धाँमं रचीजै ॥१०९

---

१ उत्पत्ति। २ आदर्श = दर्पण। ३ अनेक। ४ प्रवृत्ति। ५ व्यष्टि। ६ समष्टि। ७ पुरुष। ८ षण्ड=नपुंसक। ९ क्षति। १० ऋतं=सत्य। ११ असत्य। १२ वृद्धावस्था। १३ स्पृहा=इच्छा। १४ निस्पृहा = अनिच्छा। १५ पृष्ठी। १६ त्वचा = चर्म। १७ मू० प्र० में—त्यां हैं। १८ कृतान्त = यमशक्ति। १९ पवन। २० गमन। २१ सूर्य। २२ लेश, रेखा। २३ शिव। २४ शूलपाणि = शिव।

वहाँ तै बिदा ह्वै चले याँनही पै, मधु-कैटभं आयगे मेदनी[1] पै।
सबै बीजमंत्रं जप्यौ भक्ति सेती, ऊपाई सबै स्त्रष्टु स्वाभाव एतो ॥११०
जगे थावरं जंगमं जीव जेते, त्रहुँ मूरती आद सौं देव तेते।
प्रकृता बहु त्रैगुनी कौ पसारौ,[2] नहीं जानीयै सक्ति सौं जक्त न्यारौ ॥१११

दोहा

अष्ट-स्रबन[3] उपदेस दीय, नारद प्रतै निहार।
प्रस्न कीयौ कर जोर पुन, विध नारद तिह बार ॥११२
सगुन रूप जानौ सुखद, पितु वर राज-प्रसाद।
निगुन पुरष माया निगुन, अबहि बखानहु आद ॥११४

छंद भुजंग प्रयात

बिधाता कह्यौ देखकै ब्रह्म-देवा, भली भाँत कैसै लहौ ताहि भेवा।
नही निर्गुनं रूप कौ पुर्स नारी, बिभू रंग रेखा बिना निर्बकारी[4] ॥११४
अरूपं अलेखं कहाँ द्रष्टि आवै, घरै धारना ग्याँन जोगिंद्र ध्यावै।
पिछाँनै कहूँ जाहि विस्वास पा कै, वहीं आखतं जाँन लीजै अजा कै ॥११५
परंमातमाँ सक्ति हो कौ पसारौ, नहीं जानीयै आतमा सक्ति न्यारौ।
पढै बेद कौ सास्त्र बांचै पुराँनं, धरै धारना ग्यान बिग्यान ध्यानं ॥११६
समाँधाँन पायौ नहीं मेट संका, इहीं भर्म की भूल भूलै असंखा।
जुरे थावरं जंगमं जीव जेते, अहंकार सौं हीन जाँनौ न एते ॥११७
असंकार कौ हीय जौलौं अंधारौ, नही निर्गुनं देख सकै जु न्यारौ।
ईहै मौह की पुत्र मेटौ ऊपाधी, सदाँ सदगुना ध्याँन लावौ समाधी ॥११८
सुन्यौ ब्रह्मदेवं कह्यौ अष्ट-स्त्राँनी, पिता रावरे बाक्य माँने प्रमाँनी।
गुनं रूप कौ बोध दीजै गिरा तै, जधाँ जुक्त की ऊक्त ह्वै मुक्त जातै ॥११९
प्रमेष्टी मुनी कौ सुन्यौ प्रस्न पूरौ, अनूपं गन्यौ ग्यान ही को अँकूरौ[5]।
गुनूं मैं त्रहू सक्तिहौ की गुराई[6], क्रीया ग्याँनहू द्रव्य सत्ता कहाई ॥१२०
सुनौ सातुकी[7] है सोई ग्यान-सक्ती, बिचारौ क्रीया राजसी की बिभुक्ती[8]।
त्युँहीं तामसी द्रव्य की सक्ति तीजी, कतं काज में मुख्य सोई कही जी ॥१२१

---

१ मेदिनी = पृथ्वी। २ प्रसार। ३ अष्ट-श्रवण = ब्रह्मा। ४ निर्विकारी = विकाररहित। ५ अंकुर। ६ गुरुता, बड़ाई। ७ सात्विक। ८ विभुक्ति = विभोग, वैभव।

उपज्जी तिही पंच-मात्रा ऊधर[1] सं, सुजाँनौ सबेदं[2] दिही तै सपर्स[3]।
रसं रूप गंधं ऊपज्जी रसा तै, ऊपज्जौ रसं तोय तै आय यातै ॥१२२
ऊदर्बी[4] उपज्जे लखौ रूप ऐसै, उपज्जौ सिपर्स अहीकांत[5] वैसे।
सबद्दं भयौ अंतरीक्षं समाँन, बिसै[6] होय उतपन्न इंद्री विधाँन ॥१२३
अहंकार है ताँमसी काँम याकौ, दसूं कौ नियंता बिचारै दसा कौ।
निहारौ सदाँ स्रष्टिहू कौ नियंता, इहीं येकही जानीयै आद अंता ॥१२४
लखौ राजसी में क्रीया-सक्त नीकै, समीचीन स्रष्टी बिचारौ सही कै।
अधिष्टाँन सब्दं तुचाहू ऊपाई, रसज्ञा[7] तथाँ चक्षु नासा रचाई ॥१२५
इहीं जानीयै पाँचहु ज्ञाँन इंद्री, पिछाँनौं ज्युहीं कर्महीं की पचिंद्री।
गिरा हस्त औं पाद लिंगं गुदा हो, सरीरस्त[8] हैं वायु पांचुं सदा ही ॥१२६
उपज्जै ज्युहीं प्राँन औरै अपाँनं, ज्युहीं ब्यान उद्या[9] साँमाँन[10] जानं।
इहीं रीत सौं स्रष्टि एती उपज्जै, कछू भेद कौ भाव जामै न किज्जै ॥१२७
इहै सात्वकी स्रष्ट ज्ञाता उचारै, बनै ज्ञानसक्ती जु तैही बिचारै।
दिसा बायु है और देवं दिनेसं, प्रचेता[11] रिभूबैद[12] पावै प्रबेसं ॥१२८
सु है देवता ज्ञाँन-इंद्री समांनौ, मनं बुद्ध औ चित्त हंकार माँनौ।
गनौ चंद्र ब्रह्मा तथा रुद्र ज्ञाता, सुनौ और क्षेत्रज्ञ ताही सुहाता ॥१२९
ऊभै स्थूल औ सुक्षमं है अनादं, परंमातमा नाँहि जामै प्रमादं।
वहै है जु थूलं सोई ध्याँन आव, नहीं सुक्षमं ज्ञाँन-इंद्री लखावै ॥१३०
प्रथमं कह्यौ पचमत्ता[13] प्रवाहं, नियंता जिहों स्रष्ट पुज्जै निबाहं।
पखै पंचहूं कर्न कै भूत पंचं, प्रकासै सदा ईस जा सौं प्रपंचं ॥१३१

दोहा

तनमात्रा रस कल्पतहू, मन में जाहि मिलाय।
जब हो जाको रूप जल, थूल तत्व सोई थाय ॥१३२
प्रथक प्रथक है अंस पुन, जल में कर कै जाहि।
मिलै सबही ह्वै रसमई[14], जबही जानहु जाहि ॥१३३

---

१ ऊर्द, उदर। २ शब्द। ३ स्पर्श। ४ अग्नि। ५ पवन। ६ विषय। ७ जीभ
८ शरीरस्थ। ९ उदान। १० समान। ११ वरुण। १२ ऋभुवद्य=देवचिकित्सक,
अश्विनीकुमार। १३ पंचमात्रा। १४ रसमयी, पृथ्वी।

भूतनहीं के भाग में, चेतन की प्रतिछाँहि।
अहंकार पुन ऊपजै, मिल कै ताही माहि ॥१३४
जाही सौं बिसतार जग, नीयंता जु जगनाथ।
जीवन की उतपत जितो, है ताही के हाथ ॥१३५

छंद द्रुमलरी

बोले बिध नारद सौं बाँनो, बिधबत उतपत स्त्रष्टि बखांनी।
जग चौरासी लक्ष जौन[1] की, है प्रकार जिम क्रम ही होन की ॥१३६
रूप गुनन के कहत रहंसा, सुन नारद मैटहु हीय-संसा।
सत्व प्रीयात्मक है जासौं सुख, रुचर होत जासौं आर्जव[2] रुख ॥१३७
सत्य सौच स्रद्धा संतोषं, दया क्षमा लज्या निरदोषं।
सांती धारन बरन्[3] स्वेत है, द्रढ़ सुधर्म सौं प्रीत देत है ॥१३८
स्रधा राजसी सक्तव सोई, सदाँ धर्म अप्रीत कर सोई।
द्वेष दंभ मछ्छर[4] मद दंभी, उतकंठा[5] अरु माँन असंभी[6] ॥१३९
गर्व द्रोह ताही सौं गनीयैं, संख्या अब तमगुन की सुनीयै।
क्रस्न बरन जामैं कुटलाई[7], रोष बिसम परदोष रचाई ॥१४०
मोह बिषाद नींद भय मांनत, बाद बिषादहु फेर बखाँनत।
नास्तिक भाव और क्रपनाई[8], आलस जुत दीनता ऊपाई ॥१४१
अपनौ हित जो चाहै ऊर में, महाँ स्त्रेष्ट सतगुन है मुर में[9]।
तम रज सनै-सनै द्वै त्यागै, अधिक जाँन सतगुन अनुरागै ॥१४२
पर तीनूं गुन मिस्त्रित पैखौ, अलग एक तै नाँहिन एकौ।
विमल पितामह[10] सुन कै बांनी, पिसुन[11] जोर बोले जुग पाँनी ॥१४३
गुन लछन भाखी गरुआई[12], जाँन्यौ सकल अनूंक्रम जाही।
विधवत ताकौ करौ बखाँना, मैटौ हीय अज्ञाँन महाँना ॥१४४
बोले बिध नारद सौं बानी, जिन गुन रीत हमहु नहीं जांनी।
कहौं सपुष्ट[13] तोहि सौं कैसै, उर उनमान जानीयै ऐसै ॥१४५

१ योनि। २ कोमल, सरल। ३ वर्ण=रंग। ४ मत्सर। ५ इच्छा। ६ असम्भव। ७ कौटिल्य=दुष्टता। ८ कृपणता। ९ तीनों में। १० ब्रह्मा। ११ पिशुन=चुगलखोर, नारद। १२ गुरुता, गौरव। १३ स्पष्ट।

तन सुंदर जोबन जुत तरुनी, हाव-भाव सौं पत[1]-चित-हरनी।
सौ तनकौं दुख दायन सोई, समझहु मिस्रत[2] भाव सकोई ॥१४६
सब कौं है सतगुन सुखदाई, दीखत कही कही दुखदाई।
राजस गुन कै सुनीयै रीती, न्याय-परायन है जुत नीती ॥१४७
सैन्यधिक्ष[3] अरु दक्ष[4] सुमंत्री, कलपत देखै चोर कुमंत्री।
तम-गुनहू हितकारी तैसै, अहितकार पुन जानहु ऐसै ॥१४८
घन घुमंड आवत जब घटा, चमकत दुर दुर जामै छटा।
संजोगन[5] नारिन सुख सरसै, तिय प्रोखत-पतका[6] हीय तरसै ॥१४९
पुन नारद पूँछेहु बिध पाँही, आप आप तै गुन अलगाँही।
भाव विरोधी सो न्रहु भासै, पर कैसै मिस्रत परकासै ॥१५०
जिही विध अगन दाह कर जैसै, तूलहु[7] तेल-विरोधी तैसै।
पुन दीपक मिल करत प्रकासा, जाँनहु दीप-बृती[8] गुन जासा ॥१५१
नारद सुन ऊपदेस निदाँनं ऊर अन्तर मेट्यौ अज्ञानं।
अज[9] दीनौ नारद ऊपदेसा, नारद ब्यास सुनाय निदेसा ॥१५२
व्यास कहे जनमेजय बाँनी, भजबे लायक आद भवाँनी।
तजीयै भ्रम भजीयैं ईक ताही, सुख-दायक है मात सदाई ॥१५३
ऐ ऐ मंत्र कहत अज्ञाँनी, ब्रह्मदत्त भये द्वज विज्ञाँनी।
सुनहु नृपत ईतिहाँस सुहाँवन, परम पुनीत सोई अत पावन ॥१५४
सब लायक भूपत ध्रमसेतू[10], हम गये तीरथ-जात्रा-हेतू।
अत पवित्र थल अधम ऊधारन[11], आये तबही नीमष-आरँन[12] ॥१५५
वंदन कर मुनि बृंद विसेसा, पुन बैठे जहाँ पाय प्रवेसा।
जाँमदग्न[13] कीय प्रस्न जहाँई सुर हरी हर आदक समुझाँई ॥१५६
अत ऊदार हित सीघ्र आँमना[14], काँमी पूरन करै काँमना।
ईहीं विचार मति के अनुसारा, विवध भाँति मुनि कहहु विचारा ॥१५७
वोले सुन लोंमस[15] मुनि बाँनी, महाँसक्ती आराधन माँनी।
देत सीघ्र फल सो सुखदाई, सुनहु कहत ईतिहाँस[16] सुहाई ॥१५८

१ पति। २ मिश्रित। ३ सेनाध्यक्ष। ४ चतुर। ५ संयोगिनी। ६ प्रोषितपतिका=वियोगिनी। ७ रुई। ८ दीपवर्त्ती=बत्ती। ९ ब्रह्मा। १० धर्मसेतु=धर्मप्राण। ११ उद्धारण=उद्धारकर्त्ता। १२ नैमिषारण्य। १३ जमदग्नि ऋषि। १४ आम्नाय=मार्ग। १५ लोमशऋषि। १६ इतिहास।

पुरी अजोध्या तामह पाँवन, बसत देवदत्तहि जहाँ बाँमन[1] ।
सो अपुत्र हित पुत्र सुधारी, बिधवत बेद जिज्ञ बिसतारी ॥१५९
मुनि सु होत्र[2] गुरू जागवल्क[3] मिल, भये येकठे पैलहु गोभिल[4] ।
तमसा नद की तोर तहाँ हो, जिग-रचना द्वज करी जहाँ ही ॥१६०
सिवकाई मुनि-वृंद सुधारै, ध्रुव सुत हित आस्रव[5]-ऊरधारै ।
ऊदगाता गोभिल्ल ऊचार्यौ, स्याँमवेद कौ गाँन सँवार्यौ ॥१६१
भयौ ताहि माँहीं स्वर-भंगा, सुन्यौ देवदत्तही मुनि-संगा ।
रिष सौं कह्यौ बिप्र रिस-रंगे[6], कहा ऐसे तुम पढ़त कुढंगे ॥१६२
रिस-बाँनी सुन मुनहुँ रिसाए पै अपनी करनी फल पाये ।
कहे बचन गोभिल्ल करारे, महाँमुनिंद्र रीस के मारे ॥१६३
जिज्ञ करत जाके हित जोई, सुत बहरौ ह्वै है सुत सोई ।
देवदत्त बोले दुखद ई, भयै पुत्र तौ कहा भलाई ॥१६४
जप तप पूजा दाँन न जोगं, सुत कौ पाय लहै हम सोगं[7] ।
सत्यव्रत कैसे ह्वै संभव, अल्प दोष पै स्राप असंभव ॥१६५
द्वज मुनि सौं बिनती बहु दाखो, भाँत-भांत आरत[8] बहु भाखी ।
कर सौं चरन गए मुनि केरा, मेटहु स्राप दीन द्वज मेरा ॥१६६
तब मुनि भये क्रपाल तिहीं तै, सोच करहु जन बिप्र सही तै ।
प्रथम होय मूरख फिर पंडित, अंबा करहै क्रपा अखंडत ॥१६७
आप करहि उद्धार तोर सुत, मोर बचन सुन इहीं महाँतम ।
देवदत्त हुय प्रस्न[9] जब ही द्वज, जग्य संपूरन कोन रीत जुज[10] ॥१६८
कोऊ दिन बीते आप कहा कै, तूँनोसील[11] भयौ सुत ताकै ।
जात-करम कीनौ कुल जैसौ, आह्वय धर्यौ ऊतथ्थहु वैसौ ॥१६९
पालन लालन मात पिता की, पै कछू दिनन अवस्था पाकी ।
लायक जाँन पढ़ावन लागे, अक्षर बोलत नहिन अभागे ॥१७०
मात-पिता भये क्षोभत मन में, वह ऊथत छुटकाय बिपन में ।
आये मात-पिता घर अपनै, सुत कौं याद करै नह सुपनै ॥१७१

१ ब्राह्मण । २ होता=हवनकर्त्ता । ३ याज्ञवल्क्य । ४ गोभिल मुनि । ५ प्रास्रव=व्रत, प्रतिज्ञा । ६ क्रुद्ध होकर । ७ शोक । ८ आर्त्त=दुःखित वचन । ९ प्रसन्न । १० यजुर्वेद, युत । ११ बहरा, गूंगा । १२ नाम ।

बिचरैं तट गंगा बनबासी, एकाकी वृत रहै ऊदासी।
ऊदर फूल फल करैं अहारा[1], भूख लगे जब ही दै भारा ॥१७२
स्त्रियाँ बात धरैं नहि मन में, तपत ताप सहजैं निज उन में।
सत्यतपा तिह नाम महाँना, जाको सबही कहत जहाना ॥१७३
पावन बन में रहत पुनीता, बरख[2] चतुरदस ताकहू बीता।
सत्य आचरन देख सबैही, दूसर नाम सत्य इन दैही ॥१७४
ढिग आस्रम तिह बन में ढेटा, येक निषाद[3] फिरत आखेटा[4]।
कंकपत्र[5] को खैंच करारा, मत आर्सलिगल[6] तन मारा ॥१७५
सोई भागौ तिह लगत समाँना, घाय पसाय पीड़ घबराँना।
बमत[7] रुधिर लख दया बिचारा, ऐं-ऐं[8] मुनिवर सब्द उचारा ॥१७६
मंत्र सरस्वती निकरत मुख तैं, सो मुनि भए मेघावी[9] सुख तैं।
आगैं पधौ बराह[10]-अहेरो[11], फिरत खोज आयो तिह फेरो ॥१७७
धनुस बाँन कीनैं कर धारन, मन अकुलावत कारन मारन।
ताहि अहेरी कह्यौ तहाँ ही, सत्यवृत तुम नाँम सुहाँही ॥१७८
घायल सूर गयौ किह घाटै[12], देहु बताय जाय हम दाटैं।
बात अहेरी सुन वहुरंतर, ऐं-ऐं जपत रहे ऊर अंतर ॥१७९
मुनि की सुनकैं भई ऐसे मत, गही छछुंदर अही[13] जिहीं गत।
हिंस्या[14] सत्य कहे तैं होवैं[15], खोटी झूठ कहैं वृत खोवैं ॥१८०
दीनी मति ताकों श्रुत-देवी, कछू समझ्यो नहि सूकर केवी।
बोले मुनिवर हृदैं बिचारी, सुनहु अहेरो मति अनुसारी ॥१८१
जो देखत नही बोलत जानैं, बोलत सो नहीं देख बखानैं।
घातक जाहु तुमारे घर कौं, सोधन करहु तथा सूकर कौ ॥१८२
हाल कह्यौ जानत हम जैसौ, तुम बिचार देखहु ऊर तैसौ।
मुनि कौ पन राख्यौ महाँमाया, सुन निषाद श्रुत पंथ सिधाया ॥१८३
सो सतवृत कवि भये सिरोमन[16], मानहु दूसर बालमीक[17] मुन।
ऐं-ऐं इंदु मंत्र आराधैं, सिध साधना जुत कोऊ साधैं ॥१८४

१ आहार=भोजन। २ वर्ष। ३ भील, शिकारी। ४ आखेट=शिकार। ५ बाण। ६ शूकर, सूअर। ७ उगलता हुआ। ८ ऐं-ऐं। ९ मेधावी=बुद्धिमान्। १० सूअर। ११ आहारी=शिकारी। १२ मार्ग। १३ साँपछछून्दर। १४ हिंसा। १५ सरस्वती। १६ शिरोमणि। १७ वल्मीकि।

सत्यवृत ज्यौं होय सुखारी, अति मतिवाँन ज्ञाँन अधिकारी।
भेंटे जात भ्रातजन भलकें, मात-पिता लाए घर मिल कै॥१८५
ईह लोंमस भाख्यौ ईतिहासा, पुन तो सनमें[1] कौन प्रकासा।
पूजनीय महाँमाया पूजौ, देव नहो देबीसम दूजौ॥१८६

दोहा

कही व्यास नृप सौं कथा, सुन कैं परम सयाँन।
पूछ्यौ पावन प्रीत जुत, अंबा-जिग-आख्याँन॥१८७
पूजा-बिध कहीयें प्रथम, साधनहू सह कोय।
करकै सरधा-जुत कहूँ, हमहु क्रतारथ[2] होय॥१८८

छंद भुजंग-प्रयात

सुनै ब्यास नै भूप के बैन स्राँनं[3], बखाँन तहां जग्य लागे बिधाँनं।
त्रहू सातुकी राजसी ताँमसी कै, निहारौ बिचारैं त्रहू भेद नीकै॥१८९
मुदै सातुकी जग्यकारी मुनिंद्रं, नियंता ज्युहीं राजसी है निरंद्रं।
नृचक्षा[4] मखं[5] तामसी है निराला, बिरागी भई ग्यांन जाँनै बिसाला॥१९०
अजोध्या पुरी सिंभु-माया[6] ऊजेनीं[7], सुखेत्रं मधुपत्र[8] लाँ उच्च स्रेनी।
नदी गंग गोदावरी नर्बदा पै, सुता अर्क[9] ब्राह्मी[10] सुची सर्बदा पै॥१९१
ऊजेतं[11] सुबेला गिरी अर्बलीहू, थितं पुस्करं ताल आदं थलो हू।
भली भाँत थप्पै जहाँ सुद्ध भोमी, गहै उत्तरा मग्ग[13] ध्यावै खगोमी[14]॥१९२
बसावै पखै न्याय सौं ब्रीह[15] बित्तं, स्रधापूर्वकं वेद के मंत्र-सहितं।
ईही सातुकी जग्य जाँनौ अनूपं, भलो नीत सोई फलीभूत भूपं॥१९३
गहै द्रब्य अन्यायहो कौ लगावै, कछू लाभ तातै न हाथौ करावै।
कीये रावरे[16] पूर्बजं जग्य कैसे, जहाँ पुन्य-ग्राही भये क्रस्न जैसे॥१९४
मनीसी[17] भरद्वाज जैसे महत्वं, बनोबास आदं ग्रही पै विपतं(त्तं)।
मरे राज पुत्रं अरथं मिलाँही, अलिष्ट[18] कहू दोष जातै ऊपाई॥१९५
कहूँ होत है दोषहू जग्यकर्ता, भले दोष जाँनौ कहूँ संत्रभर्ता।
कहूँ द्रब्य के द [illegible] कमाई, लगावै अदोषं मखं बित्त लाई॥१९६

---

१ सम्मुख। २ कृतार्थ=सिद्धमनोरथ। ३ श्रवण=कान। ४ राक्षसी। ५ यज्ञ। ६ शम्भुमाया=काशी, हरद्वार। ७ उज्जयिनी। ८ मथुरा। ९ अर्क-सुता=यमुना। १० सरस्वती। ११ गिरनार। १२ त्रिकूटाद्रि। १३ मार्ग। १४ सूर्य। १५ व्रीहि=सामग्री। १६ आपके। १७ मनीषी=विद्वान्। १८ किंचित्।

रच्यौ जिग्य निर्दोष ज्यौ दासरथं[1] (थं),ऊपायौ सुनीती लगायौ अरथं(थं) ।
जहाँ च्यार पुत्रं भये राम जैसे, कीये जुद्ध आदं जिही काँम कैसे ॥१९७
छिती-मंडलं जाहि सौभाग्य छायौ, पिता मातहू बास बैकुंठ पायौ ।
करें अंबका-जिग्य निर्दोषकारी, बनावै स्थिती मंडपं धोय बारी ॥१९८
बिधी-पूर्बकं कुड बेदी बनाव, जिहीं कुंड में थप्प । बन्ही[2] जगावै ।
जहाँ आद ब्रह्म करे पुज्य जाकी, अधारे हीये प्रीत आद्या-अजा की ॥१९९
सबै सातु की बृत सौं तोष सम्यं, इहीं अंबका-जिग्य जानौ अलभ्यं ।
जिहीं अंबका ब्रह्मबिद्या सुजाँनौ, मती निर्गुनी सर्गुना एक माँनौ ॥२००
सोई जग्य-कर्ता गती कौं समावै, पिता मातहू बास निर्बांन[3] पावै ।
हुयौ तांमसो जग्य दि:कर्न[4] होमे, जथाँ सातुकी जाँन भाख्यौ सु जो में ॥२०१
कहूँ सातुको जिय राजा करौगे, इही बंस के रूँनके[5] ऊद्धरौगे ।
बखाँन्यौ अजा-जग्य कौं बेदब्यासं, बिचारयौ तिही भूप पायौ बिसासं[6] ॥२०२
रमाँनाथ के जग्य की तग्य रीती, प्रकासौ हीये व्यास बाढ़े प्रतीती[7] ।
नृपं जीय की जाँन के होय नीकी, बखानी कथा ब्यास बिस्तार ही की ॥२०३
दई तीन सक्ती जबै तीन देवं, भवंनेश्वरी[8] दीद्य(ध) अज्ञा[9] सभेवं ।
करौ स्त्रष्ट कौं जाय कैं पुष्टकारो, हितू स्त्रेष्ट है बात माँनौं हमारी ॥२०४
मिले देव आए त्रहूँ मेदनी पे, त्रहूँ सक्ति के संग बैठे तही पे ।
सुधारी महंमाँय[10] आधार सक्तो, भई तोयधारी[11] थिरीभूत[12] व्यक्ति ॥२०५
जरे कोल ज्यौं सैल ताकों जमाँई, सुमेरू रह्यौ मध्य ताकै समाई ।
जनै विस्वरेता[13] जहाँ पुत्र जेता, मरीची पुलह[14] अत्री ताही समेता ॥२०६
पुलस्तं क्रतू दक्ष बासिष्ट पूरे, रिषी नारदं आदकं नाम रूरे[15] ।
मरीची सुतं कस्यपं मे महाँना, दई दक्ष तेरे सुता ताहि दाँना ॥२०७
जनै दक्षजा देवहु दैत जेते, मनुस्यं पसू पछ्छ चक्री[16] समेते ।
क्रतं कास्यपी स्त्रष्ट ताते कहाई, सोई आज लौं वृद्धि बाढ़े सवाई ॥२०८
स्वयंभू[17] स्वयंभूमनू अंग सेती, जिही जानीयै दक्षनं संग जेती ।
भई सत्तरूपा[18] सु ता वांमभागी[19], स्वयंभूमनू दीन ताही सुभागी ॥२०९

---

१ दसरथ । २ वह्नि = अग्नि । ३ निर्वाण = मोक्ष । ४ द्विपकर्ण = सर्प । ५ रौनक । ६-७ विश्वास, प्रतीति । ८ भुवनेश्वरी । ९ आज्ञा । १० महामाया । ११ जलधारा । १२ स्थिरीभूत । १३ विश्वरेता = विश्ववीर्य, ब्रह्मा । १४ पुलस्त्य । १५ सुन्दर, प्रसिद्ध । १६ सर्प । १७ ब्रह्मा । १८ शतरूपा । १९ स्त्री ।

प्रीयंवृत्त[1] कौ पुत्र उत्तानपादं, मही आद पाथोद[2] बाँधी मृजादं[3] ।
उपज्जी सुता तीन ताते अकूती, पिछानौ जथां देवहूती प्रसूती ॥२१०
रची सृष्ट एतो जबै विस्वरेता, निकाई जु तैलोक राचे निकेता ।
सवाँरी तबै मेरु कै स्रंगही पे, द्रुती स्वर्न की भर्न के द्रंग दीपे ॥२११
रमाँनाथ बैकुंठ तापै रचायौ, सबै स्वर्न औ रत्न भूं में सचायौ ।
रची सिंभु कैलास जापै रहाए, सबै भूत भेरू तिहो पै समाए ॥२१२
रच्यौ स्वर्ग तापै जहाँ इंद्र राजा, सबै देव कौं संघ लीनै समाँजा ।
मथ्यौ देव दैतं समुद्रं महानं, थितं पारजाती[4] मिल्यौ थपथानं ॥२१३
द्विपी[5] ताहिमाँहो मिल्यौ च्यार दंता, वही पाय कै सोह बाढ़ी अनंता ।
हुई प्राप्त औरे तहाँ काँम हंभा,[6] रतनं मिले अछरी[7] आद रंभा ॥२१४
भई च्यार खांनी मई स्त्रष्ट भरती, पसारे जरा ईड़जं[8] लौं प्रवर्ती ।
ज्युहीं ऊदभिजं स्वेदजं जीव जांनौ, प्रमेष्टी पिता स्त्रष्ट नीकं प्रमानौं ॥२१५
तिहीं जक्त के ईस है देव तीनूं, पिछानै जिही भेद नीके प्रबीनूं ।
बिराजे त्रहूँ देवहू कीन वासा, प्रभापत्तनं[9] सक्ति भ्यासै प्रकासा ॥२१६
पुरी विस्नु ब्रह्माँ कपर्दी प्रभावा, परं दिव्य धाँमं प्रकर्तो पसावा ।
ऊपज्जी हृदे विस्नु कै आय ईछ्या, प्रभावं मनीदीप देख्यौ प्रतच्छा ॥ २१७
अनांदी महंमाय की याद आई, बिचारी तिहीं भाँत भाँतं बधाई ।
क्रतू[10] कारजं अंबका हेत कीजे, रुची पाय कै जाहि सौं माय रीझै ॥२१८
निमंत्रं दीयौ जिग्य काजै निकाई, मिले आय के देव बैकुंठ माहीं ।
गिरीसं[11] गजानंन[12] औ वेदगर्भा,[13] सुनासीर[14] हू संग लीने सुपर्वा[15] ॥२१९
प्रचेता[16] जहाँ दक्षनासापती[17] हू, थए आय इच्छ्यावसू[18] लौं थिती हू ।
उतथ्थानुजं[19] सप्त आदं रिखीसा, धरे चाहिकै आय के जोग धीसा ॥२२०
उदारं वृती सातुकी सोम-याजी, मुनी अध्वरी यग्यहोता समाजी ।
गुनी दक्ष मंत्रं मिले ऊद्द-गाता[20], विचारी बिधी सप्ततंतु बिख्याता ॥२२१
अकारं करं दच्छनं चंद्र अर्धं (र्धं), बनाये जहाँ कुंड नीके प्रवर्धं ।
खिती[21] कुंड कीनौं द्रुती च्यार खूंटा, अरु बृत[22] आकार तीजौ अखूंटा ॥२२२

---

१ प्रियव्रत । २ पायोधि = समुद्र । ३ मर्यादा । ४ पारिजातवृक्ष । ५ द्विप = हाथी, ऐरावत । ६ कामाम्बा = कामधेनु । ७ अप्सरा । ८ अण्डज । ९—पत्तन = शहर । १० क्रतु = यज्ञ । ११ गिरीश = शिव । १२ गणेश । १३ ब्रह्मा । १४ शुनासीर = इन्द्र । १५ देव । १६ वरुण । १७ दक्षिणाशापति = यम । १८ इच्छावसु कुबेर । १९ गुरु । २० उद्गाता = सामवेदी । २१ क्षिति । २२ वृत्त = गोल ।

धरे अग्न तापे रचा सामवेनो[1], तरु सुक्कहू डार तामे त्रपैनी[2]।
हवी[3] आद सन्नाज[4] पै अग्नहोत्रं, गहै देवता आपनै दाय गोत्रं ॥२२३
ज्युंही और दर्वी[5] गहै दर्ब[6] जेते, सनेहं[7] पनारा परै धार सेते।
मधुपर्क[8] भुंजै जहाँ ज्वालमाला, चमंकै चिनंगी मनौ बिज्जु-चा(ज्वा)ला ॥२२४
धुकै ऊद्धहू जाय कै छाय धूमै[9], घनासं घटा सामनी जांन घूमै।
सबदं गरज्जै मनौ बिप्र स्वाहा, पुनीतं बरखै अनंदं प्रवाहा ॥२२५
जथां जोग बिप्रावली देव जेबै[10], बिराजे मनो हंस सारंस बैं बै।
गंडोलं[11] पिडोलं मचे भूप गारी, प्रभा पुन्य अंकूर ऊगौं पसारी ॥२२६
बिकुर्वा आख्यांत बाख्यान बांचै, रबं दादुरं[12] जांन सारंग राचै।
गुनी गंध्रवं मेघ मल्लार गावै, बिपंची[13] मृदंगा अनूपं बजावै ॥२२७
कहूँ सारका[14]-दुंदभी लाग डक्का, ढ़कै व्यौम कौ भोम आवाज ढक्का[15]।
नचै मोरनी ज्यौ अह्री नाच नीकै, कहूँ ज्ञानोयै नाँहि काहू कमी कै ॥२२८
रहै इंदरा[16]-गेह में राज-राँनी, बखाँनौ कहा जग्य ताही बिधाँनी।
अनेकं चतुर-जात के देव आए, परं देबीयां संगही पुज्ज पाए ॥२२९
गिरा आद लौं पुज्ज कै गंग गौरी, समाधांन कै इंदु की सक्ति सौरी।
मुनिंद्रं जु तें बिप्र जामैं महांना, दये दक्षना भक्षना आद दांना ॥२३०
रमांनाथ कै जग्य कौ काम रूरौ, प्रथा पाय सोई भयौ तांम पूरौ।
बिसालं भई एह आकास-बांनी, अहौ बिस्नु ह्वै है सुरां अग्रबांनी[17] ॥२३१
पदं हंस-गं रुद्र इंद्राद पूजें, सबै ज्ञान बिज्ञान के भेद सूझै।
पदार्थं लहै च्यारहू सेव पाखै, रमां आद नौहूँ नीधो ग्रेह राखै ॥२३२
हरी जिग्य कै भाग में पुज्ज ह्वैहौ, द्रुतं कांमना आंमना दांन दैहौ।
घलै दांनवा देव कौं दुःख घेरो, तवै चाहिकै आयहै सर्न तेरो ॥२३३
मिटाये महादुख ओघं[18] मिटैंगे, रसज्ञा[20] सवै नाम तेरौ रटैंगे।
परै काम जैसौ जहां रूप पैहौ, निमंतं चहै जेम औतार लैहौ ॥२३४
गहै वेद के पंथ में धर्म ग्लाँनी, मिटैहौ सोई चाँहि कै ताहि म्लाँनी[21]।
हमारी सवै सक्तीयां संग ह्वैहै, द्रढं चित्त की चाह ज्यौं कांम दैहै ॥२३५

---

१ सामध्वनि। २ तर्पणीय=समिधा। ३ घी, घृतपात्र। ४ हवनसामग्री। ५ द्रव्यपात्र, दर्भ। ६ द्रव्य। ७ स्नेह=घृतादि। ८ दूध-दही आदि। ९ धूम=धूआं। १० भोजन करते है। ११ ग्रास। १२ दर्दुर=मेंढक। १३ वीणा। १४ सारिका=मैना। १५ डमरू। १६ इन्दिरा=लक्ष्मी। १७ सूर्यशक्ति। १८ अग्रणी। १९ ओघ=समूह। २० जिह्वा। २१ मलीनता।

अरूपा अजा दीन बरदाँन ऐसी, करै याद आख्याँन बाँचै कहै सौ।
मनो-वंचना[1] कामनाँ कौं मनावै, परामाय माहेश्वरी भक्ति पावै ॥२३६

दोहा

बिस्नु-जिग्य की वारता, सुनी व्यास सौं ग्याँन।
जनमेजय बोल्यौ जबही, पूर्बक विनय प्रमाँन ॥२३७
कही जिहि विध मख कथा, महिमा तिह बिध मात।
व्यास सुनावहु वारता, सबही होय सुनाथ[2] ॥२३८

छंद हरिगीतका

सुन भूप सौं इह व्यास ग्याँनन कहन लागे पुन कथा।
नगरी अजोध्या पुस्पनांमक तरून बसी नृपत थां।
ध्रुवसंध नांमक तनय अघपत[3] जाही पट्ट सुजांनीयै।
भुवपाल विरद[4] विसाल निर्भय प्रजापाल प्रमाँनीयै ॥२३९
रानीं जु ताहि मनोरमाँ लीलावती दूसर लहै।
सुखसहित पर्म सुधर्म में नित राज काजन निर्बहै।
रानीं सु जेष्ट मनोरमाँ सुत तिह सुदर्सन सित सभा।
लीलावती-सुत सत्रु-जित लघु पेखीयै सुंदर प्रभा ॥२४०
सम प्रीत नृप की दहूँ सुत सौं पाल लालन प्रेम सौं।
नव निद्ध रिद्ध समृद्ध निर्मत खत्रीया-धृम[5] खेम[6] सौं।
आखेट गए नृप येक अवसर मृगहु खग कहां मारनैं।
हठ कुंज में जहां केहरी[7] हर विफुर निकस्यौ बारनैं ॥२४१
तब ढ़ाल कर तरवार लै हठ भूप समुह कौं हल्यौ।
समरथ्थ सथ्थह हथ्थ सौं भुक लुथ्थ बुथ्थन ह्वै भिल्यौ।
मृगराज कौं गहि राज मार्यौ राज कौं मृघराज कै।
सब सोच राज-समाज में अनचित पाय अकाज कै ॥२४२

१ मनोवाञ्छा। २ सनाथ। ३ अधिपति। ४ यश। ५ क्षत्रियधर्म। ६ क्षेम। ७ सिंह।

व्याप्रत अस्लातन ब्रृंद मिल कै कोया प्रेतही जिह करी।
बिवहार[1] सार बिचार कै अनुसार बेद ही ऊद्धरी।
रांनी पिता सु मनोरमा कढ आप देस कलिंग सौं।
लीलावती पितु आय लाइही द्रुत अबंती-द्रग[2] सौं ॥२४३॥
पुन जुंधाजत[3] लीलावती पितु सत्रुजित अंगज सुता।
गुनवंत थपिही राजगादी कही सबसां इह कथा।
नृप बीरसैन कलिंग निर्भय रहि पिता सु मनोरमा।
सुत सुता मेरे सुद्रसन पै छत्र धारहु सिर छिमा ॥२४४॥
मानी न एकहु एक की मति एक एकन ऊपरा।
धिक धेक नाहि बिबेक धारचौ तेख रन में तत्परा।
बिरदैत भूप कलिंग बासो इतहु नाथ ऊजैन कौं।
रन-खेत आय जुरे उभै समुदाय लै संग सेन कौं ॥२४५॥
पर सस्त्र अस्त्र प्रहार पै रव मार-मार ऊचार कै।
सुर असुर मानहु संजुरें सम बैर आद बिचार कै।
धरनी सु धक्कन तें धुकी सररक्क नासा सेस की।
मुररक्क पिठहु कांमठी कररक्क दृढ़ किरेस[4] की ॥२४६॥
दररक्क दिग्गज अठु डिग फररक्क लै फँन ने टीयें।
खररक्क ज्जुगन[5] खपरा[6] भररक्क भुग्गन भेटीयें।
केऊ जुद्ध बानन तै करै किरबान[7] धारन के कटै।
केऊ खंजरन तें पिंजरन के फिफरन[8] बुक्कन कटै ॥२४७॥
कोंऊ काढ़ कै जमदाढ़ कौं गहि गाढ़ मारत गात में।
धसजात बार बिसार[9] ज्यौं बहि वाढ़हू बरसात में।
सिरत्रांन[10] कंकट सोस पै कोंऊ देत मार कुठार को।
खननंक रव ताकी खुलै घननंक ज्यौ घरीयार को ॥२४८॥
आवाज वाज अडंबरा[11] घुररात धुन घनघोर ज्यौं।
हर-वल्ल वाढ़ तहां कहुँ हुररात सिंधु हिलोर ज्यौं।

---

१ व्यवहार। २ दुर्ग। ३ युधाजित्। ४ वाराह। ५ योगिनी। ६ खप्पर। ७ कृपाण=तलवार। ८ फेंफड़े। ९ मछली। १० शिरस्त्राण=टोप, पघड़ी। ११ युद्धाऊ बाजे।

झटकाँन तैं बटकाँन[1] ह्वै खटकांन खग्गन[2] खुपरी[3]।
जगदीस के अटकांन ज्यौं बटकांन भेजा विखरी॥२४६
गजराज पैं मृगराज[4] त्यौं जिम बाज तित्तर जानीयैं।
ईभ ईक्क ईक्कन तै अरैं बल काय निब्बल बखांनीयैं।
बाजंद[5] और गजंद[6] बिढ़ जहां अरैं सिंदन[7] जाल का।
चमकात आयुध त्यौं चलै बरसात में जल बालका[8] ॥२५०
झुक केक झुंड कबंध झूमत घनैं घूमत घायला।
ईक ईक तैं जुरु कैंन आहब[9] बकैं ज्यौं मतबायुला[10]।
कट कीन[11] बुथन-बुथ्थ के कहूँ कालखंज[12] परे कटे।
फररक्क फिफर[13] फैल कैं अरु बुक्क बुक्कन तैं अटे॥२५१
धमचक्क हक्कन घूम धक्कन अक्क बक्कन ह्वै ईला[14]।
लर फौज लख्खन सूर सख्खन चोह चख्खन तैं छिला।
आग्नेय हय गय अग सौं पांनी पनारन ज्यौं परैं।
कट भृकुट सुभटन कंधरा[15] चलचिच्च ऊरध संचरैं॥२५२
असमान में रूक भांन ईछत तुग्ग[16] बग्गन तांन कै।
गम पायनो तम द्रुत गहो बढ़ छयौ खेह[17] बितांन कैं।
हल बीर-संमुह हुंकरैं ऊर धंक धार ऊतावरैं।
चिललात कातर[18] के चलैं बिललात ज्यौं मत बावरे॥२५३
बरमाल पांन बिवांन में असमांन गांन ऊतावली।
बर स्वच्छ सूर समांन बैठत्त अच्छरन की आवली।
कलहाक[19] हाकन के कजाकन बीर बाकन में बमैं।
डहकात डाकन धंमधाकन रास साकनहू[20] रमैं॥२५४
असवार अच्छे तच्छ ऊलटत पुन परेवा पच्छ त्यौं।
मारे बरच्छन लोट मंडत तुच्छ जल के मच्छ त्यौं।
गज जुथ्थ जुथ्थ कट गिरे तट भये केक तुखार[21] का।
जल-नाल जूं रस[22]तेज जावत गूद माच्यौ गार का॥२५५

---

१ टुकड़े। २ खड्ग। ३ खोपड़ी। ४ सिंह। ५ वाजीन्द्र=घोड़े। ६ गजेन्द्र=हाथी। ७ स्यन्दन=रथ। ८ बालुका=रेणुकण। ९ आहव=युद्ध। १० मतवाले, पागल। ११ मांस। १२ कलेजे। फेफड़े। १४ इला=पृथ्वी। १५ गर्दन। १६ तुरग=घोड़े। १७ धूलि। १८ कायर। १९ कलह=युद्ध। २० शाकिनी। २१ घोड़ा। २२ रक्त।

कट कालखंज जहँ कहूं घरीयार कच्छप घाट का।
पग पिंडुरी जामैं पहैं पाठीन[1] ज्यौं बिब पाट का।
बपु खंड-खंड बिहंड ह्वैं मिल चले तुंबा मुंड ज्यौं।
कहुँ कटी सुँड बितुंड की दिखरात बिष्टर[3] ढुंड ज्यौं ॥२५६
कारंड हंस बकोट कागा, झुंड गिद्धन के झुके।
चहकात चंड चपेट चिल्लह, लेत आमष लक्ल कैं।
जिम्र अंत तंतन जाल का, किख[4] कोक ऐंचत कीर से।
बहु अन्न बैठे घोरवाली[5], भरे पथकन भीर से ॥२५७
मालव नरेस कलिंग महिपति, जग भौ अति जोर सां।
चल चले च्यारहु चक्क पै, सकपक्क आलम[6] सोर सां।
नृप जुधाजित की सेन कां, खग्गन प्रहारे खेत पै।
बहु सत्रु मार कलिंगवासी, मरचौ सेन समेत पै ॥२५८
ऊजुवाल कैं कुल आपनौ, ऊर माल धारै अच्छ्छरी।
वरवीर बैठ बिमांन में, पहुँच्यौ सु अमरावति-पुरी।
जब जुधाजित नृप सत्रुजित दै राज निज दोहित्र कौं।
द्रुत[7] देस पहुँच्यौ ढंग कां, जुर सैन आयौ जत्रका[8] ॥२५९
रानी सु जेष्ठ मनोरमां, सुत जेष्ठ कौं लै संग पै।
मिल संत्रि मंत्र विचारकै, गवनी सोई तट गंग पै।
जहां सरन भारद्वज की, द्रढ रहि जाय मनोरमां।
बिसवास दै मुनिवर बसाई, सुत सुदर्सन तिह समा ॥२६०
मुनिवरन कुवर कुमाँर मिल, खुश खेल खेलत ख्याल हीं।
कहि क्लीव[9] पै ताही पुकारा, वह न समुझ्यौं वाल ह्वी[10]।
वह छोर वरन वकार कौं, क्ली सब्द अनुजांने कहा।
अनुस्वार - रहित वकार ऊतँम, मंत्र देवी है महां ॥२६१
पुन जपत ही बिसवास पामी, वेख पंचहु वरख में।
गहि सुदरसन भौ वरस ग्यारह, होये जप जुत हर्ष में।

१ मछली। २ हाथी। ३ ठूंठा। ४ लोमड़ी। सियार। ६ संसार। ७ शीघ्र। ८ वहां। ९ नपुंसक, कायर। १० होने के कारण।

जग्यौपवीत कीयौ जिहीं, मुनिराज, जापै कर मया[1]।
धनु-बेद-नीत पढ़ाय धार्मक, तीव्र जप बल मति तथा ॥२६२
सिद्ध दरस दीनौ सरस्वती, तिह मंत्र के परताप सौं।
धनुबान कंकट[2] धारनै, जुत कृपा ताही जाय सौं।
अभ्यास विद्या करत ऊँमत, खेल खुरली ख्याल कै।
चित चरन चंचल चाल तै, करबाल[3] हूँ कर ढ़ाल कै ॥२६३
कासी-नरिंद्र-कुमार का, सिसकला सुन्दर सुंदरी।
सुन श्रवन चरचा सुद्रसन की, ऊपज प्रीत अमंदरी[4]।
सो रात सूती स्वप्न में, सुभ दरस दीनौं सरस्वती।
वर मांग कन्या कहौ बांचत, देंहुगी मै अद्रुती ॥२६४
कन्या कह्यौ वर सुद्रसन कौं, मात दीजै मोहिकै।
दीय तथा-अस्तु कह्यौ देवी, सयन जागी सोयके।
जुत हरख देखी ताहि जननी, पूँछ कन्या प्यार सौं।
कछू कह्यौ नाहिन सिसकला[5], व्रीड़ा[6] प्रभाव बिचार सौं ॥२६५
सो कही कछू सखियान सौं, निस स्वप्न बात निदाँन की।
सन सिसकला पित-मातहू सुन, वाक्य के बरदांन की।
सिसकला क्लीन्त[7] सनेह सौं, अत बिरह व्याकुल अंग में।
बन और उपबन बीच बिहरत, सहचरी-गन संग में ॥२६६
ईक बिप्र आयौ वही अवसर, मुनी आस्रम तै मिल्यौ।
कछू भेद तातै लह्यौ कंवरी, राज-सुत हित चित रल्यौ।
विरहाग्न बाढी हीय बिखै, तिह सौच कै घृत तेल कौं।
प्रज्वलत कीनी बिप्र पुन, मुरझात निसदिन मेल कौं ॥२६७
अकुलाय बाँन अनंग सौं, ऊर अग भंग ऊतावरी।
तलपात पै लोटत तहीं, बिल्पात ज्यौं मति वावरी।
सम सूल लागत फूल सिदल, बिस्फुलंग[8] विकार से।
अत सीत मंद सुघंध आसुग[9], तिछ्छ[10] तन तरवार से ॥२६८

---

१ मया = ममता। २ बख्तर। ३ तलवार। ४ अधिक। ५ शशिकला। ६ लज्जा।
७ क्लान्त = व्याप्त। ८ विस्फुलिङ्ग = आग की चिनगारी। ९ आसुग = बाण।
१० तीक्ष्ण = तीखे।

आकार गोपन[1] करत ऊर सांकार होत सखीन कौं।
निद्रा न आवत नैन में, पत पाय बिरहा पीन[2] कौ।
नृप कासीराज सुबाहु निर्भय, देख तन कन्या दसा।
राच्यौ स्वयंबर राज-कंवरी, रुच निमंत्रन पति रसा[3] ॥२६६
मंचांन और बितांन मंडप, बनै केक विधांन के।
भंडार रिद्ध समृद्ध भर-भर, श्रीद[4] कोध समांन के।
द्रुत भयौ अन-अन[5] देस तै, अन राज आरंभ आवनौ।
पितु-गेह उच्छब होत पत्तन, गीत मंगल गावनौ ॥२७०
जब सिसकला निज जननि सौं, संदेह[6] दीनौ प्रति सखी।
पत सुद्रसन परनाय कै, धुर[7] ब्याह मेटहु धकधकी[8]।
रानी बुलाय नरेस कौ, कन्या हकीकत सब कही।
दुरभाग कां नही देहगै, सिसकला गुन-संपन्नई ॥२७१
राजा कह्यौ सोई सुन रही, सिसकला हीय में सोच कै।
इक बिप्र कौं बुलवाय कै, संदेह दीनौ सुद्रसन कै।
जिह कह्यौ तिह जाय कै[10], ...
मुनिराज कौं निज मात कौं, भाख्यौ सुदरतन भेव कौं।
मुनिराज कहेऊ मनोरम कौं, सुभ फल्यौ मुनि-सेव कौ।
मुन कह्यौ जबही मनोरमाँ, सुत जाँहुगी मैं संग में।
जहाँ जुधाजित अरु सत्रुजित, रस-भंग करहै रंग में ॥२७२
पुर-स्रंगबेर[11] निषादा-पतु कोऊ, प्रथम दीनौ दिन कहू।
तिह बैठ रथ पै चढ्यौ तत्पर, संग जननी लै सहू।
कस टोप कंकट बीर-बंकट, धनुस बाँनन धार कै।
उर ध्यॉन ध्यायौ अंबका, लीय पंथ हय ललकार के ॥२७३
नगरी बिसाला[12] लखी नैनन, झुंड-झुंडन नृप जुरे।
मद्रेस सिंधु-नरेस मागध, देस केरल द्रावरे[13]।
नय-पाल[14] चोलहु देस के नृप, काँमरूपहु पत कहूँ।
वर बीर धीर बिदर्भवासी, सूर नृप मालव सहू ॥२७४

---

१ गुप्त। २ पीन=पुष्ट, प्रबल। ३ रसापति=भूमिपति, राजा। ४ कुबेर। ५ अन्यान्य। ६ सन्देश। ७ धुर=सब से पहले, भार। ८ चिन्ता। ९ दुर्भाग्य, भाग्यहीन। १० मूलप्रति में आगे का एक चरण नहीं है। ११ शृङ्गिवेर। १२ विशाल=काशी। १३ द्राविड। १४ नीतिरक्षक।

इन आद औरहु भूप आये, करै गिनती कौंन की।
छतीस अक्षोहन[1] सई, चतुरंगनी[2] मिल छोन की।
पहुच्यौ सुदर्सन सिवपुरी[3], माता सु संग मनोरमाँ।
अरु सत्रुजित आयौ वहाँ, जिह वाँहनी[4] अत कीय जमाँ ॥२७५
बृताँत कन्या सुन्यौ बिस्मय, हीय नृप सब हेर कै।
जब जुधजित बोल्यौं जहाँ, ऊर घुमंड छाय अंधेर कै।
हम भार डारै प्रथम ही, सिसकला पावही सुत-सुता।
जब भूप कैरल कह्यौ जासों, कहत हो कैसी कथा ॥२७६
इहाँ स्वल्क[5] नांहि स्वयंबरं, इछ्या स्वयंवर है इहीं।
कमनीय राजकँवार कौं, मन-बंच करहै पति मही[6]।
लर अनय[7] करकै राज लीनौ, श्रीया लेवहुगे तिहीं।
बिच बैठ कै नृप ऐंठ बोलत, लाज तुम आवत नहीं ॥२७७
कछू बचन संकुल[8] परसपर कहि, बोल भूप सुबाँहु कौं।
सिद्धान्त पूछ्यौ नृपन सब, बृतांत कन्या व्याह कौं।
जब कही कन्या कहत जैसे, नृप सुबाँहु निदाँन कै।
सब भूप बोले सुद्रसन तै, जिह अकेलौ जाँन कै ॥२७८
हय नाँहि हथ्थी सूर सथ्थी रथ्थ रथ्थी और हौ।
इह स्वयंबर में आप आये कौन के बल से कहौ।
बोलौ सुदरसन नृपन के बिच सुजन काज सुधारनी।
अनवद्य[9] रूप अखंड आद्या विस्व कौं बिसतारनी ॥२७९
जग जननि कौ बल सब ही जग कौं, हमहु कौं बल है वही।
द्रग स्वयंबर कौं देखनै, अवगाह हित आये ईहीं।
सुरस्वती देवी स्वप्न में, दरसाव हमकौं तिह दीयौ।
द्रुत स्वयंबर कौ देखनै, तुम कासीं जाव इहीं कह्यौ ॥२८०
पुन इहाँ आये दरस पाये, सब ही राजन के सुतै।
अरू जाँयगे फिर रिषी-आश्रम, मात जुत आप ही मतै।

---

१. अक्षोहिणी सेना। २. चतुरंगिणी = सेना। ३. शिवपुरी = काशी। ४. वाहिनी-सेना।
५. युद्ध। ६. मही = पृथ्वी। ७. अनीति। ८. समुदाय में। ९. अनवद्य = निर्दोष।

जब सुद्रसन ईह जाब[1] दीनौ, सुन्यौ भूपत सबन ही।
बय-डिंभ[2] देख बिस्रंभ[3] कै, सुससुंभ[4] बोले मिल सही ॥२८१

नृप जुधाजित उज्जैन—पत्तन, सत्रुजित अवधेसहु।
तुम सत्रुगन की नीत यारी, कदन[5] करवे कौं कहूँ।
सुन सावधान रह्यौ सदाँ जो कुसल चाहत जीव कौ।
हित चाह कै हम कहत है, कीजै बिसास न क्लीव[6] को ॥२८२

जब सुद्रसन बोल्यौ जहां, सब नृपन काँ समुझाय कै।
बातै बिचार बिबेक की, सुन लेहु श्रवन सुभाय कै।
जिह कीयौ निर्मत[7] सबही जग कौं कीये निर्मत हमहुँ कौं।
अरु सत्रु मित्रन सौं उदासी, कहत साँची तुमहु कौं ॥२८३

कहु ईतेंही पै सत्रुता कर, भाव भजहै तौ भलै।
बसू[8] बीज जैसी बोय है, वह फूल तरु जैसौ फलै।
सब सुद्रसन की बात सुन, नृप सिबर-सिबर[9] सिधायगे।
ग्रह राज-भवन सुबाँहु गवने, अंत पै अकुलायगे ॥२८४

कन्या बुलाय ईही कही, बिच गोद कै बहिठार कै।
पुन माल लेय मधूक[10] पुस्पन, बरहु नृपत बिचार कै।
सुन पिता बोली सिसकला, करहौ न ऐसे काम कौं।
कढ़ नृपत आये कुट(टि) ल काँमी, धूम कर कर धाँम कौं ॥२८५

मैं एक कन्या जाहि मन तैं, त्रोया हित सब ताकहै।
बरमाल डारै हम वही ऊर चाह कै अभिलाष है।
सिसकला बारबधू[11] न सौं सिसकला नाहिन स्वैरनी[12]।
सिसकला अंस सुबाँहु संभव, वंस की नहीं बैरनी[13] ॥२८६

पत सुद्रसन परनाय[14] कै, कासीहू सीम[15] निकास मैं।
सब राज कौं सुनवाय कै बस रहौ अपने बास में।
कासी-नरेस सबै कही, बिष-बेल नँहि आँगै बढ़ै।
गढ़पती जावहु ग्रेह कौं, कन्या न बाहर कौं कढ़ै ॥२८७

---

१. जवाब। २. बालक। ३ विश्वास। ४. स्वीकार करके कि ठीक है--शुभ है। ५. मारना। ६. कायर। ७. निर्मित = रचना, सृष्टि। ८ पृथ्वी। ९. शिविर = डेरे, स्थान। १०. महुआ। ११. वेश्या। १२. स्वैरिणी = स्वतन्त्र। १३. वैरिणी = शत्रु। १४ विवाह, प्रणय करके। १५. सीमा।

कछू नांहि बोले अनकहू, जर[1] जुधाजित बोले जिही।
बैधेय[2] भूप बनारसी, अनजांन कीनों क्रतु ईहीं।
इहीं दूर देस नरेश आये, क्लेस कीय किह कारनै।
दुहिता सुदरसन देहुगे, बुलवाय लीनौं बारनै[3] ॥२८८

कछू क्षमा करहै नृपत कोऊ, हम न जैहै हार कै।
अब सुद्रसन कौं मार अरु, सकुटंब तोहि संघार[4] कै।
परनाय देहूँ तोर पुत्री, जोर सत्रुहजीत कौं।
सठ[5] कहत हौं समुझाय कै, दुहिता न दै दोहीत[6] कौं ॥२८९

अथवा क राज-समाज में, ईह निरख नैनन नेम सौं।
बर-माल डाल बिचार कै, पति करै धारन प्रेम सौं।
समुझाय कन्या कहौं साँची, हम कहै जिह हाल कौं।
अत होयगो नहि तौ ऊपद्रव, चाहि छोरहु[7] चाल कौं ॥२९०

सुन आय भूप सुबाहु नै, सिसकला कहि समुझाय कै।
पितु-बारता सुन श्रवन पुत्री, मन रही मुरझाय कै।
तज लाज कै पितुराज कौं, कँवरी हकीकत यौं कही।
परनाय कै निस[8] आज प्रथमही, सीख देवहु हम सही ॥२९१

जब जीत कै लै जाँयगे, निरबैर रहिहै नृप न तै।
पत सुद्रसन के संग पथ, पुन करहु बाहर पतन तै।
कासी-नरेस सुबाहु कन्या, कह्यौ तैसे हीं कीयौ।
बिप्रन बुलाये बेद-बिध सौं, चाहि चित मंडप छयौ ॥२९२

परनाय हरन पसाव[9] दै, गजराज हय दासी गऊ।
सब अस्त्र सस्त्र सँभार कै, सुच वस्त्र वित[10] दीने सहू।
राजा सुबाहु मनोरसाँ, कर जोर समधन[11] सौं कही।
रुच पाय दासी रावरी[12] सिसकला नित जाँनहु सही ॥२९३

परमोद[13] कर ईम परसपर, ऊर मोद बाढ़ उछाह कै।
सनमाँन भूप सुबाँहु नै, जामात[14] पुज्जे जाहि कै।

---

१. जर=जलकर। २. बंधेय=मूर्ख, शत्रु। ३. वरण के लिए। ४. संहार। ५. शठ=मूर्ख। ६. दौहित्र=पुत्री का पुत्र। ७. छोडो। ८. निशा=रात्रि। ९. प्रसाद, दहेज। १०. वित्त—धन। ११. सम्बन्धिनी, समधिन। १२. आपकी। १३. प्रमोद—हर्ष। १४. जामाता=जवांई।

सब रात-बीती बात सुन के, प्रात होवत महिपती ।
मिल साथ कै सब हाथ मीजत, घात रच जुत ग्रीनती[1] ॥२९४
बज जुद्ध बाँनक बंब आँनक[2], अत अचानक ऊपटे ।
भारी भयानक रोष राँनक, थाँन-थांनक तै थटे ।
बढ़ बाट[3] - बाटन घेर घाटन, फौज ठाटन फैल कै ।
पत पार राज-कँवार परन्यौ, गहहु ताकों गैल में ॥२९५
जल-जोर सिंधु-हिलोर ज्यौं, कर सोर च्यारहु कूँनतै[4] ।
अकुलाय अरवर वीर बरवर, धेक धर खग घूँन तै ।
सज सेन भूप सुवाहु सुद्रसन, रोप रन जूझत रहै ।
छह दिवस बीते तीर छूटत, खग्ग खूटत वह खहै[5] ॥२९६
दलमलत कासी द्रंगपै, खलभल छतीसू खोहनी[6] ।
कलकलत रीढक[7] कमठ[8] की, मलचलत नागाधिप[9] मनी ।
गह केक स्यंदन हय गयंदन, आरकंदन[10] आहुरे ।
ध्रुवसंव-नंदन द्वेष द्वंदन, छोर छंदन चाहुरे ॥२९७
कहि बचन करकस[11] वीरवर कस, तांन तरकस तीर कों ।
हीय धेक धारत मिल प्रहारत, विजय हित वर वीर कों ।
तहां जुधाजित कर तेख[12] कों, अवरेख वेर अनाद कौ ।
मरजाद छोर मरोर मुछ्छन, बढत तौर विषाद कौ ॥२९८
रथ घेर लीनौ सत्रुजित, पथ संग नूप सुवाहु कौ ।
चढ खेत चत्वर[13] सूर सत्वर[14], रोक लीनौ राह कौं ।
जामात सुसर[15] घिरे जहाँ, अत परचौ संकट आयकें ।
इतके न उतके तहे अवतो, पाहि देवी पाहि कै ॥२९९
मृगराज बिरद विचार कैं, गजराज तारचौ ग्राह सौं ।
सब तो उभ्यारहु ईस्वरी, अवगाह बिरद उछाह सौं ।
जप बीज-मंत्र कह्यौ जितै, भगवती आई भीर कौं ।
सुद्रसनहू बोल्यौ सुसर सौं, ध्रुव[16] धरी नेकहु धीर कौं ॥३००

---

१. गुप्तिन । २. ढोल, नगाड़े । ३. बाट=मार्ग । ४. कोण । ५. रण भूमि पर । ६. [illegible] । ७. पुच्छ । ८. कच्छप, कछुआ । ९. सर्पराज, नगराज । १०. आक्रन्दन युद्ध, [illegible] । ११. [illegible] । १२. क्रोध । १३. आंगन, चबूतरा । १४. शीघ्र । १५. श्वसुर । १६. निश्चय, स्थिरता ।

इह सिंघ की असवार कौं, निज दरस कीजै नेम सौं।
ईह पास अंकुस लियै आई, परख आरत प्रेम सौं।
जब जुधाजित अरु सत्रुजित, देखी तऊ रननाँ दटे।
पुन कासोराजहु सुद्रसन पै, मार बाँनंन अटमटे॥३०१
तब चंडका तरवार लै, कर कोप क्रौं-रव[1] किलक में।
जहाँ जुधाजित अरु सत्रुजित कौं, मार डारे पलक में।
कर कृपा सुद्रसन स्याहि[2] कीनी, सहित भूप सुबाहु की।
सुन करहु देबी स्याह सबकी, जोऊ सुमरै जाहु की॥३०२
अरु सुमन बरखे इहीं अबसर, देवता सब देख कै।
जय-जयत बोले सब्द जुर कै, भक्त-भाव विसेख कै।
जय सुद्रसन पाई जहाँ, खल[3] मार कै रन-खेत कै।
कासी-नरेस सुबाहु की, होय भई सिद्धी हेत कैं।३०३

दोहा

समर[4] सहोदर सत्रुजित, मातामह जुत मार।
भक्त सुदर्सन भक्त की, सब विध करचौ सुधार॥३०४
राव[5] करै वह रंक[6] कौ, रंक करै सोई राव।
संकट मेटे सुद्रसन, कीनौ साच कहाव॥३०५

छंद द्रुं-मखरी

मात सुदरसन संकट मेट्यौ, भय कौं छोर अभय पद भेट्यौ।
कासी-भूप बरनना[7] कीनी, असरन-सरन भक्त-आधीनी॥३०६
बिध हरि हर तुहिं बिरद बखाँनै, जीव तुच्छ मति हम कहा जाँनै।
दुहिता अरु जामात दुहूँ कौं, अधम उधारे मात अहूँ कौं॥३०७
तारे हम जैसे जग तारहु, आरत भक्तन देख उधारहु।
असतुत सुनी सुबाहु ऊचारी, सुन देबी होय भई सुखारी॥३०८
बोली सुन देबी तिह बारा, माँग-माँग बर बचन हमारा।
सुन कै देवी बचन सुबाहू, जोर दहू कर अवसर जाहू॥३०९

---

१. शब्द। २ साहाय्य, रक्षा। ३: दुष्ट। ४. युद्ध। ५. राजा। ६. दरिद्र।
७. वर्णना=स्तुति।

परम भक्त-हीय मोद प्रकासीय, करहु निवास सदाँ बिच कासीय।
देवी कह्यौ बसत तुव द्वारहु, दुरगा - नाँम धाँम ध्रुव धारहु ॥३१०
दीय बरदान इहै जगदंबा, ऊपज प्रतीत सुबाहु अचंबा[1]।
जग पुज्जत जाकौं जग-जननी, गत जाकी महमा अन-गननी ॥३११
सुद्रसन भेंटे चरन सुभागी, लख सिसकला चरन पुन लागी।
देवी अरज सुनहु ममदं[2] यत, कहै कहा हमरौ हीय कंपत ॥३१२
कँहां बैठ तुम सुमरन करै[3], ईह भव सागर पार ऊद्धरै।
भूप कह्यौ देवी भज भावन, पुरी अजोध्या तुमरी पावन ॥३१३
अवर भूप तैं भई ऊदासौ, बसहु अवध के हुय तुम बासी।
प्रजा भाग सुख लेहु-प्रतीती, न्याय-रीत सौं पारहु नीती ॥३१४
दंपति प्रीत सहित सुखदायक, बसहु जाय निर्भय बर-दायक।
जननी ऊभय येक सम जाँनहु, मनोरमाँ लीलावती माँनहु ॥३१५
परै भीर[4] तौ हमही पुकारहु, तेरे सकल दरिद्र-दुख टारहु।
आठम और नवम तिथ आवै, चतुरदसी हम पुज्ज चढावै ॥३१६
आश्विन प्रथम मास अधकारी, सेवहु नित तुम रहहु सुखारी।
सुचि मधुमास[5] निसा नव सेवहु, लाभ भूप मन-बंचत लेवहु ॥३१७
अतरध्याँन भई कह एती, सुन्यौ सुदरसन श्रवनन सेती।
सब राजा आये सुद्रसन पै, जुर धाये मंत्री जन जन पै ॥३१८
सबही कहन लगे तुम स्वाँमीं, गनहु हमैं अपनैं पदगामी।
अंबा-चरन-भक्त अनुरागी, भूप-सिरोमन[6] तुम बड़भागी ॥३१९
करी बालपन में कहा करनी, ता तैं बस[7] भई तारन-तरनी।
कछू हमकौं ऊपदेसही कीजै, रमाँ जक्त - जननी लख रीजै[8] ॥३२०
बोले नृपत सुदरसन बाँनी, कहै कहा ईह अकथ कहाँनी।
जग के जीव हमहु कहा जानै, ब्रह्माँ बिसन महेस बखानें ॥३२१
सब ऊत्पत पालन संघरनी, सेव करै सौं असरन - सरनी।
निरगुन ध्याँन-जोग मुनि नीकैं, सरगुन तुमहु हमहु सबही कैं ॥३२२

१. आश्चर्य। २. मेरी। ३. भावना से। ४. कष्ट। ५. चैत्र। ६. शिरोमणि।
७ वश। ८. रीझै—प्रसन्न हो।

काँम-वीज-मंत्र ही जिह केरौ, उर में तिह जप मेट अँधेरौ।
प्रांजल[1] हृदै करी पद प्रीती, जातैं बिषम काँमना जीती ॥३२३
दया करी तातैं जगदंबा, सेवक अपनौ जाँन ससुंभा[2]।
सुद्रसन कही नृपत सब सुनी, गावत देबी कीरत गुनी ॥३२४
सबही राजा देस सिधाये, अरू सुबाहु नृप कासी आये।
सुद्रसन गयौ अवध-पुर सोई, संग लीनै त्रीय मात सकोई ॥३२५
परजा मंत्री मिल सुख पाये, बिधवत मंगल-कलस बधाये।
राज-भवन में जाय नरेस्वर, पुन देख्यौ सभही अंतह-पुर[3] ॥३२६
लीलावती माता पग लागें, ऊभय जोर कर तिनके आगें।
मात सुनहु बिनती ईक मेरी, बिधवत बात कहत इह बेरी ॥३२७
मनोरमाँ तै ईधकी माता, करकै क्रपा कहहु कुसलाता।
सत्रुजीत मम भ्रात सनातन, जुधाजीत विग्रह कीय जातन ॥३२८
कर बिपरीत बन्यौ मम केवी,[4] दंड दीयौ ता काँरन देबी।
सुत मैं तोर करहु सिवकाई,[5] मो पर क्रपा कीजीयै माई ॥३२९
सुद्रसन के सुन बोल सयाँना, लीलावती चित्त ललचाँना।
कही पुत्र तै सत्य कहाँनी, धारहु धरा ईहै रजधाँनी ॥३३०
कर सर तंत राज तुम कीजै, परजा मंत्री देख पतीजै।
जीवन मरन सुजस अपजसहू, बिधना हाथ कहा किह बसहू ॥३३१
कीय प्रनाम मातहि कर जोरी, बिनती बहुबिध करी बहोरी।
मुनि बसिष्ट-आदक मिल मंत्री, तब सुद्रसन कीय तिलक सुतंत्री ॥३३२
श्रीदेवी ? मंदिर कर सुंदर, कमृ[6] मनहु दूसर गिर-कंदर[7]।
प्रतकाया[8] देबी रच पावन, संसक्रीया[9] स्रंगार सुहावन ॥३३३
थित रचना कर करीजु थापन, तब नृप भये बिगत त्रहुँ तापन।
पुर पत्तन प्रति हुकँम प्रचारा, सिखरी मँडप बनाबहु सारा ॥३३४
पूजा देवी प्रजा प्रचारहु, निगम[10]-पंथ-जुत जन निरधारहु।
रघुराजा जिम रघुवर-रीती, पूजा देबी बढ़ी प्रतीती ॥३३५

---

१ सरस, सरल, निष्कपट। २ अंगीकृत कर। ३. अन्तःपुर = रनिवास। ४ वैरी।
५ सेवकत्व। ६ कम्र = सुन्दर, कमनीय। ७ पर्वत-गुफा। ८ प्रतिकाया = मूर्त्ति।
९ संस्क्रिया = संस्कार। १. वेद।

[illegible]-भक्ति [illegible] द्रढ़ावत, ग्रह-ग्रह ग्राम-ग्राम जस गावत।
पुनि [illegible] कहत महातम[1], जनमेजय प्रति ईह बृत संजम[2] ॥३३६
[illegible][3] [illegible] सरद प्रमानौं, जमद्रष्ट्रा[4] रुज[5]-कारक जानौं।
[illegible]-कृत तामह नीकी, जो सुखदायक है निज जीकी ॥३३७
[illegible][7] मास मधु [illegible][8] उजीयारा[8], क्रमपाटी[9] पक्षति[10] सुभकारा।
[illegible][11] हाथ [illegible] के लंबा, ऊतम मंडप रचै जु अंबा ॥३३८
[illegible] हाथ जाके बिच चौंरी[12], ऊरध येक हाथ कर औरी।
[illegible] [illegible] [illegible] बनावै, मंडप बंदन-माल मढ़ावै ॥३३९
[illegible][13] ऊरध [illegible] छाया, मंगल रुप हेत महमाया।
[illegible] [illegible] दुजन बुलावै मंडप द्वारे ॥३४०
[illegible] प्रतिपदा पुनीता, पुन जल-मंजन करै प्रचीता।
[illegible] [illegible][14] [illegible][15]-जुत पूजै, पाय अरघ बंदन कर पूजै ॥३४१
[illegible] [illegible] नव [illegible] एक पैंहू, सुमरन पाठ करावै जा सैंह।
[illegible] [illegible] [illegible] सिंघासन, प्रतमा देवी करै प्रकासन ॥३४२
[illegible] [illegible][16]-[illegible], च्यार भुजा आयुध फिर च्यारै।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महावै, पुहपमाल उत्तम पहरावै ॥३४३
[illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible], मंत्र नवाक्षर जंत्र [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तै, [illegible] पुनि की [illegible] क्रम तै ॥३४४
[illegible] [illegible] [illegible] पुन [illegible], [illegible][17] कीजै तहाँ [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] दिन [illegible], [illegible] मन [illegible] दिन [illegible] ॥३४५
[illegible][18] [illegible] [illegible][19], पुन देवी [illegible] [illegible] गावन।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३४६
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible]-[illegible]-अनुरागी।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३४७

[illegible]

पूजै ईक अथवा दुय पेखै, वृद्धमाँन अथवा क विसेखै।
संख्या जाकी देत सुनाई, लखहु जाहि नीकै चित लाई ॥३४८
बरस जु जुगल कँवारी बेस, हायन त्रय त्रय-मूर्ती[1] हमेस।
कल्यानी चव[2] बरस कहीजै, पंच रोहनी[3] लहि पूजीजै ॥३४९
काली षट्-आयन[4] को कहीयै, सात बरस चंडका[5] सुनवईयै।
सांभवी[6] आठ बरस की सोऊ, कहि दुरगा नव बरस सकोऊ ॥३५०
जाँनहु सदा पूजबे जोगू, लक्षन कहत सुनौ जिह लोगू।
हीनांगी तन की नहीं होवै, कुष्ट[7] घाव-जुत अंध न कोऐ ॥३५१
बहु रोमाकुल दुष्ट बचावै, काँनो और कुरूप कहावै।
पुस्पवती[8] रुज-सहित परेखौ, लछन[9]-हीन अपुज्यही लेखौ ॥३५२
कन्या च्यार बरन अधकारी, है परन्तु द्वज की हितकारी।
नव निस पूजा बनै न नीकी, हितकारी तिथ अष्टमही की ॥३५३
ता पाछै कर हवन तहाँ ही, जींमावै पुन विप्र जहाँ ही।
दाँन दक्षना विधवत दैकै, बहुर बिसरजन[10]-रीत बिसेखै ॥३५४
दारद-दोख मिटावन दायक, लछि धाँन धन बृद्धि लायक।
च्यार पदारथ करै चाँवना, भजै भवानी सहित भावना ॥३५५
यामे ईक ईतीहास अनूपा, भली रीत साँ सुनीयै भूपा।
मंडल पुरी अयोध्या माँही, बनक[11] सुसील जु नाम बसाँहीं ॥३५६
पुत्र बढ़े ताके परवारा[12], दारद जैसौई बढ्यौ दिवारा।
कहूँ मजूरी लावै करकै, भोजन ऊदर मिलै नहीं भरकै ॥३५७
करम करत निज धृम-अनुकूला, दारद-दोष भ्रमै मन-डूला।
बैठा सोच करत ईक बारा, द्वज आये केऊ ताके द्वारा ॥३५८
बिप्रन पूछ्यौ बनक बिख्यारी[13], निज सुत सुता तथाँ हम नारी।
धन चाहत नहीं अधिक धरोहर, भोजन चाहत लखौ उदर भर ॥३५९
बिनती करत ऊपाव बतावौ, दारद करै ईतौ निरदावौ।
जब बिप्रन ईह दयौ जनाई, वृत नव रात्री रीत बताई ॥३६०
बीजमंत्र दीनौ जित बिप्रन, महाँमोद-जुत जपहु मनो-मन।
रांवन हरी तीया रघुवर की, परीं विपत लंकेसुर[14] पर कौ ॥३६१

---

१ त्रिमूर्त्ति। २ चार। ३ रोहिणी। ४ अयन=वर्ष। ५ चण्डिका। ६ शाम्भवी। ७ कुष्ठ। ८ पुष्पवती=रजस्वला। ९ लक्षण, चिह्न। १० विसर्जन=छोड़ने की। ११ वणिक्=बनिया। १२ परिवार। १३ विपत्तिग्रस्त। १४ लंकेश्वर।

कीयौ वरत देवी किसकंधा[1], वह प्रवाहु जलनिध[2]–पुल बंधा।
जुत परवार हथ्यौ[3] खल जेही, विजय पाय पाई बैदेही[4] ॥३६२
वैस्य करहु तुम वरत विधांना, नव-रात्री होय हेर निदांना।
जपहुं वीजमंत्रहु की जापा, पैहौ नवहौ निध ताहि प्रतापा ॥३६३
इम ऊपदेस दीयौ वृत देवी, सुन वह वैस्य जिहीं विध सेवी।
जपत रह्यौ नव बच्छछर जाहू, तिह परताप दरस दीय ताहू ॥३६४
भेट्यौ संपत कृपा भवांनी, जाको कथा सकल जग जांनी।
ईह इतीहास पढै अरु गावै, वैस सुसील ज्युहीं सुख पावै ॥३६५

दोहा

रांवन की रघुवीर पै, विपत परी कहा बात।
किसकंधा कैसैं करयौ, रांम वरत नवरात ॥३६६
देवी जैसै वर दयौ, मिल कपि-पुरी[5] मुकांम।
पुल बांध्यौ पायोद[6] पै रांवन मारयौ रांम ॥३६७
वैदेही पाई विजय, अवध पधारे ईस।
व्यास-देव ईह वारता, वरनहु विसवा-वीस ॥३६८
जननेजय रुच पाय जव, वरनन लागे व्यास।
सुनन लगे सव जन सभा, अत ऊतम ईतीहास ॥३६९

छंद भुजंगी-प्रयात

अजोध्या-पुरी राजधांनी अनंदं, मनू-आद[7] इख्वाक[8] बांधी मृजादं[9]।
रघूराज ताही थिती[10] रीत राखी, सव ही प्रजा देत है नीत साखी[11] ॥३७०
तिहीं वंस में औतरयौ अंत त्रेता, जिहीं नांम दसरथहू जंग-जेता।
भलो सुमृती[12] पर्म धर्म महांना, जिहीं उजली कीत (कीर्ति) जांनै जहांना ॥३७१
बड़े सूर दांनी सोई हंस-वंसी[13], धरा धीर-धारी प्रजा-ताप-ध्वंसी[14]।
रचे रांनीयां तिन आनंद गामी[15], रमैं सुंदरी मिंदरं[16] इंदरा[17] सी ॥३७२
बड़ी पट्टरांनी[18] कौसल्याधीस[19]-कन्या, अरु केकई त्यौं सुमित्राहु अन्या।
सबै प्रीत की रीत एकै समांनी, करै एकहू सौं नहीं आंन-कांनी[20] ॥३७३

---

१ किष्किंधा। २ जलनिधि=समुद्र। ३ मारा। ४ जनकपुत्री, जानकी। ५ कपि-पुरी=किष्किंधा। ६ पायोधि=समुद्र। ७ मनु आदि। ८ इक्ष्वाकु। ९ मर्यादा। १० स्थिति। ११ [illegible]=गवाही। १२ स्मृति। १३ सूर्यवंशी। १४ [illegible]। १५ [illegible]=मधुर। १६ मंदिर=घर, महल। १७ इंदिरा=लक्ष्मी। १८ पटरानी। १९ कोशल देश के राजा। २० [illegible], पार्थक्य।

जिहीं बल्लभा[1] कौंसला[2] राँम जाये, अजं ईस औतार[3] कौं धार आये।
भरथं[4] जनै कैकई भारजा नै, जनै त्यौं सुमंत्रा[5] ऊभै पुत्र जानै ॥३७४
भये सेस[6] औतारहू राँम भाई, जिहीं लछ्छंन नाँम दीनौ जनाई।
लघू नाँम सत्रुघ्न[7]हु और लेखौ, बढी भर्त तै प्रीत ताकी बिसेखौ ॥३७५
भये दासरथी[8] जहाँ च्यार भ्राता, गुरू-कर्म[9] लावंन्य[10] दाता सुज्ञाता।
करे वेद की रीत साँ संसकारा, पढ़े भेद बाँनावली[11] वार-पारा[12] ॥३७६
सदाँ यातु[13] मारीच औरैं सुबाहू, रिषी काँ सतावैं मनौं चंद राहू।
अजोध्या पुरी चाहि गाधेय[14] आये, जिहीं बेदना दासरथं जनाये ॥३७७
क्रतू-काज में चाहियँ स्याहि-कारी, बलो राँम राँमाँनुजं[15] की बिचारी।
दहू वरि काँ भीर मैं संग दीजै, क्रपाल[16] मुनी-काज कौं सिद्ध कीजै ॥३७८
ऊभै पुत्र कौं साथ त्रसांकु-याजी[17], रिषी सौंप दीने चले होय राजी।
महाँखंड कोडंड[18] लीनैं कुमारा, लगे पंथ कौं जात गाधेय लारा ॥३७९
ईते ताड़का राखसी द्रुष्ट आई, रिषी देख बोले हनौ राँम राई।
महाँबाहु ज्याँ ऐंचकै बाँन मारचौ, परी पापनी प्रांन ताकौ प्रहारचौ ॥३८०
चढे द्रुष्ट पै कष्टकारी नृचक्षा[19], प्रहारे रिषी जग्य के जे निपक्षा[20]।
सुबाहू महाँपातकी[21] कौं संघारचौ, महाँदुष्ट मारीच कै बाँन मारचौ ॥३८१
ऊडचौ सुद्ध काँ मूल कै ऊद्ध ऐसै, तचै तप्त के बेग सौ तूल तैसे।
मती नीच मारीच कै बीचिमाली[22], अपाची[23] दिसा बीच गेरचौ उछाली ॥३८२
क्रतू-कर्म गाधेय संपूर्न कीनौ, हुयौ अट्टवौ राक्षसी जात हींनौ।
करी बींनती राँम गाधेय काजा, रच्यौ जग्य आरंभ बैदेह राजा ॥३८३
दिखावौ तिहीं चाहि कै जाय देसा, निहारैं तहाँ नीक नाना नरेसा।
मुनी जाँनकै राँमचंद्र मता[24] कौं, परे मैथला[25] पंथ धारै प्रथा कौं ॥३८४
सिला होय सोई परी मग्ग सारी, अहिल्या गोवतँम[26] नारी ऊधारी।
प्रभू मैथला मग्ग आगै पहूँचे, अटारी लखी द्रुग[27] में स्त्रंग[28] ऊँचे ॥३८५

---

१ प्रिया, स्त्री। २ कौशल्या। ३ अवतार। ४ भरत। ५ सुमित्रा। ६ शेष। ७ शत्रुघ्न। ८ दाशरथि = दशरथ के पुत्र। ९ गुरुकर्म = विद्या। १० लावण्य = सुन्दर, सलोने। ११ धनुर्वेद। १२ पारावार। १३ यातुधान = राक्षस। १४ गाधिपुत्र, विश्वामित्र। १५ रामानुज = लक्ष्मण। १६ कृपालु। १७ विश्वामित्र। १८ कोदण्ड = धनुष। १९ राक्षस। २० विपक्षी = विरोधी, शत्रु। २१ पापी, दुष्ट। २२ नदी। २३ अवाची दक्षिण। २४ इच्छा। २५ मार्ग। २६ गौतम। २७ दुर्ग। २८ शृङ्ग।

बंधी धाम-धामं पताका[1] विराजे, बड़े आँनकं थानकं ध्वाँन[2] बाजें ।
गिरा[3] कोकला[4] गायनी[5] गीत गावैं, निकाई जुते बारनारी[6] नचावैं ॥३८६
गहे संग गावैय चाले गली कौं, थितं जिग्य वैदेह[7] राच्यो थलो कौ ।
मुनीराजहू संग लीनैं कुमारा, पती-ओघ कै जोध[8] जेता पवाँरा ॥३८७
बड़े देस के देस के राजवंसी, परामंच आरूढ बैठे प्रसंसी ।
मुनीराज आराध के दीर्घ[9]-मंचा, ऊभै वीरहू साथ बैठे ऊदचा[10] ॥३८८
प्रतज्ञा करी चाप[11] की सूलपाँनी[12], सभा बीच राजाँन थप्पी सु आँनी ।
चलो तिष्ठ के लस्तकं मुष्ट वंधें नमावें अधो[13] अट्टनीकौ निमंधैं ॥३८९
चढ़ै[14] ग्रहे एंच[15] सिजा[16] चढ़ावें, पती भूम सोई सुता भोर पावें ।
मिठीनाथ[17] वैदेह नें मर्म खोल्यो, बढे आगन्या[18] ले तहाँ सूत बोल्यो ॥३९०
रजा पाय ऊठे जवें राज राँनें, तटी बंध क स्रोनि[19] के संध ताँनें ।
भुजा-दंड कोदंड कों जाय भेटें, मरोरें गहे मुष्का माँन मेटें ॥३९१
खिसेके हसेके नसें चक्र खावें, फसें अंगुलीहू अंगुष्टा फसावें ।
हलें नां चलें नां घलें हाथही कैं, पुलेके दुलेके रुलें पायही कैं ॥३९२
गुलें सीस[20] उस्नीक[21] कोटीर[22] खूटें, चलें केस-कक्षा[23] कहूँ बंध छूटें ।
कटी-बिम्ब[24] लूटें तटी[25] संध केते, तुटे हार मुक्ता-वलीमाल तेते ॥३९३
हसें देस के एक को एक हांसो, तजें तेज के तालतंडं[26] तमासौ[27] ।
कहे मेप[28] के मेल नां राव राजा, सही टेक कै सूत भाख्यो समाजा ॥३९४
हटे राजवंसी भये अंस-हीना[29], सजै चाहि कै ब्याह कों कौन सीता ।
[illegible] कही [illegible]-कन्या, निब्रओ[30] भई भूम एती निधंन्या ॥३९५
मगारे मुने [illegible] नां नेन नीचे, तरी होय फेक नहीं मुच्छ खींचे ।
मुने [illegible] के बोल गाधेय सोऊ, दई नेन की सैन[31] पै वीर दोऊ ॥३९६

१ ध्वजा । २ ध्वान = ध्वनि । ३ वाणी, स्वर । ४ कोकिला = कोयल । ५ गायिनी = गाने वाली । ६ बारनारी = वेश्या । ७ विदेह = जनक । ८ योद्धा । ९ दीर्घ = बड़े । १० [illegible] = ऊँचे, ऊपर । ११ चाप = धनुष । १२ शूलपाणि = शिव । १३ [illegible] = नीचे । १४ [illegible] । १५ [illegible] । १६ [illegible] = डोरी । १७ मिथिलानाथ = [illegible] । १८ [illegible] । १९ श्रोणी = कमर । २० शीर्ष = सिर । २१ [illegible] । २२ [illegible] । २३ [illegible] । २४ [illegible] । २५ [illegible] । २६ [illegible] । २७ [illegible] । २८ [illegible] । २९ [illegible] । ३० [illegible] । ३१ संकेत ।

ऊठे राम विक्रांत बाहु-अजाँना[1], दीयैं चाँप की ओर कां सिघड़ाना।
गहै लस्तकं[2] भाग को मुष्ट[3] गाढी, चिला ऐंच कै सिंजनी[4] सीस चाढी ॥३९७
तुट्यौ सिंभु-कौडंड भौ तीन टुक्के, धरा धुज्जकै सेस के सीस धुक्के।
परयौ जोर सौं सोर कौ घोर पूरौ, हल्यौ ठौर सां सिंधु सांतूँ हिलोरौ ॥३९८
मुरै दिक्करी[5] चिक्करै चीस मारे, अटे ध्यांन कै ईस नैंना उघारै।
रही गाँन रूक्कै चुकी ताल रंभा, उठे चौंक सूत्राँन[6] बाढ्यौ अचंभा ॥३९९
डुलै सैल के श्रंग लीनी दरारैं, परयौ लंक कौ नाथ बांहे पसारैं।
दसूँ—आंननं[7] म्लांन ह्वै लाग धूरौ[8], इहीं बेर कौ आद ऊगौ अँकूरौ ॥४००
खिसे और राजाँन कै पांन खूटे, ऊठे मंच तैं खंच चाले अकूटे।
सबै धिक्रती[9] निक्रती[10] कै सिधाये, बिकुर्वांन[11] राघौ[12] करीरं[13] बधाये ॥४०१
दसूँ हीं दिसा सुंदरी पुस्प डारैं, अली रांनीयाँ सीस मुक्ता ऊवारैं।
करैं सब्ध जै लुब्ध[14] आनंदकारी, बरखूखे अवग्राह में जाँन वारी ॥४०२
ग्रीया पान लैकं सिया पुस्पमाला, चली रांम के कंठ डारी बिसाला।
नमे भूप गाधेय के पाय लागौ, रिषी-राज लाये भले संग राघौ ॥४०३
प्रतज्ञा रही मोर तोही पसावं, भली रीत जान्यौ कृपा चीत-भावं।
पती-औध कौं कुंकमं-लेख-पत्री[15], मुनीराज सौं मंत्र लै बोल मंत्री ॥४०४
लिखाई सोई दूत दीनी सु लीनी, भलो रीत बातै कही स्नेह-भीनी।
बड़े बाज[16] कै राज देहौ बधाई, पिनाकी धनुर्तोरि कै जीत पाई ॥४०५
प्रतज्ञा रही मोर कीनौ पवारौ, सुनैहौ सीया व्याह कौ तत्व सारौ।
कनीयात है ग्रेह मो तीन कन्या, वही रावरे पुत्र कौं देह अंन्या ॥४०६
क्रतू-काज में रावरे द्वै कुमारा, इहीं कारनै थंभ रखे अवारा।
बने दोय कै संग सज्जै बराती, पधारै कहै देंहगे एह पाती[17] ॥४०७
सतानंद कौं पूंछ बैदेह सारी, बिदा दूत कीनौं सुबेला[18] बिचारी।
बिदा दूत ह्वैकै चलौ औध बाटी, घनै बेग सौं लाँघ कै नाल घाटी ॥४०८

१ आजानबाहु = घुटनों तक भुजाओं वाले। २ धनुष का मुट्ठी का भाग। ३ मुष्टि = मुट्ठी। ४ प्रत्यंचा, डोरी। ५ दिग्गज, दिक्पाल। ६ सौत्रामणि इन्द्र, देव। ७ दशानन = रावण। ८ धूलि = मिट्टी। ९ धिक्कृति = धिक्कार। १० निष्कृति = असफल, बदला। ११ हर्षध्वनि। १२ राघव = राम। १३ बांस, कलश। १४ लुब्ध = लुभावने। १५ आमंत्रणपत्रिका। १६ शीघ्र। १७ पत्री। १८ सुवेला = शुभमुहूर्त।

अजोध्यापुरी जाय देखी अनूंपं, भजै दासरथं प्रजा श्रेष्ट भूपं।
गयौ राज के द्वार पै दूत ज्ञाता, समै जाँन राजाँन ऊधर्स[1] साता ॥४०९
सबै रीत साँ राँम दीनौं संदेसा, वधाई दई भेज ढंडी बिसेसा।
मुखी मैथलाधीस को दूत मैं हूँ, पती-औध अज्ञा मिलै दर्स पैहूँ ॥४१०
सुन्यौ राँम के नाँम कौं भूप स्राँनं, थितं आप बोलाय लीने सुथाँनं।
करी भेट नौंछावरं भूप केरी, वधाई दई राँम को ताहि बेरी ॥४११
द्रुतं मैथलाधीस कौ पत्र दीनौ, ललाँमं[2] लखे भूपनै हात लीनौ।
वड़े भूप औछाह[3] के ताहि बाँच्यौ, [illegible] मैथलाधीस सौं नेह राच्यौ ॥४१२
सपुत्रं[4] सुनी राँम की कीत सारी, बढ्यौ नैन साँ ऐंन[5] आनंद-वारी।
वृती वेस सुद्धांत[6] भेजी वधाई, सुनी राँम की मात सोभा सवाई ॥४१३
महाँमोद साँ बोल कै राज-मंत्री, पढ़ाई सबै मैथलाधीस पत्री।
प्रभा औध के ईस की यौं प्रकासी, रजे पूर्नमाँ[7] चंद ज्यौं तोय-रासी[8] ॥४१४
बिजोगी सुतं राँम भागौ[9] बखेरौ, ऊदै[10] भाँन ज्यौं नैन त्याग्यौ अँधेरौ।
सुथाँनं तबै दूत डेरा सिधायौ, छितीनाथ कौ ग्रेह आनंद छायौ ॥४१५
तिहीं जाँन[11] की हौन लागी तयारी, सजी हैदलं[12] पैदलं सैन सारी।
त्रसै सारका तूर[13] बोले त्रहक्का, ढमंके वड़ी नौवतै बाज ढक्का[14] ॥४१६
फबै फील[15] पै ढ़ोल नेजा[16] फरक्कै, धुजा औ पताका मिलैं व्योम[17] ढक्कै।
बने दुल्लहा भर्थ[18] सत्रुघ्न वेसा, निकासी करी जाँन की यौं नरेसा ॥४१७
गली मैथली भूप बाढ्यौ सुगर्वा, सजे बाहु दंतेय[19] मानों सुपर्वा[20]।
पिले दासरथी बराती प्रयाँनौं, मिले ऊफल्ले सात साँमंद्र माँनौ ॥४१८
मँड़े मग्ग में लग्ग केते मुकाँमा, धमंके धरा धूज पाताल धाँमाँ।
पती-औधकी मैथला द्रंग[21] पूगी, ऊदै-अद्र[22] पै जाँन कै भाँन ऊगी ॥४१९
ईतै भूप वैदेह आयौ अगोंनी, छिती तोयधारा मनौ बाढ छोंनी[23]।
अजोध्यापती साज आगंतु[24] आये, धकै चाल कै लोग ग्राँमीन धाये ॥४२०

---

१ ऊधर्ष=अधिक हर्ष। २ ललाम=सुन्दर। ३ उत्साह। ४ सुपुत्र=सपूत। ५ कीर्ति। ६ रनिवास। ७ पूर्णिमा। ८ समुद्र। ९ भाग्य। १० उदय। ११ बारात। १२ हयदल=अश्वसमूह। १३ तूर्य=शहनाई। १४ ढोल, डमरू। १५ हाथी। १६ निशान, ध्वजा। १७ आकाश। १८ भरत। १९ इन्द्र, ऐरावत। २० देव। २१ नगर। २२ उदयाद्रि, उदयाचल। २३ क्षोणी=पृथ्वी। २४ आगन्तुक=अतिथि, मेहमान।

सुपंथा[1] दुबाजू[2] सपेखं सवारी, पुरी मैथला जाँन बाँहै पसारी।
ऊभै ओर तै भेंट काजं ऊँमाहे[3], ऊभै ओर हूतं उभै भूप आये ॥४२१
पहै बाँह सौ पंचसाखा[4] पलेटै, भलो भांत सौं अंक[5] तै अंक भेंटै।
कथा पूँछ कै सूचकं[6] क्षेमकारी, ऊभै भूप नौंछावरं हूँ ऊतारी ॥४२२
ऊभै पुत्र गाधेय कै संग आये, पितू औध-के-ईस के लाग पाये।
ऊभै पुत्र देखे नृपं आस्य[7] ओरा, चितै पूनंमा-चंद जैसे चकोरा ॥४२३
लला बोलकै बोल छाती लगाये, लुट्यौ द्रव्य ज्यौं द्रम्य[8] के हाथ लाये।
नरेन्दं भलो भाँत भेंटे मुनिंद्रं, महामोद कै बंद पादारविंद्रं[9] ॥४२४
कह्यौ अंजुली[10] जोर कै सिद्ध काजा, रिषी-राज ही लाज बैदेह-राजा।
तुट्यौ ईस-कोडंड कारून्य[11] तेरी, ऋतु-काज बाढ़ी प्रभा राँम केरी ॥४२५
मुनीराजं बैदेह सौं नेह मंड्यौ, खत्रीआँन कौ जाँन कै माँन खंड्यौ।
रिखी वाँन ऐसी सुनी दासरथं, सुनौ पुन्य है रावरौ पुत्र सथं ॥४२६
महाँलक्षमी मैथली[12] जोग-माया, रँमाँनाथ औतार है राँम-राया।
जुरी दंपती[13] जाहि तै चाहि जोरी, महावाहु जाँनो कही सत्य मोरी ॥४२७
ईहैं बोल गाधेय दीनी असीसै, तितै चाल आये सवारी तसी सै।
दिवाये पती-औध कै बाग डेरा, घनी रीत औछाह कीनौ घनेरा ॥४२८
बराती केऊ आय प्रासाद[14] बीचै, निरे अैन[15] का केन[16] का छाय नीचै।
पसारी कहूँ ऐच कै कंड-पट्टी,[17] ऊरधं तनी बीच ऊल्लोच[18] अट्टी ॥४२९
ब्रुकूलं दरी रेसमी के दुलीचा[19], बिछे रल्लकं पल्लक[20] तल्प[21] बीचा।
बने केक बेत्रासनं[22] बेस वाँना, तने रेसमी डोर कै जोर ताँना ॥४३०
जथाँ-जोग के आसनं दीध जाँनी, धनी बिछुरी[23] आद नीकै धराँनी।
निरे निर्मलं नीर-बंधे निपाँना[24], थटे स्वछ आधार के वृछ-थाँना ॥४३१
बसाई सुथाँनं अनूपं बराता, हले सीख लै हेत सौं जोर हाथा।
पधारे तबै मैथलाधीस पौरी, करै व्याह को चाहि च्यारू किसोरी ॥४३२

१ मार्ग, सड़क। २ दोनों ओर। ३ उमङ्ग = उत्साह। ४ पञ्चशाख = हाथ। ५ छाती। ६ सूचक, चिह्न। ७ आस्य = मुख। ८ द्रव्यी = धनी। ९ पादारविन्द = चरणकमल। १० अञ्जलि = कर। ११ कारुण्य = दयालुता। १२ जानकी। १३ पति-पत्नी। १४ राजमहल। १५ अयन = स्थान। १६ तम्बू। १७ कनात। १८ चाँदनी। १९ गलीचा। २० पर्यंक = पलङ्ग। २१ बिछायत। २२ बेत के आसन। २३ बाजौटी। २४ निपान = कुण्ड, प्याऊ।

पुरोधा[1] सतानंद मंत्री प्रवीना, कृपा-पातहू[2] एकठे भूप कीना।
सुता मोर च्याहूँ चहूँ दासरथी, पुजैहीं सबै जायकै लग्न-पती[3] ॥४३३
जुरे बिप्र कै बेदीये[4] बृंद जोसी, चितै कै छतै चाह आयाचितोसी[5]।
सीयाराम कै नाम कूँ लेख सौंनौ, ज्युहीं ऊर्मला[6] लछनं नाम जाँनौ ॥४३४
कुसंध्वज्ज-भ्राता लघु मोर कंन्या, ईह भर्थ कौं माँड़वी[7] देहु अंन्या।
स्रुतीकीरती[8] व्याह सत्रुघ्न संघा, पिछाँनौ भली रीत लेखौ प्रसंगा ॥४३५
कह्यौ भूप त्यूहीं सतानंद कीनौ, लिखै कुंकमी-पत्रका तंत्र लीनौ।
समालंभनं[9] साथ साँमान सज्जे, जरीतार पाटंबरं[10] रंम्य रज्जे ॥४३६
अलंकार चाँमीकरं[11] रत्न आला[12], मनी-गूँफ मुक्ता-लता पुस्पमाला।
धरे स्वर्न दुबर्न[13] नीके घनेरा, करे त्यार पुंगीफलं[14] नालकेरा[15] ॥४३७
दुकूलं[16] जरी भूल कै प्रष्ट[17]डारे, सजे बाज[18] मातंग[19]आभर्न[20]सारे।
भड़े थार औछार मेवा मिठाई, लये लाजनं[21] चूर्न औवर्न लाई ॥४३८
सतानंद चाले सबै लै समाजा, बजे दुंदभी ढ़ोल आनंद-बाजा।
नचै गीत गावै सखी बारनारी, थितं सीस लीनै घने स्वर्न थारी ॥४३९
बढ़े राज के द्वार बाजार बाटी[22], पुरोधा प्रबीनूं सबै बेद-पाटी[23]।
ललामं गये पत्तनं पार लंघे, ऊछाहं जुतै जांन डेरा ऊमंगे ॥४४०
धुरा[24]के त्वरा[25]चाल जंघाल[26] धाये, जथा दासरथं अमात्यं[27]जनाये।
समालंभनं लेय साथे समाँना, पुरोधा सतानंद आवे प्रधाँना ॥४४१

दोहा

मिल मंत्री बासष्ट मिल, बाँमदेव जावाल।
मुनी पुन विस्वामित्र मिल, भाखी कथा भुवाल[28] ॥४४२
जनकराज जामात कौं, करित तिलक-सतकार।
सतानंद प्रोहित सचिव[29], आवत राज ऊदार ॥४४३
जव राजा वासिष्ट जुत, मंत्री आद मिलाय।
कही लेहु सतकार कर, विध-वत वेद बुलाय ॥४४४

---

१ पुरोहित। २ कृपापात्र। ३ पत्री। ४ वैदिक। ५ नेगदार। ६ उर्मिला। ७ माण्डवी। ८ श्रुतकीर्ति। ९ समारम्भण = तिलक। १० रेशमीवस्त्र। ११ स्वर्ण। १२ श्रेष्ठ। १३ चांदी। १४ सुपारी। १५ नारियल। १६ दुपट्टे। १७ पृष्ठ = पीठ। १८ वाजि = घोड़े। १९ हाथी। २० आभरण = गहने। २१ लाजा = चांवल। २२ बाट = मार्ग। २३ पाठी। २४ आगे। २५ जल्दी। २६ हलकारे। २७ मंत्री। २८ भूपाल। २९ मंत्री।

द्वज गुरू प्रोहित हुकम दिय, कीय मिल सचवन कार ।
च्यारहु दुलहा ग्रेह चिव[1], बैठाये दरबार ॥४४५

जाँनी माँढी प्रीत-जुत, मिले परसपर मोद ।
लेख-लग्न सतकार लीय, बिधवत बेद बिनोद ॥४४६

सतानंद सनमान कर, मंत्रिन कर सनमाँन ।
नेगी बिप्रन आद निज, दीय वर अगनत[2] दाँन ॥४४७

सतानंद बासष्ठ सुभ, दिवस महूरत[3] देख ।
कीय निसचय भाँमरिकरन,[4] बेला आद बिसेख ॥४४८

सतानंद लै सीख कौं, गये जनासय[5] ग्रेह ।
दुहु दिस बाजै दुंदभी, उछ्छव व्याह अछेह ॥४४९

छंद नाराच

वसिष्ट बाँमदेव बेद भाव कौं बिचारकै ।
चढ़ाय बींद[6] चौकसाँ चढ़ाय तेल चारुकै ।
गहक्क गेय गायनी अहक्क डक्क त्रंबका ।
मृदंग अंक मडकै ढंमक्क सारका ढका ॥४५०

नहाय लाय नीर कै मिलाय यक्ष कर्दमं[7] ।
अँगोच पौंच ऊतमं कराय कै परोक्रमं ।
जनाय चक्रजीवकं[8] बनायकै बिनायकं[9] ।
मनाय माय मोद सौं सिवाय देव साहिकं ॥४५१

बसष्ट बाँमदेव आद पुज्य कै पुरोहितं ।
असीस लै नमाय सीस बिप्र दाँन दै बितं ।
कनेष्ट[10] जेष्ट[11] बै किसोर नंद औधनाथ के ।
कला चडोर कंकना[12] सुधार कै सुहात के ॥४५२

जराय मौर[13] जोर कै ऊतार वार आरती ।
बधाय स्वस्ति-बाचनं ऊचार कै अनारती[14] ।
चले ऊमंग रामचंद्र तीन भ्रात संजुतं ।
पदांबुजं नमे पिता सुधार भेट संम्मतं ॥४५३

---

१ छवि, सुन्दर । २ अपरिमित । ३ मुहूर्त्त । ४ भमरीनख = विवाह । ५ जनाश्रय = जनवासा, मण्डप । ६ बर, दूल्हा । ७ छारछबीला आदि सुगन्धित वस्तुएं, धूप । ८ राजकुमारों । ९ गणपति । १० कनिष्ठ = छोटा । ११ ज्येष्ठ = बड़ा । १२ कंकणडोरा । १३ मोड़, मुकुट । १४ निरन्तर ।

बरांग[1] सूंघ बारबार लाय अंक नंद कौं।
अनंद पाय औधपं चितं चकोर चंद कौं।
बिलोक च्यार बाँधवं दुती-निकेत[2] दुल्लहा।
पिता प्रसंग पेम सौं ऊमंग मोद उल्लहा ॥४५४
ठई सु ठौर-ठौर पै तई बरात त्यारीयें।
सहेत भूप सथ्थ कै अनूंप आसवारीयें।
सतंभ[3] बंध छोरकै बिस्रंभ कै महाबतं।
कपोल कुंभ बात कुंभ रंग हस्त[4]-संजुतं ॥४५५
रचाय रेख नागरक्त[5] आल[6] कौर-बिंदु की।
जंगाल घोर जत्र पै बिचत्र चित्र बिंदुकी।
बरांग स्यांम बीच पै सुरंग पीत सोहनी।
मरीच[7] भाँन मान अभ्र संघ ज्यौं अरोहनी ॥४५६
ऊछाल-दंत[8] ऊजरे जराव बंगरी जरी।
सँवार तार सोवनी[9] सुधार मंड कै सिरी[10]।
सरीर रंज मंज संभ्र अंजन गिरंद से।
असीस बोल ऊच्चकै[11] कसीस बंधने[12] कसे ॥४५७
ऊरभ्र[13] प्रष्ट अंबर[14] लसंत पीत लालरी।
जरी सुतंत[15] जालका[16] झुलाय रत्न-झालरी[17]।
विचत्र अंब-वारीयै[18] हवंद्द चित्र[19] हेम[20] के।
प्रकास-पुंज्ज पेखीयै खुले निसाँन खेमके ॥४५८
मयंद[21] मंद मंद मिश्र मंजु जात के मृगा[22]।
दलं दलंद कालदेय[23] ध्वांन कै धगा-धगा।
प्रभिन्न[24] बाल पोत[25] केक[26] बख्क कल्भ[27] बेसके।
ऊताल चाल उग्र के दंताल[28] देस-देस के ॥४५९

---

१ वराङ्ग=शिर। २ द्युतिनिकेत=शोभा के धाम, अतिसुन्दर। ३ स्तम्भ=थम्भा। ४ शुण्डा, सूंड। ५ सिन्दूर। ६ हरताल। ७ मरीचि=किरण। ८ ऊंचे दांत। ९ सोवणी। १० श्री=शोभा, श्रीचिह्न। ११ उच्चकै=ऊंचे। १२ शीर्षबंध। १३ पनात, उरपर्यन्त। १४ वस्त्र। १५ सुतन्तु=तागे। १६ जालिका=जाली। १७ झालरी। १८ अम्बाडी। १९ हवदा। २० सोना, स्वर्ण। २१ मातङ्ग=हाथी। २२ पशु। २३ मृत्युप्रद। २४ विचित्र। २५ बच्चा। २६ मयूर=मोर। २७ कलभ= हाथी का बच्चा। २८ दन्ती=हाथी।

सिलैट स्यांम सिंघली गड़ा चिड़ा मुरँग के।
बटोल मल्लवार के मतंगहू मृघांग के।
समंदहू समीप के मदंध मंदरास के।
प्रचंड पिंड पूरबी धनासरी धरासुके ॥४६०

खतग बिप्र खत्रीयं बयस्य सुद्र बर्न के।
कलाप्क[1] बंध कंध सौं करीन मूल कर्न[2] के।
बिसास वप्प बोलकै कुलाँट अप्प लै कपं।
कपोल कुँभ थप्पकै हले सु बैठ हस्तपं ॥४६१

बिछोर वार बंध कै सुसैल सार[3]-श्रंखलं।
उतंग[4] श्रंग ऊठके चले मनौ हिमांचलं।
घमंक घोर घंट की झमंक श्रंक झल्लरा।
खनक चंद्र-श्रंदुकं[5] धमंक पाय कै धरा ॥४६२

डमक डाक देत पै चमंक आप छाँह कौं।
ससंक[6] जात अंकुसं रमंक निठ[7] राह कौं।
भरंत श्रट्ट भटीयं झरंत डाँन निझरं[8]।
भनंक पंख भ्रामरं झरंत भीर सम्भरं ॥४६३

पलक्क[9] ईख[10] मल्लकं[11] खडग्ग[12] रूप खंडनं[13]।
चरंन गोल लोलचाल[14] मंदहाल[15] मंडनं।
गुलाब फूल गेंद से ललाँम कंज-लोचनं[16]।
करंन चारु[17] कंप्र[18] साग-पत्र से सुरोचनं ॥४६४

अनूप राज-बाझ[19] श्राद हेर भूप हाजरी।
घुमंड साँमनी[20] घटा ऊमंड जाँन ऊल्लरी।
अँनंद कौं ऊपायकै नरंद्र पाय सासनं[21]।
सत्रुघ्न भर्थ लछनं अरोह[22] राज-श्रासनं ॥४६५

चढ़े गजिंद्र रामचंद्र स्यांम रूप सुंदरं।
मुँनिद्र-बिन्द्र[23] मेल कै अरोह औध इंदरं[24]।

---

१ कलापक=कलाया। २ कर्न=कान। ३ लोहा। ४ उतुङ्ग=ऊँचे। ५ सोने की सांकल। ६ भयभीत। ७ कठिनाई से। ८ निर्झर=झरना। ९ पलकदंता। १० इक्षु=सांठा। ११ दांत। १२ खड्गदंता। १३ मुसलदंता। १४ तेज चलने वाला। १५ धीरे चलने वाला। १६ कमल के समान नेत्र। १७ सुन्दर। १८ कम्र=कोमल। १९ राजा की सवारी के योग्य। २० श्रावणी। २१ शासन=श्राज्ञा। २२ श्रारोह=चढ़कर। २३ वृन्द। २४ अवधेन्द्र।

सुभट्ट ठट्ट संजुरे गरट्ट मंजु गात के।
सुहौद[1] फूल केसरं सजे बरात साथ के ॥४६६
तुरंग तंग ताँन कै सुरंग रंग सो सनी।
हरी-ऊरभ्र रोहितं[2] सुवर्न तारहू सनी।
पिसंग[3] ऐत[4] पीत के जराव जुक्त जीन तैं।
ऊमंग अश्ववारहू[5] अपार त्यार ह्वै ईतें ॥४६७
कुसा[6] कसीस बग्ग[7] के उदग्ग आव जाव कै।
प्रचंड मंड पिंड के बयंड वेग बायु कै।
कुरंग[8] डाँन कूँदते उड़ाँन लै छिकै अटा।
ऊलट्ट औ पलट्ट आद वाद के नटा-वटा[9] ॥४६८
लसैं अयाल लाल माल जाल ग्रंथनी जुटी।
फलंग फेर फाल में मनौ गुलाल की मुठी।
विसाल भाल पुच्छ बाल रोंम-गुच्छ से रजैं।
धरैं सुचाल धोरतं[10] धरा पताल लौं धुजें ॥४६९
पहै न थाह पाँनपं ऊछाह सौं बहै ऊड़ी।
लहै सुराह लाह कै गहै सुडोर ज्यौं गुड़ी[11]।
वजंत जेम बांसुरी रवत प्रोथ-रंधरं।
करंन्न फाँक केतकी कवाँन जाँन कंधरं[12] ॥४७०
फिराव चक्र ज्यों फिरै बलोत सूत्र-वेष्टनं।
धुरा सु पंच धारहू त्वरा तुखार तिष्टनं।
बिसार[13] धार धार ज्यौं गहंत राह गाह कै।
घलंत वार घेर में चलंत चित्त चाह कै ॥४७१
झरंत रोम कोमलं तुला[14] सरोज-पात[15] कै।
मंडूक[16] नैंन टिटभं[17] गरूर पूर गात के।
बिसाल वत्म[18]विष्टरं नली सुघाट निस्तुला[19]।
भिरंत सुँम्म भुँम्म सौं भरंत दुँग की झला ॥४७२

१ कसैला। २ लाल। ३ पिशङ्ग=नारङ्गी रङ्ग। ४ मिश्रित। ५ अश्वारोही।
६ कुश। ७ वल्ग=लगाम। ८ हरिण। ९ नटपुत्र। १ धोरत चाल। ११ पतंग
१२ ग्रीवा, गर्दन। १३ मछली। १४ समान। १५ कमलपत्र। १६ मेंढक।
१७ टिट्टिभु=टींटोडी। १८ वर्त्म, वक्ष=मार्ग, छाती। १९ गोल।

बिसुद्ध सुंम्म लुंम्म बाल आँनन[1] ह्रिदावली।
सुजोज्ञ-दाय सर्बदा मनोज्ञ[2] अष्ट मंगलो।
सरीर श्वेत सोभनं कितेक अश्व कर्करं।
ललाँम पीत पिंड लाल पिंगलं[3] परापरं ॥४७३
सुपेत पिंग संग के खुँगाह रंग खैंगहू[4]।
सिराह दुग्ध-बर्न[5] स्याँम रंग के सुँगाहहू।
कीयाह लाल बर्न के निकाय नील नीलकं।
त्रनाह बर्न[6] के त्रपूह है हरी जु पीलकं ॥४७४
सपेत बाल हस्तकंध[7] बाल के सुपेत के।
त्रपूह अंग ताहि कौ बुलाह रंग केब के।
वलक्ष [जास][8]बिग्रहं[9] मुकाँम जंघ मेचकं[10]।
ऊराह अंग के अनूंप अश्वहू असेसकं[11] ॥४७५
बिचार संकुकर्न[12] बर्न केसरूह कंक है।
सपेत लाल मिस्रतं[13] पिछाँन पाटलं पहै।
अतल्प[14] पीत अंग के बिसेस स्याँम वक्षनं।
कुलाह रंग घोटकं[15] लखाय जाहि लक्षनं ॥४७६
त्रनाह लाल पीत के कहंत ऊवकनाहकं।
निगर्न[16] कर्न[17]स्याँम बर्न[18]लाल एह लायकं।
सरीर रक्त-सधकं[19] सुचंग रंग सोनकं।
हरीत[20] पीत हालकं गहंत पौंन गौंनकं ॥४७७
सपेत काच बर्न[21] सो पिछाँन पिंगुलं पखै।
हलाहलं सुरंग हेर एत रंग के अखै।
कंबोज देस कासमीर बापु[22] के बना पुजा।
बियंड[23] केक बाह्लीक पारसीक नीपजा ॥४७८
प्रचंड गंग-पार के बिसाल अंग बंग के।
मुरंड मारवार के सुबीर सिंधु ढंग के।

---

१ मुख। २ सुन्दर। ३ पीला। ४ घोड़ा। ५ स्वेत। ६ मू०प्र० बर्रन। ७ अगला पैर। ८ मू० प्र० अस्पष्ट है। ९ शरीर। १० स्याम। ११ अनेक। १२ गधा। १३ मिश्रित। १४ अत्यल्प = किंचित्। १५ घोड़ा। १६ गरदन। १७ कान। १८ वर्ण। १९ लाल-कमल। २० हरा। २१ स्वेत। २२ बपु = शरीर। २३ घोड़ा।

खतंग खेत खाखरं अगर्तहू तिलंग के।
केकाँन साल कच्छ के फवंत के फिरंग के ॥४७६
हरयाँन कंधहार के डहाल ऊंड्र द्रावरे।
जुरे सु जन्य जिन्नती उछाह साँ ऊतावरे।
धमंक डंक ध्वाँनकं अनेक आँनकं[१] अगं।
तनंक तंत्र[२] ताँनकं भनक सिजतं[३] भगं ॥४८०
महाँन मंगलीक गाँन ताँन की तरग में।
रचंत रास बारनार[४] रीज[५] राग रंग में।
चली बरात रामचन्द्र मेल भ्रात मंडपं।
सतंग बैठ मोद साँ ऊमँग संग औधपं[६] ॥४८१
अरोह कै बिमाँन आसमाँन देव आयकै।
अवाज कै अनंद वाज दुंदभी[७] बजाय कै।
गिरा[८] सवाँर[९] गायनी ऊचार गाँन अच्छरी[१०]।
सीया बिवाह संचरी चवंत राँम चर्चरी[११] ॥४८२
बरात के ऊतार साँ पधार नग्र गोपुर[१२]।
बजार की बहार चारु[१३] वार पार चत्वरं[१४]।
बिसाल लाल लीलमं बँधी सुमाल बंधनं।
कपूर कासमीर कीज चीज घोर चंदनं ॥४८३
सुरंग येत[१५] पीतनं निकेत[१६] पै निकेतनं[१७]।
जरी सु तार जोर पौर पौर के प्रवेसनं[१८]।
कपाट[१९] आट[२०] ठाट के सुघाट तोरनं[२१] सवै।
पिसंग[२२] रंग पीत फूल मालका सुही[२३] फवै ॥४८४
बिनर्द[२४] पै बिनर्द साल जंभिया घनी सनी।
पवित्र चित्र पुत्तरी ठवंत के बनी ठनी।
अलंद[२५] हु अनूप ओप अग्र में ऊदंबरं[२६]।
करै बिचित्र कोरनी सवार कै सतंभरं[२७] ॥४८५

---

१ नगाड़े। २ तांत्रिक। ३ आभूषणों का बाजा। ४ वेश्या। ५ रीझ = लीन। ६ राजा दशरथ। ७ नगाड़े। ८ बोली = स्वर। ९ संभालकर। १० अप्सरा। ११ स्तुति। १२ द्वार। १३ सुंदर = श्रेष्ठ। १४ चौक। १५ मिश्रित। १६ घर। १७ ध्वजा। १८ प्रवेश-द्वार। १९ किवाड। २० अट्ट = दालान। २१ मुख्य-द्वार। २२ नारंगी रंग। २३ लाल। २४ चौकी। २५ बैठक। २६ देहली। २७ स्तंभ।

पुनीत धर्म पर्मह्न समान हर्म[1] सुंदरं।
अखर्ब-खर्ब[2] ऊद्धरे मनौ सुपर्ब[3] मंदिरं[4]।
बिसाल सैल-माल बेस सोह चद्र-सालका[5]।
पुरंध्र पट्टलं[6] समीप जाल-रंध्र[7] जालका॥४८६
सुहाग धाम सुभ्र चंद्र चंद्रका[8] किधौ छुटी[9]।
ऊतंग स्त्रंग अद्रिराट[10] आस्वनी[11] घटा उठी।
सुगंध तेल सीच अद्ध ऊद्ध पै अटालका।
जगी सुजोत जोनसी मनौ दीपमालका॥४८७
बिदेह नग्र बींच ग्रेह ग्रेह में गली गली।
प्रपंच हू प्रकास, पुंज, मंजुलं झलामली।
जहां तहां महाजनं सरीर दिव्य संजुरे।
ऊमाँह एक एक कै भरंत भीर उम्भरे॥४८८
सुकंज-आँख[12] सुंदरी गिरा सुगान गायकै।
झरोख झाँक झाँक मंजु घोष[13] हू मिलायकै।
सीया बिबाह राँम संग राग-रंग की रली।
लली कुरंग-लोचना[14] ऊमंग अंग उज्जली[15]॥४८९
बिलोक च्यार बंधवं बिचित्र अंग बेख सौं।
सरूप गौर स्यामलं अनूंप एक एक सौं।
प्रबेक रामचंद्र पेख लेख जन्म-लाह[16] कौं।
ऊमाह कै अनंतरं बढ़ै ऊछाह ब्याह कौं॥४९०
सँवार मौर सोरखं[17] जराव मुक्त[18] जंजरचौ।
सरोज नील सीस जाँन अब्ज-बंधु[19] ऊतरचौ।
बिसाल भाल बीच लाल बिंदु मुक्त लाजनं[20]।
ऊदोत अष्टमी सबक्रभं[21] समाजनं।

१ रनवास। २ छोटे-बड़े। ३ देवगण। ४ मू० प्र० मंदरं। ५ अनेक मंजिलों वाले मकान। ६ छज्जे। ७ छेद। ८ चाँदनी। ९ छिटकी हुई है। १० पर्वतराज हिमालय। ११ क्वार की, आश्विन मास की। १२ कमल-नयनी। १३ स्वर। १४ हिरन की आंखों के समान नेत्रवाली = मृगनयनी। १५ उज्वल। १६ जन्म-लाभ। १७ शीर्ष = मस्तक। १८ मोती। १९ सूर्य। २० अक्षत। २१ मंगल।

रंचंत बाल रम्प(म्य)कर्क-राल[1] स्याँम रंग के ।
सुगंध श्रास संग में भ्रमंत भौर भृंग के ॥४६१[2]
अनूप बूँह[3] आवली करंत ऊभ्र कोयनी ।
अली सँवाँर ऊपरा पसार पंख पोयनी ।
ऊधार च्यारु अंबकं सरोज रक्त संधकं ।
अनदकंद ईछ्छनं[4] सीया प्रोया समंधकं ॥४६२
निकाय रूप नासका प्रकास पुंज दीपकं ।
बिलोक नैन विश्व के बने घने बनीपकं ।
सुरंग रंग सुँदरम प्रबाल[5] ओठ पेखीयै ।
कठोर वज्र की कनी दमंक दंत देखीयै ॥४६३
मुखारबिंद मंद-हास चंद्रका सुचंद्र की ।
प्रकास आसपास पुँज साँझ भोर संध[6] की ।
कपोल गोल बीच कर्न लाल छाँह कुंडलं ।
जलं जमी जनाय ज्यां मरीच[7] चंद्र मंडलं ॥४६४
कपोत[8] कंठ इद्रचंद[9] पेखीयै प्रलंबका[10] ।
जराव जुक्त मुक्तजं[11], लघू कितीक लंबका ।
सकंध संघ केसरी भुजा अजाँन[12] सम्भरं[13] ।
अमोल बंध अंगदं अनूप रत्न ऊम्भरं ॥४६५
सुवर्न रत्न संजुरे कला चकासु[14] कंकनं ।
मृनाल[15] घेर मंडलं प्रभा मनौं प्रदोतनं[16] ।
विसाल लाल वेस पंचसाख[17] जांन कपंजं ।
अनुंप रूप अंगुलो कली सु हेम-पुस्पजं[18] ॥४६६
अमोल गोल ऊर्मका[19] सुवर्ण हू मनी मनी ।
ऊजास कांम-अंकुसं[20] किधुं वरारका[21] कनी ।

---

१ केश-पाटी । २ मू० प्र०—यह छंद छः चरणों का है । ३ भौंहे । ४ देखना । ५ मूंगा । ६ संध्या । ७ किरण । ८ कबूतर । ९ लम्बा हार । १० कंठियां । ११ मोती । १२ आजानु = घुटनों तक । १३ भुजबंद । १४ चमकते हुए, चक्रवत् । १५ कमल-नाल । १६ सूर्य । १७ हाथ । १८ चंपक पुष्प । १९ अँगूठी । २० कामांकुश = नाखून । २१ हीरा ।

सपुष्ट रिष्ट[1] मुष्टका[2] बलिष्ट ओपमा बढ़ी।
सुबर्न कोस[3] संजुतं मनोज्ञ[4] रत्ननं मढ़ी ॥४६७
बकस्थलं[5] बिसाल दीप्त माल की दुगादुगी।
लसंत लाल लोलमं जराव की जगा-जगी।
गँभीर गर्भगार[6] तुंद-कूपका[7] अनूप त्यौं।
जमी-प्रवाह[8] भौंर ज्यूं सुभाँ निपाँन रूप त्यौं ॥४६८
कटी[9] सुच्याह केसरी[10] नितंब-भार निस्तुलं[11]।
करी-सुहस्त[12] कलभ केल संनिभा जु सस्थलं।
समान धर्म सुंदरं प्रभा अनूप पिंडुरी।
गंगेय[13] चर्न ग्रंथ[14] पै जराव स्रंखला जरी ॥४६९
सरोज पांव सुंदरं सकोमलं सुवाहनं।
विरंच वाँमदेव पर्म ध्याँन पूज्य पावनं।
रचाय बाहलीक[15] रंग अंग भीन अंबरं।
जने-जने जुहार लें बने-बने बिसंभरं ॥५००
प्रसिद्ध सिद्ध तां पहै न ओपमा अनंग[16] तैं।
लखे बिबर्न लोचनं प्रीया सीया प्रसंग तैं।
निहार कै निबेसनं प्रबेसनं[17] पधार कै।
प्रकार[18] क्षोम[19] पूरनं बने सकंध-वारकं[20] ॥५०१
बलक्ष[21] कंगुरावली सपक्ष[22] रक्षसं जुरी।
अगार पौर सोवनं भ्रंगार[23] दीप्त कंभरी।
घनालयं[24] घटा घुमंड मंड जाँन मिंदरं।
मढ़ी सुभाल मंगलीक सोह द्वार सुँदरं ॥५०२
बिदेहराज बिस्तरं अमात्य[25] और आद कै।
अनेक-पाट-अंबरं[26] पंड़े कमं मृजाद[27] कै।

---

१ तलवार। २ मूठ। ३ म्यान। ४ मनोहर। ५ छाती। ६ पेट। ७ नाभि। ८ यमुना। ९ कमर। १० सिंह। ११ गोल। १२ सूंड। १३ सोना। १४ चरणग्रंथि=टकना। १५ केसर। १६ कामदेव। १७ प्रवेश-द्वार। १८ प्राकार=कोट। १९ रेशमी वस्त्र। २० रनिवास के कमरे। २१ उज्वल, सफेद। २२ बराबर=समान। २३ कलश। २४ आकाश। २५ मंत्री=कर्मचारी। २६ पग-मंडा। २७ मर्यादा।

विदेह भूप बेख कै अनूंप भूप औधपं।
अमात्य बीर भीर आय ऊतरे अनेकपं[1] ॥५०३
हिले मिले पसार हाथ अंक भेट अंक सौं।
निछावरै[2] पसाव[3] नेग[4] राव होत रंक सौं।
अनंद कौ अधार कै अरोह सिंघ-आसनं।
अनूंप थान-इंद्रकं[5] सभा प्रचार सासनं ॥५०४
ठये सु ठौर-ठौर पै सुभट्ट-ठट्ट धीसखं[6]।
सुधा-पयोद[7] के समाँन मोद ऊझल्यौ मखं[8]।
बिदेह अंतबास[9] सिंघ-द्वार[10] राँम संचरे।
तहाँ सुबंद तोरनं अनेकपं सु ऊत्तरे ॥५०५
अनंद कंद ईछना[11] बिलोक च्यार बंधवं।
महाँन ध्वाँन[12] मंगलीक गाँन होत गंध्रवं।
बिदेह अंतबास में विचार कै बिनोद सौं।
बढ्यौ ऊछाह व्याह कौ महाँन चाह मोद सौं।५०६

दोहा

जिह घर जनमी ज्याँनकी, माया बेद मृजाद।
जनक द्वार ठाढ़े जहाँ, अज अबिनासी आद ॥५०७
जिह ध्यावत जोगिंद्र जन, सिव सनकादिक सेस ।
कुँभकार[13] बंधत कलस, महिमा धिन[14] मिथलेस ॥५०८
सुरग[15] निवासी देव सब, बन पुरबासी बेख।
मगन भये मिथला मिलन, द्रगँन राँम छिब[16] देख ॥५०९
सुर-तीय जेती संचरी, अंतहपुर आगार।
मिली जनक रनवास-मह, साँग[17] सुधार-सुधार ॥५१०
निरख-निरख दंपति नयन, परख राँम सीय प्रीत।
साबंत्री गावत सकल, गिरा[18] गौर[19] मिल गीत ॥५११

---

१ हाथी। २ न्योछावर। ३ अनुग्रह। ४ नेगियों का प्रतिफल। ५ सभास्थल। ६ मंत्री, सलाहकार। ७ अमृत=सागर। ८ यज्ञ। ९ रनिवास। १० मुख्यद्वार। ११ देखकर। १२ शब्द। १३ कुम्हार। १४ धन्य। १५ स्वर्ग। १६ छवि=शोभा। १७ वेश। १८ सरस्वती। १९ गौरी=पार्वती।

छंद त्रोटक

सहनाई मेल सजैश्वर कै, घन बाँनक आँनकहू घुरकै।
महला[1] केऊ भुंडन भुंड मिलै, भुक कोकल बैंनीय राग भिलै ॥५१२
भर कुंकुंम मंगल-भाजन को, लीय कंचन-थारीय लाजन की।
ध्रुव केतक पूरन कुंभ[2] धरै, मृदु पल्लव[3] भौंरन मौंर भरै ॥५१३
ललना बहुरै दध[4] दूब लीयै, अजुवाल झलामल आरतीयै।
जनकाधिप की महिषी[5] जहवाँ, सकुटंबनी[6] आय मिली सहवाँ ॥५१४
गुन-गाँन ऊचारत द्वार गली, चहूँ बींद[7] बधावँन काज चली।
इक तै इक देखत कौं ऊझकै, झमकात अलंकृत-भार झुकै ॥५१५
ऊछटै पट घूँघट-अंचर की, सुध भूल रही केऊ संचर[8] की।
अवलोकन काज सीयावर कौं, अवलं चत[9] चाह चढ़ी ऊर कौं ॥५१६
ऊमगी मन मंगल-गाँन अली, रघुनाथ सबंधन राग-रली।
दुति सोहत माँग सिंदूर दीयै, कुरु-बिंदु[10] की भाल में बिंदु कीयै ॥५१७
लँहगा सुही[11] पीतन सारी लगी, जर तारि किनारीय जोत जगी।
दमकै दुति बिग्रह[12] दाँमन[13] सी, कमनीय मनोभव-[14] काँमन[15] सी ॥५१८
जनु पूरन चंद-मयूख[16] जगीं, ऊरमी[17] सरता-पति[18] की ऊमगी।
कमनीय प्रभा कर-कंकन की, अनीयारीय[19] झंखन[20] अंखन की ॥५१९
मुसकानन आस्प[21] अमोलन की, तिन में छिव देत तमोलन[22] की।
कर कै परहास मिलैं किलकैं, मधुरी अधुराँन[23] चले मुलकैं ॥५२०
ठुमकैं धर पाव चलै ठटकै, ईक की ईक ओट लहै अटकै।
पनुहीं खग काँम मनौं परवा, झमकै पग जेहर जाँझरवा ॥५२१
मृदु चाल चलै तरवा मुरकै, धर माट मजीठ मनौ ढुरकै।
राय अंगन साँ बढ़कै रमनी[24], थित तोरन पौरन जाय ठनी ॥५२२

---

१ महिला=स्त्रियाँ। २ कलश। ३ पत्तों। ४ दही। ५ पटरानी। ६ उसी परिवार की स्त्रियाँ। ७ वर=दूल्हा। ८ शरीर। ९ चित्त। १० हिंगूल। ११ कसूमल रंग। १२ शरीर। १३ बिजली। १४ कामदेव। १५ कामिनी=रति, स्त्री। १६ चंद्र-किरण। १७ ऊर्मि=लहर। १८ समुद्र। १९ अनोखी। २० झाँकना। २१ आस्य=मुख। २२ तांबूल=पान। २३ अधरों। २४ रमणी=स्त्री।

बपु स्यामल गौर चहूँ बनरे[१], खितोनाथ बिदेह के द्वार खरे।
लख आँनन नैनन लाह[२] लयौ, भर आनंद सौं हीय हर्ष भयौ ॥५२३
तब भद्र-करीर[३] बधायत हो, सुभ सस्तु का[४] आरती कीन सही।
मिल आरती कीन झलामल की, भर मोतन थाल भलाभल की ॥५२४
जहाँ लौकिक वेदक नीत जिती, कर भद्र ही कारक रीत किती।
सतकार लह्यौ सुसरार सबै, कहनो कहि जावत ताहि कबै ॥५२५
गुरू प्रोहित सासन[५] लै गवनै, बिच अंगन मंडप छाय बनै।
थिर कंचन मानक थंभ[६] थपै, जगमग्ग जराय की जोत जुपै ॥५२६
कलसा तिह ऊपर कंचन के, सुभ घाट ढरे सोई संचन के।
लघु केक बिसाल लगी लहरैं, चिव[७] चंन्द्र नछत्रन की चहरैं ॥५२७
मृदु पल्लव अंब कदंब मढ़े, छद[८] चंदन जामुन चाह चढ़े।
बहु पंकज फूलन जालि बनी, तिह ऊपर बंदन-माँल तनी ॥५२८
तुचसार[९] हरी रंग ताहीय में, अत कीन खरे अंगनाईय[१०] में।
केऊ मंड[११] प्रकंडहु केलीय के, बर पत्रन वेलोय[१२] वेलीय के ॥५२९
सुभ सूचक रूप घने सरसैं, द्रग कौं सुख दायक जे दरसैं।
मिल पत्रनहू द्रुत मंजरीया, पुहपावलि लाल सु पिजरीया[१३] ॥५३०
रचना कीय तामह रत्नन की, जुर दीप्त साँ दीप्त जगी जिनकी।
कहूँ लीलँम[१४] लाल रु हीर-कनी, बहु बिद्रुम[१५] मोंतीय-माल बनी ॥५३१
जरी अंबर मध्य[१६] बितान जुरै, वढ ग्रंथनि जाल जहाँ बिथुरै।
कुरु-बिंद रु चंदन घोर करी, तल कुंकम कर्दम कीन तरी ॥५३२
सब सिंदल[१७] तेल फुलेल सिंची, रँमनीय बिचत्रन चित्र रची।
बिच बार अनूंप बिराजत है, लख काँम के मंदर लाजत है ॥५३३
ईम च्यारहु मंडप कीन ऊदै, जिन के प्रति द्वार पगार जु दै।
पुन सासन लै गुरू प्रोहित सौं, मध जाय ठये दुलहा मीत सौं ॥५३४
सिनगार कै दुल्लहनीं सबहीं, जुर संप्रति दंपत जोरि जिहीं।
समधी तरु सुस्क[१८] सँजोय सबै, जहाँ बिप्रन होंम प्रकास जबै ॥५३५

१ वर। २ लाभ। ३ कलश। ४ सास। ५ आज्ञा। ६ मंडप के स्तंभ। ७ सुन्दरता।
८ पत्र = पत्ते। ९ बांस। १० आंगन। ११ मंडप। १२ बेलों। १३ पीला।
१४ नीलम। १५ मूंगा। १६ मू० प्र० मध। १७ इत्र। १८ शुष्क = सूखा।

बिध बेद के मंत्रन सौं वहुरै, रव-मंगल-दायक जाहि ररै।
गहरै स्वर गायनि[1] गावत है, बहु दंपत नेह वढावत है ॥५३६
दुलहा छिव[2] देखत दुल्लहनी, घुमँड़ी सखोयाँ सरसात घनी।
सकुटंवनी देखत होय सुखी, मन मोद बिदेह लहै महिषी[3] ॥५३७
ऊदबाह[4] अनंत ऊछाहन सौं, निज बेद स्तुती निरबाहन सौं।
कर भाँवरै जाय विदेह कह्यौ, गुरू प्रोहित भूपहु संग गह्यौ ॥५३८
दुहिता दुहिता पति दोवन कं रग पुज्जन कीन लहै पन कौं।
अविनासीया रूप अनंत अखी, रज बंदत है अज[5] रुद्र रिखी ॥५३६
अवगाहत ध्याँन न आवत है, पग ग्रेह बिदेह पुजावत है।
अज ईस ज्युहीं सीय रूप अजा[6], गुन सारद[7] गावत है गिरजा ॥५४०
जोई ग्रेह विदेह-सुता जनमी, रुचता वय बालक ख्याल रमी।
सीय कौ परभाव गिनौ सगरौ कुल मात-पिता जु पबित्र करौ ॥५४१
सुत औध-के-नाथ के च्यार सही, दुहिता मिथलेसहु च्यार दही।
मुद मंगल गाँन कै याँन[8] मही, दुहिता दुहिता पत सोख दही ॥५४२
मिथलेस के भ्रात अमातन में, बढ़ आयेऊ साथ बरातन में।
लख नैनन सौं सुख-लाभ लीयौ, हरख्यौ अवधेस कौ देख हीयौ ॥५४३
वज आँनक भेर अवाज बढ़ी, चँहुँ दुल्लह की असवारी चढ़ी।
सुभ-बेलाय[9] होत सबेरन में, दुलहा ऊतरे चँहुँ डेरन में ॥५४४
पद वंद बसिष्ट पुरोहित के, अरू कौंसक[10] आद ऋषी ईतके।
संग लै दुज[11] बृंद सखा सिगरे, पती औध-पती सुत पाय परे ॥५४५
ऊर भेट ईतै सिर सूंघ अभै[12], सुत दोनोय भूप असीस सबै।
बहु बिप्रन कौं बगसे बित कौं, अरू मागध सूत अयाचित[13] कौं ॥५४६
गुनवंतँन गंध्रब गाँयँन कौं, निज दासि खवासन नायन कौं।
मन बंच[14] ऊदंचत दाँन मिल्यौ, झर भाद्रँव मास ज्याँ द्रव्य झिल्यौ ॥५४७

---

१ गानेवाली। २ छवि। ३ पटरानी। ४ उद्वाह = विवाह। ५ ब्रह्मा। ६ अजन्मा। ७ शारदा = सरस्वती। ८ यान = सवारी, डोला। ९ शुभवेला = शुभमुहूर्त। १० कौशिक = विश्वामित्र। ११ द्विज = ब्राह्मण। १२ अभय। १३ नेगियों को। १४ वाञ्छित।

सब आय कै साथ जनास्रय सौं, निज पुत्रीय लोकक लै नय सौं ।
मिथलेस के आय कै मंदर कौं असवारि ऊतारीय अंदर कौं ॥५४८
मन-मोदमई सब मात मिली, रुचता-जुत गावत राग-रली ।
मिथलेस प्रचारीय मोद महाँ, रुच स्वादन रिद्ध समृद्ध रहाँ ॥५४९
मनुँहार बरातिन मोदमई, निबहै अत पुज्जत नित्थ नई ।
अबरोध[1] में दुल्लह आवत है, जनवासहु कौं चढ़ जावत है ॥५५०
बिहरै बन बाग बजारन में, सहलै कहुँ सैल सिकारन में ।
बितए दिन केक बधाईय में पति औध रहे पहुँनाँइय में ॥५५१
पति-औध के मंत्रिन ने पहिलै, मिथलाधिप मागीय सीख मिलै ।
सब भांत अलंकृत[2] साथीय कौं, बगसे बहु बित्त बरातीय कौं ॥५५२
दुलहा दुलहींन दहेज दयौ, करकै गनती[3] नहीं जात कह्यौ ।
बर बस्र जिते जर-तार बने, गजराज गऊ रथ घोरे घने ॥५५३
दीय दासन दासी सु दायज[4] में, जिनकाँ दुहिता[5] हित कोन जुमें[6] ।
मिथलाधिप सौं हिल कै मिल कै, दसरत्थ चले संग लै दल कै ॥५५४
पँहुचे सोई जाय कै औध-पुरी, घन नौबत भेर[7] अवाज घुरी ।
बहि कै[8] जन आय बधाँवन कौं, सुख संतति सरसाँवन कौं ॥५५५
कलसा लीय भेंट निछावर कै, भल मोंतिन-थार घने भर कै ।
घनस्याँम लखे जन जाहि घरि, कलधौत[9] रु हाटक[10] वृष्ट करी ॥५५६
पँहुंचे जबहीं दरवाजन पै, बढ़ एदह दुंदभी[11] बाजन पै ।
ललना बसु[12] सीस करीर[13] लीयं, कमनीय सपल्लव गुच्छ कीयं ॥५५७
गुन-गाँन बधाईय गावत हैं, सुख नैनन कौं सरसावत है ।
नृप देन बधाईय नारन कौं, भर द्रव्य करीरन भारन कौं ॥५५८
बिथुरै[14] बहु रत्न बजारन में, नवछावर के निरधारन में ।
पहुँचे निज जाय कै गोपुर[15] कै, घन बाजत आनकहू घुर कै ॥५५९
महिलाँ सब राँनीय संग मिली, ऊछरंग सौं गावत राग अली[16] ।
अवरोधन-द्वार अगारन में, पँहुँची कँऊ पार अगारन में ॥५६०

१ रनिवास । २ अलंकृति=गहने । ३ गणना=गिनती । ४ दहेज । ५ लड़की । ६ जिम्मेदारी ७ भेरी=ढोल । ८ चलकर । ९ चांदी । १० सोना, बाजार । ११ दुन्दुभि=ढोल, नगाड़े । १२ मिट्टी । १३ कलश, बांस की डार । १४ बिखेरे । १५ द्वार । १६ सखियां ।

सुभ सूचक लै दध दूव सखी, सबही सु सथाँन रही सुमुखी।
दुलहा दुलही दरवाजन सौं, सब बेख[1] सुधार समाँजन सौं ॥ ५६१
जुत भ्रात लखे रघुनाथ जबै, सिवका[2] दुलही संग जाँहि सबै।
अत आँनद मात गह्यौं ऊर कौं, पुलकावली आय चढी पुर[3] कौं ॥५६२
अवग्राह में जाँन घटा ऊमगी, भुव भीर मनौ दुरभक्ष भगी।
बहुरै सुख सौं मन बंचन कै, अत कंचन[4] पाय अकिंचन[5] कै ॥५६३
बिछुरी सफरी[6] जिम बारही[7] में, धस जावत बाढ की धारही में।
विरहा सुत माँतन दूर बह्यौं, लख नैनन आँनद पाय लयौं ॥५६४
अपढी[8] कर आड ऊतार अली, लीय दुल्लहनी केऊ संग लली।
गहि अंचर ग्रंथनी जोर गुही, रखवारीय कारन संग रही ॥५६५
सुत दंपत देख कै होय सुखी, सब ही तहाँ मात भई समुखी।
सुध-अंत[9] बधाय कै लीन सबै, जुवतीगन संगज गाय जबै ॥५६६
जुर दंपत[10] जोरीय[11] चाह जहाँ, अँगनाईय कारन कीन ईहाँ।
कुल-मात[12] के बंदन पाय करे, धुर[13] प्रोहित नारीय भेट धरे ॥५६७
पुन पुज्जक नारींय के पग कै, लीय ताहि असीस अभै लगकै।
निज मात के पाय लगे नम कै, सबही रनबास गने सम कै ॥५६८
बगसीस दई बनरा-बनरी[14], घन-मोल[15] अलंकृत जाहि घरी।
सुच हर्म[16] बसाय चहू सुतकौं, रमनीय घने खट[17]-ही-रित कौं ५६९
बिच काच के अंगन जाहि बने, छत और दिवाल सुबनैं चुने।
दुत रत्न-जरे तिनकी दमकै, चकचाँधीय[18] नैनन में चमकै ॥५७०
द्रग देखत सास जबै दुलही, अत प्रेम हीय भर कै ऊलही।
सुन राजनहू सुत के सुख सौं रत-आँनद में रुचता रुख सौं ॥५७१
रघुनाथ सपूतीय देख रहै, गरूकर्म[19] बिसारद नीत गहैं।
भ्रम छत्रीय बंस कौं धारन में, अत संमृथ[20] दीन ऊबारन में ॥५७२
खल धूरत के छल खंडन में, मरजाद सनातन मंडन में।
सब रीत सराह प्रजा सुन कै, गरूआई में राँम बड़े गन कै ॥५७३

---

१ वेश=पोशाक। २ शिविका=पालकी। ३ शरीर। ४ स्वर्ण। ५ दरिद्र। ६ मछली। ७ वारि=जल। ८ कनात। ९ रनिवास। १० वर-वधू। ११ जोड़ी। १२ कुलमाता=कुलदेवी। १३ पहले। १४ वर-वधू। १५ अमूल्य। १६ हर्म्य=प्रासाद, महल। १७ षट्=छह। १८ चकाचौंध। १९ गुरुकर्म=विद्या। २० समर्थ।

सुघराई[1] में राज के सेवन कौं, दसरथ्थ बिचारीय देवन कौं ।
पदवी जुवराज प्रचारन कौं, कीय रिद्ध जमाँ तिहि कारन कौं ॥५७४
सुन कैंकई बात बड़े सुत की, ममता-बस सुद्ध[2] गई मत कौं ।
नृप कौं बुलवाय तहाँ निगुनी, कलहंतर ता कीय या कहनी[3] ॥५७५
पति मो वरदाँन दीयें पहिलै, मुख माँगतहूँ अब मोहिं मिलै ।
मम पुत्र कौं राज की देहु मता, बन रॉम बसै गहि कै बिपता ॥५७६
जोई अब्द[4] चतुर्दस जाय जितै, चित सौं सुपनै नहीं औध चितै ।
कहनी नहीं राज वृथाँ करीयै, अपनी मति आप ही ऊद्धरीयें ॥५७७

सोरठा

सुन दसरथ नृप स्रॉन, कही जथा जो कैंकई ।
मुख रुक लीनौ मौंन, हीयौ[5] गयौ[6] सत टुंक ह्वै ॥५७८
कँवसल्या सुन कॉन, सोमित्रा सोऊ सुनी ।
ग्रह-ग्रह मंगल-गॉन, बंध भये दुंदभी बजत ॥५७९
बोले रघुवर बॉन, लघु भ्राता सुनीयें लखन ।
है मंगल-मह[7] हॉन, जाँन परत मम जीव में ॥५८०
ईतनै ही में आँन, कही कथा कहुँ कैंकई ।
श्रीरघुवीर सुजांन, सोचे मन में जिह समय ॥५८१
होय पिता की हॉन, बचन गयै जीवन वृथाँ ।
करहुँ राज-सुख कांन[8], लखन कही रघुनाथ लख ॥५८२॥

छंद भुजंगीप्रयात

सुनी रॉम की बात सोमित्र[9] सोऊ, द्रढं जायगे बीच आरंन्य दोऊ ।
लगे लांन[10] भूतॉन[11] कोडंड[12] लीने, दहूँ जाय कै मात कौं बोध दीने ॥५८३
पिता को करै जो वृथा कौल[13] पुत्रं, वही तै भलो जाँनीयै जो अपुत्रं ।
कपुत्रं सोई पुत्र लोकं कहाँनौं, जोई जीवतौ मृत्यु के तुल्य जाँनौ ॥५८४
हमारं ज्युही तौर के पुत्र हेतू, सबै रीत सौं अर्थ[14] है धर्म-सेतू[15] ।
चितावे सबै औध में औधवाटी[16], पिता-मात के दर्स पैहौं प्रपाटी[17] ॥५८५

---

१ [illegible] । २ शुद्धि । ३ कहनी = बात । ४ वर्ष । ५ मू०प्र० हीय्यौं । ६ मू०प्र० [illegible] । ७ [illegible] = [illegible] । ८ [illegible] । ९ सौमित्र = लक्ष्मण । १० श्रोणी = कमर । ११ तरकस
१२ [illegible] । १३ [illegible] । १४ [illegible] । १५ धर्मनिष्ठ । १६ अयोध्या । १७ परम्परा ।

सुनं रांम के बैन माता सबै हीं, जकी[1] चित्त की पुत्तरी ह्वै जबै हीं ।
द्रुतं औरहू भेट कै भ्रात दोऊ, सीया के गये हर्म में संग सोऊ ॥५८६
प्रीया[2] प्रांन सीया सुनौ छाँड़ प्रीती, निभायौं सबै धर्म कौं न्याय नीती ।
अहो सासरै कौ तजौ चित्त आसा,बसौ चाहि कै मायकै जाय बासा ॥५८७
बनौबास कौं जायगे जुग्म बीरं, धरौ बल्लभा[3] चित्त में नैक धीरं ।
बिजोगं समा[4] अष्ट-सप्टं[5] बिताई,भलैं आय है भौंन कौं जुग्म भाई ॥५८८
बिदेही सुनी राम की एह बाँनी,कही स्याँम साँ ताँम साँची कहाँनी ।
प्रभू रावरे संग सारंग-पाँनै[6], धरा धाँम जानौं वहीं राजधाँनी ॥५८९
सु पै प्राँन की हाँन बाजी सभूँगी, तऊ रावरौ साथ नाही तजूंगी ।
कही ज्याँनकी बाँन ऐसो करारो,खिती-आत्मजा[7] संग लीनो खरारी[8] ॥५९०
पिता-दर्स लीनौं त्रहूँ लाग पाँऊ, रही कैंकई चंद्र ज्यौं घेर राहूँ ।
तहाँ कैंकई ऊठ कै बारताई, लता बल्कला[9] आजनं[10] दौर लाई ॥५९१
सुमंत्रेय[11] दीने अरू राँम सीता, सबै अंग में धार लीने सुभीता ।
पिता-मात के बंद पादारबिंदं, चले अट्टवी[12] बास कौं रामचंदं ॥५९२
बढ़ी राज के ग्रेह हा-हंत[13]-बाँनी, घुकी धूंम ज्यूँहीं सबै राजधाँनी ।
अजोध्या पुरी ताहि छायौ अँधेरौ, तहाँ तेज कौ नाँहि दासै तरेरौ ॥५९३
गये भर्थहू मातुलं[14] दूर गेहा सत्रूघ्न भए ताहि संगी सनेहा ।
बनोबास दीनौ पिता दोय बीरा. सिधाये सुमंत्रेय राँमं सधीरा ॥५९४
अनैसी प्रजा बात देखी अनंता, सबैं धीसखं राज के पर्म संता ।
मिले राज-द्वारं मही और मत्री, ऊदासीनता पाय आये अमंत्री ॥५९५
दसा राज के ग्रेह की एह देखी,बिधू लेखीयै दीह[15]में ज्यौं बिसेखी ।
गये राज के पासहू सारग्राही[16],तहाँ जाय देख्यौ प्रभाध्वंस ताही ॥५९६
सुनी कैंकई की तिहीं घात सारी, इहीं राज में रैन[17]कीनी अँधारी ।
कही धिक्रती[18]बात मंत्री अनेका,बिचारयौ नही नैक राँनी बिबेका ॥५९७

---

१ मूर्च्छित, दुःखित हुई । २ मू०प्र० प्रीय्या । ३ प्रिया । ४ वर्ष । ५ चौदह । ६ शार्ङ्गपाणि = धनुर्धर । ७ क्षित्यात्मजा = जानकी ८ राम । ९ वल्कल = भोजपत्र, पेड़ की छाल । १० अजिन = मृगचर्म । ११ सौमित्रेय = लक्ष्मण । १२ अटवी = जंगल । १३ हाहाकार । १४ मामा के । १५ दिन में । १६ बुद्धिमान् । १७ रजनी = रात्रि । १८ धिक्कृति = धिक्कार ।

कछू दीह वीते तजी भूप काया, मही राजधाँनी सबै छोर[1] माया।
सबै राज सूंनौ लख्यौ मंत्रि साथा, समाँचार भेजे भर्थं सुज्ञाता ॥५९८
अजोध्यापुरी भर्थ-सत्रूघ्न[2] आये प्रजा औ सुमंत्री सबै धीर पाये।
कछू दीह वीते जबै-भर्थ काजा, सबै जोर कै राजमंत्री समाजा ॥५९९
जुतै मात भ्राता लये संग जाहा, अरंनं गये राँम लैनै ऊमाँही।
रहे चित्रकूटं गिरी सीस राँमं, तहाँ जाय भेंटे सुमत्री तमामं ॥६००
मिले भर्थ सत्रूघ्नहू और माँता, सबै राजधाँनी लखी हींन साता[3]।
कीयौ भूपहू वास वैकुंठ केरौ, घनै दुःख कौं छाय कै चित्त घेरौ ॥६०१
करचौ राँमहू तौय[4] दे संसकारा, बिलापं बढे मोह सौं नैन बारा।
पुरोधा[5] वसष्टं दयौ बोध पेखै, भई जो कछू बात भावी बिसेखै ॥६०२
भरथं कह्यौ चालीयै राँम भ्राता, अजोध्यापुरी रावरी है अनाथा।
सबै राजमंत्री प्रजा आद सूंनी, ईकै नाथ राँमं बिना बात ऊँनी ॥६०३
जबै राँम बोले बनोबास जैहूं, पिता की प्रतज्ञा जबै पार पैंहूं।
अजोध्यापुरी देखहूँ नैन आई, भली औ बुरी लेखीयें बात भाई ॥६०४
भरथं सुनी राँम नै एह भाखी, रजा[6] लै तहाँ पादुका सीस राखी।
अजोध्यापुरी चाल कै भर्थ आये, सुमंत्रेयहू राँम आगै सिधाये ॥६०५
बसे डंडकारंन[7] में जाय वासा, कुटी बांध कै पंचवट्टी[8] प्रकासा।
रिखी-राज भैंटे घने राँम-राई, जहां वेदना[9] जातुधाँनं[10] जनाई ॥६०६
सबै ही मुंनी-वृंद ह्वै ही सुखारी, अभैदाँन दीनो ईहीं आसुरारी[11]।
सुखी ह्वै रिखी धाँम-धाँमं सिधाये, बिचारे तहाँ राँम बासौ बसाये ॥६०७
सुपन्ला[12] पती-लंक की बहन सोऊ, द्रगं देख लीने कहूँ वीर दोऊ।
भ्रमीं बुद्धि काँमातुरा होय भेटी मनोज्ञं रच्यौ रूप औ लाज मेटी ॥६०८
कह्यौ राम सौं चाहि कै ब्याह कीजे, पती पाय कै चित्त मेरौ पतीजे।
अहूं एक-पत्नी सीया संग एकै, बृतं राँम मैं धार लीनो बिसेखै ॥६०९
सुपनखा जबै जाय कै सेस[13] जांच्यौ, हृदै काँम सौं छाय कै प्रेम राच्यौ।
सुमंत्रेय बोले जती-वृत्त[14] साधूं, उपज्जै नही काँम की मो ऊपाधू[15] ॥६१०

१ [illegible]। २ भरत, शत्रुघ्न। ३ सात = कल्याण, सुख। [illegible] = जल।
५ पुरोहित। ६ आज्ञा। ७ दण्डकारण्य। ८ पञ्चवटी। ९ कष्ट। १० यातुधान = राक्षस। ११ असुरारि = राम। १२ शूर्पणखा। १३ शेषावतार लक्ष्मण।
१४ [illegible]। १५ [illegible]।

मदंधा[1] तहाँ क्रुद्ध[2] कीनौ महाँना धरचौ मैथली भक्षनै काज ध्याँना ।
भयंकार कीनौ जबै रूप भारी, डरी देख सीता भई सो दुखारी ॥६११
ईतै दौर कै आय सेसावतारं, बँने आततासी[3] प्रहारं बिचारं ।
गही केस-पाँसी[4] जिहीं हाँथ गाढो, ठगारी तहो ह्वै रहो भूँम ठाढो ॥६१२
सुमत्रेय बोले जबै राँम सेती, अनाचार में रुष्ट है पुष्ट येती ।
मुनी बिप्र मेदोज[5] आरंन माँही, दये सो रिखी आय नैनाँ दिखाई ॥६१३
महाँराज रात्रीचरा[6] माँरनै को, प्रतज्ञा करी सो सही पारने की ।
नहीं राक्षसी जात साँ येहु न्यारी, सीया भक्षनै काज दौरी सुरारी[7] ॥६१४
रजा होय सो दंड याकौं रचीजे, कछू नाँहि कारू॑न[8] यामें करीजै ।
सुनी राँम भाखी सुमंत्रेय सोऊ, कही राँम यामें नहीं संक कोऊ ॥६१५
तऊ नार-जाती ईहै आतताई, नहीं प्राँन कौ दंड दीनै निकाई ।
ईतौ जान कै कीजीयै हींन अंगी, प्रभाध्वंस देखैं तिहीं के प्रसंगी ॥६१६
सोई क्रुद्ध ह्वै आय है एक साथा, नृचक्षा[9] करू॑ अट्टवी के निपाता ।
कह्यौ राँम त्यूँहीं सुमंत्रेय कीनौ, द्रढं प्राँन कौ दंड ताकाँ न दीनौ ॥६१७
कुरूपा करी काँन औ नाक कट्टी, चली सो गई राह की पाय छुट्टी ।
सीया कौ करचौ बोधहू प्रेंम सीचै बिराजे तबै राँमहू धाँम बीचै ॥६१८

दोहा सोरठ(ठा)

कटे नासका काँन, सुरपनखा लोहू स्रवत ।
जाय जुहारी जाँन, दूखन खर बंधव दुहून ॥६१९
खर दूखन जय खंभ, सबही पूँछी सुपनखा ।
बोली पाय विश्रंभ, कहूं सकल सुनीयै कथा ॥६२०
कोऊक राज-कुमार, कर कै पंचबटी-कुटी ।
बासौ करचौ बिचार, नहीं आँवन दै नार-नर ॥६२१
त्रीया संग ईक ताहि, सुभग सलौंनी सुंदरी ।
देखन कौं सुखदाय, मैं हूँ गई मुँकाँम मँह ॥६२२
काटे मेरे काँन, काटी फेर बिकूँनका[10] ।
नहीं अपराध निदाँन, अल्प दोष अरु दंड अंत ॥६२३

---

[1] मदान्धा । [2] क्रोध । [3] आततायी = दुष्ट, पापी । [4] केशपाश = चोटी । [5] हाड । [6] राक्षस । [7] राक्षसी । [8] कारुण्य । [9] राक्षस । [10] नासिका ।

कहौ सुपनखाँ काज, खर दूखन अरु त्रसर खल।
ईह मम भुज-बल आज, देख लेहु तेरे द्रगँन ॥६२४

छंद मुक्तादाम

सजे खर दूखनहूँ निज साथ, पलादँन[1] पौरुष पूर प्रपात।
सजे सब आयुध अंग सनाँह[2], तुरंगन[3] पक्खर[4] डारोय ताहि ॥६२५
कसै कोऊ बीच हृदै अधिकंग, जटैं सिर-स्त्रांन[5] हूँ रक्षन-जंघ।
तुलै तुदत्राँन[6] रु बाहुल[7] तेम, निचोलक केक सजे रन नेम ॥६२६
कसीसत कम्मर खग्ग[8] कुठार, धरै जमदाढ़[9] हु तिछ्छन[10] धार।
गहै परघातन[11] मंड गरूर, सजे केऊ संकु[12] सक्तीय[13] सूर ॥६२७
तहाँ ग्रह केतक हाथ त्रसूल, मिले सब यातु ऊपाध के मूल।
चठठत सिंजनि[14] चाँप[15] चढाय, सरास्त्रय[16] बंध करें सरसाय ॥६२८
बढै तहाँ आँनक भेर अवाज, सबै खर दूखँन जोर समाँज।
पताकन[17] फीलन[18] पै फहरात, ऊदायुध जुद्ध चले अकुलात ॥६२९
झुके सिर गिद्धँन चिल्लन झुंड, फलंगत सगत लाग फिरंड[19]।
चली रज डंम्मर अंबर छाय, दिनंकर[20] धुंधरौ नैन दिखाय ॥६३०
चढी चकढोल धरा धँमचक्क, रह्यौ तिह बेर प्रभंजन[21] रुक्क।
मचक्कीय सेसहु की फँन-माँल[22], कसक्कीय काँमठी-पिठ्ठ[23] कराल ॥६३१
करक्कीय दढ्ढ तहाँ भर कोल[24], ललक्कत फौज बढ़ी गत लौक।
करै धुँन माँरहुं राजकुमाँर, सँभारहु आयुध ह्वै हुसयार ॥६३२
बकै केऊ जीवत कै कर बंध, करैं सोई हाजर लै दसकंध[25]।
कहै कोऊ नाँर महाँ कँमनीय, जिहीं लहि छोरहु जीव तजीय ॥६३३
ऊचारत दूखन के अरदास, विपत्त में डोलत है बनवास।
दिखावहिं जो कछु पावही दाव, घलै घट बूझ कै ताकँह घाव ॥६३४

१ राक्षस। २ सन्नाह = कवच, वख्तर। ३ घोड़े। ४ पाखर = काठी। ५ शिरस्त्राण = पघडी, टोप। ६ उदररक्षक। ७ भुजारक्षक। ८ खड्ग। ९ यमदंष्ट्रा = कटारी। १० तीक्ष्ण। ११ लुहांगी। १२ खूंटे, साल। १३ शक्ति। १४ प्रत्यंचा, डोर। १५ चाप = धनुष। १६ शराश्रय = तरकस। १७ पताका = ध्वजा। १८ हाथी। १९ सियार। २० दिनकर = सूर्य २१ वायु। २२ फण माला। २३ कमठपृष्ठ = कच्छप की पीठ। २४ सूकर, सुअर। २५ रावण।

बिचारत बात चले खल-वृंद, दसूँ दिस दौर मचावत दुंद[1] ।
बकै बहु हल्ल सुगल्ल बजाय, ऊझल्लत सिंधु मनौं ऊफनाँय[2] ॥६३५
अडंबर[3] बाजँन होत अवाज, छटा चँमकावत आयुध साज ।
पलादँन मेचक[4] रंग पलाय, सजै मनुं बद्दर[5] की समुँदाय ॥६३६
पताकँन सेत जुरी बुग-पंत[6], करै रव भेख सिवा[7] किलकंत ।
मँडी जिम चाप पुरंदर[8] मंड, दियै ईम चाप गहै भुज-दंड ॥६३७
सुनै बहु सिंधव-राग[9] कें सोर, मिलै रव चातक[10] बोलत मोर ।
घटा घँन आवत फौज घुमंड, असारन[11] धारन बाँन ऊमंड ॥६३८
कही लघु बंधव साँ ईह कथ्य महाँ खल मार करूँ बिन मथ्थ ।
सीया गिर-कंदर[12] में लहि संग अहो तुँम जावहु बीर अभंग ॥६३९
कह्यौ रघुबीर करयौ सो जई काज,बिचछ्छन[13]लछ्छनहू[14]निरव्याज[15] ।
ईतै बिच आसर[16] आय अनींन[17], प्रचारीय राँम जहाँ भुज पींन ॥६४०
तहाँ रघुबीर रहे धनुं ताँन, सँवारीय सिजनी बांन सँधान ।
अरीदल मारन माँनहु ऊद्ध, क्रततहू[18] दंड गह्यौ कर क्रुद्ध ॥६४१
नमूँचीय[19] मारन काज निदाँन, मनौं कर बज्र गह्यौ मघवाँन[20] ।
मनौ मधु-कैटभ काटन मथ्थ, सँभारीय चक्र हरी समरथ्थ ॥६४२
मनौ त्रपुरासुर मेटन मूल, तक्यौ त्रिपुरारि[21] गहै तिरसूल ।
बिड़ारक तारक-दाँनव[22] वार, किधौं कर सक्त गही कऊमार[23] ६४३
चमूं-दन[24] भक्षन काँ चल चाल,बढ़ी जनु कालीय[25]जीह[26]बिसाल ।
करीरज[27] सागर पीवन काज, सभयौं मुनीराजन कौ सिरताज ॥६४४
मनौ दुरभक्ष कौं मेटन माँन, ऊमडीय जाँन घँना घँन आँन ।
बँधे जट-जूट[28] जहाँ रघुवीर, धरी खल आवत देख कै धीर ॥६४५
ईतै खर दूखँन आसर आय, रहे सब घेर जहाँ रघुराज ।
लखे खर दूखँन रूप ललाँम, सरोरुह आँनन[29] संचर[30] स्याँम ॥६४६

१ द्वन्द्व । २ उफान कर । ३ जुझाऊ बाजे । ४ काले । ५ बादल । ६ बकपंक्ति = बगुलों की कतार । ७ शिवा = शृगाली । ८ इन्द्र । ९ सिन्धु नामक राग । १० पपीहा । ११ राक्षस । १२ पर्वतगुफा । १३ विचक्षण = चतुर । १४ लक्ष्मण । १५ निर्व्याज। = निष्कपट । १६ असुर । १७ अनीकनी = सेना । १८ कृतान्त = यमराज । १९ नमुचि-नामक दैत्य । २० इन्द्र । २१ महादेव । २२ तारकासुर । २३ कौमार = स्वामी कार्त्तिकेय । २४ दनुजचमू = दैत्यसेना । २५ कालीदेवी । २६ जिह्वा । २७ कुम्भज = अगस्त्यऋषि । २८ जटाजूट । २९ कमल-मुख । ३० शरीर ।

गहै धँनुँबाँन गुमाँन गरूर, प्रभा मधुदीप[1] प्रकासत पूर।
बिमाँसत आसय बात बिचार, कोऊ इँह छत्रीय-राजकुमाँर ॥६४७
जुरै जुध नाँहिन माँरन-जोग, बसे बनबास कौं पाय बिजोग।
करी भगनी[2] बिन नाँक रु काँन, जिवावत बालक ख्याल क जाँन ॥६४८
बिचार कै दूत कहौ इँह बात, सबै फिरजावँहिगे हम साथ।
श्रीया निज बैर में देबहु ताहि, मिटै दुख छाय रहौ बन माँहि ॥६४९
तबै चल दूत गयौ सोई तथ्थ[3], कहो रघुनाँथ सौं या बिध कथ्थ।
सुनी रघुनाथ सबै बिध खाँन, बिचार कै दूत कही इँह बात ॥६५०
अहो सुन दूत महाँ हीय अंध, मिलौ निज स्वामीय सौं मतिमंद।
कहै हम जाय कहौ सोई कथ्थ, अरे तुम जाँन लये असमथ्थ ॥६५१
अंगजित[4] छत्रीय जात अबीह[5], दहै हँम आसर कौं निस दीह।
महाँमुनि दुख्यत कौन मदंध, क्रब्यातन[6] जातन काट है कंध ॥६५२
श्रँगाल के झुंड मिलै कहुँ सथ्थ, कहै मृघराजहु[7] कौं कोऊ कथ्थ।
अयाँनप[8] जाँन परचौ हम एहु, गहै किन माँरग जाबहु गेह ॥६५३
ईतै पर पौरुख है कहुँ अंग, जुरै धँनु बाँनन ताँनहो जँग।
दया कर सत्रुन कौं तज देत, सोई कदराईय[9] जाँन सहेत ॥६५४
सुनी कथ दूत कही ततसार, बदी[10] खर दूखन कौं तिह बार।
लगी खर दूखन कै सुन लाय[11], बढ़ी ऊर क्रोध की ज्वुवाल बलाय ॥६५५
गहै जीय गात कहै कोऊ गल्ल, हकार कैं मार लहै कर हल्ल।
बकै दुरबाद[12] प्रहारत बाँन, पलादन बाद करै अप्रमाँन ॥६५६
करैं कोऊ तोमर मार कुठार, तहाँ कर तिछ्छन लैं तरवार।
घने रघुबीर बचाय कै घाव, दयौ धँनु बाँनन आपन दाव ॥६५७
परैं रन-मंडल बीच परेख, ईलात के चक्र ज्यु हीं धनुं येक।
छुटैं सर भाँन मनौ कर[13] संग, मिटैं तम तौर[14] फटैं ऊतमंग[15] ॥६५८
बढ़ै बिसफार[16] अवाजन बाज, दरार न पब्बय[17] लेत दराज।
घँनी रघुनाथ करी सर घात, हटी खल फौज हीयैं हहरात ॥६५९

१ कामदेव। २ बहिन। ३ तथ्य = सत्य। ४ पुत्र। ५ अभय = निर्भय। ६ क्रव्यादन = राक्षस। ७ मृगराज = सिंह। ८ मूर्खता। ९ कदर्य = कायरता। १० कही। ११ आग। १२ दुर्वाद = दुर्वचन। १३ किरण। १४ उसी प्रकार। १५ उत्तमाङ्ग [illegible] १७ पर्वत।

निरालय दीसत औघ-नरिंद, छुट्यो तम-फंद[1] सौं मानहु चंद।
घने घट लाग पलादन घाव, श्रवें जिह अंगन लोहु ऐ आव ॥६६०
परे रन तूट घने पग पाँत, कटे भुज नासका पाटीय कांन।
गिरे कहुँ दंत भरे रत[2] गात, हले सब राखस मींजत हात ॥६६१
पिता कोऊ भ्रात पुकारत पूत, रच्यौ रन घोर लखो रजपूत।
अनेक के तुल्य लख्यो नर येक, बलाय की लाय लई अबबेक ॥६६२
परे मुह काल के जाय पलाय[3], भई गत सर्प-चचुँदर[4] आय।
मतौ कर फेर भये मुहमेज[5], तपै खल ग्रीखँम-भाँन सतेज ॥६६३
प्रहारत तोमरहू घन प्रास, तहाँ रघुनाथ ऊड़ावत तास।
झपेटँन बाँनन लाग भरंत, किते खल घायल त्राहि करंत ॥६६४
हटै भट केक जुटै हरवल्ल, ऊठै घट धूँमत क्रोध ऊभल्ल।
सिटैरन आय कटै तन सूर, रटै मुख हाय मिटै मगरूर[6] ॥६६५
भूमैं मति जुथ्थन-जुथ्थ भिरंत, पलादँन लुथ्थ पे लुथ्थ परंत।
बहै सर लिप्रहु दीप बढ़ाय, भुजंगम[7] भींम मनो भहराय ॥६६६
हले रघुनाथ की बाँन हिलोर, बहे केऊ धार रहै जलवोर।
बरंगन अंगन करै बहु बीर, परैं गिर-श्रंग ज्युहों लहि पीर ॥६६७
कहै कोऊ मूढ़[8] कहा खर कीन, पिछाँनेऊ नाँहिन पौरुख पीन[9]।
सबै चढ़ आय गये ईक सथ्थ, बिचारीय नाँहिन ये कहु बत्त ॥६६८
मरें बिन भाग गये डर मींच[10], लहै किम कातर तापद नीच।
त्रिमाँसकै[11] आय जुटे रघुबीर, तहाँ गहि चांप चलावत तीर ॥६६९
तिनै रघुनाथ करै सत टूक, ऊठी मनुँ ज्वाल की माल अचूक।
महाँ क्रत-हस्त[12] भये मन मुद्ध[13], जहाँ रघुबीर को देखत जुद्ध। ६७०
तकै रन दाव रहे धनुँ तांन, पलादन पुत्तरी चित्त पलांन।
भये रन संकुल व्याकुल भेस, प्रकंपत गातन पुञ्जत पेस ॥६७१
तजी तन आस कटे तन-त्रांन[14], ऊमडिय जुद्ध भये अगवांन।
हँमंल्लँन फौज ऊभल्लन हाथ, घुमंडीय राघव घल्लन घात ॥६७२

१ राहु। २ रक्त। ३ दौड़कर। ४ सांप-छछूंदर। ५ सन्मुख। ६ घमण्ड। ७ सर्प। ८ मूर्ख। ९ पुष्ट, प्रबल। १० मृत्यु। ११ विमनस्क=दुःखी होकर। १२ सिद्धहस्त। १३ मुग्ध। १४ तनुत्राण=कवच।

तहां रघुनाथ गहै धनुँ तीर, बिड़ारत नैरत[1] हेरत बीर।
गहै बन बीच बहै गजराज, मरोरत कंध ज्युहीं मृगराज ॥६७३
मिली रन एक अनेकन मंड, भरैं खल बाँनन भुँडन-भुँड।
पतंगहू दीप लखौ परकास[2], परै जर आय कै ताहि के पास ॥६७४
ईहै गत होय पलादन-अंग, जुरै रघुबीर करै जिह जंग।
मँड़े नट खेल मलंगन मार, ऊलट्टत घोरन तै असवार ॥६७५
रहे रघुनाथ जहाँ रन रूठु[3], बढे भर बाँनन की घँन बूठु[4]।
खरे कॅऊ घूँमत मुँडन खंड दिखावत माँनहु बिष्टर डंड[5] ॥६७६
परे ऊतमंग कटे धर[6] पाव, प्रहारन राघव बाँन पसाव।
तुरंगन तूटत तंग-समेत, परैं तहाँ जीन कटे पखरेत ॥६७७
ऊड़े गज-पिठुन केतु[7] ऊचूल[8], हुलै बिच अंबर सेत[9] दकूल[10]।
प्रभा तिह दीसत पाँन[11] प्रसंग, चढ़ी मनुँ ड़ोर बढ़ो केऊ चंग[12] ॥६७८
लटै ईभ[13] बाँनन टक्कर लाग, भ्रमै पग चिक्कर[14] जावत भाग।
भजे खर[15] बिस्वर हू कर भूँख, अनी[16] निसचारन[17] बाढीय ऊक ॥६७९
भयातुर डोलत चित्त भ्रमांत बिह्वल[18] कातर[19] के बिललात।
ईतै रन राघव जूझत एक, ऊतै खल दौरत आय अनेक ॥६८०
परै सर लागत ह्वै गत-प्रांन[20], मही सब छाय रही मुरदाँन।
झुकै तिह ऊपर गिद्धन-झुंड, पलादन लाँचत चाँचन पिंड[21] ॥६८१
बिबुल्लत चिल्लन काक बहोर, करै सोई भक्षन कालज[22] कोर।
मृघादन[23] जंबुक[24] खावत मंस, दबावत चावत कै मृघदंस[25] ॥६८२
तहाँ भर खप्पर लै रसतेज[26], पीयै वहू जुगँन[27] के गँन पेज।
नचै वहु भूत बितालन नाच रहे रम्म ख्यालन ताल नराच ॥६८३
महाँनट लेत है मुँडन-माल, खिलै जहाँ गोरीय देखत ख्याल।
भयो रन पेख अचंभत भाँन, तुरंगन वग्गन लींनीय ताँन ॥६८४
घटी अत फौज कटी सर घाव, दयौ खर दूखन आयुध दाव।
गहै फरसा कर मंड गरूर, सँभार कै आय जुरै रन-सूर ॥६८५

---

१ नैरृत = राक्षस। २ प्रकाश। ३ रुष्ट। ४ समूह। ५ ठूँड = सिरकटे वृक्ष। ६ धड़ = शरीर। ७ ध्वजा। ८ अलग होकर। ९ श्वेत। १० दुकूल = वस्त्र। ११ पवन। १२ पतङ्ग १३ इभ = हाथी। १४ चीत्कार = चिंघाड़ते हुए। १५ गधे। १६ अनीक = सेना। १७ निशाचर = राक्षस। १८ विह्वल। १९ कायर। २० प्राणहीन। २१ शरीर। २२ कलेजा। २३ मृगादन = जरख। २४ सियार। २५ जंगली बिलाव। २६ रक्त = खून। २७ योगिनी।

कहे रघुनायक सौं कर क्रुद्ध, जुहारीय आय पलादन जुद्ध।
गने हम कोमल बालक गात, घली नह ताहीयतैं तन घात ॥६८६
रहौ पग मांड अरे रजपूत, करैं कछू बीरन की को करतूत।
ततौ हम जांनहिगे कछू तोहि, महां बलमांन तहै नहि मोहि ॥६८७
सुन्यौ रघुनायक बांनीय-सोर, बिचार कै बोलेऊ कथ्थ बहोर।
न जांनत छत्रीय जात निसंक, सुनावत बाच मनावत संक ॥६८८
लई भट ओट रह्यौ बललार, मिली नह बांनन की तन मार।
गरज्जत मूढ बजावत गाल, सहै किन बांनन के नटसाल ॥६८९
टँका-रव[1] कीन तहां धनुं तांन, बकार कै[2] राघव मारेऊ बांन।
कटे कर आसर के कर-क्रुद्ध, बक्यौ मुँह फार कै धर बिरुद्ध ॥६९०
कटे सर मारकैं दंत कुठार, चल्यौ तऊ आय हीयैं निसचार।
भर्यौ मुख बांनन दिग्घन[3] भार, पर्यौ असुराय भयौ भव[4] पार ॥६९१
मरे खर दूखँन देख मदंध, बरख्खत फूल जहां सुर-ब्रन्द।
सुखी मन मोद लह्यौ रिखि संग, पराक्रम राघव पाय प्रसंग ॥६९२

दोहा

जय पाई रघुवर जहां, खर दूखँन बल खंड।
सँग निसचर चवदा सहस[5], बीर परे बल बंड ॥६९३
करबर[6] सर मार्यौ कटक[7], भूंम ऊतार्यौ भार।
सुर नर मुंनि जांने सकल, ईह हरि कौ अवतार ॥६९४
आये सीय लछमन ईतैं, रोखारुन[8] लख रांम।
पग-बंदन कीने परम, सुभग रूप घनस्यांम ॥६९५
कै कुंजर पिंजर कटे, अश्व और असवार।
बन नारा ज्यूंही बहत, धरा रुधर की धार ॥६९६
महांमोदमय मैथली, बिहसत लछमन बीर।
सबै बात पूंछत समर[9], धर ऊर में कछु धीर ॥६९७
सीया लखँन बतरात सम, रोख मिट्यौ रघुनाथ।
दहुन दिखावत खेत[10] दृढ़, हाथन सौं गहि हाथ ॥६९८

१ धनुष की आवाज। २ चुनौती देकर। ३ तीक्ष्ण। ४ संसारसागर। ५ सहस्र = हजार। ६ राक्षस। ७ सेना। ८ रोषारुण = क्रोध से रक्तवर्ण। ९-१० युद्ध।

समर-भूँम का देख सब, आये रघुवर आप।
मेल्यौ धनुष मुकाँम-मह, कट-पट[1] छोर क़लाप ॥६९९
भाग सुपनखां स्रमत[2] भय, गई लंकपत-ग्रेह।
खर दूखँन दीनो खँवर, निसचर मरे निरेह ॥७००
नर निसचर मारे निरख, प्रहरन ग्रहन पिनाक[3]।
श्रवन[4] काट नारी समुझ, निरभय काट्यौ नाक ॥७०१
दसकंधर[5] तेरी दई, कोट[6] दुहाई क्रूर।
येकहु नहि मानीं ऊनहिं, गहै गुमान गरूर ॥७०२
सुरपनखां को तिह समय, बूझी रावन बात।
आये वन में कौंन ईह, असह करत उतपात ॥७०३

छंद भुजंगी प्रयात

सुपनख सुनो रावँन बात सारी अजोध्यापती कथ्य साँची उचारी।
दहू वीर है दासरथ्थी[7] दुलारे, सुव हू जिहीं ताड़का कौं सँघारे ॥ ७०४
ईखू[8] मार मारीचहू कौं ऊड़ायो, छुटै चंग ज्यौं वेग ताही चढायो।
अपाचो[9] दिसा आय छायो अजाँ ही, निहारै उदीची[10] दिसा नैन नाँही ॥ ७०५
पिनाकी[11]-धनुर्तोर कै जीत पाई, वरांगी[12] जिहीं ज्यानकी कौं विवाही।
पिता पाय आज्ञा वनोवास पाये, ऊभं भ्रात नारी त्रहूं संग आये ॥ ७०६
प्रतज्ञा रिखीवृंद कौं या प्रचारी, सर्व मारहूं भार भूंमै सुरारी।
विरूपा करी मोहि कौं रांम वीर, पुकारी खर-दूखनं पाय पीरं ॥ ७०७
वडे सो कडे वैर लैनं विचारा, सोई ह्वै गये काल के ग्रास सारा।
सुपनखा विसासी[13] कह्यो ताहि सेती अहो चित्त ना कीजीयै चित एती ॥ ७०८
लगो हौं सबं ताहि सों वैर लैहूं, महाबाहु जांनो पती लंक मैं हूं।
विरूपा गई गेह कौं ताहि वेरी घली होय लंकेस चिंता घनेरी ॥ ७०९
करी [illegible] जोर कै कुंभकर्नं[15], वडे वेगवारे जिहीं धुंम्र-वर्नं[16]।
[illegible] को सिधु नाख्यौ प्रवीरा[17], प्रकासी तहाँ चाय मारीच पीरा ॥ ७१०
[illegible] लंका-पती कौं जनाई कथा साँच की जांन जीकी।
[illegible] मार कुर्म पायाए, जती-रूप तौहू पती औध जाये ॥ ७११

१ [illegible]। २ [illegible]। ३ धनुष। ४ कान। ५ रावण।
६ [illegible]। ७ दासरथी = दशरथ के। ८ इषु = बाण। ९ अपाची = दक्षिण।
१० [illegible]। ११ शिव। १२ सुन्दरी। १३ [illegible]। १४ [illegible] = रण।
१५ [illegible]। १६ धुम्रवर्ण = [illegible]। १७ [illegible]।

कहुँ मूल के बैर जासों न कीजैं, सु बीती कथा मोहि सेती सुनीजैं।
वही बाँन के बेग मारे ऊछारचौ, सु पै आज लौं चित्त नाँही सँभारचौ ॥ ७१२
सुनी रांवनं बात मारीच सारी, अजै भीरुकं[1] भाव कौं तूं सुरारी।
सु पै बीर कौं भाव ह्वै सावधांनं हलै संग मेरौ कहा लाभ हांनं ॥ ७१३
जबै रांवनं होय सिद्धांत जांन्यौ, तबै नीच मारीच हु संग तांन्यौ।
कह्यौ लंक कै राज ज्यौं व्याज[2] कीनौ भये श्वर्न के बर्न कौ ऐन[3] भोनौ ॥ ७१४
पहूँच्यौ सोई रांन के धांम[4] पासैं, प्रभा अंत सौ क्रंत[5] माँही प्रकासैं।
बिलोक्यौ तँही अट्टवी में बैदेही, ऊचारी तहाँ राम सौं कथ्थ ऐही ॥ ७१५
ईही ऐन कौं मार कै क्रंत आँनै, महाबाहू मेरौ हीयौ साँच मांनै।
सीया की सुनी बात रांमैं सनेही, चले चाँप लै बांन लीनें चुनै ही ॥ ७१६
जहाँ लछ्छनं रांमं दीनौ जताई, ईहाँ जातुधांनं फिरै आततांई।
सीया ही प्रीया की जुतै सावधानी, रूखारी करौगे थिरा[6] है बिरांनी[7] ॥ ७१७
चले अट्टवी कौं जबै रामचंद्रं कहुँ नाल[8] हेरैं कहुँ रंध्र. छिद्रं[9]।
अगैं सौं अगैं हू भगै जाय ऐनं, दगैं दाव नाँही जगैं बांन देनं ॥ ७१८
गये दूर लै अट्टवी कौं गहीरा धरी अंत कौ चाहि कै जंतु धीरा।
अबैं राम आगै नही ऊबरूँगौ, मुगत्ती[10] मिलैगी सुमत्ती मरूँगौ ॥ ७१९
धरैं ध्यान जोगिंद्र रुद्राद ध्यावै, वही दौर कै मोर कै पिट्ठ आवै।
लखूं नैन सौं रूप स्यांमं ललांमां, धरैं आंमना कांमना दिव्य धांमा[11] ॥ ७२०
मती सोच मारीच नें पांव मंडे, चढंटे चिला चाप सौं बांन छंडे।
घल्यौ घात मारीच कै गात गाढी, बिथा[12] प्रांन कै हाँन की ताहि बाढी ॥ ७२१
सुमंत्रेय हा लछ्छनं स्याहिकारी[13], हितू होय कै भीर ऐहौ हमारी।
परे नीच मांरीच ऐसौ पुकारचौ, सबै कांम लंकेस कौ ताहि सारचौ ॥ ७२२
लग्यौ घाव साचौ परचौ भूंम लेटे, सोई रांम नें बंध कीनौ समेटे।
बहे[14] ऐन लै रांमहू धांम बाटी, कैसे पिट्ठ कौं निठ्ठ[15] झेले क्रकाटी[16] ॥ ७२३
सुनी बांन ताही समै आँन सीता, भई सोक में मग्न बोली सभीता[17]।
सुमंत्रैय मेरी सुनौ बात आँनं, परचो रांम कै संकटं आय प्रांनं ॥ ७२४

---

१ कायरपन। २ बहाना, कपट। ३ एण=हरिण। ४ स्थान। ५ कृत्ति=चमड़ी। ६ स्थिरा=पृथ्वी। ७ दूसरे की। ८ नाले। ९ कन्दरा रन्ध्र=गुफाछिद्र। १० मुक्ति ११ स्वर्ग, वैकुण्ठ। १२ व्यथा=पीड़ा। १३ सहायक। १४ चले। १५ नीठ, कठिनाई से। १६ गरदन। १७ भयसहित।

असाता[1] पुकारे जबै नाथ ऐसे, करौ स्याहि[2] नाहीं जबै भ्रात जकैसे।
सीया सासनं[3] पाय सौमित्र सोऊ, गयौ राम कौं जोवनै[4] सो अगेऊ ॥७२५
पती-लंक कै सीय कौं घाँम पाई, अकेली लखी ताहि समीप[5] आई।
कीयौ पर्न-की-साल[6] सौं हर्न[7] काजा, सीया राँम राँमा-लीयें संग साजा ॥७२६
मिल्यौ गिद्ध-राजा जटायू महाँना, ठस्यौ जुद्ध लंकेस सौं बैर ठाना।
वये घाव पैंने घनै राँम-द्रोही, छनी पंख काटी जहाँ यँ चछोहो ॥७२७
गिरयौ भूँम माँही जबै गिद्ध गाता, बह्यौ रथ्थ काँ हाँक कै सो बिख्याता।
बिलोके जहाँ बृंद साखा-बिलासी[8], रटै राँम को नाँम आँनंद-रासी॥७२८
सुन्यौ ध्वाँन[9] कौं आँन कै कोस सर्वा, ईहै दीन बाँनी पिछाँनी अगर्बा[10]।
द्रुतं ज्याँनकी अंसुकं[11] देख डारयौ, सोई लै बनौका[12] भलै ही संभारयौ ॥७२९
पती-लंक लंका गयौ लै पलाई, बिचै बाग कंकेल[13] छाया बसाई।
ईहाँ ऐंन काँ मारकै राँम आये, नदी-तीर गोदावरी नीर न्हाए ॥७३०
सपेखी तबै आय कै पर्नसाला, बदे लच्छनं बैन बाहू बिसाला।
सीया है कहाँ पै प्रीया प्राँन-प्यारी, दुरो[14] मैथलाधीस देखौ दुलारी ॥७३१
सुमं त्रेय खोजो सबै पर्नसाला, बिलोकी नहीं सीय नैंनाँ बिसाला।
सुके दंत वस्त्रं रुके हीय स्वासा, वहै नेत्र वारी न पावै बिसासा ॥७३२
वढ्यौ राँम कै होयहू में बिखादं[15], परी वज्र सी आय गाढी प्रमाँदं।
कृपानाथ चाले जबै हेर-काजै[16] सबै काननं[17] थाँन-थाँनै समाजै ॥७३३
गिरी-किंदरा[18] खाल नाली गहीरा, तरू अट्टवी कुंज ही ताल तीरा।
अपाची[19] दिसा चाल कै जाय आगै लख्यौ गिद्ध-राजा परयौ घाय लागै ॥७३४
जहाँ राँम पूँछ्यौ जथाँ-जोग जाही, करे अंग कौं भंग कौनै कसाई।
जटायू कहा राँम भाखी जथा सौं, महाँ जुद्ध लंकेस कीनौ म तासौं ॥७३५
हरो ज्याँनकी लै चल्यौ ताहि हेरी, मती आततांई परयौ द्रष्ट मेरी।
करयौ जुद्ध तौहू सरयौ नाहि काजा, धरा मे परयौ तूट राजाधिराजा ॥७३६
सुनी राम बाँनी ईहै गिद्ध सेती, रची घाव में पौंच कै[20] ताहि रेती।
धरे सीस पै हाथ बोले अधीसा, खरौ भक्त मेरौ तुही है खगीसा ॥७३७

१ दुखी। २ सहायता। ३ आज्ञा। ४ देखने, खोजने के लिये। ५ सामीप्य = नजदीक। ६ पर्णशाला = कुटी। ७ हरण। ८ वानर। ९ शब्द, ध्वनि। १० गर्वरहित। ११ वस्त्र। १२ पर्णकुटी। १३ अशोक बृक्ष। १४ छिप गई। १५ विषाद = दुःख। १६ खोजने के लिये। १७ वन। १८ गिरिकन्दरा = पर्वतगुफा। १९ अवाची। २० पोंछ कर।

लखावै तुमै नीक सो दाँन लीजै, कछू काँमना होय सो सिद्ध कीजै।
जटायू तहाँ येहु बोल्यौ जबाँनी, धरै ध्याँन जोगिंद्र बृह्माद ध्याँनी ॥७३८
वही अंत कै तंत में नाम आवै, पस बं[1] जिहीं बास निर्बान[2] पावै।
वहीं देह धारै खरे मोहि आगे, महाँराज औरै कहा दाँन मागे ॥७३९
निहाँरे तिहाँरौ ईहै रूपनाँथा, सबै रीत साँ ह्वै चल्यौ हूं सँनाँथा।
तहाँ गिद्धराजा बहै देह त्यागी, सिधायौ परं धाँम सभागी ॥७४०
कीया दाह कीनी तहाँ गिद्ध केरी, ऊभै भ्रातहू जाँन कीनी अबेरी।
सीया की जहाँ जाँन पाई सबै ही, तहाँ तै चले राँम आगे तबै ही ॥७४१
करै हाथ लवे धसे सीस कंधा, कहूँ अट्टवी बीच भेटचौ कबंधा।
तिही मारकै बाँन मारचौ तहाँ हीं, मिल्यौ सदगती जाय तातै महाँ ही ॥७४२
बढ़े काँननं[3] अग्र में राँम बाटी[4], सीया खोज कै काज बाँधे सपाटी[5]।
मिल्यौ भिल्लनी आश्रमं बीच मागा, रही प्रैम भक्ती महा सानुरागा ॥७४३
महाँ कंद-मूलं फलं मिष्ट मेवा, सु धारे सबै भेंट में श्रेष्ट सेवा।
लये रीझ कै भोग लीने लगाई, भये अग्र जासौं जहाँ जुग्म भाई ॥७४४
दया पाय कै भिल्लनी बोध दीनौ परा-भक्ति कौ ताय पीयूख[6] पीनौ।
भई चित्त में मग्न जोगाग्न[7] माही, द्रगं देखतै स्याँम कै देह दाही ॥७४५
जहाँ काँननं में बढ़े राँम जाते, बतावै सुमंत्रेय कौं ज्ञान-बातै।
परेख्यौ अगै एक कासार[8] पंपा, चँमेली लता केतकी राय चंपा ॥७४६
बिराजे जहाँ राँम छाया बिलोके, ऊपायौ अनंदं हीया में अनोखें।
कीयौ मंजनं रंजनं धोय काया[9], रजै कोट-कंदर्प-भा[10] राँम-राया ॥७४७
मुनंद्रं जहाँ रामचंद्रं मिलाई, प्रसंनं भये आय कै दर्स पाई।
तहाँ बृंदबृंदारका[11] आय तेतै, करे बंदना अर्थ-हू-बाद केतै ॥७४८
ध्रती[12] धारकं सो गये धाम-धांमं, रहे जोय सीता गये अग्र राँमं।
सँमीपं गये ता समं मूक सैलं, गहीरं घने ढूढते घाट गैलं ॥७४९
बसे ताहि कै सीस सुग्रींव बासा, खरे संग माँहीं भरै भीच[13] खासा।
दुहूँ बीर कौं आवते मग्ग देखै, बढ़ी चित्त में आय चिंता बिसेखै ॥७५०

---

१ प्रसाद। २ निर्वाण = मोक्ष। ३ जंगल। ४ वाट = मार्ग। ५ तेजी से। ६ पीयूष = अमृत। ७ योगाग्नि। ८ तालाब, पम्पासरोवर। ९ शरीर। १० करोड़ों कामदेव की शोभा वाले। ११ देवता। १२ धृति = धैर्य, धीरज। १३ योद्धा।

हनूमांनको दक्ष[1] सुग्रीव हेरं, निहारौ तिहीं जाय कै नीक नेरं[2] ।
मतं बाल भेजे नहीं मारनै कौं, धनुर्द्धांन भूतानहूँ[3] धारनै को ॥७५१
चलै ओरहू सैल की मेल चेटी[4], सबै बीर कौं साथ लैहौ समेटी ।
हनूमांन बोल्यौ जोर हाथा, मिले रांम सौं जाय कै नाय माथा ॥ ७५२
वृतंतं[5] प्रकास्यौ हनूमांन वीरा, सुनौ कोन हौ स्यांम गोरं सरीरा ।
जबै राम बोले..पती औध जाये, ऊभै[6] भूप अज्ञा बनोवास आये ॥७५३
बड़े रांम है नांम जांनौ बीसेरवै लघू नाम है लछछन ताम लेखौ ।
रही संग में सुंदरी इंदरा-सो[7], अरण्यो फिरं ढूंढते ह्वै ऊदासी ॥७५४
सबै बात बीती कही सो सुनी तै, प्रकासी हमैं बिप्र आयौ पुनी तै ।
बिनोके ऊभै भ्रात सौं प्रीत बाढी, गही रांम के बनं की सनं गाढी ॥७५५
रजो पाय बंदे कह्यौ राम-राई, सु पं दास तेरौ बिचारौ सदाई ।
हनूमांन मेरौ कहं नांम हेरौ, कीयौ संग आरंण्य सुग्रीव केरौ ॥७५६
मिलो चाहिकै जाहि कीजें मिताई[8], सबैं रावरे कीस ह्वैं है सहाई ।
करैंगे सबै खोजना सीय केरी महांराज सांची सुनौ बात मेरी ॥७५७
पिछांनी कपी बात बिस्रंभ[9] पायौ, कियौ अंजनी-पूत हू को कहायौ ।
चढाए कपी[10] पीठ लैकै चलाई, भई भेट सुग्रींव सौं जुग्म भाई ॥७५८
ऊभै ओर सौं जोर प्रीती अनंता, महांराज सुग्रींव के होय मिता[11] ।
जिनै अग्न-साखी[12] करे सूर-चंदा, प्रचारयो हनूंमांन ऐसौ प्रबंधा ॥७५९
कह्यौ रांम सौं मित्त जानै कपीसा, अहो बात मेरी सुनौ औध-ईसा ।
मिटै भेदना[13] जानकीहू मिलेगी, धनीं आसरा-अंग बातें चलेगी ॥७६०
[illegible] मोह कौं होय रैहौ नचींता[14], समाचार मोसौं सुनौ येह सीता ।
[illegible] सुनौ रांम नांमं धुनो [illegible] ॥७६१
निहारयौ [illegible], [illegible] वांनी [illegible] बाला[15] ।
[illegible] मैं [illegible], सोई [illegible] निसंका ॥७६२
[illegible] सोई [illegible] में धरयौ है संवारयौ ।
[illegible] कियौ [illegible] है [illegible] ॥७६३

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible] । ४ [illegible] । ५ [illegible] । ६ [illegible] = दोनों
७ [illegible] । ८ [illegible] । ९ [illegible] । १० [illegible] । ११ [illegible] ।
१२ [illegible] । १३ [illegible] । १४ [illegible] । १५ [illegible] ।
१६ [illegible] । १७ [illegible] ।

जबै आँन सुग्रीव नै चीर झीनौ, दया-सिंधु के हाथ में ताहि दीनौ।
लयौ राँम नै ताहि छाती लगाई, भरे नीर नैना लखे जुग्म भाई ॥७६४
दसा देख सुग्रीव नै बोध दीनौ, पती-औध का सेव[1] काजै प्रबीनौ[2]।
दसँही दिसा भेजहूँ देखबे कौं, अनूंप बली दूत है एक.एकौं, ॥७६५
धरा[3] स्वर्ग पाताल के धाँम-धाँमं, अनेकं लखै अट्टवी औ अरामं[4]।
करै सोधना[5] आय मोकौं कहैगे, बली फौज लैकं तहाँ काँ बहैगे ॥७६६
पदं पंकजं रावरे ही पसावा, अरी[6] जीत हाँ दाव-धांव ऊपावा।
हूई एह मेरी गती हौनहारी, रहै बाल भ्राता हमाँरौ खरारी ॥७६७
ऊभै भ्रात की देह द्वै प्राँन एकौं, बढी दीह पै दीह[7] प्रीती बिसेकौ।
ईकै बेर कै दुंदभी देत आयौ, जिहीं बाल[8] कौं अर्ध-रात्री जगायौ ॥७६८
कपी बाल मोसौं भुजा जुद्ध कीजै, पिछाँनूं बली कौं हौयौ सो पतीजै।
महाँबाहू ऊठ्यौ गयौ संग में ही, तहाँ तैं भग्यौ बाल कौ देखतैं ही ॥७६९
धस्यौ दुंदभी किंदरा हू धरा कै, तिहीं पिट्ठ कौ बाल लाग्यौ तराकै।
महाँबाहू जाँन्यौ हितू भ्रात मोकै, रह्यौ द्वार ठाढौ जहाँ घाट रोकं ॥७७०
ईकै पक्ष[9] में दुंदभी मार ऐहौं, जबै भ्रात दौनूं पुरी संग जैहौं।
ईती औध कौ होय जो कोय अंता, मरचौ बाल कौं जाँन लैहौ सुमिता ॥७७१
गयौ बाल ठाढौ रह्यौ मैं गली पै, वितै मास कैहू जित्यौ ना बली पै।
बँहीं द्वार में रक्त की धार आई, भली भाँत जाँन्यौ मरचौ मोर भाई ॥७७२
सिला द्वार देकै चल्यौ मैं सभीता, रही राज-हींनो[10] पुरी स्याँम-रीता[11]।
मिले दक्ष मंत्री दयौ राज मोही, द्रुतं बाल आयौ भयौ भ्रात-द्रोही ॥७७३
सबै लूट लीनी मता नार संगी, भग्यौ द्वार मैं हू गई बुद्ध-भंगी।
ईहै आप के ताप बाली न आवै, दुरचौ मैं रहूँ सैल पै बेर दाबै ॥७७४
कह्यौ राँम बाली भयौ आप कैसै, जथा-जोग भाखी लगी नैन जैसै।
कही बात सुग्रीवहू राँम-काजा, सबै ही तहाँ कीस[12] ऐं ठे समाँजा ॥७७५

---

१ सेवा। २ प्रवीण = चतुर। ३ पृथ्वी। ४ आराम = बाग। ५ शोध = खोज। ६ अरि = शत्रु। ७ दिनों-दिन। ८ बाली। ९ पखवाड़ा, पन्द्रह दिन। १० राजा से रहित। ११ स्वामिरिक्ता = स्वामी से रहित। १२ वानर।

बली दुंदुभी देत वारा न पारा[1], पती कीस बाली नियुद्धं प्रचारा।
जुरे बीर दोऊ चतूर्जाम[2] बीते, जिही तैं कपी बालहू जुद्ध जीते ॥७७६
पछार्‌यौ ईहीं सैल पै सू पटक्यौ, जिहीं मुष्टका मार सौं देत जक्यौ[3]।
मुनीं की कुटी सैल जाही मझारा, धसी ताहि में आय अग्नेय[4]-धारा ॥७७७
मुनींसा गये अंग के मंजनें[5] कूँ, भले नीर सौं म्लाँनता[6] भंजनें कूँ।
सुनंदं मुरे[7] देख कै पर्नसाला, बढी आय कै कोध-ज्वाला बिसाला ॥७७८
कह्यौ ता गिरी देखहै जो कपिंद्रा, नसै छार[8] ह्वै कै बधै दीर्घ-निद्रा[9]।
ईही भीत सौं बाल आवै न यापै, जुतै मंत्रि-बर्गा रह्यौ आय जापै ॥७७९
सुन्यौ दुख्ख सुग्रींव को रांम खाँनं, प्रतज्ञा करी ताँम सारंगपाँनं[10]।
ईहीं बाल कौं मारहूँ बाँन येकै, बचै रुद्र को सर्न नाँहीं विसेकै ॥७८०
कही राँम साँ ताँम सुग्रींव कथ्थं, सबै भाँत सौं बाल जानौं समथ्थं।
ईहीं ताड़ है अद्ध-चंद्रं-अकारं[11], सोई बाल रोपे कहीं ले सु माँरं ॥ ७८१
बली एक ही बाँन साँ सप्त बेधै, खरौ बीर सोऊ कपी बाल खेधै[12]।
महाँबाहू श्रीराँम लै बाँन माँर्‌यौ, ईकै बेध साँ-मूल[13] सातूँ ऊखार्‌यौ ॥७८२

दोहा

ईहाँ साहँस देख्यौ अतुल, निज भुज-बल रघुनाथ।
कीय अस्तुत सुग्रींव कपि, हरख जोर जुग हाथ ॥७८३
बार-बार कर वींनती, करी अरज कपी-राज।
बाल बली कौं काल-बस[14] अब हम जाँन्यौ आज ॥७८४
हुकम होय सो करहि हम, नाँथ गरीब-नवाँज[15]।
बाल बली को होय बध, ऐसौ करहु ईलाज[16] ॥७८५

छंद हरगीतका

पत कीस की सुन आँन रघुपत धनुस बाँनन कर धरे।
ऊरजश्‍व[17] धारन कीयै ऊर में सरन पंपा संचरे[18] ॥

---

१ न पारावार = अपरिमित। २ चतुर्याम = चार प्रहर। ३ मरा। ४ आग्नेय = रक्तधारा। ५ मज्जन = स्नान, शुद्धि। ६ मैल। ७ लौटे। ८ क्षार। ९ मृत्यु। १० शार्ङ्गपाणि = धनुर्धर, राम। ११ अर्द्धचन्द्राकार। १२ मारे। १३ समूल = जड़सहित। १४ काल के वश में। १५ दीनबन्धु। १६ उपाय। १७ ऊर्जस्व = उत्साह प्रताप। १८ चले।

सुग्रींव श्रीरघुबीर की सुन बोल बाल बकार कै।
ऊठ बाल श्राय श्ररचौ ईतै घुर घेख संगर[1] धार कै ॥७८६
भिर परे रन की भूँम में भट भूँम-भूँम झपेट कै।
धमचक्क धक्कन धूँम बाढी भ्रात हाथन भेट कै।
बल तिष्ट कै सुग्रींव बाली मुष्ट मारी हीय-मही।
तज तुरत भागौ खेत तह सुग्रींव पीरा नह सही ॥७८७
ईक रूप रघुबर लखे ऊभयन भए बिस्मय-भाव[2] कै।
धनुं बाँन पाँन[3] धरे रहे घाल्यौ न रन में घाल कै।
सुग्रींव भागौ चरन सरनैं देख रघुबर कर दया।
तिह पाँन परसत[4] बज्र सम-तन तुरत कीनौं वह तया ॥७८८
सुंम-माल[5] कंठ सुकंठ[6] के पहिराय हित पहिचांन कै।
परचाय कर रन तत्परा जीय मित्र श्रपनी जाँन कै।
सुग्रीव बाली भिरे संगर उभय भट[7] श्रकुलाय कै।
कट-कटत विकट सु दाव कर-कर लपट-झपटन लाय कै ॥७८६
पहिचाँन रघुबर परसपर बल सरस बाढत बाज कौं।
लै बिटप[8] श्रोट ही सर लगायो करन ताके काल कौं।
हीय बीच लागत बिकल ह्वै धर गिरचौ बाली धूज कै।
पत श्रबध के लीय बरस कंपिपत पर्म मनसा पूज कै ॥७६०
गहि मुक्त-पद बाली गयो परलोक-हित पहिचाँन कै।
प्रभू-दरस दै कर सरस पावन[9] जन निरंतर जाँन कै।
सुग्रीव कौं दीय राज सबही सहत तारा सुंदरी।
जुगराज[10] श्रंगद बाल-श्रंगज[11] करचौ हित करुनाँ करी ॥७६१
सब राज-मंत्रि-समांज सौं निज काज निरभय निब्बहै।
बरसात-कालही पाय रघुबर गिर प्रवर्खन[12] कौं गहैं।
ईक फटक-मन[13] की गुहा श्रद्भुत नीक राची निर्जरा।
जुग भ्रात बैठे जाय जामह पाय सुख रुख तत्परा ॥७६२

---

१ युद्ध। २ श्राश्चर्यभाव। ३ पाणि=हाथ। ४ स्पर्श करते ही। ५ पुष्पमाला। ६ सुग्रीव। ७ योद्धा। ८ वृक्ष। ६ पवित्र। १० युवराज। ११ वाली के पुत्र। १२ निर्वाह करता है। १३ स्फटिकमणि।

प्रत संमृती रू पुराँन की बर बेद भेद बिचार की।
बालै अनेकन बिस्तरै छित[1] छत्रीया-धृम-चर[2] की।
लघु भ्रात ईक दिन लक्षमन कौं कही अनुँभव की कथा।
बैदेह-नंदनि[3] बिरह बाढ़त जल तरंगनि बल जथा ॥७६३
कैंकई ऊर की काँमना भई सिद्ध सहज सुभाव सौं।
पितु मरन हम बँनवास पायौ पुन तिहीं परभाव सौं।
बिन ज्याँनकी नहि अवध बस है हौनहार सु होय है।
अरु कर्म की गत पर्म अद्भुत धर्म सौं अध[4] धोय है ॥७६४
निर्भाग[5] मनुँके बंस निर्मत[6] हुयौ नाँहिन होयगौ।
मम संग आये तुमहुँ लछमन प्रीत-बस सौं चित पगौ।
अबहूँ सिधावहु अवधपुर कौं बिपत तज बनवास की।
चित हमहु लागी रहस चिंता तुमहु तन के त्रास की ॥७६५
अब नहिन दीसत सुख उजागर बेदना-सागर बिचै।
मन भयौ नवका[7] भँवर मेरी नाच पुतरी[8] नट रचै।
बस दुष्ट राँवन रहि बिदेही बिपत लहि बिस्तार कौं।
पति-सरित[9] बिच लंकापुरी पावै सु किंह बिच पारकौं ॥७६६
श्रीरांम की कर बात श्रवनन बोल लछमन बीर कै।
बिपता कहा तुम मति बिपश्चत[10] धरहु हीय-मह धीर कै।
भय-चकत[11] ह्वै तुम बचन भाखत है प्रगल्भ[12] हमेस सौं।
विद्वेस[13] अपनौ सबही बिध सौं लहैगे लंकेस सौं ॥७६७
बस सोक हुय कँहुँ अल्पबुद्धी बिपत करहि बिलाप कै।
देखी न यैसी देखहै अनधीरता मन आप कै।
पितु-मरन बिहरन बिपन पुन जिम सीया-हरन सु जाँनियै।
ईह काल को गत करन-अकरन-ऊद्धरन अनुँमाँनीयै ७६८
जिम जोग गनहु बिजोग संजुत भोग रोगहु गर्भता।
ईक एक पाछै होय अबस ही सुखहु दुखहु सर्बथा।

---

१ क्षिति = पृथ्वी। २ क्षत्रिय-धर्माचरण। ३ वैदेह-नन्दिनी जनकपुत्री सीता। ४ पाप ५ भाग्यहीन। ६ निर्मित = रचित। ७ नौका। ८ पुत्तली। ९ सरित्पति = सागर। १० विपश्चित् = विद्वान्। ११ भयचकित = भयकातर। १२ तीक्ष्ण। १३ = विद्वेष = वैर। १४ विपिन = वन।

जिह रीत बिछुरी जाँनकी पुन मिलहि अवसर पायकै ।
नहि सोक कीजै नाथ निर्भय बिपत चित्त बसाय कै ॥७९९
बरसात बीतत दिसा बिदसन[1] करहि सुध कपिराजहू ।
हँनमंत अंगद बीर हरबल सकल जोर समाँजहू ।
चढ़ जायगे रन खेत चत्वर[2] घने सत्वर[3] घेर कै ।
पति-लंक कौं कर-जेर[4] प्रहरन[5] बिढ परै जिह बेर कै ॥८००
अथवाँ क भरथहु भ्रात अपनौ अवधपुर सौं आंन कै ।
मिथला-नरेस मिलाय कै मिल घेर दल घमसाँन कै ।
जुर लंक कौं चढ़ जाँयगे जुत चँमूं[6] जोर जनाय कै ।
कछु सोच नाँहि कृपाल कीजै अधिक ऊर अकुलायकै ॥८०१
ईष्वाक कुल[7] की रीत ना ईह पेख लेहु परंपरा ।
रघुराज प्रपितामह रह्यौ धर छत्र भुजबल सहि धरा ॥
चढ़ आप ही रथ बढ चले दस दिसन देस-बिदेस कै ।
वसुमती[8] विजय बसायकै खल बिपुल दल-बल खेसकै ॥ ८०२
प्रभू-चरन के परताप सौं हम सरन रहत हमेस ही ।
सुर-असुर-जेता समुझीयै कछू आप मुख जात न कही ।
पति लंक रांवन कौं प्रचारहू जुद्ध करहै जायकै ।
भुज आपनैं ही भरोस सौं सीय आँनहै सरसायकै ॥ ८०३
बस काल की रात बज्रधर[9] नालीक[10] छिप रहे नाल में ।
पद लह्यौ सुरपति नहुक[11] नरपति कृत्रमी[12] बस काल में ।
पुन आप द्विज सौं पतित ह्वै धर परचौ अहमति धार कै ।
पद लह्यौ फिर प्राचीनबरही[13] काल पाय करार कै ॥८०४
कहुँ काल की रात कर्म सौं बिपता लही रघुबीरजू ।
साँमर्थ काँ कहा सोक है ऊर तजहु पीर अधीरजू ।
सौमित्र बतीयाँ सुनत हीं रघुबीर छतीयां सीयरई[14] ।
ह्वै गई ताही बेर हेरत जाँन बंधव रन-जई[15] ॥८०५

---

१ विदिशा । २ आंगन । ३ शीघ्र । ४ नीचा दिखाकर । ५ आयुध. युद्ध । ६ सेना । ७ इक्ष्वाकुकुल । ८ पृथ्वी । ९ इन्द्र । १० कमल । ११ नहुषराजा । १२ कृत्रिम = बनावटी, अवास्तविक । १३ प्राचीनबर्हि = इन्द्र । १४ शीतल हुई । १५ रणजयी ।

वर मुनी नारद बुध बिसारद ईहीं अवसर आयकै।
दहु भ्रात साथहीं दरस दीय नभ-पंथ[1] सौं नीयराय कै।
कर जोर प्रभू बंदन करी पूजा सरी हीय प्रेम सौं।
घट[2] भयो आँनद तिह घरी निज रीत प्रीत सुनेम सौं ॥८०६
विव[3] भ्रात अरु मुनिराज बैठे पर्म हीय सुख पायकै।
ईतीहास नाना रीत अद्भूत सुमृत-नय[4] सरसाय कै।
वच कहे रघुबर देव ब्रह्मो आय हम अमरावती।
किय हरन रांवन दुष्ट कँहुँ संग पंचबटि सीता सती ॥८०७
सब बिध उदंत जहाँ सुनी ईह जाँन आये आपहू।
अवलोक[5] विपता बेर ईह करीयै न सोच कदापहू।
ईक कथा कीजै श्रवन ईह जाँनकी पूरब-जनम की।
मुनि-कंन्यका तप करत वन में ताहि तीव्र करनै तकी[7] ॥८०८
कर हेत तिह रांवन कह्यौ कंन्या न मानी तिह कही।
भुज आप बल-अभिमान सौं गन अबल-जात[8] तहीं गही।
कंन्या सु बोली कोप कै उतपत्त ह्वै है मध ईला।
तव नास-हित लैजाहु तुम कहुँ हमहुँ चलहै जुत कला[9] ॥८०९
ईह अंस पध्मा[10] अवतरी पन आपही परभाव सौं।
लै गयौ ताकौं लंकपत निज नास-हित निरबाह सौं।
अज ईस नाथ अनांद आपही अरज देवन अनुसरी।
महाँराज रांवन मारने अवतार लीनो हित अरी[11] ॥८१०
सोई ईश्वरी सीता सती अज ईस आप अनांद के।
अरु वेद च्यारहू उद्धरन मही मंडता मरजाद के।
कर आततार्इ लंकपत कौं मारहो रन खेत में।
कछु अरथ शाहत जो कीयो है सबै धीरज हेत में ॥८११
पतिवृत धारैं सीया परबस रटत रांमही रांम कौं।
धर ध्यांन रांमही चरन ध्यावत बसत संग ही बांम कै।

१ आकाश-मार्ग। २ शरीर। ३ दोनों। ४ स्मृति-नीति। ५ देखकर। ६ कदापि = कभी। ७ दृष्टि से देखा। ८ अबल-जाति = स्त्री जाति। ९ इला = पृथ्वी। १० पद्मा = लक्ष्मी। ११ अरि = शत्रु।

पय कांमहूंभा[1] पान कर निरबाह अपने नेम कौं।
सोई इंद्र पठवत है सदाँ पन[2] आप गन निज प्रेम कौं ॥८१२
हम निजर--देखी कहत है ईह रांम निश्चय राखीयै।
कुल-नास रांवन कौ करन ऊर समुझ रन अभिलाखीयै।
ताको ऊपाय करै तथा जिह जथाँ-जोगही जांनीयै।
अब मास अश्वन[3] आयगौ बृत नउँ-रात्र[4] विधाँनीयै ॥८१३
विध पूर्व रीत बिचार कै करनीय काज करायहूँ।
बिध[5] बिस्नु हर जिह जिस्नु[6] बिध सौं जांमदग्न जुतं जही।
श्रीअंबका के हेत सुमरन कीयौ कौंसक-मुन कही ॥८१४
सुन रांम नारद सीख कौं बिध-जुक्त पूंछी बात कौं।
नारद कह्यौं सुविचार निज भगवती-बृत जुग भ्रात कौं।
आराधना कीय सक्ती-आद्या अष्टमी निस आय कै।
चढ सिंघ ऊपर चंडका बर लेहु कहो बतराय कै ॥८१५
जग-ईस रूप अनाद जलसय[7] आय रघुबर अवतरे।
लीय सेषहू अवतार लछमन बिपन-लीला बिस्तरे।
मुरजाद[8] च्यारहु बेद -मंडन खल-बिहंडन खेत में।
अरू देव सब कपि अवतरे रिपु-बंश मेलहि रेत में। ८१६
बाराह कच्छ रु मच्छ बांमन बार केऊ नर-हर[9] बने।
हरनंख[10] हंता हरन कस्यप गहे दानव अनगने।
कोंऊ बार भक्त सहाय कीनी अवनी-भार उतारनं।
अब ग्रेह दसरथ अवतरे महाँराज रांवन मारने ॥८१७
चढ जाहु लंक निसंक चत्वर धंख रन की धारियै।
संधार खल सीय संग लै प्रभू फेर अवध पधारीयै।
बरदांन दै रघुबीर कौं सुस्थान देवी संचरी।
ऊपदेस नारद पाय कै ईह अवध-पत मारे अरी ॥८१८

दोहा

लघु-बंधव सिद्धांत लख, नारद सीख निहार।
बर देवी रघुबीर लै तज्यौ सोक तिह बार ॥८१९

१ कामधेनु। २ प्रण। ३ आश्विन = आसोज। ४ नवरात्र। ५ विधि = ब्रह्मा। ६ जिष्णु = इन्द्र। ७ जलशायी = नारायण। ८ मर्यादा। ९ नृसिंह। १० हिरण्याक्ष

लखन सीया नहि सुध लई, बरखा गई बिहाय[1]।
कपि-पत कोंऊ बातैं कही, वही बघू रे बाय ॥८२०
प्रथम जाहु सुग्रीवपह, बात कहो सुबिबेक।
येते पै नहीं आयहै, और करहु ऊपाय ॥८२१
पवन-सुतन सुग्रीव प्रत, बात कही सुबिबेक।
मेघागम[2] बीतो समय, बरती सरद[3] बिसेख ॥८२२
बाल हन्यौ ईक बान सौं, यैसे संमृथ ईस।
तोहि भरोसे रहे तेऊ, गहब्बर[4] सीस[5] गिरीस ॥८२३
कछु विलंब नहि कीजीयै, काज राम कपिराज।
मंत्र बिचारहु सकल मिल, ईह अवसर है आज ॥८२४
बोले हनमत सौं बिहँस, समय देख सुग्रींव।
सरस धिक्रीया[6] बिसय-सुख[7], जाहि लुभायौ जीव ॥८२५
भूले रघुवर भाव कौं, रहे ग्रेह सुख राच।
पवन-सुतन हम कीयेऊ पन, सो तुम करहू साच ॥८२६
दूत भेज दिस-वि-दस कौं, बंदर लेहु बुलाय।
सैल समंदर बिपन सौं, आवहिगे अकुलाय ॥८२७
सुन अंगद बोल्यौ संमुभ, दक्ष समय-गत देख।
औरन को नहि कांम ईह, बिन हनमंत बिसेख ॥८२८

छंदा मुक्तादाम

सुने जुगराज के बायक आंन, हल्यो[8] कपि लेवन कौं हँनूमांन।
गयो सोई पूरब की लहि गैल[9], सबै बन किंदर वासीय सैल ॥८२९
मिल्यो गव जाय जहाँ हँनमंत, बड़े दल संग लीयें बलवंत।
कही हनमांन सुनी कथ आंन, प्रचारीय ताहीय वार प्रयांन ॥८३०
पठाय कै ताहि चल्यो नभ-पंथ, समै तिह राघव की निज संत।
गयो गिर रोहिन है गमगीर, बसैं जहाँ दुर्धरहू कपि वीर ॥८३१
कही रघुबीर सुग्रीव की कथ्य, सबै भट लै चले बीर समथ्थ।
चल्यो कदली बन कौं कर बाहि, मिल्यो गज जाय तही पल मांहि ॥८३२

१ बीतगई। २ वर्षा ऋतु। ३ शरद ऋतु। ४ गह्वर। ५ शीर्ष = सिर, शिखर।
६ [illegible] = [illegible]। ७ भोग-विलास। ८ चला। ९ रास्ता।

हकार कै बीर कही हँनूमाँन, सुग्रींव कौं भीर परी सुसथाँन।
बुलाईय बंदर लै ईह बेर, हले तुम जाबहु पाबहु हेर ॥८३३
चल्यौ गज फौज लीयै कपि चंड, मचक्कीय सेस हल्यौ बृहमंड[1]।
गही पब-कंकटहू बृज गैल, सभारत बीच घने बन सैल ॥८३४
बली सत पाठर सौं बल बंड, झिले संग केक मिले कपि-झुंड।
बिदा कर ताहि चल्यौ तिह बार, बिचच्छन राँम को काँम विचार ॥८३५
चल्यौ सुत-पौंन-कौ[3]पौंन की चाल, निरख्खीय पब्बय[4]धुंधर नाल।
मिल्यौ कपि जाय सिखंडीय मित्त, तहीं समुझाय कह्यो बरतंत ॥८३६
कराय कै कूंच चल्यौ तिह केर, हल्यौ मग अंजनी पब्बय हेर।
मिल्यौ तहां चाहि कै जाय कुमंद, ऊचारीय कथ्थ बली-मुख-इंद[5] ॥८३७
चल्यौ दल लै संग बीर चछोह, किलक्कत रांवन पै कर कोह[6]।
चढ्यौ हनुमंत जवै बरबंड, पहूँचिय नीलगीरी परचंड ॥८३८
कही सब कथ्थ क्रसांनु-कुमार[7], बली-मुख नील कौं ताम बकार।
गरज्जत बीर चल्यौ कर गौंन, हरखत[8] होय बढ्यौ हनूँमाँन ॥८३९
मिल्यौ अपरादिस[9] जाय मुकाँम, गिरी गिर कीस चले गुन-ग्राम।
ऊठे कपि बासीय के अरबद्द[10], सबै रघुवीर करै-जय सद्द[11] ॥८४०
गयौ हनुमंत गिरी गिरनार, पनंस कौं कोन बिदा परचार।
वही दिस तै चल उत्तर ओर, जबै हनुमंत चल्यौ बरजोर ॥८४१
धरचौ चित बद्रीयनाथ कौ धाँम, लख्यौ गंध-मादन अद्र ललाँम।
गवाक्षहू और कीयौ गव गौंन, हकीकत काँन सुने हनुमाँन ॥८४२
बिलोकीय अंजनि पब्बय बास, जुहारिय ताराय बंधव जास।
सुग्रींव की कथ्थ सुनंत सुखैन, सबै भट बोल लीयै सज सैन ॥८४३
चहैं सोई राँम के काँम कौं चित, हल्यौ कनकाचल कौं हनुमंत।
लँगूलन[12] लै संग केसरीनंद, गहै चिब[13]सोवृँन[14]मान गयंद[15] ॥८४४
करोरन ऊठ चले अकुलाय, बढ़े तन पोरुख बीर बलाय।
घनै बन पब्बय लंघत घाट, बढ्यौ किवलास[15]की मारुत[16] बाट ॥८४५

---

१ ब्रह्माण्ड। २ हनुमान्। ३ पवनसुत हनुमान्। ४ पर्वत। ५ कपिराज। ६ क्रोध ७ कृशानुकुमार = अग्निपुत्र, नील। ८ हर्षित। ९ पश्चिमदिशा। १० अर्बुद = आबू ११ जयशब्द। १२ लाँगूल = लंगूर। १२ छवि = शोभा। १३ सौवर्ण, सौना। १४ गजेन्द्र = हाथी। १५ कैलाश। १६ मारुति = हनुमान्।

पुलंद सौं बात कही पहिचाँन, बिजै संग भ्रात लयौ बलवाँन।
सुग्रींव सौं राँम की जान सनेह, चल्यौ निज धाँमही सौं कर छेह ।।८४६
तवै मयनागिर[1] कौ हनमंत, पयानय[2] कीन गहै नभ-पंथ।
मिल्यौ कपि अंडक सौं हँनूमाँन, बिदा कर अग्र गयौ बलवाँन ।।८४७
जहाँ जल-बालक[3] ऊपर जाय, सुकंठहू राँम को बात सुनाय।
विदा कीय ताहिय बेर बसंत, ऊसंडीय मर्कट[4] संग अनंत ।।८४८
बिजै-गिर ऊपर मारुत बीर, मिल्यौ दुरमुख्ख[5] सौं ह्वै हमगीर।
कही कपिराज सुनी सोई कथ्थ, सँभारीय पौनप गौंन समथ्थ ।।८४९
विवेक कौं केसरीनंद बिचार, पहूँचीय कस्यप सीस पहार।
मयंदही बंदर सौं कर मंत, तिही ऊठ चालेऊ बीर तुरंत ।।८५०
गये गज संग मयंद गयंद, निहार कै कारज औध-नरिंद।
हल्यौ पुर कासीय कौं हँनुमाँन, मिल्यौ सोई रिछ्छपती जँमुवाँन[6] ।।८५१
सुकंठ कौ पत्र दयौ सरसाय, चल्यौ सोई सासन[7] सीस चढ़ाय।
अनेकन भाल[8] मिले संग और, चले सोई सादर खादर छोर ।।८५२
निसारन[9] देखकै भल्लुक-नाह, ईतै हनुँमंत चल्यौ अवगाह।
गयौ धवला-गिर पै कर गाँन, मिल्यौ कपि दुग्ध सौं ह्वै मिजमाँन ।।८५३
विदा कीय ताहीय कौं बतराय, ऊदै-गिर जाय चढ्यौ अकुलाय।
कही कपि जायकै कूख कुमंद, सभौ दर कूंच सु जुद्ध समध ।।८५४
सुकंठ के मित भये घँनस्यांम[10], रघूपति जाहि को नाम है राँम।
पिता किहु कारन दीन पठाय, ईहाँ वन-वास रहे सोऊ आय ।।८५५
सीया अत रूपवती तीय संग, पती-गढ-लंक सुन्यौ परसंग[11]।
अकेलीय देख हरी तिह आय, जिहो फिर खोजहिगे सब जाय ।।८५६
सुग्रींव कौ मित्र कर्यौ सुविचार, हन्यौं तिह वैरिय बाल हकार।
रहे गिर छाय प्रवर्षन राँम, करै मिल कै कपि ताहो को काँम ।।८५७
गये सब वंदरहू कर गाँन, घनें दल मेल कीयै घमसाँन।
हकीकत जाहि सुनी हनमंत, चले सब वानरहू कर चिंत ।।८५८

---

१ मदनगिरि। २ प्रयाण=प्रस्थान। ३ विन्ध्याचल। ४ वानर। ५ दुर्मुख। ६ जामवन्त। ७ आज्ञा। ८ भालू, रीछ। ९ निस्सारन=प्रस्थान। १० राम। ११ प्रसङ्ग।

सजे तरु आयुध मूसल सैल, गरज्जत सोय गये लहि गैल।
पहूँचिय आय सुग्रींव के पास, जुतै हनुमंत जुहारीय जास ।।८५६
कीयौ ईम रांम कौ कांम कपीस, किते दल लाय बुलाय कै कीस।
पराकम पौंन-के-पूत कौ पेख, अचंभत होय सबै अवरेख ।।८६०

दोहा

ईह अवसर आये ईहां, रांमांनुज[1] कर रीस।
जुथ्थप[2] जुथ्थ मिले जिते, सबन नमांये सीस ।।८६१
कपि देख्यौ चहु दिस कटक[3], अगनत नैन अनंत।
राजा अरु जुगराज की, मँहमां सुन हूँनमंत ।।८६२
सांत भई ऊर संमुझकै, रांमानुज की रीस।
अंगद कौं कर अग्र ईत, परसे[4] पाय कपीस ।।८६३
पुन तारा परसे पगन, लगन कांम सीय लेख।
मगन भये लछमन समुझ, द्रगन कटक कपि देख ।।८६४
कोऊ अठारा पदंम कपि, संख्या कहत सयान।
कोऊ कहत अगनत कटक, हाजर[5] कीय हूँनूमांन ।।८६५

छंद हरगीतका

सोंमित्र देखेऊ कटक सब चहुँ ओर किसकंधा[6] छयौ।
अनगनत जुथ्थप-जुथ्थ आये लेख परकर ऊर लयौ।
बहुभेख-भेखन के बनोका[7] अधक येकहु येक के।
कोऊ सुकल-बरन[8] रु हरन[9] करबुर[10] रूचर[11] स्यांमल रेख के ।।८६६
पुन सेत रंजन पिंजरू[12] कपि येत धुंमर[13] काय के।
सिल मुसल तरवर लीयें साखा बेग चालत बाय[14] के।
कर जोर लछमन सौं कही जुगराज अवसर जान के।
दीय आप द्रग[15] अनूंप दरसन परम हेत पिछांन के ।।८६७
अभलाख[16] सब कै दरस की ऊर रांम सांसल रंग के।
रहि रावरे बस नैन-राजिव[17] और करहु ऊमग के।

१ लक्ष्मण। २ यूथपति। ३ सेना। ४ स्पर्श किये, छुए। ५ उपस्थित। ६ किष्किन्धा। ७ वानर। ८ शुक्लवर्ण। ९ हिरण्य, सौने। १० कर्बुर=कवरे, विचित्र। ११ रुचिर =सुन्दर। १२ पिंजर=पीले। १३ धूम्र। १४ वायु। १५ दुर्गनगर। १६अभिलाषा= इच्छा। १७ नयनराजीव=नेत्रकमल।

सुन लखन बांनी समुझ के कपिराज सौं यैसी कही।
सब जुथ्थ-जुथ्थप संग लै आगैं सो चालीयै आप ही।।८६८
सोंमित्र बाँनी ईह सुनी सुग्रींवहूं सरसाय कै।
कपिराज औ जुगराज परकर[1] सैन-जुत सुख पाय कै।
सब लहै लछमन संग सुभटन गिर प्रवर्षन कौं गये।
कीय दरस रघुवर-चरन-कँमलन ठौर-ठौरन कपि ठये।।८६९
कर जोर लघु भ्राता कहीं राजीव-लोचन राँम कौं।
कपि-पत बुलाये कोंऊ कपि कौं करन अपनें काँम कौं।
कपिराज सौं पूछी कथा कपिराज कहि हँनमंत कौं।
निज जुथ्थ-जुथ्थप नाँम लै कहि देस धाँम दिगंत कौं।।८७०
परचंड पिंड अगाध पौरुष वपु[2] वयंड[3] विधाँन के।
भुज-दंड मंडत सुंड[4] सर भर चंड रुख चहराँन के।
लै नाँम परकर लारही हँनमंत कीनी हाजरी।
दसरथ्थ-नंदन देख कै घन भयौ आँनद तिह घरी।।८७१
सुग्रींव कौं कहि कै सखा[5] पुन प्रेम-द्रिष्ट पसाव कैं।
सीता कही सुध लैन को ईह करहु प्रथम ऊपाव कैं।
सुग्रींव सिर पर धरचौ सासन करी भासन ईह कथा।
गज दूत और गवाक्ष कौं जाँने सुदक्षहि मति जथा।।८७२
प्रेरे सु द्वै दिस पूर्व कौं सो सहित सैन समाज कैं।
कपि चले जिह संग सप्त-कोटक[6] करन-सीय सुध काज कैं।
अरु कपि सुखेन मयंद ऊत्तर चूने सत्वर चाहि कैं।
सुग्रींव को धर हुकम सिर पर अमित धार उछाह कैं।।८७३
ईक पदम संग अनीकनी[7] वनचर[8] विचक्षन की वही।
धर धूज धवकन सौं धुकी सवकुपक्क नागाधिप[9] सही।
पुन कपि वसत पठाय पछ्म येक पदम अनीकनी।
सासन दयौ कपिराज कौं सुन ध्याँन धर कवसल-धनी[10] ।।८७४

---

१ परिकर=समुदाय। २ वपु=शरीर। ३ हाथी। ४ शुण्डा=सूंड। ५ मित्र। ६ सात करोड़। ७ सेना। ८ वानर। ९ शेषनाग। १० कौशल्यापुत्र राम।

कपि नील अंगद वज्र-कंकट जाँमवंत सु जाँन कौं।
बोलाय कै कपिराज बोलेऊ बिमल तिह प्रत बाँन[1] कौं।
मैथली हेर निहोर मोरहु काँम है श्रीराँम कौ।
ऊद्धार कारन ऊभय ओरन धाँम अरु परधाँम कौं ॥८७५
तन ओर मन सौं होय तत्पर करहु याही काज कौं।
ईक मास की है अवध[2] यामहु सबही कपन-समाँज कौं।
सब जाहु दख्खँन दिसा समिलत[3] धाँम रांवन धाय कै।
जहाँ देख द्रगनन होय जैसी ईहा कहीयै आय कै ॥८७६
सुग्रींव कौ सासन सुन्यौ ऊर राम-गुन अवगाह कै।
परसे जुगल-पद पाँन सौं ऊर धार सरस ऊछाह कै।
कर मुद्रका[4] दीय वज्र-कंकट लयेऊ सीस नमाय कै।
ह्वै बिदा चाले होय हरवल[5] अधिक ऊर अकुलाय कै ॥८७७
मिल कीस बीस करोर सम्मत गहन गहबर गिर गुहा।
बढ चले खोजत बन रू ऊपवन भाँत-भाँतन भुअरुहा[6]।
ईक बज्रदंड प्रचंड आसर[7] यहां खंडही में मिल्यौ[8]।
भुजदंड अंगद भेंट भय दीय फेट दुष्टही दलमल्यौ ॥८७८
केऊ लखत मिंदर[9] किंदरा पहुँचे समंदर पास कौं।
बिन-पंख ग्रीध जटायु बंधव ताहि लख भय त्रास कौं।
पुन परसपर पहिचाँन ह्वै कपि जाँन रघुवर-किंकरा[10]।
बिसवास दीय संपात बहुबिध कपिन ऊपदेसही करा ॥८७९
बिच रहत सोय असोक उपबन मोहि दीसत मैथली।
तुम जाहु गढ लंका तही बरबीर धीर महाँबली।
परताप रघुवर सरत-पत कौं लांघ सत-जोजन[11] लहौं।
सीय-दरस सौं सुख पायहौ सु बिचार कर जाँनहु सही ॥८८०
कहि कथा खग[12] रघुबीर की सहि-गरुत होय सिधायगौ।
कर दरस श्रीरघुबीर के पुन परम पद कौं पायगौ।

---

१ वाणी। २ अवधि=समय। ३ सम्मिलित। ४ मुद्रिका=अंगूठी। ५ अग्रणी। ६ भूरुह=वृक्ष। ७ असुर=राक्षस। ८ मारडाला। ९ मन्दिर। १० किङ्कर=सेवक, अनुचर। ११ शतयोजन=चार सौ कोस। १२ पक्षी।

वारीस[1] के तट गये कपिवर गहर लहर गँभीर कै।
डिंडीर[2] अरु बुदबुद[3] दिखावत भ्रमर जल-कन भीर कै॥८८१
तिर रहे कुंभी अरु तिमगल[4] कच्छ मच्छ भयंकरा।
जुगराज मिल पहुँचे जहां कपिबीर रघुवर-किंकरा।
गज और नील गवाक्षहू नल पनस दधिमुख सबनहीं।
पुन कहि पराक्रम परसपर जुत जाँमवंत रहे जिहीं॥ ८८२
साँमर्थ लंघन नहि समंदर और बंदर की ईहाँ।
हँनमत बिन नहि काज होवँह जोर दल बोले जहां।
सिद्धांत सब कौ श्रवन सुन जब रिच्छपत[5] जुगराजहू[6]।
हँनमंत सौं बोले हरख कपि सरहु रघुवर काजहू॥८८३
पय अंजनी गून करहु परगट सुत-प्रभंजन[7] ईह समै।
मन वेग ज्यूं तन वेग मंडत लाँघ जैहौं पलक में।
विरदाय[8] बोले जहाँ बनौका श्रवन धुन हनमंत सुनी।
रस रौद्र अरु तन बीर रस की चंडता[9] बढ चौगुनी॥८८४
कोसीदता[10] मन छेह[11] कीनौ अरत[12]—गरत हीयै अटी।
दृढ भाव सौं सीय करन दरसन चित्त बाढी चटपटी।
इँद्रायतन[13] आभा बढी अत बर्न स्वर्न बिसेखीयै।
कुल राखसी लंका खयंकर दृग भयंकर देखीयै॥८८५
वय-वृद्ध अरु धीय[14] वृद्ध कपिवर रिच्छपति जुगराज सौं।
कर जोर कैं तहाँ कीय नमसक्रत सकल समिल समाज सौं।
गिर श्रृंग देख ऊतंग[15] गहबर अंग धार ऊमंग कै।
ऊतमंग चढ तज सग औरन छेक-पाँव[16] छलंग कै॥८८६
रघुवीर के रुच रंग सौं जनुं पंख कनकाचल[17] जुटी[18]।
बजरंग चाल्यो वीर कै चढ चंग डोरी कर छुटी:

---

१ वारीस = समुद्र। २ झाग। ३ बबूले ४ तिमिङ्गिल = मगर, मत्स्य। ५ ऋक्षपति = जामवन्त। ६ युवराज = अंगद। ७ वायुपुत्र। ८ प्रशंसा करके। ९ उग्रता। १० आलस्य। ११ छय = दूर। १२ आतुरता। १३ इन्द्रियायतन = शरीर। १४ बुद्धि। १५ उत्तुङ्ग = ऊँचे। १६ शीघ्रगामी। १७ सुमेरपर्वत, सोने का पर्वत। १८ जुड़ गये।

मारी सु हक्क मलंग कै अकवक्क आसर-आवली।
तररक्क नैन तरेर त्यों गोलक्क नालीय लीय गली ॥८८७
आलुक्क[1] धुक्कीय सीस अरु कररक्क पिठु हू कूरमी[2]।
मद मुक्क धक्कीय दिक्करी क्रम[3] जेम चक्क भूमी जमी।
चुक्कीय सँमाध महेस चित सुन स्वांस रुक्कीय निश्चरा।
नभ-पंथ दछ्छन दिस ललक्कीय तक्क लंका तत्परा ॥८८८
परबत ऊदंबर[4] पक्क ज्यों धमचक्क धरनी मह धस्यौ।
पायोद खलभल चल परी सरसुक्क सलता जल[5] सुस्यौ।
दुस्तर ऊलंघ महाँ नदध कौं बिवध बिधन बचायकै।
कर गवन नंदन-केसरी नभ-पंथ सौं नीयराय कै ॥८८९
ईक बिकट गिर पर चढेऊ ऊत्तर चित्त चातुर वनचरा।
पुन कनक कोट बिसाल पत्तन भूँम खाई जल भरा।
लंका अनूँपम रूप लालित भूप राँवन आजही।
ईकपिंग[6] द्रंग बिलोक आक्रत जास आँगें लाजही ॥८९०
सोवर्न-मिंदर सुभग सुन्दर द्रग ईकंदर देखीयें।
जगमगत दीपक जोत सौं ऊद्योत मनि अवरेखीयें।
पुर आसपास ही पहरुआ[7] कंऊ बीर रखवारी करै।
कांडीर[8] प्रासक[9] खड्ग-धर कंऊ फरस-धर चौकी फिरै ॥८९१
हनमंत रक्षक हेरकै तन मक्षका लघु कीय तहाँ।
सब धाँम धाँमन सोध कै सोई जाय राँवन ग्रह जहाँ।
सब हर्म[10] सोधेऊ पर्म सुंदर सयन सुख दससीस कौं।
सुर आसुरी रांनी सबै बहु देख बिसवा-बीस कौं ॥८९२
अवरोध[11] सोध बिचार ऊर में, बज्र कंकट पथ वह्यौ।
ईक बभीखन कौ लख्यौ आलय रांम अंकत ह्वै रह्यौ।
पुन पवन सुत पहिचाँन कै गवने सु ताही गेह कौं।
तिह बेर तंद्रा ताहि तन सौं छाँड कीनो छेह कौं ॥८९३

---

१ शेषनाग। २ कमठ। ३ पैर। ४ गूलर का फल। ५ समुद्र। ६ कुबेर। ७ पहरेदार ८ धनुषधारी। ९ भाले रखने वाले। १० रानियों के महल। ११ रनिवास।

रट राँम रांम ही नाँम रसना हेर होय हनुमाँन कैं।
विश्रंभ[1] पाय विवेक बस जोय माँहि लीनौ जाँन कैं।
कर विप्र रूप ही बज्र कंकट मिल बभीखन कर मतौ।
संदेह-हारक राँम कौ सुन प्रीत कर दीनौ पतौ ॥८९४

वैदेह-तनयाँ वसत है अतदुखी बाग असोक में।
अरु भीर जहुँ दिस आसुरी ऊन रहत तिन की रोक में।
गहि वीर चाल्यौ तिह गली मैथली दरसन मेल कौं।
जहाँ देख तर-तर[2] जोय कै ऊर हेत जाहि ऊबेल कौं ॥८९५

जव लखी नैनन ज्याँनकी वह बिटप ऊपर आय कै।
पल्लवत साखा देख पत्रन सुभट तन सकुचाय कै।
बिच ताहि देखत बैठ कै रसना सु सुमरत राँम कौं।
आयौ सु राँवन जिहीं अवसर कलहि किंकर काँम कौं ॥८९६

सव विध कह्यौ समुझाय कै माँनौ न बातें मैथली।
तव दुष्ट कर तरवार लैं चल निकट आयौ तव छली।
मंदोदरी समुझाय पति-मन सदन लै गई संग कै।
देखी दसा हनमंत निज द्रग असह[3] लागी अंग कै ॥८९७

जाँन्यौ न अवसर जाहि सौं जव कछू पराक्रम नहिं करयौ।
रघुबीर किंकर देख रूख सौं दलन तरवर बिच दुरयौ[4]।
तनया वभीखन नाम त्रजटा जाहि सौं कहि जाँनकी।
ईक मास की कीनी अवध पति-लंक मोहि वध प्राँन की ॥८९८

ईह वार अनलहि[5] आँन दै तन तजें वच हूँ त्रास[6] सौं।
अब तो होयें अकुलायगो वस राक्षसी ईह वास सौं।
त्रजटा विचक्षन भक्ति तत्पर कही सुप्न सही कथा।
कबहूँ न मिथ्याँ होय कारन जानीयै साँची जथा ॥८९९

ईक आय मर्कट[7] विकट आकृत लंक दीनी लायकै।
तपनीय[8] नगरी ताप सौं तप पाप राँवन पाय कै।

१ विश्राम । २ वृक्ष-वृक्ष । ३ असह्य । ४ छिपा रहा । ५ अग्नि को । ६ भय कष्ट
७ बानर । ८ सोने की ।

अरु बाँनरी फिर सैन आई, रोख जुत रघुराय की।
मिल पीया देवर संग में सोई सीया करन सहाय की ॥९००
भुज बीस काटेऊ सीस दस भय रथारूढ भयंकरा।
पुन दिसा दख्खन कोय प्रयानौ पती लंक वहे परा।
पुन बभीखँन लंकापती रघुबीर कीनौ रीझ कै।
सकुटंब रांवन कौ सघारयौ[1] खरारी कर खोज कै ॥९०१
सब राखसी बाँनी सुनो त्रजटा कही सीय ताहि कौं।
सीता नमाये सीस सादर परी तिह छिन पाय कौं।
ऊपदेश कर सीय देख अरु गँवनी सु त्रजटा गेह कौं।
सीय रही बैठी समट संचर[2] सुमर राँम सनेह कौं ॥९०२
ईह देख अवसर पवन-अंगज मुद्रका डारी मही।
ईत मैथली अवलोक कै गनकै अँगारी कर गही।
लख तेजमय सीयरी[3] लगी होय होय बिस्मय हेरकै।
अभिराँम रघुवर नाँम अंकित ऊर्मका[4] लीय एर कै ॥९०३
कंकेल[5] ऊद्ध[6] लख्यौ कपी सीय भई विस्मय साथ कै।
भुव ऊतर कै हाजर भयो हनमंत जोरे हाथ कै।
बरबीर कीनी बीनती घर धीर सीता ऊर धरी।
संदेह-हारक राँम की सुन स्वर्न दिन भय सरवरी[7] ॥९०४
सब रीत सौ धरनी-सुता[8] बरनो कथा रघुवीर की।
कुसलात पूँछी बज्र कंकट स्याँम राँम सरीर की।
बिनती करी तिह बेर में बीती सु पाछै बात की।
सुनके अँनंदत भई सीय रुच जाँन श्री रघुबीर की ॥९०५
जब कह्यौ कपि सौं प्रीत जुत हृथभाग मो कह हेरीयै।
पत[9] हु बिसारी दीन पतनी घनै संकट घेरीयै।
दंतावली बिच देखीयै सोमाल रसना सौं करै।
मैं रहत निस दिन दुख मही बिरदंत सुनीयै बाँकरे ॥९०६

---

१ मार डाला। २ शरीर समेटकर। ३ शीतल। ४ अँगूठी। ५ अशोक। ६ ऊपर। ७ शर्वरी=रात्रि। ८ सीता। ९ पत्नी।

कंपाक-सुत[1] सीय सौं कही निज हृदय सोक निवारीयै।
रघुवीर बंदर रीछ कौ सज सैन सस्त्र सँभारीयै।
ईह लंक गढ कौं आयके दसकंठ के दल कौं दलै।
परवार जुत हन लंकपत कौं मोदमय रघुपत मिलै ॥६०७

दोहा

जब बिस्मय जुत जाँनकी, हनुमत बोली हेर।
कपि की नर सौं प्रीत कह[2], बनी कहा ईह बेर ॥६०८
सब विध वाल सुग्रीव कौ, सिय सौ कहि संवाद।
हनमत सौं सुन हरख हुय; बिसमय टरी बिषाद ॥६०९
मात सीया हनुँमाँन सौं, समुझ कह्यौ संदेह।
हैं तुम जैसे और हू, दुरबल बंदर देह ॥६१०
ए आसर[3] परचंड अत, बपु बल बंड बसेख।
मंड सकँहि कैसे समर, दंड भाव कर द्वेख ॥६११

छंद नाँराच

सीया सँदेह जाँन श्रेय आंजनेय ऊकन्यौ।
करंत[4] रोम कंधरा विसाल आकती वन्यौ।
प्रचंड मंड पौरखं घुमंड चंडता घनी।
प्रभा ऊमंड पिंड[5] की बिसाल सैल सी वनी ॥६१२
भुजाँन डंड भार कौं यितुंड[6] सुंड वेखीयै।
अखंड वक्रतुंड[7] ओप वीरता विसेखीयै।
सीया लख्यौ सरूप सोय आंजनेय अंग कै।
विश्रम्भ पाय वात कौ ससुंभ धीर संग कै ॥६१३
असीस दीन आंजनेय कीस[8] राम काम के।
बिजै बसाय दूर विघ्न जाय जाँम-जाँम[9] के।

---

१ पवनसुत हनुमान। २ पू. प्र. कहा। ३ असुर। ४ कृत्त=चमड़ी। ५ शरीर।
६ हाथी। ७ मुख। ८ वानर। ९ प्रहर।

असीस लै नमाय सीस श्राय पाय कौं परयौ ।
जुहार पंचसाख[1] जोर येहु बाक ऊच्चरयौ ॥६१४
फली बिलोक बाग फूल-गर्भ[2] रोचकं गह्यौ ।
कटै सु कालखंज[3] कौं कछू न जात है कह्यौ ।
मिलै जु मात मोहि कौं सखेप मात्र सासनं ।
लखाय लेह[4] लेह सो श्रहूँ कछूक ग्रासनं ॥६१५
सीया कह्यौ बिलोक संक रक्षकं समाँज कौं ।
विचार कै बचाय बीर खेम लेहु खाज[5] कौं ।
उठ्यौ ऊमाँह ग्रांजनेय मात बात माँन कै ।
ऊकाट कौं नमाय कंध जोर पाँन जाँन कै ॥६१६
बिलोक रक्ष बाटका सुघाटका फलीन सौं ।
झुकाय दै झपाट का मुकाय[6] मंजरीन सौं ।
ऊड़ै फलंग छेक येक येक सौ ऊतावरौ ।
गहै सिखा ऊखार गोढ दूठ पौंन-डावरौ ॥६१७
ऊठे अनेक आसपास रूठ बाग-रक्षका ।
गिलोल मार गोफना डहंत डंड दक्षका ।
ऊठाय संकु[7] ग्रांजनेय जुद्ध क्रुद्ध सौं जुरयौ ।
पचार कै[8] प्रहार दै भुजंग भीम ज्यौं भिरयौ ॥६१८
किते मरे गिरे किते जरे सुरोख ज्वाल का ।
परे कितेक राजपंथ ग्राय कैऊ तालुका ।
जगाय पौंन जोर कै कही सुकीस की कथा ।
सुनी सु पाँन-बीस[9] ग्राँन रोख रंग ह्वै रता ॥६१६
ग्रखै-कुमार ग्रंगजं बकार कै कही बली ।
बिगार राज बाट का छिपै नहीं कहीं छली ।
बिलोक जाय बाग कौं कीयै सुबंध कंधरा ।
हमैं दिखाहु हाजरी चछोह काँतराचरा[10] ॥६२०

१ हाथ। २ फल। ३ कलेजा। ४ लेने योग्य। ५ भोजन=खाने योग्य फलों को। ६ अलग=पृथक् करके। ७ खूंटा=वृक्ष। ८ ललकार कर। ९ रांवण। १० कान्तारचर =बानर।

सुन्यौ सु राज सासनं बिचार जाय बाग में।
अखै कुमार आय कै उसार हाथ आग में।
सुभट्ट ठट्ठ संग लै गरट्ट बाग घेर कौ।
समट्ट[1] बीर सालुरे बिकट्ट जाहि बेर कैं ॥६२१

अखैकुमार आँजनेय एह बाँन ऊच्चरचौ।
अरे अजाँन कीस आय पास काल क्यौ परचौं।
लिगार[2] वारना लगी करचौ महाँ कुलाहलं।
सुन्यौ सु आंजनेय सोर जोर होय जाजुलं ॥६२२

ऊखार बृक्ष आचसौं[3] पुलाय लाग पिट्ठ कौं।
गिराय कैं दये गरार[4] चाय मार रिट्ठ[5] कौं।
अखै कुमाँर आय के जुरचौ सु जंग जोर सौं।
क्रव्यात[6] घात केकरी मुरचौं न सो मरोर सौं ॥६२३

अभंग आंजनेय की लगी सुअंग लात की।
जथ्यौ ईतै वही जहीं हठी चपेट हाथ की।
पसार पाँनकौं परयौ प्लबंग[7] मार पाय कैं।
अखैकुमार अंतकं[8] जुहार कीन जायकैं ॥६२४

महाँ बिखाद मेटकै गँभीर नींद गज्जयौ।
अग्ग्रज[9] आंजनेय पाय भीरु साथ भज्जयौ।
करी पुकार जायकै सुनाय बीस- श्रौंन कौं।
प्रचार[10] इंद्रजीत पूत पीस दंत पाँन कौं ॥६२५

अधीस-लंक आननं कही सु कीस की कथा।
बलाय एहु कौंन बीर जानीयै जिहीं जथा।
अखै-कुमार मार और बाग कौं बिगार कैं।
गलार[11] कौं करै गहीर द्वेख[12] हीय धार कैं ॥६२६

सुनी न जाय श्रौंन सौं कथा अयान[13] कीस की।
बिसेख दंड दै बिना रुकै न आँच रीस की।

---

१ समान। २ उलांघकर। ३ हाथ। ४ समूह = झुण्ड। ५ रीठ। ६ राक्षस। ७ बंदर। ८ यमराज। ९ [illegible]। १० बुलाकर। ११ शोर। १२ द्वेष। १३ अजानी।

कराय जेर[1] बंध कंध दुष्ट कौं दिखाईयै।
असोक बाग इंद्रजीत जाहि बीच जाईयै॥६२७
कही पिता सुनी कथा निहाँर मेघनाद कौं।
चल्यौ नमाय सीस कौं बिचार कीस बाद[2] कौं।
गयौ असोक बाग में घुमंड फौज घेर में।
अर्‍यौ सु आंजनेय सौं बकार[3] जाहि बेर में॥६२८
बिचार बैर बंधवं लगी सु हीय लाय[4] कै।
धिक्यौ मर्‍यौ पर्‍यौ धरा जक्यौ[5] लख्यौ सु जायकै।
बिसार सोक बीर कौं मरोर मुछ्छ माँन सौं।
कपी सुनंद-केसरी प्रहार कीन पाँन सौं॥६२९
बिसाल आँजनेय बृक्ष आच[6] लै ऊखार कै।
छक्यौ ऊमंग छोह सौं धिख्यौ सु धेख धार कै।
प्रपात कौं प्रचार कै दई सु मार दंड की।
लपेट फेट लाग कै भपेट भौर भुंड की॥६३०
परी सु कूक आसपास मूँक प्राँन लै मही।
फिरै ईलात चक्र फेर बाँहनी बही बही।
जुर्‍यौ बकार इंद्रजीत सज्जकै सतांग कौं।
भुजाँन के भरोस भाग सैन त्याग संग कौं॥६३१
मलंग आँजनेय मंड दंड माँर कौं दई।
तुट्यौ सतांग टूँक टूँक पार ह्वै परे पई।
ईतै हूँ बीर बज्र अंग इंद्रजीत ज्यौं ऊतैं।
दई[7] दई दुहूँन कौं सुभाव बीरता सुतैं॥६३२
भिरे नियुद्ध भीम भेस क्रुद्ध होय काल ज्यौं।
हठी हमल्ल हुंकरै खिलंत बीर ख्याल ज्यौं।
भुजाँन-कंट दंत भेट भेन कै झटापटी।
फलंग फेट फेर कै चपेट दै चटापटी॥६३३

---

१ नीचा दिखाकर। २ झगड़ा। ३ ललकार कर। ४ अग्नि। ५ पराजित हुआ। ६ हाथ। ७ दैव।

प्लवंग मार मुष्टका हियै दई हुंकार कै।
गिरयौ सु इंद्रजीत गात धूज मोह धारकै।
पछार कै अरी प्लवंग वृक्ष पै चढ्यौ बली।
बिसेख पेख भाव सौं छिनेक में जग्यौ छली ॥६३४
सँभार ब्रह्म अस्त्र साध सक्रजीत सालुरे।
प्रहार बाँन पाँन-पूत[1] गात भंग ह्वै गिरे।
निहाँर मेघनाँद हू फसाय नाँग फाँस में।
जुरे सु साथ जातुधाँन पेख आस पास में ॥६३५
भग्यौ सु राज-भौंन कौं दसाँननं दिखावनैं।
लगे अनेक लार लोग जोवनैं जनैं जनैं।
बिलोक[2] कीस हाथ बीस आयरीस ऊचरचौ।
अरे अजांन आप सौं पलाय बंध क्यौं परचौ ॥६३६
गरूर[3] गात ना गिनै सु जातुधांनु जात कौं।
बिलोक बाल बिफुरचौ प्रहार के प्रपात कौं।
तऊ वृतंत पूछताछ दंड फेर देहगे।
निदांन कौं निहार नेंक लेख बैर लेहगे ॥६३७
ऊचारहू विचार आच कौंन राज किंकरा।
निसंक आय लंक में भरचौ करचौ भयंकरा।
सुनंत बात बीस-आँन कीस हू कथा कही।
त्रलोक-नाँथ[4] ताहि कौं निहार कै लखै नहीं ॥६३८
अजन्म ईस औतरे भले सुभक्त भाव सौं।
अनेक जीव ऊद्धरे पसाव रेनु-पाव सौं।
चढाय सिंभु-चाप कौं तिहीं सुतिष्ट तोर कै।
समेत तोहि भूप सर्व माँन कौं मरोर[5] कै ॥६३९
विवाह मैथली वरी अनूंप चंद-आननी[6]।
रहै सदीव संग रांम मोद जुक्त माँननी[7]।

---

१ पवनपुत्र हनुमान्। २ देखकर। ३ घमंड। ४ तीनों लोकों का स्वामी। ५ मर्दन करके। ६ चंद्रमुखी। ७ मानिनी।

कीयौ सु बास काँननं पिता निदेस पायकं ।
हरी लंकेस हेर कैं अधर्म को ऊपाय कैं ॥६४०
खरार बाल खंड कैं सुकंठ पाय स्याहिकं ।
बसाय राँम कौ बन्यौ निकाय[1] कीस-नायकं ।
बिलोकनै सीया वह्यौ[2] प्रीया सु राँम प्राँन की ।
ऊलंघ वार पार कैं जुहार काज ज्याँनकी ॥६४१
लखौ सुग्राय लाड़लो जिही सु दूत जाँनीयै ।
फस्यौ सु नाँग-फाँस[3] में ईहीं गनौ श्रयाँनीयै[4] ।
धिख्यौ लँकेस धार धेख देख धूत[5] दूत कौं ।
बिचार ना गह्यौ बिबेक सूत श्रो कुसूत कौं ॥६४२
लख्यौं प्रमोत-लायकं[6] कह्यौ सु यातुधाँनु का ।
करचौ सु जाय कीस कौं प्रहार दंड-प्राँन का ।
कही तही बभीखनं जुहार हाथ जोर कैं ।
रजा सु सीस राज की सभा[7] ईती सजोर कै ॥६४३
श्रबद्ध[8] दूत श्राद सौं मृजाद सोय माँनीयै ।
सबै प्रकार सावधाँन जुक्त ऊक्त जानीयै ।
सदा प्रनीत सास्त्रसिद्ध राजनीत रावरी ।
बिचार दंड दै बिसेस कीस हाँन जो करी ॥६४४
हस्यौ सु कीस हेरकै निहार बीस-नैनहू[9] ।
बभीखनं कह्यौ बिचार साथ मित्रि सैंन हूँ ।
बिसेस हेत बालधी[10] प्लवंग जात पेखीयै ।
लपेट तूल तेल लाय बस्त्र हू बिसेखीयै ॥६४५
जुराय श्राग जाहि काँ द्रुतं छुराय दीजियै ।
गरीब दूत जाय गैल कांम येहु कीजीयै ।
बिलोक राँम स्याँम बृंद कीसहू कपीसरा ।
बिसार सीय बासना निहार जोर निश्चरा[11] ॥६४६

---

१ स्थान । २ चला । ३ नागपाश । ४ अज्ञानता । ५ धूर्त्त । ६ मारने योग्य । ७ दण्ड । ८ अवध्य = न मारने योग्य । ९ विंशनयन = रावण । १० पूंछ । ११ निशाचर = राक्षस ।

कदाच जोर कीसकों ईहाँ बिचार आँय है।
निहार कै करूं निपात[1] जौ न भाग जाय है।
कही सुरक्ष ईस कीस लूँमकों[2] लगाय कै।
छुराय दीन चौहटै कृतंत[3] कौं कुपाय कै ॥६४७

वजाय ढोल बावरे बधाय कैं बलाय कौं।
गली सु ग्रेह-ग्रेह में लई बुलाय लाय कौं।
ऊछ्यौ अचिंत आंजनेय[4] गाज नाद गल्ल कौं।
वछ्यौ प्रवाह लंक बीच आग की ऊभल्ल[5] कौं ॥६४८

चढ्यौ चछोह हर्म[6] स्वर्न भार भर्न भुंजई[7]।
भरी सुभीर भाँमनी[8] डरी करै दई-दई[9]।
लपट्ट औ भपट्ट लाग पट्ट हट्ट प्राभलै।
ऊठी विसाल काल आल ज्वाल माल जाजुलै ॥६४६

तवै कितेक तोय-तोय[10] ओय-ओय ऊच्चरै।
ज्वलंत जोय-जोय[11] कै निचोय नैन निभ्भरै।
पगार औ अगार[12] पै अँगार धार औसरै।
गिरै गरार गैंन[13] ज्यौं प्रहार ताव पासरै ॥६५०

ऊबार देख ऊल्लका करंत बुंबकार के।
सँभार ना सरीर की भुलै ऊच्चंड भार के।
अकास छाय अंभसू[14] घटा असंभ ज्यूँ घुरै।
विचाल नंद वाय हू[15] फिरावहू छटा फिरै ॥६५१

गहंत लोल[16] तोल गैंन नाल गोल नाग ज्यूँ।
चलंत वक्र चाल में ईलात चक्र आग ज्यूँ।
छलंग कै अलंग छेक विस्फुलंग[17] विल्लरै।
कुलंग पछ्छ[18] त्यौं कहूँ मलंग लेत मक्करै ॥६५२

सुधंत[19] भार सौध-सौध[20] द्वार-द्वार देखीयै।
कुवाट[21] पक्ष द्वार केर अर्गला[22] असेखीयै।

१ मारुंगा। २ पूंछ को। ३ कृतान्त=यमराज। ४ हनुमान्। ५ लपट। ६ हर्म्य=महल। ७ जल कर नष्ट हो गई। ८ भामिनी=स्त्री। ९ दैव-दैव। १० जल-जल। ११ देख कर। १२ आगार=घर। १३ गगन=आकाश। १४ धुंआ। १५ वायुनन्दन = हनुमान्। १६ चंचल। १७ विस्फुलिङ्ग= चिनगारियाँ। १८ पक्षी। १९ स्त्रियों के रहने के स्थान। २० महल। २१ किवाड़। २२ आगल।

भंडार गर्भगार[1] कुप्पसाल[2] चंद्र-सालका[3] ।
बितांन औ बिछांवने पसार झाल पालका[4] ॥६५३
अनेक रंग अंसुकं[5] प्रछादनं[6] जरै परै ।
अँनूंप कंड-पट्ट[7] ओट आँच लाग अस्तरै ।
बिसेस तालवृंतहू[8] असेख केक आसनं ।
कपूर कासमीरहू सँनेह[10] त्याँ सुबासनं[11] ॥६५४
झमंक पाय जाँझरं गयंद-मत्त-गाँमनी ।
ऊसास[12] लै ऊदास ह्वै भ्रमंत राज-भाँमनी ।
खिसाय[13] खोज-खोज मींज हाथ कौं मदोदरी ।
कहै पीया कीयौ कहा सीया हरी जु सुंदरी ॥६५५
असंख आग-झाल[14] सौं जरंत लंक जोयकै ।
अहो बिना ऊपाय कै करै न स्याहि कोय कै ।
दसाँननं लखी दसा ज्यूँहीं मदोदरी जपी ।
बलाय के बघूल सौ कराल देख कै कपी ॥६५६
अँनेक काँडवाँन[15] कौ बकार कै कीये बिदा ।
कोदंड[16] ताँन काँन कौं जुरे घनै जुदा-जुदा ।
तरेर नैन ज्यूं तिनूंह चंचला[17] चला-चलं ।
दिखात नाँ दिखात भीर आग की भला-भलं ॥६५७
जके थके रहे जितेक पुत्तरी-पखाँन[18] ज्यूं ।
अंगार आँच आग सौं गहै न चित्त ज्ञान ज्यूं ।
पयोद[19] कौं कह्यौ पुकार जुत्थ अभ्रं[20] जोर कै ।
ऊमंड वार[21] औसरै घुमंड मंड घोर कै ॥६५८
सनेह के संजोग सौं सिवाय लाय सौगुनी ।
बढी बलाय बायु बेग घूँम कै घनी-घीनी ।
मुरे सु मेघ माँन मेट आग फेट सौं ऊड़े ।
पुलाय कै धुलाय पाथ[22] व्योम मग्ग कौं बढे ॥६५९

---

१ गर्भागार = भण्डारगृह । २ कोठे । ३ बहुत मंजिलवाली हवेली । ४ पलङ्ग । ५ वस्त्र । ६ ओढने का वस्त्र । ७ कनात । ८ पंखे । ९ केशर । १० स्नेह = तैल । ११ सुगंधित । १२ उच्छ्वास । १३ लज्जित होकर । १४ अग्नि ज्वाला । १५ धनुर्धर । १६ कोदण्ड = धनुष । १७ बिजली । १८ पाषाण पुत्तली = पत्थर की मूर्ति । १९ बादल । २० पानी । २१ वारि = जल । २२ पानी ।

सतंभ बंध सासता प्रलंब साल पायगा।
जली अपूर्ब ज्वालका जरै अनेक जायगा।
खुले गयंद संखला[1] डुलैं पुलैं डरे-डरे।
ज्युँही तुरंग जाँनीयैं ज्वला फिरैं जरे-जरे ॥६६०

किलेक संकुकर्न[2] बर्न-बर्न के बिसेखीयैं।
भ्रमत भूंक भूँक-ऊक[3] देख कैं असेखीयैं।
बरंत[4] भार बार हो जितेक धाँन[5] जाँनीयैं।
निकाय[6] व्यंजनावली[7] पयस्य बे-प्रमाँनीयैं ॥६६१

धुकैं धुँआँर धार में अपार गंज आर्जुनी[8]।
जुरै न छार[9] झारनैं सुधार कौं समाँर्जनी[10]।
जराय लंक ज्वाल सौं बचाय कैं बभीखनं।
परचौ सु कूँद पारवार[11] बालधी बुझोवनं ॥६६२

सुधार अंग सावधाँन ह्वै लघूक[12] हाल कैं।
सीया हजूर संमुहै[13] जप्यौ सु लंक ज्वाल कैं।
कछूक राँम-कारनैं दिखाव चीज दीजीयैं।
रजा अधीन रावरी कपी बिदा करीजीयैं ॥६६३

असीस दै सीया दई मनोज्ञ[14] चूड़का-मनी[15]।
जुहार पाँन[16] जोर कैं सँदेह[17] बारता सुनी।
पसाव मात पाय कैं बसेस कीन बंदनं।
हल्यौ सु वायु-बेग होय नीक वायु-नंदनं ॥६६४

ऊड़चौ सु सिंधु तीर आय तीर[18] राँम ज्यूँ तरचौ।
ऊतार ठौर आयकैं ईभारि-नाद[19] ऊच्चरचौ।
सुन्यौ कपी सबै समूँह पाय कैं प्रमोद कौं।
भई प्रतीत भाव सौं बिसास सोध[20] बोध कौं ॥६६५

ईतेक बीच आँजनेय वार-पार[21] ऊतरचौ।
ऊमाह अंगदाद आद भेंट अंक[22] सौं भरचौ।

---

१ शृङ्खला = जंजीर। २ गधे। ३ ओक = स्थान, आकाश। ४ जलने लगे। ५ धान्य = चांवल, अन्न। ६ स्थान, केन्द्र। ७ शाक-सब्जी आदि। ८ घास। ९ क्षार = राख। १० झाड़। ११ पारावार = समुद्र। १२ छोटा रूप बनाकर। १३ सम्मुख। १४ सुन्दर। १५ चूडामणि। १६ पाणि = हाथ। १७ सन्देश। १८ बाण। १९ इभारिनाद = सिंहनाद। २० शोध = खोजकर। २१ पारावार = समुद्र। २२ गोद।

सीया कथा कही सुनाय धाय-धाय धीमता।
ऊछाह आय-आय कै जुहार पाय कै जथा ॥६६६
बिसाल ताल-बृंत सौं करंत पाँन[1] केकहू।
फली कोऊक मिष्ट फूल देत देख-देखहू।
हिले मिले चले हकार गैल सैल[2] गाहि कैं।
कपीस कौंसलेस सौं मिले रजा मनाय कै ॥६६७

दोहा

जामवंत कर जोर कै, बिनय कीन रघुबीर।
पत राखी हम जुत प्रवल, हनमत है हमगीर[3] ॥६६८
लाँघ उदध[4] लंका गयौ, सीया मिल्यौ सुख पाय।
मारयौ अखय-कुमार कौं, लंक दई फिर लाय ॥६६९
आयौ उदध ऊलंघ कै, गयौ ज्युंहीं नभ-गैल।
हरखत धाये सबही हम, सरता[5] लाँघत सैल ॥९७०
दरसन कीनै हमहुं द्रग, राजिव-लोचन राँम।
पूँछ लेहु हँनमंत प्रत, सीया खबर घँनस्याँम ॥९७१
जग-त्राता रघुबीर जब, संजुत भ्राता सेख[6]।
पाय परयौ हनमंत प्रभु, द्रष्ट पसारी देख ॥९७२
बार-बार पद बंद कै, हँनूमाँन हीय हेर।
निजर करी चूड़ामनी, सहनाँनीं[7] सीय केर ॥९७३
लै कर सौं रघुनाँथ लख, हीय भेटी हरखाय।
लघु भ्राता दीनी लखन, सो लख सीस चढाय ॥९७४
कह्यौ फेर संदेह कछु, सब रघुबर सुन आंन।
कर सिर धरयौ सराह कर, हरख भयौ हँनुमाँन ॥९७५
सबहिन कह्यौ सुनाय कै, दुख राँवन कौ दीह।
रहत ज्याँनकी रात दिन, ज्यूँ दंतन में जीह[8] ॥९७६

---

१ पवन। २ शैल—पर्वत। ३ अग्रणी। ४ उदधि=समुद्र। ५ सरिता=नदी।
६ शेष=लक्ष्मण। ७ निशानी। ८ जिह्वा=जीभ।

एक मास दीनी अवध,[1] सीता काज सँभार।
ता पाछै तन त्यागहै, ज्वाल अगँन में जार ॥९७७

छंद भुजंगीप्रयात

सुनी राँमहू बात सुग्रींव सोऊ, जुतै जुथ्थपं जुथ्थहू आद जोऊ।
जगो हीय में क्रोध को ज्वाल-माला, कपी काल ज्यूँ कल्प[2] रूठे कराला ॥९७८
मिलै ईक्क सौं ईक्क पूंछै मता कै, प्रयाँनं खरी कीन साखै पताकै।
गरै गल्ल सौं केहरी-नाद गाजै, बड़े आँनकं भेर माँनौ अवाजै ॥९७९
जुतै सेस सुग्रींवहू राँम जाँनौ, पती औध कै लंक कीनौ प्रयानौ।
घनै जुथ्थपं जुथ्थ साथै घुमंडे, ऊदीचो[3] मनो मेघमाला ऊमंडे ॥९८०
सुरंगे-मुखा कीस फूली सुसंझा,[4] झुकैं हैं मनौ लंक पै होय जंझा[5]।
धकैं रिछ्छ रिछ्छी ज्यूँही लौर ध्यावै, चितं वेग ऊद्योग वायू चलावं ॥९८१
निचै राँम सोहै प्रभा मेघ-वर्नं, दियै चाँप[6] बाँमी भुजा यातुदर्नं[7]।
विड़ौजा[8] ज्यूँहीं चाप आभा विराजै, भुजा दछ्छनं दीप्त नाँराच[9] भ्राजै ॥९८२
फिरावै तिहीं अद्ध औ ऊद्ध फेरा, तपै चंचला अभ्र[10] माँ ौं तरेरा।
महाँ-काँतरं[11] चत्वरं होय मग्गै, लगूलं[12] वनोका वहै आभ लग्गै ॥९८३
गिरी गाहटै पाँव आराव[13] गज्जै, धरा धाँमहू सात पाताल धुज्जै।
डरै दिक्करी[14] अट्ठहू पाँव डोलै, फनाली[15] पती-नाग[16] ऊठै फफोलै ॥९८४
चढ़ी भोंम[17] सौं रेनुका[18] व्यौंम छाई, वढ़ी लंक लौं जाँन दैनं वधाई।
वली एक सौं एक साखा-विलासी[19], रुके आयकै तीर पै तोयरासी[20] ॥९८५
मिले चोट मोंटे जहाँ पाँव मंडे, थिरा थानकं-थाँनकं सैन थंड़े।
तितै राँम राँमानुजं आय तीरा, गरज्जै अकूपार[21] देखे गहीरा ॥९८६
सबै कीस कौं संग लीनै समाँजा, रहे छाय कै राँम राजाधिराजा।
कही हेरकं राँम सेना कहाँनी, धुखी लंक आतंक सौं राजधाँनी ॥९८७
सुनी अंत मैं तंत की वात सारी, पती-लंक मंदोदरी प्राँन-प्यारी।
सही नीत की रीत सौं सो सयाँनी, पखं वीनती जाय कीनी प्रमाँनी ॥९८८

---

१ पर्वधि। २ प्रलय। ३ उत्तरदिशा। सुसन्ध्या। ५ झंझा=तूफान।
६ धनुष। ७ यातुदलन=राक्षसों को मारने वाले। ८ इन्द्र। ९ वाण।
१० अभ्र=बादल। ११ महाकान्तार = महान् वन। १२ लाङ्गूल=लंगूर।
१३ आरव=ध्वनि। १४ दिग्गज। १५ फणधारी। १६ नागपति=शेष।
१७ भूमि। १८ धूलि। १९ वानर। २० समुद्र। २१ समुद्र।

सदाँ राज के काज में सावधाँनं, धराधोस पुज्जै सबै जातुधाँनं।
अनीती करी मैथली ग्रेह आँनो, बसाई बिचै बाग नारी बिराँनी[1] ९८९
जपै राँम राँमं करै ध्याँन जाको, हुयै हेत ना सिद्ध तेरे हिया को।
अज्यूँ सौंपीयै राँम को अर्द्धअंगी[2], पतो होय निर्व्याध[3] बंसी प्रसंगी ॥९९०
कही मैं नहीं माँनहौ जो कहाँनो, धरा धाँम जै है सबै राजधाँनी।
ऊलंघे ऊदधं तिहीं दूत आयौ, जिहीं पत्तनं[4] ज्वाल माला जरायौ ॥९९१
वनोका अनेकं जिहीं संग वैसे, कहो लंक के होंयगे हाल कैसे।
सुण्यौ राँम के बाँन को वेग त्राँनं, पतो मोर धुज्जै हीयो और प्राँनं ॥९९२
पतो-लंक मंदोदरी बात पाई, तहाँ बोल ऊठ्यौ महाँ आततताई।
अहो नार मेरी भरी-भीत ऐसी, ईहै बात कैसी कही है अनैसी ॥९९३
हीयै सोच आवै नहीं आय हांसी, बिचारे जती कों न साखाबिलासी।
सबै मृतु घेरै चले आय संगा, परै ज्वाल की माल जैसे पतंगा ॥९९४
तिहीं हाल कों देखहै नैन तूंहीं, जुरंगे जती आयकै जुद्ध ज्यूंहीं।
बसांऊं सबै खाख साखाबिलासी, त्रीया मोर ह्वै कै कहा बुद्ध त्रासी ॥९९५
महाँ-निक्रती[5] बात राँनी न माँनी, सिधाई जबै ग्रेह सोई सयाँनी।
सभा जाय बैठो जबै पाँन-बीसा, धरै छत्र माथै जहाँ लंकधीसा ॥९९६
ईतै आय वातायनं[6] बोल ऐसै, जलाधीस पारा लखी सैन जैसे।
ईतै बीच बभीखनं भ्रात आयौ, नृचक्षापती पाय सीसं नमायौ ॥९९७
करी बीनती ऊठकै-राज काजा, अँनीती जहाँ जाँन लीजै अकाजा।
बिदेही हरी बीच लंका बसाई, ईहीं काँम कीनौं महाँ आततताई ॥९९८
सीया दै बिना नाँहि ह्वै है सुधारौ, हितू जाँनकै साँच माँनौ हमारौ।
सुनी मालवानं जिहीं बात सारी, ईहीं बीनती नीत ऐसी ऊचारी ॥९९९
जहाँ क्रुद्ध कीनौं कछू भूप जापै, ऊठ्यो मालवाँनं गयौ ग्रेह आपै।
लघू-भ्रात तोहू हीयै हेत लाई, सबै रीत सौं नीत बातैं सुनाई ॥१०००
सुनी सो बहाई ब धूरै समीरा[7], न भेदै ज्यूंहीं चीकनै कुंभनीरा।
झुकाया तऊ सीस कों पाँव झेलैं, ऊचारी तहाँ बींनती कां अकेलैं ॥१००१

१ परनारी। ३ अर्द्धाङ्गिनी=स्त्री। २ व्याधि रहित। ४ नगर। ५ निष्कृति =बदला। ६ झरोखे। ७ समीर=वायु।

प्रहारं करयौ पाँव कौ आत पायौ, थिति लोपक भौ भयौ आप थायौ।
करयौ फेर रुक्मीकनं एहु बाँनी, ऊचारं कहा छीव[1] बाँनी अयानौ ॥१००२
सुना मोहि कौं तोहि नाहीं भरोसौ, अजू काज दीसै बरौ सो करौ सौ।
मिल्यौ जाय बैरी कपी सैन मांहीं, नरा बाँनरा मो कछू भीत नाँहीं ॥१००३
सुनौ लंकईस इहीं बात आँनं, गही बाट रुक्मीखनं कौन गाँनं।
तको राँम को सर्नं ऊछर्नं तांहीं, महाँ भक्त चितं लग्यौ चर्नं माँहीं ॥१००४
पहूँच्यौ सोई पारसौ बार पायौ, लखं मर्कटी-सैन सदेह लायौ।
अटोक्यौ नहौ आवतं दौन अग्गौ, कपीसं कह्यौ येम जोरं करग्गौ ॥१००५
जाँनं इहीं आत है रांवना कौ, किधौं दूत है भेद के काँमना कौ।
कपीसं कह्यौ राँम सौं जाय कथ्थं, सबै रीत सौं जाँन लीनौ समथ्थं ॥१००६
इनै व्याज[2] सौं सर्नं आयौ ऊचारं, हितू जाँन लीजै प्रतज्ञा हमारं।
कहै सर्न आयौ तजै जो कहीं कौं, बिसेसं क्रतघ्नी[3] बिचारौ वहीं कौं ॥१००७
लगै कोट बिप्रं बधं पाप लारी, हीयै साच कौ जान माँनौ हमारी।
करै व्याज तोऊ नहीं हाँन कोऊ, समीचीन आयै लखै है स कोऊ ॥१००८

दोहा

श्रीरघुबर बाँनी सुनी, हरख होय हनुँमाँन।
सुख-दायक असरन-सरन, जगपति लीने जाँन ॥१००९
अंगद आदक ईस अरु, हनुमंतहू होय हेर।
लैन बभीखन कौ चले, बिहस बिहस जिह बेर ॥१०१०

छंद भुजंगी

हितू रघुबीर गन्यौ होय हेर, बभीखँन जाय मिल्यौ जिह बेर।
पतौ-गढ-लंक कौ भ्रात पिछाँन, सबै बिध कीन जथा सनमाँन ॥१०११
लीयै भगवाँन लीयै संग कीस, ऊमंगीय देख कै श्रीव-अधीस।
नवंपव स्याँमल गोर सरीर, बभीखंन पाय गये रघुबीर ॥१०१२

१ सावर — सारी। २ छल, कपट। ३ गारी।

ऊभै कर झेल कै जाहि ऊठाय, लीयौ जन जान कै अंक[1] लगाय।
खुसी पत-लंक सबै बिध खेम[2], निहारकै राँम कह्यौ जुत नेम ॥१०१३
सुनी कपि बाँनीय राँम की सोय, जया जय सद्द[3] कीयौ जँह जोय।
नमो रघुनायक भूप निसंक, लीयै बिन दास दीयौ गढ़ लंक ॥१०१४
कहो रघुनायक बात कपीस, अहो रघुबंसीय में अवनीस[4]।
कहै सोई सत्य निभाँवन काँम, बिचारत नाँहिन फेर बिराँम ॥१०१५
इते दिन काज छतौ तुम येक, सीया कँह लाँवन कौ सववेक[5]।
बभीखँन थप्पन कारन वीय, कहौ सोई कारज है करनीय ॥१०१६
कपीसहू बोल जहाँ कर जोर, महाँ प्रभू धंन्य रघूकूल-मौर।
सबै सरनाँगत रावरे साथ, निभावहु वृद[6] अनाँथन नाँथ ॥१०१७
सुन्यौ कपि बाँनीय औरहु सोर, जुहारत राँम तहाँ कर जोर।
सुनाय कै आपनौ राँम सिधंत,[7] सबै बिध जाँन बभीखन संत ॥१०१८
क्रपा[8] कर भाल में चर्चक कीन, दयौ पद लंक पती पति दीन।
जलाश्रय राँवन दुःख सौं जाहु, बभीखँन राख लीयौ गह बाहु ॥१०१९
सराहन लागीय[9] औरहु साथ, बढ़ो दल मर्कट में ईह बात।
तहाँ रघुनायक सिंधु के तीर, बभीखँन कोस-पती जुग बीर ॥१०२०
जुहारीय नीर-पती[10] जहाँ जाय, बिराजेऊ आसन-दर्भ[11] बिछाय।
सबै संग जुथ्थप-जुथ्थ सयाँन, हरोलीय[12] अंगद औ हनुँमांन ॥१०२१
कीये हीय व्याज[13] बने कपि-काय ईतै बिच राँवन दूतहू आय।
बिचार कै ताहि लख्यौ बरतंत[14], सदाँ रघुबीर ऊबारन संत ॥१०२२
बिलोक कै बंचक[15] कौं कपि बेख, परे कपि गेल ग्रहै सु परेख।
मरोर कै थापन लातन मार, बिचार कै बंध कीयौ तिह बार ॥१०२३
कहै कोऊ काटहु नासका काँन, प्रहारहु केक कहै पग पाँन।
ऊचारत यौं रघुबीर कौं आय, बनोकन दीनेऊ दूत बताय ॥१०२४
बिचच्छंन लच्छ्छन राँम के बीर, परेख कै कीन निराक्रत पीर।
क्रीयौ तिह लच्छ्छन येह कहाव, लिखै हम पत्र बिचार कै न्याव ॥१०२५

---

१ गोद, छाती। २ क्षेम। ३ शब्द। ४ नृपति। ५ सविवेक। ६ विरद=यश। ७ सिद्धान्त। ८ तिलक। ९ सू० प्र० लगीय। १० समुद्र। ११ डाभ, कुश। १२ अग्रणी। १३ कपट, बहाना। १४ वृत्तांत। १५ धूर्त्त, छली। १६ निराकृत=छुड़ा दिया।

दिखावहु लंकपती कँह दूत, करै सोई जान कै सूत कुसूत।
जितै हम आवत है दल जोर, ऊलंघ कै बारहु-पारु[1] अथोर ॥१०२६
चले सुख-सारन[2] सीस चढाय, कपी दल बीच सौं खेम कढाय।
गयौ सोई रॉवन पै कर गॉन[3], सदेसन-हारक[4] बुद्धि सयॉन ॥१०२७
विचार कै रॉवन पूँछीय बात, कहौ लघु-भ्रातहू[5] की कुसलात।
महाँ दुरबुद्ध गह्यौ तन मीच[6], बिरोधीय सोध गयौ दल बीच ॥१०२८
कहौ फिर कथ्थ कितौ दल कीस, निरंतर बैठेऊ पार नदीस।
कहौ जुग तापस की गत कोन, जुहारत सगर[7] मोपहूँ जोंन ॥१०२९
जहाँ कहि दूत ऊभै कर जोर, मुलाहिज बींनती कीजहु मोर।
वभीखन जाय मिल्यौ जिहं वेर, करयौ गढ़ लंकपती तिह केर ॥१०३०
निहाँरीय भल्लुक बंदर नैन, सबै निरसंक[8] असंखन[9] सैन।
सुकंठहु भूप जही सिरताज, जुरे हनमंत वली जुवराज ॥१०३१
जहाँ कुमदादिक केसरी जोर, मयंदहु नील किते दल मौर।
विचछ्छन रिछ्छपती वय-बृद्ध[10], सबै अवसासँन जाँनन सिद्ध ॥१०३२
विलोकत दछ्छन[11] ओर बिसेख, धुखै हीय बीच हूतासन[12] धेख।
भयंकर दीसत है भुज-डंड, खयंकर[13] लंक सबै खल-खंड ॥१०३३
भरे ऊर क्रुद्ध जुरे जुग भ्रात, प्रचारत धीर धरै निध-पाथ[14]।
मिलै कछु काल मही नहि मग्ग, अंगजित चाप कौं लेय ऊदग्ग[15] ॥१०३४
सबै जल सोखहि बाँन कौं संध, कँहै हम नैन लखी दसकंध।
दई ईक पातीय लछ्छन देव, भली विध जाँन लहौ ईह भेव ॥१०३५
लई कर वाम सोई पत-लंक, निहाँर कै धीसख दीय निसंक।
जिहीं विच लछ्छन लेखेऊ जाव, सीया कँह साँपहु[16] आँन सताव ॥१०३६
वभीखन साँपहु राज विचार, वचै कुसलातहु सौं परवार।
मिलै जीय दाँन तुमै मतिमंद, समै ईह आय करी जव संध[17] ॥१०३७
कहै कहा राँम भये प्रतकूल[18], संघारहि तो कह वंस समूल।
चहै हम न्याव विचार कै चित्त, अहो तुम जानहु ना असमथ्थ ॥१०३८

१ पारावार = समुद्र। २ सुखसारण = सुखप्रद। ३ गमन। ४ सन्देशहारक = दूत।
५ विभीषण। ६ मृत्यु। ७ युद्ध। ८ निश्शङ्क। ९ असंख्य। १० वयोवृद्ध।
११ दक्षिण। १२ हुताशन = अग्नि। १३ क्षयङ्कर। १४ पाथोनिधि = समुद्र।
१५ उदग्र। १६ सौंप दो। १७ संधि। १८ प्रतिकूल = विरुद्ध।

सुनी लिख बाँनीय आँनन सेख[1], दसाँनन हाँस रच्यौ तिह देख।
कीयौ सुक-सारन दूत कहाव, बिना सोय दीनेऊ नाहि वचाव ॥१०३९
लई सुत ताहि प्रहारीय लात, निरादर होय मिल्यौ रघुनाथ।
तँहाँ जलरासीय की निज तीर, बिते दिन तींन रहे रघुबीर ॥१०४०
कही लघु-भ्रात ही सौं कर क्रुद्ध, ईहै सठ[2] माँनत नाहि ऊदद्ध[3]।
सरासन[4] लावहुँ मोर सताब, जबै कछू देवहै आय जबाब ॥१०४१
दये धँनुं-बाँनन लछ्‌छन देख, पतो-पुर-कौसल लीन परेख।
चढाय कै सिंजनी[5] ताँन चछोह, कीयौ जलरासीय पै अतकोह[6] ॥१०४२
सँभारीय पाँनन[7] बाँन सँधाँन, असँभव गाज ऊठ्यौ असमाँन।
धरा अकुलाय रही तज धीर, निरंतर धूपित ह्वै दध-नीर ॥१०४३
तिमंगल[8] कच्छप नक्र[9] तपाय, भयंकर पीर ऊठे भहराय।
भरे तव कंचन[10] थारीय भेट, मनोहर रत्तन लीन सँमेट ॥१०४४
बन्यौ नर ऊतँम रूप विसेस, नम्यौ पद आय कै औध-नरेस।
छिमाँकर[11]नाथ न कीजीयै छोह[12], मँहाँ जड़ जाँन दई सिख मोह ॥१०४५
जबै रघुनाथ कही कथ जास, अहो जलरासि न होहु ऊदास।
तथाँ[13] मम सैन ऊलंघहि तोहि, बिचार कै मंत्र बताबहु मोहि ॥१०४६
कह्यौ तब सिंधु ऊभै कर जोर, कपी नल नील है बेस किसोर।
दयौ यौ रिखीराजनहू बरदाँन, बिचछ्‌छन-बुद्ध बड़े बलवाँन ॥१०४७
परठ्ठही मोहि के ऊपर पाज[14], मिलाय कै सूत सुनौ महाँराज।
समै ईह बाँन कौं कीन सधाँन, तजौ ऊतराध दिसा-मह ताँन ॥१०४८
बसै जँहाँ दुज्जन[15] मोर बसेख, प्रहारहु ताकहु प्राँन परेख।
जबै रघुनाथ तज्यौ सर जाँन, मिट्यौ जलरासीय कौ भयमाँन ॥१०४९
महाँप्रभू सायक[16]कौं कीय मोख,रजा दीय सागर काँ तज रोख।
निरंतर मानव-रूप निवार, मिल्यौ जलरासीय तोय-मझार ॥१०५०
दिसा उतराध मही ईक देस, बसै मम दुज्जन तोय-मँझार।
निरंतर मानब रूप निवार, मिल्यौ जलरासीय तोय-मँझार ॥१०५१
महाप्रभु सायक कीनेऊ मोख, रजा दीय ताहि निवारेऊ रोख।

१ शेष = लक्ष्मण। २ शठ = मूर्ख। ३ उदधि = समुद्र। ४ शरासन = धनुष। ५ प्रत्यंचा = डोर। ६ अतिक्रोध। ७ पाणि = हाथों से। ८ तिमिङ्गिल = मत्स्य। ९ मगर। १० काञ्चन = सौना। ११ क्षमाकर। १२ क्षोभ = क्रोध। १३ मू०-प्र० त्यां०। १४ सेतु = पुल। १५ दुर्जन। १६ वाण।

दोहा

रजा पाय रघुनाथ की, सिंधु गयौ सुसथाँन।
सेत बाँधनैं की समुझ, ऊदित भये कपि आँन ॥१०५२
राँम कही राँमाँनुजहि, बाँधहु सेत विचार।
जाँमवंत बोल्यौ जबहि, बेस-वृद्ध[1] जिह वार ॥१०५३
नाँथ तिहाँरे नाँम सौं, रची सेत जग रेख।
निगँम[2] कहत खग नाँग नर, ऊतरत पार अँनेक ॥१०५४

छंद ऊद्धोर

कीय अरज पवन-कुमार, विज्ञाँन हृदय विचार।
नृप अवध क्रुद्ध निदाँन, समि-गर्भ[3]--ऊर्व समाँन ॥१०५५
नद-ईस सोखेऊ नीर, पुन बढ़ी दँनुँजन[4] पीर।
द्रग नार झंदत[5] देख, बढ गयेऊ फेर विसेख ॥१०५६
है नीर कटु ईह हेत, सब लखहु सेंन समेत।
हीय ऊकत[6] सुन हनुमंत, कपि कैंऊ बिनोद करंत ॥१०५७
जब जाँमबंत सुजाँन, कीय नील नलहि कहाँन।
तुम सेत बाँधहु तात, निज राख हीय रघुनाँथ ॥१०५८
नल नील चतुर निदाँन, सुन ऊदित भेऊ सुजाँन।
सोई रचन लागेऊ सेत, हीय राँम काँम सहेत ॥१०५९
सब सझेऊ मर्कट-सँन, द्रढ ऊपल[7] लागेऊ दैन।
कपि देत बिष्टर[8] केक, अत तरल सरल अनेक ॥१०६०
अरु कोऊक श्रंग ऊतंग, समुदाय तरवर संग।
नल नील लेत निहाँर, अतदक्ष परम अपार ॥१०६१
जहाँ चहत जिह बिध जोर, तहाँ देत ताकँह तोर।
मिल दिवस तीन मझार, तिह सेत कीन तयार ॥१०६२

---

१ वयोवृद्ध। २ वेद। ३ वडवानल। ४ राक्षस। ५ रोती हैं। ६ उक्ति।
७ उपल=पत्थर। ८ वृक्षों के ठूंड।

द्रग ताहि रघुवर देख, ऊर मुदित भयेऊ असेख।
बसु[1] परम रंम्य बिचार, तहाँ पूजकै त्रपुरार[2] ॥१०६३
ध्रुब जोग थप्पेऊ[3] धाँम, अघ-हरन जग अभिराँम।
कर बंदना सिव-केर, घँन सुभट मर्कट घेर ॥१०६४
पुन करेऊ लंक प्रयाँन, जुग भ्रात भुज-आजाँन[4]।
कर धरै सर कोडंड, घन घेर फौज घुमंड ॥१०६५
कपि झुंड कर किलकार, पँहुचे सु जलनिध पार।
प्रभू तरेऊ नाँम पखाँन[5], पुन कहा बिलंब प्रयाँन ॥१०६६
विरचेऊ सकंधा-बार[7], अभिराँम ठौर ऊदार।
आराँम[8] लखेऊ अनेक, बहुफलद फलन बिसेख ॥१०६७
बंदरी फौज बुलाय, रूच पाय कहि रघुराय।
फल करहु भक्षन फौज, मुद पायकै मन मौज ॥१०६८
हटकै[9] जु तुमकौं हेर, जिह करहु झटकै जेर[10]।
निज नाँथ सीस नमाँय, ऊठ चलेऊ ऊर ऊमगाय ॥१०६९
कपि चढेऊ सिखरी केक, तहां करत रक्षक तेक।
तिह पकर-पकर तुरंत, द्रग फोर तोरत दंत ॥१०७०
कोऊ नासका श्रुति[11] काट, घट करत दनुज कुघाट।
राँवन पुकारे रोय, खल बात अपनी खोय ॥१०७१
पति लंक द्रष्ट पसार, निज नैन बीस निहाँर।
फट्यौ सु हीय जिम फूट[12], अवरोध[13] चालेऊ ऊठ ॥१०७२
मय-नंदनी[14] तज माँन, पुन कहेऊ नय पहचाँन।
सुन बंदरन कौ सोर, बोली सुवाच वहोर ॥१०७३
अकुलाय कहत ऊदंत, क्यौं नहीं माँनत कंथ[14]।
श्रीराँम सैन-सहेत, सोऊ ऊतर आये सेत ॥१०७४
सीय देहु पीय कर संध, पहिलै विचार प्रबन्ध।
वाढ्यौ न अबहु विरोध, कोजै न अनहित क्रोध ॥१०७५

---

१ पृथ्वी। २ त्रिपुरारि = महादेव। ३ स्थापित किया। ४ आजानुभुज = घुटनों तक भुजाओं वाले। ५ पाषाण। ७ पड़ाव। ८ बाग। ९ मना करे। १० नीचा दिखाओ। ११ कान। १२ ककड़ी के समान फल। १३ रनिवास। १४ मन्दोदरी। १४ कान्त = स्वामी।

सुन सीख बोलेऊ सोय, मंदोदरी सुन मोहि।
मैं दंनुज-गंन महांराज, सुर-मनुज-जेता साज ॥१०७६
कर जीत बरून कुबेर, जम पवन कीनेऊ जेर।
भुज तोहि नाहि भरोस, अनजांन-पन अफसोस ॥१०७७
सब भांत त्रीय समुझाय, ऊठ सभा बैठेऊ आय।
तहां देख पूंछेऊ तंत्र, मिल सांम-बायक[1] मंत्र[2] ॥१०७८
बोलेऊ प्रहस्त बिचार, नय नीत रीत निहार।
बल प्रबल जुत रघुबीर, तर सिंधु आये तीर ॥१०७९
जो दीयै सीय फिर जाय, ईह संध नीक ऊपाय।
कीय सुनत रांवन क्रुद्ध, मुरझाय गये मन-मुद्ध ॥१०८०
बिच हृदय रांम बिचार, बोले सु ताही बार।
कीजै सु आतुर[3] काज, सब सुनहु सुभट-समांज ॥१०८१
सुन सुकन[4] देवै साख[5], ऊर जुद्ध की अभिलाख[6]।
परचंड पवन-प्रवाह, दिस-बिदिस ऊठत दाह[7] ॥१०८२
भूकंप होत भयांन[8], थरहरत पव्वय[9]-थांन।
बिन वृष्ट बादर बीज[10], कर-करत सब्द करीज ॥१०८३
पल-भक्ष[11] पक्षी-पुंज्ज, गहराय कै कर गुंज्ज।
जल रुधर-जुक्त झरंत, आरक्त[12] मेघ ऊठंत ॥१०८४
मंडल सु सूरज-मांहि, छूटै सु ज्वाला छांहि।
जाही सु मृग-गंन जोय, रव करत भय सौ रोय ॥१०८५
रवि कबहु सीतल रूप, धर हुरत चंदा धूप।
नभ जोत-हीन[13] नछत्र, तम गिरे दीसत तत्र ॥१०८६
जांन्यौ सु निसचय-जात, अब होयगौ ऊतपात।
जांन्यौ सु लंका जोग, भुव रुधर लैहै भोग ॥१०८७
लै फौस लसकर[14] लार, तुम होऊ लखँन तयार।
परखाहु[15] जलनिध पाट, घेरीयें लंका घाट ॥१०८८

---

१ मंत्रियों से। २ सलाह। ३ शीघ्र। ४ शकुन। ५ साक्षी। ६ अभिलाषा= इच्छा। ७ ज्वाला। ८ भयानक। ९ पर्वत। १० बिजली। ११ मांसाहारी। १२ लाल। १३ ज्योतिहीन=प्रकाशरहित। १४ सेना। १५ परिखा=खाई।

सुन लखँन बांनी स्रौन, ऊठ भये दल-अगवाँन।
बंदरी-सैंन बुलाय, सासना[1] दीन सुनाय ॥१०८९
सुग्रींव रघुबर संग, ऊठ कवच पहरे अंग।
बेला[2] सु विजय बिचार, तँहां कीन धँनु-टँकार ॥ १०९०
अनभीत[3] लंका ओर, चाले सु डेरा छोर।
सभ बिभीखँन सुग्रींव, नल नील दीय रन नींव ॥१०९१
सुत-पवन लछमन संग, अरु जांमबंत अभंग।
ये राँम पीछैं आय, संदोह[4] करत सहाय ॥१०९२
चाले सु रन कर चाह, अनभीत जीत ऊमाँह।
कपि रिछ्‌छ कीय किलकार, हमगीर-दल[5] हलकार ॥१०९३
धर ढकत ऊठत धुंध, रज आभ मारग रुंध।
कोऊ गहत सैल कठोर, त्रन[6] जेम तरवर तोर ॥१०९४
बढ़ चले कपि तिह बेर, गढ लंक लीनों घेर।
केऊ पतन[7] पहुँचे कोट[8], अर रहे राखस ओट ॥१०९५
खाई सु ऊँचे खोम[9], थरहरत जामह धोम।
वँह उत्तर-द्वार ऊतंग, श्रीराँम लछमन सँग ॥१०९६
पहुँचे सु ताही पौर[10], थित लंकपति की ठौर।
दल नील पूरब-द्वार, लै दुबिद मैंद[11] ही लार ॥१०९७
पँहुचे सु अत परचंड, अत साथ फौज ऊमंड।
अंगद सु दछ्छन ओर, पहुँचे सु ताही पौर ॥१०९८
गज रिखभ संग गवाख[12], लै गये लसकर लाख।
अर-रहे[13] कीस अँनेक, हुंकार करत हरेक ॥१०९९
पर जंघ तरस पलाय[14], ए संग हँनमंत आय।
पँहुचे सु पछ्‌छम पौर, अनगँनत कपि-दल और ॥११००
मद्ध के गुल्म-मझार, सुग्रींव करत सभार।
लै चपल बंदर लार, प्रेरत प्रचार-प्रचार ॥११०१

---

१ शासन = आज्ञा। २ वेला = समय। ३ निर्भय। ४ समूह। ५ अग्रणी। ६ तृण। ७ पत्तन = नगर। ८ किला। ९ गुर्ज। १० द्वार। ११ मयन्द। १२ गवाक्ष। १३ अड़ रहे। १४ दौड़कर, शीघ्र।

सुत खबर करत सहाय, जहाँ–तहाँ जिह ढिग जाय।
छतीस कोट चलाक, कपि संग ले यक जाक ॥११०२
कपि-ईस कौ ईह काँम, जिह करत आठौ जाँम।
लछमन बभीखँन लार, दल भेज-भेज दवार[1] ॥११०३
जँहाँ देख जैसौ जोग, पुन हुकँम करत प्रयोग।
संग जाँमवंत सुखेंन, समरथ्थ नै संग सैन ॥११०४
पति-अवध राखत पीठ, देखत सु चहुँ दिस दीठ।
बंदरी-सैना बीर, पुर लँक दीनी पीर ॥११०५
वपु[2] सिंध-सम[3] बिकराल, कट-कटत दंत कराल।
कर भृकुटि बंक करूर, जम-अंख वदन जरूर ॥११०६
पुन कोऊ नचावत पूँछ, अम्भार बारन ऊँच।
ऊरजस्त हस्थि अथाह, बल बंदरन बेबाह ॥११०७
ऊमड़े सु लंका ओर, जिम टिड्डीयन-दल जोर।
चालंत मिल पदचार, कूँदंत कर किलकार ॥११०८
आकास-मग्ग अछेह, खित ऊठी मानहु खेह[6]।
गढ लंक दुस्तर गौन, पंछी न पावत पौन ॥११०९
ईम घेर कँ चँहुँ ओर, घहराय कपि घनघोर।
रूठे सु बंदर रीछ, वढ़ त्राह[7] लंका-बीच ॥१११०
विकराल राँम-वरूथ[8], जम-जाल जूथप जूथ।
घेरयौ सु पत्तन घूँम, भर ओघ चंहु दिस भूँम ॥११११
परखा सु पाटत पूर, कर चूर कोट कँगूर।
केऊ तोर फोर कपाट[9], घल घेर वाटन[10] घात ॥१११२
जह खड़े रघुवर जाय, जाजुल्य[11] फौज जमाय।
मंत्री विचक्षँन मेल, बोले बभीखँन बेल ॥१११३
करतव्य है कहा काज, सो कहहु कोस-समाँज।
जँहाँ खरे सब कर जोर, अवलोक रघुवर-ओर ॥१११४

---

१ द्वार। २ वपु=शरीर। ३ सिंह-सम। ४ यमराज, दोनों। ५ क्षिति=पृथ्वी।
६ धूलि। ७ त्रास=भय। ८ राम-सेना। ९ किवाड़। १० वाट=मार्ग।
११ जाज्वल्य।

निरभीत तुम रघुनाँथ, सब नीत में समराथ।
अरजी सु हमरी येहु, दल जुद्ध सासन देहु ॥११११५
ईह लंक थाल ऊथाल, जल-रासि करहैं जंबाल।
राँवना रोपै रार, काँमना मंड करार ॥१११६
भेजीयै अंगद भींच[1], निज राखसिंद्र नगीच[2]।
कहि ऊचित बात करूर, जुध काज होय जरूर ॥१११७
आवै सु बाहिर ऐंन[3], सब घेर लैहै सैंन।
सकुटंब करहि संघार, पति-लंक खेत[4] प्रचार[5] ॥१११८
सुन मंत्र मंत्री साथ, रूच पाय कै रघुनाथ।
बढ़ चल्यौ अंगद वीर, ह्वै लंक दिस हमगीर ॥१११९
जब नमसक्रत[6] कर जोर, रघुनाँथ कीय तज रोर।
बोले सुराँम बिचार, द्रुत जाहु राँवन-द्वार ॥११२०
हम कहत जैसे हाल, कह देहु सोई ततकाल।
खल अबँहु चाहत खेम, तन जीयत मुरदा तेम ॥११२१
ऐस्वर्ज[7]-हींन अज्ञाँन, सिर चढी मीच[8] समाँन।
रिखी देवता गंधर्व, सर्पादि अफछर[9] सर्ब ॥११२२
कीय वैर कर्मा-क्रूर[10], जिह लग्यौ पाप जरूर।
मुहमेज[11] धोबहु मैल, गहि लेहु जँम-पुर-गैल ॥११२३
बोये सु जैसे बीज, तरू फल्यौ ग्रेह तुमीज[12]।
भोगहु सु बैठे भौंन[13], ईह समय पँहुच्यौ आँन ॥११२४
अह[14] हरी त्रीय अरधंग, अत मोहि दुर्बल अंग।
तोहि दंड दैन तपाय, ऊभे सु फाटक आय ॥११२५
मतिमंद त्यागहु मोह, कल-बेर[15] भूखँन कोह।
सो सभ्झहु आप सरीर, प्रसमनन[16] ह्वैहै पीर ॥११२६
महरिखी मँनुजन मार, पद दयौ ऊचत प्रचार।
पद लेहु वँह हम पास, ऊर राज की तज आस ॥११२७

---

१ राक्षस। २ पास। ३ अयन=घर, स्थान। ४ युद्धक्षेत्र। ५ ललकार कर। ६ नमस्कृति। ७ ऐश्वर्य। ८ मृत्यु। ९ अप्सरा। १० क्रूरकर्मा=दुष्ट। ११ सम्मुख। १२ तुम्हारे। १३ भुवन। १४ हमारी। १५ युद्ध।

बिन स्याहि[1] मेरी बाँम, कीय हरन अनुचित काँम।
बलवाँन बन पुर बीच निज ग्रेह बैठो नीच ॥११२८
बल वँही देखन बीर, आये सु होय अधीर।
बल बीसभुज बतलाय, अतताई[2] सनमुख आय ॥११२९
तेरौ सुभ्राता त्याग, लीय सरन मो पद लाग।
सुख राज भोगहि सोय, खल मरहु भुज-बल खोय ॥११३०
लै सीया सरनौं लेत, दत जीव तुम हम देत।
अब होहु सनमुख आय, बाँनक[3] सु बीर बनाय ॥११३१
लै पाँख अंग लगाय, जो कँहूँ दिस ऊड़जाय।
तऊ ढूंढ माँरहि तोहि, हम द्रष्टु-गोचर होय ॥११३२
परलोक-हेत प्रीयोग[4], जो करहु अवसर-जोग।
ईह लंक-पुर फिर आय, नही देखहौ नीयराय ॥११३३
बिध दयौ सो बरदाँन, ह्वै गई ताकी हाँन।
कीय घोर-कर्म कुभाय[5], तीय-हरन को अत-ताय ॥११३४
सुन राँम अंगद सीख, ऊड़ चले मग अंतरीख[6]।
बहु राँम कर विश्वास, पँहुचे सु राँवन पास ॥११३५
सब मंत्रीयन संजुक्त, अंगद प्रकासी ऊक्त।
सुन राखसिंद्र सधीर, बिख्यात अंगद बीर ॥११३६
पितू बाल[7] मोहि प्रसिद्ध, सुत ताहि लखहुं सनिद्ध[8]।
जाँन्यौ न ह्वै तौ जाँन, पति-अवध-दूत प्रमाँन ॥११३७
प्रेरयौ सु तेरे पास, सुन लेहु मम सम जास।
तैं हरी रघुबर-तीय, पतिबृता जाके पीय ॥११३८
दल लेय पत्तन-द्वार, रघुनाँथ जाचत रार[9]।
निज भवन तज निर्लाज, कल करहु जमपुर काज ॥११३९
वैभव सु लंक बसात, भोगहि वभीखन भ्रात।
रूठे सु रघुबर रार, सकुटंब करहि संघार ॥११४०

---

१ सहायता। २ आततायी। ३ वेष। ४ प्रयोग। ५ कुभाव=बुरी भावनासे। ६ अन्तरिक्ष=आकाश। ७ वाली। ८ सन्निधि=समीप। ९ युद्ध।

ईह कही अंगद उक्त सुन मंत्रीयन संजुक्त।
जब कहे रॉम जबाब, सोऊ कहे ताहि सताब ॥११४१
सो सुनत ही दससीस, पर जरचौ दंतन पीस।
बोल्यौ सु सुभटन बीच, नहि जाय बंदर नीच ॥११४२
गहि लेहु येह गवाँर, बरजोर याही बार।
सुन बचन रांवन स्रौंन, ऊठ सुभट भुज-आजाँन ॥११४३
झूमै सु अंगद झेल, परचंड पौरुख पेल।
ईत भिरचौ अंगद येक, ऊत च्यार भट अबिबेक ॥१०४४
पद गहत कोऊक पाँन, भिर परे जुद्ध भयाँन।
झकझोर पिंड[1] झपेट, चल चंड मार चपेट ॥११४५
धसमसत धरनी धूज, ऊर स्वाँस भरत अमूँज।
चँमकंत अंगद छाँह, बजुला सु वारी बाँह ॥११४६
राखसन कारे रंग, अंगद सु पीतन अंग।
घन दाँमनी[2] जिह घेर, बक चली दुत[3] तिह बेर ॥१०४७
बपु तेज नंदन-बाल[4] जनुँ धूम घेरै ज्वाल।
भुज-जुद्ध भिरेऊ भयंद, ईह रीत बीच अलंद[5] ॥११४८
बहु सभासद तिह बेर, ह्वै गये चकत[6] हेर।
फिर लगी केतन फेट, हहराय पर गये हेट ॥११४९
अंगद लख्यौ बल ऊद्ध, मन भयौ रांवन मुद्ध[7]।
जुवराज बल जम जेम, आपौ दिखावौ ऐम ॥११५०
ऊछल्यौ सु मग्ग-अकास, पर सुंभट राँवन पास।
चढ महल सिखर चछोह, कीय महाँ दारून कोह ॥११५१
जिह राज-मन्दर जात, लागी सु ऊपर लात।
फट गयौ जैसे फूट, तर परे गुंमज तूट ॥११५२
बपु बाल-सुत बलकार, कूंध्यो[8] सु कर किलकार।
पुन आय रघुबर पास, बल लंकधीस बिनास ॥११५३

---

१ शरीर। २ दामिनी=बिजली। द्युति=कांति, चमक। ४ वालि-नंदन=अंगद। ५ राजसभा। ६ चकित। ७ मुग्ध, मूढ। ८ कूदा।

कहि आपनी कुसलात, बीती सु कीनी बात।
सुन मंत्रीयन सबेंत, श्रीरामचंद्र-सहेत ॥११५४
लंका सु पत्तन लूँम, भर रीछ बंदर भूँम।
साँमुंद्र सेंन समिंट, बीटचौ[1] सु जैसें बिंट ॥११५५
चित चाह आपौ[2] छोर[3], हद[4] लोप लैन हिलोर।
निश्चर डुबोवन नीर, बढ लहर ज्यूँ कपि बीर ॥११५६

दोहा

जमी सैन रघुनाथ जब, लंका चहुँ दिस लूँब।
औंन-बीस राँवन सुनो, वाढी निसचर बूँब ॥११५७
गिरचौ राज-मंदर-गुँमज, कोलाहल कीय कीस।
परी बूँब लका-पतन, सुन आँनन दस-सीस ॥११५८
कपि सुखैन दुर्धर्ष कपि, दुपि-सम[5] जिनकी देह।
घेर लंक धूँमन लगे, चारू दिसा अछेह ॥११५९
गर्जत तर्जत लंक गढ, भूप राँम के भींच।
सोभा लसत सुग्रींव की बिधु[6] जिम तारन[7]-बीच ॥११६०
परखा सहर पनाह[8] की, तोय-रास की तीर।
गिर किंदर ऊपवन गहन, भई बंदरन भीर ॥११६१
पुर-रक्षक राँवन प्रतै, कही लखो जिम कथ्थ।
कपि-दल सौं घेरचौ करचौ, श्रीरघुबीर समथ्थ ॥११६२

छंद हरगीतका

सुन कीस घेरचौ बीस-आँनन, पीस दंतन पाँन कौं।
फर रीस कोप्यौ काल-सम कर-बीस रूप क्रसाँन[9] कौं।
चढ धवरहर[10] पै होय चक्रत दीठ वक्रत देखनें।
बँन और ऊपवन बीच बंदर लग समंदर लेखनें ॥११६३

---

१ वेष्टित किया, घेर लिया। २ अपनापन। ३ छोड़ कर। ४ सीमा। ५ द्विपसम=हाथी के समान। ६ चंद्र। ७ नक्षत्रों के। ८ रक्षा, शरण। ९ कृशानु=अग्नि। १० महल।

अवगाह जुद्ध ऊछाह[1] सौं बेबाह[1] फौज करी बिदा।
वँहि जाहु गहि कै वेग-बल कहि कीस नहि पँहुचै कदा।
ईक रूप सीय कर ऊभय आसा नई अनई[2] नेम की।
मिल सभय बाढी चटपटी मन ऊभय खेम-अखेम की ॥११६४
ईत राँम दीनी जुद्ध-अग्या बंदरन जिह बेर में।
पति लंकहु बहु सैन पेली घनी घूँमर घेर में।
ईत राँम के जोधा अरे प्राकार[3] परखइ[4] पाटनं।
ऊत सुभट रांवन आय कै दल कीस लागे दाटनं ॥११६५
गिर-श्रंग लै ईत कीस गर्जत तोर तरवर तेख सौं।
कंगू गढ कोऊ ऐंच करखत[5] धोम बर्खंत[6] घेख सौं।
बढ चली सैना बंदरी गढ कोट ग्टेह गली-गली।
निश्चरन सैना बढी निर्भय थंभ पाँव थली-थली ॥११६६
जय कहत राँम घने जने जय लखन बोलत जोर सौं।
दिस-बिदस पूरत होय द्रढ सुग्रींव जय की सोर सौं।
कपि गर्जना जिम केहरी किलकार कर-कर कूद कै।
प्राकार गिर प्राकार पौरन रुपे चँहुँ दिस रूध[7] कै ॥११६७
जहाँ बीरबाहु सुबाहु जूथप पँनस नल बल पेल कै।
दिस-बिदिस कोट दबाय कै भुक मोर चालीय भेल कै।
बढ कै सकंधाबार[8] लौ घेरे सुनिश्चर घूँम कै।
भट राँम के ठाढे भये भर ओघ राखस भूँम कै ॥११६८
प्राची सुदक्षन कोंन पर कपि कुमद लै दस क्रोर[10] सौं।
कपि प्रसभ ताहि सिहाय कौं महाँबाहु पँनस मरोर सौं।
दक्षनहू पश्चम-कोन द्रढ सत बली जूथप सालुरे।
कपि बीस कोट अगोट करकस[11] जोट बाँध भरे जुरे ॥११६९
पछंमहू उत्तरकोन मै तारा सु पितु सतबलि तहाँ।
ईक कोट बंदर संग ऊमड़े जुद्ध के कारन जहाँ।

---

१ अगणित। २ अनीति। ३ कोट। ४ खाई। ५ कर्षत = खींचते हैं। ६ वर्षत। ७ रुद्ध = रोककर। ८ स्कन्धावार = राजकोट। ९ समूह। १० करोड़। ११ कर्कश।

ऊत्तरहू पूरव ओर के पुर-पौर पै श्रीरघुपती।
जहाँ बभीखन चँहुँ मंत्रीयन-जुत जुरे लछमनहू जती ॥११७०
सुग्रींव ईनहीं सहाय कौं जुध करन कौं दल जोर कै।
जम-जाल-सम क्रम[1] रोप गिर जिम अरे रूप अरोर कै।
महाँकाय जूथप जहाँ मिले गोपुछ्छ-संग गवाछ लै।
ठहराय पग ईक ओर ठहरे ऊपल तरवर आच लै ॥१०७१
रिछपती धूँमर संग रिछ्छन दूसरो दिस दाट कै।
ईक कोट लेय अँनीकनी[2] वढ ठौर लंका-बाट कै।
गज गवय-सभंह गध-माँदन ईनहि आदन औरहू।
सब कटक कौं संभार साधन द्रुत लगावत दौरहू ॥११७२
पुर लंक कौं पीड़ित करयौ घन घोर कीस घुमंड कै।
रप रही सैन ऊमंड राघव मेर[3] पाँवन[4] मंड कै।
पति लंक सुनत ऊछंड झटपट सैन बोल निसाँचरा।
गत-लोल बाँधहु गोल गह मह तोल खग रन-ततपरा ॥११७३
सुन लंकपति सासन निसाँचर दिसा-विदसा दल मिले।
कल-मले चल-चल जुद्ध-कारन झिलम धारत झिलमिले।
घनघोर सब्द कठोर घहरत हुरर सिंधु हिलोर की।
आँनक अवाजन वीर वाजन संख साझन सोर की ॥११७४
हुव नाद भेखन[6] हयन-हेखन[7] गज-विसेखन गाज की।
पर आस जास अकास पूरत येक रूप अवाज की।
निर्घोक[8] होवत रथन नेमी[9] तान धँनु दे टंकरा।
जम-जाल मांनहू कढे जाबुल वढे राखस वंकुरा ॥११७५
आंनन गु संगन मिल असंखन स्वेत रंग सुहावनै।
तन नील जिनके भर तँमोगुन धेख कर लग धाँवनै।
ईम लंकपति सेना ऊमंडी वान बरखन अतवली।
सुग-पंत[10] संजुत चौंतुरी मँड मेघमाला ज्यूं मिली ॥११७६

१ [illegible]। २ [illegible]। ३ मेर = पर्वत (सुमेर)। ४ पैरों से। ५ बानर।
६ [illegible]। ७ हेखन = घोड़ों का हींसना। ८ निर्घोष = ध्वनि। ९ नेमिचक्रि
[illegible]। १० [illegible] = [illegible] की कतार।

मुहमेंज होय मजेज सौं न हिजेज कोनों निश्चरा।
कर नांद केहर कपि करोरन भद्द[1] से हर जिम भिरा।
जय-जयत श्रीरघुनाथ जंपत जयत लछमन ज्यानकी।
सुग्रीव जय-जय सद्द सुनीयत हाँक-धुन हनुमाँन की ॥११७७
आवाज भेर अडंबरा गल गाज कपि-दल गह-गही।
रघुवीर-सेंना रार कौं बढ बार-धारा[2] ज्युं बही।
अहिराय[3] सम कर तेख ऊर गहि राय-कपि घनघोर ज्यूं।
बरसात भद्दर[4] गत बिसेकत लूंब बंद्दर-लौर ज्यूं ॥११७८
महु वाल मांनहु मधुकरा[5] करवाल[6] परसत कै कुपे।
बिकराल आग वलाय बढ रन भाल मर्कट थट रुपे।
थित थाल जल जिम द्रंग थरहर श्रास परहर श्रंग कै।
गये कूंद कै कपि भाल गरहर रूप नरहर[7] रंग कै ॥११७९
कर पाव घाव अनेक मर्कट दपट पटकत दौर कै।
कर रीस आयुध कर्बुरा[8] मिल कीस लेत मरोर कै।
जुर केक जंग अभंग जोधा चोट दै दै चटपटी।
ऊड़जात कीस अलंग कौं भारत फलंग[9] सु मर्कटी ॥११८०
कोऊ ऊपल लै लै कंगुरन के पुंन्यजन[10] पै परहरैं।
तन ताक सिर केऊ दसन[11] तोरत असन[12] मांनहु औसरैं।
कोऊ चरन पकरत कंधरा[13] कोऊ करन सौं गहि केस कै।
पुन दै चपेटन धरन पटकत खंभ-ठोरत[14] खेस कै। ॥११८१
कोऊ भुजा-जुद्धहु करत है ऊर क्रुद्ध दुद्धर ऊफ्फनै।
निश्चारु अरु बँनचार निर्भय रार लागे रुप्पनै।
धमचक्क धक्कन धर धुकी दिक्करी पावन डोलनै।
कररक्क रीढक कँमठ की वररक्क लागी बोलनै ॥११८२
कलहाक हाकन कर कजाकन मेल दल घमसाँन कै।
समसमस झाकन सैल-साखन ऊमड़ लाखन आँन कै।

---

१ भाद्रपद मास। २ वारि धारा। ३ सर्पराज। ४ अद्रि = पर्वत। ५ भ्रमर। ६ तलवार, धूँआ। ७ नरहरि = नृसिंह। ८ राक्षस। ९ फलांग। १० पुण्यजन = राक्षस। ११ दशन = दांत। १२ मुख। १३ ग्रीवा। १४ जांघ ठोकना।

कर खग्ग खेटक[1] लयै करबुर घाव देत घने-घने।
कपि लै कपाटन अर्गला कढ जोर तौर जने-जने ॥११८३
ऊत साँग लै ईत थंभ अाटन घाट घाटन घेर में।
सर-चाँप ऊत ईत ऊपल सरसत जूँझ रन ऊर झेर में।
पुन भयौ हाहाकार पत्तन भीर लख कपि भाल की।
मिल भाँमनी सब हाथ मीजत बूँबरी[2] बढ बाल की ॥११८४
पर्बताकार प्रचंड पौरुख रिछ्छ कोस रिसाय कैं।
सिल प्रबल बरखा करी घन-सम झेल ऋछ्छ झुकाय कैं।
फिर दौर-दौर चपेट फेटन लै लपेटन लूँम कैं।
नख ऊदर सौं अंतन[3] निकासत झोक दंतन झूँम कैं ॥११८५
अत प्रबल जुद्ध भयौ ईहीं प्रथमैं सु सहर पनाह पै।
निसचार अरु बनचार निज-निज रुपे अपनी राह पै।
हौनै सु लागौ बिजय-हित दृढ दुंद-जुद्ध दुहूँन कौ।
खग धूंन कैं लै ओट खेटक भ्रमत चयारहु कूँन कौ ॥११८६
सिल मेघनाद मरोर मुछ्छन आय अंगद आहुरचौ।
रव करत घोर रचाय कै भव[4] अंधकासुर जिम भिरचौ।
दुरधर्ख अरु संपात कपि दोऊ जुरे खल पर जंघ सौं।
महाँबली राक्षस जंबुमाली जुटचौ रन बजरंग सौं ॥११८७
खल सत्रुघन जुटे बभीखन गजतपन अवगाह कैं।
कपि नील भिरेऊ निकुंभ सौं सुग्रीव प्रघस समारुकैं।
विरूपाक्ष लछ्मन अरे रन-बिच करन धँनु लै बाँकुरा।
पति-अवध औ लंकापुरी-पति ऊभय जय के आँकुरा ॥११८८
रस्मीय[5] केत रिसाय कै ज्यूं अग्नि केतहु जाँनीयै।
जिग कोप अत दुरधर्ष जाजुल मित्र घन परमाँनीयै।
श्रीरामचंद्र अरे जु संगर लाज लंगर लाय कैं।
जय खंभ जंग असंभ जुरकै प्रबल थंभे पाय कै ॥११८९

---

१ ढाल। २ रोने की आवाज। ३ अन्तडियां, आंतें। ४ शिव। ५ रश्मि = किरण।

मिल मैंद[1] सौं रन बज्रमुष्टी असन-प्रभ दुबिहू अरे।
अत घोर प्रतपन नल अरे कपि संग लै ऊत कर्बुरे।
सभ्भ खेत कीस सुखेन सौं बढ़ बिदमाली विफुरयौ।
रन रूठ कै कपि और राखस कदन[2] दोऊ दल करयौ ॥११६०
बिव[3] और राखस बंदरन कौ घोर जुद्ध भयौ घनौ।
पर गये धरनी प्राँन परहर[4] जूझ खेत जनौ-जनौ।
धर रजी[5] दब गई श्रोंन धारा[6] माँस-कर्दम[7] माँच कै।
सभ्भ ऊभय संगर बीर सम-सम जोर जम-जम जाच कै ॥११६१
घन नाँद अंगद बीर के घट गदा मारी गाज कै।
लर थरयौ अंगद गदा लागत ऊठ्यौ करत अवाज कै।
लै गदा अंगद लार लाग्यौ मेघनाँद मिलाय कै।
भारी गदा जिम आग भ्हरत आच[8] सौं अजमाय कै ॥११६२
सोबर्न-रथ चूरन भयौ सब सूत[9] घोरा[10] संघरे।
आकास उड़ घननाद ऊबरयौ प्राँन कौ संसय परे।
सपात कपि पर जंघ दै सर[11] भरयौ सनमुख आय कै।
संपात लैं कर गदा समल्यौ दाव घाव दिखाय कै ॥११६३
महाँ क्रोध करकैं जंबुमाली हाक रथ हनमंत कै।
मुख बक्र कर ऊर चक्र मारयौ डक्र पोसत दंत कै।
हनमंत रथ चढ हेर कै बढ लात दीय जिम बीजुरी।
कीय ध्वंस ताकौ रथ कलेबर सूत अस मिल सर्करी[12] ॥११६४
निश्चरा प्रत-पन आय नल पै बाँन मारे अत-बली।
नल दौर कै मिल भर नख काढ़े सु चख[13] कोयन कली।
रन रूठ कै तहाँ प्रघस राखस लीलनै[14] सैना लग्यौ।
ईक बृच्छ लै सुग्रींव ऊमड़े भेंट होवत ही भग्यौ ॥११६५
बिरूपाख कौं लछमन बिड़ारयौ घोर दर्सन घेर में।
कपि देख कैं लछमन पराक्रम बढ़े संगर बेर में।

---

१ मयंद। २ युद्ध, मारकाट। ३ दोनों। ४ त्याग कर। ५ धूलि। ६ रक्तधारा। ७ कीचड़। ८ हाथ। ९ सारथी। १० घोड़े। ११ शर = बाण। १२ धूलि। १३ चक्षु, आंखें। १४ निगलने।

अग्नीहू रस्मीकेत[1] अरु जिग कोप सत्रुघ्नहू जिते।
रघुनाथ मारे रीस कै रन ऊबरे न भिरे ईते ॥११९६
मूँकाँन मारचौ बज्रमुष्टी कीस मैंद करार सौं।
रथ गिरचौ धरनी होय रज-रज मरे घौरा मार सौं।
मिल कै निकुंभ सुनील मर्कट रार कीन रिसाय कै।
घन करचौ घायल नील कौ घट बाँन सत बरसाय कै ॥११९७
रुप रार नील रथांग[2] कौं डारचौ सुतोल डराँवनौ।
सिर रथी कटकै स्वारथी[3] जुग भयौ जँमपुर जाँवनौ।
बपु बज्रसपरस दुबिद बंदर असनप्रभ राकस अरचौ।
सर असन-प्रभ दै वज्रसम कछु दुबिद कौं घायल करचौ ॥११९८
तरु तरल साँखू[4] लेय तर्मक्यौ दुबिद दौर दबाय कै।
कीय खंड-खंडन दै प्रकंडन मरचौ मन मुरझाय कै।
सोबर्न सझत सतांग[5] पै चढ बिदुमाली चाल कै।
सोबर्न भूखत चाँप धर सर भरत अयमय[6] भाल कै ॥११९९
तहाँ दई मार सुखैन कै तन बर्ख कै बाँनावली।
हस भयौ हर्खत पर्ख[7] हित-कौ चर्ख काल महाँछली।
ऊतकर्खं[8] अंग ऊठाय कै मारचौ सुखेन मिलाय कै।
रथ करचौ चूरन महाँरथी रन रुप्यौ कूद रिसाय कै ॥१२००
तिह बच्यौ देख सुखैन तरक्यौ सिला लै कर संमुहा।
महाँक्रोध कर फिर बिदुमाली गदा लै द्रढ बल गहा।
मारी सु ऊर पग मंड कै लागत सुखैनहु ना-लट्यौ[9]।
मारत सिला कै बिदुमालो फेफरा कालज फट्यौ ॥१२०१
गिर स्रङ्ग ज्यौं सोऊ धरन गिर गये गौंन कीय जमग्रेह कौं।
लागे सुगिद्धन चाँच लौंचन[10] दौर जंबुक[11] देह कौं।
भय दुंद-जुद्ध भयंकरा राखसहु बंदर रूठ कै।
चहुँ ओर भूत बिताल नाँचत केऊ कबंधहु ऊठ कै ॥१२०२

---

१ रश्मिकेतु। २ पहिया। ३ सारथी। ४ शाखा। ५ रथ। ६ लोहमय। ७ देख कर। ८ उत्कर्ष, विशाल। ९ नहीं गिरे। १० नोचने। ११ शृगाल।

जूझे सु दाँनव-देवतन जिम कीस-राखस क्रुद्ध में।
मुरदाँन छाई बसुमती[1] मिल जूझ जागा जुद्ध मैं।
केऊ परे तूट तुरंग पक्खर काय भाखर कुंजरा[2]।
खिर परे खर जहाँ ऊँट खच्चर रथ-रथी जूरा-जुरा ॥१२०३

दोहा

जुद्ध भयौ अत प्रबल जँहाँ, राखस बंदर रूठ।
भट केते घायल भये, पाछी दई न पूठ ॥१२०४
दुंव-जुद्ध होवत दुसह, सूरज गयौ सुमेर।
लटे कीस हरखन लगे, बढ राखस जिह बेर ॥१२०५
साँझ अंत भई सर्बरी[3], अत तम[4] गुन ईधकाय।
ऊमड़े निसचर सझ अनीं, समर-हेत सरसाय ॥१२०६

छंद त्रोटक

दुरचौ असताचल ओट दिनेस, बढचौ तम च्यारहुँ ओर बिसेय।
सिवा[5] मुख ऊक कढी रब संग, मृगादन[6] कोकत[7] घोक ऊमंड ॥१२०७
कहुँ मृदु-लोमक[8] सद्द करंत, ज्युँहो मृग-दंसक[9] बोलत जंतु।
चड़ी नभ पिंगलका[10] चहकात,दिवाँधक[11] बायस[12] भीत दिखात ॥१२०८
मिले प्रतिरोधक[13] जांरन[14] मोद, चुरैलन भूत जगे चँहुँ कोद।
नख्छत्रन-जोत मिली कँहुँ नैन, बदे तिह बेर भयंकर बैन ॥१२०९
पलादन[15] जोर बिभावरी[16] पाय, ऊमंडेऊ आयुद्ध लै अनखाय।
गही बँनचारन की तिन गैल सपक्षहु धावत माँनहु सैल ॥१२१०
मिले फिर मर्कट कल्प[17] महेस, भुजंगम पूँछ मरोरत भेस।
भिरे भट संगर रूप भयाँन, निसांचर कीस भये जल लौंन ॥१२११
रुपे निसचारीय मेचक[18] रंग, अरे रन भल्लुक कीस अभंग।
ईतैं जय राँम पुकारत आस, ऊतै जय राँवन की अभिलास ॥१२१२

---

१ पृथ्वी। २ हाथी। ३ शर्वरी = रात्रि। ४ अंधकार। ५ शिवा = शृगाली। ६ जरख। ७ बरगड़ा। ८ खरगोश। ९ वनबिलाव। १० भैरवी = चिड़िया। ११ उल्लू। १२ कौवे। १३ चोर। १४ परस्त्रीगामी। १५ राक्षस। १६ रात्रि। १७ प्रलय। १८ काले।

उभै दल मारहि-मार उचार, बढ़ै ईक-ईक्कन बीर बकार।
महाँ भयकार बन्यौ अवमद्द[1], सबै दिस होत कुलाहल[2]-सद्द ॥१२१३
न देवत पीठ निहार-निहार, रचावत रीठ मचावत रार।
जँभोरत कंध मरोरत जोर, करै रन दावहु घाव करोर ॥१२१४
मड़ी निसचारन आयुध मार, डहै कर कीस तरोवर डार।
उखारत अंगन पाँन अमेठ, फलादय[3] भौर लगावत फेट ॥१२१५
बढ़े दल बंदर आग बलाय, पलादन जूहन-जूह[4] पलाय।
कमे केऊ कातर कूह करंत, भयातुर होय उसास भरंत ॥१२१६
अरे रन नैरत सूर उमाह, सुबर्न के भूखन भीर सनाह[6]।
उजासत भासत बीच अँधार, प्रकासत ओसधि जाँन पहार ॥१२१७
बढे तेऊ बंदर के दल बीच, मरोरत कंध मिलावत मीच।
जहाँ केऊ बंदरहू कर जोर, लगावत लातन गात लथोर ॥१२१८
चलावत बंदर केक चपेट, फलादय कंटक की फरफेट।
जरे रथ हाटक[7] के जर जाल, भरे रिस घूँमत भूँमत भाल ॥१२१९
मलप्पत कीस ज्युँहीं मृगराज, गयंदन कंधन ऊपर गाज।
हड्डड़त बाजन[8] की सुन हेख[9], प्रहारत पाखर की दुति पेख ॥१२२०
लथोरत लूँम लपेट लगाय, तुरंगीय जंगीय के तरकाय।
चढ़े रथ ऊपर कीस कजाक, करै धुजडंड़न खड कजाक ॥१२२१
दकूलन[10] भूल फटै नख दाँत, भूमैं उड़ ऊपर भाँतन-भाँत।
जगी जर-तारन मौतिन-जाल, मिली नभ जाँन नछ्छत्रन-माल ॥१२२२
विड़ारहु मारहु बोलत बाँन, मरोरत मुट्ठन सोव्रन-म्याँन।
कटै कपि चाप कलाप कलम्ब[11], प्रनासत तोमर[12] साल प्रलंब ॥१२२३
सँमेटत लेत सक्कतीय सूल, कटै पर-घातन[13] ह्वै प्रतकूल।
मड़ी कपि अंग उतंगन मार, घघुंनत मुक्कन धुक्कन धार ॥१२२४
लगावत लातन घातन लोट, चपेटन हाथन की चल चोट।
विहव्वल राखस ह्वै विचलाय, परामुख भागेऊ दूर पलाय ॥१२२५

---

१ अवमर्द = महायुद्ध। २ कोलाहल। ३ वृक्ष। ४ झुंड के झुण्ड। ५ राक्षस।
६ सन्नाह = बख्तर। ७ स्वर्ण। ८ वाजी = घोड़ों। ९ ह्लेषा = हिनहिनाहट।
१० दुकूल = दुपट्टे, वस्त्र। ११ बाण। १२ भाले। १३ लुहांगी।

मुरे तेऊ आप बिचार प्रमीत[1], जुरे कपि भालन की लख जीत।
घनी फिर कीय नगारन घोर, सताबीय संख असंखन सोर ॥१२२६
ठिले बहु राखस बाँधत ठाट, अडंबर-बाजुन[2] को सुन आट।
जुरे तहाँ सैनक संन जमाय, भरे बिख घोर भुजंगम भाय ॥१२२७
हुई तब बाजन भेखत हेख, बड़े द्वीप गाज अवाज बिसेख।
भई निस रात्रीय काल भयाँन, मही सब छाय रही मुरवाँन ॥१२२८
परै कपि राखस ऊपर पाँव, चले तऊ संगर कौ कर चाव।
रहे दल बंदर रोकत राह, पिले चल राखस बेपरवाह ॥१२२६
झरी कीय राघव पै सर झोक, घनी कर चाँप टंकारन घोक।
ईतै रघुनाथहु चाँप ऊठाय, सनंकत[3] बाँन तजे सरसाय ॥१२३०
जुरे बिव औरन बाँनन जंग, भूमैं भहरावत जाँन भुजंग।
बढ्यौ बहु बाँनन कौ बिसतार, अँधारीय रैन मही अँधियार ॥१२३१
भरे तम आँखन में रज भार, डरे कपि ओट गहै तरु डार।
बिसेखत देखत कीस बिहाल, तहाँ रघुनाँथ बिचे रन ताल ॥१२३२
गह्यौ धँनुं लस्तक[4] हस्तन गाढ, चुने सर लीन चिमंटीय चाढ।
लगे दल राखस जाय बलाय, सिखा[5] जँनु पावक[6] की सरसाय ॥१२३३
मिल्यौ खल राखस को दल मीच, बढे रन-अंगन आयेऊ बीच।
निलो बजूद्रष्टहु बाँनन मार, सोई दल राखस कौ सिरदार ॥१२३४
घर्यौ दुरधर्ष न नैक घरोज[7], खरे हुये नाहिन थंभेऊ खोज।
ज्युँही जिग-सत्रु असंभव जोध, बढावन राँवन-राँम-बिरोध ॥१२३५
महोदर औ सुकसारन मेल, खरे हुय नाहि कर्यौ रन खेल।
हले महाँ पारस मीजत हाथ, निहाँर कै पौरुख कौं रघुनाँथ ॥१२३६
जरे बहु राखस बाँनन-ज्वाल, मिलै जिम दीप पतंगन-माल।
सुबर्न के बाजन की सर सोक, ऊड़ै जिगनूँ जिम अंबर-ओक ॥१२३७
रची अँधयारीय पावस[8]-रात, जुरे कपि भल्लुक राखस जात।
ऊठ्यौ रव दुंदभ कौ चहु ओर, घटा जिम गाज रही घनघोर ॥१२३८

---

१ मृत्यु। २ जुझाऊ बाजे। ३ सनसनाते हुए। ४ धनुष का मुष्टिभाग। ५ लौ। ६ अग्नि। ७ धैर्य। ८ वर्षा।

परै प्रतिसब्द पहारन पुंज्ज, गुहारन किंदर ऊठत गुंज्ज।
भई प्रज लंक महाँ भयभीत, गवावत नार अमंगल गीत ॥१२३९
सोई निस ह्वै गई माँस समाँन, बिमासत ह्वै कबहूँ न विहाँन[1]।
निसाँचर सेच्चक रंग निरेह, ईतै कपि नीलहु रिछ्छ अरेह ॥१२४०
भयंकर दीसत है जिम भेस, करै नखमार गृहा-गृह[2] केस।
जहाँ बढ अंगद सौं बरजोर, मिल्यौ घननाद हू मुछ्छ मरोर ॥१२४१
ऊभै भट बीर पराक्रम ऊद्ध, जुहारीय एक सौं एक न जुद्ध।
मड़ी तहाँ एक पै एक न मार, बिसेखन संजुत नाम बकार ॥१२४२
रुप्यौ घननाद ऊतै पग रोप, करच्यौ ईत अंगद दारुन कोप।
मतौ कर मारन कौं मन-माह, चल्यौ सँनीकखँ[3] जबै जय जाह ॥१२४३
ऊतगन अंग ऊपार-ऊपार पटक्केऊ सीस प्रचार-प्रचार।
तुटे रथ स्वारथी और तुरंग, ऊड्यौ घननाद समेटत अंग ॥१२४४
लुक्यौ नभ जाय गह्यौ मन लाज, सबै जय बोलत कीस-समाज।
बभीखन आदक औरहु बीर, सराहना अंगद कीन सधीर ॥१२४५
जहाँ घननाद खिसाय जरूर, गरज्जीय फेर संभार गरूर।
वृहंमाँ[4] जास दयौ वरदाँन, अंगजित छाय हदै अभिमान ॥१२४६
ऊपाय कै मायक-जाल[5] अनेक, अनेकन ऊपर सज्जीय येक।
करी झर बाँनन की कर कोह, सबै हुव घायल कीस सँदोह[6] ॥१२४७
करी झर आग अँगारन केर, बढी जल धार-रसा[7] जिह बेर।
धृवै घन-आश्रय[8]श्रोनित-धार[9],श्रवै पल[10]कौंसक[11]गोदरू[12]सार ॥१२४८
परै ऊड धूर जँझोरत पाँन, पसाईय गोलक मार पखाँन।
पिसाँचनी साँकनी डाँकनी प्रेत, ऊचारत बानीय केक अहेत ॥१२४९
न सक्कहि एकन-एक निहार, ऊठ्यौ दिस च्यारहु घोर अँधार।
भये बस मोह जबै कपि भाल, ऊचारत आरत[13] बाँन ऊताल[14] ॥१२५०
सुकंठ की फौज लखी विन-सुद्ध[15], जबै रघुबीर वकारेऊ जुद्ध।
दये रघुनायहु बाँन अदिष्ट,[16] सँभार कै बोल मिलाय कै सिष्ट ॥१२५१

१ प्रभात। २ ग्रहाग्रह = पकड़ा धकड़ी। ३ सन्निकर्ष = निकट। ४ ब्रह्मा। ५ मायिक-जाल = इन्द्रजाल। ६ समूह। ७ पृथ्वी। ८ घनाश्रय = आकाश। ९ शोणित-धारा = रक्तधारा। १० मांस। ११ हाड। १२ मज्जा। १३ आर्त्त। १४ उत्ताल = ऊँचे स्वर से। १५ बेसुधि। १६ अदृष्ट।

नहीं तन घायल भौ घंननाद, बढ्यौ रघुनायक हीय बिखाद[1]।
ईहीं अवसान[2] कौं जाँन अभंग, भरे बिल-बाँन समाँन भुजंग ॥१२५२
तजे रघुनायक पै कर तेख, बढे नभ-मारग आय बिसेख।
अनेकन देख बिचै असमाँन, सपक्षहु[3] तक्षक-नाग[4]-समाँन ॥१२५३
भयंकर जीह[5] दिखावत भाल, ज्युँही फिर तिक्षन[6] दाँतन-जाल।
भयंकर देखत ही कपि भाल, चलाय न जाय पलायन चाल ॥१२५४
खरे रहे पुत्तरी जेम पखाँन, बढे तेऊ राघव पै अहि-बाँन।
सकोमल गात लगे सरसाय, भुजंगम भींम मनौ भहराय ॥१२५५
भिदे तन राघव लच्छन भाल, बिलच्छन तिच्छन दंत बिसाल।
बिलोकत राघव लच्छन बीर, परेखत लच्छन राघव पीर ॥१२५६
बिचच्छन श्रीरघुवीर बिचार, तत छिन जूथप कीन तयार।
सबै लख बात कही समुझाय, ऊबेल कौं कीजियै सिद्ध उपाय ॥१२५७

दोहा

कपि रिछ्छन अज्ञा करी, बेला कठन बिसेख।
मेघनाद आकास-मह, दुरचौ सु आवहु देख ॥१२५८
अज्ञा सुन अवधेस की, ऊड़ चाले आकास।
सिल तरबर लै गुरड़-सम[6] पौरुख करचौ प्रकास ॥१२५९

छंद पधरी

चाले ढूँढन कौं सून्य[7] चूर, दस महाबली कपि दूर-दूर।
द्रढमति सुखेन के पुत्र दोय, हेरत तिन संगी नील सोय ॥१२६०
बालि कै पुत्र अंगद बहोर, अरु सरभ दुविद आकास ओर।
हेरन पुन चाले हँनूँमाँन, जुत साँनुप्रस्थ कपि रिखभ जाँन ॥१२६१
नभ रिखभ सकंदहु बढे लार, सुत-राँवन कौ आपौ सँभार।
बाँनन सौं मारन लग्यौ बीर, भई सराजाल[8] आकास भीर ॥१२६२

---

१ विषाद = दुःख। २ अन्त। ३ पंखसहित। ४ तक्षक सर्प। ५ जिह्वा = जीभ।
६ तीक्ष्ण। ६ गरुड के समान। ७ शून्य = आकाश। ८ बाण-समूह।

कीनी दसहूँ दिस अंधकार, धरहरत जित हीं तित बांनधार[1] ।
लख सके नाहि तिह अंग लेस, दुर रह्यौ जेम बादर दिनेस ॥१२६३
घट राँम लखन के करत घात, दस दिसा नाग-सायक[2] दिखात ।
बध परे पास में ऊभय वीर, सुध भूल गये आपन सरीर ॥१२६४
पौंढे सर-सेज्या[3] पग पसार, बिव कमल-नयन तन मन बिसार ।
रत श्रवत अंग में लखन राँम, सोवत तन गोरे और स्याँम ॥१२६५
घननाद गजंना करी घोर, बोल्यौ सु ऊच्च बाँनी बहोर ।
मोही सौं भिर कै ईंद्र मूढ, गम पाई माया नहीं गूढ ॥१२६६
बपुरे[4] माँनव की कहा बात, भेजत जँमपुर कौं ऊभय भ्रात ।
ईह कहकै मारे बाँन और, दीनै रघुवर कौं दौर-दौर ॥१२६७
सुकमारवार[5] जेतक सरीर, तहाँ ताक-ताक कै जरे तीर ।
परवाह[6] पवन लागत प्रचंड, डिग जात धरन ज्या-धुजा-डंड ॥१२६८
गिर परे लखन ईम राम गात, फैलाय पाँख खग फरफरात ।
पर गये जाल में नाग-पास, संधन समेट हुय बंध स्वाँस ॥१२६९
पिड मे खगेसर पंत-पंत, दीरघ क्रतंत के जेम दंत ।
वछ्छ के दंत जैसै बिसेस, भर रहे सल्लकी सूल भेस ॥१२७०
झरना जिम लोहू झरझरात, बढ गयो रोग मनु रक्त-बात ।
तिल-तिल बगतर के भये टूंक, ऐसे सर मारे फिर अचूक ॥१२७१
ऊठ भई अँधारी अंत-अंत, भननाय भृङ्ग जेसे भृमंत ।
देत कै कीस-दल भग्यो दूर, धर हरत बाँन जिम भाँन[7] धूर ॥१२७२
पौरख सौं केतक थंभ पाव, चित्राँम-पूतरा[8] बने चाव ।
रोवनें लगे बहु कीस रोज, धोवनै हाथ हायन धरोज ॥१२७३
ऊड़ गये कीस जे अंतरीग, श्रीराँम लखन देखे सिरीख ।
चेष्टा न करत पग हाथ चाल, बसुमती ऊतरे ह्वै बिहाल ॥१२७४
घननाद भगो नृप देत घाव, बांच्यौ कपि सेना कछू बचाव ।
सुग्रीव बभीखन आय संग, अंगद मयंद सुखप अभंग ॥१२७५

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible] । ४ बेचारे । ५ मर्मस्थान । ६ प्रवाह ।
७ [illegible] । ८ [illegible] ।

हँनूँमान आद नल नील हेर, फिरनै कौं लागे चहुँ फेर।
सब जतन करन लागे सुखेन दल बंदर कौं बिस्वास दैन ॥१२७६
ईत रघुबर की गत भई येह, अवलोक कीस दुखवत अछेह।
निज फौज समिल कर मेघनाद बोल्यौ निसंक तज कै बिखाद ॥१२७७
जुग भ्रात कहूँ के जती जूँन, खर दूखन काका करचौ खूँन।
बिद्वेख[1] निकारचौ ऊभय बीर, सो मरे परे सुंदर सरीर ॥१२७८
द्रग सौं सब मिल कै लेहु देख, बिन स्वास परे दोऊ जती बेख[2]।
बरसात नदी ज्यूं लंक बीच, कींनौं दुखरूपी मलिन कीच ॥१२७९
धोयौ पाँनप[3] की दिव्य धार, पीछौ न होय जाकौ प्रचार।
जूथप कौ निर्बल भयौ जूह[4], सर्द[5] कौ श्वेत बादर-समूह ॥१२८०
सब राखस बंदर सुनत संग, ऊचरचो ऊञ्च बांनी अभंग।
गंभीर बाँन कौ सुनत घोर, अवलोक डरत आकास ओर ॥१२८१
ठाढचौ बंदर कौ देख ठाट, कीनौं बिजुरी-सम करकराट।
टंकार धनख तूंजीह[6] ताँन बरसाँवन लाग्यौ फेर बाँन ॥१२८२
जूथन के जूथप जाँन-जाँन, अवलोक बली सौं बली आँन।
दीनैं सर अगनत आँख देख, अहि-पांख लगे जैसे असेख ॥१२८३
नव बाँन लगे कपि देह नील, दोऊ दुबिद मैंद त्रय लगेऊ डील।
बपु जाँमबंत कै एक बाँन, हेर कै दये दस हँनूँमाँन ॥१२८४
दीनै गवाक्ष कै बाँन दोय, जेतेहु सरभ कै जाँन जोय।
अंगद कै दीने सर अनेक, बपु रिछ्छराज कै तन बिसेक ॥१२८५
रबि-किरन बेग सिखी-सिखारूप[7], धर हरत जेठ की मनहु धूप।
ऐसी सर-धारा धर ऊमंड घर हेरऊ फेर पौरुख घुमंड ॥१२८६
डहकाय कीस-सेना डराय, पुर लंका पँहुच्यौ मोद पाय।
जाय कै करचौ दससिर जुहार, सब कहे समर के समाचार ॥१२८७
ईत सोक बढचौ कपि-दल अछेह, दुख मिट्यौ दसानन निसंदेह।
जाँनी जय अंगज ईंद्रजीत, पुन करी दसानन ईधक प्रीत ॥१२८८

१ विद्वेष। २ वेष। ३ धनुष। ४ यूथ = समूह। ५ शरद्ऋतु। ६ प्रत्यंचा।
७ अग्निज्वाला के समान।

[illegible] तूँ अमर रहो तेरी मजूत'।
[illegible], लागी गु बधाई बटन लंक ॥१२८९
[illegible], प्रति गुंज्ज बड़ो आकास-पोल।
[illegible], जय-जया बोल कै इंद्रजीत ॥१२९०
[illegible], जनु रामचन्द्र सौं समुझ प्रीत।
[illegible], मघ मरे भये बिसराय सोक ॥१२९१
[illegible], सूवन सुगंन अरु जांमवान।
[illegible], नगिवन्नी सतबली गज जमंत ॥१२९२
[illegible], इंद्र गीत रिराम आयो अगोट।
[illegible], प्रभु रैमासंबहू बल असत्थ ॥१२९३
[illegible], बन हुलन जहाँ जावत तुरंत।
[illegible], नागोग कोप सौं रह्यौ दाव ॥१२९४
[illegible], उड़ि रिऊ बिहूरन ढांग-ढांग।
[illegible], [illegible] सुभेस कोऊ ललक्कार ॥१२९५
[illegible], भिरे भिऊ [illegible]।
[illegible], इंद्र [illegible] ॥१२९६
[illegible]।
[illegible] ॥१२९७
[illegible]।
[illegible] ॥१२९८
[illegible]।
[illegible] ॥१२९९
[illegible]।
[illegible] ॥१३००
[illegible]।
[illegible]

घूँमाय लंक में समर-घाट बीरासन[1] लै गई ऊद्धबाट[2]।
बहु मरे परे जहाँ कोस बीर, सर-साल[3] श्रवत जिनके सरीर ॥१३०२
सर-सेज्या राँमहुं रहे सोय, लघु-भ्रात-सहित स्वाँसा लुकोय।
बगतर के बिखरे केऊ बरंग[4], सर निखर चाँप तुँन्नीर[5]-संग ॥१३०३
रत श्रवत घाव-मह लगी रेत, लग नाँग-पलेटा बाँन लेत।
देवर-जुत बर कौं सीया देख, बिलपनै लगी क्रंदत बिसेख ॥१३०४
हा राँम लखन कहा भयौ हाल, बिच खेत परे बाहू बिसाल।
साँमुद्रिक-ज्ञाता बिप्र सोय, जे कहत हमारौ हाथ जोय ॥१३०५
सुभगा[7] तुम ह्वै हौ कुंवर सीय, पतिबृता अमर अहबात[8] पीय।
नित करहै तो सौं नेह नाह[9], परवार पुत्र बाढहि प्रवाह ॥१३०६
धर जितै न जावहि नामधेय, पति-संग करहि जिग बाजपेय।
सब झूँठे ह्वै गये येक-साथ, निरजीव होत श्रीअवधनाथ ॥१३०७
पटराँनी रेखा पद्म पाँव- भ्रूँहावलि अनमिल[10] बक्रभाव।
कारे रंगवारे नरम केस, अरू देत बिरल ऊजरे असेस ॥१३०८
नैन कौ अंत श्रौ बड़े नैन, अरू घुटना मौटे हाथ ऐन।
नख चिकने सुन्दर रंग लाल, अँगुरी सुमाल[11] बिन अंतराल[12] ॥१३०९
ईक जुरे एक में दोऊ ऊरोज[13], हैस्तन बृत बैठे हनोज़।
दूबरी भई तऊ प्रभा देह, छोर कै करचौ नहीं अजौं छेह ॥१३१०
रच रही पेरवा जवन-रेख[14], ऊँची किनार नाभी असेख।
ईंद्री दस मन बुध चित्त और, ठहरे अपने सब आप ठौर ॥१३११
निज कहते मंदस्मिता[15] नार, बाँच कै बिप्र पतरा[16] बिचार।
मिथ्याँ सब ह्वैगये बुद्धिमाँन, बेद के भेदवारे बिधाँन ॥१३१२
गत गजब परी सुभ चिन्न[17] गात, मर गये पती मम अकसमात।
निरभाग भई हूँ राँड नार, जमवार भाँड़ बस परी जार ॥१३१३
हँनूँमाँन लगाई आय हेर, घन कपि-दल को कर धार-घेर।
सामुद्र ऊपरै रची सेत, खुर-गऊ[18] ड़ावरे डुबे खेत ॥१३१४

---

१ युद्धस्थल। २ ऊर्ध्ववाट = आकाशमार्ग। ३ बाणों से छिन्न। ४ वरांग = शिर ५ तुणीर = तरकस। ६ हस्तरेखादिचिह्नशास्त्र। ७ सौभाग्यवती। ८ सौभाग्य। ९ नाथ। १० पृथक्। ११ कोमल। १२ छिद्र। १३ स्तन। १४ यवरेखा। १५ मन्दहास करने वाली। १६ पञ्चाङ्ग। १७ चिह्न। १८ गाय के खुर।

कितते ईत आयौ कितब[1]-काल, जिह रघुवर बाँधे बाँन-जाल।
जम डरत नाँम जीहा जपंत, ईह कहा अवस्था भई अंत ॥१३१५
हा राँम लखन हम दिया हेर, घट आय परचौ है मृत्यू घेर।
अवसेख रहे कछू स्वाँस और, भय पूरे ह्वै है साँझ-भोर ॥१३१६
ईह कहत सीया लेवत ऊसास ऊठ गई राखसी ह्वै ऊदास।
त्रजटा सँमीप ईक रही तीय, संबोधन करनैं लगी सीय १३१७
सुनीयें ईह देवी अम सिधंत[2], अपनै स्वामी को होय अंत।
भट होय ऊदासो दीन भेस, दीसत नहि ऐसौ काल देस ॥१३१८
फौजहू रूखारी करत फेर, जाँनत कछू मुरछा[3] करे जेर[4]।
पुस्पक बिमाँन कौ ईह प्रभाव, पत-हीन त्रीया जो देत पाव ॥१३१९
धर परत दरत[5] ह्वै धूज-धूज, ऊठत न ठौर बैठे अमूँझ।
जिह कारन सीता लेहु जाँन, बैठार चलत पुस्पक-बिमाँन ॥१३२०
मुख दीप्त-सहित सो लखहु मीठ, पाछी अब चालत फेर पीठ।
लक्षमी-सहित आँनन ललाँम, राजीव-नयन दोऊ लखन राम ॥१३२१
माया सौं ऊपज्यौ जाँन मोह, चौकसी फिरत बंदर चछोह।
जीवन की आसा आस जीत, सुग्रींव सैन कौं लखहु सीत ॥१३२२
बाँनी त्रजटा की सुन बिसेस, सुख भयौ कछू बिस्वास सेस।
मोरचौ बिमाँन कौ त्रिय मिलाय, ऊतरी असोक बन सीया आय ॥१३२३
ईत राँमचंद्र के आसपास, निज सैन होय बैठी निरास।
तिनकौ सबोधन करन तिष्ट, गहि गदा बभीखन अय गरिष्ट॥१३२४
फिर कै सैना के चहूँ फेर, बतराय आयगे तहीं बेर।
ऊघरी रघुवर की नेक आँख, भुरराय ऊठे लघु भ्रात झाँख ॥१३२५
हा लछमन कैसौ भयौ हाल, बोले मुख ऐसैं ह्वै बिहाल।
तुम कौं संग लीनें बिना तात, मुख जाय दिखाहू कहा मात ॥१६२६
जैहै सु समंदर लाँघ जौन, गिर किंदर बंदर करहिं गौन।
सीता न मिलहि निज सुंदरीय, जाँनत पिछताबौ नहो जीय ॥१३२७

---

१ प्रलय। २ सिद्धांत। ३ मूर्च्छा। ४ वशीभूत। ५ फट कर।

कहि नृपत बभीखन तिलक कीन, मम पास खरौ आँनन मलीन।
हित सत्य प्रतज्ञा भई हाँन, पाछै लछमन के तजहुँ प्राँन ॥१३२८
ईतनी कहि रघुबर ह्वै अचेत, खिर्त[1] ऊपर सोये बीर-खेत।
ईह समय बभीखन निकट आय, परसे रघुबर के ऊभय पाय ॥१३२९
निर्मल जल धोवत ऊभय नैन, बिड़रावत-रोवत कहत बैन।
सोवत सर-सेज्या गौर स्याँम, राजीव-नयन तुम लखन राँम ॥१३३०
ऊर सौं लंका की तजी आस परहूं राँवन की काल-पास।
जाँनत कुपुत्र हूं ईंद्रजीत, करहै का काँमैं कहा कुपीत[2] ॥१३३१
दुख देहै केतक करहि दोख मरकै सुख पैहूँ पाय मोख।
ऐसै कहि कहि कै बचन आँन, ऊठत बिच छाती पय-ऊफाँन ॥१३३२
सुग्रीव बभीखन देख सोक, रोकन कौं लागौ अंसु रोक।
कहा भयौ बभीखन अहो क्लीव[3], श्रीराँम गुरुड़ मैत्री सदीव[4] ॥१३३३
जाँनहि कहु अंतह-करन जोग, राँम को मिटावहि नाग-रोग।
सुग्रीव कह्यौ ये तौ सवाल, तहाँ बैनतेय लख तातकाल ॥१३३४
मन बेग ऊड़े तनकौं समेट, फारत तम बाँदर बेग फेट।
अहि ड़रे भूँम पाताल ओक, संननाँट पंख की बाज सोक ॥१३३५
ऊतरे रघुबर के निकट आय, बपु टरी नाँग-पाँसी बलाय।
ऊठाय हाथ गृह गरुड़ आप, तन-मन कौ मैट्यौ महाँताप ॥१३३६
जुग भ्रात राँम अरु लखन जोय, खल की छल-बल की पीर खोय।
तब दोऊ भ्रात कौं बैनतेय[5], अंक सौं भेंट-बल अप्रमेय[6] ॥१३३७
कुसलात पूँछ बलवाँन कींन, द्रढ़ बिजय-हेत आसीस दीन।
कर राँम लखनहूँ नमसकार. पूँछन को लागे सहित प्यार ॥१३३८
चंदन-अनुलेपन दिव्य चीर, सोभायमाँन आँनन सरीर।
अज हौ किन दसरथ पिता आप, तन मन कौ मैट्यौ महाँताप ॥१३३९
हम बिकल भये जाँनौ न हाल, कीजीयै भेद जाहर क्रपाल।
सुन रघुबर बानी पर्म श्रेय, बोल कै कह्यौ हम बैनतेय ॥१३४०

---

१ क्षिति। २ कुपित। ३ कायर, नपुंसक। ४ सदैव। ५ गरुड़। ६ अगणय, महान्।

तुम सखा सँनातन गनहु तात, राखत द्रष्टी में दिवस-रात।
छल-खेत करचौ ईह वीर खेल, अहि[1]-कष्ट जाँन आयौ ऊवेल ॥१३४१
दुख मिटचौ सकल अहि गये दूर, सब्भोयै संगर कौं महाँपूर।
राँवन सँघार घर जाहु राँम, कर अमर क्रीत[2] कौ समर काँम ॥१३४२

दोहा

वैनतेय रघुबीर की, पीर मिटाई पास[3]।
द कै राँम प्रदक्षना[4], ऊड़े बीच आकास ॥१३४३
चितवत राँम प्रसन्न चित, आँनन लछमन ओर।
चितवत लछमन राँम चिव[5], जुगल नयन कौं जोर ॥१३४४
जूथप देखत भ्रात जुग, पौरुष प्रबल प्रचंड।
गाजन लागे सिंघ-गत, अगनत कीस ऊमंड ॥१३४५
बाजन लागे बाजने, संख नगारन सोर।
परचौ लंक आतंख[6] पुन, भयौ ऊदय रवि भोर ॥१३४६

छंद भुजंगीप्रयात

हले बंदरी-सैन भाख्यौ हरूरौ, परचौ लंक में फेर आतंख पूरौ।
गली च्यारहूँ द्वार की रोक गाढी, चँमू[7] कोट कंगूर पैं और चाढी ॥१३४७
भयौ नग्र[8] कोलाहलं फेर भारी, पिले के बनोका अगारी पिछारी।
भुजा-बीस आजाँन राजाँन भौरै[9], अवाजाँन बाजाँ सुन्यौ गाज औरै ॥१३४८
भगे राजमंत्री गये राज-भाँनं[10], प्रभाखी ईहै बीनती कौं प्रधाँनं।
चढे कीस कैसै सबै सीस छाती, पराजीत ह्वै बेर होतै प्रभाती ॥१३४९
धरा नाँद सौं सात पाताल धूजै, ऊड़ी धूसरी आभ स्वाँसा अमूजै।
परी भीर जैसै भगे जात पंखी, ऊलूकाद झंखै तरै फार अंखी ॥१३५०
हिलोरै चढचौ सिंधु बोलै हड़ूड़ा, बड़े तीर के बृच्छ जे नीर बूड़ा।
रवी ऊगते हीं समा स्यार रूँना, करी फिक्करी[11] कूकहू च्यार कूँना ॥१३५१

---

१ सर्प। २ कीर्त्ति। ३ नाग-पाश। ४ परिक्रमा। ५ छवि। ६ आतङ्क = भय। ७ सेना। ८ नगर। ९ प्रभात में। १० भुवन। ११ स्यारनी।

मिले बिस्वरा[1] औ खरा भूंक मंडी, चकी चिल्लनीं चीकुची बोल चंडी[2]।
गिरै पत्तनं गिद्ध-माला गहक्की, भरै काक कोलाहलं माँस-भक्की ॥१३५२
सुसै[3] तोय-सोता करी-दान[4] सुक्कै, बँधे अस्व-साला महो अस्व बुक्कै[5]।
अचीतौ मचायौं करी बिघ्न आई, भरे मोह डूबे परे जुग्म भाई ॥१३५३
घुमंड्यौ किधौं चाल सौं काल घेरा, मिले हाल कै ठाल कै लंक मेरा।
किधौं आय कै राँम बिद्वेख काजैं, ईही ध्वेक[6] सुग्रींव मारै अवाजं ॥१३५४
किधौ होय बभीखन स्याहिकारी, प्रतज्ञा चहै राँम की पार-पारी।
अरे च्यारहूँ द्वार कौं रोक ऐसैं, करै सोक मैं कीस निर्धोक कैसैं ॥१३५५
महाँराज जंघाल कों गुप्त मेलौ, परै ठीक पाछै अनी सैन पेलौ।
डरैंगे फिरैंगे सिला डार डंड़ा, भिरैं ना मुरेंगे कपी होय भंडा ॥१३५६
हमारी ईहै बीनती राज हेरौ, घरै जायगौ ऊठ कै कीस-घेरौ।
सुनी लंक-राजांन मंत्री सलाहा, चढी चौकसी की बढी चित्त चाहा ॥१३५७
हकारे घने हेर कै हेरनैं कौं, चलै सैन सुग्रींव चौफेरनै कौं।
घनै रीछ देखे जुरे कीस घेरा, तकै अंख सौं लंक लै-लै तरेरा ॥१३५८
धिकै होय में द्वेख के आग धूँना, करै कीस कोलाहलं च्यार कूँना।
सिला-श्रंग लै बृच्छहू सूलधारे, फबै भौरवारे किते फूलवारे ॥१३५९
लये राखसी फौज सौं सस्त्र लोहा, ठिले रात में लात दै मार ठोहा[7]।
भरे खेत माँही परे सूल भाला, सकती कती कीस के ले बिसाला ॥१३६०
गदा डाँग लीनैं सिलासार[8] गोला, दिखावै दिखाई कपी लंक दोला।
बिचै राँमहू लछ्छनं दोय बीरा, सु सोभै प्रभा स्याँम गौरे सरीरा ॥१३६१
डहै हाथ कोडंड टंकार देते, सभै आँन भूताँन बाँनं सहेते।
तकै लंक की ओर कौं दृष्ट तीखी सता काल की ज्वाल-माला सिरीखी ॥१३६२
घने जूथपं साथ में घेर घेरै, हलै पैंतरा मंद पै सेन हेरै।
लगे आलहू पास में कीस लारा, बड़े जोर सौं सोर देते बकारा ॥१३६३
खरे बीर दोऊ गृहै हाथ खागै, अजोध्या-पती की बढी सैन आगै।
परे बंध छूटे ज्युँहीं नाँग-पासी, खुली बात हेरू सुनी सोय त्रासी ॥१३६४

---

१ खच्चर। २ श्यामा पक्षी। ३ सूख जाता है। ४ हाथी का मद। ५ हिन-हिनाते हैं। ६ द्वेष। ७ ठोला। ८ लोहा।

फिरे लंक सैना दिसी पीठ फेरी, सबै हेरकं बेर ताही सबेरी।
दरवार आये ज्युँहीं सैन देखी, बखाँनी सबै रात बातै बिसेखी ॥१३६५
सुनी लंकराजाँन मंत्री सहेता, जगे बीर जंसै दोऊ जंग जेता।
तिहीं स्याहिकारी बनै बैनतेई, करैगे ज्युँही स्याहि कौं देव केई ॥१३६६
चढो हीय में आय लंकेस चिंता, ईही बात कौं सोच कै आद अंता।
जई राँवनं मैं दिसापाल जेता, करे दाँनवाँ देवहू जेर केता ॥१३६७
सपुत्रं बली मेघनादं सवायौ, पती देवता जीत कै बृंद पायौ।
जती बांध सारे पती ओध जाये, ऊसै आत कौं बैनतेई ऊठाये ॥१३६८
कपी आय घेरौ करचौ लंक केरौ, बन्यौ आय कै फेर बीतौ बखैरौ[1]।
बड़े बाँन जे वासुकी[2] तेज वारैं, भगै ज्वाल माला ज्युँही ख्येड़ झारै ॥१३६९
कटे बंधनं सो बली होय कैसा, ईहीं ऊपजौ चित्त माँहीं अंदेसा।
करे द्रोह रूठो मनौ साप काला मिली हीय में क्रुद्ध की ज्वाल-माला ॥१३७०
वक्यौ सुद्ध कौं भूल कै फेर बाचा. कहा काल के छोकरे पिंड काचा।
मिले आय संगी कपी अंग मोटा. लरैगे कहा काछ बाँधे लँगोटा ॥१३७१
सिला-श्रृंग लै लै भये अंग सूरा, भरै भाथ में वृछ भाखै भरूरा।
वने राँम के स्याहिकारी बिराँनै, घनी राखसी फौज मेरै घराँनै ॥१३७२
धरै अस्त्र सस्त्रं धनी साँम-धर्मी, करै वैर जासौं बड़े क्रूरकर्मी।
भटाली कटाली भरी भेल-भेला, मिलै राखसी फौज के झुंड मेला ॥१३७३
घने मत्त मातंग आलान धुँमै, चरेरी भरे पोगरा आभ चूमै।
इहे जुद्ध की वेर खंडा दुधारा, करै व्याल[4] के पूत से फूँतकारा ॥१३७४
डिगावै पहारं छुटा चोट देने, प्रहारै अटा कोट कौं दंत पैने।
झरै आठ भट्टी तला डाँन झंना, करै काल सौं चालहू सूपकंना[5] ॥१३७५
भ्रमै भृंग की भीर सोगंध भूली, फसी रेख सिंदूर की साँझ फूली।
सझै भादवी ज्युँ घटा घोर सद्दा रजै छादवी[6] त्युँ फिरचौ काठ रद्दा ॥१३७६
गुड़ा पीठ डारै पुड़ा पूर गाई, करै दावहू घाव ना लाग कोई।
झपेटान हंजीर जंझीर झारै, करै गाँन मानौं गिरी कज्जरारै ॥१३७७

---

१ बखेड़ा। २ सर्प। ३ क्ष्वेड=विष। ४ सर्प। ५ गधे। ६ चमड़ी।

द्रुपी-ईखका-कंडना खाग-दंता, अरा भीर द्वारै भरे है अनंता।
खिजावै खुलै खेत में जाय खूँनो, धिखै आँख की भांख में आग धूँनो ॥१३७८
अनी आँकरी बाँकरी लाग ऊठै, चरख्खी कुरख्खी छटा ज्वाल छूटै।
भरै आस ही पास में भीर भाला, करै जुद्ध में क्रुद्ध ज्यूं नाँग काल. ॥१३७९
दलै दै दकालै तरू तोर डारै, नई अटूबी बाट घाटी निकारै।
डिगै सैल जैसे डगै देत दौरै, करै कर्दमं मार सेना करोरै ॥१३८०
फनो फुंकरै सूंड मारै फराका, करै बिज्जुरी आभ मानौं कराका।
गहै कनंका[१] ऊँच गाढे गिरंदा, चहै चूंमनै तारका[२] सूर चंदा[३] ॥१३८१
छकै छोह सौं श्रंखला ऐच चालै, परै औभका धाँम सातौ पतालै।
रुपै जुद्ध में क्रुद्ध ह्वै कुंजरोही[४], दुरैगे कहाँ बापुरे मीर द्रोही ॥१३८२
बधे पायगा जायगा तेज बाजी, तहाँ बिस्वराहू[५] खरा भीर ताजी।
बड़े डील के डौल बारे बितुंडा[६] थली थोक ही थोक के थंड थंडा ॥१३८३
गरै हेखना भेखना[७] आभ गूँजै, धरा टाप की टक्करै लाग धूजै।
खनंका करै श्रंखला नाद खीजै, परै जप्पकै बप्प बोली पतीजै ॥१३८४
ठठका भरै प्रोथ की थूंदरी कौं, कटक्का करै देखकै ऊँदरी कौं।
कबींड़ार[८] भारै कुसा के कसीसा, सु पै अंग भांकै मनौ काच सीसा ॥१३८५
पबीनै[९] मंडे ऊपरै पख्खरारी, सताबी मनौं सैल पाँखै सबाँरी।
लगै फेट की चोट जो लेत लाहै, ढका सौं पका कोट सै लोट ढाहै ॥१३८६
थरक्कै भरक्कै खुरा पाँव थंबा, लगै भाटका साटका पूंछ लंबा।
करै राटकी जुद्ध की बेर कैसे, तरै ऊतरै काट को बीज तैसे ॥१३८७
बढै जोर सौं नाँस[१०] की साँस बाजै, गिरा किंदरा[११] को मनौ पोल गाजै।
भरे टोकरा ज्यूं गिरै फैल भाँटू[१२], ऊड़ै कुंजराली अगै आय आँटू ॥१३८८
धरै धोरतं चाल पाताल धूजै, ऊतेरित सौं मेघमाला अरूभै।
घने कर्बुरे रंग के स्याँम घोरा, किते धूंसरे-अंग लाखां करोरा ॥१३८९
पटा पीत पारंद्र चर्मा पबंगा, किते रोछरे केस कूदे कुरंगा[१३]।
जबै पार की सैन पै दौर जावै, धरै चक्र चक्री ज्यूंहीं बक्र धावै ॥१३९०

---

१ सूंड। २ नक्षत्र। ३ सूर्य-चन्द्र। ४ कुञ्जरारोही=हाथी के सवार। ५ खच्चर। ६ वितुण्ड=हाथी। ७ भीषण। ८ कविका=चाबुक। ९ जीन। १० नासिका=नाक। ११ कन्दरा=गुफा। १२ भाटे। १३ हरिण।

तुरंगी[1] चढ़ै पै ऊठै लै तरारा, तुटै आभकै[2] गाभ[3] में जाँन तारा।
जमी छूँद कै खूँद कै जंग जैहै, अरी पाँव की धूसरी[4] मूँद ऐहै ॥१३९१
बनै जुद्ध के रथ्थहू बैन[5] केई, जुरे काठ के पाट लौहा जरेई।
थिरीभूत लागी मही पुष्ट थूँनी, कसी है रसो मंच की च्यार कूँनी ॥१३९२
धुरी चक्कका[6] पिंडका[7] कीलधारा[8], समाजूँसरी और प्रासंग[9] सारा।
गढ़े है रढ़े है चढे गाढ-गाढै, चबी[10] छीतरा व्याघ्र की खोल चाढै ॥१३९३
भयकार दौरै जबै जुद्ध भूँमै, धुजाडंड भूँमैं जहाँ, लोक-धूँमै।
रथी रथ्थ आरोह कै रार रूठै, चलै बाँन के सत्रु के प्राँन छूटै ॥१३९४
पयादी[11] चमूँ आस-पासै परीहै, असंख्या दसूँ ही दिसा कौं अरी है।
गहै ढाल खड्ग गदा सार[12] गोला, अरा-भीर चौकी फिरै ओल-दोला ॥१३९५
अजाँनै परंदा[13] पतँगाँन आवै, जहाँ सत्रु-सैना कहाँ पैठ जावै।
बनै ईंट सोबर्न के कोट बंका, लसै और च्यारू बसै बीस लंका ॥१३९६
कँगूरा बनै हीर बैडुर्ज[14] केरा, फरक्कै धुजा मूर्ज[15] पै लै फरेरा।
तही पै भरी आग की लाग तोपै, कट्टका करै ज्वाल ज्यूँ काल कोपै ॥१३९७
छुटै लोल गोला ऊठै छग्ग-छग्गै, धुँआ-धोर आकास लौं धग्ग-धग्गै।
गिलै-ऊगलै सोर कौं धोर गाजै लटा-लूंब आकास कौ मेघ लाजैं ॥१३९८
फलाकार लागे बलाकार काँटा, ऊतारै चढावै जुरै सीध आँटा।
मुकै सिष्ट में तिष्ट कै मेल मक्खी, भलै मोरचा ओरचा सोर भक्खी ॥१३९९
दगै दुग्ग[16] पै कोट सै लोट देती, करै चोट पै चोट की मार केती।
गढी पै चरक्खी चढी गैल गैलै, फिरै बक्र तूँडो जितै आग फैलै ॥१४००
चलै कोट फेरो दराबीन चढ्ढी, डुलै कुँजरा के टलानक्क दढ्ढी।
मुखी सूकरा कूकरा कोक मछ्छा, रजै व्याघ्र चीता-मुखी डौल रिछ्छा ॥१४०१
फिरै सूर चंदा चहूँ ओर फेरा, नछत्राद झाँकै नहीं लाग नेरा।
त्रहूँ नोख[17] कौ सैल नग्गो त्रबंकी, अरी झाँक सक्कै कहा फार अंखी ॥१४०२
भयंकार खाई चहूँघाँ भरी है, अपै नीर सोता अगाधा तरी है।
किलोलें करै कछ्छ औ मछ्छ केते दर्टै नक्रहू[18] झाटका पूँछ देते ॥१४०३

१ घुड़सवार। २ आकाश के। ३ गर्भ = बीच। ४ धूलि। ५ वर्ण। ६ पहिये। ७ लाल। ८ पूठी। ९ पंजाली। १० खाल। ११ पैदल। १२ लोह। १३ पक्षी। १४ वैडूर्य = पन्ने। १५ बुर्ज। १६ दुर्ग। १७ नोक। १८ मगर।

गिरै श्राय दंतो[1] भरै एक ग्रासा, तहीं दौरकै लोक देखै तमाँसा।
लगे च्यारहू श्रोर मंचाँन लोहा, सुनेरी करचौ काँम जापै सुसोहा[2] ॥१४०४
धरी बीच संचाँन की बाट घाटी, परे ताँन खँचाँन के पाट पाटी।
गिरी बिस्वकर्मा पुरी नींम गाड़ी, असी कोस लंबान चालीस श्राड़ी ॥१४०५
सबै धाँम कौं काँम राच्यौ सुनेरी, घटा मेघ जैसै श्रटा घेर घेरी।
परदा जरी तार ऊँची पताका, रचे श्रातपत्रा[3] मनौ चंद राका[4] ॥१४०६
बने चौहट्टा हाट बाजार बीचै, निरी रत्न रेती परी बाट नीचै।
बने वाटका घाटका[5] कूप बापी[6], निकारी गली सौं गली भूँम नापी ॥१४०७
भिरे है किला सौं किला च्यार भांती, खुलासाँ सुनौ जाहि विख्यात ख्याती।
नदी च्यारहू श्रोर नादेय नाँमी, गिरीसौं घिरा पारवतेय[7] गाँमी ॥१४०८
किला बाँन्ध भारी रखी च्यार कूँनी, जुहै क्रत्रमी[8] इँट भाटा जुराँनी।
कमी च्यार है दुर्ग की नाँहि कोई, जमी चिक्कनी श्रास ही पास जोई ॥१४०९
श्रलंगी चरेरी घने श्रंग ऊँचे, लगै ना निसैनी सबै लाग लूँचे।
बसै पूरबी द्वार पै बीर बंका, सहंसं दसं रात दीहा[9] निसंका ॥१४१०
रहै दक्षनी द्वार पै चातुरंगी[10], जुरे लक्ष जोधा बरापूर[11] जंगी।
दसू लक्ष जोधा प्रतीची[12] दुवारै, धरै सूल भाला घने खड्ग धारै ॥१४११
घरईया कहावै जिनूँका घराना, सदाँ के निवासी भरोसा समाँना।
रहै ऊत्तरा द्वार पै कोट रछ्छा[13], बली हाथ में साँग लीनै बरछ्छा ॥१४१२
सदा राज के काज में सावधाँना, करै काल सौं श्राल भाले क्रपाँना[14]।
पुरी लंक के बीच वीचै पडावा, अरे राखसी फौज वारे श्रड़ावा ॥१४१३
लसै कोट जुद्धार छ्त्तीस लक्षा, रखै राज के काज को पूर रक्षा।
लगाती[15] जिनूँके श्रसंख्यात लेखै, परै काम तौ ठाँन ठाँमै परेखै ॥१४१४
हनूँमाँन हाँनी करी जास हेरै, फिरै रात ही दीह में दिष्ट[16] फेरै।
हनूँमान सौं सैन सुग्रींव हीतै, जुरैगै जँहाँ बेर में जुद्ध जीतै ॥१४१५

---

१ हाथी। २ सुशोभा। ३ आतपत्र=छत्र। ४ रात्रि। ५ वाटिका=बगीची। ६ बावड़ी। ७ पर्वत। ८ बनावटी। ९ दिवस=दिन। १० सेना। ११ भरपूर। १२ पश्चिम। १३ रक्षक। १४ कृपाण=तलवार। १५ साथ लगने-वाले सेवक। १६ दृष्टि।

दोहा

सबही बात मेरी सुनौ, जाँन अजाँन जितेक।
कोरत जय हित में करे, तुम सौं कहत तितेक ॥१४१६
सेनापत बलवाँन सब, गनतो देत गनाय।
आद अंत सौं आज लौ, सेना करत सहाय ॥१४१७
प्रजा सबल लंका पुरी, निबल न जाँनत नाँम।
स्याहि करत निज स्यांम[1] की, कठन परै जो काँम ॥१४१८

छंद मोतीदाम

करे बस नाँगन कौं हित कीत[2], जिहीं पुरि भोगवती लीय जीत।
जयौ फिर जिक्षन[3] कौ पुर जाय, कुबेरहु भ्रात गये कदराय ॥१४१९
महेसुर[4] माँनत है जिय मित[5], करै सोई उत्तर बास ईकंत[6]।
प्रजा जग जाँनत है दिस-पाल, निधोस्वर[7] जाचत होत निहाँल ॥१४२०
लयौ हम ताहिसौं येहु लगाँन[8], बिसेखन पुस्पक एक बिमाँन।
रखी हम राजन नीत की रीत, पिछाँनोय भ्रातहु सौं नही प्रीत ॥१४२१
दई मयदाँनव-पुत्रीय[9] दाँन, जँह्रीं पटराँनी मंदोदर जाँन।
सबै भृगु-सिख्खन[10] कौ सिरदार, बन्यौ बहनोईय बूझ बिचार ॥१४२२
निरंधर जाहर है मधु नाँम, बँसाईय कुंभिनिसी जिह बाँम[11]।
सोई भगनी मम जाँन सयाँन, मधू तिह कारन माँनत माँन ॥१४२३
सदाँ मम राखत साल सनेह, अहो-निस[12] आवत जावत एह।
परै मुह[13] काम तौ सासत पीठ, धुरंधर बेल महाबल धोठ ॥१४२४
रसातल बासुकी[14] तक्षकराज, सुथाँनक बाँनक नाग-समाँज।
करे जय लूट लये धन-कोस, भुजाबल आपही आप भरोस ॥१४२५
जये जग जाहर दाँनव जात, बड़े बरदाँनीय[15] वीर बिख्यात।
लरे ईक हायन[16] लौ कर लाग, लगे हम पायन बैर अलाग ॥१४२६
लये द्रब[17] ताहि पै डंड लगाय, फिरे जय दिघ्घ[18] धुजा फहराय।
परंजन-पूत घने बलपूर, करे वहु संगर काँम करूर ॥१४२७

१ स्वामी। २ कीर्ति। ३ यक्षों। ४ महेश्वर। ५ मित्र। ६ एकान्त। ७ निधीश्वर=कुबेर। ८ कर, भेंट। ९ मयासुर की पुत्री =मन्दोदरी। १० भृगुशिष्य=दैत्य ११ वामा=स्त्री। १२ अहर्निश=दिन-रात। १३ मेरे। १४ सर्प। १५ आसवर। १६ वर्ष। १७ द्रव्य। १८ दीर्घ।

जई चतुरंगीय-सेन जिनूँन, कढै नँहि आजलौं बाहिर कूँन।
जये जमदूतन मृत्यु सजोर, तहीं फिर काल की पासीय[1] तोर ॥१४२८
महाँ ज्वर सागर बेदना मूँल, तर्‌यौ जम लोक गऊ-खुर तूल[2]।
अजाँन ही कालहु झाँकत आय, परै नहि लंकपुरी दिस पाय ॥१४२९
जमी पर छत्रीय-जात जुझार, भरे तरू जेम अठारह भार।
प्रफूलत होय जमे दल पूर, सनातन जात गनावत सूर ॥१४३०
कट्यौ अभमाँन कौ होय कुठार, निरंधर राँवनहूँ निरधार।
निरंतर पुत्र बड़ौ घननाद, मनावत मात पिता मुरजाद[3] ॥१४३१
कर्‌यौ जग ईस रिझाँवन काज, संपूरन जाहि कर्‌यौ सुख-साज।
बिचार कै ईस दयौ बरदाँन, जिताहव[4] जाँनत बच जहाँन ॥१४३२
जयौ मघवाँन[5] कर्‌यौ बँध जेर[6], फिरायेऊ लंक छुरारेऊ फेर।
लई जय इंद्रहू सौं सुत लाग, भलौ जग मोहि सौ कोन कौ भाग ॥१४३३
भयाँनक कुंभकरन हो भ्रात, न जाँनत कोन जँहीं निसनात[7]।
भयाँनक रूप जही भुजडंड बिनासन समृथ है बृहमंड ॥१४३४
जगावहु जाँनहुंगौ जब जोग भलै कपि रीछ लगावहुँ भोग।
कही हम बात सुनी तुम काँन, सभासद जाँनत बुद्धि सयांन ॥१४३५
अबै तुम भासन कीजीयै ऊक्त, जथारथ[8] प्रवृत[9] जुक्त-अजुक्त।
सभा सुन राँवन-भूप-सलाह, रुके कछु सोच बिचारत राह ॥१४३६
प्रथँमहीं सैनप बोल प्रहस्त, हरोलीय[10] होय मिलाय कै हस्त।
दिगंतर गंधृव दानव देव भलो बिध जाँनत नागन भेव ॥१४३७
पिसाँच हू आद जिते बलपूर मिटाँवन समृथ हैं मगरूर।
कहा जुग भ्रात है रांज-कँवार सरोरुह-[11]आँनन के सुकमार ॥१४३८
मिले कपि-झुंड जुनै हनुँमाँन, गयो कुसलात सुनै कर गौंन।
हनूं सब बंदर सासन होय, जिते गिर-किंदर अंदर जोय ॥१४३९
रहौ निहचित[12] सदाँ महाँराज, कहै सोई राज करैं हम काज।
प्रहस्त की बोलन राह पिछांन, कुप्यौ दुरमुखहू रूप क्रसांन ॥१४४०

---

१ पाश - फाँसी। २ तुल्य = समान। ३ मर्यादा। ४ आहवजेता = युद्ध-विजेता। ५ इन्द्र। ६ लज्जित। ७ निष्णात = प्रवीण। ८ यथार्थ। ९ प्रवृत्ति = वार्ता। १० अग्रणी। ११ कमल। १२ निश्चिन्त।

कहे तिह रावँन जाव करूर, धुवी[1] हम पौरुख ऊपर धूर।
जराय कै लंक कौं कीस जबूंन, कढ्यौ कुसलात ऊतर-सौं कूँन ॥१४४१
जेहीं नहि बाँध सके पसु जूँन, निसाँचर जाँन लये बल न्यूँन[2]।
मिलायकै लायकै बंदर मूँढ़, पुकारत मारत हाक पढ़ूढ़[3] ॥१४४२
करैं धम-चक्कन धक्कन क्रूर, जती संग लायकै आय जरूर।
सुन्यौ नहि जावत बंदर सोर, जुहारत आपहु कौं कर जोर ॥१४४३
बिदा मोहि कीजीयै राज बिचार, हँनूँ हँनूँमाँन कौं खेत हकार।
बिजै तुम पावहुगे ईह बेर, जवै सब बंदर होवहि जेर ॥१४४४
सुनी दुरमुख की एह सलाह, ऊठ्यौ बज्रदंष्ट्र होयै अवगाह।
बढ्यौ परघातन हाथ बढाय, छवयौ दोऊ भ्रूँहन भाल चढाय ॥१४४५
बडे रघुनायक लछमन बीर, ऊभै रन मंडत होय अधीर।
सुग्रीवहु होय बभीखन संग, मिले केऊ जूथप जुद्ध उमंग ॥१४४६
सतौ कर मारहिगे हनुँमाँन, नहीं सिध होवहि काज निदाँन।
भिजावहु मोकह दै रन-भार, सँघारहुँ जुथ्थपती सिरदार ॥१४४७
भगावहुं बंदर की सब भीर, प्रजा सब लंक की मेटहु पीर।
ऊठ्यौ तब पौरुख छाय असंभ, निरंकुस कुँभ कौ पुत्र निकुँभ ॥१४४८
बडे तुम राखस हौ बलवाँन, सबैं रहौ आपने ग्रेह सुथाँन।
निरंतर संगत भूप निवास, रूखारूह[4] अंतह[5] कौ सुख-रास ॥१४४६
बकारत जावतहूँ ईह बेर, हँनूँ रघुनंदन लछूछन हेर।
सँवारहुँ बंदर कौ सब साथ, बुड़ोवहु[6] सागर में भर बाथ ॥१४५०
जहां ईह बजृ-हँनूँ सुन जाव, सँबोधन किन्नेऊ ऊठ सताव।
समेट कै खावहु बंदर सैंन, ईकंदर छोटेऊ मोटेऊ ऐन ॥१४५१
अनाँद सौं राखस खात अहार, करे हम हेत बड़े करतार।
वड़प्पन नाहिन है कछु बात, जिहीं सब जाँनत आपनि जात ॥१४५२

---

१ ध्रुव, निश्चय। २ न्यून = कम। ३ गरम। ४ सन्मुख, रखवारे। ५ जनाना।
६ डुबा दूंगा।

दोहा

भूंज भूंज आमख[1] भखौ, मदरा-कर मत-वार।
जात अकेलौ जुद्ध कौं, धँनुख-बाँन कर धार ॥१४५३
कहा राँम लछमन कहा, कपि-दल कहा करूर।
आये जब तैं आज लौं सनमुख चढे न सूर[2] ॥१४५४

छंद पद्धरी

सुन बजृहँनूं की बात आँन, सूरमा भये सब सावधाँन।
नःकुंभ रभस महाबल निसंक, बिरूपाक्ष मरोरत भ्रूंह बंक ॥१४५५
सुप्रघ्न सुर्जसत्रुक समेत, कोपे महाँपारस रस्मिकेत।
जिग कोप महोदर खल जितेक, पुन अग्निकेतु दुर्धर प्रवेक ॥१४५६
दुरमुःख निसाचर बजृद्रष्ट्र, तस साँग परघ[3] लै तिष्ट तिष्ट।
घन प्रलय जेम पौरूख घुमंड, डहडहे सख गहि भुजा-डड ॥१४५७
कलमलत बोल ऊठे कठोर, चल-चलत सिंधु मनु पाज छोर।
सह-सहत बीर राखस-समाँज, गहमत बोल गंभीर गाज ॥१४५८
लागे कहनै कौं लार-लार, बिफुरे आप आपौ बिसार।
भूरे बदर जो चढे भौंन, कारे रिछ्छन की बात कौंन ॥१४५९
भखजैहै जासौं होय भेट, पापीन पचावहि बीच पेट।
दसरथ राजा के पुत्र दोय, जिनहूँ कौं बंधन करहि जोय ॥१४६०
भय तजहु भजहु सिव लंक-भूप, ईह राज काज करीयै अंनूप।
सब सुभटन की सुन कै सलाह, राँवनहू सोचन लग्यौ राह ॥१४६१
गर्जनै लग्यौ ऊंत कीस गोल, होय कै जुथ्थ-जुथ्थप हरोल।
जुत अहित सबन के सुन जबाँन, बोल्यौ नृप नाँनाँ माँलबाँन ॥१४६२
सुन राजा राँवन मो सवाल, कटु ओखद[4] में गुन तातकाल।
तेरी रुख देखत कहत तात, भट पुत्र भतीजे कहा भ्रात ॥१४६३
मैं कहत बात सो माँन मंत, ऊर बीस सोच कै आद अंत।
सब बिध सौं राजा सावधाँन, बाँनो बिबेक बिद्या बिधाँन ॥१४६४

---

१ आमिष = मांस। २ शूरवीर। ३ परिघ, परिघा = बरछी, लुहांगी। ४ औषधि।

भुव-राज करत ऐस्वर्ज भोग, जाँनत बिचार जोगहु अजोग।
बसि-करन मंत्र एकौ बिचार, बिन ही बिचार ऊठत बिकार ॥१४६५
जहाँ उचत समय पै जोग जाँन, मेल कौं कीजियै त्याग माँन।
बढती आपन की चहै बात, परहर[1] घटती की पक्षपात ॥१४६६
आपसौं अधिक लख सत्रु और, कीजै मिलाप बातै करोर।
लघु अपनै सौं पुन सत्रु लेख, बिगृह[2] बिचार करीयै बिसेख ॥१४६७
लघु जाँन न छोरै सत्रु लार, बाँधै प्रबंध जैसौ बिचार।
सब नीत रीत कौ ईह सिद्धंत मति माँनत जैसौ कहत मंत ॥१४६८
महाँराज राँम सौं कर मिलाप, ऊनकी त्रीय सौंपहु उनही आप।
सब गंधृव रिखि मुनि सुर सुरिंद्र, चाहत जय लछमन राँमचंद्र ॥१४६९
जातै मिलाप करनौ जरूर, पख कौं लख नीती न्यायपूर।
परमेष्ठी[3] कीने दोय पक्ष, रिभु[4] जाती दूसर दैत रक्ष ॥१४७०
सुर धर्म आसरो[5] करत श्रेय, अधृम असुरन कौं अप्रमेय।
देवता सुनाई धर्म देत, अधरम सौं राखस असुर हेत ॥१४७१
सतजुग जब आवत धर्म सेत, लग लार अधर्महि लील लेत।
कलजुग अधर्म को ईहीं कार, लीलत अधर्म लग धर्म लार ॥१४७२
घूंमत तुम निश्चर साथ घेर, जग जीव जात कौं करत जेर।
सुर-पख-वारे रिखी देव साध, बिन धोखै जिनकौं करे बाध ॥१४७३
ऐसे तुम कीने अनाचर, बांच्यौ न कबहु मन में विचार।
जिग ताप करत अरू वेद जाप, पुन्यातम[6] भूसुर[7] रहित पाप ॥१४७४
साधन-जुत राखत धर्म सीस, आराधन निस-दिन करत ईस।
जिन में मुख ब्रांमन खत्रि-जात, वैसहू सूद्र धर्महि बसात ॥१४७५
आहूत[8] देत है बीच आग, जातै सिध होवत वेद ज्याग।
कारज ऊतँम के करनहार, निज थाँन-थाँन दीने निकार ॥१४७६
यातै फिर अधरम को न और, भय देत न सोचत साँझ-भोर।
खट-करम[9] करत दुज[10] पुंन्य-खेत[11], दुर-दुर[12] आहूती अग्नि देत ॥१४७७

---

१ परिहर=त्यागकर। २ विग्रह=युद्ध। ३ ब्रह्मा। ४ ऋभु=देव। ५ आश्रय=भरोसा। ६ पुण्यात्मा। ७ ब्राह्मण। ८ आहुति। ९ षट्कर्म। १० द्विज। ११ पुण्यक्षेत्र। १२ छुप-छुप कर।

जिग धूँम ऊठत प्रज्वलत ज्वाल, तन दग्ध[1] होत निश्चर त्रकाल।
बरदाँन दयौ बिध[2] जहीं बेर. कैसै तुम बिसरे जाहि केर ॥१४७८
बिध सनमुख भाखी ईती बात, ज़ीतूँ सुर-दाँनव-जिक्ष-जात।
नर बंदर बपुरे कहा नीच, बढ चढै न सनमुख खेत बीच ॥१४७९
जाँनें निर्बल सो प्रबल जोर, घन जेम गर्जना करत घोर।
दिन पलटयौ सूचक साख देत, चितत नहि चित सौं ह्वै सचेत ॥१४८०
ईह लंका-पत्तन चहूँ ओर, घरहरत बीजुरी कठन घोर।
मेघावलि बरखै मंद-मंद, बहु बेर रुधर की परत बुंद ॥१४८१
अस[3] हाथी खच्चर गधा ऊँट, छित[4] आँखन आसूँ परत छूट।
ऊड़ धूर पवन सौं आट-बाट, कंचन-महलन कौं भरत काट ॥१४८२
पहिलै ज्यूँ लंका नहि प्रकास, अह-निसा रूप दीसत ऊदास।
सर्पादिक कागा गिद्ध स्यार, भारी स्वर बोलत भंयकार ॥१४८३
जंगल के वासी जिते जीव सब फुलबारी निवसत सदीव।
सुप्न में त्रीया कारी सवास, हेरत दै तारी करत हास ॥१४८४
देत है बायसन[5] बलीदाँन, सोई जोरी[6] सौं भखजात स्वाँन।
गदही सौं ऊत्पत होत गाय, ज्यूँ नौरिन[7] मूखक[8] जनत जाय ॥१४८५
व्याघ्री सौं करत मैथुन बिलार, सुकरी-कुकरी सौं जरख-स्यार।
पीरे पर राते पग कपोत[9], हिल-मिलत ग्रेह एकत्र होत ॥१४८६
सारका[10] घरेलू पच्छि[11] सोय, जंगल में वासौ करत जोय।
जंगली घरेलू जिते जीव, सब लरत रहत निस-दिन सदीव ॥१४८७
अरु मृग-गन पक्षी सूर और, मिल रुदन करत कंधा मरोर।
नकटा सिर-मुंडत पुरख-नार, देत है दिखाई द्वार-द्वार ॥१४८८
ऐसे निमत्त[12] औरहु अनेक, येक पै दिखाई देत येक।
भूले हम यातै सुखद भोग, जाँनत अनर्थ कौ बन्यौ जोग ॥१४८९
बिस्नु कौ रूप रघुनाथ बीर, साख्यात स्याँम सुंदर सरीर।
दल बंदर को बल लखत देह देवता अवतरे निसंदेह ॥१४९०

१ जल कर भस्म होना। २ विधि = ब्रह्मा। ३ अश्व। ४ क्षिति। ५ कौओं। ६ बलपूर्वक, जबरन। ७ नेवला। ८ मूषक = चूहा। ९ कबूतर। १० मैना। ११ पक्षी। १२ निमित्त = कारण, शकुन।

समुद्र ऊपरै रची सेत[1], द्रढ पौरूख साखी ईही देत।
हँनूमाँन लंक जारी हडूड़, सामुद्र लाँघ कै सहज सूढ ॥१४६१
जुग-भ्राता बाँधे इंद्रजीत, पहिचाँन सनातन गरूड़ प्रीत।
आये सु छुड़ाये फेर ऊठ, तेऊ घेर रहे पर्वत त्रकूट[2] ॥१४६२
ईतनै पै सोचत नही आप, प्रगटचौ कोऊ दीरघ आय पाप।
मन रुचै करहु सौ महाँराज, ऐहै न काल ईह समय आज ॥१४६३
सब मालवाँन के सुन सवाल, कटु राँवन बोल्यौ गृस्त[3] काल।
छित-जीत मोहि कौं कहत छोट, मेरे दुसमन कौं कहत मोट ॥१४६४
मेरे साहँस कौं करत मंद, चरचरी[4] बखाँनत राँमचंद्र।
वपु नाँना नातौ तुम बिसेख, द्रोही हम जाँनै बात देख ॥१४६५
सीय-बिरह भये दुर्बल सरीर, बाप के निकारे ऊभय बीर।
सरनागत बंदर भये सोय, खत्रीया-धर्म मुरजाद खोय ॥१४६६
ईत-ऊत की माँगी धाड़ आँन, जय मोसौं चाहत कहा जाँन।
अहँ चूँन लूँन[5] खावत अनंत, राखसी-फौज हाजर रहंत ॥१४६७
जुध-करन ईसारे साथ जात, बल जँही बिसारे कहा बात।
भये राँम ईधक हम न्यूँन भेस, देख कै कह्यौ कहा काल देस ॥१४६८
करचे तुम बायक कहे केक, वैर सौं सत्रु पख सौं बिसेख।
समज कै करी कछु वात सोच, पारनै कारनै मोहि पोच[6] ॥१४६९
मैं राँवन राजा मालवाँन, जग-जीत क्रीत जानत जहाँन।
भेजने चार भट पुत्र भ्रात, जुद्ध की तयारी करत जात ॥१५००
पचकारन[7]-कारन तुम प्रवीन, निज वृद्ध वेस में ह्वै नवीन।
अंतर कर नातौ[8] निकट आँन, बतरात अमंगल रूप बाँन ॥१५०१
वयवृद्ध होय कै रचत ब्याज[9], ऊर की प्रतीत[10] सब गई आज।
बन सौं सीय लायौ पकर चाँप, साँपँहुगो कैसै राँम स्याँम ॥१५०२
कोने न आज लौ स्याँम कोय, जीते दिस-पालन जोय-जोय।
माँनव सौं स्वाँमी कहैं मेल, राखस-पन पाँनी बहे रेल ॥१५०३

---

१ सेतु = पुल। २ त्रिकूट। ३ ग्रस्त। ४ स्तुति, प्रशंसा। ५ लवण।
६ डरपोक। ७ पंच। ८ सम्बन्ध। ९ कपट, बहाना। १० प्रतीति = विश्वास।

मैं चढन जुद्ध कौं अवसमेव, ओभका भरत देवहु अदेव।
सनमुख नहि आवत होय सूर, देखत ही भाजत सत्रु दूर ॥१५०४

रावँन हूँ सोई महाँराज, आपै कौं कैसै तजूँ आज।
देह के होय जो खंड दोय, सिर नहीं नमाऊँ अनम[1] सोय ॥१५०५

ईह दोख[2] जन्म सौं लग्यौ अंग, सो छूटै कैसै येक संग।
सुग्रीव राँम लछमन-सहेत, सूरमाँ कहत दध[3] देख सेत ॥१५०६

पुन बंदर है सब च्यार पाद, ईन काँम भारवाही[4] अनाद।
यामें कहा अचरज गन्यौ आप, पुन राँम-लखन ईधकौ प्रताप ॥१५०७

हनुँमाँन जराई लंक हूँत, कहा यामें जादाँ गनी कूँत[5]।
पूँछ के जरत अकुलाय पिंड, खित कूँद-कूँद कै चढ्यौ खंड ॥१५०८

तव बूँद परत जो जरत तेल, पर जरे घाँम हुय रेल-पेल।
यामैं कहा पौरुख गन्यौ ऊँच, पट्टह[6] को ड़ंड़ा भयौ पूँछ ॥१५०९

बपु-पास ईंद्रजित छुट्यौ बंध, सो गरुड़ मंत्र-तंत्रक समंध।
जन ओर पराक्रम भयौ जोय, कछु राँम पराक्रम नहीं कोय ॥१५१०

फिर-फिर कै आवत कीस फौज, धी[7]-जावन कीनौ मैं धरोज[8]।
क्रम-क्रम सौं मेटहुँ जुद्ध काँन, जोय राजनीत प्रीय बात जाँन ॥१५११

मो जाँन कायरे मतीमंद, दसहूँ दिस लागे करन दुंद।
बाहिरे परत ज्यूँ कपि बसेस, हीय संन्यपात[9] बाढत हँमेस ॥१५१२

घेरे लंकापुर बाट-घाट, परखाहू दीनी कँहुँ पाट।
कूँद कै कँगूरन चढे कोट, छल-बल सौं बंदर मोट-छोट ॥१५१३

जावै जो पीछै जीयत जीव, कहियौ राँवन कौं महा वलीब।
जुत क्रुद्ध कहे राँवन जबाब, सुन मालवाँन ऊठ्यौ सताब ॥१५१४

जय कौं मनाय निज ग्रेह जाय, पीछौ नहि बाहिर दयौ पाय।
राँवन फिर त्यारी करी रार, काहू न अटोक्यौ कर करार ॥१५१५

---

१ अनम्य = नहीं झुकने वाला। २ दोष। ३ समुद्र। ४ बोझ उठाना।
५ कुव्वत, शक्ति। ६ नगाड़े। ७ बुद्धि। ८ धारणा। ९ सन्निपात।

सोरठा

गर्जत कीस गँभीर, च्यारूँ फाटक कोट चढ।
बिढन[1] काज बरबीर, तूँ जावहु धूम्राक्ष तित ॥१५१६
राँम लखन कर रार, मार प्रथम चढ मोरचे।
बंदर-फौज बिड़ार, देहु बधाई मोर द्रुत[2] ॥१५१७
सुन लकारति सीख, रूठ चल्यौ धूम्राक्ष रन।
तीर बढ़ावत तीख, भुज दोऊ ब्रहमँड भिरे ॥१५१८

छंद अरध हरगीतका

धूम्राक्ष पौरख धारकैं, बढ चल्यौ बीर बकार कैं।
घन-घटा घोर घुमंड कै, ऊठ चली फौज ऊमंड कै ॥१५१९
अतरथी चढ रथ-आँन[3] पैं; के चढे गज के काँन पै।
खर चढे केऊ धर खूँदते, रव करत मारग रूँदते ॥१५२०
मुद्गरा आयुध मंड कै, कर चाँप सर कोड़ंड कै।
लै गदा फरसा लोह कै, सझ चले अग्र सँदोह[4] कै ॥१५२१
औरै सु आयुध अनगने, जोधार लेय जने-जने।
सझ कवच[5] टोप सरीर में, भट पटा बाँधेऊ भीर में ॥१५२२
जाँवनै कारन जंग में, अत पहर मूखँन अंग में।
सब जटत जंवर[6] सोवनै, पलकंत मोती पोवनै ॥१५२३
ड़हकावनै कपि ड़र-ड़री, कछु राखसी माया करी।
बाढे सु धारा बार[7] से, काढ़े सु दंत कुदार से ॥१५२४
मुख नक्र जैसे मेल कै, झख[8] सिंघ-रूप झमेल कै।
सझ सूकरा खर-सूरतै, मुख भेड़िया-सम मूरतै ॥१५२५
बहु बाँन बोलत कलबली, ऊल्लूक जैसे अलबली।
हय अस्वतर[9] खर हेयरी[10], फेकार जैसे फेकरी ॥१५२६
चढ गिगन-मारग रव छयौ, भूकंप कोलाहल भयौ।
घहरात घन ज्यूँ घोर कौं, आतंख[11] पर चहु ओर कौं ॥१५२७

१ भिड़ने। २ शीघ्र। ३ रथयान। ४ समूह। ५ बख्तर। ६ जवाहर, रत्न। ७ वारि = जल। ८ झष = मत्स्य। ९ खच्चर। १० हींसना। ११ आतङ्क।

जुर लगे आँगे जावनै, दुंदभी बाज डरावनै।
खित ऊठ डुंम्मर खेह[1] के, मनु मुद्र[2] संबर-मेह[3] के ॥१५२८
गल गाज घहरत गयन की, हुव हेख भेखद हयन की।
गज-घंट लागे गूजनै, केकान पख्खर कूँजनै ॥१५२९
धूम्राक्ष कछु आँगै धिख्यौ, लंगूल घेरचौ पुर लख्यौ।
ताकत सु ईत-ऊत तोल कौं, बढ़ सुनेऊ हनुमत बोल कौं ॥१५३०
ऊर विख्यौ क्रुद्ध अपंपरा[4], प्रलीयाग्न रीत-परंपरा।
जब पिछ्म फाटक जोर कै, मोरी सु बाग मरोर कै ॥१५३१
ये भये असकुन आय कै, गनती सु कहत गनाय कै।
धायौ सुरथ धर धरधरा, गिर परचौ ऊपर गृिधरा ॥१५३२
ऊपर पताकन ओरहू, जुर गिद्ध-माला जोरहू।
आँगे कबंधहु ऊठ कै, रथ रोक गदहा रूठ कै ॥१५३३
गहराय मेघ गरागरी, तब परी बूंद तरातरी।
बाज्यौ असंभव बायरौ, सनमुःख बेग सिवायरौ ॥१५३४
परकास रिव[5] मंदौ परचौ, अंधार चँहु दिस ऊल्लरचौ।
जिह बीच ज्वाला जाग के, ऊंबार पसरे आग के ॥१५३५
धूमृाक्ष सेना धाय कैं, मंदी परी मुरझाय कैं।
भय भरे लज्याँ भाव सौं, पलंटे न पीछे पाव सौं ॥१५३६
देखो सु बंदर दूर सी, पाथोद[6]-बारी-पूरसी।
बाजे सु आँगे बाजने, गल कीस लागे गाजने ॥१५३७
हरखे सु आवत हेर कै, फरके सु पुछ्छँन फेर कै।
लै अंग बृछ्छ लरा-लरी, तरके सु सिंघ तरातरी ॥१५३८
मिल राखसन सौं संम्मुहा, भेटे सु बाहै मुवरूहा[7]।
प्रेरे सु पथ्थर पेल कै, ऊत्तंग अंगऊ झेल कै ॥१५३९
धूमृाक्ष बारी-धारका, मारे सु राखस-मारका।
धूमृाक्ष बारी-धारहू कीनौं सु रव किलकारहू ॥१५४०

१ धूलि। २ मेघ। ३ प्रलयमेघ। ४अपार। ५ रवि। ६ समुद्र।
७ भूरुह = वृक्ष।

रुठे सु पाँवन रोप कै, जाजुल्य जम-सम जोय कै।
तरवार भाला तोक कै, झारे सु फरसा झोक कै ॥१५४१
सत्ती त्रसीरख[1] सर्बला[2], परचंड परघा पर्बला।
परचाय पच्छ्छंम पोरचा, मारचौ सु कपिदल मोरचा ॥१५४२
विवधाँन[3] बाँन बराबरो, कोडंड सौं बरखा करी।
घर धूज कै डर धाँकरै, सब कोस आये साँकरै ॥१५४३
जब समिल जूथपती जुरे, बिरदैत आतुर बाहुरे।
सिल-श्रृंग लै मूसल सबै, तरु कंटकी तोरे तबै ॥१५४४
झारे सु झटपट झेल कै, खुरली[4] सु दावन खेल कै।
कल[5] देख दल-बल काँम लै निज आप-आपन नाँम लै ॥१५४५
कर गर्जना नभ कूद कै, तल लात मारत तूँद[6] कै।
कढ आँत जात करेजवा, बिच ओझरी पर वेझवा ॥१५४६
कोऊ सीस फूटत कनपटी, बिथुरे सु भेजा जिम बटी।
कैऊ अधुर[7] तूटै कोरकै, मुख रुधर ऊगलन मोर कै ॥१५४७
केऊ फटी छाती कर्बुरा, फिसलात बुक्का फिफरा।
पासुरी तूटत पासरै, ईकतहू[8] तिल्ली आसरै ॥१५४८
घतकटे राखस आय कै, वपु परे रेत बिछाय कै।
गिर मत्त हाथी जिम गिरी, अस परे खेत अराअरी ॥१५४६
मर अस्वतर खर मार सौं, पथराँन झार प्रहार सौं।
धुज-डंड रथ पसरे धरा, लै डंड कर कपि-दल लरा ॥१५५०
सौवर्न-जटत सुहावने, वह भये अत असुहावने।
गिर परी राखस गोल की, हद बिनाँ फौज हरोल की ॥१५५१
धूम्राक्ष देखी धार कौं, मुहमेल कपि दल मार कौं।
धूम्राक्ष आतुर धांम में, चंदोल लायौ चौक में ॥१५५२
भागी सु घेरी भीर कौं, सज कवच टोप सरीर कौं।
धूम्राक्ष धरकै धीर कौं, भर सुभट खाली भूँम कौं ॥१५५३

१ [illegible]। २ [illegible]। ३ [illegible]। ४ [illegible]-दाव। ५ कलि = युद्ध।
६ [illegible]। ७ अधुर = होठ। ८ [illegible]।

ऊभल्यौ सु पौरुख आग ज्यूँ, निज रूप कारे नाग ज्यूँ।
कोदंड करखत कान कौं, बिखरूप बरखत बाँन कौं ॥१५५४

मुग्दरन मंडो मार कौं, परघा सु देत प्रहार कौं।
तिरसूल सालन तोक कै, झुक परचौ भालन झोक कै ॥१५५५

ईक-एक सौं पुन आहुरे, बहु कीस ह्वै रन-बावरे।
परघा सु मार पछार सौं धर कटे आयुध-धार सौं ॥१५५६
घट तुटे चक्रन घेर में, फरसा स बक्रन फेर में।
तन तुटे कोऊ तरवार सौं, बरछाँनवारे धार सौं ॥१५५७

भँननाट बानन भाल कौ, बाजौ सु बीन बिसाल कौ।
टंकार मुर्बी[1] तान कौं, मंजीर-सद्द मिलान कौं ॥१५५८

हुचकी सु प्राँनन हाल की, ताली सु बाजत ताल की।
गर्जना बीरन गाँवनौ, बहुसू -मोद बढावनौ ॥१५५९

जुध भयौ माँनहु जाल कौ, खेलनौ गंधृव ख्याल कौ।
धूम्राक्ष धनु कर धार कै, बाहे[2] सुतीत बकार कै ॥१५६०

लागे सुकपि-दल लागनै, ज्वाला सुमाँनहु जागने।
अय-पिंड[3] जैसै अंग के, बिखरे सु रीछ लवंग[4] के ॥१५६१

भागे सु आपौ भूल कै दस दिसा लागे डूल कै।
धूम्राक्ष अपनी धार लै, लाग्यौ सु कपि-दल लार लै ॥१५६२

हनूँमाँन जाँकौं हेर कै, घट करचौ घायल घेर कै।
सिल-लरे दौरै सामनै, भननाय लागे आँमनै ॥१५६३

पटको सुरथ पै पाँन[5] सौं, अतद्लो भुज-आजाँन सौं।
सिल आवती लख सीस पै, कोप्यौ सु हनुमत कीस पै ॥१५६४
लै गदा ऊतरचौ लोह की, दहकी सु ज्वाला द्रोह की।
सिल गिरो रथ ऊपर समी, जुत धुजा हय मिलगौ जमी ॥१५६५
रथ तोर हनुँमत रीस कै, पलटे सु दंतन पीस कै।
तरू दिग्ध[6] लीनौ तोर कै, मुष्टो सुपुष्ट मरोर कै ॥१५६६

---

१ मौर्वी = प्रत्यंचा, डोरी। २ चलाये। ३ लोह शरीर। ४ वानर। ५ पाणि = हाथ। ६ दीर्घ।

राखसन मारे रोक कैं, रन झाटकाड़ा[1] झोक कैं।
फूटे सु सिर तरु फेट सौं, लर थरेऊ लाग लपेट सौं ॥१५६७

भागे सु दस दिस भीत सौं, पलटे न जय की प्रीत सौं।
हनूँमाँन पर्वत हेर कै, ईक लयो श्रंग ऊखेर कै ॥१५६८

धूम्राक्ष सनमुख धाय कैं, अग्राज हाथ ऊठाय कैं।
जव देख धूम्राक्षहु जहीं, गाढी गदा कौं कर गही ॥१५६९

हनुँमाँन सिर ऊपर हँनी, घट पीर नहि बाढी घनी।
हनुँमाँन पर्वत सिर हँन्यौ, धूम्राक्षहू माँथौ धुन्यौ ॥१५७०

पर गयो स्रंग प्रहार सौं, निखस्यौ[2] सु प्राँन निसार सौं।
वल देख कपि वंजरंग कौ, रव करत जय-जय रंग कौ ॥१५७१

धूम्राक्ष मिलगौ धूर में, सब सितल[3] पर गय सूरमै[4]।
भागे सु लंका-भौंन कौं, कर नाक नीचे काँन कौं ॥१५७२

दोहा

मरन सुन्यौं धूम्राक्ष कौ, दल-जुत पच्छम द्वार।
हरख भयौ हनूँमाँन कौं, जाँन राम जयकार ॥१५७३

भागे राखस भवन सौं, सो बुलाय दससीस।
वीती सो पूँछी विगत, बातैं विसवा-वीस ॥१५७४

हनूँमाँन को जीत हुव, श्रवन सुनी कथ सोय।
घोरन लागौ दिख घनौ, हथक[5] साप-सम[6] होय ॥१५७५

व्याकुल होय वुलाय कै, वजूद्रष्ट वरवीर।
कह्यौ करहु कपि-दल-कदन[7], होय जुद्ध हमगीर ॥१५७६

छंद वृद्धनाराच

सुनी सु वजूद्रष्ट स्रौंन वीस-पाँन[8] वात कौं।
प्रमाँन माँन प्रवृती समाँन वोल साथ कौं।

१ मू० प्र० में—झाट फाड़ा रन। २ निकल गया। ३ शीतल = ठंडे। ४ योद्धा।
५ मरे हुए। ६ सर्पसदृश। ७ विनाश। ८ विंशपाणि = रावण।

सुनाय राज-सासना सभ्काय संग सैन कौं।
सतंग[1] औ मतंग[2] साथ लीन जीत लैन कौं ॥१५७७
कुरंग चाल के किते तुरंग लेय तख्खरा।
जराव-जुक्त जोन त पबीन-मंड पख्खरा।
चळ्यौ चछोह क्रुद्ध छाय बर्मब्यूढ[3] बीर लै।
बळ्यौ सु जुद्ध बाट कौं टंकार चाप तीर लै ॥१५७८
सभ्भे अनेक अस्त्र सस्त्र साँग डाँग सर्बला[4]।
पटा कटा कुठार पर्घ[5] भिंदपाल[6] लै भला।
प्रचंड पिंड पूरक्कै ऊमंड कै बढी अनी।
चढी चमंक ज्यूं छटा घटा घुमंड कै घनी ॥१५७९
लगी थगी धुजा लीयै डिगी सु द्वार दख्खनी।
प्रपात बाल-पुत्र पै ढुली अत्रप्र डक्कनी।
बिलोक सैन बंदरी ऊलूक भाँत आवते।
बजाय ढोल होल बोल गीत मौत गावते ॥१५८०
असूचका भये अनेक काक गिद्ध कूकरा।
फिरंड[7] बोल फेकरी समूह आय सूकरा।
अनेक ऊँट आखरे पमंग छूट पख्खरा।
परे ऊलट्ट रथ्थ-पै[8] जंझीर लोह चक्करा ॥१५८१
असूच[9] काग नैन-एक धेख तेख धार में।
कुप्पौ कराल केहरी रुप्पौ सु रूठ रार में।
चढाय चाप बाँन चंड छंडनै लग्यौ छतौ।
धरी न धीर धार ना मिलाय बीर सौं सतौ ॥१५८२
करी झरी कलंब की प्रलंब हाथ[10] पूर कै।
भरे सु कोस भल्लुका डरे सु दूर दूर कै।
अगोट बाँध ना अरे करे न जुद्ध काज कौं।
चढै सु आय चौक में बिचार एहु ब्याज कौं ॥१५८३

१ रथ। २ हाथी। ३ बख्तर। ४ गुर्ज। ५ परिघ = लुहागी। ६ माले।
७ सियार। ८ रथ का पहिया। ९ अपशकुन। १० बाण।

रुकी सु बंदरावली निसाँचरा निहार कै।
चले सु बीच चौक में ऊछंग कीस वार कै।
समेट कै समंद सैन बिट जेम बीट कै।
मृजाद छोर कै मनौ हल्यो सुनीर होट कै ॥१५८४

वढी सु बंदरावली जितै-तितै जनौं-जनौं।
मड़ी ऊतंग श्रंग मार घेर साँकरै घनौं।
विचार वृजद्रष्ट बीर बीर कौं दकार कै।
गिरी सुमेर पाय गाड़ ह्वै खरौ हकार कै ॥१५८५

टंकार चाप तिछ्छ तिछ्छ गार्ध-पछ्छ[1] गेर कै।
बनाय लछ्छ[2] रिछ्छ बीर ढाहि कीस ढेर कै।
कुठार खड्ग लै कितेक तोक साल तेख में।
रहे सु च्यार कूँन रोक धूँन पर्व धेख में ॥१५८६

वलाय सैन बंदरी फिरी सु च्यार फेर कौं।
प्रकांड वृछ्छ पाँन लै ढहाय श्रंग ढेर कौं।
निसाँचरा निहार ताक ताक कै तरातरी।
फिराक फैल फेर भाँक भोक दै भराभरी ॥१५८७

ऊतै हू वजृद्रष्ट आय अंगदा भिरयौ ईतै।
हुई सु वीर हाक मार-मार की मतै-मतै।
जने जने जुहार एक एक की तकै अनौं।
गहाय सेल गेहरी ठिलो चमूँ वनी ठनी ॥१५८८

फलंग कीस फेट सौं चपेट मारनै चहै।
अमेठ आच-आच[3] सौं लपेट निश्चरा लहै।
घरे सुमल्ल जुद्ध आय क्रुद्ध होय काल से।
फराल रूप केसरी विसैल[4] बाल व्याल[5] से ॥१५८९

घने अनेक दाव घाव एक देख एक कै।
फलांग मार मर्कटो[6] उलंग जात छेक कै।

---

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ हाथ । ४ त्रिशूल । ५ सर्प । ६ बन्दर ।

झटा-झटी करंत झाल खेल बीर ख्याल कौं।
दिखाय बक्र चक्र दै चलाक हाथ चाल कौं ॥१५९०
भुजा प्रलंब भेट भाट झाट ह्वै झटा पटी।
झटा पटी प्रकंड[1] भाट खाग[2] की खटा-खटी।
मँडी सु अब्ब सब्ब मार कीस और कर्बुरा।
कटे कटे कटे किते हटे न पाय हर्बरा[3] ॥१५९१
हकार वीर हाक की बकार बाक बोलनौ।
टंकार चाप तान कै तुँजीह[4] बान तोलनौ।
नगार संख घोर नाद भेर हू भयंकरा।
करंत कूक कायरा समेट पाय सकरा ॥१५९२
दबे कितेक पाव दोट चोट मोट चौक में।
करचौ सु कीस पीस कीच राह बीच रोक में।
बिलोक बज्रद्रष्ट' बीर काल जेम कोप कै।
खिसाय कै भयौ खरौ जमाय पाय जोप कै ॥१५९३
झपेट मार झेलकै प्रव्लंग[5] भूम पाछ टै।
लपेट लूँम-लूँम[6] कै अमेठ आच आछटै।
फिराय पाय[7] चीर फार डारनै लग्यौ डरा।
करे सु ग्रास काल के फराय ओझ फीफरा ॥१५९४
लखी सु बज्रद्रष्ट लाग आग जेम ऊझलो।
धिक्यौ सु बाल-पूत धेख बेख के महाँबली।
प्रचंड लै प्रकंड पाँत राकसी-चमूं रुकी।
कराल डंड काल ज्यूँ धघूंन घू धकाधकी ॥१५९५
बजाय रीठ पौंन-बेग-दौर-दौर दाव लैं।
कुरंग घेर कै कँठीर[8] जाँन आव-जाव लै ॥
बड़े-बड़े बिसाल सैल-माल आसरावली।
परी सु मार बज्रपात बाल-पूत की बली ॥१५९६

---

१ गोल वृक्ष। २ खड्ग। ३ हड़बड़ा कर = घबरा कर। ४ प्रत्यंचा। ५ प्लवंग = वानर। ६ पूंछ। ७ पाद = पैर। ८ कंठीरव = सिंह।

परे सु रुंड मुंड पिंड थंड़ थंड थंड़ कै।
वितुंड[1] के ऊतंड वाज[2] खेत खंड खंड खै।
मची सु गार मेदनी[3] रची अपार रक्त सौं।
गची मनौ गुलाल गैद गेहरीन गत्त[4] सौं ॥१५९७
सतंग तूट सैरथीन झूँसरी पई झरे।
भयंकरी दिखात भूँम कूक माँच कायरे।
मिलाय मेघमाल ज्यूँ पुलाय जूट पाघरा।
वयार वाल वालके विखेर दीन वादरा ॥१५९८
मरी परी धरामही विसेस फौज वाज कै।
दिखी सु वज्रद्रष्ट दिष्ट भीरु आय भाजकै।
टंकार चाप ताक ताक बाँन देत विष्फुरची।
विड़ार कीस वाहनी[5] जनूँन ज्वाल कौं जरची ॥१५९९
रहे सु कीस पांव रोप कोप जुद्ध काल से।
झरी करी पखाँन[6] झार वृछ्छ ले विसाल से।
निनूद के निसाँचरा गिराय दीन गात कौं।
करे सुग्रास काक कंक स्यार स्वाँन साथ कौं ॥१६००
गिरे कवंध गैन[7] सौं डरावनै दिखात है।
विहस्त[8] होत वीर हू फिरा फिरी फिरात है।
प्रपात[9] मार पाय कै विखाद वैर वीसरे।
ऊसास लेत स्वास आस नास-नास नीसरे ॥१६०१
विलोक वज्रद्रष्ट नष्ट वाहनी विगार कौं।
भुजाय चाप बांन झेल बिफुरची बिगार कौं।
तजे सु तीर ताक-ताक लै कजाक[10] लार कौं।
करे सु ऊन-तीस कीस बेध एक बार कौं ॥१६०२
करे अनेक बार कीस सैन पै कराकरी।
जमाय वीर जोर सैल मांड़ कै गरागरी।
उछंट[11] कीस और हू गही सु मनं अंगदा।
जुरे सु जुध्ध-जुध्धवं जमाय पै जुदा-जुदा ॥१६०३

१ [illegible] । २ [illegible] = घोड़े । ३ पृथ्वी । ४ गर्त = गड्ढे । ५ सेना ।
६ [illegible] । ७ [illegible] । ८ [illegible] । ९ [illegible] । १० [illegible] ।
११ [illegible]

वकार वज्रद्रष्ट्र कौं सपुत्र-बाल सालुरचौ।
मदोनमत्त ज्यूं मतंग देख सिंघ विफरचौ।
मड़चौ सु खङ्ग मारनै फलंग लै फिरा फिरी।
गिरै गिरा ज्युहीं गिरी सिलाँन की सरासरी ॥१६०४
रूप्यौ सु वज्रद्रष्ट्र रार चाँप कौं चढाय कै।
झड़ी अपार बाँन मार बेग कौं बढाय कै।
पखाँन मार पेल बाल-पुत्र कौं बकार कै।
दये सु मर्म-गात[1] देख तीर तार-तार कै ॥१६०५
भिदी सु बाल-पुत्र भाल चींछ रत्त छूट कै।
परै पतंग ज्यूं पनार बार मेघ बूठ कै।
गनी न बाल-पूत गात लाग तीर लोह की।
ऊखार वृछ ऐच कै चल्यौ सुचाल चोह की ॥१६०६
हन्यौ सपष्ट द्रष्ट हेर वज्रद्रष्ट बीर पै।
विलोक वज्रद्रष्ट बीर तीर दीन तोर पै।
खिरे प्रकंड खंड-खंड खंड झौर झुंड झूरकै[2]।
बढ्यौ बिसाल काग बेग धेख सौं धरूर[3] कै ॥१६०७
जहाँ सुबाल-पुत्र जोय अंग लै समेट कै।
दयौ सु वज्रद्रष्ट्र देख आच कौं अमेठ कै।
लख्यौ सु वज्रद्रष्ट लौर मेघ ज्यूं लगा लगी।
चल्यौ सु रथ्थ छोर कै धरै गदा धगा धगी ॥१६०८
गिरचौ ऊतंग गैंन सौं सतंग तूट स्वारथी[4]।
परे गधा पसार पै मरचौ बच्यौ महाँरथी।
बलाय बाल-पूत बीर देख वज्रद्रष्ट कौं।
ऊठाय अंग एक ओर सीध ताक सिष्ट कौं ॥१६०९
तज्यौ तराक[5] वज्र तेम वज्रद्रष्ट्र बीर पै।
परचौ सु सीस ऊपरा सिला गिरी सरीर पै।

---

१ मर्मस्थल। २ झड़ कर, नष्ट होकर। ३ धैर्य धर कर। ४ सारथी
५ तत्काल।

गह्यौ सु मोह[1] लै गदा रह्यौ खरौ रुकाय कै।
वह्यौ[2] रगात[3] वार ज्यूँ झरचौ मुखा झुकाय कै ॥१६१०
अचेत होय अंग सौं घुटाय स्वास द्वै घटी।
ऊठ्यौ गदा ऊठाय कै जु मोह की दसा मिटी।
बिलोक पूत-बाल कौ ससीम[4] घेर साँकरै।
हनी गदा हकार कै बकार बीर बाँकरै ॥१६११
परी सु बाल-पूत पै झपेट हाथ झेलकै।
लई सु खोस लार लाग फैंक दीन फेल कै।
मँडी अभंग मुष्टिमार तिष्ट-तिष्ट तोल कै।
भिरे भुजा-अजाँन भेट बीर बाक बोलकै ॥१६१२
हटे नियुद्ध हाल कै बलाय पूत-बाल कौ।
ऊखार वृच्छ आँच सौं करचौ सरूप काल कौ।
विलोक वज्रदृष्ट ढाल खड्ग हाथ ढाब कै।
चल्यौ चछोह संक छोर दंत ओठ दाब कै ॥१६१३
भिरे ऊभै भुजंग भेस घाव दाव घेर में।
प्रहार एक एक पै बढ़ाहि जाहि बेर में।
दई प्रकंड मार डार बाल-पूत बेग सौं।
हिराय[5] मूँठ हाथ सौं तराक छूट तेग[6] सौं ॥१६१४
लई ऊठाय बालनंद[7] तेग हाथ तोक कै।
करचौ सु वार कूद वज्रदृष्ट कौं बिलोक कै।
तराक सीस टूट कै गिरचौ धरा गरा गिरी।
चल्यौ सु प्राँन छूट कै प्रकार ज्यूँ परापरी ॥१६१५

दोहा

एति लंका सेनापती, वज्रदृष्ट बल वृद्ध।
पीछौ फिरचौ न मर परचौ, जुर अंगद सौं जुद्ध ॥१६१६

---

१ मूर्छा। २ बहने लगा। ३ रक्त। ४ एक सीमा में, निकट। ५ हट कर।
६ तलवार। ७ अंगद।

फाटक दक्खन सौं फिरी, राखस सेना रोय।
घायल भट आवे घरन, हुथक[1] साप जिम होय ॥१६१७
भूप लंक दुचतौ[2] भयौ, वज्रद्रंष्ट्र सुन बात।
घोरन लागौ रोस घट, बीच मसक[3] जिम बात ॥१६१८
देख अकंपन हुकम दीय, सेना-सहित सकोय।
जाय प्रहारहु भ्रात-जुग, बंदर जूथ बिगोय ॥१६१९

छंद मोतीदाम

अकंपन रांवन को लख ओर, जुहारीय पाय ऊभे कर जोर।
चल्यौ तिहँ बेर सभा कर छेह, गयौ सोई सैन पड़ाव के ग्रेह ॥१६२०
तहाँ सब सैनक कीन तयार, सभे तन टोप बख्खतर सार।
लयौ कर चाप टंकारव लेत, सराश्रय तिछ्छन बाँन सहेत ॥१६२१
सँभार के आयुध बैठ सतंग, मिलाय के झुंड प्रमंग[4] मतंग।
पलादन[5] जूहन-जूह[6] प्रचार, लसक्कर लीन असंखन लार ॥१६२२
चल्यौ तहाँ आहव[7] की कर चाह, पिले संग राखस बे-परवाह।
कँपै नँह काय करे जब क्रुद्ध, अकंपन नाम धर्यौ बल ऊद्ध ॥१६२३
सोई चढ चालेऊ खेत सँभार, भुजंगम-सेस[8] पर्यौ सिर भार।
लग्यौ दध-नीर[9] हिलोरन लैन, गुहा गिर गूँजन लागेऊ गैन ॥१६२४
कुलाहल सद्द भयौ चहुँ कोद, बढ्यौ ऊर बीरन बीर बिनोद।
गहक्कन लागेऊ ऊपर गीध, कुरालीय काक कजाकन कीध ॥१६२५
भये ऊतपात भयंकर भेस, प्रकंपन[10] संमुह कीन प्रवेस।
ऊड़ी बहु अंबर सौं ऊलकाँन, करी[11] अस[12] मोरन लागेऊ काँन ॥१६२६
फरक्कीय बाँम भुजा चख[13] फेर, करक्कीय बीज अबद्दर केर।
धरक्कीय सात पताल धराह, बरक्कीय आँनन दढ्ढ[14] बराह ॥१६२७
घटा घन होय नगारन घोर, सुनावत संख असंखन सोर।
ढरक्कन नेजन के पट ढोल, फरक्कन लागेऊ ऊपर फील[15] ॥१६२८

१ घायल, मृततुल्य। २ दुश्चिन्त=चिन्तित। ३ शक (पानी भरने की)। ४ घोड़े। ५ राक्षस। ६ यूथ=झुण्ड। ७ युद्ध। ८ शेषनाग। ९ उदधि=समुद्र। १० वायु। ११ हाथी। १२ अश्व। १३ चक्षु। १४ दंष्ट्रा=दाढ़। १५ हाथी।

पताकन[1] सिदन[2] पाँतन-पाँत, दिखावत तिच्छ्छन ज्यूँ जमदाँत ।
लख्यौ कपि आवत आहव लाग, ऊठी ऊर क्रुद्ध बलाय की आग ॥१६२६
गरज्जन लागेऊ नाद गहीर, सँभाय कै अंग ऊतंग सधीर ।
बड़े तरू लैकर बेर ही बेर, फलंगन मारन लागेऊ फेर ॥१६३०
तहाँ कछू चाल अकंपन तेज, मिल्यौ दल बंदर सौं मुहमेज[3] ।
करी भर बाँनन की कर क्रुद्ध, अकंपन बीर पराक्रम ऊद्ध ॥१६३१
जबै दल बंदर हू कर जोर, अकंपन घेर चले चहु ओर ।
मँडी तरु मूसल हू सिल मार, रुपी बिव ओर बराबर रार ॥१६३२
अकंपन राँवन की जय आस, करचौ बल बाँहन[4] कौ परकास ।
चले कपि राँम बिजै कर चाह, अकंपन पौरुख कौं अवगाह ॥१६३३
भयौ रन संकुल रूप भयाँन, ऊठी रज छाय लयौ असमाँन ।
लखावत धूसरी रंगत लाल, कढे मनु बद्दर संधक[5]-काल ॥१६३४
बन्यौ रज डंम्मर छाय बिताँन, पिछाँनहु पाँन[6] न पावत पाँन ।
गये छिप स्यंदन कुंजर गात, दसू दिस खेहन छेह दिखात ॥१६३५
घटा वन जेम मचावत घोर, सुनावत राखस बंदर सोर ।
प्रहारन देत बिना पहिचाँन, बिराँनेऊ[7] आपने एक बिधाँन ॥१६३६
असंखन सैन परी कट एम, जुरे रन-बावरे बावरे जेम ।
झरे गज ऊँट तुरंगम झुंड, थटे भट ऊपर थंडन थंड ॥१६३७
परे कट आँमख[8] श्रोनत[9] पूर, धरातल दब्बीय-सब्बीय[10] धूर ।
बढ्यौ कछू सूरज तेज बिरोक, करंकन ऐचक लागेऊ कोक ॥१६३८
मृघादन[11] जंबुक[12] पायेऊ मग्ग, कुलाहल गिद्धन माचेऊ कग्ग ।
भयंकर रूप भई रन-भूंम, घने घट घायल मंडत धूँम ॥१६३९
भयातुर कातर केक भ्रमंत, अरुझत पावन[13] अंतर-अंत ।
महाँबरबीर रहे पग मंड, अनौं निसचारन कीस ऊमंड ॥१६४०
परठ्ठत लोथन ऊपर पाव, घलं हथ बाहन चूकत घाव ।
निसाँचर कास रुपे निरसंक, धनी अप-अप्पन[14] की जय धंक ॥१६४१

---

१ ध्वजा । २ स्यन्दन = रथ । ३ पंक्ति, कतार । ४ भुजाओं का । ५ संध्या ।
६ पाणि = हाथ । ७ अन्य । ८ आमिष = मांस । ९ शोणित = रक्त ।
१० मू. प्र. दवीय-सवीय । ११ जरख । १२ सियार । १३ पैरों को ।
१४ अपनी-अपनी ।

करक्कंत देखत राकस कीस, सिला तरू ऊपर मारत सोस।
ज्यूँही लख राखस बंदर जूह, भिरै रिस[1] छाय अमेठत भ्रूँह ॥१६४२
करै परघातन मार कुठार, त्रसूलन सूल गहै तरवार।
अकंपन जुद्ध भिरयौ अकुलाय, वनोकन[2] सैन हटी बिचलाय ॥१६४३
ऊभै भट मैंद कुमंद अभंग, जुरे दल राखस सम्मुह-जंग।
प्रहारन दीन पहारन पेल, झपेटन-फेटन दै तरू झेल ॥१६४४
गिरे केऊ राखस चूरन गात, भजे तन दारत ह्वै भहरात।
अकंपन कीस लखे बल ऊद्ध[3], कह्यौ निज स्वारथि सौं कर क्रुद्ध ॥१६४५
जिताहव मैं खल राखस जात, दिती-सुत[4] देवत देख डरात।
जिही कपि जात दिखावत जोर, महाँ ऊपहास भयौ ईह मोर ॥१६४६
कहा ईह बापुरे बंदर कीट, दिखावहुँ बाँहन कौ बल दीठ।
खरौ रथ राख करूँ सब ख्वार, झुकाय कै चाप कलंबन[5] झार ॥१६४७
जहाँ रथ थप्पेऊ स्वारथी जाँन, ऊचाँन को जाग[6] कछू अनुँमाँन।
करी झर बाँनन की भर कोह, चिमंटीय चाढ कै चाप चछोह ॥१६४८
परे बहु बंदर ह्वै गति-प्राँन[7], भजे केऊ संगर देख भयाँन।
कुलाहल सद्द भयौ कपि केर, बढ्यौ बल राखस कौ जिह बेर ॥१६४६
सुन्यौ हनूँमाँन जहाँ कपि सोर, चले जब आपने मोरचा छोर।
मिले दल मर्कट फेर मिलाय, भुजंगम जेम फिरे भहराय ॥१६५०
सवै हनूँमाँन के आय ससींम[8], नृभै हुय संगर दिन्नोय[9] नींम।
अकंपन मारूत-नंदन ईच्छ,[10] प्रहारेऊ तिच्छन गारध पच्छ[11] ॥१६५१
भिदी सुत-मारूत कै तन भाल, जगी ऊर क्रोध हुतासन-ज्वाल।
अकंपन मारन कारन ऊह[12], बिमाँसन लागेऊ बंदर ब्रह ॥१६५२
हरोलीय होय बढे हनूँमाँन, सबै मिल जूथप जूथ समाँन।
पिले गिर-श्रंग गहै बल पूज, धरा धमचक्क मचक्कन धूज ॥१६५३
हसे हनूँमाँन अकंपन हेर, बकारकै[13] अग्ग[14] बढे जिह बेर।
अकंपन श्रंग लख्यौ कर ऊद्ध[15], सनंकत बान दये लहि सुद्ध[16] ॥१६५४

---

१ क्रोध। २. वानरों की। ३ अधिक। ४ दैत्य। ५ बाण। ६ जगह = स्थान। ७ निर्जीव। ८ निकट। ९ दी। १० देखकर। ११ बाण। १२ विचार। १३ ललकार कर। १४ आगे। १५ ऊपर। १६ सीध बांधकर।

टुट्यौ गिर-शृंग भयौ सत टूक, अनेकन[1] मारेऊ बाँन अचूक।
अकंपन देख पराक्रम ऊद्ध, करचौ हनूँमाँनहू दारुन क्रुद्ध ॥१६५५

तरू असकर्न बड़ौ लीय तोर, सिफा[2] जुत आँचन[3] ऐच सजोर।
बहे जब वृछ्छ घसीटत बाट, परे बहु राखस खाय पछाट ॥१६५६

अकंपन देखेऊ बाँह-अजाँन, हले ईम आवत है हनूँमाँन।
तहाँ दीय ताक चतुर्दस तीर, सबै हनूँमाँन के लाग सरीर ॥१६५७

रुक्यौ हनूँमाँन नहीं पग रोप, करचौ तिह बेर भयंकर कोप।
हन्यौ तरू सीस अकंपन हेर, फट्यौ सिर भूँम गिरचौ चख[4] फेर ॥१६५८

दोहा

परचौ खेत लंकापुरी, गिरचौ अकंपन गात।
हुई जीत हनूँमाँन की, बात भई बिख्यात ॥१६५९

जे कोऊ ऊबरे जुद्ध में, पहुँचे रावन पास।
मरचौ अकंपन खेत में, खबर कही सोई खास ॥१६६०

मरन अकंपन सुन सँमुभ, राँवन चाल्यौ रूठ।
चाल्यौ देखन मोरचा, कोट पुरी त्रयकूट[5] ॥१६६१

छंद त्रोटक

चल राँवन कोट त्रकूट चढ्यौ, गढ देख सुबर्न की ईंट गढ्यौ।
जुरे कंगुरे लाल जवाहर के, पुन सोवृन धाँम लखे पुर के ॥१६६२

जर तार पताकन पाँत जुरी, लग मौंतिन झालरी लूँब लरी।
फुलवारीय हौज फुहारन के, चख[6] देखेऊ पेढ चुँहारन के ॥१६६३

बहु वापीय कूप अनूप बने, चँमकै दुति सोवृन ईंट चुने।
केऊ चत्वर[7] और बजार किते, अवलोकेऊ द्वार पगार ईते ॥१६६४

परजा बहु भीर लखी पुर में, अवलंचत[8] सोक-ग्रसी ऊर में।
पुन देखेऊ सैंन पड़ाव परी, केऊ विस्वरहू[9] खर[10] वाज[11] करी[12] ॥१६६५

---

१ अनेक। २ जड़। ३ हाथों से। ४ आँख। ५ त्रिकूट। ६ आँख से। ७ चौक।
८ नपनीत = घबड़ाई हुई। ९ खच्चर। १० गधा। ११ घोड़ा। १२ हाथी।

अवलोक कै खास-अवास[1]अमूँ, चख-बीस[2]लखी फिर कीस चमूँ।
गल जास अवाज सुनी गहकी, दससीस कै रीस होयै दहकी ॥१६६६
अवलोक प्रहस्त कौं बोल उठ्यौ, रन रोप कै ऊपर रांम रूठ्यौ।
तिह भार परयौ हम पै तुम पै, जुत कुम्भकरंन निकुम्भ जुपै ॥१६६७
घननाद सपुत्र भरोस घनौ, दल कीस बिनासहि भ्रात दुनौ।
अब तौ चढ़ जाहु प्रहस्त उतै, जढ[3] कीस प्रहारहु रांम जुतै ॥१६६८
कपि जांनत ना कल[4] की कल कौं, सिखरो[5]अरु मारत है सिल कौं।
सँग सिक्षक[6] फौज कौं लेय सबै, उत सैनपती चढ जाहु अबै ॥१६६९
कपि जात असिक्षक[7] है कुहनी, रुख जांनत जंगल की रहनी।
जिनकौं कहा भार है जीतन में, रन को न पिछांनन रीतन में ॥१६७०
रखवारीय राज की सैन रही, त्रतो-अंस कौ मालक एक तुही।
कपि आयेऊ लायेऊ घेर कजा[8], रघुनाथ सँघारहु एह रजा ॥१६७१
सुन रांवन सासन[9] सैनपती, कीय त्यारीय सैनक सैन किती।
बहु सिंदन[10] बाज गयंद बली, चढ चालेऊ राखस बीर छली ॥१६७२
निहसे बहु नद्द[11] नगारन कौ, केऊ बीरन की किलकारन कौ।
गज-घंट ठनंकीय जेम घरी, बिसफार[12] अवाज धनंख[13] भरी ॥१६७३
रथ बीर प्रहस्त चल्यौ रन में, बिफुरयौ मनुं सिंध महांबन में।
उचरयौ मुख बांनीय[14] बोर अगै, भय पाय कहुँ नही कीस भगै ॥१६७४
जम-लोक पठावहुँ येक जमै, भख गीध करावहु संग भ्रमै।
रथ हाक चल्यौ रन रोख-रतौ[15], मन सौं कपि-मारन कीन मतौ ॥१६७५
अगुवा भट चालेऊ च्यार अगै, समुनंत नरांतक जात सगै।
महांनाद रु कुंभहनूँ मिलकै, चढ कै रथ आय गये चलकै ॥१६७६
जम कै दल कुंजर जूथ ज्युँहीं, गढ बांध कै पूरब राह गही।
पहुँचे जब फाटक जाय परा, धुज-डंड उछंड कै आय धरा ॥१६७७
पर चाबुक स्वारथि[16]पांनन सौं[17],केऊ जंबुक[18]दौरेऊ कांनन सौं।
खिसले पग घोरन खाय खता, कर छूट गिरे केऊ कूँत[19] कता ॥१६७८

१ राजमहल। २ रावण। ३ जड़। ४ युद्ध। ५ वृक्ष। ६ सीखी हुई, शिक्षित। ७ अशिक्षित। ८ मृत्यु। ९ आज्ञा। १० रथ। ११ नाद। १२ धनुष की टंकार की ध्वनि। १३ धनुष। १४ वाणी = बात। १५ क्रोध में रत। १६ सारथि। १७ हाथों से। १८ सियार। १९ भाले।

अनसूचक[1] देखेऊ आँख ईतै, पलट्यौ न प्रहस्तहू जुद्ध प्रतै।
अनी राखस देखत कीस अरे, सभ श्रृङ्ग ऊतंग भिरे सिगरे ॥१६७९
ठिल कै मिल कै दल ठाट ठयौ, भयकार ऊभै दिस सद्द[2] भयौ।
अबना रघुबीरहू सोर सुनौ, दल अग्र बढे कछू आत दुनौ ॥१६८०
जहाँ देख प्रवेक[3] घने जन सौं, बतरायेऊ राँम बभीखन सौं।
ईह कौन बली चढ आवत है, बिसफार अवाज बढावत है ॥१६८१
चमकावत आयुध ज्यू चपला[4], कर बाँन गहै मनु सूर-कला[5]।
गिर कन्दर ज्यू रथ के गुमजा, धुज-डंड फरूकत दिप्घ धुजा ॥१६८२
कहनी सुन राँम बभीखन हू, समुझाय कही ईह बात सहू।
पति-लंक[6] प्रहस्त है सैन पती, मगरूर भरचौ ऊर क्रूर मती ॥१६८३
रघुनाथहू सेनप देख रहे, बढ कै कपिहू मुहमेज बहे।
अत मार परी बिव[7] औरन सौं, कपि राखस बीर करोरन सौं ॥१६८४
परघातन राखस लै पछटै, जहाँ कीस अकंडन[8] लेय जुटै।
बहु राखस मारत बाँनन कौं, पुन बंदर देत परवाँनन[9] कौं ॥१६८५
ईत राखस लेत त्रसूल अरै, कपि लै तरु दीरघ मार करै।
मिल राखस आयुध मारत है, गिर कीस ऊखार गिरावत है ॥१६८६
कपि राखस जूझत बीर कला, मँडराय घटा घन जेम मिला।
अटकी भट राखस कीस अनी, बिव और बराबर रार बनी ॥१६८७
कपि राखस पै ऊररे कररे, भट च्यार प्रहस्त के आय भिरे।
मुहमेज[10] भये कपि मारन कौं, करवालन[11] ढाल कुठारन कौं ॥१६८८
ईन च्यारहु कौं लख कीस अनी, घन ज्यू ऊमँड़ी घहराय घनी।
तरू लै गिर लागेऊ तारन कौं, मिल मूसलहू सिल मारन कौं ॥१६८९
खल देख नरांतक-खेत[12] खरौ, भट आय दुबिदहू कीस भिरौ।
गिर-श्रृङ्ग ऊखार करचौ गररौ, छित[13] राखस होय परचौ चुररौ[14] ॥१६९०
जुर खेत समुंन्नत आय जहों, तरू सौं कपि दुर्मुख मारत हौं।
जंबुवाँन तथां[15] महाँनाद जुरे, कल[16] देख जही सिल वार करे ॥१६९१

---

१ अपशकुन। २ शब्द। ३ अगवानी। ४ बिजली। ५ सूर्य-किरण। ६ रावण। ७ दोनों। ८ वृक्ष-तोले। ९ पत्थर। १० सम्मुख। ११ तलवार। १२ युद्धक्षेत्र। १३ भूमि। १४ चूर-चूर। १५ मू. प्र. त्यां। १६ युद्ध।

परगौ[1] खल ह्वै पुरजा-पुरजा, सब रार के काँमहु सौं सुरजा[2]।
गहि बृछ्छ बड़ौ रन कौं गवन्यौ, हनूँकूँम कौं तारहु कीस हन्यौ ॥१६६२
भट च्यार प्रहस्त भरे भिर कै मरनै-डर सौं पग नाँ मुरकै[3]।
पग रोप कै च्यारहु बीर परे, जब हीय प्रहस्त कै आग जरे॥१६६३
गहि चाँप रथी रथ पै गवन्यौ, बिकराल बलाय कौ रूप बन्यौं।
पर सोबृन की सर सोक परी, बहु आग आगारीय ज्यूं बिखरी ॥१६६४
करनें बहु लागेऊ जुद्ध कला, जरनें कपि लागेऊ क्रुद्ध जुला[4]।
बल कीस चमू सब छूट बह्यौ, रन-खेत प्रहस्तहु रूठ रह्यौ ॥१६६५
बिफुरचौ दिखरावत बीर बृती, पग माँड सके नही जूथ-पती।
मृघराज ज्युँहीं कर गाज मिला, गजराज ज्युँहीं कपिराज गिला ॥१६६६
घट बाँनन लागेऊ घाव घने, बपु कीस बसंत-पलास बने।
बनचार[5] सरीर गिरी बरना, झरनै रत[6] लाग गये झरना ॥१६६७
निकरै बहु श्रोनत नारन[7] सौं, धर गार मची सर धारन सौं।
ईम बाँनन मार प्रहस्त अटा, करनै कहुँ लागेऊ कीस कटा ॥१६६८
दल बंदर पीठ फिरी डर सौं, अकुलाय कै हार रहे अरी सौं।
जहाँ जूथप नील रह्यौ जम कै, भहराय कै सैन चली भ्रम कै ॥१६६९
मुहमेज[8] प्रहस्त रू नील मिला, जय रांवन राँम को बाँध जिला।
समिले बरखा-रित से हरसे, कँदली-बन के गज केहर[9] से ॥१७००
खित ऊपर देखेऊ नील खरौ, गिर कौं कर पै ईक लेय गिरौ।
मलप्पौ रथ नीलहु मारन कौं, सब स्वामीय काम सुधारन कौं ॥१७०१
बढ कै खल नील कै साँमै बह्यौ, रथ सूरज तेज प्रकास रह्यौ।
धँनुवाँन सुधार प्रहस्त धक्यौ, रथ संमुह दौर कै नील रूक्यौ ॥१७०२
बरसायेऊ बाँन प्रहस्त बली, झर भादव की मनु आय झिली।
बपु नील कै लागेऊ साल[10] बड़े, गति तिछ्छन कंटक रूप गड़े ॥१७०३
जग-मग्ग[11] सुबर्न की पाँख जुटी, चिनगारीय माँनहु आग छुटी।
भट लै तरू नीलहु जाय भिरयौ, तरु-संजुत माँनहु सैल तरयौ ॥१७०४

---

१ गिर पड़ा। २ सुलझ गया = निवृत्त हो गया। ३ मुंह मोड़कर। ४ ज्वाला। ५ वानर। ६ रक्त। ७ नालों। ८ सामने। ९ सिंह। १० घाव। ११ जगमग होती हुई।

झटके खल ऊपर झौरन कौं, ससके रथ-घोरन मौरन कौं।
भननेटीय लै रथ दूर भगा, तितरचौ बितरचौ रथ खाय तगा ॥१७०५

हय सूत[1] सँभार तही हरवयौ कपि ऊपर बीज ज्यूँही करवचौ।
बरखा फिर किन्नोय बाँनन की, श्रत भालन तिछ्छन श्राँनन की ॥१७०६

सहि घाव चल्यौ पग देत सनै, गज श्रास्वन[2] ज्यूँ बरखा न गनै।
गहि कै तरु दिग्घ ससीम[3] गिरचौ, झटक्यौ रथ घोरन सीस झरचौ ॥१७०७

हय तूट परे पग नाहि हिले, जिह देख प्रहस्तहु क्रुद्ध जले।
कपि नीलहु तीसर वार करचौ, धँनु तोर दयौ विच हाथ धरचौ ॥१७०८

पुन सिंदन[4] कौं तज सैनपती, धर मूसल कूँद परचौ धरती।
ईत नील प्रहस्तहु बीर ऊतै, जम-रूप भिरे मगरूर जुतै ॥१७०९

विव बैर-भरे ऊर श्राग बला, कर क्रुद्ध बिसारद जुद्ध-कला।
सिरदार ऊभै दन ऊच्च-सिरा[5], जनु कुंजर श्राय मदंध जुरा ॥१७१०

चक छोह-भरे बनजात चले, मृगराज ऊभै मनु गाज मिले।
भिर येक सौं एक भजाँवन को, परतीत[6] ऊभै जय पावन की ॥१७११

लख येक कौं एक कै रीस लगी, जनु लाय हुतासन[7] ज्वाल जगी।
कर श्रायुध लै करररे कररे, ईक पै ईक देखत ही ऊररे ॥१७१२

जहाँ मूसल लेय प्रहस्त जुरचौ, कपि नील के ऊपर वार करचौ।
सिर चोट लगे तऊ ना सिरवचौ, तरू लै खल के ऊर में तरक्यौ १७१३

तरू चोट प्रहस्त सही तन में, रपट्यौ कपि नीलहु पै रन में।
खल श्राय लख्यौ हुय नील खरौ[8], पटक्यौ सिर ऊपर लै पथरौ[9]॥ १७१४

पथरा लग सीस भयौ पुरजा[10], श्ररु मूसल हाथ रह्यौ ऊरझा।
धर धूज प्रहस्त गिरचौ धरनी, कपि नील प्रभूत करी करनी ॥१७१५

दोहा

जूयप मारचौ नील जुध, सेनापती प्रहस्त।
कटे सुभट पर हय करी, सिकक्षक[11] सेन समस्त ॥१६१६

---

१ सारथि। २ श्राश्विन = श्वार। ३ पास = निकट। ४ रथ। ५ उच्चकोटि के। ६ विश्वास। ७ श्रग्नि। ८ खड़ा होकर। ९ पत्थर। १० खण्ड-खण्ड। ११ शिक्षित।

राँम सुनी राँवन सुनी, बीतो सो कछु बात।
हरके[1] ईक धरके ऊवर, प्रफुल्लत[2] येक पिरात[3] ॥१७१७
मन राँवन मुरछ्त भयौ, तन सरसायौ तेख।
द्रगन बलाबल देखनै, धरयौ राँम सौं धेख ॥१७१८

छंद मौतीदाँम

परयौ कपि नील के हाथ प्रहस्त, सुनी सोई राँवन बात समस्त।
सभा विच आयेऊ ईन्द्र समाँन, सभासद ऊठ करयौ सनमान ॥१७१९
सिंघासन बैठ कछू सुसताय, प्रकासन[4] बात करी पिछ्ताय।
प्रहस्तहू बीर भयौ भवपार, सबै दल राखस कौ सिरदार ॥१७२०
सुरेसुर[5] जीतन कौं समराय[6], हन्यौ कपि नील ऊठाय कै हाथ।
बड़े बलबाँन सबै कपि बोर, धधूँनत लंक पुरी रन धोर ॥१७२१
बलाबल देखन जाहि बिचार, रचावन जावहिगे हम रार।
सबै चतुरंगीय सेन सभाय, बुलावहु मंगल बाज-बजाय ॥१७२२
करूँ कपि रीछ सँघार कै कीच, बिजै[7] रस चाखहुगो रन बीच।
ईतो कहि रथ्थ मगाय अनूंप, सभायकै चालेऊ काल सरूप ॥१७२३
घनी भय संख नगारन घोर, हरूरत माँनहु सिंधु हिलोर।
हुई चहु ओर न की बँन हाक, करी किलकारीय बोर कजाक ॥१७२४
गयंदन स्यंदन नेमीय गाज, बहे रथ जोर कै केतक-बाज[8]।
निखादीय[9] घंट सुनावत नद्द[10], हले गज ऊपर बैठ हवद्द[11] ॥१७२५
तुरंगीय[12] जंगीय होय तयार, डरावने चालेऊ पख्खर ड़ार।
चले भट कंकट-बूढ[13] चलाक, धरा चक ड़ोल चढी पर धाक ॥१७२६
टंकारत चाप चले गहि तीर, भई नभ ऊपर भालन[14] भीर।
कतो परघातन साल कुठार, त्रसीरख[15] तिछ्छन लै तरवार ॥१७२७
बिचार कै राँम सौं बैर बिधाँन, भई असवारीय रूप भयाँन।
बन्यौ रज[16] डंम्मर छाय बितान, भयौ अँधीयार न दीसत भाँन[17] ॥१७२८

१ हर्षित हुए। २ प्रफुल्लित। ३ पीड़ित। ४ प्रकट की। ५ देवता और दैत्य। ६ समर्थ। ७ विजय। ८ घोड़े। ९ हाथी-सवार। १० नाद। ११ हौदा। १२ अश्वारोही। १३ बख्तर पहनने वाले। १४ भाले। १५ त्रिशूल। १६ धूली। १७ सूर्य।

रसातल धूज दचक्कन रथ्थ, मचक्कन लागेऊ सेस के मथ्थ।
चले अगवाँन किते भट चाह, निचोलक सज्जत भीर सनाह[१] ॥१७२९
अगारीय बाढत लंक-अधीस, करी किलकारीय भारीय कीस।
सुन्यौं रघुवीर जबै कपि सोर, चले दल हेरन[२] डेरन छोर[३] ॥१७३०
वभीखन पूछन लागेऊ बात, असूचक[४] होत घने ऊतपात।
रुकायन[५] धावत आवत राह, ईहै खल कौन कहौ अवगाह ॥१७३१
सुने रघुवर के वायक[६] श्राँन[७], बखाँनन लाग वभीखन बाँन[८]।
ऊभै चख दीसत जास अरूँन्न[९], बिभात[१०] के सूर प्रकास बरंन्न[११] ॥१७३२
निखादीय[१२] वादीय जुद्ध निसंध, कँपावत आवत है गज कंध।
अकंपन दूसर जाँनहु एह, दिखावत दिघ्घ सिलोचय[१३] देह ॥१७३३
दिखावत आभ अस्यौ धुज दंड, पताक में सिंघ लिख्यौ परचंड।
वन्यौ रथ बादर ज्यूँ बरसात, डुलावत चाप प्रभा दरसात ॥१७३४
पराक्रम कुँजर आक्रत पिंड, दिखावत सुंड ज्युँही भुज-दंड।
ईहै घननाद है बीर अभंग, अँनी[१४] सभ आवत जुद्ध ऊमंग ॥१७३५
सिलोचय दीरघ जेम सरीर, टंकारत चाप संभारत तीर।
रथी रथ बैठकै माँडत रार, करै जमदूतन काल करार ॥१७३६
सोई चढ़ आवत बीच-सतंग[१५], ईहै अंतकाय है वीर अभंग।
चढ्यौ गज पीठ कीयैं चख-चोल[१६], बकारत बीर भयंकर बोल ॥१७३७
महोदर राखस ऐह मदंध, करयौ अगवाँन जही दसकंध।
ईहै ईक आवत अस्व-अरोह[१७], लीयै कर प्रास[१८] प्रकासत लोह ॥१७३८
मरीच[१९] के आक्रत झालरि मंड़, दिखावत दिघ्घ[२०] मही भुजदंड।
करै रन बीच भयंकर काँम, निसाँचर जास पिसाच है नाँम ॥१७३९
चढ्यौ ईह बैल के ऊपर चंड, दिखावत सूल लयैं भुजदंड।
निसाँचर है त्रिसरा जिह नाँम, धुरंधर वीर महा बलधाँम ॥१७४०
प्रकासत मेघ के आक्रत पिंड, भुजाँतर दीरघ है भुज-डंड़।
पताक में सेस लिखी प्रतछाँह, बराबर चाप धरयौ जिह बाँह ॥१७४१

१ बख्तर। २ देखने। ३ छोड़। ४ अपशकुन। ५ रोकने के लिए। ६ वाक्य। ७ कानों। ८ वाणी। ९ अरुण = लाल। १० प्रभात। ११ वर्ण। १२ हाथी-सवार। १३ पर्वत। १४ सेना। १५ रथ। १६ लाल। १७ घोड़े पर चढ़ कर। १८ भाला। १९ किरण। २० दीर्घ।

दिपै मगरूर भरयौ ऊरदंभ, कहावत है ईह राखस[1] कुंभ।
जरी परघातन सोबृन जाल, लगी बहु हीर-कनी बिच लाल ॥१७४२
पताक कै आक्रत सैन प्रवाद, ऊठयौ रस बीर होयै अहलाद।
सभारत आवत बीर ससुंभ, निरंकुस राखस येह निकुंभ ॥१७४३
जगामग दीसत तेज जहूर[2], प्रकासत रथ्थ चढयौ बलपूर।
टंकारत चाप गहै कर तीर, भजौ सोई आवत आयुध भीर ॥१७४४
समाँनन[3] बीर मिलै समरथ्थ, बिधूनत पब्बय कौं भर बथ्थ।
नरांतक राखस येह निसंक, लहै भुज लाज सदाँ गढ लंक ॥१७४५
पंचानन आँनन के परचंड, मृगादन सूकर कूकर मुंड।
क्रमेलक कुंजर मुड़ कितेक, हयानन भेक ऊचारत हेक[4] ॥१७४६
दिखावत रूप ज्युँही जमदूत, भयाँनक संग भरे केऊ भूत।
भयंकर कलप महेसुर भाँत, दसाँनन दीसत दीरघदाँत ॥१७४७
किरीट है सीस पै कुंडल काँन, अलंक्रत अंगद[5] बाहु अजाँन।
प्रचंडत पिंड जहीं पग पाँन, सिलोचय दीरघ पिंड समाँन ॥१७४८
छता सतकाँबीय ऊपर छाय, दुती जिम पूरन चंद दिखाय।
चढयौ जय हेत असंभव छोह, अगंजत आवत रथ्थ अरोह ॥१७४९
सबै दिसपालन राँवन साल, बिलोकहु राघव बाहू बिसाल।
बिभीखन बात सुनी रघुबीर, टंकारन चाप लगे गहि तीर ॥१७५०
बिभीखन राँम कही फिर बात, बली दसकंधर बीर-बिख्यात।
सुन्यौ हम बैरीय काँनन सोय, दसाँनन देख लयौ द्रग-दोय ॥१७५१
अचाँनक सीय हरी जिह आय, बिगोवत ताहो कौं कंद बसाय।
सीया ऊर बाढत सोक सँताप, करै हम हेत अनेक कलाप ॥१७५२
डरावत जाहीय पै दुख देत, खरौ हुय आय चढयौ रन खेत।
भई हम भाग सौं जाही तै भेंट, पचाएऊ दुःख ईता दिन पेट ॥१७५३
भुजाँतर[6] क्रुद्ध की आग भरीज[7]; बसी जिम बादर अंतर बीज।
ईहै गवधार लख्यौ खल आज, गिरी अब चाहत ऊपर गाज[8] ॥१७५४

---

१ राक्षस। २ प्रकट। ३ आमने-सामने। ४ हींस, हिनहिनाहट ५ भुजबंध।
६ छाती। ७ भरी हुई है। ८ गर्जकर।

कहाँ अब जावहिगो दिस कौंन, सँपेखहु नैन सुन्यौ सोऊ स्रौंन[1] ।
ईती कहि श्री रघुबीर अभंग, निकारेऊ तिछ्छन बाँन निखंग[2] ॥१७५५
सरासन साध चले गत[3] सीह[4], अगारीय जुथ्थप-जुथ्थ अबीह ।
पछारीय लछ्छन राखत पीठ, धरै धनुँबाँन पराक्रम धीठ ॥१७५६
निहारेऊ राँम कौं राँवन नैन, सँबोधन[5] लागेऊ आपन सैन ।
बड़े लघु देख लये कपि बीर, सपेखेऊ लछ्छन राँम सरीर ॥१७५७
नही कोऊ मो-सम दीसत नैन, सुग्रींव की मार बिड़ारहु[6] सैन ।
सबै भट राखहु लंक सँभार, दवारन[7] च्यार तथा दरबार ॥१७५८
सुने दसकंधर सासन[8] आँन, गई सब सैन पुरी कर गाँन ।
बढ्यौ रन-खेत कौ राँवन बाँट, उठ्यौ रथ-नेमीय कौ अरराट ॥१७५९
भये भयभीत सबै कपि भाल, कुप्यौ जिम कल्प अँभितर-काल ।
जुरी कपि सैन समंदर जेम, तकी दसकंध तिमंगल[9] तेम ॥१७६०
धर्यौ तिह डोहन कौं जलधार, हमल्लन बाँन ऊफ्फल नहार ।
चमाचम-चाप समा-सर चाल, भलक्कत सोवन बाजरू भाल ॥१७६१
दिखावत हाल भुजा दस-दूँन, कढ्यौ जम दछ्छन पावक कूँन ।
भुक्यौ रन भींम भुजंगम भाट, डसें सर दिग्ध बनोकन डाट ॥१७६२
लखी निज सैन दुखी कपिनाथ, हले ईक अंग ऊठावत हाथ ।
किते तरू जामहु कोट कँगूर, जराव के काँम के तेज जहूर ॥१७६३
पट्टकेऊ राँवन लायक पेख, रखी मुरजाद सौं राज नरेख ।
गिरी सिर आवत देखेऊ गैन, दसाँनन लागेऊ बाँनन दैन ॥१७६४
सुबर्न के काँम के नाँम के साथ, हले दसकंठ के संठ कै हाथ ।
कपिस्वर सम्मुह आय करूर, दिखायेऊ डेरन कौ दसतूर ॥१७६५
फिरायेऊ राँवन हाथ न फेर, हितू कपिराज बराबर हेर ।
सरासन बाँनन मार समाँन, पट्टकेऊ भूँम गिरी पथराँन ॥१७६६
सुग्रींव कौं हाथ दिखाय कै सूर, गरज्जेऊ हीय में छाय गरूर ।
तहाँ ईक दिग्ध[10] गह्यौ कर तीर, भुजंगम-रूप[11] चिमंठीय भीर ॥१७६७

---

१ श्रवण । २ निषंग, तरकस । ३ गति, चाल । ४ सिंह । ५ संबोधन । ६ भगा दो । ७ द्वारों पर । ८ आदेश । ९ मछली । १० दग्ध, विष में बुझा हुआ । ११ सर्प ।

सरासन साँध चलायेऊ सोय, जमाय कै दिष्ट सुग्रींव कौं जोय।
तज्यौ सर बज्र ज्युहीं ततकाल, कुमाँर[1] की सक्ति कै रूप कराल ॥१७६८
कपीस कै लागेऊ घाव कठोर, लस्यौ[2] सोई पाव कौं गात लथोर।
मुरछ्छत होय गिरचौ धर माँहि, तहाँ कपि सैन मचो बहु त्राहि ॥१७६९
ऊमगेऊ राखस बीर अभीत, जिताहव[3] राँवन की लख जीत।
गवै नल जूथप देख गवाख, सुखेनहू रिछ्छभ लै तरू साख ॥१७७०
मिले कपि ज्योत मुखी रन मंड, पहारन हाथ गहै परचंड।
पद्दकेऊ राँवन पै कर पाँन, ऊठाय कै धाय कै बाहु-अजाँन ॥१७७१
कढे तब रांवन बीच कलाप, चलावन बाँन लग्यौ दस चाप।
अगंजित कीन प्रहार अचूक, तरू गिर तोर करे सत टूक ॥१७७२
पराजित जूथ-पती भये पूर, गरज्जेऊ राँवन छाय गरूर।
लग्यौ दल कीस कौं मारन लार, रुप्यौ जमदूत बराबर रार ॥१७७३
भये कपि रांवन सौं कर भेट, मनोरथ जीतन की ऊर मेट।
सबै मिल आयेऊ राँम सरंन, बनोरूह आँनन लाल बरंन ॥१७७४
बिलोक कै राँम उठे बर बोर, टंकारत चाप चढाय कै तीर।
लछ्छमन बोलेऊ पायन लाग, ऊपाय कै बीर होयै अनुराग ॥१७७५
बस्यौ गृह आपन बात बिगोय, दसाँनन देखेऊ नैनन दोय।
होयै मह है हमरै कछु हाँम[4], करचौ सोऊ चाहत संगर[5] काम ॥१७७६
बिलोकहु हाथ अबै लघु-बीर[6], धरोज कौं राखहु धारहु धीर।
कही लघु-बंधव की सुन काँन, बिचार कै राघव बोलेऊ बाँन ॥१७७७
इहै खल राँवन है बल ऊद्ध, जये दिस-पालन देवन जुद्ध।
अदेवहु नाँगन सौं अनभीत[7], पराक्रम अद्भुत होत प्रतीत ॥१७७८
जई जुर जाजुलहू जमजाल, करचौ जिह जेर भयंकर काल।
बकारहू आपन राख बचाय, घिराय कै संगर मारहु घाव ॥१७७९
अगारोय चाल अरो तुम आज, सभार कै सुरन-के-सिरताज।
करचौ ईह सासन[8] राँम क्रपाल, हितू लघु-बंधव कौ लख हाल ॥१७८०

---

१ कार्तिकेय। २ गिरा। ३ युद्धविजेता। ४ साहस। ५ युद्ध। ६ लक्ष्मण। ७ निर्भय। ८ शासन=आज्ञा।

चले रन लछ्छन चाप चढाय, बहे संग जूथप पाव बढ़ाय।
परे बहु घायल बंदर पेख, बढ्यौ ऊर अंतर क्रुद्ध बिसेख ॥१७८१
कलाप[1] सौं लै कर तिछ्छन[2] कंड[3], सँवारीय बाँहु ऊभै गज-सुंड।
ईतै हनूँमाँनहू आय ऊमंग, अगारीय लछ्छन चाल अभंग ॥१७८२
मिले कढ राँवन सौं मुहमेज, तरोवर लै कर थंभेऊ तेज।
रुक्यौ सर मारत राँवन रार, झपेटन डारन झारन-झार ॥१७८३
मलंगत[4] कूद परे रथ माहि, तचक्कीय मंच मचक्कन ताहि।
ऊठाय कै दछ्छन बाहु उदंच[5], नमाय कै दिष्टीय-मुष्टीय निंच ॥१७८४
फरार के जाब कहे कर क्रुद्ध, अहो सुन लंकपती बल-ऊद्ध।
अवद्ध है देवन सौं असुरांन, जिहीं बिध जिक्षहु गंध्रव जाँन ॥१७८५
तथाँ नर बंदर कौ भय तोहि, मिली करसाख. लखौ ईह मोहि।
वस्यौ चिरकाल कौं पिंजर बास, सभार कै मुष्टि निकारहुँ साँस ॥१७८६
सुने हनुँमाँन के वायक आँन, दसाँनन आग होयै दहकाँन।
कह्यौ मुसकाय अहो सुन कीस, बिलोकहु मेरेहु पाँनन बीस ॥१७८७
चलावहु तेरेई हाथ की चोट, खरौ हुय पोच[6] परौ मत खोट।
जबै हनुँमाँन दयौ सुन जाब, सुनौ ईक मेरीय बात सताब ॥१७८८
चलाय कै हाथ की येह चपेट, अखै-सुत लीनेऊ सास अमेट।
वहै कर मुष्टि प्रहारत आज, धरोज कौं राखहु लंकधिराज ॥१७८९
ईहै सुन राँवन लागीय आग, जरयौ ऊर सोक होयै रिस जाग।
दई हनुँमाँन कै लात की दोट. चले पग लाग भुजांतर चोट ॥१७९०
अरुझ कै छातीय प्राँन अपाँन, मुरछ्छत होय गये हनूँमान।
कछू सुसतायक[7] छाय कै क्रुद्ध, ऊठे हनूँमाँन पराक्रम ऊद्ध ॥१७९१
दई ईक लात होयै दसकंध, विचालीय खाय गये न सबंध।
धुक्यौ दसकंधरहू सिर धूँन, मुरछ्छत होय लई मुख मूँन[8] ॥१७९२
भये तन व्याकुल रांवन भूप. रिखीगँन देख सबै अभिरूप।
अनंदत देव भये सिध ओर, जहाँ हनुँमाँन कौ देख कै जोर ॥१७९३

---

१ तरकस। २ तीक्ष्ण। ३ बाण। ४ हनुमान। ५ ऊंची। ६ डरपोक।
७ स्वस्थ होकर। ८ मौन।

कछू सुसतायकै राँवन क्रूर, जई हनुँमाँन सौं बोल जरूर।
अहो सुत-केसरी मोर अमित्र[1], बड़ाई के लायक बीर बिचत्र ॥१७९४
पराक्रम देख भये हम प्रस्न[2], सुधारहु स्वाँमीय काम सहिस्नु[3]।
सुने हनुँमाँनहू येह सवाल, कह्यौ सुन लंकपती ततकाल ॥१७९५
लगी हमरी तुमरे ऊर लात, करौ फिर बात रहे कुसलात।
पराक्रम है धिक मोर प्रहार, परे रन-खेत न पाव पसार ॥१७९६
अबै कछु कीजीयै मोहि पै वार, रूप्यौ पग माँड़ कै जाचत रार।
पराक्रम तोहि परै पहिचाँन, जुहारहु फेर बलाबल-जाँन ॥१७९७
बसावहु फेर पुरी-जम[4] बीच, मिलाय कै जीरन[5] गात कौं मीच[6]।
लख्यौ बलवाँन पती-गढ़-लंक, खिसावहु नाँहि भये हीय खंक[7] ॥१७९८

दोहा

सुने बचन हनुँमाँन श्रुत, राँवन उठ्यौ रिसाय।
मुक्का दीय हनुँमाँन कै, छाती में चक छाय ॥१७९९
मुक्का लग हनुँमाँन हू, बिहबल भयौ बसेस।
तहाँ लंकपत छोर तहाँ, आगै बढ्यौ असेस ॥१८००

छंद त्रोटक

बजरंग सरीर लख्यौ बिचल्यौ, चक छाय कै राँवन अग्र चल्यौ।
बिच नील मिले पति-जूथ बली, गिर श्रृंग गहै रन-ताल-गली ॥१८०१
पहिचाँन कै नील कौं लंकपती, महाँक्रुद्ध धिख्यौ द्रढ़संध[8] मती।
कर में गहि तिछ्छन बाँन कई, तन नील कै दिन्नीय मार तई ॥१८०२
नहीं नील लख्यौ सर लागन सौं, तन नाँहि धर्यौ रन-त्याग न सौं।
कर सौं गिर-श्रृंग तज्यौ करखौ, अंतरीख[9] सौं राँवन पै ऊररौ ॥१८०३
गिर श्रृंग पै राँवन सात गने, चटकाएऊ तिछ्छन बाँन चुने।
कट श्रृंग पर्यौ सोई ह्वै किरका, धरनी पुर धूज ऊठे धरका ॥१८०४

१ शत्रु। २ प्रसन्न। ३ सहिष्णु = सहनशील। ४ यमपुरी। ५ जीर्ण। ६ मृत्यु। ७ क्षीण। ८ दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़निश्चयी। ९ आकाश, ऊपर।

ईतनै हनुँमाँनहु आय ईतै, लख राँवन नील ऊभै लरतै।
हस बोलेऊ राँवन सौं हटकै, कर तेरहो नीलहु सौं कटकै ॥१८०५
हम धर्म बिचार कै छोर हलै, भरपूर लरौ तुम नील भलै।
हनुँमाँन चले ईतनी कहिकै, बढ राँवन अग्र चल्यौ बहिकै ॥१८०६
ईतनै फिर जूथप नील अरचौ, सहकार[1] के पेढ़ लये सँभरचौ।
पटकै रथ राँवन पै पिल कै, महाँ जुद्ध करचौ समुहा मिलकै ॥१८०७
सर राँवनहू बरसे सर सै, करने गहि चाप घने कर सै।
लरनं नहि नील कौ बार लग्यौ, जुभलाय कै हीय में क्रुद्ध जग्यौ ॥१८०८
धरनी तज बैठेऊ कूद धुजा, पट फार करे पुरजा-पुरजा।
कर सुक्षम संचर[2] जोग-कला, ईत सौं ऊत पायन सौं ऊछला ॥१८०९
बदलै पग चाप कै आगै बढै, कबहूक किरीट की जागै कढै।
रथ थूँनी धधूँन मचाँन रूपै, कबहू चढ गुंम्मज काल कुपै ॥१८१०
पग जेम चलाकीय पाँनन[3] की, बहकी मति देख दसाँनन की।
अवसाँन खता हुय नील अगा, जोय राँवन अप्रीय क्रुद्ध जगा ॥१८११
अगनास्त्र[4] कौं याद करचौ ऊर में, घट बीत गड़यौ जिमहो धर में।
सर चाप संजोजत कीन सहो, कछु राँवन नील सौं बात कही ॥१८१२
कपि जालक[5] तेरी लखी करनी, हित सौं मति सौं चित कौं हरनी।
डहकाय न राँवन चित्य डरै, किह कारन मायक छिद्र करै ॥१८१३
अगनास्त्र लयौ कहि कै ईतनी, कढनं कँह ज्वाल लगी कितनी।
करनौ गहि बाँन प्रहार करचौ, गत बेग भयौ कपि नील गिरचौं ॥१८१४
पितु अग्नि लख्यौ सुत हेत परवौ, रूख सौं तन प्राँन बहाल रखौ।
मुरछा-गत होय बचे मृतु सौं, चल राँवन छोर बढचौ चित सौं ॥१८१५
मग ऊपर लछ्छन बोर मिले, सर हाथ सरासन लै समले।
पथ राँवन रोक कही प्रवृती[6], पग थंभहु खेत में लंकपती ॥१८१६
कहा बदर सौं तुम रार करौ, मम हाथ लखौ रन-खेत मरौ।
कटु बायक लछ्छन एहु कहे, सुन राँवनहू श्रुत नाँहि सहे ॥१८१७

---

१ आम्र। २ शरीर। ३ पाणि, हाथों। ४ आग्नेयास्त्र। ५ इन्द्रजाल करने वाला। ६ वार्ता।

पुन लछ्छन बोलेऊ लंकपती, मृतु के बस तूं बिपरीत मती।
मम भाग सौं आज भयौ मिलनौ, द्रढ बाँनन प्राँन करू दलनौ ॥१८१८
रन में जुग पायन रोप रह्यौ, गुन ताँन कै पाँनक बाँन गह्यौ।
मत त्यागहु छत्रीय-धर्म मतौ, जब जाँनहु लछ्छन बीर-जतौ ॥१८१९
सुन लछ्छन रांवन बात सबै, जुत धीरज दीन जबाब जबै।
बकबाद सौं गाल बजाय वृथाँ, जलपै कहा बीरत[1] बात जथाँ ॥१८२०
बल बीस-भुजा बतलावहुगे, परतीत पराक्रम पावहिगे।
द्रग सौं हम आयेऊ देखन कौं, बल बाँहन बीस-बिसेखन कौं ॥१८२१
पति-लंक दिखावहु बीर-पनौ, घट बीच भरचौ किह काँम घनौ।
सुनकै ईह रांवन बोल समा, कर तिछ्छन बाँनन लेय क्रमा ॥१८२२
द्रढ़ लछ्छन गात पै सात दये, जिह आवत लछ्छन बीर जये।
सर[2] सौं सर[3] काट कै बीच सबै, तल-भूंम गिरायेऊ बीर तबै ॥१८२३
करनी लख लछ्छन बीर-कला, बढ़ लंकपती ऊर क्रुद्ध बला।
सर तिछ्छन लछ्छन दे समल्यौ, मनु रांवन साँवन मेघ मिल्यौ ॥१८२४
बरसाँवन बाँन लग्यौ बरसा, पुरे लछ्छन येकहु ना परसा[4]।
अध बीच कटे सब आवत ही, चिमठी केऊ चाप चढावत ही ॥१८२५
लख हाथ चलाकीय लछ्छन की, गत बुद्ध भई रन गछ्छन[5] की।
मन रांवन-मारन कीन मतौ, बढ लछ्छन सिंघ मनौ बिरतौ ॥१८२६
कर बाँन गहे जनु आग-कला, चढ पाँख[6] बला जिम नाग चला।
सोई रांवन काट गिराय सबै, तक लछ्छन दिन्नेऊ बाँन तबै ॥१८२७
ईक भाल में लाग कै बाँन अटचौ, लगतै सम लछ्छन बीर लटचौ।
मुरछा-गत होय छिनेक महीं ऊठ पूंछ मरोरत जेम अही[7] ॥१८२८
फिर लछ्छन रांवन ओर फिरा, धनुँबाँन सौं तोरकै डार धरा।
धनु तूटत रांवन क्रुद्ध धिख्यौ, बहु लछ्छन पै सर लै बरख्यौ ॥१८२९
सर लागत लछ्छनहू समले, द्रढ़ रांवन कौ बपु बाँन दले।
रत छूट बह्यौ अत रांवन कै, बपु दीख परचौ बिड़ रांवन कै ॥१८३०

---

१ वीरत्व, वीरता। २ बाण। ३ शिर। ४ स्पर्श किया। ५ गमन। ६ पक्ष्म, पंख। ७ सर्प।

मुरछा हुय जागेऊ खेत महीं, गल गज्ज कै रावन सक्ति गही।
विध के बरसौं द्रढसध बनो, अगनो सम तिछ्छन जाहि अनी ॥१८३१
मनि माँनक हीर जुँ हार मढी, चमकै बिजुरी सम हाथ चढी।
दसकंधर लछ्छन ताक दई, भुज अंतर[1] में तिह भेट भई ॥१८३२
लगतैं हीय लछ्छन मोह लयौ, भुय पै गिर बीर अचेत भयौ।
मुरछागत लछ्छन देख मही, तज कै रथ रावन आय तही ॥१८३३
ऊमह्यौ ऊर गात ऊठाँवन कौं, जिह लेय पुरी कढ जाँवन कौं।
सोई राँवन जोर सरासर में, किबलास[2] ऊठाय लयौ कर में ॥१८३४
जिह लछ्छन घ लेऊ हाथ जहाँ, तरके धरके कपि देख तहाँ।
पर लोथ ऊठी नहो पाँनन सौं, ऊचरयौ प्रबृती दस-आँनन सौं ॥१८३५
पहिचाँन बिना कीय बैर-पनौ, हठ ताही तै लाग कै तोहि हनौ।
लघु भ्रात हौ राँम के लछ्छनहू, बड़ भ्रात है तोर बिचछ्छनहू ॥१८३६
जिनकौं अब देखन जावत हैं, ईह कारन नाँहि ऊठावत हैं।
लख कै हनूँमाँनहु लछ्छन कौं, रपट्यौ गत चंचल रछ्छन[3] कौं ॥१८३७
हीय राँवन कै ईक मुष्टि हनी, धर बक्षन जाय टिकी ढकनी।
मुरछागत होय लयौ मगकौं, पनुँहोन बिसार ऊभै पगकौं ॥१८३८
रथ पै लथरावत जाय रूप्यौ, करनै रन कारन फेर कुप्यौ।
लीय मारुति[4] पीठ पै लछ्छन हू, अवलोक कै राँवन अछ्छनहू[5] ॥१८३९
लख एह चरित्र कौं चित्त लट्यौ, हनुँमाँन सौं संगर-काज हट्यौ।
हनुँमान लौ लछ्छन लेय हले, महाँराज रघूपत जाय मिले ॥१८४०
लख राँम विहव्वल लछ्छन कौं, वपु कीन वहाल[6] बिचछ्छन कौं।
कपि फीज बिसास कै फेर कुपे, रघुनायक राँवन जुद्ध रूपे ॥१८४१
रथ में असवारीय राँवन की, पनहीं[7] बिन राघव-पावन की।
रघुबीर कौं पैदल देख रसा, पग मारुति हाथ ऊभै परसा ॥१८४२
मोहि पीठ पै होय सवार मिलौ, दसकंधर के दसकंध दलौ।
ईह मारुति कै सुन कै अरजी, गढ लंकपती जय के गरजी ॥१८४३

१ छाती। २ कैलाश। ३ रक्षण। ४ हनूमान्। ५ अक्षि, आंख। ६ स्वस्थ। ७ उपानह = जूते।

चढ़ मारुति पीठ पै राँम चले, मुहमेज पती-गढ़लंक भिले।
जुत मारुतो राघव जुद्ध जुरे, अरुनानुज[1] माँनहुं बिस्नु अरे ॥१८४४
द्रढ़ मारुती रावव देख दुनै[2], धरक्यौ दसकंधर सीस धुनै।
मुरक्यौ[3] दसकंधहु जुद्ध मतै, जुत राघव हू हनुँमाँन जितै ॥१८४५
मिल राँम जबै रन खेत मही, कररी दसकंधर बात कही।
मम भ्रात लछंमन मारन कौं, परठीकर सक्ति प्रहारन कौं ॥१८४६
कररौ हम चांप गह्यौ करं में, अब बाँन प्रहारत हूँ ऊर में।
पग मांडहु संमुह लंकपती, खर-दूखन ज्यूँ रन खेत खिती ॥१८४७
लघु भ्रात को बैर लहूँ लरकै, कछु बाँनन की करनी करकै।
सुन राँवन बात होयै सरस्यौ, बहु बाँनन राघव पै बरस्यौ ॥ १८४८
सर राँवन लागेऊ राँम सबै, ज्वाल सक्ति भुजंगम रूप जबै।
घट पीर भई जिम रोख[4] घुट्यौ, दसकंधर बाँनन देय दट्यौ ॥१८४९
हनुँमाँन हकार कै राम हले मुहमेज पती गढ़-लंक मिले।
सर तिछ्छन[5] चाप चढाय सबै, तक राँवन मारेऊ राँम तबै ॥१८५०
परगे धर सिंदन तूट पई, मिलगौ सिर छत्रहु धूर मई।
धुज डंड धुजाधर जाय धुके, मर स्वारथी घोरन प्राँन मुके ॥१८५१
ईक बाँन दयौ ऊर में अटक्यौ, झल बीजल ज्यूँ खटक्यौ झटक्यौ।
सर चाप गिरे कर बीस सबै, तन सौं मन होय अचेत तबै ॥१८५२
रघुनाथ दसा लख राँवन की, घट पीड़त ह्वै घबरांवन की।
कर बाँन लयौ अर्ध चंद कला, बिजुली दुति आग झला बिजुला ॥१८५३
कर घाव प्रहार किरीट[6] कटे, जगमग्ग जंवाँहर काँम जटे[7]।
लुरक्यौ दसकंध थक्यौ लरतौ, फँनि[8] ज्यूँ मनि हीन रुक्यौ फिरतौ ॥१८५४

दोहा

राँवन रन करतौ रुक्यौ, बोले श्री रघुवीर।
भये श्रमत जुध करत भुज, पुन सर बाढी पीर ॥१८५५
अब लंका जाँनो ऊचत, रन तज कै मन रोख।
छत्र मुकट बिन छत्रधर, देखत लागै बोख ॥१८५६

१ गरुड। २ दोनों। ३ मुड़ा। ४ रोष=क्रोध। ५ तीक्ष्ण। ६ मुकुट। ७ जटित। ८ फण।

साझ बद्दल रन के सबै, स्वारथि हयन सहेत।
रथ चढ आवहु रार कौं, खल तोहि मारहुँ खेत ॥१८५७
लज्जत ह्वै लंका गयौ, रॉवन हू तज रार।
आय खबर रघुपत ईतै, लछमन कौं लहि लार[1] ॥१८५८
भाल साल कपि भाल के, सबै निकारे सोध।
सैना कीय हरखत सकल, बहुबिध दैकै बोध ॥१८५९

छंद भुजंगी प्रयात

पहूचयौ ऊतै लंक में लंकपत्ती, छिकी रॉन के बॉन सौं जाहि छत्ती[2]।
अहंकार खीनौ[3] भयौ मोह[4] आई, सबै इंद्रीयाँ एक साथै सिराई ॥१८६०
करी जाँनकै केहरी कौं कुपायौ, मनौ व्याल[5] कौं बैनतेई[6] मिलायौ।
दसा लंक-राजाँन ऐसैं दिखाई, बिथा रॉम पै जाय जैसै बसाई ॥१८६१
लरे तै बचे जे कोऊ बीच लंका, बुलाये सबै निश्चरा वीर-बंका।
हितू जाँनकै मर्म खोल्यौ हीया कौ, सध्यौ आय बृताँत जैसै सीया कौ ॥१८६२
दयौ वेदवती जबै श्राप दुष्टा, रही ज्याँन की होय कै आप रूष्टा।
नरा वाँनरा भीत ब्रह्माँ बखाँनी, बृथाँ होय नाही सोई सत्य बानी ॥१८६३
कही भूप ईक्षाक बंसी कथा कौं, जहीं नाँम अनरंन्य जाँनौ जथा कौं।
छिती के पराजीत तै कोन छत्री, ईकाकी करी मोय ही सौं अमित्री ॥१८६४
अरे रॉवना तूँ बन्यौ आततांई, खिती जात खत्रीन[7] मारी खपाई।
विधूँसै[8] तुमै खेत में मोर वंसी, प्रपुत्रं सपुत्रं कोऊ ह्वै प्रसंसी ॥१८६५
जिही वंस में भूप दसरथ जाये, ऊभै रॉम औ लछ्छनं ऊठ आये।
विदेही वँहीं औतरी वेदवत्ती[9], करयौ हर्न ताकौ कमाई कुमत्ती ॥१८६६
करी है दई गत्त[10] औरै करैगे, लखैगे तऊ खेत वीचै लरंगे।
वचंगे अवै कुंभकर्न वचाए, जगावौ अहो भ्रात कौं मात-जाये ॥१८६७
जिहीं नैन है रथ्थ कै चक्र ज्याँही, महाँ ज्वाल माला धिकै जास माँही।
अठारै अरु तीन सै हाथ ऊँचा, लखावै गिरी-श्रंग[11] ज्यौं लाय लूँचा ॥१८६८
जनावै सोई तीन सै हाथ जाड़ो, अगारीय छारीस[12] वं नाप आड़ो।
जिही खेत में देव कै कीस जाती, चढैगे कहो कौंन से आय छाती ॥१८६९

१ पीछे। २ छाती। ३ क्षीण। ४ मूर्छा। ५ सर्प। ६ गरुड़। ७ क्षत्रियों। ८ विध्वंस करे। ९ वेदवती। १० गीत। ११ पर्वत शिखिर। १२ छयालीस।

कही लंक-कै-धीस ऐसो कहाँनी, महोद्राद जूपाख हू बात माँनी ।
जगाँने चले कुंभकर्नं जबै ही, सबै निश्चरा साथ घेरे सबै ही ।।१८७०
चढोहे घने बीर भागे चलाको, जुरे चाहिकै जायकै पौर जाको ।
बन्यो ऊद्ध धाँम चहूँ कोस व्यासा[1], तरै भोतरै सौं गुफा ज्यों तरासा ।।१८७१
बढे अगृ कौं बोरहू द्वार बीचै, प्रस्वासा प्रबाहं परे पाव पीचै[2] ।
बड़े जत्न सौं जाय पूगे बिचाला, चहूँ ओर सौं घेर कै कीन चाला ।।१८७२
पुकारे करे कॉन कै लाग खासै, सुगंधी सुँघोवै कोऊ नासका सै ।
टटोरे कोऊ पाँन अंध्री[3] टरावैं, खिसैनाँ घने बीर आपो खिजावैं[4] ।।१८७३
मड़े मूसला मारहू मुग्दरा को, सिला श्रंग डारे ऊपारे सझाको ।
किते मत्त हाथो अरू केलकिर्ना[5], चढाये घने चाँप कै कर्न चर्ना ।।१८७४
बजाये किते दुंदभी ढोल बाजा, अयासा[6] रसाँ[7] छाई अवाजा ।
तऊँ नाँहि दूरी भई तास तंद्रा[8], करै सास निर्घोकहू नाँस किद्रा ।।१८७५
जबै जाय कै ताहि नारी जुहारी, किती कुंभकर्नै बरी सो कुमारी ।
सुरी किन्नरी गंधूबी आसुरीहू, नेगी पंन्नगी दिव्यरूपा नरीहू ।।१८७६
जही जेष्ट कौं कष्ट कै बीच ज्याँन्यौ, पती कौं जगावौं मती सौं प्रमान्यौं ।
सबै दिव्य आभर्न सोगंध[9] सीचो, सभी भींन पोसाक बालै सधीची[10] ।।१८७७
विपंची[11] मृदंगा लई हाथ बंसी, प्रचारयौ जहाँ राग नाना प्रसंसी ।
गिरा कोकला गायनी गीत गाये, जुरै भाँमनी कुंभकर्नं जगाये ।।१८७८
बिभुक्षा लगी आयकै ताहि बेरी, घसी मिष्ट चीजें मगाँई घनेरी ।
सफाला[12] सुसा बर्करा क्रस्न-श्रंगा, करे भुँज आहार केते कुरंगा ।।१८७९
करयौ पाँन बारी सहंस करीरा[13], सबेसा कछू ताहि त्यागौ सरीरा ।
मिटी नाँहि कोसीदता[14] नैन माँही, तऊ बात पूछी बिचारे तहाँई ।।१८८०
जरूरी कहौ कौन काजै जगायौ, अजौं नीद सौं मैं न पूरो अघायौ ।
सुनी कुँभकर्नं कही बात स्याँनी, महोद्रं कही और जू पाँखमानी ।।१८८१
महोद्रं कही बात जू पाख मंत्री, सदा लंक-कौ-धीस राजा सुतंत्री ।
लई बाँदरा घेर कै जास लंका, बली राँम औ लछ्छनं बीर बंका ।।१८८२

---

१ व्यास । २ पीछे । ३ पैर । ४ लज्जित होते हैं । ५ गधा । ६ आकाश ।
७ पृथ्वी । ८ निद्रा । ९ इत्र । १० सखियाँ । ११ वीणा । १२ मेंढ़ा ।
१३ कलश । १४ आलस्य ।

अचीतो[1] मच्यौ आय कै बिघ्न ऐसै, करै आपसौं बीनती येह कैसै।
परे जूझकै खेत में सैन-पत्ती, कटी राखसी सैनहू साथ कित्ती ॥१८८३
बच्यौ जेष्ट-भ्राता[2] गनौं सो बधाई, कहैंगे मिले पै करी सो कमाई।
सुनी कुँभकर्नं ईती हेत सेती, जिहीं देर कीनी न उन्मेख[3] जेती ॥१८८४
भलै आय भेटयौ जबै जेष्ट-भ्राता, सबै रीत भाखी ऊभै ओर साता।
लघू-भ्रात ही सौं कही लंक-राई, लंगूला परी आय लंका लराई ॥१८८५
कहो कुँभकर्नं कँही कारना सौं, धरूँ ध्याँन मेहूँ जँही धारना सौं।
सुनी बंधु की बात कौं बीस-आँनी, कही आद सौं अंत बीती कहाँनी ॥१८८६
जती दासरथ्थी पती-औध-जाये, ऊभै भ्रात नारी बनोबास आये।
सोई स्याँमलं गोर सोहैं सरोरा, बड़ौ राँम नाँमै लघु लछ्छ बीरा ॥१८८७
सुपन्खा सुसा[4] काटकै नाक आँना, थिती[5] लोप कै आद बिद्वेख ठाँना।
खरद्दूखनं जाँन कै ताहि खूंनी, सीया बैर में जाय माँगी सलूँनी[6] ॥१८८८
दई नाँहि जापै बढ्यौ फेर द्वेसा, करयौ चाहिकै जाहि ही सौं कलेसा।
जुतै वाँहनी मार डारे जँही सौं, सुपन्खा कहो आयकै मोहि ही सौं ॥ १८८९
तिहीं बैर में मैं हरी नार ताही, भ्रमंते रहे अट्टवी[7] जुग्म-भाई।
भये मित्र सुग्रींव के भेद भावै, दल्यौ जाय बाली बली बैर दावै ॥१८९०
कपीसा भयौ राँम कौ स्याहिकारी[8], जँही दूत आयौ तहीं लंक जारो।
द्रुतं जाय ताही सबै भेद दीनौ, कपी सैन कौं जोर कै गौंन कीनौ ॥१८९१
ऊलंघे जलाधीस कौं वार आई, लगी लंक में ताहि सेती लराई।
घने निश्चरा मार कै नग्र[9] घेरा, समर्दं करै नित्त संध्या-सवेरा ॥१८९२
मिल्यौ जाय वभ्भीखनं सत्रु माँही, सोई ग्रेह कौ भेद देवै सदाही।
तनूं मोहि भ्राता भरोसौ तिहारौ, वनै सिद्ध काजं विवेकं विचारौ ॥१८९३
सुनी जेष्ट-भ्राता कही वात सोई, सलाहा हृदै में विचारी सकोई।
जथा कुंभकर्नं कही हाथ जोरै, अगै वात मेहूँ सुनी एक ओरै ॥१८९४
पती औधके दासरथ्थी पुनीता, परंमातमा पुज्ज[10] ह्वै है प्रवीता।
सोई धायकं ओतरे राँम साचै, कहे नारदं वाक्य ना होय काचै[11] ॥१८९५

---

१ बिना सोचा हुआ। २ रावण। ३ क्षण। ४ बहिन। ५ मर्यादा। ६ सुंदरी सीता। ७ वन। ८ सहायक। ९ नगर। १० पूज्य। ११ मिथ्या।

तजी बैर तातैं करौ मित्रताई, भयौ मित्र बभीखनं आप भाई।
सीया कै दयें होय लंका सुधारौ, बिवेकं जुतै बात मेरी बिचारौ ॥१८९६
सूनी रांवनं कुंभकन्नं सलाहा, हीयौ क्रुद्ध भीनौं कह्यौ बंधु हा हा।
सिखावे कहा सीख कौं होय स्यांना, अहूं रांवनं मत्त हथ्थी अमांना ॥१८९७
किलावै चढ़ायौ नहीं कुंजरौही, लग्यौ बांकुरी[1] आंकुरी नांहि लोही।
निसा दीह डोल्यौ फिर्यौ मैं निसंका, सहे आज कैसै गहै हीय संका ॥१८९८
कहे बोल ऐसे खिज्यौ साप काला, कहे बोल कै बोल केते कराला।
जबे[2] कुंभकन्नं लखी भूप जी को, निदांनं सुनाई सबै बात नीकी ॥१८९९
जितै कुंभकन्नं लघु भ्रात जीवै, पती लंक के सत्रु को श्रोन पीवै।
गहै ईरखा तोरसौं रोस गांसै बचै नांहि जो रुद्र कै जाय बांसै ॥१९००
करी सत्रुता रांम नै स्यांम काया, जिही तोहि कौं काल सूता जगाया।
कपीसा भयौ ताहि कौ स्याहिकारी, भरी बंदरी सैन की भीर-भारी ॥१९०१
सुतै जायकै मारहूं खेत सारा, पती-लंक के देख मेरा पवारा।
मरे भीच केते परे खेत मांही, तिही नार रोवै जहांई तहां ही ॥१९०२
अगोचान[3] सें पौंच[4] हू आंय अंखी, प्रस्वासा ऊड़ाऊ अरी प्रांन पंखी।
जम्यौ कुंभकन्नं खवासोस जौलौं, तवाई कहा लंक के धीस तौलौं ॥१९०३
मिलै रांम पैं मार हूं हाथ मुक्का, बिछोरूं हीयें कालजा और बुक्का।
सगौ भ्रात है लच्छनौ ताहि संगी, चपेटांन की पार हूं मार चंगी ॥१९०४
कपीसा[5] जोई पर्बताकार काया, ईती बंदरी सैन लै स्याहि आया।
भखूं सो लखूं खेत मैं आय भेटै, प्रनासूं बिभुक्षा रही लाग पेटै ॥१९०५
हनूंमांन जारी पुरी लंक हेरी, करेजै अगोठी धुकै आग केरी।
सिरांऊं तही मारकै मोर सोना, हरांमी भगै नांहि जो पूंछ हीना ॥१९०६
करै स्याहि जो इंद्रहू रुद्र कोऊ, पती-लंक तेरे अरी सु लपोऊं।
निसा सेभ पैं नींद लैहो नचीता[6], सबै सोक जावैं जहां होय सीता ॥१९०७
कही बात ऐसी जबै कुंभकन्नं हुयौ रांवनं हीय कौ सोक हन्नं।
उठ्यौ आसनं छोर सांमीप आई, ममी माल मुक्तालताहू मगांई ॥१९०८
गरैं डार कै औ लगाई सुगंधा, बहूटा[7] बिहू[8] हाथ सौ हाथ बंधा।
जबै कुंभकन्नं कही हाथ जोरैं, महांराज लागी हीयै धंख मोरैं ॥१९०९

१ अंकुश। २ जब तक। ३ अंगोछा। ४ पोंछकर। ५ सुग्रीव। ६ निश्चित। ७ भुजबंद। ८ दोनों।

मिलूँ रॉम सूँ जाय कै खेत माहीं, जुरे जुथ्थपं जुथ्थ ठाढे जहाँ हीं।
सही जाय ना गर्जना कॉन सेती, करी लंक पीड़ा हनी सैंन केती ॥१६१०
सबै बैर लैहूँ जबै नींद सोऊँ, खरारी[1] जुतै बंदरी सैंन खोऊँ।
बिकासी बड़े-भ्रात के पाव बंदे, ऊठचौ लंक के नाँथ हू कौं अनंदे ॥१६११
लयौ जेष्ठ-भ्राता जहाँ अंक लाई, मगाये घने मिष्ट मेवा मिठाई।
लधाये केऊ कुंभ[2] सोबर्न सुंडा[3], करचौ चुर्बनं मध-संधॉन[4] कुंडा ॥१६१२
खुध्या स्वादनं खाय मेटे खुराकी, जनावै कहा लेख सँख्या न जाकी।
पती लंग हू अस्त्र सस्त्रं प्रबीना, दकूलं जरी रेसमी जोय दीना ॥१६१३
सुनेरी सनाहं जँही अंग साज्यौ, बिचै भूँम मानो सुमेरू बिराज्यौ।
ऊठचौ जुद्ध कौं क्रुद्ध ह्वै बीर ऐसै, जमी नापनै बाँवना बिप्र जैसै ॥१६१४
सिलासार[5] कौ हाथ लीनौ त्रसूला, बढचौ उद्ध बिद्वैस मॉनौ बधूला।
चढचौ रथ्थ पै जाय डाँकी चलाकी, कुसाग्रीव-बुद्धी समर्द कला की ॥१६१५
चल्यौ जुद्ध को नीम दै चौहू चक्कै, मही धुज्जकै सेस माथा मचक्कै।
सभी सेन सथ्थी पयादीरु सादी, नियंता रथी-रथ्थ हथ्थी-निखादी ॥१६१६
बकारे सबै धीर पै बीर बुल्यौ, तमंक्यौ भुजा तोक कै सूल तुल्यौ।
चमंक्यौ, सोई ऊद्ध आभा छटा ज्यूँ, घनाकार कारौ लखावौ घटा ज्यूँ ॥१६ ७
चरा-कॉतरा[6] है निसाचार चारौ, ईहाँ आयकै बीर मंड्यौ अखारौ।
धनुर्बॉन धारैं जती वेखधारी, खरा[7] मारकै नाँम पायौ खरारी ॥१६१८
लधू भ्रात है लछ्छनं जाहि लारी, बिरूपा[8] करी सुप्नखा हू बिचारी।
हीया में बिचारचौ नही होंनहारा, करग्गं घल्यौ पूँछ कौं नाग कारा ॥१६१९
सबै जायकै देखहूँ साथ सूरौ, भए एकठे लंक भाखै भरूरौ।
सुनी कुंभकर्न कही बात सोऊ, ईकाकी चले बीर ह्वैकै अगोऊ ॥१६२०
गरै नाद कीनौ मनौ मेघ गाजै, ईभारी[9] करी[10] देख जैसे अग्राजै।
बढचौ मग्ग कौं सूल लीनै बिसाला, मनौ ध्रूमकेतू सिखा ज्वालमाला ॥१६२१
बिचालै त्रपंखा जहीं गिद्ध बैठी, अगारो गिरायौ तँही माँस ऐंठौ।
परी ऊल्लका खुल्लका नाद पूरचौ, घसी धूँसरी नैन आभा धरूरचौ ॥१६२२
मुरचौ ना तऊ जुद्ध हो जाय मंड्यौ, घटा मेघ की बाँन-धारा घुमंड्यौ।
लख्यौ कुंभकर्न कपी सैंन लट्टी, सबै अंगदं नील पासै समट्टी[11] ॥१६२३

---

१ राम। २ घड़े। ३ शराब। ४ मांस अचार आदि। ५ लोहे। ६ बीनरे।
७ खर। ८ कुरूपा। ९ सिंह। १० हाथी। ११ सिमिट कर इकठ्ठी हो गई।

कुमंदा गवाक्षा चले सर्न[1] केते, लुके आय कै साँकरै[2] सास लेते।
कहे अंगदं बोल जासौं करारा, बड़े जात के बंदरा गोत वारा ॥१६२४
भजे जात हो कौन के भौन[3] भाई, लगै लाज नाँ बंस गारी लगाई।
बड़े डील के राखसी जात वारे, बली आपने ज्यू न एको बिचारे ॥१६२५
धरौ धारना धेख धारै धरोजा, अरौ सम्मुहा खेत में बाढ़ ओजा।
बिचारी सबै अंगदं सूर बाँनी, मड़े खेत में पाव छुंडी मलाँनी ॥१६२६
मिले मत्त हथ्थी ज्युही कीस मेला, पिले राखसी सैन पै ठेल-पेला।
गिरी श्रृंग लै लै दई मार गाढो, बड़े कंटकी बृछ्छ की तार बाढो ॥१६२७
घने मूसला मार सेना संघारी, भयौ राखसी साथ में सोर भारी।
रह्यौ कुंभकर्नं जहाँ पाव रोपै, जटाधार[4] ज्यूँ कल्प के काल जोपै ॥१६२८
गहै बंदरी सेन कौं लेत ग्रासा, तिही राखसी बीर देखै तमासा।
दही ज्यूँ दहेड़ी मथै काठ डंड़ा, मिलै बंदरी सैन मंथान मंडा ॥१६२६
घने घाव दै दै कपी सैन घेरी, लगे लौटनै भूँम लै लै लथेरी।
लगै अट्टवी[5] आग ज्यूँ लार लारा, करै छार जैसे तरू की कतारा ॥१६३०
रूपी सैन सुग्रीव की एह रीती, परी तूट कै प्राँन छूटी प्रतीती।
भिदे श्रोन में गात की सुद्ध भूले, परे ढाँक नीचै मनो फूल-फूले ॥१६३१
जरे के मरे के गिरे के जमी पै, भिरे के डरे भीत आखै भूमी पै।
गुड़ी[6] ज्यों ऊड़े केक आकास गाँमी, परे कूद सामुद्र में मीच पाँमी ॥१६३२
किते किंदरा में धसे रीछ कारे, बढे बंदरा लार लारै बिवारे।
घने कंद के लाँघ कै सैल घाटा, परे अट्टवी बट्ट लेते पछाटा ॥१६३३
घने खेत की सेत कै जाय घाटै, बही सैन सुग्रीव की आठ-बाटै।
सबै नीत की रीत में सावधाँना, जबै बाल-के-पूत[7] सिद्धांत जाँना ॥१६३४
कही दौर कै बेर बेरी कहाँनी, पिछाँनौ नही राँम सारंग-पाँनी[8]।
बली-बाल मार्‌यौ जही एक बाँना, जित्यौ दुंदभी दैत बाहू अजाँनाँ[9] ॥१६३५
थिती कुंभकर्नं लख्यौ हैथली पै, बचैगौ कहाँ राँम जैसे बली पै।
ईतै पै कोऊ भाग जैहौ अगारी, पती-कीस के दूत ऐहै पछारी ॥१६३६
द्रुतं देख कै प्राँन कौ दंड दैहै, जनाई कहै पै कोऊ भाग जैहै।
बनौका सुनी अंगदं येह बाँनी, गये अग्ग कौं नाँहि छुडी गिलाँनी ॥१६३७

१ शरण। २ पास। ३ भवन=घर। ४ शिवजी। ५ वन। ६ पतंग।
७ अंगद। ८ धनुष धारण करने वाले। ९ आजानु-बाँहूं=घोंट्ट।

ऊतारू भये खेत सें आवने कौं, लगे अंग रूँखावली लावने कौं।
गिराँने लगे मूसला मार गोला, गिरा ली गरामार जैसे गिलोला ॥१६३८
भिरचौ क्रुद्ध सौं जुद्ध लंकेस-भ्राता, प्रलैकाल माहेस[1] जैसे पिराता।
दलै बंदरी सैंन कौं पाव दाबै, चढै हाथ में मीज कै दंत चाबै ॥१६३६
पछारै केऊ भूँम पै सूल पोवै, डमाड़ोल पाथोद[2] पाँनी डबोवै।
लग्यौ एम सुग्रींव की सैन लारा, किधू वैनतेई लखे साप कारा ॥१६४०
जिह्वी जुथ्थपं वृंद देख्यौ ज्वला सौ, कटक्यौ करचौ वीजुरी की कला सौं।
चल्यौ वायु के वेग ज्यूँ अभ्रचाला[3], बड़े सैल कौ अंग लीनै बिसाला ॥१६४१
हनौ कूंभकर्न जही अंग ही पै, जहाँ जोय ठाढो भयौ जंग ही पै।
भयौ टूक टूका गिरे सैल भाटा, परचौ रथ्थ-हथ्थीन पै भूँम पाटा ॥१६४२
घने घूंम घोरा मरे घेर घेरी, तुरंगी परे तूट लै लै तरेरी।
लगे जुथ्थप वृंद की लार लारै, कपीसा लुरे[4] तार बँधी कतारै ॥१६४३
सिला वृछ्छ की मार दीनी सबै ही, जुरे क्रुद्ध सौं जुद्ध मंड्यौ जबैं ही।
भिरौ वृंद जैसै हनूंमान भारी, गिरी मार दीनी गिरै ज्यौं गिरारी ॥१६४४
चढ्यौ कूद आकास लै लै छलंगा, मड़ी वृछ्छ की मार दैदं मलंगा।
करग्गं गह्यौ सूल हू कुंभकरनै गिरी[5] वृछ्छ तोरे लगे भूँम गिरनै ॥१६४५
पयादा परे सैन के सथ्थ पाँही, मरे वीर केते घरी जाहि मांही।
जहाँ कुभकर्नं घिखी क्रुद्ध ज्वाला, वढ्यौ जुद्ध कौं सूल लीनै बिसाला ॥१६४६
दलै बंदरी सैंन की लार दौरै, सिखा आग जैसे पतंगा सिकोरै।
प्रलैकाल के काल ज्यूँ वीर पिल्यौ, हिलोरा मनौ सात सामुद्र हल्यौ ॥१६४७
गिरी धंग कौं झेल कै ताहि गैले, लग्यौ चोट कौं मारनै वार लै लै।
लट्यौ कुंभकर्नं घनै घाव लागै, मड़े पाव ठाढौ रह्यौ जुद्ध मागै ॥१६४८
कला चंचला की ज्युही सूल कारौ, भ्रमायौ जही ऊद्ध[6] आकास भारौ।
हनूंमांन छत्ती दमौ जोर ही तै, कढ्यौ प्रांनदा[7] कालजा कोर हीतै ॥१६४६
हनूंमांन काप्यौ जही लागतै ही, ऊतारू भयौ अंत की आग तैही।
लग्यौ घाव तापै नहीं घाव लागौ, भरोसौ कपी सैन कौ देख भागौ ॥१६५०
भयौ राखसी सैन कौ जोर भारी, डरी बंदरी सैन देखी दुखारी।
जहाँ नील देखी कपी सैन जाती, चल्यौ कुंभकर्नं चढ्यौ आय छाती ॥१६५१

१ महादेव। २ समुद्र। ३ बादल। ४ छिपे। ५ पर्वत। ६ ऊपर। ७ रक्त।

उखारचौ गिरी-श्रृंग मारचौ अधो कै रूप्यौ संम्मुहा खेत में राह रोकै।
गिरी कुंभकर्न लख्यौ सौ गिरंतौ, झुकायौ मुका दै रुकायौ झरंतौ ॥१६५२
फट्यौ टूक-टूका भयौ आग फैली, घटी-जंत्र[1] की जाँन फूटी घरैली।
जुतै ज्वाल तूट्यौ गिरी आग जग्गी, लखी बंदरी सैन के रीस लग्गी ॥१६५३
मिले जुत्थ पंचास कीनौ मता कौं, सभै श्रृंग लै-लै सँभारी सता कौं।
मिले सभैहू रिख्खभं नील माही, ज्युही गंधमादंन्न आयौ जहाँ ही ॥१६५४
गवाक्षं तहाँ आय कै ताहि गैलै, लता बृछ्छ लागो गिरी-श्रृंग लै-लै।
मिले कुंभकर्नं घनी मार मंडी, घटा घोर आषाढ़ जैसे घुमंडी ॥१६५५
दल्यौ कुंभकर्नं तऊ नाँहि दट्यौ, झल्यौ रिख्खभं आच[2] ऐचै झपट्यौ।
मही पै पछारचौ तँही दै मुरछ्छा,गिरचौ आँननं श्रोन[3]औ चेत[4]गछ्छा[5] ॥१६५६
दई मार मुक्कान की सर्भ-देही, अरू नील कौं बक्षनं[6] मार पेही।
गवाखं दई लात कौं भूंम गेरचौ, ज्युही गंधमादंन्नहू कौं जँझेरचौ ॥१६५७
पराजीत ह्वै जूथ-पत्ती पिराये, गहाई मुरछ्छा जमी पै गिराये।
मिली बंदरी सैनहू ज्वालमाला, बड़े श्रृंगहू बृछ्छ लीनै बिसाला ॥१६५८
दई कुंभकर्नं-घनी मार देही, जरा पीर ब्यापी नही दुष्ट जेही।
चहूँटे किते संग में दाब छाँहो, मदाभीर जैसै पसू आग माही ॥१६५९
चपेटाँन मारै किते दाँत चावै, दलै मार मुक्काँन धुक्काँन दावै।
गनै कीस की धारनाँ बीर गाढौ थिरीभूत पाहार[7] ज्यों खेत ठाढौ ॥१६६०
दलै मर्कटी सैन कौं पाव दावै, चढ़ै हाथ की घातऊ दाढ़ चावै।
प्रलैकाल की आग ज्यूँ खेत पिल्यौ, बनोकाँन-थोकान[8] जाही बिचल्यौ ॥१६६१
जबै बाल कौ पूत दौरचौ जँही पै; सिला-श्रृंग की मार कीनी सही पै।
बली बाल-के-पूत पै सूल बायौ, बली बाल के पूत ताही बचायौ ॥१६६२
छली कुंभकर्नं दई लात छाती, मुरछ्छा मँही कुंभकर्नं मिलाती।
मुरछ्छा छुटी अंगदं मार मुक्का, धरा पै गिरायौ तँहीं देय धक्का ॥१६६३
डिग्यौ अंगदं देख सुग्रींव दौरचौ, मिलायौ तहीं मारनै सूल मोरचौ।
मुरचौ देख सुग्रींव लै श्रृंग मोटा, अगारी खरे होय बाँधी अगोटा ॥१६६४
कहे कुंभकर्नं बचंन्नं करारा; अहो बीर मेरे लखौगे ईसारा।
बल्ली जुत्थपं जुत्थ कौं खेत बीचै, निहाँरै धरा पै गिराये सु नीचै ॥१६६५

---

१ अरहट्ट। २ हाथ। ३ रक्त। ४ चेतना, होश। ५ चला गया। ६ छाती।
७ पहाड़। ८ वानरों के झुण्ड।

घनी बंदराली भखी घेर घेरी, फिरै जुद्ध में क्रुद्ध ह्वै फेर-फेरी।
पराजीत कीने सबै क्रीत[1] पाई, अजौं नीत[2] तेरी न नीकै अघाई[3] ॥१९६६
दुखी और कौं छोर कै मोर देखौ, पगाँ माँड कै चोट एहू परेखौ।
कही बात सुग्रींव सौं कुंभकर्नं, लुकोय तऊ आयगे जुद्ध लरनं॥
बिधाता जँभाई लई जाहि बेरी, पिता तो ऊपज्यौ सता कर्म प्रेरी ॥१९६७
रिखंरज्जसं नाम जाकौ रहायौ, जिहीं कीस कौ तूँ कपीधीस जायौ।
जुरी खेत में तोरहू मोर जोरी, बतावौ कछू बाँह जोरी बहोरी ॥१९६८
सुनी बात सुग्रींव दौरयौ सपाटै, झुकायौ गिरी-श्रंग छाती झपाटै।
गिरयौ वज्र ज्यूँ लाग कै श्रंग गोला, तऊ सूल कौं सीस सुग्रींव तोला ॥१९६९
हनूँमाँन सुग्रीव की देख हाँनी, करी नाँहि जा तै कछू आँनकाँनी।
गह्यौ सूल कौं फूल जैसै गिरायौ, भयौ टूक-टूका जमी पै भरायौ ॥१९७०
सिलासार[4] सौ भार कौ सूल सोई, मढ्यौ रत्न-माला सुबर्नं मिलोई।
परयौ भूँम माही सबै होय पूरौ, घुल्यौ खेत पै रेत कौ होय धूरौ ॥१९७१
बिजै[5] सोर बाढयौ हनूँमाँन बीरं, पराजै भयौ कुंभकर्नं सधीरं।
गिरो-श्रंग सुग्रींव के सीस गेरौ, लयौ मोह सुग्रींव खायौ लथेरौ ॥१९७२
मरोरे जही-माँन दीनी मुरछ्छा, रहे धीर ठाढे जहाँ बीर रछ्छा[6]।
भयौ बंदरी सैंन में सोर भारी, पुलाये बनोका पिछारी-पिछारी ॥१९७३
जहाँ कुंभकर्नं बली जुद्ध जित्तौ रूक्यौ ना रुकायौ महा रोख-रत्तौ[7]।
मुरयौ चाँर सुग्रींव दुर्मूल[8] माँही, जितै मारूतौ[9] देख आयौ जहाँ ही ॥१९७४
लयै जात सुग्रींव कौं देख लिन्नौ भिरयौ पाय कौं रोप कै कोप भिन्नौ।
मिल्यौ तिट्ठ कै दुष्ट कौं मुष्टि मारी, डिग्यौ पाव सौं होय लोनी दरारी ॥१९७५
भयौ चेत सुग्रींव कौं मोह भग्गै, लये नासका काँन आयास[10] लग्गै।
जहाँ कुँभकर्नं प्रथा पाय जोई, सुपन्खा सुसा[11] ज्यूँ भयौ भ्रात सोई ॥१९७६
ऊड्यौ जित्त कै सत्रु कौं कीस-ईसा, धरे काँन नासा अगै औघ-ईसा।
निहारी प्रभू जै तहू की निसाँनी, गहो कुँभकर्नं हिया में गिलाँनी[12] ॥१९७७
फिरयौ लंक कौं पीठ दै दीठ फेरं, कपी सैन कै आय लाग्यौ जु केरं।
गरं मेघ आषाढ़ कौ घोर गज्जे, महाँकाल रूठो मनो कल्प[13] मझे ॥१९७८

---

१ कीर्ति। २ नीयत। ३ तृप्त हुई। ४ लोह। ५ विजय। ६ राक्षस।
७ क्रोधरत। ८ बगल, काँख। ९ हनुमान्। १० दूर होने पर। ११ बहिन।
१२ ग्लानि। १३ प्रलय।

दई मर्न[1] की नीम बेपछ्छ दनैं, कहा बर्न बरनै जही कुंभकनैं।
मलै मर्कटी सैन खेही[2] मिलावै, चढै हाथ में देत दड्ढा[3] चबावै ॥१९७९
अरुझै किते आँनन-खाय आँटी, घुलै कै डुलै कै विचे जोह घाँटी।
सोई नासका स्वास लगै निसारा, अही सौं पतंगा मनौ मग्ग पारा ॥१९८०
करे द्योस[4] ऊलूक भलूक कीसा, रह्यौ छाय कै लाय ऊल्मूक[5] रीसा।
कह्यौ राँम सोमित्र सुग्रीव काजा, सँभारौ सबै सैन कीसं समाजा ॥१९८१
कली देखहूँगौ वली कुंभकर्नं मंड्यौ आय प्राघात-आघात मर्नं।
ईती बात भाखी सीयानाथ ऊठे, रमाँनाथ मानौ मधू सीस रूठे ॥१९८२
जटाजूट बंधाँन बाँधे जँभीरा, सझे आनि[6] भुथाँन[7] बामै सरीरा।
चिला ऐंच ऊच्चाँन सिजा चढ़ाई, डहै लस्तक बाँम हस्तं दिढाई ॥१९८३
करे क्रुद्ध कोडंड टंकार कीनौ, ह्यौ जातधाँना कीयौ मानहीनौ।
हले रामचंद्रं जहाँ दुष्ट हेरैं, फनी तिष्ट चाल्यो मनौ दिष्ट फेरैं ॥१९८४
बिलोके घटा नाग[8] रूठ्यौ बिरूतौ, सटा[9] धून ऊठ्यौ मनौ सिंघ सूतौ।
अरे सम्मुहे जाय बाहू-अजाँना जहाँ खेत ठाढे सबै जातुधाँना ॥१९८५
प्रबाहं बढ्यौ राँम कौ कंक-पत्रं, करै कुंभकर्नं चमू जत्र-कत्रं।
दसूँ ही दिसा बाँनही बाँन दीसै, रहे छाय आयास ज्यूँ ऊर्ग[10] रीसै ॥१९८६
कटै सत्रु-सेना मचै श्रोन[11] कादा, ज्युँही राँम राजा बढै जोर जादा।
हुलै है दलं पैदलं मत्त हत्थी, रूलै बाँन के बेग सौं रथ्थ-रथ्थी ॥१९८७
किते घाव लागै ढुरै मासकारी[12], परै तोय की धार जैसै पँनारी।
तुटै तुंड मुंडा मनौ तुंब-डच्चा, मही लोट मडै बिना नीर मच्छा ॥१९८८
कटै सन[13] निर्गन[14] पैजूख[15] कंधा, कहूँ सीस निर्मूल नाचै कबंधा।
सझै बाँन संधाँन साझै सनंका छुटै कंकटं व्यूढ बाजे खनंका ॥१९८९
रची चंचला ज्यूझला बाँन रूरै, प्रलै काल के मेघ ज्यूँ बेग पूरैं।
कला कौसलं कौंसलाधीस कुप्पे, रमै नाग पारिंद्र ज्यौं रार रुप्पे ॥१९९०
छुटै बाँन पै बाँन सौं भौंन छावै, ऊलट्टै सबै बीच भूथाँन आवै।
महाँबीर रछ्छा रहे पाव मंडै, खरारो करै मार कै खंड-खंडै ॥१९९१

---

१ मरण। २ धूलि। ३ दंष्ट्रा=दाढ़। ४ दिवस। ५ उल्का, जलती लकड़ी। ६ श्रोणी=कमर। ७ तरकस। ८ हाथी। ९ गर्दन के केश। १० उरग=सर्प। ११ शोणित=रक्त। १२ रक्त। १३ बाण। १४ गर्दन। १५ कान।

घटी सैन कौ देख जाही घटी पै, चल्यौ त्रास सौं श्रास स्वासा छुटी पै।
गरै नाद कीनौ भरै गल्ल गाढौ, जनावै गिरी-श्रंग के तुल्ल जाढौ ॥१९९२
संड्यौ श्राय कै मर्कटी सैन माँही, घुमंड्यौ प्रलै काल के मेघ घाँही।
चलाकी घनै श्रस्त्र-सस्त्रं चलावै, दलै कौंसलाधीस आपौ दिखावै ॥१९९३
जुरे कुंभकर्नं जहाँ राँम जुद्धं, बढै श्राहि[1] तुंडीक[2] जैसे विरुद्धं।
भरै चाप श्रावाज विस्फार भारी खिलावै मनौ दीर्घजिम्भा[3] खिलारी ॥१९९४
करी जुद्ध क्रीड़ा मिलै कुंभकर्नं, प्रचारे दये बाँन सोवर्न पर्नं।
रहे लीन ह्वै राखसी पिंजरा में, धसै कंचुको[3] जेम बंबी धरा में ॥१९९५
श्रवै घाव स्त्रेनी घनी श्रोंन संगा, परै श्रंग सौं रंग मानौ पतंगा।
ढुक्यौ बंदरी सैनहू कौं ढढोरै, दलै येक कौं येक कै लार दौरै ॥१९९६
वनोका भगे मग्ग लग्गे विसेखै, डरै हुडु[4] के भुंड ज्यौं कोक[5] देखै।
गये राँम की सर्न कौं सारग्राही, मिलै संग जावास ज्यूँ सुंय्य माँही ॥१९९७
बिलोके कपी सैनहू कौं बिसासी, श्रमी द्रष्टि सौं देख मेटी ऊदासी।
श्रनी पिठ्ठ लिन्नी बढे राँम श्रग्गै, जुरे कुंभकर्नं जहाँ खेध जग्गै ॥१९९८
करे रोख कै मोख पैने कलंबा[6], प्रलै-फूँक श्रालूक जैसे प्रलंबा।
गनै सोय नाँहीं लगे गात माँही, चल्यौ राँम की श्रोर ज्यूँ श्रभ्र छाँही ॥१९९९
ईकै हाथ में श्रंग लीनौ ऊतंगा, ऊठायौ सोई मारनै ऊत्तमंगा।
जितै राँम पत्री दयौ सिष्ट जोरी, तकै तिष्ट ताही भुजा पुष्ट तोरी ॥२०००
भुजा लै गिरी दूसरी बेर भारी, खरौ होय कैं फेर तक्के खरारी।
ईतै राँम नाराच छूटौ अभंगा, सुपै हाथ तूटौ वही श्रंग-संगा ॥२००१
कटे काँन नासा ऊभै पाँन कट्टे, दुतीदीप्त सौं लीप्त लै बाँन दट्टे।
तहीं जीवनौ जाँन धिक्कारता कौ, करचौ घोर चिक्कार साथी कजा कौ ॥२००२
तिही फार पासार कै बक्रतुंडा, प्रभू धार चाल्यौ पहारं प्रचंडा।
डराँने सबै देव देखे दसा कौं, जही रच्छ कीनौ तकै लच्छ जाकौं ॥२००३
किते मार मू-फार माँही कलंबा, जिहीं तोर डारे सबै दाँत जंभा।
भिदे तालु जिम्भा परचौ नाँहि भूँमै, धुरै रीस बीरासनं[7] बीच घूँमै ॥२००४
ईखू[8] राँम लै श्रर्ध चंद्रा श्रकारा, महाँवेग सौं कंधरा बीच मारा।
ऊड़ायौ जँही मुंड काया ऊछंडा, परचौ जाय लंकेस श्रागै प्रचंडा ॥२००५

---

१ सर्प। २ सर्प को मारने वाला। ३ सर्प। ४ भेड़। ५ भेड़िया। ६ वाण।
७ युद्ध क्षेत्र। ८ वाण।

दलै पाव सौं बंदरी सैन दौरै, ससंकै रुकै रूंड़ काया सकोरै।
खरारी कर्‌यौ रूंड कौं खंड-खंडा, पर्‌यौ कुंभकर्न जबै धर्न पिंडा ॥२००६
जहीं की कला निक्कसी ठौर जाही, मिली जोत में जोत श्रीराँम माँही।
ईहीं देख कै देवता ही अचंभा, सबै ही मुनी साथ पायौ संसुभा[1] ॥२००७
बजे दुंदभी भेर आनंद बाजा, रच्यौ ख्याल ऐसौ जहाँ राँम राजा।
करी फूल-बृष्टी जया-सब्द कीनौ, हुयौ निश्चरा-जात कौ साथ हीनौ ॥२००८
फिरे राँम डेरा दिसी साँभ फूली, भये बंदरा संग में पीर भूली।
थिती देह में स्वेद पाँनी थर्‌यौ है, ऊमा फूल पै ओस माँनौ अर्‌यौ है ॥ ००९
लसै श्रौनि[2] भूताँन कोडंड लीनै, भ्रमावै तहीं बीरता रंग भीनै।
प्रभा कोट-कंदर्प राजै पुनीता, सँभारे सबै सैन कौं नाथ-सीता ॥२०१०
निवाजे प्रभू कट्ट-पट्टा[3] निवारे, सुसोभै बिचै आप डेरा सँवारै।
भयौ कुंभकर्न सुन्यौ मर्न भ्राता, अँधारौ भयौ लंक बाढी असाता ॥२०११

दोहा

कुंभकरन के मरन कौ, सोक बढ्यौ ईक सथ्थ।
देखत सिर भ्राता द्रगन, मन ब्याकुल दसमथ्थ ॥२०१२
अंतहपूर अकुलाय कै, क्रंदत कर-कर कूक।
ग्रह राँवन लघु-भ्रात ग्रह, ऊर तीय बाढ़ी ऊक ॥२०१३

छंद त्रोटक

मिल राँम सौं कुंभकरन्न मर्‌यौ, पति-लंक हीयै अत-सोक पर्‌यौ।
प्रतिघातन जास सुन्यौ पुर में, अत सोक बढ्यौ जन के ऊर में ॥२०१४
घिर राँवन भूप के आय घरै, सुत भ्रात मिले भटहू सिगरै।
त्रसरा सुत बोलेऊ तात तुहीं, सुर-दाँनव जीतन वार सही ॥२०१५
कदरावत रोय बिलाप करौ, हठ कै दिगपालन मान हरौ।
बिध कौ बरदान कहा बिसरे, पन पांतर मोह के कूँप परे ॥२०१६
सुवसै रथ ग्रेह में साज सिलै, चिरमेही[4] सहश्रक[5] लाग चलै।
सकती बिधहू दीय सो अबला, कहाँ जात रही चंद्रहास[6]-कला ॥२०१७
प्रतना[7] घर है घर लंकपुरी, घट में कहा सोक बलाय घुरी।
सुख-दुःख नही कछु संमृथ कौं, श्रुति[8] और बिचारहु संमृति कौं ॥२०१८

---

१ विश्राम। २ कमर। ३ कामदेव। ४ खच्चर। ५ हजारों। ६ तलवार।
७ सेना। ८ बेद।

महाँराज नचिंत रहौ मन सौं, तज ताप बिलाप सबै तन सौं।
जुग तापस है कहा वेख जती, कपिहू बपुरेन[1] की बात किती ॥२०१९
कल कौं हम जात बिदा करीयें, डहकावनि कीस नहीं डरीयें।
मिल पित्रय नींद में खेत मरचौ. अलसावत धावत रार अरचौ ॥२०२०
मत सोच करौ जिह मारन कौं, कल मृत्तु गनौ सुभ कारन कौं।
त्रसरा[2] ईह्र बोल कहे तब ही, सुन राँवन सोक मिटचौ सब ही ॥२०२१
जुध भार दयौ कोय सैन जुमै, अभिमाँन बढचौ सुत कौ ऊर में।
त्रसरा लख मेल सुराँतकहू, तमवयौ मिल आय नरांतकहू ॥२०२२
अतकायहु संग भयौ ईनकै, जुध की हीय चाह बढ़ी जिन कै।
बहि चालेऊ बाप सौं होय बिदा, सग राखसी सैन चली समुदा ॥२०२३
माहापारस और महोदरहू ईह आय मिले फिर आसुरहू।
गज-पीठ महोदर बैठ गयौ, बहु आयुध लै जुधकाज बह्यौ ॥२०२४
त्रसरा रथ बैठ चल्यौ तुल कै, जुग धोराजु पै मिल कै-जुल कै।
सिर तीन में तीन किरीट सजै, रमनीय सुबर्न जराव रजै ॥२०२५
अँतकाय[3] चढ्यौ रथ ऊपर कै, धर धूजत और चढी धरकै।
जुर चाले नरांतक संग जही, उजरे अस[4] पै असवार ईही ॥२०२६
कर कूंत[5] गह्यौ मनु आग-कला, चमकै बिच बादर ज्यूँ चपला।
पुन देवनअंतक लै परघौ, त्रबला[6] महापारस लै सिरघौ[7] ॥२०२७
बढ कै खटहू रन बाट बहे, सझहे दल पैदल संग सहे।
अनीं वाँध चले ज्युँही जाय अरे, कररी कपि सैन पै मार करे ॥२०२८
कपि अंग ऊतंगन लै करे, धरकै बल-बांहन सौं धररे।
बिव[8] और बढो ईम रार बली थरकै भरकै रन-खेत थली ॥२०२९
जुध बीच नरांतक वेर जही, गिरनै कपि सैन पै बाग गही।
हय हंक निसंक मिल्यौ हलकै, लग पंख चल्यौ कनकाचल कै ॥२०३०
कर कूंत गह्यौ सु वह्यौ कररौ, भरकै कपिसैन भयौ भररौ[9]।
हलचल्लीय नीर तरंग हिलै, प्रवस्यौ जिम मच्छ समुद्र पिलै ॥२०३१
जित ही तित दौरत जाय जुरै, कपि मार असंखन कीच करै।
कपि वृच्छ गहै तिह काटन कौं, द्रढ कूंत मिलावत दाटन कौं ॥२०३२

१ वेचारे। २ त्रिशिरा नाम का राक्षस। ३ परेशान होकर। ४ अश्व। ५ भाला। ६ गुर्ज। ७ ऊँची। ८ दो। ९ मर्राहट पड़ गई।

गिर-श्रृंग कौं जो कोऊ हाथ गहै, बिखरै कपि सो जम-लोक बहै।
कपि केक[1] मिलै दल कद्दरीया[2], बरसात मिलै जिम बद्दरीया ॥२०३३
दखनी[3] जिम बाव डुलावत है, प्रवसै जित कौस पुलावत हैं।
चमकावत कूंत अनीन छटा, अस ऊपर सौं असमान अटा ॥२०३४
समल्यौ मनु सेहर साँवन कौ, रन राजकुवाँरहु राँवन कौ।
गहै बाग जितै कपि सैंन गिरै, फननेटीय लेत तुरंग फिरै ॥२०३५
बहु घाव करै जिस बाव बहै, गति बक्रीय चक्रीय दाव गहै।
अहि फूंकसी हूकसी सेल अनी, बिचलावत बंदर सैन बनी ॥२०३६
रहे पाय कौं मंडन खेत रुके, लथरावत पीठ सुंकंठ[4] लुके।
चल आय जबै कपि साथ छुप्यौ, कपिराज नरांतक[5] देख कुप्यौ ॥२०३७
चित सौं जिन तै नहीं रार चही, अपनी न बराबर जान ईही।
जुगराज बुलाय कह्यौ जिह तै, तुम जाहु नरांतक जाँय तितै ॥२०३८
भहरावत कौस की फौज भ्रमै, सुत राँवन मारहु येह समै।
कपिराज कह्यौ जुगराज करचौ भुज आप भरोस सौं जाय भिरचौ ॥२०३९
बजुला[6] मनी बाँहन बाँधन कौं, समिलै कर सिष्टहु साँधन कौं।
जहाँ जाय नरांतक जुद्ध जुरे, केऊ बोल बकार कहे करुरे ॥२०४०
अहो राँवन-राजकुवाँर ईतौ, मत क्रोध करौ अरू क्रूर मतौ।
हम सौं लरीयैं कर हौंस हीयै, लपकावत सेल कौं हाथ लीयैं ॥२०४१
ऊझकावत खेत फिरौ अस कौं, डहकावत कौस दसाँ-दिस कौं।
पग रोप गहौं मजबूत-पनौ, जुरनै हम आवत एक जनौ ॥२०४२
सुन अंगद बात ईती अबना, गहि सेल नरांतकहू गवना।
हय हूक कै अंक में सेल हन्यौ, तिह अंगद तोरेऊ जेम त्रनौ ॥२०४३
हय कै फिर अंगद लात हनी, धर टूट परचौ ऊबरचौ सु धनी।
मरगौ अस खेत में फार मुँहा, गिर मानहु संजुत छिद्र गुहा ॥२०४४
निज अस्व कौं देख नरांतकहू, ऊर क्रोध धिख्यौ जिम अंतकहू।
सिर अंगद मारीय मुष्टि समो, जुगराज परचौ लथराय जमो ॥२०४५
ऊठ अंगद वार अ उक्रीय की, मझ छातीय दिन्नोय मुक्कीय की।
परगौ धर चूर्न भई पँसुरी, वपु सास बजाय गयौ बँसुरी ॥२०४६

---

१ कई। २ कायर। ३ दक्षिणी। ४ सुग्रीव। ५ रावण का एक पुत्र। ६ बाजूबंद।

मृतु देख नरांतक खेत सही, तहँ आय देबांतक दौर तही।
तह आय कै आत मिल्यौ तिसरा, नजदीक महोदरहू निसरा[1] ॥२०४७
सुन राखसी सैन मिली सहबा, तन तूट नरांत परचौ तहबा।
कीय अंगद ऊपर कोप कलै, पग आगै धरै केऊ पाछे पिलै ॥२०४८
रथ बैठ महोदर बीर-रथी, थिर चित्त करचौ रन-खेत थिती।
पुन देवहू अंतक लै परघा, खल केतक लेय चले खरगा ॥२०४९
त्रसरा रथ बैठ हल्यौ[2] तित ही, जुरनै रन अंगद पै जित ही।
तेऊ जाय मिले जुगराज त्रहूँ, ईक बीर बकारीय धार अहूँ ॥२०५०
समल्यौ फिर अगद साखन लै, लरनै कह वारन लाखन लै।
ईक बृछ्छ देवांतक पै ऊछस्यौ, केऊ बाँनन सौं त्रसराह कस्यौ ॥२०५१
ऊछल्यौ नभ अंगद ऊपर कौं भटभेर सबाईय भूपर कौं।
सिल तोरत है त्रसरा सर सौं, कररौ धनु ताँन जहाँ कर सौं ॥२०५२
परघातन लै तरू पै पछटै, ईत बीर महोदरहू ऊछटै।
तरू पथ्थर अंगद ढेर तुटे, जुर तीनहु राखस जुद्ध-जुटे ॥२०५३
त्रसरा कर चाप लै बाँन तजे, गज बैठ महोदरहू गरजे।
भरमार सबाईय भालन की, बहुरै छर बाँस बिसालन की ॥२०५४
परघाहू देबांतक दै पलस्यौ, सुत-बाल कौ नाहिन नैक सिट्यौ।
नभ कूद कै बंदर-वारी नई, दिपराज महोदर लात दई ॥२०५५
ग फट्यौ दध ज्यूँ गगरी, डग नाँहि दई चलकै डगरी।
गिर-श्रंग। ज्यँही धरनी गिरगौ, पिछराह महोदरहू परगौ ॥२०५६
तहाँ अंगद दाँत ऊखार तहीं, द्रढ जाय देवांतक मार दई।
ऊगल्यौ बहु श्रोनत आँनन सौं, पुन गाँठ परी निज प्रांनन सौं ॥२०५७
छिन में मुरछा तिह आय छुटी, परघातन अंगद पै पछटी।
गम भूल कै अंगद बैठ गये, भर रीस[3] हीयँ फिर ठाढे भये ॥२०५८
त्रसरा त्रय बाँन दये तिन पै, जेऊ जाग लिलाट लगे जिन पै।
त्रय राखस अंगद येक तहाँ, जुर कीनेऊ जाजुल जुद्ध जहाँ ॥२०५९
लख अंगद येक जनौ लरतौ, बिफुरचौ मनु सिंघ घिरचौ बिरतौ।
हनूंमान मिल्यौ अरू नील हल्यौ, जुरे तीनहु बंदर बाँध जिलौ ॥२

१ निकला। २ चला। ३ क्रोध।

त्रसरा सिर ऊपर नील तक्यौ, झटक्यौ ईक झार पहार झुक्यौ।
त्रसरा नहो लागन दीन तँही, मंड बाँन-झरी गिर डार मही ॥२०६१
रटक्यौ सुत दूसर राँवन कौ, हनुमान चले रन हाँमन कौ।
जंभुआत[1] मिले हनूँमाँन जही, तहाँ देख दिबांतक झूँम तही ॥२०६२
सिर मुक्कीय की दीय बाँध समी, जुरकै गिरगौ मृतु होय जमी।
ऊत नील महोदर खेत अरे, केऊ नील कै बाँन दये करते ॥२०६३
गिर श्रंग दयौ सिर नील गहे, रूप रार महोदर खेत रहे।
कढ़ दाँत तहाँ त्रसरा-कौकका[2], फट सीस भयौ महाँकाल फका[3] ॥२०६४
त्रसरा हनूँमाँन गौ तारन कौं, निज बंधव बैर निकारन कौं।
हनूँमान पै बाँन दये हरख्यौ, बरसात के मेघ ज्युही बरख्यौ ॥२०६५
हनुँमाँन गहे गिर श्रंगहतौ, त्रसरा सर दिन्नेऊ होय ततौ।
गिरश्रंग गयौ धरनी गिरकै, केऊ होय पखाँनन[4] की किरकै[5] ॥२०६६
हनूँमाँन की बृछ्छन मार हुई, त्रसरा तेऊ बाँनन काट तई।
हनूँमाँन जग्यौ जब क्रुद्ध होयै, नख सौं रथ के हय मार लीयै ॥२०६७
त्रसरा हनुँमाँन पै सक्ति तजी, गहरी धुन मेघ ज्युँही गरजी।
हनुँमाँन गही तिह आवत ही, त्रन जेम प्रहारीय तावतही ॥२०६८
त्रसरा कर खग्ग लयै टटक्यौ, झुक कै हनूँमाँन हयै झटक्यौ।
हनुँमाँन तहीं ऊर लात हनो, फुँनहा[6] की लगी मनुँ झाट फनी[7] ॥२०६९
गस आय कै ऊपर भूँम गिरयौ, खग खोस कै राखस कौं खररयौ।
सिर काटेऊ तीन किरीट सझे, भहराय कै राखस और भजे ॥२०७०
त्रसरा मरनौ सुन बीर तप्यौ कल[8] कौं महाँ-पारस काल कुप्यौ।
सोई राँवन कौ निज भ्रात सगौ, लरनै दल बंदर लार-लगौ ॥२०७१
गहि हाथ गदा सिर गोल गटा, चरबी में चबोरीय[9] रूप-छटा।
मँझ खेत लग्यौ कपि मारन कौं, प्रबला अबला के प्रहारन सौं ॥२०७२
कपि-सैन कुलाहल सोर करयौ, जहाँ जूथपि रिख्खभ आय जुरयौ।
सोई पूत-बरूँन बरूँन-समा, कोय आय मिलाय कौं रोप क्रमा ॥२०७३
महाँ-पारस जुथ्थप देख मिल्यौ, प्रल-आग[10] ज्युँहो होय में प्रझल्यौ।
जहाँ मार गदा ऊर जूथप कै, अपने जुग हाथन ऊथप कै ॥२०७४

---

१ जंभाई लेते हुए। २ महोदर। ३ ग्रास। ४ पाषाण। ५ टुकड़े। ६ फण। ७ सर्प। ८ युद्ध। ९ डूबी हुई। १० प्रलयाग्नि।

ऊर ऋख्खभ चोट लगी ऊभका, महाँ-पारस के ऊर दीय मुका।
गिरगौ महाँपारस चेत गयौ, पुन जूथपहू निज वार पयौ ॥२०७५
लीय खोस गदा कर सौं लरकै, कर-साख[1] मरोर भुजा करकै।
कर रीस कौं कीस महाँ कररी, महाँपारस के हीय में मुररी ॥२०७६
लग चोट गदा लथराय लटयौ, पग रोपकै रिखवः पै पलटयौ।
जुर रिखभहू रन-खेत जई, करनै कहु लागेऊ वार कई ॥२०७७

दोहा

महाँपारस अरु रिखभ मिल, जुद्ध करयौ अतजोर।
ताक-ताक तन ताहि कौं, मारी गदा मरोर ॥२०७८
महाँपारस रन में मरयौ, ऋखभ जीत दीय राँम।
जय-जय बोले कीस जुर, मिल रन-खेत मुकाँम ॥२०७९

छंद पद्धरी

त्रसरा सुन मारयौ तातकाल, सुन मरयौ नरांतक सुरन-साल।
देवांतक स्वाँसा तजी देह, सुन मरयौ महोदर निसंदेह ॥२०८०
महाँपारसहू की सुनी मीच, बेला[2] तिह ताही समर बीच।
अतकाय पुत्र रॉवन अभीत[3], करनै कौ आयौ समर क्रीत ॥२०८१
रबि जेम प्रकासक चढ्यौ रथ्थ, ताते हय जोरत तरल तथ्थ।
दौरयौ बंदर की भीर देख, वैर कौं लैन कारन बिसेख ॥२०८२
काँनन में कुंडल सिर किरीट, दगदगत[4] नैन जनु काल-दीठ[5]।
टंकार धनुष स्वर ऊच्चताँम, निज जीह सुनायौ आप-नाम ॥२०८३
जहाँ करी गर्जना सिंह जेम, अरू संख बजायौ फेर येम।
बंदर दल देख्यौ महाँबीर, सब कुंभकरन जैसौ सरीर ॥२०८४
ऊठ-ऊठ कै देखन लगे ओर, चोटेहु बड़े पग छोर-छोर[6]।
वाँमन धर नापन करयौ वेख, द्रग जाँन्यौ ताही साँग देख ॥२०८५
करते आँनन सौं बिखम कूह[7], जूथप मिल भागे जूह-जूह।
श्रीराँमचंद्र के गये सर्न, तन सभय होय तर्नाबितर्न ॥२०८६

---

१ अंगुली। २ समय। ३ निर्भय। ४ चमकता है। ५ कालदृष्टि। ६ छोटे।
७ किलकारी।

बंदर बिबर्न आकृत बिलोक, थंभे सुमर्न कर थोक-थोक।
खल ऊठ लख्यौ तहाँ समरखेत, श्रीराँमचंद्र लछमन-सहेत ॥२०८७
पर्बताकार काया प्रचंड, दीरघ तिह दीसत भुजा-डंड।
आरूढ रथ्थ होय भरी आग, मनु ज्वल-जुत चाल्यौ सिखरमाग ॥२०८८
जिम मेघ गर्जना करत जोर, घरराट बढ्यौ दस दिसा घोर।
हमगीर[1] होय रघुबीर हेर, बोले सु बभीखन तही बेर ॥२०८९
मंजर-लोचन कौ सयल[2] माँन, बढ आवत रथ बैठौ बिमान।
जुप रहे पाँचसै हयन जोर, धुजदंड-युजा को लगौ घोर ॥२०९०
संन्नाह[3] सजत गहि गदा सूल, डील में पहर राते दकूल[4]।
सोवनी पीठ कोडंड साज, विसफार अवाजन रही बाज ॥२०९१
तुंन्नीर[5] बाँन तिछ्छन तमाँम, कर गहत सहत संग्राँम काँम।
भुज-डंड ऊभय गज सुंड भेस, बजुला[6] जराव सोव्रन बसेस ॥२०९२
बाँनक नैनन की अत विचित्र, नभ ऊदत पुनर्बसु मनु नछत्र।
बिच चंद जेम पूरन बिसेख, द्रग आँनन जाकौ परत देख ॥२०९३
दगदगत काँन कुंडल दुरूह, भिर रही ऊच्च में मुच्छ[7] भ्रूह।
भँडत किरीट ऊतमंग[8] माँहि, चमकै जराव की छटा छाँहि ॥२०९४
भयभीत दिखावत जहीं भेस, मनु भूतन में राजत महेस।
सब सुने बभीखन राँम स्वाल, कर जोर कह्यौ सुनीयै क्रपाल ॥२०९५
जासौं तुम आये करन जुद्ध, पति लंकपुरी राँवन प्रसिद्ध।
राँवनहो जैसौ महाँराज, आवत सुत जाकौ लरन आज ॥२०९६
सोई बृद्धन की बहु करत सेव, भलि बात सुनत तिह लहत भेव।
गहि लेत बिचारत सारज्ञाँन, बिसरै न कबहु ताकौ बिधाँन ॥२०९७
असवारी कुंजर हय अनूँप, चतुराई राखत सदा चूँप[9]।
अतकर्म-कुसल अरु करनकार,[10] परवीन[11] नीत में सब प्रकार ॥२०९८
तरवार-चलावन तथा तीर, बीरत[12]-विधाँन में महाबीर।
बसकरन सत्रुकौं ऊर विवेक, पथ धर्म राखसी महा प्रवेक ॥२०९९
बर लीय रिजाय ब्रह्मा बिसेस, दिसपालन जीते दनुज देस।
बिधही[13] रथ दीनौ तिही बैठ, पंछी जिम जावत समर पैठ ॥२१००

---

१ अग्रणी। २ शैल=पर्वत। ३ बख्तर। ४ दुकूल=वस्त्र। ५ तूणीर=तरकस। ६ भुजबन्ध। ७ मूंछ। ८ उत्तमाङ्ग=शिर। ९ चुप=मौन। १० कार्यकर्त्ता। ११ प्रवीण। १२ वीरता। १३ ब्रह्मा।

बस भवन पतीगढ़-लंक बाँम, निज धाँन्य मालनी जिहीं नाँम।
जिह जन्यौ ईहै जाजुल्य जोध, कर रह्यौ बँदरन सीस क्रोध ॥२१०१
द्वै खड्ग दुवाजू जिह दिखात, है लंबे दस-दस माँन[1] हात।
कबजा तिह लागे स्वर्न केर, है च्यार हात के लेहु हेर ॥२१०२
अठ तीस धनुष है आसपास, तरकस है तेते लखहु तास।
बाँहन[2] के बल सौं ईहीं बीर, सुरराज बज्र रोक्यौ सधीर ॥२१०३
कीय वृथा बरुन की पास केर, है अंतकाय चख[3] लेहु हेर।
... कौ लड़ैतौ[4] अत बसेख, व्रढ भ्रात मृत्यु कौं हीयैं द्वेख ॥२१०४
जिह आतुर करीयैं जतन जुद्ध, नहीं पूग सकै जौलौं सनिद्ध[5]।
ईत कही बभीखन राँम एह, अतकाय ऊतै कोप्यौ अछेह ॥२१०५
महाँरथी लयौ धनु हाथ माँझ, सम इंद्र धनुष नभ भौर-साँझ।
तूजीह[6] बर्न रंग पीत ताय, टंकार करयौ तिह टमटमाय ॥२१०६
दस दिस अवाज कौ बढौ दौर, घरराट चढै मनु घटा घोर।
थल-थल पैं बंदर देख थोक, सननंकत बाँनन दई सोक ॥२१०७
बन तहाँ बनोकन ब्रूँह-ब्रूँह, जुरने कौं दौरे जूह-जूह।
बढ़ दुबिद कुमद अरु मैंद बीर, सभ्र नोल सरभ मोटे सरीर ॥२१०८
सब एक-एक के होय संग, तरवर गहि मारे गिर ऊतंग।
अतकाय बाँन दै-दै अनेक, अंग पै न लागन दये येक ॥२१०९
भिर गये कीस दीने भगाय, लोह के बाँन तिछ्छन लगाय।
सब भये पराजित कीस संग, अतकाय हीयैं बाढी ऊमंग ॥२११०
ज्यूँ मृगन करत मृगराज जेर, घट कपि-दल पीड़त करे घेर।
बंदर-मारन की तजी बात, आगै बढ चाल्यौ अकसमात ॥२१११
चल गयौ निकट श्रीराँमचंद्र, सरराय तिमंगल[7] ज्यूँ समंद्र।
सनमुख ह्वै बोल्यौ ईह सवाल, सुत राँवन मैं दिगपाल-साल ॥२११२
अतकाय सुन्यौ तौ लखहु येह, देखन तुम आयौ निसंदेह।
कहा करै कपिन सौं समर काँम, ठहरे बन-वासी ठाँम-ठाँम ॥२११३
हमरै धनु जैसौ तुमही हाथ, निज काँम दिखावहु अवधनाथ।
जाचंन्या[8] मेरी ईह जरूर, सनमुख चढ आयौ महाँसूर ॥२११४

१ माप। २ भुजा। ३ चक्षु। ४ लाड़ला = प्यारा। ५ सन्निधि = निकट। ६ प्रत्यंचा। ७ बड़ा मत्स्य। ८ याचना।

अतकाय सुनत बाँनी अभंग, निज बाँध्यौ लछमन कटि निखंग[1]।
संभार धनुष सर धरचौ साँध, बोले फिर तासौं सिष्ट बाँध ॥२११५
राँम सौं कहा तुम करहु रार, हमकौं तौ पहलै देहु हार।
पीछै रघुबर कौ लखहु प्राँन, अतकाय अहो बाहू-अजाँन ॥२११६
सुन लछमन के ऐसे सवाल, तिहं ऊत्तर दीनौ तातकाल।
बालक बय[2] लछमन बाल बुद्ध, जाचंन्या मोसौं करत जुद्ध ॥२११७
पैहौ न जीत जैहौ पुलाय, जाँन कै काल सूतौ जगाय।
कुंजर में पिंजर दये काट, झेलै हिमबाँनन बाँन झाट ॥
सो सहिहै कैसैं तूं सरीर, बपु बेस तिहाँरी बाल बीर।
ईह धनुष मेल कै जाहु अंत, माता मिलनै कौं माँन-मंत ॥२११८
जो माँनत नहि मेरे जबाब, हठ पकर तोहि लरनौ हिसाब।
अतकाय बचन सुनकै अभीत, लछमन तब बोले नीत-रीत ॥२११९
बिक्रांत[3] ईती नहि करत बात, जग पौरुख ही सौं जाँन जात।
मै पौरुख देखन पाय मंड, कोडंड प्रतंछा धरचौ कंड[4] ॥२१२०
महि-तल पै कैसैं करूं मोख, राँवन के बेटा धरहु रोख।
पहिचान्यौ चाहत प्रथम पोत, तेरौ सब पौरुख भरचौ तोत[5] ॥२१२१
माया कल राखसि पिंड माँहि, जुध बेला छल-बल करत जाहि।
बिक्रांत सनातन छत्रि बीर, धारना बिचारत सुमति धीर ॥२१२२
अतकाय बिजय कें हेत आय, डहकावत जावत डर डराय।
कुसलात जाय मिलहै कुटंब, द्वै हाथ देख कै मोहि डिंभ[6] ॥२१२३
पैंने सर तेरौ भखँहि प्राँन, जैसौ हूँ तैसौ लेहु जाँन।
विद्याधर गुज्यक बुनत बात, जँहाँ हरख ऊठे रिखि-देवजात ॥२१२४
सूरमाँ जाँन लछमन सकोय, जय होहु कहत जहाँ जोय-जोय।
अतकाय लगी अत रीस अंग, निज हाथ संभारचौ सर निखंग ॥२१२५
कोडंड तानकै तज्यौ क्रूर, दिक्करन आवतौ जेम दूर।
अर्धचंद बाँन लछमन उड़ाय, गिर जेम पाव रोपे गड़ाय ॥२१२६
रन खेत खरौ लख भ्रात राँम, कीनौ सोई भीनौ देख काँम।
सर पाँच चुने लीने सँभार, तेऊ तजे लखन पे येक तार ॥२१२७

---

१ निषङ्ग = तरकस। २ अवस्था। ३ वीर। ४ वाण। ५ थोथा। ६ बालक।

जिह लछमन देख्यौ जाहि जोर, तेऊ ताक-ताक कै देय तोर।
ईक बाँन गह्यौ लछमन अचूक, फँनिराज[1] प्रलय की मनहु फूँक ॥२१२८
झोक्यौ सुचाप सम्मुह झुकाय, जोई लग्यौ भाल के बीच जाय।
भयलीन राखसी माँझ भाल, बाँबी[2] में जैसे धसै व्याल[3] ॥२१२९
अतकाय बाँन लागत ऊछंड, पिंजरा काँपनै लग्यौ पिंड।
निज दीनी लछमन बिजय नींम,[4] भेदे त्रपुरासुर जेम भींम ॥२१३०
सुसताय[5] कछू राँवन-सपूत, अवगाह लखन पौरुख अभूत।
अतकाय कह्यौ रजपूत आह, बैरी तऊ भाखत वाह-वाह ॥२१३१
अतकाय कहत ईम बढ्यौ अग्ग, महाँ क्रुद्ध छाय कै खेत मग्ग।
पेरे[6] लछमन पै बाँन-पूर, काल की झाल जैसै करूर ॥२१३२
ईक द्वै त्रय दीने पाँच ओर, जिह सात दये सर सिष्ट जोर।
पंखारन बाढ्यौ नभ प्रकास, स्वर्न पै किर्न[7] लग सावकास ॥२१३३
आवत जब लछमन लखे ऊद्ध, जम-जम करनै कौं लगे जुद्ध ॥
बाँनन सौं काटे बाँन बीच, नभ सौं सर धर पै गिरे नीच ॥२१३४
अतकाय देख लछमन अभंग, जुर सनमुख लागौ करन जंग।
चाप पै बाँन तिछ्छँन चढ़ाय, बपु लछ्छँन दीनौ कर बढ़ाय ॥२१३५
छाती में ताही करचौ छेद, भरपूर वर्म[8] तै चर्म-भेद।
मद झरत जेम कुंजर-मदंध, बहनै रत पिंजर लगी बुंद ॥२१३६
निज छाती लछमन सर निकार, निरसल्प[9] भये लोहू नितार।
अतकाय पराक्रम देख ऊद्ध, जहाँ लछमन लागे करन जुद्ध ॥२१३७
सर स्वर्न-पर्न कौ गह्यौ सोय, जोजत[10] अग्नाख्रहु करचौ जोय।
अभिमंत्रत देख्यौ बाँन आत, कीनो अतकायहू करामात ॥२१३८
सूर्जास्त्र तज्यौ रौद्रास्त्र संग, भिरकै अकास में भये भंग।
पर गये जमीं पै भये पार, ज्वाला सौं एक न एक जार ॥२१३९
अतकाय होय रन में अधीर, त्वष्टा[11] अभिमंत्रत लयौ तीर।
येखिक[12] लछमन की तज्यौ ओर, जाही कौं सिष्टी बाँध जोर ॥२१४०
येंद्रास्त्र लखन छोरचौ अभंग, सो ह्वैकै निस्फल गिरचौ संग।
येखिक पुन निसफल गयौ ईछ्छ,[13] तव राँवन-सुत लीय बाँन तिछ्छ॥२१४१

१ सर्पराज। २ विल। ३ सर्प। ४ नींव = बुनियाद। ५ स्वस्थ होकर। ६ प्रेरे। ७ किरण। ८ कवच, बख्तर। ९ निश्शल्य = साल रहित। १० योजित। ११ ब्रह्मा। १२ लोहमय। १३ देखकर।

जमराज मंत्र के भरचौ जाप, त्यागौ लछमन कौं दैन ताप।
जहाँ बायवास्त्र कौं लखन ज़ोर, तीर कौं तीर सौं दयौ तोर ॥२१४२
साहस कर लछमन एक संग, अतकाय लगाये बाँन अंग।
अतकाय कवच पहरत अभेद, भालन के साल न सके भेद ॥२१४३
अतकाय लखी माया अनंत[1], चित लछमन बाढी महाँ चित।
दरसाव दयौ तहाँ पवन देव, भाख्यौ लछमन कौं गूढ़ भेव ॥२१४४
अतकाय वीर पौरुख ऊदंच, बरदान दयौ याकौं बिरंच[2]।
अंग में कवच पहरचौ अभेद, खल कौं नहिं कल की होय खेद ॥२१४५
ऊपदेस पवन कौ सुन्यौ येह, निर्भीत लखन हुय निसंदेह।
जाँन के मरन अतकाय जोग, पुन ब्रह्म अस्त्र कीनौं प्रीयोग ॥२१४६
कट गयौ सीस संजुत किरीट, मुनि सुरन असुर मिल लख्यौ मीट।
मर गयौ सुतन-राँवन मदंध, सिर लछमन बाँनन छूट संध ॥२१४७
धर गिरचौ पर्बताकार धर्न[3], निछ्छेद होय कंधर[4] निगर्न।
भागी निश्चरनन बची भीर, सब खंड-वंड ह्वै कै सरीर ॥२१४८

दोहा

जीत भई लछमन जहाँ, कीस करचौ जयकार।
परी खबर लंकापुरी, कीनौ हाहाकार ॥२१४९
राँवन हुयौ ऊदास रुख, भिरे मरे सुत-भ्रात।
मेघनाद समभाय मन, ताप मिटायौ तात ॥२१५०

छंद पद्धरी

मरनौ सुन भ्रातन मेघनाद, बाढ्यौ ऊर अंतर अत बिखाद।
जहाँ अरज करी ईह इंद्रजीत, पितु बचन मोर करीयै प्रतीत ॥२१५१
जीत्यौ सुरिंद्र सुर करे जेर, फहराय धुजा रन जात फेर।
बिद्वेख निकारहु कका बोर, संघार राँम लछमन सधीर ॥२१५२
सेना बंदर कौ कर संघार, जब आय करहुं तुमसौं जुहार।
ईह कहिकं चाल्यौ कर ऊमंग, सेना बिडराँवनि लेय संग ॥२१५३

---

१ लक्ष्मण। २ ब्रह्मा। ३ धरणी=भूमि। ४ ग्रीवा।

राखसि मायावी जिते रूप, कीने खर-सूकर केऊ कुरूप।
परघातन[1] हाथन लेय प्रास[2], कोडंड बाँन लै सावकास ॥२१५४
लै साँग सबेला[3] डाँग[4] लीन, परचंड डंड अय[5] लये पीन।
सूरज प्रकास रथ कौं सभाय, असवार भयौ तिह बीच आय २१५५
गदहा तिह जोते दिग्घ[6] गात, बहनैवारे जे वेग-बात।
चढ़ चाले राखस क्रुद्ध छाय, गज बाज ऊपरैं गहगहाय ॥२१५६
केऊ गदहा खच्चर चढे कोक[7], रीछन सिंघन की पीठ रोक।
बैठे सो पीठ केतक बिलार, सर्पन जरखन पैं हुय सवार ॥२१५७
अरु सूकर-कूकर कौं अरोह, सल्लकी स्यार रचकैं सँदोह[8]।
कीनी तिन बाँनी भयंकार, पुन गूँज ऊठे तिनसौं पहार ॥२१५८
डगमगत होय गिर डाँव-डोल, धमधमे दुंदभी[9] और ढोल।
धसमसत धरा पाताल धाँम, तल-बितल भये चल-बिचल ताँम ॥२१५९
ऊड़ चल्यौ खेह डंम्मर अकास, पर मंद चहूँधाँ रवि प्रकास।
रथ मेघनाद लख द्वैप[10] रूप, भय बिजय भरोसौ प्रजा-भूप ॥२१६०
रन-खेत बीच रथ दयौ रोक, ठहराई सेना थोक-थोक।
ऐसौ प्रबंध कीय आसपास, पहुचै न जहाँ रवि कौ प्रकास ॥२१६१
जहाँ देख्यौ जैसौ परचौ जोग, पुन करचौ होम आहुत प्रीयोग।
अभिमंत्रत कीने सस्त्र-अस्त्र, बपु बगतर भूखन जिते वस्त्र ॥ २१६२
ब्रंह्मास्त्र लेय कै महाँबीर, गर्जना करी घन ज्यूँ गहीर।
ह्वै परगट सैना कह्यौ हाल, बपु सबहि रीत कीनौ बहाल ॥२१६३
आकास ऊपरैं जात ऊद्ध, जय राँम लखन सौं लैन जुद्ध।
बंदर की सैना तुम बिड़ार, लहि बिजय चलहि सब लार-लार ॥२१६४
येती कहि पहुच्यौ अंतरीख, बाँमन जनु दीनी पाव बीख।
जहाँ राखस सेना बढी जोय, रिच्छन बंदर सौं रार-रोप ॥२१६५
ईत मेघनाद ऊपर अकास, पौरुख बाँहन कौ कीय प्रकास।
नाली कवाँन लै मेघनाद, विरचन कौं लागौ कीस बाद ॥२१६६
सभ सैन राखसीहू समूह, जुरनैं कौं लागी जूह-जूह।
जहाँ वाढचौ चहूँधा सराजाल, कोप्यौ कऋूर मनु प्रलय-काल ॥२१६७

---

१ बरछी। २ भाला। ३ गुर्ज। ४ लाठी। ५ लोह। ६ दीर्घ। ७ भेड़िये। ८ समूह। ९ नगाड़े। १० सिंह-चीते की खाल से मढ़ा हुआ।

सब मरनै लाग्यौ कीस साथ, हेरत पै नाहिन चलत हाथ।
भय व्याकुल ह्वै गये कीस भाल, तरफरत गिरत खावत तँवाँल ॥२१६८
जूथप मिल कीनौ कछू जोर, अवलोक तहाँ घननाद ओर।
जहाँ मेघनादहू देख जास, सर स्वर्न-पर्न लहि सावकास ॥२१६९
जुथ्थप-जुथ्थप कौं जाँन-जाँन, तीखे सर मोर ताँन-ताँन।
सर दये गंदमाँदन सरीर, अठ्ठारह वारह ह्वै अधीर ॥२१७०
पुन मैंद सात गज दये पाँच, खल जाँबवाँन दस दये खाँच।
नील कै तीस दीने निहार, तिछ्छन भालन के येक तार ॥२१७१
सुग्रींव रिखभ अंगद सँपेख, दुबिद कौं खरौ लीय तहाँ देख।
ईन च्यारहु पै सर दीय अनंत, पर स्वर्नभरे जे पंत पंत ॥२१७२
निर्जीव भये जैसे निहार, चल बढचौ अगारी दुराचार।
कपि-मुखी[1] जाँन कै और केक, अंत्रेक दये सर येक-येक ॥२१७३
घायल कीय सेना कीस घूँम, भिर परी भरी रन-खेत भूँम।
रनबीच जहाँ घननाद रीस, केशू बंसंत कीय काय कीस ॥२१७४
बसुधा[2] पै ह्वै कै खंड-बंड, झर परे बनोकन झुंड-झुंड।
बरख्यौ जल-धारा जेम बाँन, टंकार चाप गुन[3] काँन ताँन ॥२१७५
घननाद नाँम घन ज्यूँ घुमंड, थल पै कपि-दल भर थंड-थंड[4]।
ऊपर कौं झाँखन करी आँख, पत्री[5] भर दीने स्वर्नपाँख ॥२१७६
अरु कीनी काऊ भुजा ऊँच, लीनी कंधर तैं ताहि लूँच[6]।
गिर गये जिते हुय मृत्यु गात, जिह प्राँन ऊबारे[7] जीव-जात ॥२१७७
कारे रंगवारे सरल काय, गिर परे रिछ्छ धर गुरगुराय।
दल मेघनाद को पाय वार, सैन कौं करचौ सेना सँघार ॥२१७८
बंदरी सैन संजुत बिखाद, निज नैनन देखी मेघनाद।
थरहरत गर्जना करी घोर थरहरत रिछ्छ कपि ठौर-ठौर ॥२१७९
जूथप केऊ ठाढे लखे जाग, भयभीत भये नहि सके भाग।
सुग्रींव और हनूँमाँन संग, अंगद सुखेन दधमुख अभंग ॥२१८०
केसरी गंधमादन कुमंद, मिल जाँमवाँन नीलहु मयंद।
गज और गवय जूथप गवाक्ष, सूर्जानन नल अरु पावकाक्ष ॥२१८१

१ मुख्य। २ पृथ्वी। ३ प्रत्यंचा, डोरी। ४ समूह। ५ बाण। ६ नोंच ली, काट दी। ७ बचाये।

देखे हरिलोमा विबुद्रष्ट, वपु जोतमुखी बंदर बलिष्ट।
जिन देख कुप्यौ घननाद क्रुद्ध, अभिमंत्रत आयुध तजे रुद्ध ॥२१८२
मूसल परघा तन दई मार, सबला साँग डाँगन सँभार।
कर घायल ईन कौं रन करूर, पुन घिल्यौ राँम पै बाँन-पूर ॥२१८३
मार हरचौ बाँन जिम आग झार, कीनौ लछमन पै अंधकार।
छिपवत मुख लछमन राँमचन्द्र, गहरी बरखा में ज्युँ गिरंद्र ॥२१८४
बोले लछमन सौं राँम बात, कीय ब्रंह्म-अस्त्र की करामात।
उतपत्त करचौ मनु-वंस आद, ब्रंह्मा ही कारन निर्बिखाद[1] ॥२१८५
मनु-वंसी तुम हम उभय मित्त, चितना करहु मुरजाद[2] चित्त।
मूर्छित सहहु पीड़ा-विकार, लग अस्त्र-सस्त्र गिर जाहि लार ॥२१८६
खल मृतक जाँन कै तजहि खेत, चल जैहै तबही ह्वै सचेत।
ईह लखन सुनी रघुबर-उदंत,[3] मन मान्यौ सोई सिद्ध संत ॥२१८७
जेते सर दीने ईंद्रजीत, उर लागन दीने ह्वै अभीत।
गिर परे बीच रन-खेत गात, धारन सौं लोहू धरधरात ॥२१८८
जुग भ्रात देख ईम ईंद्रजीत, पहिचाँन लये ग्रासत प्रमीत[4]।
घन ज्यूँ पुन कीनौ घरघराट, बाहनी[5] लेय लीय लंक बाट[6] ॥२१८९
उनसठ करोड़ बंदर संघार, जाय कै करी दससिर जुहार।
पाछलै[7] बीह खट उंड-प्रंत, येती सैना को करचौ अंत ॥२१९०
फिर राँम लखन की कही बात, कीनी गत जैसी करामात।
सुन कै चरित्र घननाद सोय, हीय रावन कौं जय-मान[8] होय ॥२१९१
ईत राँमचन्द्र गत भई येह, सो देख वभीखन निसंदेह।
बोले बुलाय हनूँमान वीर पुन ब्रह्म-अस्त्र तुम सही पीर ॥२१९२
जिन राँम लखन कौं लेहु आँन, पन ब्रह्म-अस्त्र पारचौ प्रमाँन[9]।
[illegible] हो सावचेत [illegible] कौं [illegible] वीर-खेत ॥२१९३
[illegible] नाहिन [illegible], [illegible] तौ संभारहु खेत आप।
[illegible] है यहाँ सैन, ताते तुम हम ह्वै चलहु लैन ॥२१९४
[illegible] बंदर [illegible], [illegible] कर उपाय।
[illegible] वभीखन आँन [illegible], [illegible][10] सँजोई अरु मसाल ॥२१९५

१ [illegible]। २ [illegible]। ३ वार्ता। ४ मृत्यु। ५ सेना। ६ मार्ग।
७ पीछे। ८ [illegible]। ९ [illegible]। १० [illegible]।

सुग्रींव आद देखे सकोय, जूथप-जूथप कौ जोय-जोय।
सब गिर परे मुरदा समाँन, पग नाँहि हिलावत पूँछ पाँन[1] ॥२१९६
लिध तनय बिचारे जाँमवाँन, है जीवत तौ कछु नाँहि हाँन।
बय-बृद्ध तथाँ धीय-बृद्ध बीर, संभार करै ताहो सरीर ॥२१९७
मिल भूप बभीखन हनूँमाँन, जोय कै खुसी भये जाँमवाँन।
बलराय बभीखन वारवार, टंटोर पाँन पग टार-टार ॥२१९८
बोली पहिचाँनी जाँमवाँन, सभुझ कै बभीखन संनिधान।
कलरावत बोले कर-करार, सुन भूप बभीखन समाँचार ॥२१९९
ऊघरत नहि मेरी नैक आँख, झपनी सौं नाँहिन सकूँ झाँक।
हनुँमाँन कुसल तौ कहहु हाल, वपु होय खुसी मेरौ बहाल[2] ॥२२००
जब कही बभीखन जाँमवाँन, श्रीरामचन्द्र मैत्री समाँन।
सुग्रींव लखन अंगद सनेह, आये न याद कहा बात येह ॥२२०१
संदेह मिटावहु समुझ सोय, हीय तैं जब विस्मय बिगत[3] होय।
अंजनी-लडैतौ पवन-अंस, परकास करहि पौरुख प्रसंस ॥२२०२
जब पीरा जावहि जूथ-जूथ, वपु ह्वै बलिष्ट ऊठहि बरूथ[4]।
ईह हेत करयौ हनुँमाँन याद, बच गयौ कहौ छूटै बिखाद ॥२२०३
सुन जाँमवाँन ऐसै सवाल, कीय हात ईसारौ तातकाल।
मारुती गहे पग जाँमवाँन, हाजर हूँ तेरै हनूँमाँन ॥२२०४
करहूँ सिवकाई[5] कहहु काँम, राख के भरोसौ सीयाराँम।
जब हनूँमाँन के सुन जबाब, सुध जाँमवाँन व्यापी सताव ॥२२०५
ज्यूँ गजब गिराई इंद्रजीत, पहिचाँनत मेरौ हीय प्रतीत।
तुम जतन करहु हम कहत तात, वेरा[6] ईह बिसवा-बीस बात ॥२२०६
जावहु ऊत्तर में जरी[7] जोय, लावहु हिम-गिर तै बचै लोय।
सब ऊल्लीकाँनी रिखभ श्रंग अष्टापद आगै गिर ऊतंग ॥२२०७
ईन दोऊ पर्बत के आद-अंत, भर रही ओसदी[8] भंत-भंत[9]।
मृतसंजीवनि है जरी मित, तेऊ मृतक जिवावत है तुरंत ॥२२०८
बिस्सल्या करनी सुनह बात, गहि सूंघत निकसत साल गात।
सोवर्नकर्नि है जरी सोय, धर घाव-बिथा[10] कौं देत धोय ॥२२०९

१ पाणि = हाथ। २ स्वस्थ। ३ दूर। ४ सैना। ५ सेवा। ६ वेला = समय। ७ जड़ी बूँटी। ८ औषधि। ९ भाँति-भाँति। १० व्यथा।

संधानी व्रत बपु करत संध, सूंघ तै गंध ही के समंध।
सो पवन-तनय लावहु सँभार, चल चपल बेग ये जरी च्यार ॥२२१०
सब जीव ऊठै बंदर सरीर, बल बाँह तूँम्ह हनुमाँन बीर।
बायु के तनय तुम बेग-बाय,[1] ईहीं परी बखत करीयै ऊपाय ॥२२११
सीता रघुवर को मिटै सोच, पर जाय राखसी जात पोच[2]।
सुग्रींव जाँन अवसाँन सिद्ध, पूजहै बाँह पौरुख प्रसिद्ध ॥२२१२
अरु इंद्रजीत जय घटहि आस, अरू राँवन ह्वै है ऊर उदास।
ईह लंका जाँनहु बिजय आज, राजाँन बभीखन भयौ राज ॥२२१३
कारन है येते सुनहु काँन, हीय सोच बिचारहु हनूँमाँन।
सुन जाँमवाँन की बात आँन, मन-बेग चल्यौ ऊड़ हनूँमाँन ।'२२१४
सुरपथ[3] की वाढ्यौ बीच सर्न, तन तेज चढ्यौ मनु किर्न[4] तर्न[5]।
मनु गरुड़ ऊड्यौ आकास माँहि, छित बद्दर की जनु चली छाँहि ॥२२१५
किधु चक्र सुदर्सन बिस्नु कूर, प्रेर्यौ दैतन पै हाथ पूर।
ऊतर्यौ ईस हिम-गिर सीस आय, पहिचाँन न ओखद क्रमे पाय ॥२२१६
च्यार सै कोस में फिर्यौ चक्र, सोधनै जरी कारन सबक्र।
पहिचाँन जरी की परी नाँहि, त्रन-बेली देखी दिव्य त्याँहि ॥२२१७
ऐच कै श्रंग लीनौ ऊचाय, कूँदे नभ मारग दिघ्घ[6] काय।
सोभायमाँन दीसत सरीर, बिच हाथ प्रकासत सैल बीर ॥२२१८
घट दाँनव-जाती करन घात, हरि चले मनहु गहि चक्र हात।
ऊतरे लंक निरसंक आय, बीरासन बिच में बेग-बाय ॥२२१९
गिर पवन लगी सोगंध गात, मिल बंदर ऊठे अकसमात।
सुग्रींव राँम लछमन सहेत, हीय हनूँमाँन सौं बढ्यौ हेत ॥२२२०
सब बीर करन लागे सराह, वाह रे वाह हनूँमाँन वाह।
हनूँमाँन सवन सौं जोर हाथ, नम कै पग लागे अवधनाथ ॥२२२१
आज्ञा लै ताही गिर अमेट, थप्पौ हेमालय जाय थेट।
संका ईक यामें सुनहु सोय, वयू राखस नाही जीयत कोय ॥२२२२
पहिलै सौं राँवन ईह प्रबंध, मर जाय जँहीं बोरै समंद।
रन-खेत न राखस रहन देत, खित[7] परे ऊठावत बीर-खेत ॥२२२३

१ बायु के समान वेग वाले। २ नीची। ३ आकाश। ४ किरण। ५ तरणि=सुर्य। ६ दीर्घ। ७ क्षिति=भूमि।

सऊ डोरीवारे रहत संग, पातकी[1] न जीवै ईह प्रसंग।
संका को ऐसौ समाधान, बलमीक-मुनी भाख्यौ बिधाँन ॥२२२४

दोहा

जाँमवाँन को जाँनपन,[2] माँन करचौ हनूँमान।
बृद्धन कों माँनत बड़े, याही कारन आँन ॥२२२५
सब ही सैन कर कै समिल, करचौ हुकँम कपिराज।
सुनौ सुजन हनुँमाँन सब, अरथ-जुक्त कथ आज ॥२२२६
राँवन-भ्राता सुत मरे, दीयै न अंजुली-दाँन।
ऐसौ करहु प्रबंध अब, जाँनै सकल जहाँन ॥२२२७
मोटे छोटे कीस मिल, जोय मसाल जगाय।
रोकहु फाटक राज कें, सहर पना-समुदाय ॥२२२८

छंद मौतीदाँम

भई अधरात चले कपि भाल, मिलाय कै लाय जलाय मसाल।
रहे केऊ दाटक फाटक रोक, झलामिल कीनेऊ गौख[3] झरोक ॥२२२९
बढ़े बहु राजन-मंदर बाट, कपाटन आटन छाजन काट।
लगाय कै लाय बलाय निकेत,[4] सँभारत जारत बस्त्र-समेत ॥२२३०
सँजोवत सिंदल तेल सुगंध, धुकावत जावत धूपहू धुंध।
कढै किसतूरीय और कपूर, जरावत केसर तेज जहूर ॥२२३१
पटंबर[5] अंबर लेय जलाय, गधंबर कंबर[6] कोन गिनाय।
अनूँपम स्वाद अन्नोअन[7] अंन्न, रखौरीय होरीय कीन रतंन्न ॥२२३२
सुवनँ के चाँदीय के अय[8]-साज, करचौ बहु सिंदन[9] केर अकाज।
बचे हनूँमाँन की लाय की बेर, ढँढोर कै कीन बराबर ढेर ॥२२३३
जिहीं लख रोवत राखस-जात, अचाँनक होय गयौ ऊतपात।
बिना कोऊ साटीय[10] चोलीय बाँम, कढी केऊ नंग-धरंग सकाँम ॥२२३४

---

१ पापी, दानव। २ ज्ञान। ३ गवाक्ष। ४ स्थान। ५ रेशमी वस्त्र। ६ कंबल। ७ अन्यान्य=अनेक प्रकार। ८ लोहा। ९ स्यन्दन=रथ। १० साड़ियाँ।

चले केऊ बालक पालक छोर, बकै पितु मात के नाँम बहोर ।
ऊठे वहु राखस हीय ऊछंड, तपे तल देख दुखंड अखंड ॥२२३५
अजा केऊ खच्चर छोरत ऊँठ, ज्युँही हय हाथीय बँधन जूँठ ।
झकोरन-झारन सौं झुलसाय, जरैं केऊ बीच अँगारन जाय ॥२२३६
कुलाहल लंकपुरी सुन कांन, उठ्यौ दसकंध खता अवसाँन ।
लखी चख लंकपुरी दव[1] लाग, बसंत में जेम पलास कौ बाग ॥२२३७
निहाँर कै कौतुक श्रीरघुनाँथ, हजारन बाँनन छंडेऊ हाथ ।
गिरे ऊलका जिम जाय कै गोम, भरी जन लागीय पत्तन-भोम[2] ॥२२३८
जहाँ केऊ राखस बंदर-जात, विड़ारन लागेऊ राखन बात ।
सुकंठहु आपनी सेन सभाय, खुलासय सासन दीन खिजाय ॥२२३९
पराजय जो कोऊ बंदर पाय, ईहाँ मुख मोहि दिखावहि आय ।
दिखावहु प्राँन कौ ताहीय दंड, वचै नहि जाय चढै ब्रहमंड ॥२२४०
सँभारहु मोरचा-मोरचा सोय, कढै नही राखस बाहर कोय ।
सुग्रींव कौ सासन सीस चढाय, बढे सब बंदर पाव बढाय ॥२२४१
घिराय कै पत्तन बाटन घाट, करोरन तोरन और कपाट ।
ठिले दल भीतर-बाहिर ठौर, प्रतोलीय[3] रोक चहूँ दिस पौर ॥२२४२
तप्यौ तन रांवन ताप तरुंन,[4] कह्यौ तव अंगज[5] कुंभकरंन ।
विचारहु कुंभ निकुंभ वचाव, ईहै ऊतपात कौ होय अभाव ॥२२४३
निदेसन[6] पाय कै कुंभ निकुंभ, सवै भट लै चले संग ससुंभ[7] ।
जुपाखरु श्रोनित-अक्ष प्रजंध, सझ्यौ फिर कंपन पौरख सिंध ॥२२४४
गरज्जन लागेऊ नाद गहोर विधूनन[8] बंदर होय वहीर ।
ऊँबारन देख विसेखन आच, तहाँ वनचारीय सिंधन ताच ॥२२४५
पराक्रम एक न येकन पेल, झँमाझम मूसल भालन झेल ।
चली अय-गोलन थंगन चोट, कँगूरन छाजन ऊपर कोट ॥२२४६
जहाँ तहाँ होवन लागेऊ जुद्ध, अगारन द्वार पगारन ऊद्ध[9] ।
संमाँकम सूलन हूल चंवोल, वँमाधम मुक्कन दज्जीय धोल ॥२२४७
निसाँचर जुट्टत कोस निघुद्ध, करैं नख मारीय दाँतन क्रुद्ध ।
हुरांलीय वेग लरौ हमगीर, वकारेऊ कंपन अंगद वीर ॥२२४८

---

१ दावाग्नि वन वह्नि । २ नगर-भूमि । ३ प्रवेशद्वार, गलियां । ४ तरुण = उग्र । ५ पुत्र । ६ आज्ञा । ७ समान मत रखने वाले । ८ विध्वंस के लिये । ९ ऊर्द्ध = ऊपर ।

गदा गहि कंपन अंगद गात, दई सिल सारमई[1] अवदात[2]।
लयौ कछू मोह ऊठ्यौ ललकार, पटक्केऊ ऊपर येक पहार ॥२२४६
मर्यौ खल कंपन लागत मथ्थ, सभै जुध अंगद सौं समरथ्थ।
जहां लख अंगद कौं रन जीत, चढ्यौ रन श्रोनत-अक्ष सचीत ॥२२५०
बिडारेऊ अंगद कै तन बाँन, भयौ तन घायल रूप भयाँन।
अर्यौ रन ताहुसौं संम्मुह आय, बड़े तरू पथ्थर कौं बरसाय ॥२२५१
कटे सर चाप निखंग करूर, सँभारीय खेटकहू[3] खग[4] सूर।
मिल्यौ सोई अंगद सौं रन-मग्ग, उठाय कै ढाल कौं खग्ग ऊदग्ग[5] ॥२२५२
गह्यौ तिह अंगद कूद गुसैल,[6] बिलग्गीय मानहुँ व्याल बिसैल।
लयौ खग खोस[7] दयौ ललकार, ढर्यौ तिह कंध जनेऊ व ढार ॥२२५३
गिर्यौ बिव टूक जुदौ हुय गात, ऊभै चख फेरत ही अरराात।
ईहाँ खल मार कै अंगद और, मिले खल जाही के फारेऊ मौर ॥२२५४
जुपाखहू आय प्रजंघ जुरंत, दई फिर मार दुहूँन दुरंत[8]।
ऊभै भट राखस अंगद येक, दुबिंद रू मैंद मिले ईत देख ॥२२५५
जहाँ परजंघ बढ्यौ कर जोर, अंगजित आयेऊ अंगद ओर।
कर्यौ तिह धारन खग्ग करग्ग, प्रहारन कारन थभेऊ पग्ग ॥२२५६
महाँबल अंगद मुक्कन मार, तँही धर डार दई तरवार।
दई खल मुक्कीय अंगद दाट, लगी सोई बीच में जाय ललाट ॥२२५७
परी तरवार कौं अंगद पेख, बकारत लिन्नीय दिन्न[9] बिसेख।
तुट्यौ सिर तुंब्बीय[10] ज्यूँ तरकाय,[11] गिर्यौ तन रुंड धरा गुरकाय ॥२२५८
जुपाखहू देख मर्यौ परजंघ, सँभारेऊ पाँनप केसरि सिंघ।
लयौ तिह म्यापन[12] खग्ग निकार, लई तिह अंगद को फिर लार ॥२२५६
पर्यौ बिच दौर महाँभुज पींन दुबिंदय मुक्कीय की ऊर दीन।
महाँबल आय मयंद मिलाय, पट्टक्केऊ भूँम झट्टक्केऊ पाय ॥२२६०
घसीटत मारेऊ धूर में धूर, बह्यौ तिह स्वास ऊसास बधूर।
सबै फिर चालीय राखसि-सैन, निहार कै कुंभ निकुंभ कौं नैन ॥२२६१
बढ्यौ रन कुंभ महाँ बरबीर, तहाँ दोय खैंच दुबिंद कै तीर।
गिर्यौ कपि लागत हीं गरराय, थँभे नह पांव हियौ थरराय ॥२२६२

---

१ लोहमय। २ उज्वल, तीक्षरण। ३ ढाल। ४ खड्ग। ५ उदग्र, तीक्ष्ण। ६ क्रोधी। ७ छीन कर। ८ कठोर। ९ दी। १० तूंबा। ११ तड़क कर, टूट कर। १२ म्यांन।

दुबिद कौं देख मयंदहु दौर, ऊपार कै कुंभ दई सिल ग्रौर।
दये सर पाँच सिला तिह देख, बिखेर कै कीनेऊ टूँक बिसेख ॥२२६३
हने फिर कुंभ मयंद हकार, सबै सर दिग्धमई[1] सिलसार[2]।
मयंद कै लागेऊ थाँन-मरंम, छिके लेऊ बीच बरंम[3] चरंम[4] ॥२२६४
दुबिद कौं घायल किन्नीय देह, ईतै फिर देखेऊ मैंद अरेह।
मुरछ्छत मैंद करयौ सर मार, बढयौ खल पाँनप[5] कौ बिस्तार ॥२२६५
लखी गत मैंद दुबिद की लार, हुई दुई भ्रातन की रन हार।
ऊभै भट अंगद गाँमाय येह सँभारेऊ अंगद पाय सनेह ॥२२६६
ऊबारन कारन अंग ऊठाय, बढे खल सम्मुह चाल बढाय।
जहाँ लख कुंभ महाँ बरजोर, दये सर अंगद कै तन दौर ॥२२६७
सिला तरू मारेऊ अंगद अंग, भयौ नहु घायल कुंभ अभंग।
बिलोकेऊ अंगद क्रूर बयंड, चरख्खीय बाँन बरख्खत चंड ॥२२६८
बिड़ारेऊ भाल में भ्रूहन[6] बीच, खुच्यौ[7] तऊ ताहि निकारेऊ खींच।
छुट्यौ चख ऊपर कूरच बिच, निचोवन लाग निमेखन[8] निच ॥२२६९
परे खग[9] जेम कटी मनु पंख, ऊघार न सक्केऊ अंगद अंख।
ईतै लख अंगद की गत येह, कथा कपि राँम सौं जाय कएह ॥२२७०
जबै रघुवीर कही जँमुवाँन, अहो तुम जावहु ह्वै अगवाँन।
सँभारहु अंगद होय सहाय, जहाँ खल कुंभ बिड़ारहु जाय ॥२२७१
सुखेनहु आदक जावहु संग, जुह रहु वेग दरस्सीय जंग।
सबै बिध जूथप बुद्धि सयाँन,[10] परहहु आतुर जुद्ध प्रयाँन ॥२२७२
रजा रघुबीर दई ईम रार, हले ऋहु जूथप सैन हकार।
चले कपि कुंभ पै बीर चलाक, हरोलन बोलन की सुन हाक ॥२२७३
तज्यौ रन अंगद सौं ततकाल, बढ्यौ कपि सैन दिसा बिकराल।
तजे सर कुंभ घने रन तिष्ट, सँभारत मारत धारत सिष्ट ॥२२७४
रूके ऋहु जूथपती बिच रार, बढे नहीं अग्र समग्र बिचार।
थुभै जल बाँधत पालीय थूल, ढबे ईम बंदर हूलन-हूल ॥२२७५
समंदर बार बढै कर सोर, छिलै मुरजाद कौं नाँहिन छोर।
हटी ईम देखीय सैन हलंत, बढ्यौ कपि-राज महाँ बलबंत ॥२२७६

---

१ बुझे हुए। २ लोहा। ३ वर्म=बख्तर। ४ चर्म=चमड़ी। ५ धनुष।
६ भौंहें। ७ चुभ गया। ८ पलक। ९ पक्षी। १० चतुर।

मिल्यौ ग्रहुँ जूथप सौं कर मेल, बराबर कारन ग्रंगद बेल।
बढे ईन जूथप सौं बतराय, किनारौय कुंभहु सौं कतराय ॥२२७७
जितै चल अंगद की ढिग जाय, करी तिह पीठ पछारीय काय।
चले फिर कुंभही पै रन-चाह, पराक्रम देखन बेपरवाह ॥२२७८
मलप्पेऊ ग्राय मनौ मृघराज, गिरी पर देख खरौ[1] गजराज।
दए ग्रसकर्ण तरोवर दोट, झमेल कै झौरन-मौरन-झाट ॥२२७९
रह्यौ रुप राखस कुंभ रिसाय, सुग्रींव कौ देखत ही सुसताय।
लये सर चाप कोयै चख लाल, घुटी रिस बूँहन[2] ऊपर घाल ॥२२८०
प्रकंडन बृछ्छन किन्नेऊ पात, सतघ्नीय[3] जेम गिरे सरसात।
दए सर बंदर-राज की देह, सुग्रीव की दीख परे जिम सेह ॥२२८१
नहीं घबराएऊ कीस-नरेस, भयानक कुंभ कौ देखत भेस।
गए सनिकर्ष जहाँ कर गौंन, पराक्रम ग्राप दिखावन पान[4] ॥२२८२
मरोर कै चाप लयौ गहि मुष्ट, करे त्रय टूक निवारेऊ कष्ट।
कपीस्वर दीरघ पिंजर कंध, दिखावत कुंजर जेम मदंध ॥२२८३
कहे फिर बोल ग्रहो सुन कुंभ, निरंकुस तेरौई भ्रात निकुंभ।
सिरोमन जेष्ट तुहीं सिरताज, सुन्यौ सोई देखेऊ बीर-समाज ॥२२८४
पिता तुँहि कुंभकरंन प्रचंड, पराक्रम जैसोई है तुम पिंड[5]।
दिखावहु बाँहन कौ बल दिष्ट, ऊपाय कै वार बराबर ईष्ट[6] ॥२२८५
जिते रन ग्रंगद जाँम्हवाँन[7], सुखैनहु बेग दरसि समाँन।
करयौ श्रम जुद्ध घनो करतूत, बहे सुसताय भए मजबूत ॥२२८६
हमारेई देखत ही ग्रब हात, खरे हम देख बखाँनत ख्यात।
सुनै कपिराज के बिग-सवाल,[8] जगी ऊर कुंभ हुतासन-ज्वाल ॥२२८७
मिल्यौ कपिराज सौं मार मलंग, करै जिम पंछीय वार कुलंग।
झपेटन-फेटन दै कर भेल, खिलावन लागेऊ मल्लन खेल ॥२२८८
समेटत स्वास-ऊसासन संग, ग्ररयौ कपिराज सौं कुंभ-ग्रभंग।
ग्रसाग्रस दोवन[9] मंड गरूर, घसांमस होवत पाहन-धूर ॥२२८९
ग्रटापट छोर ऊभै भट ग्रोट, चटापट माँरन लागेऊ चोट।
भयौ बहु-बेर नियुद्ध[10] भयाँन, पराक्रम पाँनन सौं पहिचाँन ॥२२९०

१ खड़ा हुग्रा। २ भौंहों। ३ तोपों, बंदूकों। ४ हाथ। ५ शरीर। ६ इच्छित। ७ जामवंत। ८ व्यंग-वचन। ९ दोनों। १० भुजा-युद्ध।

बढ्यौ कपिराज महाँ बरबीर, समेट कै कुंभ अमेट[1] सरीर।
पटूकेऊ सागर में गहि पाव, दिखाय कै एह ऊजागर दाव ॥२२६१
चल्यौ फिर नीर निचोवत चैल[2], गही कपिराजहु की तिह गैल।
दई ईक मुक्कीय की होय दोट, बखःत्तर फाट गयौ अध बोट ॥२२६२
करक्केऊ हाड़ कि मारीय काय, भरक्केऊ रीस हीयौ महराय।
ऊठे फिर सोचत पै घृत आग, बंधे कर मुक्कीय ज्यूं बजराग[3] ॥२२६३
भुजंतर मारीय बाँह अमाय, ऊगल्लत श्रोन भरयौ अरराय।
गिरयौ लहि मीच धरातल गात, मनौ गृह मंगल गोदीय-माँत ॥२२६४
छुटयौ रन प्राँन करयौ तन छेह, डुलावत बाँहन हालत देह।
निहार कै ताहि को भ्रात निकुंभ, दिखावन आयेऊ पौरुख दंभ ॥२२६५
खरे कपिराज लखे रनखेत, सबै कपि जूथप बीर-सहेत।
निहार कै आएऊ दौर नजीक[4], अटी पर-घातनहू अंतरीक ॥२२६६
जराव के काँम जरी बिच जाल, मढी पंच-अंगुल कंचनमाल।
लगे केऊ बंधन-संधन लार, जगामग दीसत जोत जुँहार ॥२२६७
कपाट के ठाट पंचानन[5] कंध, बँधे बिहु-बाँहन में भुजबंध।
किरीटहू मस्तक कुंडल काँन, लगी बहु भूखन[6] की लहराँन ॥२२६८
करी अय-कंकट सोवृन-काँम, लुकाएऊ तामह गात ललाँम।
लुहाँगीय ज्यूं जम-डंड लखात, छटा मनु बद्दर में चमकात ॥२२६६
जगै बिन धूँम हुतासन-ज्वाल, कुमार की सक्तिहु तै बिकराल।
घुमाईय ऊरध ताकह घेर, फिरे कपि भालहु आँखन फेर ॥२३००
डरे रिखी गंधृव दाँनव देव, भिरयौ कपिराज पै बैर सभेव।
ईतै हनुँमाँन बिचालीय आय, पराक्रम देखन मंडेऊ पाय ॥२३०१
महाँबल देख खरे हनूँमाँन, दई परघातन मार निदाँन।
टुटी लग छातीय ऊपर टल्ल, अट्यौ हनूँमाँनहू क्रोध उभल्ल ॥२३०२
भ्रमाय कै हाथ की साखन[7] भींच, बिड़ारीय[8] मुक्कीय की ऊर बीच।
वख्खतर तूट गये अय-बंध, सबै होय हाड़न की खुल संध ॥२३०३
ऊठी होय आग अंगारीय आँच, खरे हनुँमाँन लए कर खाँच।
चल्यौ अचलंबत पावन चाल, बढ्यौ हनूँमाँन कै क्रुद्ध बिसाल ॥२३०४

१ पूरे। २ वस्त्र, केश। ३ वज्रतुल्य। ४ पास-निकट। ५ सिंह। ६ आभूषण। ७ अंगुलियाँ। ८ प्रहार की।

दई फिर मुक्कीय को मुख दोट[1], हिले मुख दंत खुले दोऊ होट।
पट्टकेऊ भूँम झट्टकेऊ पिंड, बह्यौ-ऊड़[2] सास गयौ व्रहमंड ॥२३०५

दोहा

कपिराजा हन कुंभ कौं, पाई जीत प्रमाँन।
जैसी रीत निकुंभ जहाँ, मार लयौ हनूँमान ॥२३०६

कुंभकरन के सुत कटे, खर कौ सुत मकराख।
बैर लैन बंधव वरग, ऊर धारी अभिलाख ॥२३०७

छंद उधौर

घन तबही कंकट-व्यूढ[3], मकराक्ष बोल्यौ मूढ़।
सुन बढे पितु मोहि स्वाल, कर सासना[4] ततकाल ॥२३०८

रन करत बाजी रोप, कर राँम ऊपर कोप।
मोहि पिता कौं रन मार, बढ़ बैर प्रथम बिकार ॥२३०९

जिह कारनै तुम जाय, कीय हर्न सीय बलकाय।
तिह लैन सीता तीय, बल[5] सभे भ्राताग्रीय ॥२३१०

आये सु कर ऊदमाद, बढ़ पुरी लंक बिखाद।
कट गई सैन कितीक, सोई भये लूंन[6] सिरीक[7] ॥२३११

मिल गये संगर-माग, ऊर बैर की नहीं आग।
ऊर बैर मेरै अंत, धवकंत आग धुकंत ॥२३१२

खर बैर लेवन खाँत, अकुलाय मेरी आँत।
कट परे कुंभकरंन्न, तिह नीद आलस तंन्न ॥२३१३

निज बैर कुंभ निकुंभ, खिर परे दोऊ जय-खंभ।
पितु मोहि काज प्रबेक[8], अब भये बैर अनेक ॥२३१४

देखे सो मै हूँ दीठ, ऊर जरत आग अँगीठ।
असरा परे भर त्याँहि, मर जाहुँ संगर माँहि ॥२३१५

---

१ चोट = प्रहार। २ उड़ गया। ३ बख्तर-बंद। ४ शासन = आज्ञा। ५ सेना।
६ नमक। ७ समान। ८ मुख्य।

अथवाँ की राँम अभंग, जुर करहि मोसौं जंग।
खर हन्यौ त्याँही खेत, हन लैहु सैन-सहेत ॥२३१६
पितु होय ऊरन[1] पाप, ईह मुख दिखावहु आप।
सेना भिजावहु साथ, हित कहत जोरत हाथ ॥२३१७
मकराक्ष सुनत बमंत[2], तहाँ लंकधीस तुरंत।
सभ्भ सैन दीनी साथ, रन मारनै रघुनाथ ॥२३१८
रथ बैठ चाल्यौ रार, हय जोत भट हलकार।
बहु संख दुंदभ बाज, अरू भई भेर अबाज ॥२३१९
चढ़ चल्यौ आतुर चाल, सब अख्र-सख्र सँभाल।
बोल्यौ सु सुभटन बाँन, बरबीर तुम बलवाँन ॥२३२०
दल कीस मारहु देख, सुग्रींव लौ सबिसेख[3]।
मैं राँम लछमन मार, पितु बैर लेहुँ प्रचार[4] ॥२३२१
जो भई अपनी जीत, फल अमर ह्वै है क्रीत।
दुख मिटहिं लंका द्रंग, सुख होय परजा संग ॥२३२२
ईह बात राखहु याद, सुख मिलहि फेर सवाद।
ईह सुनत सैन ऊमंग, सब चली आतुर संग ॥२३२३
भिर परी बंदर भाल, जाजुल्य ज्यूँ जमजाल।
जब हौन लागौ जुद्ध, बढ बैर-भाव बिरुद्ध ॥२३२४
मकराक्ष लीनौ माग[5], जहाँ राँम लछमन जाग।
केऊ मार बाँन कठोर, जहाँ कीय प्रकासत जोर ॥२३२५
मुग्दरा भाला मार, धरत्तेसु कपि खग-धार।
सुग्रींव-धारी सैन, लागी ऊसासन लैन ॥२३२६
देखी सु रघुवर दीठ, कपि भये कुंजर कीट।
जब राँम आगे जाय, पथ गाड़ ऊसे[6] पाय ॥२३२७
कर चाप की टंकार, संधाँन बाँन सँवार।
मकराक्ष देख मिलाय, पुन वचन कहेऊ पिराय ॥२३२८
सुन राँम मोहि सवाल, होय हेर पूरब[7] हाल।
खर-पुत्र मैं मकराख, सब सुभट पूछहु साख[8] ॥२३२९

१ उद्वार=ऋण-मुक्त। २ बात। ३ विशेष रूप से। ४ ललकार कर। ५ मार्ग। ६ दोनों। ७ पहले का। ८ साक्षी।

तै हथ्थौ मेरौ तात, अंन्याय कर ऊतपात।
खर हन्यौ जब तै खेत, नहीं जाय अजहु[1] निकेत ॥२३३०
रन करत कर-कर रोख, दिन-दिन बढ़ावत दोख।
बिपरीत तेरी बुद्ध, पहिचाँन परत प्रबुद्ध ॥२३३१
तुम करत जैसै तेख,[2] दिल हमंही बाढत द्वेख।
मृग-माल[3] ज्यूं बन माहि, पलभक्ष सूखौ पाहि ॥२३३२
ईम मिले मोकँह आज, धिन[4] भाग अवध-धिराज।
जम-लोक करनै जात,[5] भल जाहु संजुत भ्रात ॥२३३३
बहु सुने रघुवीर बोल, घट भीतरैं रिस घोल।
हस कही प्रबत हेर, फनि जेम आँखन फेर ॥२३३४
खर और दूखन खेल, पुन लख्यौ असरा पेल।
खल वँही देखहु ख्याल, बिच खेत खर के बाल ॥२३३५
बकवाद सौं बिद्वेख, बारचौ सु चहत बिसेख।
सुध भूल नावत सर्म,[6] धिक बीर तेरे धर्म ॥२३३६
जब सुने राँम जबाब, सर लए हाथ सताब।
दीने सु रघुबर देख, बपु[7] ताक-ताक बिसेख ॥२३३७
सर मार राँम सरीर, तोरे हजारन तीर।
ईत राँम जुटेऊ असंभ, खर-पूत ऊत जय-खंभ ॥२३३८
जम जुरे सम-सम-जुद्ध, क्रम[8] रोप कर-कर क्रुद्ध।
घट एक दे ईक घाव, पथ अग्र पर ठत पाव ॥२३३९
नही हटत एक निहार, हीय जाँन अपनी हार।
जहाँ राँम खर-सुत जुद्ध, सुर-असुर देखत सिद्ध ॥२३४०
रिन बढ़े राँम रिसाय, बहु बाँन दीय बरसाय।
कोडंड खर-सुत काट, अरू बांन मारे आठ ॥२३४१
हय स्वारथी कर हाँन, पीलयौ[9] बाँनन प्राँन।
मकराक्ष रथ कौं मेल, झट ऊतर सूल झमेल ॥२३४२
चमकंत चपला चाल, जँनु कल्प[10] पावक-ज्वाल।
घूंमाय हाथन घेर, बोल्यौ सु ताही बेर ॥२३४३

---

१ अब भी। २ क्रोध। ३ हिरनों का झुण्ड। ४ धन्य। ५ तीर्थ-यात्रा। ६ लज्जा। ७ शरीर। ८ पग। ९ नष्ट कर दिया। १० प्रलय।

महाँदेव दीनौ मोहि, तन सूल मारत तोहि।
सो लेहु राँम सँभार, ह्वै जुद्ध कौं हुसीयार ॥२३४४

जमपुरी भेजत जीव, पग माँड सीय के पीव।
ईह कहत छोरचौ आच,[1] तप-तपत बिजुरी तात ॥२३४५

देख्यौ सु रघुबर दीठ, आवंत तेज अँगीठ।
दीय च्यार[2] सर तिह देख, तक सीध कौं कर तेख ॥२३४६

तिह सूल कीने टूक, ऊलकाँनवारी ऊक[3]।
जगमगत फैली ज्वाल, कढ ऊपरा करवाल[4] ॥२३४७

धर परी मिल कै धूर, बह गई ऊठब धूर।
रन देख पौरुख राँम, कीय बड़ी अद्‌भुत काँम ॥२३४८

बोले सु जय-जय-बाँन,[5] सब कीस भाल समाँन।
खर-सुतन सुन खिसआय, ऊररचौ सु हाथ ऊठाय ॥२३४९

मुक्का जु बाँधी मूठ, खल गये आयुध खूट।
द्रग राँम आवत देख, अगनास्त्र लीन असेख ॥२३५०

मारचौ सु खल ऊर माँहि, तूट्यौ सु पिंजर ताहि।
मकराक्ष लीनी मीच,[6] खर पिता जैसै खींच ॥२३५१

दोहा

मारचौ रन मकराक्ष कौं, राँमचंद्र राजाँन।
खर कौ अंगज खिर गयौ, पितु कौ बैर पिछाँन ॥२३५२

मरन सुन्यौ मकराक्ष कौ, राँवन दीनौ रोय।
ईंद्रजीत आयौ ईतै, गहि पानप रिस गोय ॥२३५३

छंद त्रोटक

घननाद लख्यौ पितु सोक घिरचौ, कछु सोच मिटावन बोध करचौ।
पुन बोलेऊ राँवन पूत प्रतै, हीय की निज बात सुनौ हम तै ॥२३५४

---

१ हाथ। २ चार। ३ ज्वाला। ४ धुंवा ५ जय-जयकार किया। ६ मृत्यु।

खर-कौ-सुतहू खर जेम खुट्यौ, पितु बैर निकार नहीं पलट्यौ।
हम साच कहै सुन लेहु हितू, मकराक्ष भयौ अनकाज मृतू ॥२३५५
धुर दासरथी दोऊ भ्रात भ्रमी, भगनी पति जाचेऊ बुद्धि भ्रमी।
ऊररीकृत[1] नाँहि करी ऊन तौ, मन सौं सीय-भक्षन कीन मतौ ॥२३५६
नकटी कीय लछ्छन[2] सूपनखा, पहिचाँन कै नार अबद्ध पखा।
कुल-भूषन हाँन लखी कुल की, बिन नाक रु काँन सुसा[3] बिलखी ॥२३५७
झलकी खर कै हीय आग झला, बभकी[4] कुल-लाज की बैर-बला।
जब जोर जमाय चल्यौ धुर कै, भिजबाएऊ दूत तऊ भिर कै ॥२३५८
नय-बात कही रघुनाथ नरा, बहनी कौ करयौ ऊपहास बुरा।
तीय बैर में देहु हमैं तुम ही, कुस लात रहौ बनबास कँही ॥२३५९
खर-बात न मांनीय एक खरी, कर कौतुक ही फिर रार करी।
परवाह न राख दयौ पलटौ, वह मार लयौ लरकै ऊलटौ ॥२३६०
झहराय गिरयौ हम पै झगरौ, सीय-काज बिगार भयौ सिगरौ।
खर बात सुनी मम आँत खिजी, ऊर में सीय-लावन की ऊपजी ॥२३६१
रमनी[5] न बनी[6] मम रावन पै, कहा राँम करे तिहकाँ मन पै।
खर-आव बिखाद की रेख खिची, जोई बात न छूटत घात जची ॥२३६२
निज भ्रात कौ बैर निकारहुँगौ, धक संगर कौ ऊर धारहुँगौ।
हटकै[7] खर कौ जिह प्रांन हरौ, मकराक्ष दिखावत राँम मरौ ॥२३६३
खर बैर कौ मोही पै भार खरौ, कुल-राखस जास लिहाज करौ।
खर कौ सुतहू परगौ खिरकै[8], बसुधा पै परै फल ज्यूँ बर कै ॥२३६४
कछु आप नहीं मुख जात कही, रन कौ ऊर में अभिलाख रही।
अब राँम कौं मारन जात ऊतै, पर कौन दिखावहुँ बैर प्रतै ॥२३६५
ईह कारन होत ऊदास ईतौ, खर के सुत सौं सुन खेत खतौ[9]।
घननाद घनौ घबरावन कौ, पितु बात सुनी पिछतावन कौ ॥२३६६
सब रीत पिता समुझावन की, जहाँ बात कही रन-जावन की।
घननाद जितै सुत या घर में, पितु होय नचीत[10] बसौ पुर में ॥२३६७
पुन जाँन संबोधन कीन पिता, कहि कै ईतीहास अनेक कथा।
कीय ईष्ट-अराधन मैं करनी, बिध जुक्त न बात अजौं बरनी ॥२३६८

१ अंगीकृत। २ लक्ष्मण। ३ बहिन—शूर्पनखा। ४ भभक उठी। ५ रमणी—सीता।
६ वश में आई। ७ हठ करके। ८ मरकर। ९ क्षत या नष्ट हो गया। १० निश्चिन्त।

दसकंधर ख्याल दिखावहुगौ, जबही लरनै रन जावहुगौ।
किहू काज पिता तुम जुद्ध क्रमै, जय राँम करूँ मम काँम जुमै[1] ॥२३६९
घननाद के बोल कढ़े घन से, बरखै घन लाय लगै बन[2] से।
कर कै पन या बिध बात कही, जय श्रास भई दसकंध जँही ॥२३७०
घननाद कौं दीन असीस घनी, अगवाँनीय राखस जात अनी।
बहु राँम बिड़ारीय बाँनन सौं, पलटै तिह सोखहु प्राँनन कौं ॥२३७१
पहिचाँनहुँ तोर सपुत्र पनौ[3], घननाद है मोहि भरोस घनौ।
ईह रावन बात सुनी ऊमग्यौ, लरनै की तयारी कै काज लग्यौ ॥२३७२
कीय मंत्रत अस्त्र रू सस्त्र कई, लरनै प्रतना[4] बहु संग लई।
चढ कै रथ चालेऊ बीर छली, थित ढाल जहाँ रन-ताल-थली ॥२३७३
कीय सैन बिदा कपि-काटन कौं, बढ आप लई नभ बाटन[5] कौं।
जुत लछ्छन राँम सौं जाय जुरयौ, धरके नहीं राँम धरीज[6] धरयौ ॥२३७४
लख बोलेऊ राँम लछ्मन सौं, घननाद ईहै गरुवो घन सौं।
सर ब्रह्म बिनाँ न मरै सुपनै अब याद करूँ मन में अपनै ॥२३७५
तुम नाँ घबरावहु बार तिती, जुध सैन सँभारहु संग जिती।
कहि राँम प्रीयोग लगे करनै, धर धीरज ध्याँन लगे धरनै ॥२३७६
द्रग देख लई घननाद दसा, रघुबीर न छोरहि बीच रसा[7]।
पथ लीन गयौ सोई लंकपुरी, बिच हीय बिचार कै बात बुरी ॥२३७७
प्रतिकाय[8] सीया कर कै पुतरी, क्रतमी ईह मायक जाल करी।
फिर चालेऊ पछ्छम फाटक कौं, इह कावन मारुती दाटक कौं ॥२३७८
क्रतमी[9] सीय कौं संग मैंकु हनी, रूच मायक-जाल ही की रहनी।
हनूँमान लखे तिह आवत ही, समुहा चले सैन सझावत ही।।२३७९
भट लै संग जाय समीप भिरे, पुन ज्याँनकी ऊपर द्रिष्ट परे।
पथरा पहिचाँन नहीं पटकै, हनूँमाँन सबै भट कौं हटकै ॥२३८०
तरू-श्रंग गहे सु रहे तस[10] में, बिलखी सीय दुष्ट लखी बस में।
घननाद लख्यौ बल कीस घट्यौ, क्रतमी सीय कौ गहि सीस कट्यौ ॥२३८१
भयभीत जहाँ हनूँमान भये, कपटी घननाद कुबोल कहे।
लखीयँ ईह सीय बिरोध लता, पुन पाछै रहे नहीं पेढ-पता[11] ॥२३८२

१ जिम्मे। २ जल। ३ सुपुत्र-पन। ४ सेना। ५ बाट = मार्ग। ६ धैर्य। ७ पृथ्वी। ८ प्रतिमूर्ति। ९ बनावटी। १० उसी प्रकार हाथ में। ११ पेड़-पत्ता।

कुल राखस जाहि अकाज कीया, सिर काट लयौ हम आज सीया।
कहीयें रघुनाँथ कौं जाय कथा, जहाँ पैहौ बधाई कौ लाभ जथा ॥२३८३
भयभीत भयौ कपि साथ भज्यौ, गज केहर ज्यौं घननाद गज्यौ।
सद[1] ऊत्तर फा क राँम सुन्यौ, हनूँमाँन जयौ किधु खेत हन्यौ ॥२३८४
ऊर में हुय संसय राँम ईतै, जम्वाँन कह्यौ सब सैन जुतै।
हनूँमाँन सहाय कौं जाहु हलै, गरजै घन ज्यूँ घननाद गलै ॥२३८५
रघुवीर रजा कीय रिछ्छन कौं, बय बृद्ध बिचार विचछ्छन कौं।
मग पछ्छम फाटक के ऊमड़े, बन के तरू श्रंग ऊखार खड़े ॥२३८६
मग में हनूँमाँनहु आय मिले, वपु चित्त की आक्रत सौं बिचले[2]।
जँमुवाँन मिले अरू संन जितो, पग लागेऊ आय कै औधपती ॥२३८७
हनूँमाँन कौं देख ऊदास हिया, सुख पूछन लागेऊ नाथ सीया।
हनूँमाँन कही हम हार हुई, कछू नाथ सौं बात न जात कही ॥२३८८
सिय के हित ऊद्यम कीन सबै, वँह सीय सँघारोय दुष्ट अबै।
घननाद लखी ईन घातन सौं, बिलखाय फिरे हम बातन सौं ॥२३८९
हम तूट गयौ बल बाँहन कौ, ईह बैर कौ फेर ऊगाहन कौ।
करनी करनीय सो आप कहौ, लरकै घननाद सौं बैर लहौ ॥२३९०
हनूँमाँन की बात सुनीह हरे, रघुबीर सीया सीय नाँम ररे[3]।
मुरछागत होय कै सोय मही, रमनी हित आँखन रोय रही ॥२३९१
मभ्भ खेत जहाँ हनूँमाँन मिले, सुन जूथप-जूथ जहाँ समिले।
रघुबीर उदासीय की रचना, बिलखायम जाय कहे बचना ॥२३९२
चख-वार[4] कोऊ छिरकावत है, सुचि केक सुगंध सुंघावत है।
कोऊ ताड़ीयपत्र[5] बयार[6] करै, पुन हात मलै कोऊ पाय परै ॥२३९३
लघु बंधव नै सिर गोद लीया, समुभ्भावन लागेऊ नाथ सीया।
रघुबीर सधीर सु धर्मरता, खल राँवन अधृम कोन खता ॥२३९४
फिर धर्म लहै धरमी फल कौं, कबहूँ न तजै बल की कल कौं।
अधृमी फल पावहि अधृम कौं, करता निरनौ[7] गनीयै क्रम कौं २३९५
सुक्रती[8] तुम अक्रती फल साधन सौं, ऊपजै ततकाल अर.धन सौं।
सुक्रती तुम धर्म के सेबन में, दुज-भक्ति सहायक देवन में ॥२३९६

१ शब्द। २ विचलित हुए। ३ रटने लगे। ४ चक्षुवारि=नेत्रजल आंसू। ५ ताड़-पत्र=पंखा। ६ पवन। ७ निर्णय। ८ पुण्यवान्।

मिलहै सुख आखर[१] सुद्धमती, मिट जायगी रांवन क्रूरमती।
धृम धार ना नैक धरोज[२] धरौ, किह कारन रांम विलाप करौ ॥२३९७
करदे[३] केऊ लछ्छन जाव कहे, रघुबीर जहाँ समुझाय रहे।
मुरचाँन[४] सँभार कै सुद्धमती, बहि आए बभीखन ऊद्धव्रती ॥२३९८
चहु मंत्रीय साथ मिले चलकै, बिच ले रघुबीर सीया बिलकै[५]।
लख एह बभीखन ख्याल भयौ, भ्रम कै क्रम सौं ईह हाल भयौ ॥२३९९
हनूँमाँन हकीकत पूछ हितू, जर[६] सौं घननाद की बात जितू।
कपटी छल जाँन लई करनी, बिनती सब राघव सौं बरनी ॥२४००
रूच जाँनत है हम राँवन की, सीय पै होय कौं सरसाँवन की।
सीय कौं घननाद न मार सकै, जिह कारन क्यौं रघुबीर जकै[७] ॥२४०१
मघ खेत लखी सो मरी तौ मरी, क्रतमी[८] कोऊ सीय करी तौ करी।
हनूँमांन गयौ डहकाय हीया, सपनै न मरी अवधेस सीया ॥२४०२
डहकाबहु नाथ नही डरकै, कल की अब जीत लहौ करकै।
कपटी घननाद करी करनी, भय दायक जाल कहै भरनी ॥२४०३
हनूँमाँन लखी सोई सत्य हुई, मन जाँनहु जाल असत्य-मई।
ईक बात कहै हम और अबै, सुनीयै रघुबीर बिचार सबै ॥२४०४
घननाद है जालक[९] बीर घनौ, हटकै झटकै तिह प्राँन हनौ।
पहुच्यौ सु निकुंभला-थाँनक[१०] पै, जहाँ होम करै विध जाँनक पै ॥२४०५
कर देवीय पूजन कर्म कीया, लरनै कँहुँ अब्बहू सख लीया।
जुध मार्‌यौ मरै नहीं बीर जई, द्रढ़ संगर की जिह नींम दई ॥२४०६
अब भेजीयै लछ्छन बीर ऊतै, जुर जावहिगे हम सेन जुतै।
सुन बात बभीखन राम सकौ, मनकौ सब ससय सोक मुकौ[११] ॥२४०७
छल छिद्र पिछाँन कै जाँन छतौ, मघवाजित[१२] मारन कौन मतौ।
कछू सोच सलाह की वात कही, समराथ सदा रघुनाथ सही ॥२४०८

दोहा

निकट बोल सुग्रींव नृप, आंजनेय जमुवाँन।
अंगद जूयप-जूथ अरु, पूछी बात पिछाँन ॥२४०९

१ अन्त में। २ धैर्य। ३ कठोर। ४ मोर्चा। ५ विलखे=विलाप करे, रोवे। ६ जड़ से, मूल से। ७ व्याकुल होते हो। ८ कृत्रिम=बनावटी। ९ मायावी। १० देवी का स्थान। ११ दूर हुआ। १२ इन्द्रजित्।

कह्यौ बभीखन हम करयौ, सोक दूर ईक साथ।
बोले नीत बिचार कै, राजा श्री रघुनाथ ॥२४१०
प्यारौ लछमन कठन पथ, जाँनौ हम बिन जुद्ध।
मेघनाद कौ मारनौ, समुझहु विषम सनिद्ध ॥२४११

छंद बृद्धनाराच

बभीषनं सुन्यौ विचार राँमचंद्र राह कौं।
निहार अंजनेय हू सुकंठ की सलाह कौं।
अभीत अंगनादहू जुरे सु जुथ्थ जुथ्थपं।
जहाँ सु जाँमवाँन जान बेस बृद्ध कौ वपं[1] ॥२४१२
बिचार कीन बीनती प्रबीन जोर पाँन[2] कौं।
बनी सु एहु बार मेघनाद के मिलाँन कौं।
करै सु हौंम की क्रीया नचीत[3] होय नेम सौं।
बिगार कीस बाँहनी[4] खिजाय आय खेम सौं ॥२४१३
जुरै बकार जुद्ध कौं सनिद्ध जाय कै सही।
लयै सु संग लछ्छनं जुले मिले चलै जहीं।
जितीक देर कीजीयै जितीहु हाँन जाँनीयै।
कनिष्ट भ्रात कारनै अदेस नाहि आँनीयै ॥२४१४
ऊचार जाँमवाँन आद बात कौं बिचार कै।
कनिष्ट भ्रात कष्ट में बिदा करे बकार कै।
निहार बायुनंद कौं कपीस सौं कही कथा।
बिचार कै बिसेख बीर जुथ्थपं जथा जथा ॥२४१५
बभीखनं प्रवेक बात मान कै मिलाईयै।
लिवाय संग लछ्छनं बिजै बड़ी बसाईयै।
बिचार राँमचंद्र बात साथ कीस सालु रे।
असंख सैन ऊझली गजाय सोर गाल रे ॥२४१६
चले सुभ्रात राँमचंद्र सैन कीस संग में।
जितै सु इंद्रजीत कौं ऊमंग धार अंग में।

---

१ वपु=शरीर। २ पाणि=हाथ। ३ निश्चिन्त। ४ सेना।

टंकार चाप बाँन तिच्छ[1] ईच्छ[2] लीन आच[3] कौं।
बक्कार कोस रिच्छ बीर बोल एहु बाच कौं ॥२४१७
प्रलब ये कलंब[4] पाँन सिंवि ज्वाल के समा।
जराय इंद्रजीत जेम गेरहू गमा-गमा।
अनीन शाल ऊज्जरीन लाल ओन[5] लागहै।
निकार प्राँन मेघनाद भीत दूर भागहै ॥२४१८
बभीखनं बताय देहु दुष्ट है कहाँ दुरचौ[6]।
निकुंभला-निकेत[7] धार-धूंम सौं भरचौ घिरचौ।
जितै-तितै चमूं[8] जमाय आप ह्वै ईकंत कौं।
ऊपास होम आँ मनाय तंत्र-मंत्र-तंत कौं ॥२४१९
बचै न कोट बात सौं छुपै-बुपै जुपै छली।
बढ़ाय सैन बंदरी थपै रूपै थली-थली।
बभीखनं बिसेस बाट घाट पै घुमाय कै।
रजा सु दीन रार की ऊछाह सौं ऊमाहि कै ॥२४२०
लगी सु फौज लूंम कै सुग्रीव की सरासरी।
ऊतैहु इंद्रजीत की भिरी चमू भराभरी।
ऊतंग अंग आच सौं ऊखार कै अनी-अनी।
प्रकड कोस प्रेर कै भिरे कपी भनी-भनी ॥२४२१
जहाँ बभीखनं जनाय बात राम बीर कौं।
घिरी सुसैन धार-घेर-धार लेहु धीरकौं।
प्रहार सैन आस-पास जास देख लीजीयै।
जितैक इंद्रजीत पैख राख रीन[9] खीजीयै ॥२४२२
बभीखनं बिसेस बाँन[10] जाँन लच्छनं जही।
टंकार चाप बाँन तान लार सैन की लही।
वही सु बंदरावली रूकाय फौज रोक में।
लगाय मार लच्छनं भराय चाप भोक में ॥२४२३
सुनंत इंद्रजीत सोर घोर मार घात कौं।
ऊठ्यौ सु रीस छाय अंग पेखनै प्रपात कौं।

१ तीक्ष्ण। २ देखकर। ३ हाथ। ४ बाण। ५ रक्त। ६ छिपा। ७ देवी-स्थान। ८ सेना। ९ रण, युद्ध। १० वाणी।

बिलोक फौज बंदरी समंदरी हिलोर सी।
जितै–तितै जहाँ–जहाँ लगी सु अभ्र[1] लौर सी ॥२४२४
भुलाय होम भावना चलाय रथ्थ पै चढ्यौ।
भुजंग[2] भीम भेस कोन-भौन[3] तै ज्युही कढ्यौ।
निहार नैन लछ्छनं कहै सु बैन कोप कै।
खरे रहे बिचार खेघ जाय जंग जोप कै ॥२४२५
लुकाय कै निलाज[4] आज जंत्र–मंत्र जाल में।
करै जु ब्याज[5] काज कौं करूर अंत–काल में।
धरै न धीर धारना करै न बीर कॉम कौं।
बच्यौ चहै बसाय बैर रोक जुद्ध राम कौं ॥२४२६
बिलोक मोहि खेत बीच सम्मुहान सालुरै।
धिकार तोहि धर्म कौं कुकर्म होम क्यूँ करै।
सुनी सु मेघनाद आँन बात राँम भ्रात की।
पित्रव्य[6] देख पास कौं प्रकोप कीन पातकी ॥२४२७
कह्यौ कका करचौ कहा ऊलंघ बंस आँमना।
मिल्यौ सु जाय सत्रु माहि काज–राज काँमना।
भतीज पुत्र भाव मैम रावनै गही मती।
दुराध ग्रेह भेद देत पाय लोभ प्रक्रती ॥२४२८
लिवाय संग लछ्छनं बिगार दीन बात कौं।
रुलाय जात राखसी घुलाय वैर घात कौं।
करार बोल कौं कहै जती ईहै जुरचौ-जुरचौ।
सहेत भ्रात साँकरै मिल्यौ बच्यौ मरचौ-मरचौ ॥२४२९
परंतु तूँ करंत पाप काँम ये अहो कका।
मिलाय देत मीच में धँधूँन चाप दे धका।
बभीखनं भतीज भेट बुल्लयौ बराबरी।
पिता तिहार पातकी कहै न क्यौं कराकरी ॥२४३०
अधर्म कौ ऊपाय तीय पार की सीया तिनै।
बसाय बीच बाग में संकष्ट दे सनै-सनै।

१ बादल। २ सर्प। ३ भवन का कोना। ४ निर्लज्ज। ५ कपट। ६ चाचा, विभीषण।

बिदेह-जाय[1] तोलता रुकी सु सत्य राह में।
कही सु दैन कारनै सबंधु कौं सलाह में॥२४३१
मिटाय कै मृजाद माँन भंग कीन मोहि कौं।
ऊराहना[2] कहंत आज तोलनाँ[3] हितोहि कौं।
सतोगुनी सुभाव मोहि तात तो तमोगुनी।
ईहै बिरोध आदसौं सही ऊदंत कौं सुनी॥२४३२
पिता धरोज पुत्र कौं कहो न जाय काँयरे[4]।
सुधार रामचंद्र संध नैक हाँन नाँहि रे।
कलंक मोहि नाँहि कोय लोभ नाँहि लंक कौ।
बिनास कीन बंस कौ बिकार बंधु बंक कौ॥२४३३
धरोज सत्य धर्म कौ सदा हमैं सुभाव सौं।
धरोज राँम धारना भयौ सरंत्र भाव सौं।
खिसाय इँद्रजीत खीज बात पै बभीखनं।
चढाय चाँप कौं चछोह लाग कीन लछ्छनं॥२४३४
जहाँ सु अंजनेय जाँन लेय पीठ लछ्छनं।
अरे सु संम्मुहाँ अभंग बीरता बिचछ्छनं।
बिलोक बज्रकंकट[5] क्रूर बारता कही।
नजीक मेघनाद कौं निहार कै टरै नही॥२४३५
घिराय नागपास सौं जराय पूँछ ज्वाल में।
चढाय पीठ लछ्छनं चलंत बक्र चाल में।
सबंधु लेय साँकरै गिराय खेत गाज्जयौ।
जई सु इँद्रजीत सौं संग्राँम आय समझयौ॥२४३६
कनिष्ट राँम कोपकै करै कहा लरै कही।
जुरै त जेष्ट जुद्ध में निसंक मैं डरौ नही।
जितेक इँद्रजीत नै कठोर बोल के कहे।
बिचार लछ्छनं बिवेक क्रूर बात ना कहे॥२४३७
कनिष्ट राँम कोप कै बदे सु मिष्ट बात कौं।
कहंत आप कीरती हलाय क्यौ न हात कौं।

---

१ जानकी। २ उलाहना, उपालम्म। ३ ठोलना, व्यंगवाक्य। ४ क्यों।
५ हनुमान्।

कठोर बोल कै कहै जई न होय जुद्ध कौं।
वृथा कथा बिचारना बिगार देत बुद्ध कौं ॥२४३८
लगे सु बोल लछ्छनं अंगार जेम आगकै।
प्रहार बाँन पाँन सौं जटीस[1] रीस जागकै।
कनिष्ट-राँम[2] काय बायनं[3] दले बचायकै।
दिखाय दाव दूर पै रहे खरे रूपाय कै ॥२४३९
कनिष्ट-राँम कोप मेघनाद कौं मिलाय कै।
दये सु पांच बाँन देख होय पै हलाय कै।
जरे सु तर्न-किर्न[4] जेम पर्न स्वर्न पूरता।
धरी धरौज धारना संभाय अंग सूरता ॥२४४०
तहाँ कलंब तीन ताक लछ्छनं लगाय कै।
खरौ भयौ बिचाल खेत रथ्थ पै रुपाय कै।
कनिष्टराँम ज्यूँ कुपे जुपे सु ईंद्रंजीत ज्यूँ।
रुपे मनौ मृगंद्र रार अंग सौं अभीत ज्यूँ ॥२४४१
सँमाँन मेघ सालुरे बढ़ाय धार बाँन सौं।
ऊझेल एक-एक पै प्रहार देत पाँन सौं।
कनिष्टराँम सिष्ट्कौं मिलाय बाँन मुक्कयौ।
जक्यौ[5] सु ईंद्रजीत धूँन सीस रीस धुक्कयौ ॥२४४२
बिवर्न होय बक्र तुंड[6] धूज अंग घेख सौं।
सतीम आय सम्मुहा भुजंग काल भेस सौं।
घुलाय रीस घूँमकं ऊघार लाल आँख ज्यूँ।
दिखायकै डराँवनी प्रसूँन केल पाँख ज्यूँ ॥२४४३
लख्यौ न मोहि लछ्छना संग्राँम बीच सबरी[7]।
गन्यौ न नैक गौर बंक रूर जात क्रब्बरी[8]।
चलाय आप चौक मैं मिलाय बाँन माँरना।
खरे भये रहौ खरे धरोज राख धारना ॥२४४४
भिजाय कै क्रतंत-भौंन[9] फेर पीठ फेरहूँ।
चढ्यौ चछोह तोह छोह हीय दीठ हेरहूँ।

---

१ महादेव। २ राम से छोटे, लक्ष्मण। ३ वायुवाण। ४ तरणि किरण = सूर्य-किरण। ५ विकल हो गया। ६ मुख। ७ रात्रि। ८ राक्षस। ९ यमलोक।

बढ़ाय बात बेर-बेर बोल कै बराबरी।
बहाय सात बाँन मेट लछ्छनं भराभरी ॥२४४५
सिलाय सिष्ठ मारुती निकार तीर नावकं[1]।
दये सु पंच-दून[2] ते प्रकास जेम पावकं[3]।
बभीखनं बिसेस बाँन सौ दये बकार कै।
परे नजीक आसपास लाग कै लिगार कै ॥२४४६
कनिष्ठ राम कोप कै जबाब ए कहे जही।
अनाह जेंम बाँन तुछ्छ सूर-मान दे सही।
बिलोक मोहि बाँन बेग सीख लेहु सूरता।
कहै कुबोल नाँहि कौंय[4] धर्म नाहि धूरता[5] ॥२४४७
ईतीक बात ऊच्चरी प्रकंड देय पिंड़ कै।
सनाह तोर दीन संग अंग सौं ऊछंड कै।
गिरयौ रगत्त गात सौं दकूल भीज देह के।
समाँन प्रात सूर कै लखाय लाग लेय कै ॥२४४८
तजे कलंब ताक-ताक लछ्छनं लगाय कै।
बरंम्म तोर बेग सौं चरंम्म[6] लौ चुभाय कै।
अँनीन के मुखी[7] ऊभै-ऊभै भिरे ऊछाह सौं।
बिजै हितू ऊभै बली चले सु चित्त-चाह सौं ॥२४४९
ऊभै भुजंग आकृती ऊभै जनूंन आँनकै।
मिले ऊभै मदोनमत्त ग्याल[8] हूं बिधाँन कै।
ऊभै चलाक आव के ऊभै कजाक आग के।
ऊभै कंठीर[9] ज्यूं अरे रगे सु बीर रंग के २४५०
ऊभै कलंब औसरे[10] झरी तरी झुकाय कै।
ऊभै भरोस आपनै रहे खरे रुकाय कै।
ऊभै करंत वार फंऊ भेत कै ईकै-ईकै।
ऊभै हटै न एक सौं थिराय[11] ना जकै-थकै ॥२४५१
जितै हू मेघनाद जाय मारुती तितै मिलै।
चलाय मेघनाद चोट देख लछ्छनं दलै।

---

१ छोटे तीर। २ दश। ३ अग्नि। ४ किसी को। ५ धूर्त्तता। ६ चमड़ी
७ मुखिया। ८ मस्त हाथी। ९ सिंह। १० अवसर पाकर। ११ ठहरते।

ऊड़े चहै अकास प्रेर बाज सूत पैंद ज्यूँ।
लगाय अंजनेय लात गेर देत गेंद ज्यूँ ॥२४५२
रचंत मेघनाद रार लछ्छनं ज्युँही लरै।
ईलात[1] चक्र आक्रती फलंग मारुती फिरै।
ऊभैन जुद्ध आहुटे फिरे न पीठ फेर कै।
लरे अरे लगालगी घुमंड घेर-घेर कै ॥२४५३
ऊते[2] ज बंदरावली इते ज राखसी-अनी।
तमासबीन ज्यूँ तकै घिराय साँकरै[3] घनी।
बिलोक कै बभीखनं बदे[4] सु बीच बाहनी।
चमूँ मिलाय निश्चरी ढँढोर मार ढाहनी ॥२४५४
करे विदा अनेक कीस आप चाप आच लै।
तजे अनेक ताक कै निखंग सौं नराच लै।
भजाय दीन भीरु कौं लगाय बाँन लाग के।
अनेक कीस ऊपटे अंगार जेम आग के ॥२४५५
जने-जने जितै-तितै रूपे अभंग रार कौं।
निहार निस्चरावली मड़ी ऊमंग मार कौं।
निसंक मेघनाद कौं कका करूर कोप कै।
कहे सवाल कोप कै रुकाय पाय रोप कै ॥२४५६
भतीज मोहि मंदभाग आज लछ्छनं अरचौ।
बचै नहीं विचार लेहु मौत के विना मरचौ।
सुभट्ट सैन-सैनपं कटे कटे सबै कटे।
इहै निखोध[5] ऊबरचौ लरंत पै लटे-लटे ॥२४५७
बिड़ार देहु बाहनी नजीक मेघनाद की।
बिखाद जाय बाट कौं बुन्याद येह बाद[6] की।
बभीखनं सुनत बात जाँमवाँन जान कै।
हकार रिछ्छ हल्लयौ अगोट लंक आँन कै ॥२४५८
रहे सु कीस राह रोक घाट-घाट घेर कै।
जमात जातधाँनु की फसाय बीच फेर कै।

---

१ पृथ्वी। २ उधर। ३ संकीर्ण=पास। ४ कहे। ५ निष्कर्ष। ६ झगड़े।

लगे लराक[1] लार लै कजाक कीस क्रुद्ध मैं।
हुड्ड़ बीर हाक की जराक मार जुद्ध में ॥२४५६
तराक ताक्-ताक कै फिराक देत फेट कै।
धराक धांस धूँम की भराक[2] सेनु भेट कै।
अरे अराक आय कै सराक छोर संक कों।
लगा लगी न जाँन लीन लाख कोस लंक कौं ॥२४६०
मिलाय रिछ्छ मालवाँन राखसी अनी रुकी।
रूपे करूर कीस रार मार कै धकामुकी।
बिसाल सैल बृछ्छ की भुकी जहाँ झराझरी।
ससीस ईन्द्रजीत-सैन बाहुरी[3] बराबरी ॥२४६१
सँभार डाँग सबेला ईभार जेम आहुरे।
निकुँभला-निकेत[4] सौं बिसेख बीर बाहुरे।
प्रलंब हाथ प्रेर कै कलंब की झरी करी।
मनौ घुमंड मेघमाल आय धार औसरी ॥२४६२
भये सु कीस भालहू बिहाल[5] जाहि बेरमें।
लखे सु नैन लछ्छनं ईखू[6] घिरे अँधेर में।
मलंग पाय मंड कै जुरे सु ईन्द्रजीत सौं।
जमीन पै जमे जहाँ रचाय रार रीत सौं ॥२४६३
सहाय जाँमवाँन संग मारूती चले मिले।
वभीखनं जुतं बिसेस राखसी चमूं रले।
संभाय साँग सवला त्रसूल डाँग तोल कै।
मड़ी प्रकंड डंड मार बाक बोल-बोल कै ॥२४६४
खनंक बाढ खग्ग की झनंक वर्म[7] झेलनी।
दिखावनं लगे दहूँ खिलार[8] बीर खेलनी।
जितै-तितै जुरे जिते मतै-मतै मिलाय कै।
प्रहार येक-येक पै जुहार लेत जायकै ॥२४६५
जुरे सु अंध-धुंध जुद्ध आस छोर अंग की।
लराक लुथ्थ-बथ्थ लाग आस जें उमंग की।

१ योद्धा। २ तत्काल। ३ वापिस लौटी। ४ देवी का मंदिर। ५ विह्वल। ६ ईषु=बाण। ७ बख्तर। ८ खिलाड़ी।

भिरे सु कीस भालहू कराल क्रुद्ध कर्बुरा[1]।
गुसैल बीर गर्गराय झीक देत झर्झरा ॥२४६६
ज्युहीं मिलाय ईन्द्रजीत लछ्छनं ऊतै लरै।
परै प्रहार कंकपत्र[2] अभ्र जेम ऊल्लरै।
ऊठै अकास ज्वाल-आग भाले भाट भेट की।
चमंक बीज ज्यूं छुटै ज्वला कला-कं जेठ की ॥२४६७
गिरंत बाँन गैंन[3] सौं अरूझ कै ईतै-ऊतै।
भराय भूंम भार सौं प्रहार के प्रतै-प्रतै।
जनाय सिष्ट जोरनौ न छोरनौ न चाप सौं।
चिहूंट जेह चाढनौ न काढनौ कलाप सौं ॥२४६८
भनंक पंख भ्रंग की सनंक बाँन सोक की।
तनंक ज्यूं तुंजीह[4] की घमंक बाज घोक की।
ईला[5] रू आसमाँन दीठ येक रूप देखीयै।
चलंत दीप्त चाल बाँन-बाँन पै बिसेखीयै ॥२४६९
लखाय मेघनाद नाँहि लछ्छनं लखाय[5] ना।
करूर अंधकार में दिनेसहू दिखाय ना।
मचाय माँस मेदनी[6] रचाय श्रोन रंग सौं।
गचाय गूद गार आसराँन[7] कीस अंग सौं ॥२४७०
कनिष्टराँम कोप मेघनाद पै करचौ मतौ।
मृगिंद खीज कै मनौ चल्यौ गजिंद्र पै छतौ।
ज्युहीं मिलाय जाय बाँन झोक रथ्थ बाज[8] कै।
संघार कीन स्वारथी गरूर नाद गाज कै ॥२४७१
निहार मेघनाद रथ्थ स्वारथी गिरचौ रसा[9]।
बंधाय हाथ बाग दूर देखनौ दिसा-दिसा।
चलाय बाँन चाल-बाज चाल के बिधाँन सौं।
लगाय बाँन लछ्छनं अटचौ सु आसमाँन सौं ॥२४७२
लखे जु नैंन लछ्छनं ऊभैहू काँम येक सौं।
कनिष्टराँम लाग काँम बीरता विवेक सौं।

---

१ राक्षस। २ बाण। ३ गगन। ४ प्रत्यंचा। ५-६ पृथ्वी। ७ राक्षस। ८ घोड़ा। ९ पृथ्वी।

जबै सु बाग ताँन जात ईन्द्रजीत आच[1] सौं।
मिलाय कै महाँरथी वकार लेत वाच सौं ॥२४७३
चलाय बाँन कौं चलै घलै तुरंग घात कौं।
चलाक वीर लच्छ्छनं हलाय येम हाथ कौं।
जहाँ सु ईन्द्रजीतहू विहाल होय विफुरचौ।
कितीक बेर क्रुद्ध सौं लगाय पैज कौं लरचौ ॥२४७४
जक्यौ कछूक ईन्द्रजीत जाँन जुथ्थ-जुथ्थपं।
लगाय मार घेर लीन कूद कै घनैंक्षपं[2]।
चपेट कै तुरंग च्यार मार क मलामली।
कुढंग रथ्थ कौं करचौ चले नपै चला-चली ॥२४७५
चल्यौ सु मेघनाद छिप्र[3] लंक रथ्थ लैन कौं।
परी न जाँन आसपास सर्व कीस सैन कौं।
सुबर्न कौ जटचौ सतंग[4] नूत[5] सूत[6] है नये।
अरोह फेर आयगौ जुरंत कीस के जये ॥२४७६
सजोर घोर होय सोर आठ ओर येक सौ।
मंदोदरी--तनै मढचौ भुजंग काल भेख सौ।
खरे लखे बभीखनं लगाय बाँन लच्छनं।
जितंक देख जुथ्थपं बढ्यौ अगै बिचछ्छनं ॥२४७७
अनेक कंकपत्र आच ऐंच चाप ऊझले।
बनाय लच्छ्छ बदरा मिले जही दले मले।
ढबे न पाव ढाब कै सताब भाग कै सबै।
लुकाय पीठ लच्छ्छनं जके कछू रुके जबैं ॥२४७८
कनिष्टराँम कीस कौं लये सु पीठ लार कै।
अगै-अगै बढे अनी धनंक बाँन धार कै।
निहार मेघनाद कौं प्रहार दीन पूर कै।
बढाय दीन बाँन धाँम-धूँम सौं धरूर कै ॥२४७९
कलंब[7] चाप काढ कै दये गिराय दूर कौं।
घनंक और धार कै गह्यौ महाँ गरूर कौं।

---

१ हाथ। २ मेघनाद। ३ शीघ्र। ४ रथ। ५ नये। ६ सारथि। ७ वाण।

दयौ सु काट दूसरौ लगाय बाँन लच्छ्छनं।
दये सु पाँच बाँन देह ताक-ताक तिच्छ्छन ॥२४८०
बरंम[1] तूट बोखरचो चरंम[2] हाड़ चूर कै।
निसार श्रोन नीसरचौ प्रवाह पूर-पूर कै।
तहाँ धनंक तोसरौ लयौ सु मेघनाद नै।
लगा-लगीय लच्छ्छनं बह्यौ समूह बादनै ॥२४८१
अनेक बाँन ऊभले कनिष्टराँम काय कौं।
लई न ओट लौट कं प्रचंड मड पाय कौं।
सहे कलंब साल कौं बहे न बीर बिम्मुहा[3]।
जुटे सु ईन्द्रजीत सौं संभार चाप संम्मुहा ॥२४८२
सुभट्ट लीन सौं करै जितेक इन्द्रजीत कै।
प्रलंब के कलंब प्रेर चोट दीन चीत कै।
प्रहार सैन आसपास मेघनाद मेल कै।
अनेक बाँन ऊभले झुकाय चाप झेल कै ॥२४८३
नजीक[4] मेघनाद कौं बिलोक बाँन बाहि कै।
ईभार[5] ज्यूँ अग्राज कै खरे भये खिजाय कै।
असक्ति होय ईंद्रजीत फेर ऊठ बिफुरचौ।
प्रहार कीन कंकपत्र लच्छ्छनं घनौ लरचौ ॥२४८४
लगाय बाँन लच्छ्छनं संघार लीन स्वारथी।
तुरंग भाग रथ्थ ताँन मोर कै महाँरथी।
दये कलंब पंचदून बंधु राँम बर्म पै।
करी भिरी न काट-काट छेद कीन चर्म पै ॥२४८५
तुरंत बाँन तीन सीस मार कै सरासरी।
दिखाय दीन दौर-दौर बीरता बराबरी।
जितैक राँमभ्रात जोप कोप कै क्रंतत[6] ज्यूँ।
तजे सु वक्र तुंड[7] पै दिढाय व्याल-दंत[8] ज्यूँ ॥२४८६
ऊभैहू बीर येक से लरे-भिरे लगालगी।
कराल झाल क्रुद्ध की जगी हीयै जगाजगी।

---

१ बख्तर। २ चर्म=चमड़ी। ३ विमुख। ४ पास। ५ इभारि=सिंह। ६ यमराज। ७ मुख। ८ सर्पदन्त।

लरंत देख लच्छनं बभीखनं परचौ बिचा।
भतीज कौं बकार कै चलाय कै अरचौ चचा ॥२४८७
भतीज औ चचा भिरे करूर पूर क्रुद्ध में।
रिसाय[1] कै खरे रहे जमाय पाय जुद्ध में।
बभीखनं बिलोक तीन बाँन दै तरा-तरी।
जुट्यौ सु जाय जुत्थपं सँभार कै सरासरी ॥२४८८
बभीखनं अगैं बह्यौ गहै गदा गरूर सौं।
तुरंग अंग ताक कै दई मिलाय दूर सौं।
मुरे तुरंग मार सौं गदा प्रहार सौं गिरे।
निहार मेघनादहू अभीत रथ्थ ऊतरे ॥२४८९
गहाय सक्ति गेर नै चलाय ऊपरै चचा।
बलाय केव धूरसी बिलोक लच्छनं बिचा[2]।
अचूक बाँन दै अनेक तोर कीन टूक के।
गिराय भूँम गोम सौं ऊबार जाग ऊक के ॥२४९०
चचा लये चुने-चुने दये भतीज देख कै।
जुरे हीयै कलंब[3] जाय छेद कीन छेक कै।
रिसाय पुत्र-रावनं कृतंत-बाँन[4] काढ़ कै।
बभीखनं दयौ बकार चाप बीच चाढ़ कै ॥२४९१
लख्यौ कलंब लच्छनं कृतंत-मंत्र कारनं।
कलब लै कुबेर कौं बहाय कीन बारनं[5]।
अरुझ्झ बाँन ऊपरा धरा परे धकाधकी।
जहाँ सु इंद्रजीत कै परी हीयै सकापकी[6] ॥२४९२
अराध रुद्र-अस्त्र मेघनाद बाँन मुक्कयौ।
लख्यौ बलाय लच्छनं झरंत द्रंग झुक्कयौ।
निकार बारनास्त्र[7] लेय लच्छनं लगाय कै।
अरुझ्झ कै गिरैं ऊभै भये सुनष्ट भाय कै ॥२४९३
उठाय अग्नि-अस्त्र कौं मंदोदरी-तनै मुक्यौ।
जहाँ सु सूरजास्त्र जोर राँम बंधु नै रुक्यौ।

१ क्रोधित होकर। २ बीच में। ३ बाण। ४ यम-अभिमंत्रित बाण। ५ रोकना
६ उथल-पुथल। ७ वरुण-अस्त्र।

जहाँ सु इंद्रजीत आसुराख पेल आच सौं।
महेश्वराख लच्छनं जही हन्यौ सुजाच सौं ॥२४९४
निसंक[1] बीर मेघनाद बंधु-राँम ज्यूँ बली।
रूपे सु पंज[2] रोप कै थपे अनी थली-थली।
जुरे सु जुद्ध जोवनं[3] अदेव-देव आय कै।
मिलाय आसमाँन में बिमाँन कौं बढ़ाय कै ॥२४९५
सुरिंद्रहू मुनिंद्र स्याहि राँमभ्रात संजुरे।
गिरीस देख गौरहू असीस बाच उच्चरें।
बढाय ओज[4] बीरता सधीरता सँभाय कै।
तुंनीर काढ तिच्छनं चुन्यौ कलब चाहि कै ॥२४९६
बँधे सुबर्न बंध संध-संध में समो-समा।
सुबर्न बाज-संजुता अनूँप-रूप ओपमा।
बिसैल ब्याल बेख ज्वाल-माल ज्यूँ जराँवनौ।
बिपक्ष लक्ष बेध दीठ देख तै डराँवनौ ॥२४९७
चढाय चाप चाँप कै कलंब ताँन काँन लौं।
निगर्न[5] कौं निछेद कै पीयौ सुपष्ट प्राँन लौं।
ऊड़ाय सीस ऊपरा गिराय दीन गात कौं।
लई सु जीत लछ्छनं[6] बिख्यात राख बात कौं ॥२४९८

दोहा

इंद्रजीत इंद्राख सौं, लछ्छन मारयौ लाग।
सुर मुनिंद्र बरखे[7] सुमन, राँम लखन अनुराग ॥२४९९
साल मिट्यौ सुरराज कौ, सब दिसपाल सहेत।
भये खुसी कपि भालहू, खल बिडार रन-खेत ॥२५००
सकल कीस लछमन सहित, डरे न आये देख।
बढ्यौ हरख रघुबीर कै, पाँनपै भ्रात परेख ॥२५०१
खबर कही रन-खेत की, राँम बभीखन राज।
मोद पाय लछमन मिले, सुध लै कीस-समाज ॥२५०२

१ निःशंक। २ पग=पैर। ३ देखने। ४ ओज=बल, तेज। ५ गरदन।
६ मू० प्र० लछ्छ। ७ वर्षा की।

भज निकुंभला-भवन[1] सौं, राखस जाती रोय।
लंक गये फल अजय लै, करत कूक सह कोय ॥२५०३
सोच्च राँम कौ समट कै, गयौ लंकपति ग्रेह।
हा-हा-रव[2] होवन लग्यौ, आठू दिसा अछेह ॥२५०४
मत्री पुरजन सब मिले, पहुचे राँवन पास।
मेघनाद सुन मरन कौं, अत चित भये ऊदास ॥२५०५
पुरजन अरु मंत्री प्रतै, बोल्यौ राँवन बात।
मोर ग्रेह बिच में थली, ईह कीनौ ऊतपात ॥२५०६
आज मेथली मार अब राँम करहुगौ रार[3]।
राँम देखतै राँम कौ, भ्राता भूँजहु भार ॥२५०७
खल ऊठ्यौ लै खड़ग कौं, सीता करन संघार।
औरन बोल्यौ येक हु, देख क्रद्ध दरबार ॥२५०८
महाँपारस मंत्रो महाँ सतबादी रु सयाँन।
बोल्यौ नीत बिचार कै, प्रथम जोर जुग पाँन[4] ॥२५०९
बेद भेद जाँनत बिवध, राजा राँवन राज।
कहनी ऊचत न आप कौं, अनुचित बाँनी आज ॥२५१०
राँम लखन कौ मारनौ, उचित बात है येहु।
आज चतुर्दसि तिथ अबै, लरनौ हम लख लेहु ॥२५११
काल अँमावस कौं करहु, प्रहरन काज प्रयाँन।
राँम लखन कौं हनहु रन, येह सिद्ध अवसान ॥२५१२

छंद त्रोटक

सीय-मारन-कारन रोख सज्यौ, महाँपारस बात सुनी मुरभ्यौ।
सीय-मारन बात तजी सब ही, जीय आग बलाय जगी जब ही ॥२५१३
मरनै सौ बचे केऊ क्लीवमतो[5], परचाय बुलायेऊ सैनपती।
जिन कौं दीय सासन[6] जोर जहीं, रनवास त्रीया हम रोय रही ॥२५१४
सुसताय सबै समुझावहुगौ, जुध कौं करनै कल जावहुगौ।
जुध कौं करनैं कपि साथ जती, प्रतनाजुत[7] जावहु सैनपती ॥२५१५

१ देवी के मंदिर। २ हाहाकार-शब्द। ३ युद्ध। ४ दोनों हाथ। ५ कायर।
६ आज्ञा। ७ पृतनाजुत=सेना के साथ।

सुन सासन लंकपती सबहो, जुध काज तयार भये जबही।
समझै कंऊ लागेऊ सिंदन[1] कौं, गड़ ड़ारन पीठ गयंदन कौं ॥२५१६
पुन बाज पवीन मड़े पखरा[2], तन-त्राँन सझे भटहू तखरा।
अबला ग्रह अंधुस सालन की, कर कूंत लहे कर बालन की ॥२५१७
सर चाप निखग सझे सगरै, दल संगर-खेत लई डगरै[3]।
बिड़रावन[4] दुंदभी ढोल बजे, गजघंट ठनंकन नाद गजे ॥२५१८
जुर चालेऊ सैनप-सैन जहीं, रथ-नेमोय सौं धर धूज रही।
कपि सैन सौं जाय मिले कल कौं, दल के पति हाक मिले दल कौं ॥२५१९
जिन कूंत कता लीय जूझन कौं, सुत-राँवन बैर सरूझन कौं।
तिन मार दई परघातन की, कढ ज्वाल हुतासन की कनकी[5] ॥२५२०
केऊ बाँन तजे करर-करर, झर भाद्रव मेघ ज्युंही झरर।
त्रयसीरख औ तरवारन की, कर भालन मार कुठारन की ॥२५२१
कपि-सैन असंखन देख कुपे, रन कौं करनै सब आय रुपे।
सिखरी[6] गहि श्रंग[7] जुरे सिगरे, कररी पथराँन की मार करे ॥२५२२
बहु बृछ्छन की कर कै बरसा, समिले कपि साथ जहाँ सरसा।
चढ खेत अरे समुहा चल कै, मनु देव-अदेव जुरे मिल कै ॥२५२३
अत सोर भयौ बिव ओरन सौं, हुररै मनु सिंधु हिलोरन सौं।
चढ डंमर खेह[8] बितान छयौ, भुय[9] अंबर लौं ईक रूप भयौ ॥२५२४
मिल बंदर राखस खेत मँहो, जल ज्यूं पय में बिलगाय जँहीं।
मंड मार ऊभै दल रार मची, गहरी रत[10] धारन गार गची ॥२५२५
निकसी मिल नालन निझ्झरनी, भय कातर कौं हीय में भरनी।
जुग सैन करारन रूप जही, कट कुंजर पंजर वाज कही ॥२५२६
केऊ हाड़ भये किरका-किरका, धर छाय रही सोई धूसरका।
बिच जावत बार सिवार बहे, रचना रथ फेन दिखाय रहे ॥२५२७
तिर चालेऊ पाव तुरंगन के, मिल बिस्वर ऊँट मतंगन के।
झख नक्र तथा अवहार ज्युहीं, तहाँ ढालन कछ्छप रूप त्युहीं ॥२५२८
भुज जावत केक भुजंगम कै, सरसीरूह पानन संगम कै।
मिल जंबुक साद[11] मृगादन कौ, बन टक्कर कक्कर बादन कौं ॥२५२९

१ स्यंदन=रथ। २ ऊपर डालने का कपड़ा। ३ मार्ग। ४ भयानक। ५ चिनगारी। ६ पर्वत। ७ चोटी। ८ धूल=मिट्टी। ९ भूमि। १० रक्त, खून। ११ शब्द। १२ कमल।

चहकावत चिल्लन व्यौंम चड़ै, अवली मनु ऊद्ध बकोट उड़ै।
भख आँमख[1] कारन भीर भई, जहाँ काक जुरे जल काक ज्युँही ॥२५३०
भुय पै भयौ कर्दम भेजन कौ, केऊ बुक्कन मेल करेजन कौ।
तन कोनप[2] गिद्ध टटोरत है, लग चाँचन सौं चख लोरत है ॥२५३१
केऊ पाँतन पाँत जुरी किलकै, मुकता जनु हंस चुगं मिलकै।
जहाँ जुग्गँन[3] भूत बिताल जुरे, भरपूर प्रवासीय जेम भिरे ॥२५३२
रन राँवन कै दल ऐम रच्यौ, महि जाँनक[4] चातुरमास मच्यौ।
जहाँ कोस अँनी मिल रार जुरी, तन भीज गये रत धार तरी ॥२५३३
जहाँ कूदन लागेऊ बीर जई, नटहू के बटा[5] जिम रीत नई।
धुज-डंड मरोरत फार धुजा, समिलै केऊ घोरन देत सजा ॥२५३४
खल आयुध झेल खसोटत है, लग लातन कीतन[6] लोटत है।
केऊ झूँम कै दाँतन सौं कररै, झकझोर भुजा नख सौं झररै ॥२५३५
कपि आँनन काटत काँनन कौं, पग तोरत केतक पाँनन कौ।
ईक राकस देखत सौं ऊररै, धक धूँन पहारन कौं धररै ॥२५३६
कर बृछ्छन मार प्रकंडन की, झकझोरन भौरन भुंडन की।
कपिहू बरजोर रुपे कल[7] कौं, द्रढ मार दई खल के दल कौं ॥२५३७
जुर राखसहू मिल जुद्ध जहाँ, तितरी-बितरी खल सैन तहाँ।
केऊ मारन लागेऊ कूंत कती, अबला तिरसूल अरू सकती ॥२५३८
केऊ बाँनन वार लगे करनै, दल कीसन भाल लगे दरनै।
जुर कीस गये सब रांम जितै, अवलोक ऊठे रघुवीर ईतै ॥२५३९
लरनै रन लागेऊ चाप लीयें, क्रतहस्त[8] भयंकर रूप कीयै।
सरसाय जहाँ सर पै सर दै, झुक मेघ मनौ झर पै झर दै ॥२५४०
दल राखस देख दसू दिस में, बिच कीस अनी लख कै बस में।
जहाँ गंधृव अस्त्र करी जुकती[9], ऊपजाय कै बीरकला ऊकती ॥२५४१
कर रोष जबै तिह मोख[10] करयौ, गन राखस ऊपर जाय गिरयौ।
खननाहट वज्रीय खग्गन की, बननाहट चक्र नरग्गन की ॥२५४२
सननाहट बाँनन संगम की, भननाहट भींम भुजंगम की।
घननाहट घूम घघक्कन की, छननाहट आग चछ्छंकन की ॥२५४३

१ आमिष = मांस। २ मृतकों के शरीर। ३ योगिनी। ४ मानो। ५ बेटा = नटपुत्र। ६ कितने ही। ७ युद्ध। ८ निपुण। ९ युक्ति। १० छोड़ा, मुक्त किया।

गननाहट मंडीय गोलन की, उमँड़ी बरखा मनु ओलन की।
तेऊ राखस जाय लगे तन में, बिलग्यौ मनु दाव[1] महाँ बन में ॥२५४४
चकचूरन होय चलाचल में, प्रतना खल तूट परी पल में।
पंचदून सहस्र सतांग परे, गजहू नव दून हजार गिरे ॥२५४५
अवदाहु हजार तुरग छुटे, दुई लाख पयादीय सैन दटे।
ईक गंधृवअस्त्र सों सैन ईती. परचंड प्रहारीय औधपती[2] ॥२५४६
बल सौं रन राँम करयौ बहुरै[3], जिनकी गनती कहतैं न जुरै।
घुमड़े रन राघव च्यार घरी[4], भयदायक दीसत भूँम भरी ॥२५४७
घट घायल घूँमत साथ घनौ, मद छाक पीयै मतवारे मनौ।
ध्रुव तूट परे जिन के घर कौं, सोई मारहि मार करें सुर कौं ॥२५४८
दसही दिस रूंड दिखावत है, धर[5] पै दस ही दिस धावत है।
तलफै केऊ अंग तुषार तुटे, फरराट करें मुख नाक फटे ॥ २५४९
खर ऊष्ट्र[6] विस्वर अंग खुले. दुपि[7] चक्कर खावत पाव डुले।
ऊरझे केऊ तांतन आंतन कौं, दम लेत टिकाय कै दाँतन कौं ॥ २५५०
रथ केक[8] रथी बिन छूट रहे, बिन सूत तुरंगम जात बहे।
रन देख चलाकीय राघव की, जनु आंच लगी दल जाग्रव की ॥२५५१
दव लागत ही बन देख दसा, सबही मृग भागत सिंघ सुसा।
खल भागेऊ एम पुरी खिसकै, दल सैनप दौर दसौं दिस कै ॥२५५२
रघुबीर कों जीत भई रन में, मुद भालन कोस भयौ मन में।
रिखी गंधृव देव लखे रचना, बिरदाय[9] प्रसंस कहे बचना ॥२५५३
कपिराज सौं श्रीरघुबीर कही, सुनीयै जमुवाँनहू आद सही।
सिव जाँनत अस्त्र ईहै सकती, अवगाहन में हूँ करयौ ऊकती ॥२५५४
सुन कै कपि होय प्रसंन सबै, जय बाँन कौं बोलन लागे जबै।
ईत राघव के रन सौं ऊबरी, प्रतना[10] पहुँची कछु लंक पुरी ॥२२५५
तन खड़ बिहंड भये तिनके, जीय की न सँभार रही जिन के।
लख कै पुरवासीय घाव लगै, सुत मात पिता तीय भ्रात सगे ॥२५५६
घर लागेऊ घावन धोवन कौं, रिन-खेत[11] रहे जिन रोवन कौं।
घर ही घर सोक बढ्यौ घुलकै, जुध बात कहै मिलकै-जुलकै ॥२५५७

१ दावाग्नि। २ राम। ३ फिर। ४ घड़ी। ५ धरा = पृथ्वी। ६ ऊँट।
७ हाथी। ८ कई। ९ गुणगान। १० सेना। ११ रण।

निरलाज अभागीन सूपनखा, खर दूखन कौं कीय जास खखा।
पुन आय मिली गढ लंकपती, कलहंतरता[1] कर कै कुमती ॥२५५८

कलही नृपहू छल कौं करता, बन सौं सीय आँन पतीबरता।
करनै तीय जाहि चहै कपटी, हुव बृद्ध घनौ जिम बुद्धि हटी ॥२५५९

सुत भ्रात मराय सगे सबही, अविवेक न त्यागत है अबही।
प्रतना मरगी मर सैनपती, भट भीर रही न कछू भरती ॥२५६०

बिधवा तीय कोऊक बृध[2] बचे, केऊ घायल काहिल बीर कचे[3]।
जुध काज चहै सोऊ जावनहू, रन-खेत मरौ ईह रावनहू ॥२५६१

चकचूर[4] भई जिनकी छतीयाँ, बिललाय करैं बिधवा ब्रतीयाँ।
परजा नर नार जिते पुर कै, कललाहट हाय रहे कर कै ॥२५६२

दोहा

पुरी लंक-निस दिन प्रतै, राग-रंग की रास[5]।
हाय-हाय होवन लगी, खल राँवन-ग्रह खास[6] ॥२५६३

राँनी सुत-तीय रौवनौ, खल सुन रह्यौ खिसाय।
ऊँधी[7] सासा[8] लेत ऊर, राँवन भूप रिसाय ॥२५६४

सचव महोदर अत सुघर, महाँ पारस भट मेल।
बिरूपाक्ष राखस बिकट, बोल्यौ लहि कै वेल ॥२५६५

सैन करावहु त्यार सब, बची लंकपुर बीच।
राँम-लखन-जुत मार रन, कपि-दल करहूँ कीच ॥२५६६

छंद वृद्धनाराच

सुन्यौ निदेस सालुरी निसंक निस्चरावली।
मिली गरूर मंड ग्रेह छंड कै गली-गली।
विलोक वीर वाहनी क्रतंत जेम कोप कै।
वकार वीर बुल्लयौ रिसाय पैर रोप कै ॥ २५६७

---

१ कलहप्रिया। २ वृद्ध। ३ कच्चे = अधूरे। ४ चूर-चूर। ५ लीला। ६ स्वयं। ७ उल्टी। ८ श्वासा = सांस।

जुगांत[1] मारतंड जेम चंड कंड[2] छंड कै।
चपेट रांमचंद्र मार लेहुँ जुद्ध मंड कै।
भतीज पुत्र भ्रात कै निकार बैर निश्चरा।
प्रजा प्रमोद पाय कै बसायहूँ बसुंधरा ॥२५६८
घटा-समान घूंम-घूंम चाप बाँन छूटहै।
अकास भूंम वारपार वृष्टि मंड बूठ है।
जितेक जर्न[3] लर्न[4] जांन मर्न कीस मंडहूँ।
सुबर्न पर्न संजुतं चछोह तीर छंडहूँ ॥२५६९
विपच्छ्छ रिच्छ्छ बाँनरा विधाँन लच्छ्छ बेध कै।
श्रँगाल गिद्ध भच्छ्छ सोख रार तच्छ्छ खेध कै।
भरे परे धरा-मँही निसूँभ ह्वै निसाचरा।
रवंत[5] नार रोय कै बिलाय सोक बिस्तरा ॥२५७०
अँगोछ पौंच[6] ऊद्धरू अनेक आँख आँसुआ।
जितेक जुथ्थ-जुथ्थपं जनाय कै जु-आजु-आ।
मिटाय सैन मर्कटो जटीस कौं जुहारहूँ।
छवयौ सु छोह चाक सौं धिवयौं सु धेक धारहूँ ॥२५७१
मरोर बीस पाँन मुच्छ्छ[7] तास खड्ग तोल कै।
निहाँर दंडनायका[8] बकार बाँन बोल कै।
निदेस सैन निश्चरी सुनाय देहु साथ कौं।
हलै हँमार हाजरी प्रचार कै प्रपात कौ ॥२५७२
सुनत सैंनधिक्ष[9] सूर बीर संग संजुरे।
जहाँ तहाँ जितै तितै घुमंड सौं भरे घिरे।
सतंग[10] कौं सझाय कै तुरंग जोर तक्खरा।
झुकाय कंध झूँसरीन पीठ डार पक्खरा ॥२५७३
बजाय कै अडंबरा[11] चल्यौ सु बीर छोह कै।
प्रमत्त गत्त पौरसेय रथ्थ कौं अरोह कै।
अनेक ह्वै असूचका[12] दिखाय भीत-दायका।
गुंजार काक गिद्धनी मंजार भूरमायका[13] ॥२५७४

---

१ युगान्त = प्रलय। २ बाण। ३ वृक्ष। ४ लड़ना। ५ विलखती है। ६ पोंछ कर। ७ मूछें। ८ सेनापति। ९ सेनाध्यक्ष। १० रथ। ११ जुझाऊ बाजे। १२ अपशकुन। १३ स्यार।

पताक्क तूट पौंन[1] सौं तुरंगहू तरेर कै।
धसे वहो बसुंधरा फसाय चक्र फेर कै।
परे सु अस्त्र-सस्त्र म्याँन वस्त्र मंगली।
ठये निकेत[2] ठौर-ठौर जंतु आय जंगली ॥२५७५
अनेक नाहि आदरे प्रयाँन विघ्न पेख कै।
जक्यौ न चित्त जोय कै धिक्यौ ऊफाँन वेख कै।
रथी अरोह रथ्थ कौं समथ्थ संग स्वारथी[3]।
अतीरथी[4] सधीर अंग मेल कै महाँरथी ॥२५७६
धुजाँन डंड धौर झुंड केत यौम झूँम कै।
गृहादहू नछत्र गेह चेह होत चूँम कै।
बिराव[5] घोर बिथुरयौ चढाव चक्र चाल सौं।
भ्रमाय कै बसुंधरा घुमाय घेर घाल सौं ॥२५७७
कराल व्यालकाल[6]-रूप मंद चाल मंडता।
समाँन सैल-माल सोह पिंड की प्रचंडता।
पवोन औ हवद्द[7] पीठ बैठ जुद्ध-वावरे।
बिरुद्ध काज बिप्फुरे अरोह कै ऊतावरे ॥२५७८
अनेक अस्ववार अस्व तत्तरे अरोह कै।
पजाय जीन पक्खरा लगाँम डार लोह कै।
हड्डड कै पड्डढ होय बर्मव्यूढ़[8] बीरहू।
ऊड़े सु बाग ऐंच कैं धरो न नेंक धीरहू ॥२५७९
पताल लौं प्रहार पाव धाव भोम धूज कै।
अमूझ पौन औ हटे गहीर व्योम गूँज कै।
करूर नाद केहरी रवंत सैन-रक्षका[9]।
धिकी सु आग ध्वेख[10] की अंगार-रूप अक्षका[11] ॥२५८०
कढी न कीव हाक केक जाक रोख काय कै।
वढी रजी वसुंधरा चढी अयास[12] छाय कै।
प्रभा रुकी पतंग दोह धूंधरी दिखाय कै।
डिगाय पाय दिक्करी[13] खिसाय चक्र खाय कै ॥२५८१

१ पवन। २ घर। ३ सारथि। ४ अतिरथी। ५ वैरभाव। ६ कालसर्प=यम। ७ हौदा। ८ बख्तर युक्त। ९ सेनापति। १० द्वेष। ११ आँख। १२ आकाश। १३ दिग्गज।

हजारसीस[१] हाल कै फनाँल भार फैल कै।
परे विचाल बंध पेल संध छूट सैल कै।
समुद्र-पाथ साथहू छिले मृजाद छोर कै।
ऊमंड आसपास कौं घुमंड सोर घोर कै।२५८२
कहै कितेक बात कीस साथ कौं सँघारहौं।
जती ऊभै जुहार कै प्रचार पार पारहौं।
कहै कितेक भाल कीस बीर ना बराबरी।
मरोर मीज मारहौं झपेट कै झराझरी॥२५८३
कहै कितेक क्रुद्ध सौ निहाँर जात निश्चरा।
जरूर भाग जाँहिगे चलाक कंतरा-चरा[२]।
अधीस लंक ऊच्चरचौ बकार जाहि बेर में।
बचै न सैन बंदरी ऊजासहू अँधेर में॥२५८४
सँभार होय सावधाँन ताँन चाँप तत्परा।
दिखाय हाथ मोद देहु कीस साथ कर्बुरा[३]।
ऊभै जती अभीत आज मारहूँ सलामली।
संमीक[४] रोक स्वास झीक बाँन दे झलाझली। २५८५
ईतैहू सेन आसरी ऊमंड औध-ईस पै।
अनीक औध-ईसहू धकाय लंकधीस पै।
ठयौ सु ठौर-ठौर पै मिलाप आप मेल सौं।
पखाँन[५] वृछ्छ ह्वै प्रहार छूट बाँन चाप सौं॥२५८६
बिजै बिराव बिथ्थुरचौ ईतैहू औध-ईंद्र[६] कौ।
अराव ज्यूँ बिजै ऊतै रचाय राकसिंद्र कौ।
महांन घोर मार मंड जोर कौं जमाय कै।
प्रहार पै प्रहार होत घाय कौं घुमाय कै॥२५८७
मुखा ऊचार मारमार रार पाव रोप कै।
अनंत[७] बीर आहुरे कृतंत-रूप कोप कै।
कपी सराहि कर्बुरा ऊभै करै ऊछाह सौं।
अटै सु एक एक सौं दटै न द्वेष दाह सौं॥२५८८

१ शेषनाग। २ कान्तारचर = बन में विचरण करने वाले, वानर। ३ राक्षस।
४ सम्यक् = अच्छी तरह से, निरन्तर। ५ पाषाण। ६ राम। ७ लक्ष्मण।

पछार मार पीस-पीस काट सीस कंधरा।
करयौ दुरूह मार कीच बीच में बसुंधरा।
कपाल[1] गाल भाल कूख[2] फोर-तोर फेर कै।
तराप अंत तंत[3] कौं खसोट दंत खेर कै ॥२५८६
कंकाल कालखंज[4] फेक बुक्क गुल्म बिख्खरै।
फटे कलोम[5] फिफरा निसार फेन निक्करै।
कराल नाद केहरी रबंत भाल रोख सौं।
अटे कपी ऊमंड कै थटे सु थोक-थोक सौं ॥२५९०
असेठ अंग आसरा[6] झपेट झाट झेर कौं।
लपेट बाज लेत ज्यौं चपेट चाटकेर[7] कौं।
बिहाल सैन बेख कै लंकेस छ्वेस लाय कै।
अरयौ समीक[8] सैन आय बाहुरयौ बलाय कै ॥२५९१
करी झरी कलंब की घटा-समाँन घूंम कै।
रुकाय बंदरावली लगी ससींम लूंम कै।
प्रहार कीन प्रस्तरा कराल का प्रकंड की।
गनै कहा पहार-गात दिघ्घ मार दंड की ॥२५९२
बिसेस बीसहाथ बीच पंच दून चापलै।
रहंस पंचदून रोप काढ कै कलाप कै।
अरोह बाँन-आसन[9] चछोह ताँन छूटनौ।
लजाय मेघ-लौरहू बढ़ाय बूंद बूठनौ ॥२५९३
जई सु जंग जोर सौं भिरंत कीस भाल सौं।
घुलाय रीस[10] घेर में झुलाय काल झाल सौं।
समूंह राँमचंद्र सैन मेघमाल ज्यूं मिल्यौ।
ऊमंड लंकईसहू प्रचंड पौंन ह्वै पिल्यौ ॥२५९४
प्रहार कंकपत्र कौं लहै न कीस लाग कौं।
सहै न अंग सल्लभा[11] असाध दीप्त आग कौं।
दुँआर धुंधकार देख सैल और सींव लै।
मदोनमत्तहू मतंग जात भाग जीव लै ॥२५९५

---

१ सिर। २ पेट। ३ अंतड़ी। ४ कलेजा। ५ तिल्ली। ६
७ चिड़िया। ८ समर = युद्ध। ९ धनुष। १० क्रोध। ११ शलभ = पतङ्ग।

परी गृहीत[1] आसपास आस सौं तपाय कै।
ऊसास लेय सास आस[2] घाव सौं अघाय कै।
भजाय सैन कीस भाल लंकधीस लाग कै।
ससीम रांमचंद्र सौं पहूँच रोस पाग कै ॥२५९६
सुग्रीव जू सुखेन कौं मुकाँम सौंप मोरचा।
रुकाय लंकराय कौं बलाय काल कौ बचा।
बिसाल हाथ बृच्छ लै कराल काल ज्यौं कुपे।
अनेक कीस आस पास रोष रंग ह्वै रूपे ॥२५९७
दई सु मार दंड की प्रचंड सैल लै पिले।
रिसाय कीसराय[3] कं चमूं नदीस ज्यूं छिले।
करूर नाद केहरी हरूर ह्वै हिलोर की।
रुकाय आसरावली[4] झपेट लाग झोर की ॥२५९८
प्रकंड ले अरीन पिंड दंड कीस यूं दहै।
सिफा[5] ऊखार साल पै बयार चंड ज्यूं बहै।
अरीन सीस ऊपरा परी झरी परवाँन की।
गरार गैन[6] सौं गिरै पतंग हाँन प्राँन की ॥२५९९
बिखंड ह्वै बिसेस बीर पिंड पार पाथरा।
मनीक इंद्रबज्र मार सैल कीन साथरा।
अभंग कीस-ईस अंग जोर जंग ह्वै जई।
भजाय जातुधाँन भीर लार लाग कै लई ॥२६००
बिरूप-अक्ष बीर पक्ष लंकधीस पाय कै।
सतंग[7] छोर संग कौं मतंग कौं मगाय कै।
अरोह कै चछोह आप चाप कौं चढ़ाय कै।
सुनाय नांम सालुरचौ बिरोध कौं बढाय कै ॥२६०१
निघोक[8] कीन सिंघनाद देख भीतदायका।
समेत सैन संम्मुहा निहार कीस नायका।

१ भंगदड़। २ आशु=शीघ्र, तत्काल। ३ वानरराज=सुग्रीव। ४. असुरावली=राक्षसगण। ५ शिफा=जड़। ६ गगन। ७ रथ। ८ निर्घोष।

करी झरी कलंब[1] कोप रोप पाव रार में।
प्रमोद सौं विनोद पाय वीर जाहि वार में ॥२६०२
मिलाय पाय मंडकै उमंड आसरावली।
घुमंड घूंम घेर में उछंकं उतावली।
सहे सुकंठ[2] बाँनसाल ज्वाल क्रुद्ध जागकै।
निघोक कीन सिंघनाद लार लाग लागकै ॥२६०३
बिसाल हाथ वृच्छ लै ससींम जाय सिंधुरा[3]।
कपोल पै प्रहार कीन कर्न-मूल कन्धरा।
धुक्यौ सु सीस धूंनकै रुकाय पाव रोपकै।
लख्यौ विरूपलोचना[4] जक्यौ गयंद जोपकै ॥२६०४
अलंग पीठ उतरचौ मलंग मार मेदनी[5]।
गहाय हाथ चर्म[6] गाढ चंद्रहास[7]-छेदनी।
बकारकै सुग्रींव वीर चाहि जुद्ध कौं चल्यौ।
सुग्रींवजू सिला संभार धाव ताहि पै घल्यौ ॥२६०५
बचाय चोट बीरबेस कूदकै कपीस की।
कपीस पै प्रहार कीन राच आँच रीस की।
महाँबलिष्ट पाय मोह छोह ह्वै छिनेक में।
मँडी सु मार मुष्टका दुरंत[8] छाय द्वैष कै ॥२६०६
हीयै प्रहार सौं हत्यौ न नैंक पाव निश्वरा।
क्रपाँन झार क्रुद्ध ह्वै भिरचौ महाँभयंकरा।
कट्यौ सुग्रींव बर्म कौं गिरचौ बिछूट[9] गात कौं।
पछार भूंम पार कै लगाय मार लात कौं ॥२६०७
कपीस ऊठ होय क्रुद्ध जूट जुद्ध जोर सौं।
समाँन बज्र सौं धकै घुमंड सोर घोर सौं।
प्रहार लात कीन पै बचाय चोट कर्बुरा।
हँनी सु मुष्टका हीयै दबाय दौर दब्बरा ॥२६०८

---

१ बाण। २ सुग्रीव। ३ हाथी। ४ विरूपाक्ष। ५ पृथ्वी। ६ ढाल। ७ तलवार। ८ दुष्ट, अतिकठोर। ९ अलग होकर। १० राक्षस।

खिसाय कीसनाथ खीज लात को ललाट में।
प्रकोप कीन प्रेर पाव घेर बज्र घाट में।
पर्यौ धरा पसार पाव नैन कौं निकार कै।
कढ्यौ प्रवाह माँसकारि[1] फेफ नाक फार कै ॥२६०९

बिरूप-अक्ष ह्वै बिरूप फेन[2] आस फैल कै।
दिखात सो डरावनौ समाँन अग सैल कै।
रूकाय कीस पांव रोप जाहि बीर जोवनै।
निहार सैन निश्चरी रही सु लाग रोवनै ॥२६१०

बिजै अराव बिथ्थुरयौ निसंक कीस नाथ कौ।
ससंक हाय सब्द होय सौहि लंक साथ कौ।
कपीस औघईस कौं प्रमोद दै प्रभाव कौं।
ससोक लंकधीश कौ ऊपाय जै अभाव कौं ॥२६११

दोहा

कपिपति मार्यौ क्रुद्ध कर, विरूपाक्ष बरबीर।
बिलखत निसचर सोक बस, ऊर जस खोय अधीर ॥२६१२
जिह अवसर घहरात जुर, सोर करत बिव[3] सैन।
ऊभै ऊदध माँनहु अथग, लेग हिलोरन लैन ॥२६१३
बिरूपाक्ष कौं सोक बपु, दाहत जेम निदाघ[4]।
होय दसकंधर ह्वैगयौ, तैसैं सुसक तड़ाग[5] ॥२६१४

छंद त्रोटक

अत सोक पुलस्त[6] बढ्यौ ऊरकौं, दरसाय कै बोल महोदर कौं।
कपिराज ईहै मम सैन कटी, अह जाँनीयै रीत भई ऊलटी ॥२६१५
जय आस तिहारेई हाथ जई, तुम रोख[7] कै मारहु सैन तई।
परचंड दिखाबहु पौरुष कौं, दलकोस मिटावहु मो दुख कौं ॥२

१ रक्त। २ झाग, बुदबुद। ३ द्वय=दोनों। ४ ग्रीष्मकाल। ५ तालाब। ६ रावण। ७ क्रुद्ध हो।

बरबीर उजालहु बक्षर[1] कौं, ईधके कहा भाखहुँ अक्षर कौं।
समीयौ[2] ऊपकार ईहीं समुभौ, संग घोर बरूथनो[3] बीर सभौ ॥२६१७
तन त्रासत आँच लगै ततीयाँ[4], चिरकाल सिरावहु मो छतीयाँ।
हित बात ऊचार हरोलीय सौं, बिरदाय[5] अमोलीय बोलीय सौं ॥२६१८
सुन कथ्थ महोदर आँनन सौं, द्रग देख ऊचार दसाँनन सौं।
जुरकै रन जेर करूँ जंम कौं, पुन देखहु मोर पराक्रँम कौं ॥२६१९
जुर माँरहुगो रघुनाथ जती, कपिराज कहा ईह फौज किती।
पग मांड करूँ प्रबिदारमकौं, सभ आवत सत्रु संघारन कौं ॥२६२०
कहिकै ईह आतुर गौन करयौ, धनुबाँन उठायकै हाथ धरयौ।
धर ध्वेख[6] धस्यौ ऊर रीस धिखी, सलभा[7] जनुं जावत बीच सिखी[8] ॥२६२१
सभ संगर[9] साँमीय सासन सौं, सर सौंध चलाय सरासन सौं।
दल बंदर कै बहु मार दई, भुव अंबर में सर भीर भई ॥२६२२
तरु कीस लये ईम हाथ तरै, भुक ताप निदाघहु पात भरै।
पग मांड रहै तन पाँनप सौं, बरीआई[10] की रीत गही बपु सौं ॥२६२३
समिले कपि लैकर हाथ सिला, मुहमेज निसाचर साथ मिला।
घन जेम घुमंडीय जास घटी, कर कोह[11] बिरोधीय फौज कटी ॥२६२४
जब देख महोदर क्रोध जग्यौ, अरी साभन काज होयं ऊमग्यौ।
सर स्वर्न पंखारन[12] के सबही, तक मारन कीस लग्यौ तबही ॥२६२५
पग जंघहु संग कटी पिडुरी, अरी हाथ कटे रु कटी अँगुरी।
कपि सैन कौं पींड़त मार करी, ध्रुव धीरज कोऊ न बीर धरी ॥२६२६
दसहू दिस भाग गये डरकै, लहि भीत सुग्रींव के पीठ लुकै।
कपिराज पलायन देख कपी, थिर पायन रोप कै सैन थपी ॥२६२७
समिले कर लिन्नीय हाथ सिला, घट दुज्जन ऊपर घाव घला।
तिह देख महोदर आवत ही, सर मार बिखंड करी सबही ॥२६२८
पुहमी पै परी पुरजा-पुरजा, ऊतरी लख चिल्लनी मृतु अजा।
कपिराज लखी कृतहस्त कला, बिथुरी जीय में हीय कोह बला ॥२६२९
तरू दिघ्घ ऊखार महाँ तमक्यौ, मन मोद महोदर सीस मुक्यौ।
कीय खंड बिहंडहु कंडन सौं पुहमी पर पूर प्रकंडन[13] सौं ॥२६३०

१ वख्तर। २ सामयिक। ३ सेना। ४ गर्म, उष्ण। ५ यशगाकर। ६ द्वेष। ७ चिनगारी। ८ अग्नि। ९ युद्ध। १० जबर्दस्ती। ११ क्रोध। १२ पंख वाले। १३ बाण।

खल मारन कौं कपिराज खरे, पर येक ऊपाय न पार परे।
सरसाल महोदर अंग सहे, रन में तहाँ पाय न रोप रहे ॥२६३१
परघा कर लिन्नोय भूँम परी, कर ताहि ऊठाय कै मार करी।
तन तूट तुरंगन लागत ही, गिर जाय परे जहाँ मृतु गही ॥२६३२
रथ त्याग महोदर खेत रुप्यौ, कल[1] कारन जाँन भुजंग कुप्यौ।
गहि कै सिलसार गढंत गदा, बरजोर सुग्रींव दिसी बगदा[2] ॥२६३३
ऊर कोप प्रचंड हु बीर अरे, जुग तंडत माँनहु संड[3] जुरे।
ईत पर्घ[4] ऊतै हु गदा ऊजरी, बीय बारध[5] ज्यौं चमकै बिजुरी ॥२६३४
बढकै हीय माँनहु क्रोध बला, जगमग्ग प्रगट्टीय आग ज्वला।
ईक पै ईक ताकत दाव ऊभै, चित कंटक बैर कौ भाव चुभै ॥२६३५
गरज्यौ निसचार चलाय गदा, तहाँ देख कपीस प्रहार तदा।
परघा कर भालत हाँप छटी, चकचूर भई दहुँ हाथ छुटी ॥२६३६
परघारु गदा जब टूट परी, जुग बीरन कै ऊर आग जरी।
कपिराज परयौ लख कै करमें, ईक मूसल लै झटक्यौ ऊर में ॥२६३७
गहि हाथ महोदर और गदा, पर फेर चलाईय मृत्युप्रदा।
दहुँ की भटभेर[6] भई दूसरी, ऊड़ दूँग झरी नभ सौं ऊसरी ॥२६३८
जुग आयुध खूट परे जहवाँ, तमक्यौ तन खेत भिरे तँहवाँ।
मिल मुष्ठ अभीक्षन[7] मार मची, रत रोख जुतै जुग रार रची ॥२६३९
झुक झूँमत झूँमत लै झटकै, नृत बीर जयंत मँड्यौ नट कै।
रट कै मनु सिंघ बराह रुपे, जुटकै किधु भींम भुजग जुपे ॥२६४०
जुग जेठीय की मनु जोर जुरी, करदंत अरे किधु दोय करी।
लग मार अपारहु लातन की, हुय भेट चपेटन हाथन की ॥२६४१
केऊ बार करार[8] नियुद्ध करे गहि एक कौं एकही भूँम गिरे।
ऊठ फेर खरे हुय आतुरता, किनहूँ न लही हीय कातरता ॥२६४२
पुन देख महोदर पास परो, सझ हाथ क्रपाँन गही सफुरी[9]।
असि[10] खेटक[11] लै कपिराज ईतै, मिल सग रमै फिर आप मतै ॥२६४३
विव वीर सधीर प्रबींन बली, खग खेटक खेल रच्यौ खुरली।
केऊ घाव प्रहारत दाव करै, ऊभरै ऊर मंडल बाँध अरै ॥२६३३

१ कलह, कलि=पप, युद्ध। २ वापस आया। ३ सांड। ४ लुहांगी। ५ वारिधि=समुद्र। ६ मुठभेड़। ७ अभीक्ष्ण=बार-बार। ८ कठोर। ९ ढाल। १० तलदार। ११ एक प्रकार का शस्त्र अथवा युद्ध का खेल।

छित[1] चंचच पाव छुऐं न छुऐं, दरसातई लात के चक्र दुऐं।
भट भूँम ऊलंघ मलंग[2] भरै, केऊ दाव सिवाँन बिहंग करै ॥२६४५
ढिग ओट[3] रचावत ढालन सौं, कर चोट करै करवालन[4] सौं।
भट और भरै ऊर भेखन कौं, दहूँ बीर लगे रन देखन कौं ॥ २६४६
अवसान महोदर कीन ईतै, कपिराज कौं घाव अचाय कितै।
भटकी खग फूल सु बाढ़ झरी, खटकी सोई कंकट[5] सीस खरी ॥२६४७
अटकी कटकायल[6] में ऊरझी, समल्यौ तऊ फेर नही सुरझी।
नम लागेऊ ताहि निकारन कौं, मन कीसपती कीय मारन कौं ॥२६४८
खग पै खग झार कटी खग कौं, पुहमी घिर माँड रहे पग कौं।
करवार कौं दूसर वार करचौ, सिरत्राँन[7] जुतै कट सीस परचौ ॥२६४९
धर जास गिरचौ धुकके धरनी, कपिराज की उग्र लखी करनी।
रन होय पराजय राँवन की, अवधेस कौं मोद ऊपावन की ॥२६५०
पतिलंक पलायन[8] देख परी, घट छोभ ऊपज्जीय जाहि घरी।
महाँपारस भेजीय नाहि मतै, परचायकै चाहिकै जुद्ध प्रतै ॥२६५१
वरखा फिर किन्नीय बाँनन की, द्रढ लाय कै भीर दसाँनन की।
भट क्रोध भयंकर भेस भयौ, दल अंगद कौ बिचलाय दयौ ॥२६५२
सरसाय कै मार घनै सर सौं, कीय मुंडन दूर कलेवर[9] सौं।
धर तूट परे सोई ढेरन सौं, सिखरी फल[10] जेम समोरन[11] सौं ॥२६५३
भुज कीस कटी सर भालन सौं, केऊ कंधर दै करवालन सौं।
भुजकोटर[12] जेम निखंग[13] भरी, पसवारन ऊपर मार परी ॥२६५४
महाँपारस की सर मार मिली, चकराय वलीमुख[14]-सैन चली।
लख कै जोय अंगद जाँन लई, भय सौ मम सैन विहाल भई ॥२६५५
हीय-सागर एहु उमंग हुई, तिथ पूँनम तोय[15] तरंग त्युहीं।
परघातन लै जुवराज पिला, कर माँनहु सूरजदेव-कला॥२६५६
गहिकै सोई मारीय सार[16] गठी, हमगीर सधीरहू वीर हठी।
पसरे रची स्वारयो भूँम परे, मुरछागत ह्वै तिह चेत मुरे ॥२६५७

१ छिति=भूमि। २ प्लवंग, वानर। ३ रक्षण। ४ तलवार। ५ वस्तर। ६ कड़ी-जोड़। ७ सिरत्राण=टोप, पग्घड़। ८ भगदड़। ९ शरीर। १० वृक्ष-फल। ११ वायु। १२ बगल, काँख। निषंग=तरकस। १४ वानर। १५ जल १६ लोहा।

घन जेम घुमंडीय रिछ्छ-घटा, चमकै भुज-कंवृक[1] जाँन छटा।
बयवृद्ध बिचार कै अशृ बह्यौ गरज्यौ पतिरिछ छुहु पछ्छ गह्यौ ॥२६५८
जुवराज सँभारीय पीठ जही, द्रढजाय बिपछ्छहि[2] मार दई।
सिल डार सतंग तुरंग समा, चकचूर करे मिल धूर छिमा[3] ॥२६५९
जितनै महापारस मोह जग्यौ, लख अंगद बाँनन दैन लग्यौ।
पुन बाँन दये त्रय रिछ्छरतो, भुजअंतर ताक करी भरतो ॥२६६०
द्रढ़ सायक मार गवाक्ष दई, रिस अंगद कै हीय छाय रही।
ऊमड्यौ परघा कर लै अरि पै, द्रुत-विद्रुत[4] बारध जेम दियै ॥२६६१
दहुँ हाथ सँभाय भ्रमाय दई, जुत जोर जमाय सभ्भाय जई।
धनु तूट परे सर हू धरनो, ऊछट्यौ सिरआँनहू ऊपरनो ॥२६६२
गवन्यौं सुत-बाल समीप गयौ, अर रीस पंचानन[5] रूप भयौ।
पग लात दई कनपाटीय पै, अत जोर सौं घोर ऊछाटीय पै ॥२६६३
तऊ ऊठ खरो हुअ कोह तप्यौ, सिल सार कुठार लीयै सरप्यौ।
द्रुत दाव सौं कधर वाँम दटा, चमक्यौ मनु बद्दर बीच छटा ॥२६६४
लख अंगद घाव बचाय लयौ, प्रितु बाल बली बल बाल पयौ।
ईक मुष्टक बाँध दई ऊर में, पर पार क्रतंत[6] गयौ पुर में ॥२६६५
महाँपारस अंगद हाथ मरे, पग छोर निसाचर भाज परे।
कपि साथ कंठीरव[7] गाज करचौ, भयदायक पतन दुग्ग भरचौ ॥२६६६

सोरठा

बिरूपाक्ष बर बीर, बीर महोदर कीन बध।
सुत जमजनक सधीर, जय पाई सुग्रींव जुग ॥२६६७
जाही बिध जुवराज, महाँपारस कीनो मुगत।
रामचंद्र महाराज, ऊपजायौ आनंद ऊर ॥२६६८
त्रय बीरन ततकाल,मृत्यु देख रन-ताल मह।
भय जुत लंक-भुआल[8] , ऊर बिहाल रिस ऊफनी ॥२६६९
सुभट सचव संघार, बिसतारचौं दुख लंक बिच।
राँम लखँन रच रार, मारहुंगौ दहुँ बीर मैं ॥२६७०

१ भुजा-भूषण। २ शत्रु। ३ क्षमा=भूमि। ४ विद्युद् द्युति=बिजली की चमक।
५ सिंह। ६ कृतान्त=यम। ७ सिंह। ८ भूपाल।

ईह कहि रांवन आप, मैटे सकल बिलाप मन।
चंड गह्यौ भुज चाप, कर सर लये कलाप कढ़ ॥२६७१

छंद हरगीतका

कर बंक भृकुट निसंक करकस[1] लंकपति रिस लायकैं।
पर जरचौं मानहु पौंन पावक ऊच्चरचौं अनखाय कैं।
तरु हरत रघुवर फूल तामहु सीया फल ईक सुंदरी।
सुग्रींव अंगद केसरी-सुत बिबध साखा बंदरी ॥२६७२
जुत जामवंत अनंत जूथप दुबिद और मयंदहू।
नल नील फेर सुखेन बलनिध गयमयंद गयंद हू।
वहु लाल बदन अनेक बनचर छदन[2] पल्लव सम छेय।
पाँनप पसाव प्रवाह सौं निरवाह भर सिर धर नये ॥२६७३
भुज चाप लै सर बृछ्छ-भेदी काष्ट-तट[3] मैं काटहू।
कर टूक कर करकीन कौ पुहमीन[4] ऊपर पाटहू।
वलकार सूत बकार कैं लीय बग्ग[5] हय ललकार कैं।
रनधीर खल रघुवीर पै हमगीर रथ हलकार कैं ॥२६७४
निरघोष नेमी चक्र नभ सव नदी पर्बंत संजुरा।
मृघ कोल[6] कुंजर चकत मति वढ़ तोल ड़ोल वसुंधरा[7]।
मुहमेज जाय मिलाय मुहरा अख राहु उभेल कै।
जम जोर घोर कठोर जाजुल ठौर-ठौरन ठेल कैं ॥२६७५
वनचरन लागे जरन वपु कल करन लागे कूह कौं।
पर धरन[8] ऊपर चरन पटकत मरन मंड़ समूह कौं।
जित तितहु दोरत फिरत जावत घिरत घूंमर घेर में।
अखरत ऊपर एक एकन ऊड़त धूर अँधेर में ॥२६७६
वांनक वनायौ अस्त्रवेवा खलहु खेधा खेत में।
मेधा[9] विना कपि मरन लागे राख मिल मिल रेत में।
भटकीस भीर भजाय कैं, गहराय रांवन गज्जयौ।
कस कंमर सर कोडंड लै सोई समर अद्भुत सझ्झयौ ॥२६७७
राजीव-लोचन रांम कौं सुभ संग देखे सेस कैं।
मनुं गुरड़-गांमी[10] मिले मघवा[11] धार दनुजन[12] ध्वेस कैं।

---

१ कर्कश। २ पत्ते। ३ पाती। ४ पृथ्वी। ५ वल्ग = लगाम। ६ सूअर।
७ भूमि। ८ भूमि। ९ बुद्धि। १० विष्णु। ११ इन्द्र। १२ दैत्य।

कोडंड लै भुजदंड कल बृहमंड चुंबत बाँकुरा।
टंकार कीय भंकार तव अरि कदन कौ मनु आँकुरा ॥२६७८
बिब छेद राँवन बान कौं ज्यासद्द[1] छायौ जोर कै।
घहराय जनु घनघोर गर्जत होय सिंधु हिलोर कै।
पाहार बीच दरार पर पर धरा लग्गीय धूजनै।
धरहरत माँनहुं घोम धुज[2] ध्रुव गैन लग्गीय गूंजनै ॥२६७९
सीस सुर श्री रघुबीर लछमन सबिध सरनहु[3] सरन में।
दसकंठ सोहत समर द्रग गृह राहुं माँनहु गृहन में।
वँह समय लछमन देख अवसर ऊदत भयेऊ ऊतावरे।
जाजुल्य पावक ज्वाल जिम सर दैन लगेऊ संतावरे ॥२६८०
क्रतहस्त[4] कर कोडंड लै सर तजेऊ राँवन सामनै।
मिल ऊद्ध दुद्धर[5] व्योम मारग भेट लग्गीय भ्राँमनै।
व्यवछेद भेद बिधान सौं द्रढ दक्षता दरसाय कै।
ईक एक सौं द्वै दोय सौं सर रोक लीय सरसाय कै ॥२६८१
द्रग देख लछमन दक्षता राँवन अचंभत ह्वै रह्यौ।
तज जंग चत्वर ताहि कौं गहि चाप रघुवर पै गयौ।
महि पाव जाहि सुमेर मंडीय बाँन छंडीय बेग सौं।
आसार धार ऊमंड कै मनु वृष्ट थंडीय मेघ सौं ॥२६८२
धनु छुटे सायक देख ध्रुव रघुबीर लागे रोकनै।
प्रासक[6] प्रभाव बताय पौरुख झटत लगे झोकनै।
केऊ बाँन कट्टीय क्रूंत सौं फुँकरन फेर फँनीन[7] से।
मुरझाय पर गये धरन मह ऊरझाय अंगृ अंनीन[8] से ॥२६८३
हमगीर लस्तक हाथ लै धनुबाँन तज अवधेसहू।
लकेश लगे लरन कौं मनु कल्प[9] सेस महेसहू।
बाँनावली बिद्या बिनै द्रग परसपर दिखरात है।
मगरूरता[10] जुत भृमत मंडल सूरता सरसात है ॥२६८४
सम सम हु लागे करन समहर रोप क्रम जम रूप सौं।
ऊद्धरन लागे अपुनपौ ईष्वाक[11] सरन अनूप सौं।

---

१ प्रत्यंचा शब्द। २ अग्नि। ३ वाण भी। ४ निपुण। ५ दुर्द्धर, कठिन। ६ भाले। ७ सर्प। ८ अग्रभाग। ९ प्रलय। १० घमण्ड। ११ इक्ष्वाकु।

ऊलाकाँन पात अनेक आक्रत होन लागे हेर कै।
मत चकित निसचर भये मरकट फिरत लोचन फेर कै ॥२६८५
बढ सोक बाँनन बेग सौं आकास भरगये ओघ सौं।
मनु मेघ मंड घमंड मिल जलबालका[1] द्युति जोग सौं।
पवमाँन[2] थक्कीय प्रेरता द्रग रूकीय जोत दिनेश की।
अंधारकारी घटा ऊठ भारी भयाँनक भेस की ॥२६८६
राँवन प्रहारत राँम पै राँमहु प्रहारत राँवनैं।
पर मार गारडपछ्छ[3] की दहु लगीय भेस डरावनैं।
बढ वृत्तहा[4] अरू वृत्तकै[5] भयकार सहचर जिम भयौ।
परबीन बिव रन धीर पनकै[6] छोह जिनकै हीय छयौ॥२६८७
रनखेत अमित अगाध अर्नव बढत बिव हथ बाहु सौं।
तन ऊभय तीव्र तरंड[7] से पाँनप[8] हु पाँन[9] प्रवाह सौं।
सोई मग्ग विचरत तजत सर ऊमका मानहु ऊभ्भली।
लंकेस ताक ललाट लछ्छहि[10] घात रघुवर कौं घली॥२६८८
सिर भेल लीय तिन सायकन जे अरे मुगट जटाँन में।
सम नीलनीरज संजुरे सल सूल सिव सटान में।
रौद्राख पढ रघुबीर हू भोक्यौ सु चाप भुकाय कै।
सर लगें कंकट पै सबै रनधीर निश्चरराय[11] कै ॥२६८९
घट नहिन दससिर भयौ घायल पती अवध परेख कै।
रथ चढ्यौ देख रिसाय कैं सर भाल दीय अवसेख कैं।
लागे तऊ तिह कीय निवारन परे पुहमी पैठ कै।
बिल माँहि जावत ज्यूँ बिलेसय[12] आड़ दौढहु ऐंठ कै ॥२६९०
कर अस्त्र निस्फल राँम के पर जरेऊ रिस लंकापती।
असुराख पढ़ प्रेर्यौ सु अदभुत महाँचंडहु दुरमती।
पुन बाँन तामह भए परगट सिंघ व्याघ्र मुखा सही।
मुख घोर-वासी[13]अरू मृघादन[14]आस[15]वृखदंसक[16]अही ॥२६९१

---

१ बिजली। २ पवन। ३ बाण। ४ इन्द्र। ५ वृत्रासुर। ६ प्रण।
७ नाव। ८ धनुष, ९ वायु। १० लक्ष्य। ११ रावण। १२ सर्प।
१३ स्यार। १४ जरख। १५ मुख। १६ बनबिलाव।

मुख गृहमृग[1] अरु केऊ ईहाँमृग[2] घृष्टमुख[3] गर्दभ घने।
सींचान मुख दाक्षाय[4] वाँयस बदन चिल्लन बक बने।
उल्लूक भृंगकलंग[5] आक्रत कंक आँनन भयकरा।
द्रग राँम रचना देखकै कीय क्रोध ऊपर कर्बुरा[6] ॥२६९२

अग्नास्त्र प्रेरत करचौ अद्भुत बाँन अग्न बिसाल के।
बिकराल द्रंग बिचाल वर्षत जरत जाजुल ज्वाल के।
मुख तरन बरन अनूँप तामें किरन आभा कल कली।
अर्ध इंदु आनन केऊक ऊलका वेख चंचल बीजली ॥२६९३

तम-तारका[7] गृह बदन केतक मिले नभ मारग मही।
असुरास्त्र राँवन नष्ट कीय वँह लूट जय रघुवर लही।
ऊरजस्व लख अवधेस कौ कपि भाल[8] जय जय रव करचौ।
सुग्रींव अंगद जूथपत सब चरन बंदन अनुसरचौ ॥२६९४

कर क्रुद्ध राँवन जुद्ध कारन मुद्ध मन गहि मोह कै।
मय दनुज क्रत लै अस्त्र मोख्यौ समुख राँम सँदोह कै।
सिल मुसल श्रंबला सूल[9] परसुध[10] भिंदपाल[11] भयंकरा।
अस पत्रका करवाल अंकुस वार अय मय मुदगरा ॥२६९५

चल सुसन[12] चंड ऊमंड चहुदिस असन[13] बरखा औसरी।
ऊलकाँन पात अँनेक आक्रत धृवन लागी धूसरी।
परबीन श्री रघुबीर पौरुख जाहि अवसर जाँन कै।
गंधर्व अस्त्र चलाय द्रुत गति मेट विघ्न महाँन कै ॥२६९६

पर जरेऊ राँवन आग पर द्रग देख छायौ द्वेख कै।
द्रढ़ अस्त्र कीन प्रयोग दूसर भूर-भेखन[14] भेष कै।
सिर धरचौ धन्वा सिजनी बलक्कार बीर बिधाँन सौं।
प्रज्वलत चक्र प्रचंड पावक ओघ भर ऊलकांन सौं ॥२६९७

तरराय तूठत तारका अरण्य ऊपर आय कै।
गरराय सूरज चंद्र गृह झरराय ताप झुकाय कै।
अनभांत के केऊ अमित आयुध गिरन लागै गैन सौं।
मरकटी सैना मोह लै अकुलाय पाय अचैन सौं ॥२६९८

---

१ कुत्ता। २ बरगड़ा। ३ सूकर। ४ गिद्ध। ५ गुलंगपक्षी। ६ राक्षस। ७ राहु। ८ रीछ। ९ त्रिशूल। १० फरसा। ११ भाला। १२ वायु। १३ वज्र। १४ भयंकर।

तिह अस्त्र कौ कीय हरन तिह छिन सरन असरन स्याँम जू।
दीय जुद्ध की फिर नींव द्रढ राजीवलोचन राँम जू।
कर कोप कै दसकंधरा रन रह्यौ पायन रोप कै।
पाथोद माँनहु ऊपफन्यौ जल ऊर्मिका गीत जोप कै ॥२६९९
दसबाँन दीय तन स्याँम सुंदर राँम देख रिसाय कै।
कोडंड निकसे कठन सौं जोई लगे सबही जाय कै।
भय नहिन[1] घायल अवध-भूपत समर विजई साँवरे।
कर क्रुद्ध मार कलंबकौं[2] जाजुल्य जोधा रन जुरे ॥२७००
सर्बांग घायल कीयौ दससिर अँनी तिछ्छन दै ईतै।
लख अनुज राँमहु लगे लरनै पेख अवसर रन प्रतै।
हीय कुप्त[3] सप्त हकार कै दीय दीप्त सर दरसाय कै।
धुज मनुस सिर धृत धारनी गुन ताँन लयेऊ गिराय कै ॥२७०१
सिर काट डार्यो सारथी ऊतमंग जुत कुँडल ईतै।
पूरन प्रभाव जताय पौरख मंड रन आपुन मतै।
गज सुँड सम कोडंड गुन जुत कंड[4] छंडे करार कै।
कीय खंड खंडन काटकै सौमित्र सिष्ट संवार कै ॥२७
कूदे बभीखन गदा लै कर देख अवसर दौर कै।
तोरे तुरंगन अष्ट तन जे लगे स्यंदन जोर कै।
तब विरथ राँवन होय तत्पर सक्ति लीन संभाय कै।
कीय बभीखन पै कोप कर कस दौर दीन दबाय कै ॥२७०३
लख वज्र सम जाजुल्य लछ्मन तीन सर लीय ताहि कौं।
तब टूक कीनी ताक कै जब परी धरनहु जाय कै।
सावर्न[5] भूखन संजुता कट पर मर्कट देख कै।
जय शब्द कीनौ जोर सौं विसतार मोद विसेख कै ॥२७०४
ऊलकाँन पात समेत अगनत विस्फुलंग हु वीखरे।
अद्भुत पराक्रम राँम-अनुजहि जोय राँवन पर जरे।
ईक सक्त घंटा आठ जुत मय दनुज माया मंडता।
चमकंत आभा चंचला प्रलयाग्न तेज प्रचंडता ॥२७०५

---

१ नहीं। २ बाण। ३ कुपित। ४ बाण। ५ सुवर्ण = सोना।

वँह लई हाथ ऊठाय कै मारन बभीखन कर मतौं।
दसकंध उद्धित देख द्रग सोमित्र पाँनप कीय छतौं।
धनु ताँन मोर बाँन ध्रुव दसकंठ लागे देह कै।
लंकेस ईह सोभा लई सम सूल संचर सेह कै ॥२७०६
ऊछ्छंड व्याकुल होय कै ऊर सक्ति छुंडन हो तक्यौ।
दुरबाद[1] लछ्मन देख कै बाचाल आँनन सौं बक्यौ।
मम भ्रात बंसकलंक[2] मारन करी धारन सक्त कौं।
आवत ईहै तुम ऊपरा रुच लाग पीवन रक्त कौं ॥२७०७
कर क्रोध मोघ अमोघ कीनी ताक राँवन तत्परा।
चालो स[3] बज्र समाँन चंचल भयेऊ सब्द भयंकरा।
तिह अधिष्ट त्रह देवता[4] तब राँम ऐसैं कहि रहै।
महांदुष्ट उद्यम होय मिथ्या छेम[5] मम बंधव चहै ॥२७०८
ईह कहत रघुवर रहे ईतनै जाय लागी जोर सौं।
दिक्करन विषधर सम दिखाई घंट रव घनघोर सौं।
कीय भेद हृदय भयंकरी छत[6] कीन फिर कीय छेह कौं।
निभ्भ दंत कालीनागनी डस त्याग जावत देह कौं ॥२७०९
अत तरल बासुकी जीह आक्रत सरल धर पर संचरी।
ईत गिरेऊ लखन अचेन ह्वै घट घाव लग ताही घरी।
लघु-भ्रात कौं अवधेस लख होय ऊदासीन दसा हुई।
अखियाँन अँसुवा धार ऊँमड़ी सोक व्याकुल सरसई ॥२७१०
भये मोह लीन महूर्त भर बहलाय दुख गह बीरता।
जाजुल्य अंतक-कल्प[7] ज्यौं धिक धार हीय में धीरता।
रन समय कुल रजपूत कौं करुना न कातरता कही।
बंसाँनुरीत बिचारकै जुत सूरता कोपै जँही ॥२७११
रन लगे करनैं ऊठ राघव वैर अवरज[8] वारनैं।
ईत टौर मरकट ऊँमड़े सोमित्र काज सँभारनें।
सर भार दीय राँवन सबै समले न कोय समीप कौं।
पर जात ऊड़ जैसे पतंगा देख पावक दीप कौं ॥२७१२

---

१ दुर्वचन। २ वंश का कलंक = विभीषण। ३ वह। ४ तीनों देवता = ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ५ क्षेत्र = कुशल। ६ क्षत। ७ प्रलयकाल। ८ छोटाभाई।

असमर्थ रांम लखो अनी-बनचर[1] बनी नहि बीरता।
धाये सु जब कौसलधनी धर हिद साहँस धीरता।
कर ऊलट पलट कनिष्ठ[2] काया सक्ति ऐंच सजोर कै।
कढ सूल हीय सौं दूर कीनी टूक टूकन तोरकै ॥२७१३
दसकंध अवसर देखकै सुकमार रांम सरीर कौं।
कर चाप चांप कजाक कल ही ताक दीने तीर कौं।
सर पीर सहि रघुबीर संचर[3] ऊर सधीर अपंपरा[4]।
कहि बज्रकंकट[5] अरु सुकंठहि[6] धर्म-रीत धुरंधरा ॥२७१४
विक्रांत बनचर अंह[7] बन सब घेर राखहु सेस कौं।
रनताल बीच संभाल रहीयै देख काल रु देस कौं।
बिललात चातक रहै बारध बूंद पवि न बार की।
तिह रीत दससिर प्रांन त्रसना रही ऊर बिच रार की ॥२७१५
खल खरौ[8] सोई रनखेत में द्रग सामनै दिखरात है।
मद अंध ईह दसकंध मारन अधिक चित अकुलात है।
मति चकित ह्वै नहीं थकत मेरी बखत पोरुख बिसतरी।
कर कै प्रतज्ञा कहत हूं द्रग देख बिपता दुख्तरी ॥२७१६
बिन रांम होय वसुंधरा अथवा क रांवन बिन ईही।
मम सत्य वाचा मांनीयै कछु बात मिथ्यां नहि कही।
बन बीच बास बिनास वैभव ग्रास तरुफल ग्रहन कौं।
कीनास[9] की फिर त्रास करकस घास छावत घरन कौं ॥२७१७
बीते सु बिपत बिलास में सब दिवस मास समास[10] ह्वै।
बिसवास बंधव सोया विहरत आस छांड़ उदास ह्वै।
तऊ कष्ट तन मन त्याग हु महांदुष्ट रांवन मार कै।
जिह कारनै कपि सैन जोरी ऊदध बांध ऊतार कै ॥२७१८
पद दै बभीखन लंकपत सब समर मारे निश्चरा।
सहचार[11] कर आयुध सब खल खेत में आगे खरा।
पर इष्ट गरुड़ भुजंग पै सुनीयै न ऊबरे थांन सौं।
अथवा न इष्ट भुजंग आगै जीवत कोऊ न जांन सौं ॥२७१९

१ वानर सेना। २ छोटा भाई। ३ शरीर। ४ अपार। ५ हनुमान। ६ सुग्रीव। ७ [illegible]। ८ खड़ा है। ९ यमराज। १० इकट्ठे। ११ युद्ध।

ईम गनहु लकअधीस की कुसलात मो आगे कहुँ।
लघु भ्रात कौ सब बैर लैहुँ दोष जुत दुसमन दहूँ।
मम बात सुन सब साथ मर्कट गिरी बैठ गुहान में।
गंधर्ब आदक सिद्धगन बढ देव छाय बिवान[1] में ॥२७२०
पुन राँम के सब राँमपन कौं लखहु नैनन लाय कै।
बिख्यात होय बसुंधरा जग आद अंत जताय कै।
हुकार जुत खल हेर कै टंकार कीय धनु ताँन कै।
सर तजेऊ श्रष्ट सँबार कै मनु वृष्ट मुदर[2] महाँन कै ॥२७२१
सम परसपर हथ वाह सरसत बीर रस बरखत बिहूँ।
कोडंड गुन भुजडंड करखत चंड रव भर दिस चहूँ।
मिल ऊभय ओरन जोर जोरन मोर तोरन मंड कै।
घर गिरन लागी मनहु धारा मेघ बार घुमंड कै ॥२७२२
मुहमेज राँवन मारदै अन-पार पीड़त कर वही।
समुझाय कीस सुखेन कौं कछु राँम बतीयाँ पुन कही।
महाँदुष्ट राँवन सक्त मारेऊ भ्रात लखन भुजंग ज्यौं।
अकुलाय पीड़ ऊछंड ह्वै जाहर अमेठत[3] अंग ज्यौं ॥२७२३
कलधोत[4] थंभ अनूप आकृत रुधर भीजे अरु रजी।
ऊर बीच मेरै आय कै अत सोक पीड़ा ऊपजी।
गिर धरन लागे धनुष गुन जुत बिगत बिसरत बाँन की।
अत बढी चिंता आय कै हीय बीररस कै हाँन की ॥२७२४
दु:स्वप्न देख डरावनै जग जीव ज्यूँ डरजात है।
दुख भ्रात कै मम जीव डरपत अमित गत अकुलात है।
तज अवधपुर चाले तहो बनवास हम पाछै बहे।
सुख पाय जाहि सनेह सौं रमतीत[5] ह्वै विचरत रहे ॥२७२५
सो लखन चाले स्वर्ग कौं पथ हमहु पीछै पाँयगे।
द्रुत ताहि बदलौ दैन कौ जमलोक में मिल जाँहिगे।
हीय लालसा जंय हेत की द्रढ़ दुष्ट राँवन दैहगे।
नहि ईधक यातै और निरनय कहा रसना कैहगे ॥२७२६

---

१ विमान। २ बादल। ३ ऐंठते हैं। ४ सुवर्ण। ५ रमते हुए।

मन मात कोसिल्या सुमंत्रा और पुरजन आद कै ।
मम सहित जांनहु भाल मर्कट परी घोर प्रमाद कै ।
जो टरै टारी जीव सों कीज न वीर विलंब को ।
कछु भ्रात लछमन जतन करीयै और नहि अवलंब को ॥२७२७
सुन बात रांम सुखैन हू बोले सु चित्त विचार कै ।
ईह समय नांहिन सोक को अब धीर रहीयैं धार कै ।
सोंमित्र आंनन इंदु सम जुत प्रभा दीसत जोईयैं ।
सम पत्र पंकज पंचसाखा द्रगहु सुंदर दो ईयैं[1] ॥२७२८
हीय सभर[2] स्वास सहेत है धरधरत छाती धूज कै ।
अत गाढ मुरछा आयगी ऊस्वांस मग्ग अरूझ कै ।
प्रभु अरज सुनीयें प्रजापालक सत्रुघातक सांवरे ।
ऊपचार करत विचार कै अब ऊठहै लखन ऊतावरे ॥२७२९
सुन अर्ज कीस सुखैन की विसवास रांम वसाय कै ।
ईत देख फेर सुखैन अवसर पवन-सुत परचाय कै ।
कथ[3] कही पूरब काल में जिम जांमवंत सुजांनीयै ।
जिह गिरी कों फिर जाईयें ओसधी आतुर आंनीयै ॥२७३०
चहू लसहू दछछन[4] अंग पै विःसल्य करनी वल्लरी ।
सुंघाव सों हूय घाव सब सुध सहज निकरै सल्लरी[5] ।
सावर्न करनी जिह समीपहि घाव भरहि सुघाव सों ।
संजीव करनी तिह समीप ही पुन सुंघाव प्रभाव सों ।।।२७३१
जीव उठत मृतक सरीर जंगम जाहि गुन ईह जांनीयें ।
महाओसधी संधांनी नांमक विध सुंघाय बखांनीयें ।
[illegible] हांयन प्रथम तें यह समन[6] जासों सो गुनी ।
ईह [illegible] कारज अंजनेई सोन सुत[7] मेरी गुनी ॥२७३२
सुन [illegible] रांम सुखेन को कृदे सु नंदन-केसरी[8] ।
पुन अंग नाही [illegible] के सुन और द्रग ढूंढो जरी ।
[illegible] करनी नीह प्रजांनी तेन अंग उतार कै ।
[illegible] [9] वीरत विषय रीत विचार कै ॥२७३३

१ देः । २ [illegible] हुई । ३ [illegible] । ४ [illegible] । ५ पीड़ा । ६ [illegible] । ७ [illegible] ।
८ [illegible] । ९ [illegible] ।

गवने सु सुरपथ[1] गैल कौं आये अफूठे ऊठ कै।
सब अंग पाव समेट कै कर ग्रहन कीनें कूट कै।
सोई मेल अगृ[2] सुखेन कै हनमत दिखाई हाजरी।
तुम जोय लौ ईह होय तत्पर जो जरूरी ह्वं जरी ॥२७३४
करकै प्रसंसा बजृकंकट जरी लीनी जोय कै।
कर चूर्न ताहि सुखेन कपि सूँघाय नाक समोय कै।
जागे सु लछमन नींद ज्यूं मिट पीर अंग मझार की।
अवधेस भेटे अंक सौं सब बनी बात सुधार की ॥२७३५
सुभ मिली क्रीत[3] सुखेन कौं हनमंत कै बलहेत की।
जय रांम लछ्छन ज्यांन की खल अजय त्यूं रनखेत की।
ईतनै पदारथ भये ऊद्यत जगे लछमन जाहि सौं।
सुग्रींव अंगद बभीखन सब तुरत छूटे त्राहि सौं ॥२७३६
बृंदारका[4] सब फूल बरखत मोद करखत हीय मँहीं।
बनचरन जय जय धुन बढी गिर व्योम भूतल गहगही।
अवधेस ऊर आँनंद सौं ह्वं गये पूरन हेत में।
लघुबीर हू रघुबीर कौं लख खेम जुत मिल खेत में ॥२७३७

दोहा

बोले लछमन सौं विहस, सजल नैन घनस्यांम।
खेम ऊठे रनखेत सौं, मुरछा छोर मुकाँम ॥२७३८
तुम बिन सीय जय सब तजी, अरु जीवन की आस।
दीखन लागौ जुगन[5] द्रग, ईह जग सकल ऊदास ॥२७३९
सिथल-बाँन[6] बोले समुझ, लछमन रांम निहार।
सत्य पराक्रम सांवरे, बोलहु नैक विचार ॥२७४०
करी प्रतज्ञा बध करन, रांवन निसचर राज।
जाकौ प्राकृत[7] मनुज ज्यूं, ऊर बीसर गये आज ॥२७४१
प्यारी जांनहु प्रांन सौं, सत्य प्रतज्ञा सोय।
प्रांन तजै जिह पालनै, जो नर ऊत्तम जोय ॥२७४२

---

१ आकाश। २ आगे। ३ कीर्त्ति। ४ देवता। ५ दोनों। ६ शिथिल वाणी। ७ सामान्य।

छंद मोतीदाँम

सुनी लघु-बंधव बात सकोय, गयौ दुख सो कहीयै रिस गोय।
कही फिर लछ्छन सौं ईह कथ्थ, अहो बरबीर भये असमथ्थ ॥२७४३
वळ्यौ तुम सोक होये प्रतिबंध, सनात। मातन आँतन संध।
पराक्रम देखहु मोर प्रभाव, कहा कहुँ आँनन आप कहाब ॥२७४४
पचानन तिछ्छन दंत प्रचार, बचै कोऊ बार न मत्त बिचार।
तती गुन बाँनन कौ कर त्याज, इहै खल राँवन बंचहै[1] आज ॥२७४५
जितै असताचल लौं रबी जाय, करूँ खल दुष्ट निकंदन काय।
ईती ना कहि पाँनन[2] चाप ऊचाय, झरी कोय बाँनन ताप भुकाय ॥२७४६
चढ्यौ रथ राँवन हू रथचाह, रबो सिस[3] देख बढ्यौ मनु राह[4]।
मड़ी रघुबीर पै बाँनन भार, ऊमंडीय बारध धार असार ॥२७४७
ऊतै खल सिदन पै असवार, ईतै रघुनायक भूम अधार।
बराबर जुद्ध नही[5] ईह बेर, कहो सुन दानव देवन केर ॥२७४८
पुकारीय मातुल कौं पुरहूत, सवारीय रांम करावहु सूत।
चल्यौ रथ मातुल लै कर चाह, बढे तहाँ जोर हरे रंग बाह[6] ॥२७४९
मढी प्रति अंगन किंकनी माल, सतांग[7] के अंगन कील सँभाल।
बनी जर तार किनार वरूथ,[8] गही छिब मोतिन झल्लरि गूंथ ॥२७५०
धरै सिर-आँन[9] मई कलधोत, जग मनि माँनक हीरन जोत।
भरे तिह अंतर आयुध भार, निखंग हू आदक चाप निहार ॥२७५१
प्रकासत सूरज जेम प्रकास, परची ईक ककट हू तिह पास।
जरूरत जुद्ध के काज जिनीक तहाँ धर मातुल वस्तु तितीक ॥२७५२
सतावोय मातुल लेय सतंग, ईहां रघुबोर पै आय ऊमंग।
भुकाय कै चाबुक कौं कर भाल, नमायकै सीरख[10] होय निहाल ॥२७५३
करो तिह बीनती राघव केर, बिराजहु सिदन में ईह बेर।
सदा तुहि दास हूँ मातुल सूत, पठायेऊ मोहोय कौ पुरहूत ॥२७५४
करैं नियकाईय[11] नाथ कृपाल, संघारहु राँवन देवन-साल[12]।
जिहीं रथ बैठ पुरंदर जात, प्रहारन दांनव जात प्रात[13] ॥२७५५

१ ओचित होगा। २ हाथों में। ३ शशि। ४ राहु। ५ मू०प्र० न्हीं। ६ घोड़े। ७ रथ। ८ आवरण। ९ अग्नि। १० मस्तक। ११ सेवा। १२ देवताओं को पीड़ा देने वाला। १३ समुदाय = सेना।

सोई ईह सिदन सो हम सूत, मिटाथन सत्रुन कौं मजबूत।
ईती अरदास करी ढिग आय, प्रभू सुन आँनन थंभीय पाय ॥२७५६
गन्यौ तन मातुल आपन गात, मृजाद कौं राख नमाय कै माथ।
प्रदछ्छन दै रथ कौं गति पाय अरोह कै ऊपर बैठेऊ आय ॥२७५७
बकारकै राँवन लिन्नीय बग्ग, ऊड़े हय मारग आय ऊदग्ग।
ऊतै रथ राँवन कौ अरराय, धरा नभ सद्द रह्यौ धरराय ॥२७५८
ऊतै खल देवन कौ रन आय, सदा रघुनायक देव सहाय।
चलाकीय राँवन की अत चंड, ऊछट्टीय राक्षस अस्त्र ऊद्दंड ॥२६५९
बिलेसय होय कढे बहु बाँन, निकासत आँनन ज्वाल निदाँन।
तके तन-राघव चंदन तेम, ऊड़े मनु पंखन लागन ऐम ॥२७६०
भरे नभ मारग भींम भुजंग, निकारीय गारूड़ अस्त्र निखंग।
सुवर्न के पर्न लगे सरसाय, चठठीय राघव चाप चढाय ॥२७६१
लगे अहि बाँनन कै सोई लार, बिड़ारीय अस्त्रन अस्त्र बिचार।
कीयौ तब राँवन दारुन क्रुद्ध, जुट्यौ रघुनायक सौं फिर जुद्ध ॥२७६२
करी भर और सकतीय[1] कूंत[2] दिखावत रूप मनौ जमदूत।
सहश्रन[3] बाँन तजे ईक साथ, निरंतर पीर बढ़ी रघुनाथ ॥२७६३
मँडी तन मातुल कै सर मार परी रथ घोरँन सीस प्रहार।
तहाँ ईक दिघ्घधुजा दीय तीर, सिखा तरू तोरीय जाँन समीर ॥१७६४
गिरी ईम अंवर सौं गरराय, झुक्यौ घन-संबर[4] ज्यौं झरराय।
सबै गंन गंध्रब चारन सिद्ध, बृंदारक दाँनव देख विरुद्ध ॥२७६५
महाँ मुनिराज भये बस मोह, सँभार न सक्कीय कीस-संदोह[5]।
भुजा जिह बीस प्रलंबत भेस, धरै घनु बाँन भरै ऊर ध्वेस ॥२७६६
अटै दस सीरख चूंबत आभ, सिलोचय दीरघ जाँन सुनाभ।
सहे रघुनायक बाँनन साल, जगी हीय बीच हुतासन ज्वाल ॥२७६७
भृगुट्टीय[7] बंक अमेठत अँह, जरावत क्रुद्ध पलादन[8] ज्यूह।
की चखयै[9] रोहित रंग करूर, प्रभा रबि गृषिम ज्यौं भरपूर ॥२७६८
होयै कर संगर-खेत हुलास, पहूंचीया राँवन कै जहाँ पास।
भयौ रघुनायक देख सभीत, बनी मुख आकृत हू बिपरीत ॥२७६९

---

१ शक्ति। २ भाला। ३ सहस्रों। ४ प्रलय मेघ। ५ समुदाय। ६ मैनाक पर्वत।
७ भृकुटी। ८ राक्षस। ९ चक्षु = आंख।

डिगे गिर लोनीय भूँम दरार, ऊठ्यौं जग अंतर घोर अँधार।
लग्यौ दध[1] नीर हिलोरन लैन, गरज्जत बद्दर बिद्दत[2] गैन[3] ॥२७७०
करी फिर कूकर जंबुक कूक, ईते खर बिस्वर[4] हूक ऊलूक।
तरेरन तारन की तरकाँन, उड़े चहु ओरन सौं ऊलकान[5] ॥२७७१
रच्यौ रन रांवन श्री रघुनाथ, समौ समसुप्त[6] बन्यौ जनु साथ।
डरे नर नार असंभव देख, सबै रिखी देवन आद बिसेख ॥२७७२
तथाँ गृह आद नछत्र तमाँम, बढ्यौ ऊर अन्तर आय बिराम।
भयंकर सस्त्र अनेकन भाँत, परै केऊ अस्त्रहू पाँतन पाँत ॥२७७३
सुरासुर वैर अनाद सँभार, रहे दहु देख बराबर रार।
वकारत एकन एक बिसेस, सुधाभुख[7] आदक और सुरेस ॥२७७४
ईहै जय चाहत ओघ-अधीस, चहै जय आसुर हू दससीस।
पराक्रम पाँनन बीस प्रसिद्ध, सदाँ अवसाँनन जाँनन सिद्ध ॥२७७५
प्रहारन आयुध लीन प्रचंड, दुरंतर सूल गही भुज डंड।
समा सतकोटीय[8] ज्यौं द्रढ संध, बिराजत अष्टन घंटन बंध ॥२७७६
जगै जिम जोत हुतासन ज्वाल, कढै बिच दाह निकेतन काल।
किते गिर ऊपर माँनहु कूट[9], खरे तिह तिच्छन दीसत खूँट ॥२७७७
जुगांत के अन्तक ज्यूँ ऊठ ज्वाल, लई तिह हाथ कीये चख लाल।
प्रकंपीय सागर औ पुहमीन[10], परेखीय देखीय लै भुज पीन ॥२७७८
ऊठायकै ताहि लही अजमाय, जुरायकै लायकै जोर जमाय।
भ्रमायकै ऊद्ध सँभारीय भार, चमक्कीय दाँमन ज्यूँ दिसच्यार ॥२७७९
लखे दल कीस भये भय-लीन, पलादन साथ बढ्यौ सुख पीन।
बक्यौ प्रत राघव गल्ल वजाय, सबै ईहो वात कहूँ समुझाय ॥२७८०
रचै तुहि मृत्यु सँपेखवहु राँम, मही पग मंडहु वीर-मुकाँम[11]।
कर्‌यौ मम-बंधव[12] कौ अनुकूल, सँभारकै भेट लहौ ईह सूल ॥२७८१
मरे केऊ वीर परे धर[13] माहि, जिहौ बिच आपुन सोवहु जाहि।
गहै तुहि छेदन भेदन गात, ईहै रन खेद मिटै ऊतपात ॥२७८२
ईतो कहि सूल प्रहारीय ऐंच, गरौ हुय राघव ऊपर खेंच।
मनौ नभ मारग आवत नैन, दुरंतर चौनन लागेऊ दैन ॥२७८३

१ समुद्र। २ बिद्युत। ३ गगन। ४ [illegible]। ५ उल्लू। ६ प्रलय। ७ देवता।
८ वज्र। ९ कूट = बुर्ज। १० पृथ्वी। ११ युद्धक्षेत्र। १२ विभीषण।
१३ धरा = पृथ्वी।

तुखानल-कल्प[1] मिटावन तेम, ऊलट्टत बार पुरंदर ऐम।
सुसोभत राघब ज्यूँ धनश्यांम, रहे पग रोप महा बिसराँम ॥२७८४
सँभार कै बाँन दये केऊ सूल, भरे सब दारुन भारन सूल।
पतंगहु आग दबंगन[2] पेख, बरै जिम दौर कै अंग बिसेख ॥२७८५
भये सर राघव के बस भेट, हुतासन ताप गिरे सब हेट।
करयौ तब राँम असंभव क्रुद्ध, जुरे दसकंध बकारत जुद्ध ॥२७७६
सगतीय हृथ्थ पुरंदर सोय, जिही रथ ऊपर देखीय जोय।
उठायकै ताहि लखी अध ऊद्ध, सबै प्रति अंग बिराजत सुद्ध ॥२७८७
विलोकत तेज महाँबिकराल, जुगंत[3] की मानहु जग्गीय ज्वाल।
प्रहारीय सिघ्र मिलायकै पाँन, भई नभ मारग भेट भयाँन[4] ॥२७८८
लगी तिह फेट गिरी सोई लार छुट्यौ जिह गाढ मिल्यौ सब छार।
लगे रथ तोरन घोरन लार, बिचछ्छन तिछ्छन बाँन बिड़ार ॥२७८९
परे तन तूट भये गन प्राँन, अगंजित राघव बाहु अजाँन[5]।
बकस्थल[6] बीच दये खल बाँन, त्युही मुर[7] सीस दये धनु ताँन ॥२७९०
भिदे सर अंग बरंम्मन[8] भेद, चुभे सोई जाय चरंम्मन[9] छेद।
रँगी रत धार निसारन रेल, पनारन नीर रही जिम पेल ॥२७९१
थट्यौ सोई बीच निसाचर थोक, ऊठ्यौ मनु फूल कै नील असोक।
रूप्यौ रन तीरन ताक तुरंत, कुप्यौ मनु कल्प के काल कृतंत ॥२७९२
लखावत लोचन रंगत लाल, बढ्यौ अभिअन्तर बैर बिसाल।
चल्यौ सोई पायन चाल चछोह, भयौ मुहतेज मरोरत भौंह ॥२७९३
बिचछ्छन तिछ्छन दिन्नै ऊ बाँन, लगे तन जायकै राँम निदाँन।
सबै रघुवीर लगे सरसाय, सरोवर जेम भरै घन छाय ॥२७९४
लखे अवधेस गये तन लाग, जताय न खालीय कोनहु जाग।
प्रकंपीय नाहिन पौरुख पीन अखंडत मंडत जुद्ध अहीन[10] ॥२७९५
सिलोचय[11] पायन रोप सधीर, रहे रनखेत खरे रघुवीर।
प्रहारन लागेऊ राँवन पेख, बराबर गारधपछ्छ बिसेख ॥२७९६
जिही सर राँवन रोकत जाय, सँभारकै चाँप बढ्यौ सरसाय।
हीयै रघुवीर कै दीन हजार, सबै सर सिष्ट सुवार–सुवार[12] ॥२७९७

---

१ प्रलयकाल की अग्नि। २ दीपक। ३ प्रलय। ४ भयानक। ५ आजानु।
६ छाती। ७ तीन। ८ बख्तर। ९ चमड़ी। १० यथावत = पूर्वपराक्रम से।
११ पर्वत। १२ सम्भलाकर।

तहाँ सर लाग कढ्यौ रसतेज[1], रसाँयन माट फुटी रंगरेग।
सुसोभत स्याम सरीर सुबास, प्रफुल्लत मानहु बृछ्छ पलास ॥२७९८
लखे सब गात भिदे खल लोह कीयो तब राघब दारून कोह।
ऊतै गढ-लंक पति अनखाय, अरयौ रन दारून चाप ऊठाय ॥२७९९
ऊभै कर मारत तीर असंख, ऊठी जहाँ छाय अँधारीय अंख।
छिपे बिब बीर कलंबन[2] छाँह, बकारत बोल ऊठावत बाँह ॥२८००
कीयौ रघुनायक क्रुद्ध कराल, हसे तब राँवन कौ लख हाल।
बिलछ्छन नीत करूँ कहा बोध, बिना हम जाँनेऊ कौन बिरोध ॥२८०१
प्रीया मम बास ईकंतमैं पाय, छिपायकै आपुन लीन चुराय।
पराक्रम तोहि परी पहिचाँन, भग्यौ परिपंथीय[3] लै निज भौन ॥२८०२
कुकर्मन कारक तूं मति क्रूर, सुगृह कौं आय बन्यौ अब सूर।
करयौ गुरु कुक्कर कौं ईह काज, लगै नहि तोन्हीय कौं हीय लाज ॥२८०३
बिना पति स्याहिक[4] ओर की बाँम[5], टँटोरत केस झँझोरत ताँम।
ईही पुरसारथ माँनत आप पराक्रम तोर लख्यौ परताप ॥२८०४
ऊपज्जीय तोहि ईतौ अहंकार, अनच्युत[6] काँम लहै अधिकार।
लग्यौ फल ताहीय कौ ईह लेहु, गहौ अब एकपदो[7] जम गेह ॥२८०५
जहाँ खर आद जुहारहु जाय, सबै सुत बंधव कौं समुझाय।
मिलौ अवलंबत[8] होय मुकाम, कछू ईहाँ नाहिन तोसन काँम ॥२८०६
दसू सिर कुंडल जुक्त दिखात, निरंधर[9] होवहि आज निपात।
फिरै चहु ओरन ऐंच फिरंड[10], जँझोरहि आँतन गिद्धन झुंड ॥२८०७
ईती कहि बाँनन चाप ऊझेल, पराक्रम राँवन कौ दीय पेल।
मनोरथ मारन कारन मंड, प्रगट्टीय आय पराक्रम पिंड ॥२८०८
ज्युही बढ अक्खन सख्खन जोर, ऊदे सुभ-सूचक बाढेऊ ओर।
मँडी रघुनायक तीरन मार, सलंगम[11] हाथन लीन पहार ॥२८०९
झरी खलपै मिल बृष्ट करूर, पखाँनन बाँनन की भरपूर।
घटा घन मंडीय घायन घूँम, धरा असमाँन ऊमंडीय धूँम ॥२८१०
मुरयौ मद छाँह परी जनु नीच, बिहब्बल होय गयौ रन बीच।
गहै कर लस्तक मुष्टीय गात, चिमंटीय बाँन सक्यौ नहि चाढ ॥२८११

१ रक्त। २ बाण। ३ चोरी से। ४ सहायक। ५ स्त्री। ६ अनुचित। ७ मार्ग। ८ शीघ्र। ९ निराधार। १० स्यार। ११ बानर।

दोहा

रघुबर देख्यौ रांवनहु, महाँ थकत मत मोह।
कीयो धरम पहिचान कर, अवसर जाँन ऊपोह[1] ॥२८१२

लख्यौ सूत लकेस कौ, मुरछागत मन मुद्ध।
कीयौ निकारौ रथ अमन, जिह टारौ दै जुद्ध ॥२८१३

छंद द्वै-अख्खरी

जब मुरछागत जानेऊ जाकौं, ताकौ सूत गयौ लै ताकौं।
बाहर जाय लंकपत बोल्यौ, खल ह्वै क्रुद्ध मरम हीय खोल्यौ ॥२८१४
ऊरजस हीन गन्यौ मुह[2] ऐसौ, जीव छुद्र असमर्थ हो जैसौ।
सत्यहीन अथवा नारी सम, हीय डरपोक न जाँन लयेऊ हम ॥१८१५
अख छांड नहि भयौ ऊदासी, तज पुरषारथ कहा मति त्रासी।
अरि सनमुख सौं टारचौ ऐसै, जाँन बिकल कातर जन जैसै ॥२८१६
बहुत दिनन सौं सुजस बटोरा, मेट करचौ जबही रथ मोरा[3]।
ईधक बात कहा कहूँ अनारी, खेत बीर तज करी खवारी[4] ॥२८१७
मिल्यौ मोह लख बैरी मेरौ, तिन सतकार करचौ कछु तेरौ।
भयौ सूत तू दुसमन भाई, सुहृदपनै की तजी सगाई ॥२८१८
खायौ लूंन बहुत दिन खोये, बीज कुकर्म अंतपै बोये।
बैरी सनमुख खरौ बकारै, तूं मेरौ जहाँ तै रथ टारै ॥२८१९
ईह तेरी मति देख अघायौ, ले जावहु जहाँ तै रथ लायौ।
निज काँनन कथ सुनी नियंता, ऊर बिचार सब आदहु अंता ॥२८२०
करी अरज दसकंधर काजा, मैं अजाँन नाहिन महाँराजा।
मत कछु बिगत भई नहि मेरी, घट में भीत लही कहा घेरी ॥२८२१
मूढ भयौ नहि नहि मतवारौ, बृद्ध भयौ नहि नहि मैं बारौ[5]।
कीय सतकार सत्रु मोहि कैसे, अनुचित बात ऊचारत ऐसे ॥२८२२

---

१ विचार। २ मुझे। ३ मोड़ा। ४ ख्वारी। ५ बालक।

काय पवित्र आचमन कीनौ, लरन हेत कोडंड कर लीनौ।
ईत मुनिराज सिधाये आगैं, लखन राँम लरनै फिर लागै ॥२८५१
ऊत दसकंधर बीर-अखारै, आयौ समरख[1] छाय अपारै।
श्री सूरजनारायन स्वामी, हेर कह्यौ लंकेस हराँमी ॥२८५२
राँम प्रहारहु याकौं रन में, मत बिलंब कीजे कछु मन में।
देवन कौ निसदिन दुखदाई, त्रास देत सीता अततांई ॥२८५३

दोहा

मुनि अगस्त अनुकूल मति, साधन कीय श्रीराँम।
सूरज कौ बर तिह समय, भयौ साहाँ अभिराँम ॥२८५४
ईह पावन ईतीहास कौं, काँन सुनै जौ कोय।
सूरज नारायन सुलभ, जाहि निवाजै जोय ॥२८५५

छंद त्रोटक

रथ फेर फिर्यौ लख रॉवन कौं, समल्यौ घन माँनहुँ साँमन[2] कौ।
फिर ऊपर दिव्य ध्वजा फरकै, धुन नेमीय सौं पुहमी धरकै ॥२८५६
केऊ किंकनी बीच मढी करीया, झनकार बजै रव झल्लरिया।
मिल दीपत कंचन मालन की, लड़ बीच लगी मनि लालन की ॥२८५७
जिह मेचक[3] रंग तुरंग जुपे, चल चंचल देख कुरंग छुपे।
भय दायक आयुध भार भरे, जिह ऊपर नग्ग अमोल जरे ॥२८५८
दुत व्यदुतर्यां[4] तिनकी दमकै, चपला जनु बद्दर में चमकै।
लग लस्तक सुघ्रीय चाप लीया, दुजराज[5] दिपै तिथ ज्यौं दुतीया ॥२८५९
सर स्वर्न पँखारन हाथ सझै, तेऊ सिजनी सीस चढाय तजै।
लग येक चले ईक लारन कौं, धुरवा[6] जनु छोरत धारन कौं ॥२८६०
रघुनाथ लख्यौ खल के रथ कौं, समुझाय कह्यौ हरि-स्वारथ[7] कौं।
केऊ जुद्ध पुरंदर संग करे, अरि पूरव देवन न लाग अरे ॥२८६१

१ ओघ। २ बादल। ३ स्याम। ४ मू. प्र.=अस्पष्ट, बिजली। ५ चन्द्र।
६ मित्र। ७ इन्द्र का सारथि। ८ दैत्य।

गुनबंत प्रबीन बरिष्ट गनौ, परचाय कहै कहा सूतपनौ।
मग बाँमी-कोर[1] मिलावत है, अत आतुर सौं खल आवत है ॥२८६२
तुमकौं हमकौं लहि हाथ तरै[2], केऊ दाव विचार कै घात करै।
ईह बात कौ जाँनहु सार ईहौ, निरभै हुय बैठहु साथ नहो ॥२८६३
अब लै चलीयै रन अंगन कौं, तुम तेज सौं हाक तुरंगन कौं।
रथ सौं रथ जोर मिलाय रमै जय और पराजय तोहि जुमै ॥२८६४
रसमी[3] थिर चित्त सँभाय रहौ, गत ढील करौ कहु ताँन गहौ।
मग ऊरध अद्ध बिचार महो, सम अस्म[4] ऊतार चढ़ाव सही ॥२८६५
द्रग दै कर लेखन देखन में, बरताव प्रभाव बिसेखन में।
ईतने तुम काँम धरौ ऊर में, करता रन चाप गहूँ कर में ॥२८६६
घहराय घटा चढकै घन की, सरसाय कै आवत साँमन की।
परवाह प्रचंड वहै पवना, गहि बद्दर गैल करै गवना ॥२८६७
ईन येक ही साथ ऊड़ावहुगौ, जब ही रन में जुरजावहुगौ।
रथ और तुरंगम फेर रथौ, पुर[5] होय बरंगन[6] लंकपतौ ॥२८६८
परहै धर[7] सीस परेखहुगे, लरनौं हमरौ सिध लेखहुगे।
सुन चालेऊ हाक सतंगन कौं, पुरहूत कौं सूत पमंगन कौं ॥२८६९
रघुनायक बायक[8] ऐम रुचौ, खल खेलन खग्गन गग्ग खिचौ।
रथ राँवन बाँम करचौ रुख में, परबीन सबै बिध पौरुष में ॥२८७०
पवमाँन गही रुख याँन पई, रज ताहि कै ऊपर छाय रही।
क्रतु[9] मातुल राँम लखी करनी, ऊर ऊक[10] मथाँन भयौ अरनी ॥२८७१
करकै रिस चाप गह्यौ कररौ, गुन ताँन कै बान करचौ गररौ।
रघुनाथ लख्यौ खल रोस-रतौ, मन राँवन मारन कीन मतौ ॥२८७२
लख चाप पुरदर हाथ लीयौ, हट क्रुद्ध झलाझल होय हीयौ।
जय की बिव आस करै जुरकै, मनु भौंन भुजंग जुरे मुरकै ॥२८७३
सर येक पै येक सँभारत है, झहरात मनौ विष झारत है।
किधु सिंघ जुरे किधु दौय करी, पुरहूत मनौ दनु रार परी ॥२८७४
बढ़ देवन सिद्ध बिसेखन कौं, रिखी चारन हू अवरेखन कौं।
अचराँन के अंबर याँन अरै, कुसलाधिप की जय चाह करै ॥२८७५

१ बायें किनारे। २ नीचे। ३ बागडोर। ४ असम=विषम। ५ शरीर। ६ विवर्ण
७ धड़। ८ वाक्य। ९ कार्य-कुशलता। १० अग्नि।

हित की करत अहित मत हेरहु, फँनो समाँन निजर नहि फेरहु ।
आद प्रभाव सुभाव अही कै, उसै पिवावत दूध दही कै ॥२८२३
ईहै बिसय मुँह गनत अनारी, हीन दसा कछू भई हमारी ।
घोर जुद्ध कौं जोर घनेरौ, भये अमित आयुध भटभेरौ[1] ॥२८२४
भए स्रमत घोरन[2] तन भीनौ, प्रबल बढ्यौ परवाह पसीनौ ।
बिगत भई सुरभी[3] जनु बलसौं, ज्यूँ दुरभिक में भीजै जलसौं ॥२८२५
ऐसी गत मैं देखो आँखन, पंखी हीन भयौ ज्यूँ पाँखन ।
ईन सिवाय कछु लखे अमंगल, जीव निवासी जेतै जंगल ॥२८२६
बोल असूचक रहे जु बाँनी, जब मैं घटी असुभ जीय जाँनी ।
स्वारथ[4] के ईक करम सयाँनै, जीय सौं बात विचारहु जानै ॥२८२७
देस काल रथरोही देखै, बेला लक्षन आद बिसेखै ।
हरख खेद बल निबल हेर कैं, निज कारज बिघनन निबेर कैं ॥२८२८
मारग ऊँच नीच अनुँमानै, पुन सम बिसम गरत पहिचाँनै ।
अवसर देख सत्रु ढिग आवै लख बिपरीत दूर लै जावै ॥२८२९
पीछै आगे कहु पसवारै, बेला देख लहै बिचवारै ।
स्वारथी कारज सबै सयाँनौ, जो ऊपदेस गरू मुख जानौ ॥२८३०
कीयौ काम मैं हेत क्रतारथ, सबही राज बिचारै स्वारथ ।
मुरछागत लख कोऊ रिपु मारै, आय अचानक बीर-अखारै ॥२८३१
टारचौ रथ तातै दै टारौ, स्वाँमी कारज कीयौ सुधारौ ।
भयौ चेत अब मुरछा भागी, लरन हेत अभिलाखा लागी ॥२८३२
अग्या होय सोय अनुसरहूँ, कहहु नाथ कारज पुन करहूँ ।
सुन स्वारथि के बचन सयानै, जीय ऊपकारक सब बिध जाँनै ॥२८३३
भये प्रसंन रांवन ईम भाखी, ऊर चिंता समहर[5] अभलाखी ।
रन में बहुर दिखावहु रघुवर, पुन बल जाय लखहु सब परकर ॥२८३४
ईतनी कहि ईक हाथ अलंकृत, बगसे रीझ ताहि बहुरं वित ।
बिबध सुनत लंकेसुर बोली, हय हंके हुय सूत हरोली[6] ॥२८३५
आयेऊ रांमचंद्र जहाँ आतुर, चपल चलाय पवन गति चातुर ।
रांवन देख खरौ रघुराया, ऊदित भये रन चाप ऊठाया ॥२८३६

१ मुठभेड़ । २ घोड़ों का । ३ गाय । ४ सारथी । ५ समर=युद्ध । ६ शीघ्र ।

देवन राँम भेव दरसाये, अवसर जिह अगस्त मुनि आये।
महाँबाहु रघुबीर सुगटमनि, सुन धारहु धीरज कर साधनि ॥२८३७
आदितहृदयसतोत्र ऊजागर, ईहै पाठ कीजै गुन आगर।
जीतहुगे सब सत्रुन जासैं ईही समर में जाहि ऊपासे[1] ॥२८३८
पुंन्यदाय सोई नास रहित पुन, सिव सरूप जयदायक जन सन।
सत्रु बिनासक करन सु धारौ, ऊर बिसवास जगत ऊजयारौ ॥२८३९
जाप करहु त्रय-तापन[2] जीत हु, अखल जगत मँह होहु अभीत हु।
हरन असंगल मंगल हेतू, साधन सकल धरम द्रढ सेतू ॥२८४०
चिंता सोक मिटावन चित कौं, बरधक आयु बढावन बित कौं।
ऊतंम रूप सदाँ अनुसरहीं, भुवनन बीच जोत नित भरहीं ॥२८४१
भास्कर बिवस्वाँन नाँमन भज, रघुबर मेटहु दुख अगाध रुज।
किरन ऊदोत प्रकासन करता, हेत जगत सो तम-गुन[3] हरता ॥२८४२
सुर आसुर गन मनुज सहायक, नमसकार करनै के लायक।
पूजा कर तन ताप प्रहारौ, निगम अगम प्रत ईह निरधारौ ॥२८४३
किरन प्रकासन करकै केते, जढ जंगम रक्षक जग जेते।
पोखत निसदिन सबही प्राँनन, आदहु अंत सिद्ध अवसाँसन ॥२८४४
ब्रह्माँ बिसन प्रजापत बासव, बरुन कुबेर सकंद चंद्र भव[4]।
पित्र पती बड़वासुत पावक, दैत्य देव बसु साध्य मनूदक ॥२८४५
पाँन प्रजा क्रम काल परेखौ, द्रगन ज्ञान सूरज मय देखौ।
करता खट रितू कारज कारन, बरष मास दिन माँन बिचारन ॥२८४६
जग के ऊतंम क्रम[5] है जेते, येक सूर आस्त्रत है एते।
जनन हेत ईह नाम जनावत, गहहु ध्याँन धारन मैं गावत ॥२८४७
सुन रघुबीर कह्यौ मुनि सेतो, सो सतोत्र बिध पूर्वक सेतो।
करकै कपा अनुक्रम कहीयैं, लाभ समर जय ज्याँनको लहीयैं ॥२८४८
ईह सुनकै मुनि कीय ऊपदेसा, नीत निपुन श्री अवध नरेसा।
धीरज कर सतोत्र उर धारयौ, आद अंत बिध जुक्त ऊचारयौ ॥२८४९
ठाडे भये समुख ईक ठौरैं, जुगल पाँन अंजुली पुन जोरं।
तीन बार जप करेऊ तहाँ ही, मुनि की मत अनुकूल महाँ ही ॥२८५०

---

१ आराधना कर के। २ तीन ताप—दैहिक, दैविक, भौतिक। ३ अंधकार—अज्ञान।
४ महादेव। ५ काम=कर्म।

झुक राँम कै ऊपर फूल झरी, करसौं सब देवन साथ करी।
रसतेज[1] गिरावत रांवन पै, धरपै पुरपै खल धाँमन पै ॥२८७६
उलकाँन गिरी केऊ अम्बर सौं, कढ सख परे केऊ कंम्मर सौं।
वढ वाँईय और बघूरन के, ध्रुव ढेर परे ऊड़ धूरन के ॥२८७७
द्रुत रांवन को रथ दौरत है, झुक गिद्धनीयै झकझोरत है।
फिर बोलत अगृ फिरंडनीयाँ[2], मुख ज्वाल का रालन मंडनीयाँ ॥२८७८
दिग दाह भयौ फिर लक दिसा, रव घोर रचावत धूज रसा।
ऊतपात लखे निसचार अनी, वढकै हय ब्राहन जाहि बनी ॥२८७९
गत वाँह सौं रथ्थ करै गवना, प्रतकूल प्रवाह बढै पवना।
जुत स्वेद तुरंगन जंघन में, दरसावत आग दवंगन[3] में ॥२८८०
ऊमड़े पुन आँखन आँसुरवा, कढ कोयन नाल मनो करवा।
सुभ सूचक रांम भये सब ही, जुध कारन गौंन करयौ जबही ॥२८८१
परतीत भई जय पावन की, निसचे खल खेत नसाँवन की।
मन घोरन मातुल मोद मई, जिह रीत प्रसंग्रहु रांम जई ॥२८८२
भयदायक संगर फेरे भिरे, द्रग देखत सैनक साथ डरे।
निसचार तथा वनचारन की, हुव वाकन हाक हजारन की ॥२८८३
ऊड़ खेह छई चढ अंबर कै, समलयौ घन माँनहु संवर कै।
फरखै धनु सिजनो काँनन लौं, वरखै वहु आयुध बाँनन लौं ॥२८८४
अंधियारी भई चहुओरन में, झर बाँनन की झकझोरन में।
भट केक भुजांतर[4] भेट भिरै, कपि और पलादन जुद्ध करै ॥२८८५
बिललावत कातर मग्ग वहे, रनधीर किते पग मांड रहे।
कल[5] देख रहे केऊ कौतुक कौं, घमचक्कन मेटे होयै धक कौं ॥२८८६
सुभ रांम लखे चल सूचक कौं, ऊत रांवन देख असूचक कौं।
जीय में ईक आस वढो जय को, पर येकन हांन पराजय की ॥२८८७
भये येक तजे ईक भीत भरे, पुर[6] तेज वढ्यौ ईक मंद परे।
चिर आपु लगो ईक आयु छुटी, मुद चाह वढी ईक चाह मिटी ॥२८८८
[illegible]सोय[7] रांम रहे अरकै, निरगृयंन काज निसाचर कै।
[illegible] रांम मनो वयको करनो, मन रांवन जान लयौ मरनो ॥२८८९

१ रज। २ स्यार की मशालें। ३ [illegible]। ४ छाती। ५ युद्ध। ६ शरीर।
७ [illegible]।

दोऊ पाँनप आप दिखावन कौं, दोऊ ओर करै केऊ दावन कौं।
तहाँ राँवन रोख हीयै तमक्यौ, झहरावत चाप कलंब झुक्यौ ॥२८६०
धुज काटन ऊपर धंख धरी, क्रतहस्त[1] असंखन मार करी।
द्रढ संध पुरंदर सिंदन की, बरजोर करोरन बंधन की ॥२८६१
सर मारन सौं नही तूट सकी, जिह देखत राँवन बुद्ध जकी।
बदलौ तिह लेवन रांम बढे, केऊ तिछ्छन बाँन-कलाप[2] कढे ॥२८६२
अहि-आक्रत[3] लै अवलंबत[4] कैं, गुन ताँन जहाँ कररी गत कैं।
सर येक दीयौ दसकंधर कै, निझ सिष्ठ मिलाय निरंधर कै ॥२८६३
धुज टूट परी रथ बीच धरा, पुन राँवन देख हीयै प्रजरा।
तन ताक कजाक तुरंगन कै, गहि चाप कलंब दये गनकै ॥२८६४
अटकी जिह पख्खर[5] बीच अनी, घट नाँहिन बाढीय पोर घनी।
निरबाध लखे हय नैनन सौं, बतराय अभीक्षन बैनन सौं ॥२८६५
छहराय घटा जिम ताहि घरी, झहराय कलंबन कीन झरी।
केऊ जालक[6] काँम लगौ करनै, नहि जाहिकौ होय सकै निरनै ॥२८६६
परघातन[7] और गदा फरसा, बहु मूसल की सिल की बरसा।
बहु ओर तै सूलन चक्रन की, बढ मार कुटार स बक्रन की ।२८६७
भयकार समर्द[8] अपार भयौ, रघुनाथ संभारत साथ रहौ।
कछु राँवन अग्र गयौ कढकै, बहु बंदरी सैन दिसा बढ़कै ॥२८६८
बहु मार करी तहाँ बाँनन की, पर त्राहि परी कपि प्राँनन की।
जितही तित बाँनन ज्वाल जुरै, पुहमी नभ आग दवग परै ॥२८६६
रथ हाक तुरंगन रांम रुपै, करी ऊपर ज्यूं मृघराज कुपै।
अपनी गन फौज ऊबारन कौं, मन धंक धरी खल मारन कौं ॥२६००
तन ताक हजारन बाँन तजे, ईक येकन आपुस में अरझे।
अवकास रह्यौ न अकास ईतौं, पवमाँन न लागत गौन पतौ ॥२६०१
बरबीर ईतै रघुनाथबली, चढ खेत ऊतै दसकंध छली।
सझ हाथन बीच सरासन कौं, बरसावत जावत बाँनन कौं ॥२६०२
ईक नाँह हटे ईकसौं अरकै, क्रतहस्त समर्द-कला करकै।
मन मोद जुतै रनखेत मँही, रुख येक बरोबह वा तरही[9] ॥२६०३

१ निपुण। २ तरकस। ३ सर्प की आकृति के। ४ शीघ्रता। ५ ऊपर डालने का वस्त्र=पाखर। ६ माया का जाल। ७ लुहाँगी। ८ समर=युद्ध। ९ उसी प्रकार।

केऊ राँवन के सर राँम कटे, द्रढ़ राँवन राँमहु रान दटे।
पुहमी पर छायकै जाय परे, जहाँ राघव कै ऊर क्रोध जरे ॥२६०४
तहाँ राँवन ताक तुरंगन कौं, अत बाँन प्रहारीय अंगन कौं।
बदलौ तिह राँवन वारन को, वह लागीय[1] बाह बिड़ारन कौ ॥२६०५
भयकार महूरथ येक भयौ, रन बीच बराबर हाथ रह्यौ।
द्रग देखत ताहि करेज दहै, कर ता रन को कहा बात कहै ॥२६०६
दहु ओरन बीरन दावन की, जुरजावन औ फिरजावन की।
रथ बाँमहू दछ्छन रोकन की, बढ सीध रू बंक बिलोकन की ॥२६०७
बिध स्यंदन मंडल बंधन की, सरसै धनु बाँनन साधन की।
रथ सूत रथी रचना रचकै, जय आपन आपन की जचकै[2] ॥२६०८
बढ येकन येक बिचारन में, मन येक की येकन मारन में।
रघुनाथ प्रहारत राँवन कौं, निसचार हू राँम नसावन कौं ॥२६०६
ईक पै ईक मार करै ईधकी, बरजोरन घोर घने बिधकी।
बिन गारधपछ्छ करै बरसा, हुई रूप बलाहक कै दरसा ॥२६१०
ईक सौं ईक जाय समीप अरे, भरपूर ऊभै दिस चाहि भिरै।
हय प्रोथन प्रोथन भेट हुवा, मिल स्यंदन सिदन काग-मुहा[3] ॥२६११
पट जूट पताक पताकन सौं, अवलोकन आँखन आँखन सौं।
अवधेस समीप लख्यौ अरि कौं, सभ्भ रोख चढाय लये सर कौं ॥२६१२
घट ताक दये चहु घोरन कौं, धर चाल गये सोई धोरन कौं।
फिरकै रथ लै फननेटीय कौं, चढ चाक सभारीय चेटीय कौं ॥२६१३
अत राँवन क्रूद्ध भयौ ऊर में, मगरूर सौं बाँन दये मरमै।
रघुनायक नाहि गने रन में, मुद वीरता छाय रहो मन में ॥२६१४
द्रिढ मातुल कै तन मार दई, कर वज्र प्रहार प्रकार कई।
वपु मातुल हू ऊतसाह बढ्यौ, चलकै खल छातीय जाय चढ्यौ ॥२६१५
तहाँ राँवन कौं लहि हाथ तरै, केऊ घात जहाँ रघुनाथ करै।
बरसाय हजारन बाँनन कौं, अत दाव करै अवसाँनन[4] कौं ॥२६१६

---

१ मु. प्र. लगीय। २ जांच कर। ३ जैसे दो कौए मिलते हैं। ४ मारने को।

अपने रथ ऊपर क्रुद्ध अर्यौ, जब राघव सौं खल जुद्ध जुर्यौ।
गहि मारेऊ मूसल औ गदा, परघातन[1] घातन मृत्युप्रदा ॥२६१७
भरपूर भयाँनक जुद्ध भयौ, रव मारहु मारहु छाय रह्यौ।
बरखात भयंकर बाँनन की, पर हॉन करी केऊ प्राँनन को ॥२६१८
हल चल्लीय सात[2] हिलोरन सौं, बढ सागर की जल बोरन सौं।
पुन सात पतालहु हूक परी, केऊ जंगल जीवन कूक करी ॥२६१९
अरु कंप ऊठी बहुधाँ अचला, क्रमसाखीय[3] की भई मंद कला।
थिर होय प्रभंजन गौंन थके, ध्रुव पंन्नगराज सहस्र धुके ॥२६२०
रन गंधृव किन्नर देख रहे, सुर सिद्धहू नागन आद सहे[4]।
द्विज स्वस्ति ऊचारत आसिष दै, रघुनाथ कौं आसिष हू रिख दै ॥२६२१
जय चाह करैं सोई व्योम जुरैं, निसचार-पती जय कौं निदरैं।
हुय नाँहिन नाहिन होवहिगे, गुनि कीरत कौं पुन गोवहिगे ॥२६२२
सम सागर जाँनहु सागर है, अरु व्योम व्योम सौं-ऊजागर है।
रन राँम ज्युँही ईक राँमहि कौं,हठ राँवन लंक के स्याँमहि[5] कौं ॥२६२३
लख देव नदेवन की ललना, किन हूँ न परो पलहू कलना।
ईह बात कहै सब आपुस में, समुदाय कै भाय की नाहि समै[6] ॥२६२४
बर कीरत हू रघुबंसिन की, परताप सौं राँम प्रसंसन की।
जिह चाप गह्यौ कर क्रोध जुतै, अहि रूपीय बाँन संधाँन ईतै ॥२६२५
क्रतहस्त सँवार प्रहार कर्यौ, पर राँवन कौ सिर टूट पर्यौ।
जुत कुंडल हू सिरआँन जही, त्रहु लोक निवासीय देखतही ॥२६२६
भय[7] दूर जुँही सिर फेर भयौ, निरख्यौ सबही ईह ख्याल[8] नयौ।
अत आतुर सौं रघुवीर ईतै, पुन कीन प्रहारहु सीस प्रतै ॥२६२७
कट[9] दूसरी बार कलेवर सौं, जोई पार ऊपार भयौ जरसौं।
झटकै कटकै सोई फेर जम्यौ, कर तारन राँवन ताँम क्रमो ॥२६२८
ऊतपाटत[10] ह्वै सिर ऊगत है, पुन राँम कौ दाव न पूगत[11] है।
दसरथ्थ के नंदन देख दसा, गत अद्भुत संसय चित गृसा ॥२६२९
खर दुखन आद हने खल कौं, दोय दंड निसाचर के दल कौं।
त्रोय-लंपट राँवन तारन सौं निसतेज भये किह कारन सौं ॥२६३०

---

१ सुहागी। २ साथ। ३ सूर्य। ४ सहित। ५ स्वामी। ६ चैन। ७ हुआ। ८ खेल। ९ मू. प्र. कर। १० अलग होते ही। ११ पूर्ण।

ऊर सोच भयौ अवसासन में, रघुनाथ तऊ न हटे रन में।
धर धीर सरासन कौं धरकै, भुजअंतर वान दये भरकै ॥२६३१
पुन रांवन क्रुद्ध वढ्यौ प्रवला, सभ्भ मूसल सूल जुतै अवला।
निज घात करै रघुनायक कौं, सरसायकै घायक सायक कौं ॥२६३२
कवहूँ पृहमीन अकाश कहूँ, सभ्भ काँनन पव्वय सीस सहूँ।
दिन सात भयौ ग्रत दारुन कै. निसद्योस[1] सदा निगधारन कै ॥२६३३
ऊनमेख रह्यौ नहीं वंध ईतै, परभातहु फेरहु साँभ्भ प्रतै।
द्रग पूर लख्यौ सब देवन हू. अरु नाग पिसाच अदेवन हू ॥२६३४
मघवा रथ प्रेरक मातुल कै, कछु नाहि परी पलहू कलकै।
अवसांन दयौ अवधेसुर कौं, अब क्यांन[2] प्रहारत आसर[3] कौं ॥२६३५
दरसाव सुन्यौ हम देवन सौं, भजमाँन विचारहु भेवन सौं।
वरतावहु काल विसेसन कौ, खल आय गयौ रन खेसन कौ ॥२६३६
सर बृह्म को साँध सरासन पै, अतसैं द्रढ होवहु आसन पै।
करीयै न विलंव क्रपाल हू. अगवांन खरौ ईह आसर हू ॥२६३७
सुन मातुल आंन सिखावन कौं, प्रभू बाँन गह्यौ कर पावन कौं।
महाराज अगस्त लयौ मिल कै, भहरावत तेज मई भ्भलकै ॥२६३८
विध[4] इंद्र कै हेत बनावट कौं, सवही गत खेल सभ्भावट की।
मुनि के सिर ऊपर कीन मया, तिनकौं सुभ कारन दीन तया ॥२६३९
रिखीराज[5] दयौ रघुराजहु कौं, सवता-कुल[6] के सिरताजहु कौं।
वनवास मिले जव धाम विचै, खल प्रांन को हारक बाँन खिचै ॥२६४०
पवमांन कौं थप्पीय पंखन कौं, अरु पावक हू जग-अंखन[7] कौं।
गहिकै पच[8] थप्पेऊ गांसीय पै, वर अंवर कौ गुन वांसीय पै ॥२६४१
मंदराचल मेर गराईय पै, गरुआपन कौं लहि गोईय[9] पै।
बहु तेज मई जिह बाज[10] बने, सव तार सँवार सुवन सने ॥२६४२
जड़ जंगम तेज जितौ जग कौ, नद और नदीस तथां नग कौं।
गहि कै निज सार तवा गुन कौं, धुर घोर कठोर करै धुन कौं ॥२६४३
पवनासन[11] स्वास महेत पनौ, गत जाहि भयंकर रूप गनौ।
करयान छुटे जिम ज्वाल कढै, विकरान अपूरव चाल वढै ॥२६४४

१ रात्रि-दिन। २ क्यों नहीं। ३ असुर=रावण। ४ ब्रह्मा। ५ अगस्त्य ऋषि।
६ सूर्यवंश। ७ सूर्य। ८ पवन। ९ गुरु। १० पंख। ११ सर्प।

सतकोटीय[1] ज्याँ द्रढ़ संध सदा, गढ पव्बय[2] काट करै गिरदा।
गनती कहा कुंजर घोरन की, बल सिंदन साज बिथोरन की ॥२९४५
चरबी रूच कौसक[3] चख्खन[4] की, पुन प्राँनन पौंन बिपख्खन[5] की।
भख[6] काकन गिद्धन कौं भरता, दल दुज्जन के बल कौं दरता ॥२९४६
जम ज्याँ भयदायक जीवन कौं, पर बोरत[7] की रत[8] पीवन कौं।
चित मोद करै बनचारीय[9] कौं, रघुबंसिन के रखवारीय कौं ॥२९४७
गुन चाप चढाय झुकाय गह्यौ, रसमी[10] रब[11] तेज प्रकास रह्यौ।
पव पव्बय तोरन पछ्छन[12] कै, तपतछ्छ[13] लह्यौ गहि तिछ्छन कै ॥२९४८
विध वेद के मंत्र बिचारन सौं, सुध सिष्ट मिलाय सु मारन सौं।
तन राँवन ताक कै राँम तज्यौ, गहरी धुन मेघ ज्युही गरज्यौ ॥२९४९
हीय लंकपती सोई पार हुवौ, महा राकस[14] राँवन खेत मुवौ।
महाराजक फेर कलाप[15] मँही, तितहू प्रबस्यौ सर बार तँही ॥२९५०
धर राँवन आय परच्यौ धर हू, केऊ आयुध छूट गिरे करहू।
पुन राँवन देख परासन[16] कौं, निसचार लगे केऊ नासन कौं ॥२९५१
लखकै बनचारन[17] लार लई, द्रढ[18] मूसल हू सिल मार दई।
पहुँचे सोई जायकै लंकपुरी, कल-रावत[19] क्रंदत[20] बूँबकरी ॥२९५२
कुसलात ऊचारत भाल[21] कपी, जय राघव देवन साथ जपी।
वहु फूलन कौं बरसावत है, गुन राघव के पुन[22] गावत है ॥२९५३
सुब लंक निसाचर स्वाँमीय कौं, निरगृथन[23] राँवन नामीय[24] कौं।
दिल अंतर चारन देवन कौं, भल मोद प्रचारीय भेवन कौं ॥२९५४

दोहा

रघुबर राँवन मार रिपु, भूँम ऊतारच्यौ भार।
सुर नर मुनि हरखे सकल, नैन निहार निहार ॥२९५५
सीया सुन्यौ हीय लाग सर, समर मरच्यौ दससीस।
बिजय सुनो रघुबीर की, बिध जुत बिसवाबीस[25] ॥२९५६

---

१ वज्र। २ पर्वत। ३ हाड़। ४ चाखने की। ५ विपक्षी। ६ भोजन। ७ बैरियों। ८ रक्त। ९ वानर। १० रश्मि = किरण। ११ सूर्य। १२ पंख १३ इन्द्र। १४ राक्षस रावण। १५ तरकस। १६ मृत्यु। १७ वानर। १८ दृढ़। १९ बिलखती है। २० रोती है। २१ भालू। २२ मुनि। २३ मरण। २४ नामी। २५ पूर्ण।

छंद त्रोटक

वध रांवन कौ कीय रांम बलो, मुद[१] पाय सबैं कपि सैन मिली।
हित लायकै चाहि प्रजा हरखी, सुर भूसुर[२] चारन होय सुखी ॥२६५७
गुन किन्नर गंध्रव[३] गावत है, वर दुंदभ[४] बीन बजावत है।
बहु अच्छर[५] छाय बिमांनन में, तरथेई रचावत तांनन में ॥२६५८
बरखै कर फूलन की बरखा, कल रांवन रांम कहै करखा[६]।
वरवीर बिराजत रांम बिचै, रमनीय[७] अनूंपम रूप रचै ॥२६५९
रथ में इंद्र अनूंप जराव जरचौ, धुज डंड प्रचंडत ऊद्ध धरचौ।
हय जूप[८] रहे तिह रंग हरी, कररी गत मातुल बाग करी ॥२६६०
रथ में रघुनाथ बिराज रहे, गुन तांन सरासन बांन गहे।
जट जूट सुसोभत[९] सीस जटै, अरबिंद[१०] पै मांनहु भौंर अटै ॥२६६१
त्रय भाल में राजत रेख तनी, सत राजस तामस सक्ति सनी।
चख[११]दोयन तै रसवीर[१२]छुट्यौ, अधरांन[१३]पै मांनहु आंन अट्यौ ॥२६६२
बिच सोहत दंतन पंत[१४] बनी, कुलो दाड़म की किधु हीरकनी।
जय की रुख की मुख जोत जगी, परभा[१५] रवि पंकज जांन पगी ॥२६६३
छिव[१६] केहर कंधर छाजत है, बिच फूलन माल बिराजत है।
भुजडंड मनो गजसुंड भरे, धनुबांन ऊदंचत हाथ धरे ॥२६६४
कट खोम[१७] रजै पट तूंन[१८] कसै, बिच स्वर्न पंखारन बांन बसै।
जय खंभ[१९] ज्युहो[२०] जुग जंघ जुरी, परपूरे समांन प्रभा पिंडरी ॥२६६५
रज पांवन[२१] में कछु लाग रही, जलजन्म[२२]बिलाग पराग[२३] जंही।
तलवा बिच ऊरध रेख तनी, सुल भूंम मनो जय संवलनी[२४] ॥२६६६
वपु[२५]स्यांमल स्वेद की बूंद बनी किधु नील सरोज पै नीरकनी[२६]।
छिव[२७] रांम की देखन सैन चहै लहरी रव[२८] जांन हिलोर लहै ॥२६६७
प्रभू देख फिरै ऊलटा पलटा, घन घूंम रही जुन लूम घटा।
पुन देखत रांवन खेत परचो, भटमार जिहो रन-ताल भरचो ॥२६६८

---

१ मोद = प्रसन्नता। २ ब्राह्मण। ३ गंधर्व। ४ नगाड़े। ५ अप्सरा। ६ मार-[illegible]। ७ रमणीक = सुन्दर। ८ जुते हुए। ९ सुशोभित। १० कमल। ११ आँखों। १२ वीररस। १३ अधरों पर। १४ पंक्ति। १५ प्रभा। १६ छवि। १७ [illegible]। १८ तरकस। १९ जय स्तम्भ। २० समान। २१ पैरों में। २२ कमल। २३ पुष्परज। २४ नदी। २५ शरीर। २६ ओस की बूंदें। २७ सुन्दरता। २८ समुद्र।

लघु भ्रात बभीखन जाहि लख्यौ, घर धीर रह्यौ तेऊ सोक धिक्यौ।
परचाय लग्यौ-पिछतावन कौं, रच देत ऊराहता रांवन कौं ॥२६६६
अहो बंधव सूर सुनीत ईला[1], कल कौसल रीत प्रनीत कला।
दससीस किरीट[2] लगे दस कै, बहुटा[3] भुज बीस रहे बसकैं ॥२६७०
मखतूल[4] की सेझ कौं त्याग मही, गम[5] भूलकै दीरघ नींद गही।
हित बात कही तुमकों हमनै, महाँरांनी मंदोदरि कोन मनै ॥ २६७१
कीय रांम सौं जुद्ध अकारन सौं, मृतु होय गये सर मारन सौं।
घननाद प्रहस्त घमंड घिरे, अतकाय अकंपन बीर अरे ॥२६७२
अहंकार लखौ परनाम[6] ईही, भवतब्ब[7] दसा ईह भ्रात भई।
रचना रन आयुध खेल रता, गरूकर्म[8] बिसारद पारगता[9] ॥२६७३
नय[10] बेद बिचार ऊचारन में, पुन धर्म की रीत प्रचारन में।
गरूवाई[11] की सत्य मृजाद[12] गई, कछु बंधव तो सन जात कही ॥२६७४
रबि चंद गिरे मनु आय रसा[13], दमुना[14] झल सीतल होय दसा।
गहबीरन कौ ऊतछाह[15] गयौ, भर लंकपुरी अंधीयार भयौ ॥२६७५
पथ छोर चले सबही पल में, तुम सोय रहे धरनीतल में।
नव-पल्लव[16] धीरज रूप निरा, सहनाईय-सोल[17] प्रफुल्ल सिरा ॥२६७६
तप धारन सक्ति जिही तन की, जर सूरता पूर रही जिनकी।
भुव जाहर राखस राज भयौ, द्रुम[18] रांम-बयार[19] गिराय दयौ ॥२६७७
द्रढता अरू तेज सदंत[20] दुनौ, गरूवाई पिता परीआई[21] गनौ।
वह रति समूह की पीठ वही, जुग कोप प्रसनंता अंग जही ॥२६७८
दसकंध मयंद-मदंध दसा, रघुबीर पछारेऊ सिंध रसा।
रसबीर पराक्रम ज्वाल रही, मिल धूम ऊसासहू क्रुद्ध मई ॥२६७९
बलकै ज्वल सक्ति छतै बहुरै, जग जाहि हुतासन[22] ताप जरै।
महाँ राकस रांवन तेजमई, जलबाह[23] बुझायेऊ रांम जही ॥२६८०
कहनी सुन रांम बभीखन की, जीय की सब जाँन लई जनकी।
केऊ रीत सौं बोध लगे करनै, निज आँनन रांम जुतै निरनै[24] ॥२६८१

---

१ पृथ्वी। २ मुकुट। ३ बाजूबंद। ४ रेशम। ५ चिन्ता। ६ परिणाम। ७ भवितव्य = होनहार। ८ विद्या। ९ पारंगत। १० न्याय नीति। ११ बड़प्पन। १२ मर्यादा। १३ पृथ्वी। १४ दामिनि। १५ उत्साह। १६ मू० प्र० पलय। १७ सहनशीलता। १८ वृक्ष। १९ रांम रूपी वायु। २० सदैव। २१ परंपरा। २२ अग्नि। २३ मेघ। २४ निर्णय।

परचंड[1] भरयौ रसवीर पनौ, घट बिक्रम रॉवन दिग्घ[2] घनौ।
धर धंख लरयौ ध्रुव धर्म धृती पुन होय निसंखहु[3] लंकपती ॥२९८२
भवतव्व[4] कौं पाय निचेष्ट भयौ, गरुवाई[5] हु कौ पन[6] श्रेष्ट गह्यौ।
सब छत्रीय रीत सनातन कौं, बसु[7] राखत कीरत बातन कौं ॥२९८३
तिह हेत समर्द[8] में देह तजै, बिच खेत लहै अथवा क बिजै।
दोऊ बात गनौ जसदायक है, बिध नीत परॉयन वायक[9] है ॥२९८४
गुनि लोग पवारह गावहिगे, जुध रॉवन नॉम न जावहिगे।
जिह लोकप सक्रहु[10] आद जये, बिजयी त्रयलोकन बीच वहे ॥२९८५
परसंस[11] के लायक लंकपती, मृतु[12] सोक करै कोऊ मंदमती।
मनु आदिक छात्रन नीत मही, करकै निरनौ जिह कथ्थ कही ॥२९८६
महॉं ऊरांम जुद्ध गनौ मरनौ, कछु सोक नहीं हीय में करनौ।
जवही रनअंगन[13] जावत है, ईक मृतु लहै ईक आवत है ॥२९८७
कुसलात रहै दोऊ ओर कहीं, ऊर सोच बिचारहुं बात ईही।
जुध में कोऊ छत्रीय जूझत है, परीआई[14] की रीत सौं पूजत है ॥२९८८
जिह कारन सोक तजौ जीय कौ, हित जॉंन बिखाद तजौ हीय कौ।
करनीय जथारथ[15] काज करौ, धर धीरज और न चित्त धरौ ॥२९८९
रघुवीर दई जब येहु रजा[16], तब भ्रात बभीखन सोक तजा।
अरजी रघुवीर कौं कीन ईही, अब तौ करनीय है काज ईही ॥२९९०
जिह आद पुरंदर[17] खेत जये, रन में सोई आपके हाथ रहे।
बहु आतिथ दॉंन दीये वित कौं, भरपूरन चित्त भरे भृत[18] कौं २९९१
बहु भोग बिलास करे बिनता[19], हट लाग क दुज्जन कौ हनता।
सुखदायक मित्र समाजन कौं, समधी सनमॉंन के साभन कौं ॥२९९२
कीय होम तया[20] तपसा करनी, बिध[21] संकर[22] हेत कथा बरनी।
क्रमकॉंड[23] वेदांत बिचार करे, परचंड बली रन खेत परे ॥२९९३
करनी हम चाहत प्रेतक्रीया, द्रिढ सोच्च बिचारहु नाथ दया।
गुरजी[24] लख सासन[25] मॉंगत हूं, पितु मात समंघ[26] परांगत हूं ॥२९९४

१ प्रचंड। २ दीर्घ। ३ निःशंक। ४ भवितव्य। ५ बड़प्पन। ६ प्रण। ७ पृथ्वी। ८ समर = युद्ध। ९ वाच्य। १० इन्द्र। ११ प्रशंसा। १२ मृत्यु। १३ युद्ध क्षेत्र। १४ [illegible]। १५ यथार्थ। १६ आज्ञा। १७ इन्द्र। १८ नौकर। १९ स्त्रियां। २० मू.प्र.त्या २१ ब्रह्मा। २२ शंकर। २३ कर्मकाण्ड। २४ इच्छा। २५ आज्ञा। २६ संबंध।

बिधजुक्त[1] बभीखन की बिनती, समरथ्थ[2] सुभाख सदाँ सुक्रती[3] ।
कहनावत कौन बभीखन कौं, जीय जाँन निरंतर हू जन कौं ॥२९९५
जबलाँ[4] जग बैरीय[5] जीवत है, मन होत बिरोध भई मत है ।
जब जूझ परचौ रन बीच जमी, कोऊ बैर बिचारत कूरक्रमी[6] ॥२९९६
कुमती अततांई[7] कौ काँम करचौ, हट लाग जिही हम प्राँन हरचौ ।
पुन तोर हमार सखापन[8] सौं, मम भ्रात बिचारत हूँ मन सौं ॥२९९७
सुधरावहु आखर-कौ समीयां[9], करहू बिधबेद सौं प्रेत-क्रीया ।
जन नग्र[10] बुलावहु जा तन कौं, भट और बचे जिह भ्रातन कौं ॥२९९८

दोहा

महाँबाहु राँवन मरचौं, रघुवर सौं कर रार ।
सुनी खबर राँनीय श्रुत[11], अंतहपुर आगार[12] ॥२९९९

छंद मौतीदाँम

सुनी रनवास में बात सकोय, रही तीय राँवन की जिय रोय ।
ढुरावत लोचन सौं जलधार, मँदोदरि[13] आईय ग्रेह मझार ॥३०००
मिली तीय झुंडन झुंडन मेल, झुकाय कै घूंगट[14] के पट झेल ।
दुखी हुय चालीय ऊत्तर द्वार, परासन[15] पीर पुकार पुकार ॥३००१
खरी[16] सब आय भई रनखेत, छिके तन पीव[17] लखे बिन चेत ।
जझोरत नैनन नीर झुरात, कुरंकुर[18] नार ज्युही कुररात ॥३००२
पलोटत चुंबत पाँनन[19] पाय, लगावत अंक[20] रही लपटाय ।
लखै कोऊ आँनन की चिव[21] नैन, बिमासत बोलत आरत[22] बैन ॥३००३
कोऊ लख कुंडल और किरीट, पुकारत रोय भुजंतर[23] पीट ।
गरै बिच डारत बाँह गहंत, करौ हित बात ऊठौ किन कंथ[24] ॥३००४

---

१ विधियुक्त । २ समर्थ । ३ अच्छे कार्य करने वाले । ४ जब तक । ५ बैरी । ६ हृदय हीन व्यक्ति । ७ आततायी । ८ मैत्री । ९ अंतसमय । १० नगर । ११ कानों से । १२ रनवास । १३ मंदोदरी । १४ घूंघट । १५ मृत्यु । १६ खड़ी । १७ प्रिय पति । १८ सारस । १९ हाथों से । २० छाती । २१ सुन्दरता । २२ आर्त । २३ छाती । २४ स्वामी ।

ईहै कहि लेत है सीस ऊठाय, धरै बिच गोद धुकाय धुकाय।
परै जल नैन पनारन पूर, धुवावत[1] आँनन लागीय धूर ॥३००५
विधोविध[2] रोय रही बिललाय. हनै हीय मुक्कन बोलत हाय।
सीया सम और तीया न सरूप[3], भयौ तन भंग तिही हित भूप ॥३००६
घली ईक नार के कारन घात, अनेकन लेय चले अहवात[4]।
भई निरभागनि[5] रावर[6] भाँम, पराईय[7] नार पीया परनाँम[8] ॥३००७
ईतै बिच पट्टपराँनीय[9] आय मदोदरि[10] देख कह्यौ मुरझाय[11]।
अहो लघुभ्रात कुबेर के आज, रसातल[12] पौढ रहे महाँराज ॥३००८
डरावत इंद्र ही आदक देव, सबै दिसपाल सुधारत सेव।
महाँरिखी गंध्रव चारन नाग, भयातुर होय गये सब भाग ॥३००९
मरे तुम माँनव हात[13] मदंध, कहा कहु पीव[14] अहो दसकंध।
लुकावत[15] नैन न आवत लाज[16], विचारकै येहु कीयौ कहा व्याज[17] ॥३०१०
जती बनवासीय सौं कर जंग, भये पीय कौंन क्रीया तन भंग।
प्रतीत न आवत मोकह[18] पूर, धरा पर सोय रहे बिच धूर ॥३०११
अहो पतिलंक पुरी उजीयाल, करै नही अंखन[19] झखन काल।
ईंद्रादिक वापुरे[20] लोकप आय, करै करतून रहे कदराय ॥३०१२
तथा वधकारक श्रीपति तोहि, हीयै मोहि आवत होय-न-होय[21]।
मरे खरदूखन हू बिन मौत, सुनो हम बात कही बिच सौत ॥३०१३
लखायन[22] राघव प्राक्रत लोय, कला अवतारीय है ईह कोय।
ईकाईक[23] बंदर मारुति[24] आय, ज्वला बिच दीनीय लंक जराय ॥३०१४
गयौ कुसलात सोऊ नभ गैल, फिरचौ[25] दिन जाँन लयौ बस फैल।
अरुंधति रोहिनी आदक और, सीया कँह पुज्जत[26] है सिरमौर ॥३०१५
पतीव्रत[27] चोरी सौं लाय पलाय[28], बसाईय लंक में आँन बलाय।
भयौ कुल नास निसाचर भूप, केऊ तीय डार चले दुख कूप ॥३०१६
दुखानल[29] सीनवती मन ताप, प्रजारेऊ ताहि पराक्रम पाप।
कहू बिन कारन होय न काज, सुभाखत आपत[30] रूप समाज ॥३०१७

---

१ धोती है। २ अनेक प्रकार। ३ सुन्दर। ४ सौभाग्य। ५ भाग्यहीन। ६ आपकी। ७ पराई। ८ परिणाम। ९ पटरानी। १० मंदोदरी। ११ उदास। १२ भूमि। १३ हाथ। १४ [illegible]। १५ छिपाते हो। १६ लज्जा। १७ कपट। १८ मुझे। १९ आंखों। २० बेचारे। २१ [illegible]। २२ साधारण रूप से। २३ यकायक = अचानक। २४ हनुमान। २५ [illegible]। २६ पुजती है। २७ पतिव्रता। २८ भगाकर। २९ अग्नि। ३० आप्तपुरुष।

सुभाँमन[1] राँम की नाम की सीय, परेखहु मृत्यु कौं कारन पीय।
सीया सुख साजहि राँम के साथ, ईती तीय होगई आज अनाथ ॥३०१८
सुबासत चंदन बर्न[2] सरीर, नहावत छीज गुलाब के नीर।
मनोहर भोग लगे सब माग, अहो पीय छोर चले अनुराग[3] ॥३०१९
सुसोभत सीरख[4] क्रीट[5] सहेत, रमौ बिच गूद निसा रन रेत।
बिराजत सुंदर भ्रूहन[6] बंक, अनूँपम चंचल ईछ्छन[7] अंख ॥ ३०२०
कपोल हू गोल सुहावन काँन सु धारत कुंडल लोल समाँन।
ऊदंचत[8] नासका दीपक ऐम, प्रभा अधुराँन रचे मंद पेम ॥ ॥३०२१
अमोलक[9] हास बिलास के ऐन, दसूमुख नारिन कौं सुख दैन।
रथांग[10] की धूर रही जिह रूँद, मही बिच सोय रहे चख[11] मूँद[12] ॥३०२२
बिनोद की तर्क बितर्क सुबात, रचावत खेल रहै दिन रात।
मनोहर हास बिलास मुकाँम, ईहै मुख पंकज सौ अभिराँम[13] ॥३०२३
प्रभा तिह चंद हरीक पतंग[14], प्रकासहु पीव[15] जँही पर संग।
भिदी तन राघव की सर भाल, लखावत जावत श्रोनत[16] लाल ॥३०२४
अनूँपम नीलमनी[17] सम अंग, भयौ सोई माँनव के कर भंग।
ईहै सुपनंतर[18] है कछु आज, सुनौ कथ सूरन[19] के सिरताज ॥३०२५
वभीखन आद कही नय[20] बात, नस्यौ[21] सोऊ पाव दई तऊ[22] लात।
लग्यौ फल ताहीय कौ ईह लीन, पसारकै पाव परे भुज पींन[23] ॥३०२६
ईही परचालन बज्र अनूँन, धुकावत सत्रुन के सिर धूँन।
जरी सोई हाटक[24] झाटक जाल, सँभारत क्यौं नहीं लोकप-साल[25] ॥३०२७
बढी हीय पीर करंत बिलाप. ऊचारत सीक्रत[26] कुष्ट[27] ईलाप[28]।
भई मुरछागत[29] राँवन-भाँम[30], मदोदरि राँनीय बीर-मुकाँम[31] ॥३०२८
परी पत[32] देह कै ऊपर पेख, बिचार कै सौतन आद बिवेक।
ऊठाय कै फेर दयौ ऊपदेस, बिचारहु देवीय ज्ञाँन बिसेस ॥३०२९

---

१ स्त्री। २ वर्ण = रंग। ३ प्रेम। ४ मस्तक। ५ किरीट। ६ भौं। ७ देखना। ८ उठी हुई। ९ अमूल्य। १० पहिया। ११ आंख। १२ बंद। १३ सुन्दर। १४ सूर्य। १५ प्रिय पति। १६ रक्त। १७ मणि। १८ स्वप्न। १९ शूरवीर। २० नीति। २१ सिर नवाया। २२ तब भी। २३ पुष्ट। २४ सौना। २५ लोकपालों को पीड़ा देने वाले। २६ सिसकारी भरके। २७कष्ट। २८ विलाप। २९ मुर्छित। ३० पत्नी। ३१युद्ध क्षेत्र। ३२ पति।

ईतौ जग पाप रू पुंन्य अधार, निहारहु राज बिभौ[१] निरधार।
ईहै थिर जाँनत बात अलीक[२], थिती ठह रावन माँनत ठीक ॥३०३०
अज्ञाँन सौं जाँनत और की और[३], जिही गत काल सौं नाहिन जौर।
ऊठायकै लिन्नीय[४] लेत ऊसास, निचोवत[५] नैनन-नीर-निरास ॥३०१३१
बिभीखन राँम कही जब बात, बिसासहु[६] नारिन कौं बिललात।
करौ मिल बंधव प्रेतक्रीयाह, दिबाबहु कोनप बिगृह दाह ॥३०३३
बभीखन राँम रजा[७] लहि बीर, हल्यौ जब आतुर ह्वै हमगीर।
लग्यौ सोई लंकपुरी मग लेह, गयौ अग्नोत्र हु राँवन गृ हे ॥३०३३
प्रजारीय ऊत्तंम[८] आग पुनीत, पढाय कै वेद के मंत्र प्रनीत[९]।
सबै जिग[१०] पात्र सँभार सँभार, भरे बहु चंदन आदक भार ॥३०३४
सुगंधत काठ लये बहु साथ, जिते मनि मोतीय ऊत्तंम जात।
सबै निसचारन कौं लहि संग, भयौ जहाँ रांवन कौ तन भंग ॥३०३५
गये रनखेत[११] जबै कर गाँन, सबै पुरबासीय लोग सयाँन।
सुबर्न की ऊतंम लै सिवकाहि[१२], मरयौ तन राँवन कौ घर माँहि ॥३०३६
बढे दिस दछ्छन[१३] की तव बाट[१४], ठयौ असवारीय[१५] अंतक[१६] ठाट।
वजावत पेटह[१७] पट्टह[१८] वाज[१९], सबै मिल चालेऊ संग समाज ॥३०३७
पछारीय नार गह्यौ तिह पंथ, करंतीय[२०] कूक पुकारत कंथ।
जमी समसाँन[२१] की ऊतम[२२] जाँन, थपे जहाँ राँवन कौ तन थाँन ॥३०३८
सुगँधत चंदन पद्म ऊसीर, कपूर हू आदक औ कसमीर[२३]।
चिता बहु काठ बनाईय छाय, बिधोबिध राँकवचर्म[२४] बिछाय ॥३०३९
करे पढ वेद के मंत्रन काज, रखे तिह ऊपर राँवनराज।
मिले दुज[२५] मंडँन कौं पित्रमेध, भली बिध बेद ही कौ लहि भेद ॥३०४०
करी तव पूरव दछ्छन कोन, तयारीय बेदीय ऊतम तोन।
सथापन कीन हुतासन[२६] सुद्ध ऊठायकै कोनप[२७] मेलेऊ ऊद्ध ॥३०४१

---

१ वैभव। २ मिथ्या। ३ कुछ की कुछ = अन्यथा। ४ लो। ५ वहारही थी। ६ सांत्वना दो। ७ आज्ञा। ८ उत्तम। ९ प्रणीत। १० यज्ञ। ११ युद्ध क्षेत्र। १२ पालकी। १३ दक्षिण। १४ मार्ग। १५ मू.प्र. असवावारीय : १६ समय की। १७ ढोल। १८ नगाड़े। १९ वाजे। २० करती हुई। २१ श्मसान। २२ उत्तम। २३ केशर। २४ मृगछाल। २५ द्विज = ब्राह्मण। २६ अग्नि। २७ शव।

दही घृत और सुअन्नहु देख, बिधाँन सौं कधर मेल बिसेख।
जहाँ अन पाय उलूखल[1] जंघ, सँभारकै दोय पदारथ सग ॥३०४२
धरे केऊ काष्ट के पात्रन धोय, जहाँ अरनी ऊतरारनी जोय।
पदारथ मूसल आद परेख, बिधोगत बेद की देख बिसेख ॥३०४३
महारिखी आदन कौ सुन मंत, पराँयन[2] नीत की रीत प्रजंत।
थपे सब जो जिह चाहत ठौर, अनोअन[3] केक पदारथ और ॥३०४४
करचौ बध ऊतंम[4] हू पसु कोय जहाँ कहु चाहत ताहि कौं जोय।
बभीखन आद मिले जनबृंद, अनूपम फूल तथा अरबिंद[5] ॥३०४५
जहाँ सब रोवत डारत जाय, निरंतर सीस नमाय नमाय।
विचारकै अग्र[6] कौं पाव बढाय, बभीखन दीनोय आग बताय ॥३०४६
भयौ जर भस्म निसाचर भूप, सबै ऊठ चाले ऊदास[7] सरूप।
गये नद नालन पै कर गाँन, सबासन कीनेऊ नीर-सिनाँन[8] ॥३०४७
तिलांजल दीनोय ऊतम तोय, सबै मृतु रीत सौं जाँनत सोय।
गये जब नग्र[9] में राजन ग्रेह, सबै नर नार बिरक्त सनेह ॥३०४८
बभीखन बोल सँबोधन बात, सबै समुझास करी ईकसात[10]।
हले सोई राघव आय हजूर, दहूँ कर जोर खरे भये दूर ॥३०४९
निहारत राँम सबै कपि नैन, सुग्रींव हू आदक जूथप सैन।
बतासुर मारकै दाँनव बृंद, अनंदत होय खरौ मनु ईंद[11] ॥३०५०
सुसोभत[12] स्याँमल रूप सरीर, भई भट भल्लुक बंदर भीर।
भयानक बीर तज्यौ रस भाव,सुहावन दीसत[13]सोम[14]सुभाव[15] ॥३०५१
दुरंतर राँवन कौ बध देख, बिजै रघुवीर की नैन बिसेख।
बिमाँनन बैठ सबै सुरबृंद, ऊगायकै चालेऊ हीय अनंद ॥३०५२
पराक्रम राघव कौ भरपूर, समर्द[16] हु भल्लुक[17] बंदर सूर।
सुग्रींव की मित्रता और समाग, ईही बिध मारुति[18] कौं अनुराग ॥३०५३
बली कल लच्छन बीर बिधांन, ऊचारत बात हीये अनुमाँन।
सिधायगे स्वर्ग दिसा सुरगीय[19], हरख्खत[20] होय घने बिच हीय ॥३०५४

---

१ ऊखली। २ परायण। ३ अनेक। ४ उत्तम। ५ मू०प्र० = अरबिंद = कमल। ६ आगे। ७ उदास। ८ स्नान। ९ नगर। १० एक साथ। ११ इन्द्र। १२ सुशोभित। १३ दिखाई देते हैं। १४ सौम्य। १५ स्वभाव। १६ समर = युद्ध। १७ रीछ। १८ हनुमान। १९ देवता। २० हर्षित।

दयौ तब सासन[1] मातुल देख, बिचारकै राघव बुद्ध बिसेख।
पुरंदर[2] सिदन लै निज पंथ, सिधावहु सूत निरंतर संत ॥३०५५
गयौ तब मातुल हू निज गृह, सराहत राँम प्रभाव सनेह[3]।
सुग्रींव सौं राँम मिले सरसाय, लगायकै अंग हीये लपटाय ॥३०५६
मिले फिर लछ्छन सौं भर मोद, जुहारीय जुथ्थप[4] पायन जोध।
हितेसीय[5] अंगद औ अनुमाँन, परे पद पंकज जोरत पाँन[6] ॥३०५७

दोहा

मार निसाचर मुगटमनि[7], राँवन कौं रन राँम।
आये सूरज[8] अवध के, सवर[9] बीच घनस्याँम ॥३०५८
धरम सत्त[10] बृत धारना, पुन निभ्भ निकट परेख।
बोले लघु-भ्राता बिहस, द्रगन बभीखन देख ॥३०५९
संत सनातन लीय सरन, अरु कीनौ ऊपकार।
देहु बभीखन राजपद, न्याय रीत निरधार[11] ॥३०६०

छंद मोतीदाँम

दीयौ जब राँम निदेस दिढ़ाय[12], चले तब लछ्छन सीस चढ़ाय।
बभीखन संग लयै कपि-बृंद्र, ऊहासत चालेऊ पाय अनंद ॥३०६१
अनुपम जायकै राज-अगार[13], बुलायकै मंत्रिन कौं दरबार।
महुरथ[14] मंगलदायक मिलाय, सिंघासन थापेऊ[15] आँन सुभाय ॥३०६२
सुसोभत कीन बभीखन सीस, ऊचारत मागध बिप्र असीस।
करयौ कर लछ्छन सौं अभिषेक[16], बिचारकै बेद की रीत बिसेक ॥३०६३
नमे पग आय निसाँचर लोग, जथारथ[17] पायकै आदर जोग[18]।
करी तिन भेट निछावर केक, अनूक्रम आद मृजाद असेख[19] ॥३०६४
सबै जन मंत्रीय लै भट साथ, रहे जहाँ आय गये रघुनाथ।
बभीखन भेट करी अवधेस, बिचारकै मंत्रीय आद[20] बिसेस[21] ॥३०६५

१ आज्ञा। २ इन्द्र। ३ स्नेह। ४ यूथपति। ५ हितैषी। ६ हाथ। ७ मुकुट-मणि। ८ सूर्य। ९ शिविर। १० सत्य। ११ निर्धार। १२ दृढ़ होकर। १३ राजभवन। १४ मुहूर्त। १५ मू० प्र० थपेऊ। १६ राजतिलक। १७ यथार्थ। १८ योग्य। १९ अशेष। २० आदि। २१ विशेष।

बभीखन बोलेऊ लंकबरीस[1], अनाथ के नाथ रघूकुल ईस।
बभीखन स्राँन[2] सुनी ईह बाँन[3], पसाव[4] कै ऊठ मिले गहि पाँन[5] ॥३०६६
कहे फिर राघव येह कथंन[6], सखा हम आज भये सुप्रसंन[7]।
जयौं हम जाँनकी कारन जुद्ध, सँभारीय नाँहिन ताही की सुद्ध[8] ॥३०६७
कह्यौ हम लंकपती तुहि काज, ईहै अभिलाख मिटी मम आज।
प्रतज्ञा लीन परी सोई पार[9], सँपेखकै नैरत[10] को सिरदार ॥३०६८
सुग्रींव हू आद कर्यौ जय सोर, दया रघुबीर को बाढेऊ दौर।
कह्यौ हनूमाँन सौं फेर क्रपाल, बिलंब न कीजियं बुद्धिबिसाल ॥४०६९
विजोग[11]सौं सीय रही बिललात,कहौ हम जाय तही कुसलात[12]।
चले हनूमाँन ततछिन[13]चाहि,बिचछ्छन[14] ज्याँनकी बास बसाय ॥३०७०
खरे कर जोर भये जय खंभ, बिलोक कै ज्याँनकी[15] पाय विश्रंभ[16]।
निहारत नैनन चालेऊ नीर, सुभागम सात्वक[17]होय सरीर ॥३०७१
लखी सीय चित्र लिखी सीय नैन,बिचारकै मारुति[18] बोलेऊ बैन।
कही रघुनायक येह कहाँन, सुनौ सुखदायक बायक[19] स्राँन ॥३०७२
संघारेऊ रांवन बंस सहेत, हन्यौ खल खेत सीया तुहि हेत।
सबै विध है कुसलात सरीर, प्रीया ईक देखन की हीय पीर ॥३०७३
कहौ सोई जाय कहूं कुसलात, बिचार न जाँनत दूसर बात।
सुनी प्रीय-बाँनीय कौं सीय श्राँन, दीयौ जीय जाँनकै ऊत्तर-दाँन ॥३०७४
बिचारत हूं मन ही मन बात, कहो रघुनायक की कुसलात।
बधाई देवन कौं कोऊ बस्त, सँभारत होय गयौ मन स्वस्त ॥३०७५
त्रलोकीय राज नही सम तूल, भ्रमावत बुद्ध रही गत भूल।
ईहै प्रीय-बाँनीय को ऊपकार, करूं कहा नाँहि घर्यौ करतार ॥३०७६
बिचारकै भाखत बारंमबार[20], रही तुम जीवत पौंनकुमार[21]।
सदाँ रघुनायक पाय सनेह, श्रखो हीय बाढ ही आसिख एह ॥३०७७
जई रघुबीर बिजै सुन जंग, सबैं दुख भूल गई ईक संग।
ईहै जीय राँम कौ नाँम अधार, बिसारत[22] नाहिन येकहु बार ॥३०७८

---

१ लंका को प्रदान करने वाले। २ कानों से। ३ वाणी। ४ कृपा करके। ५ हाथ = पाणि। ६ वात। ७ सुप्रसन्न। ८ सुधि। ९ पूर्ण हुई। १० राक्षसों का। ११ वियोग। १२ कुशल समाचार। १३ तत्क्षण। १४ विचक्षण। १५ सीता। १६ आश्वस्त होकर। १७ सात्विक। १८ हनुमान। १९ वाक्य। २० बारबार। २१ पवनपुत्र। २२ भूलता।

बिलोकन राँम बिना बिसवास[1], तथा ईह नैनन कौं मम त्रास।
सुभाखहु पीव[2] कौं जाय सँदेश, अनाथ के नाथ सदाँ अवधेस ॥३०७९
नमायकै सीरख[3] केसरीनंद[4], ऊठे अति आतुर पाय आनंद।
मिले रघुनायक सौं कर मंत, बिचारकै सीय कह्यौ बरतंत[5] ॥३०८०
बभीखन देख कह्यौ रघुबीर, धरौंज[6] न नैक सखा हीय धीर।
सुधारकै ज्याँनकी[7] अंग श्रंगार, बुलावहु बेग न लावहु बार[8] ॥३०८१
बभीखन ऊठ चले निज भौंन[9], गये पुरअंतहु[10] में कर गौंन।
कह्यौ निझ[11]नारन[12]सौं ईह काज, मिले सीय चाहत है महाराज ॥३०८२
चलौ तीय बाग मिलौ छल छोर, अलंकृत[13] वेख सभावहु ओर।
बभीखन राँनीय आव[14] बिचार, निसाचरि संग लई बहु नार ॥३०८३
सीया पँह जाय नमाएऊ सीस, ऊचारीय नारन और असीस।
लखी चिव[15]सीय रही ललचाय, भई क्रसगात[16]बिजोग[17]कै भाय ॥३०८४
ऊचंद्रहु[18] बीतत ज्याँ अरबिंद[19], छिपामुख माँनहु दोज कौ चंद।
दिपै दुत[20] दीपसिखा सम देह, बिलोकीय नंदनी येम बिदेह ॥३०८५
बभीखन तीयन नै बिनतीय[21], सकोच कै हीय करी तब सीय।
कही पत[22] मोर सौं रावरे कंथ, सनातन पावन कौं गन संत ॥३०८६
सीया कह लावहु साझ श्रंगार, बिजोग कौं त्याग करै बिवहार[23]।
दवायति दीन्नीय रावरे[24] दास, ईहै चित चाह करी अरदास[25] ॥३०८७
हलै हम रावरै साथ हजूर, दुरंतर जाय सबै दुख दूर।
निदेसन राँम को मांन निदाँन, सीया जल ऊतँम कीन सिनाँन[26] ॥३०८८
सुबासन[27] धारेऊ सुद्ध सरूप, अलकृत कंचन हीर अनूप।
बभीखन भूप खरे जहाँ बार, सहेलन[28] दीन्नीय ठीक सुधार ॥३०८९
जबै सिवका[29] ईक ऊत्तँम जाँन, अनूपम हाजर किन्नीय आँन।
चढी मिथिलेस-कुमारीय चाहि, बभीखन मंगल बाज बजाय ॥३०९०
चढे असवारीय बीच बजार, निहारत लंक पुरी नर नार।
द्रगंचल[30] बीरबधू कह देख, ऊचारत जै जय सब्ब असेख ॥३०९१

१ विश्यास। २ प्रिय पति। ३ मस्तक। ४ हनुमान। ५ वृतांत। ६ धैर्य। ७ जानकी। ८ विलंब। ९ भवन। १० अंतःपुर=रनवास। ११ निज=अपनी। १२ स्त्रियों। १३ अलंकृत=आभूषण युक्त। १४ आदि। १५ सुन्दरता। १६ कृश शरीर। १७ वियोग। १८ पिछली रात। १९ कमल। २० द्युति। २१ विनती की। २२ पति। २३ व्यवहार। २४ आपके। २५ विनय। २६ स्नान। २७ वस्त्र। २८ सहेलियों। २९ पालकी। ३० आंख।

पहूँचीय पत्तन[1] कै जब पार, बभीखन अग्र बढ्यौ सुबिचार।
करी बिनती रघुनायक काज, बिदेहीय आवत यांन बिराज ॥३०९२
विचार कै राँम कही पुन बात, खत्री[2] कुल जाँनत है सब ख्यात[3]।
विख्यात है सूरज देव कौ बंस, पिछानत औधपुरी परसंस[4] ॥३९३
बसायेऊ मोहि पिता बनबास, अरंन[5] में डोलत होय ऊदास।
पती संग नार कौ बास पुनीत[6], सदा निरवाह[7] करै तेह सीत ॥३०९४
ईहीं मुरजाद[8] सदाँ अनुकूल, महाँ सुखदायक है जस[9] मूल।
ईही ईक जाँनहु दीरघ[10] आड़, बिचारहु चित्त कनातन बाड़ ॥३०९५
बिपत्त[11] मैं जुद्ध सुयंबर[12] बीच, मृजाद न तीरथ कारन मोच[13]।
विवाह में जिग्य[14] में औ बनबास, जरूरत लाज की नाँहिन जास ॥३०९६
सबै बनबासीय[15] बासीय सैल, गनो लघु-बंधव ज्यूं कपि गैल।
सीया पग चाल[16] त्रीयागन साथ, निहारकै बंदर होय सनाथ ॥३०९७
बभीखन जाँनकै राँम बृतंत, ऊतारकै सीय कौं सैन के अंत।
सुभाँमन[17] पैदल लायेऊ साथ, रहे जहाँ डेरन में रघुनाथ ॥३०९८
पतीबृत चंदमुखी जुत प्यार, जती रघुबीर कौं कीन जुहार।
पलोटकै पंकज पावन पाँन[18], सीया रघुनाथ मिली सुखदाँन ॥३०९९
गयौ धन पावत ज्यों बिच गृह, डुल्यौ जीय आवत त्याँ[19] पुन देह।
मिली मछरी[20] बिछुरी जल माँहि,कुरंकुरी[21] पाय कुरकर[22] काँहि ॥३०९१
छिपा[23] प्रतिबिंब प्रभागत चंद, समाँगम कोकीय[24] कोक[25] समंध।
भई रघुनाथ सीया ईम भेट, महाँ दुखसागर को थिति[26] मेट ॥३१०१
सबै कपि सैन करयौ जय सद्द[27], निसाचर सैन नगारन नद्द[28]।
बिराजीय बाँमीय ओर कौं बाँम,रमाँ[29] हरी[30] जेम सुसोभत राँम ॥३१०२
जई रघुनाथ कही कथ जंग, अनूंपम सीय बढ्यौ ऊच रंग।
करयौ अभिबदन सैन कपिंद, बभीखन आद सबै जनबृंद ॥३१०३

---

१ नगर। २ क्षत्री। ३ प्रसिद्ध। ४ प्रशंसा करके। ५ बन। ६ पवित्र। ७ निर्वाह। ८ मर्यादा। ९ यश। १० दीर्घ। ११ विपत्ति। १२ स्वयंवर। १३ मृत्यु। १४ यज्ञ। १५ बनवासी। १६ पैदल चलें। १७ स्त्रियों को। १८ हाथों से। १९ उसी प्रकार। २० मछली। २१ सारस की स्त्री। २२ सारस। २३ रात्रि। २४ चकवी। २५ चकवा। २६ मर्यादा। २७ शब्द। २८ नाद=ध्वनि। २९ लक्ष्मी। ३० विष्णु।

दोहा

बोले सीता सौं बहुर, सकल रीत समुझाय।
संमृथ[1] ह्वै तौहू सरल, निबहै लोकक[2] न्याय ॥३१०४
हित तेरै रॉवन हन्यौ, भूँम ऊतारयौ भार।
ईक संका मेरे ऊवर[3], कहत विदेहकुमार ॥३१०५
हरी दसाँनन हाथ सौं, बैठारी गृह बाँह।
लायौ तोकह लंक में, कोरा में घर काहि[4] ॥३१०६
करयौ दसाँनन चोर क्रम, लायौ तोकँह लंक।
ध्वंस भयो छत्रीधरम, कुल कौं लाग कलंक ॥३१०७
सैन जोर अरि तिघरयौ[5], परी प्रतज्ञा[6] पार।
लंकपती सौं बैर लै, आपुन कीय ऊद्धार ॥३१०८
पर-घर पर-वस[7] होय पुन, बहु दिन करे वितीत[8]।
नहि आवत मेरी निजर[9], पूरी धरम[10] प्रतीत ॥३१०९
तातै मैं तुमकौं तजत, जहाँ रूचै जहाँ जाय।
अवध वितावहु आपनी, सबही कहत सुनाय ॥३१००

छंद मोतीदाम

सीया सुन अप्रीय[11] वाँनीय श्रौंन, कही रघुनायक सौं तज काँन[12]।
पठायेऊ मारुति[13] कौं हम पास, पराछृत[14] क्यौं[15] नही कीन प्रकास ॥३१११
जिही दिन त्याग कै जावत जीव, पतीवृत धर्म पिछाँन कै पीव[16]।
विसास कै[17] रावरे पास बुलाय, दयौ सुख नैनन कौं दरसाय ॥३११२
दया ईह किन्नीय दीनदयाल, हीयै अवगाह कै पूरब हाल।
ईहै कहि लच्छन[18] की झुक ओर, निहार कै बोलीय नैक निहोर ॥३११३
भली कीय साँवरे रावरे[19] भ्रात, अखो[20] अब मोहि भयी अहवात।
निराकृत[21] राँम कीयौ होय नेह, दुराकृत त्याग करु ईह देह ॥३११४

---

१ समर्थ। २ लौकिक। ३ उत्पन्न हुई। ४ शरीर। ५ संहार किया। ६ प्रतिज्ञा।
७ दूसरे के वश में। ८ व्यतीत। ९ नजर = दृष्टि। १० धर्म। ११ अप्रिय।
१२ लज्जा। १३ हनुमान। १४ प्रायश्चित्त। १५ क्यों। १६ प्रिय। १७ विश्वास
करके। १८ लक्ष्मण। १९ तुम्हारे। २० अग्नि। २१ समाप्त।

मंगावहु काठ चिता ईक मंड, प्रजारकै छार करू ईह पिंड[1] ।
लखे जब रॉम की ओरहु लच्छ, अंगारन धोम भरो हुई अच्छ[2] ॥३११५
करी अरजी न जबै कछु कोय, होयै मह जानीय होय सु होय[3] ।
कह्यौ जिम सोय करयौ सोऊ काज, मुरज्जीय[4] जाँन लई महाँराज ॥३११६
चिता जब दोनीय लच्छन छाय, बिदेहीय ऊठ चली बिलखाय ।
हुतासन[5] लेय कै आपने हाथ, नमाय कै सीरख[6] श्री रघुनाथ ॥३११७
प्रजारकै आग प्रदच्छन[7] पाय, दई तब ज्याँनकी[8] देख दिखाय ।
द्वजन्मन[9] और जुहार कै देव भली बिध हीय प्रकास कै भेव ॥३११८
हुतासन जोर कै बोलीय हाथ, निरंतर नाथ गेन रघुनाथ ।
भयौ पतिवृत्त कदाचन[10] भग, ऊबारहु एह हुतासन अंग ॥३११९
ईतौ कहि बैठ गई बिच आग, सबासन[11] रॉनीय सीय समाग ।
मिली झल धूम घटा चहुमेर, कुलाहल सोर भयौ जनकेर ॥३१२०
ईहीं अवसाँन पै औरहु आय, निहारीय नैनन देब निकाय[12] ।
क्रतंत[13] हू बज्रीय[14] और कुबेर, हितेसीय आद परंजन हेर ॥३१२१
बिरंचन[15] धूरजटी[16] रिख[17] बृंद, छल्यौ हीय आय लख्यौ ईह छंद[18] ।
पितामह आद करे परनाँम[19], रहे सब घेर नरेसुर[20] राँम ॥३१२२
बिरंचन बोल ऊठे जिह बेर, ईहै गृह सूरज को न अँधेर ।
अहो जग कारन आद[21] अनंत, बिचारकै कौन कहा बरतंत[22] ॥३१२३
सनातन रूप बिभू घनस्याँम, कला अवतारीय पूरन काँम ।
बसू रित धाँमा भये रघुबीर, प्रजापत[23] मेट करी जग पीर ॥३१२४
भये तुम अष्टम रुद्रभ बेस, बने तुम पंचम साध्य बसेस[24] ।
बिराट कौ रूप ईहै बृहमंड, पसारौ है जक्त[25] ईही तुम पिंड ॥३१२५
कृपानिध नासक[26] नासका काँन, बिभा जुत अंबक[27] है ससी भाँन ।
महाँप्रभू आदहू अंतहू मद्ध[28], परा पुरसोतम[29] रूप प्रसिद्ध ॥३१२६
चतुर्दस लोकहु के तुम स्याँम[30], रवूपत बिश्व के आतम[31] राँम ।
कहो ईह राघव सौं करतार, बिसेकत बोलेऊ राँम बिचार ॥३१२७

१ शरीर । २ आंखें । ३ होना है सो हो । ४ मर्जी = इच्छा । ५ अग्नि । ६ मस्तक । ७ प्रदक्षिणा । ८ सीता । ९ ब्राह्मणों । १० कदाचित् । ११ चिता । १२ समुदाय । १३ यमराज । १४ इन्द्र । १५ ब्रह्मा । १६ महादेव । १७ ऋषि । १८ छल । १९ प्रणाम । २० नरेश्वर । २१ आदि । २२ वृतांत = बात । २३ प्रजापति । २४ विशेष । २५ जगत । २६ अश्विनीकुमार । २७ आँखें । २८ मध्य । २९ पुरुषोत्तम । ३० स्वामी । ३१ आत्मा ।

पिता दसरथ्थ नरेस के पूत[1], करं तन माँनव की करतूत[2] ।
ईही हम माँनत है मति येक, बिचार न जाँनत और बिसेक ॥३१२८
कहाँ हम आए है है हम कौंन, समंध[3] की बात सुनावहु स्राँन ।
बिरंचन बोलेऊ सोच बहोर, मधूजित[4] देवन के सिरमौर ॥३१२९
गदा चक्र धारनहार गोबिंद, मक्राक्रत कुंडल काँन मुकंद ।
बने तुम कच्छ्छ रू मच्छ्छ वराह, प्रलै[5] बिच थापेऊ नीर-प्रवाह ॥३१३०
सदा सत अच्छ्छर[6] बृह्म स्वरूप अघोक्षज पावन रूप अनूप ।
सुधर्म हु जीवन कौं सरजंत[7], चतुर्भुज आतम तत्व अचित ॥३१३१
धरै खग नंदक सारंगवार, ईहै जग बिस्वक सेन अधार ।
त्रिविक्रम व्यापक बिस्नु तमाँम, नराँयन गृाँमनी आदिक नाँम ॥३१३२
पदारथ एक सौं एक पुनीत मिली स्रुत[8] भ्यासत है जग मीत ।
छिमा अरू सुमृति[9] रावरी छाँहि, मती थिती दीसत जीवन माँहि ॥३१३३
महेंद्र हु इंद्र के कर्म मझार, माहा[10]मुनि भाखत एह मुरार ।
माहातम वेद पुराँन मृजाद[11], अहौ सत सीरख आद अनाद ॥३१३४
प्रकासत पंचहुं इंद्रीय प्राँन[12], बनावत तीनहू लोक विधाँन ।
माहासिध साधक आलय[13] मूल, थपे जढ[14] जंगम सुक्षम[15] थूल[16] ॥३१३५
करै ऊर ध्याँन कहै खटकार, ऊपासत रूप सदा ओऊंकार[17] ।
तिहारेई[18] नाम सबै जग तात, मुकाँम न धाम नही पितु मात ॥३१३६
गऊ[19] दुज[20] ग्यातन[21] में तुम गेय, अगाध[22] अवाद अनंत अजेय ।
धरा नभ आगम पव्वय[23] धाँम, कला जग कारन पूरन काँम ॥३१३७
सदा जल साईय-सेस[24] सरूप, भयापह[25] देवन के तुम भूप ।
सरीर है रावरो एहु संसार, होयो हम जाँनत जाँननहार ॥३१३८
सरस्वती देवीय जीह[26] समाँन, सबै सुरगीय[27] हु रोम सुथाँन ।
असंभव कोप ईहै हरी आग, निसापत[28]प्रस्न-दसा[29] अनुराग ॥३१३९

---

१ पुत्र । २ कार्य । ३ सम्बन्ध । ४ मधु को जीतने वाले । ५ प्रलय । ६ अक्षर । ७ सृजन करते हो । ८ श्रुति । ९ स्मृति । १० महा । ११ मर्यादा । १२ प्राण । १३ आश्रय । १४ जड़ । १५ सूक्ष्म । १६ स्थूल । १७ ओंकार । १८ तुम्हारे ही । १९ गो । २० ब्राह्मण । २१ ज्ञानियों में । २२ अथाह । २३ पर्वत । २४ शेष, शैया । २५ भयभीत । २६ जिह्वा = जीभ । २७ देवता । २८ चन्द्रमा । २९ प्रसन्नदशा ।

थिरा थिरता जढ[1] जंगम थित्त, निरंतर बेद सुभावना नित्त[2]।
निसा[3] उन्मेखन[4] है तुव नैन, ऊदै ऊन्मीलन[5] बासर[6] ऐन ॥३१४०
सुरेंद्र कौं राज दयौ सरसाय, बली दनु-बिद्र[7] पताल बसाय।
रमा अवतार सीया रमनीय, ईंद्रानुज सागर के अयनीय ॥३१४१
मर्‌यौ रन लंकपती माहाराज[8],कर्‌यौ तुम देवन कौ सिध[9]काज।
पराक्रम पूरन तेज प्रताप, उदै जग कीन बिसंभर[10] आप ॥३१४२
निहारहु औधपुरी रघुनाथ, सबै जन कीजीयै जाय सनाथ।
ईहै कथ गावहि संत अनेक, परायन[11] पावहि मुक्ति प्रवेक ॥३१४३
ईहै बिध राँम संबाद की बात, करै कौऊ पाठ कहै कहनात।
पदारथ च्यारहु[12] कौ फल पाय, सुखी सोऊ होवहि संत सुभाय ॥३१४४

दोहा

कही बिधाता ईह कथा, सुरन समाज समेत।
सांत भये रघुनाथ सुन, होय सीय बाढ्यौ हेत[13] ॥३१४५

छंद भुजंगी प्रयात

बिधाता कही राँम सौं येह बानी सबै रीत सौं चित्त वृती सिराँनी[14]।
ऊदर्बौ[15]हीयें राँम आलोचना कौं,समा देख स्वर्गीय सारी सभा कौं॥३१४६
लई गोद में राँम की लाड़ली कौं,लसै जेंम[16]बैदेह लीनै लली[17]कौं।
दई राँम कौं आय कै सत्य दाँनी,पिताह्वै पुनर्भू त[18]साखी[19]प्रमाँनी[20]॥३१४७
सुधारी मनौ सांति की सूरती सी, तपाई मनौ स्वर्न की मूरती सी।
पसारी सिरोभाग सौं केस पासी, रही नागनी भूल ज्यौं स्याँमरासी ॥३१४८
भरी माँग सिंदूर आरक्त[21]भ्यासे,किधौ क्कार कै मग्ग संध्या प्रकासे।
सुसोभै समी केस पाटी सँवारी, किधौ हेम कै अंग पै बेल कारी ॥३१४९
कढी ताहि कै अद्ध सौं ककराला, बिराजै मनौ पन्नगी काय बाला।
रजै भाल में चर्चका घोर रोरी, करै कर्न में कर्नभर्ने किसोरी ॥३१५०
निकाई जुतै बालका नासका में, जगै जोत मुक्तालता ग्रींव जामें।
बिराजै भुजा बीच कँयूर बधे, सुहावै बलै कंकना हाथ संधे ॥३१५१

१ जड़। २ नित्य। ३ रात। ४ खुलना। ५ खुलना। ६ दिन। ७ दैत्यराज। ८ महाराज। ९ सिद्ध। १० विश्वंभर। ११ पारायण। १२ चारों=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। १३ प्रेम। १४ शान्त हुई। १५ अग्नि। १६ जैसे। १७ पुत्री। १८ फिर उत्पन्न होकर। १९ साक्षी। २० प्रमाणिक। २१ लाल

जुरी ऊर्मिका[1] अंगुली है जटी पै, कसो मेखला[2] जाल दोसै कटी पे।
तुलाकोट[3] औ किंकनी[4] पाव त्यांही, भगै सिंजतं[5] झंन झंकार ज्युंहीं ॥३१५२
मुही[6] रंग को पाट[7] पौसाक सज्जे, रची गंध धूलीय[8] सो गंध रज्जै।
सिखा दीप कोसी प्रभा अंग सोहै, कलाकेल[9] कै चाप सी बंक भौंहै ॥३१५३
निकाई जुनै नैन नीकै निहारै, पती रांम के चित्त कौं फंद पारै।
दिपं ग्रास[10] आनंद को कंद जाकौ, पतीरोहनो[11] है मनौ पूर्नमा कौ ॥३१५४
निहारी जबै सीय के पीय नैना, बिचारै कही हीय सौं बीय बैना।
अगाधा अबाधा नहो कोय ऐसी, जलाकार छायौ चहूं ओर जैसौ ॥३१५५
धिता में समावै मनो नीर थारी, अकू पार[12] जावै न जैसै अगारी।
गहै वेद की रीत कौं आतम ज्ञांनी, द्रिढं कीरती कौं तजै नांहि दांनी ॥३१५६
प्रकासीय-गो[13] ज्यांन त्यागै प्रभाकौं, तजै ज्यांनकी नाहि जो सत्य ताकौं।
सिखी[14] की सिखा को सदा तेज साथी, तकै कोन जाकी गहै आच ताती ॥३१५७
त्युही ज्यांनको आपके तेज ही सौं, फरै आप रक्षा न चाहै कही सौं।
नहो मैथली[15] कं कोऊ दोस नेरो, मुखा[16] रांम नांमै हीयै ध्यांन मेरो ॥३१५८
पतीजे[17] बिना सांच ना और प्रांनी, विदेही बिलोके कही क्रूर[18] बांनी।
सीया की बढी सोह[19] ताते सवाई, निहारी सबै जक्त[20] नैना निकाई ॥३१५९
प्रसंसा करी रांम बैठाय पासै, प्रभा पूर्नमा चंद जैसै प्रकासै।
सीया रांम भ्राजै दुती[21] गौर स्यांमै, बसै इंदरा[22] ज्यों हरी भाग बांमै ॥३१६०
बरांगी सीया कीस नैनां बिलोकै, धुजा धर्म श्री रांम के पाव धोकै।
मिले वृंद वृंदारका[23] भीर मची, घटा जांनकै मेघ माला घुमंडी ॥३१६१
पधारे जबै अगृ को मूल दांनी,[24] बिचारे कही रांम सौं येहु बांनी।
अगृ पुर स्यायो पती लंक वारो, दहै रांम ध्वांतार[25] मेट्यो अधारो ॥३१६२
पिता रावरे दामरथ पधारे, धनी औधके स्वर्ग सौं पावधारे।
नमन माथे करो तुमोर सुपाता, मिलो जायकै रांम जूं नाय माथा ॥३१६३
प्रभु निम्न बांनी सुनी नाद प्रीती, परं-पुज्य[26] पूरे सुधर्म प्रनीती।
गहे दांम[27] सोनर्न पाव[28] लागे, सुमारी पिता पुत्र ह्वै सानुरागे ॥३१६४
दिखाये बड़े दामरथ[29] बिमाना, प्रबोध कीयो रांम नीती प्रधांना।

१ [illegible]। २ करधनी। ३ नेवर। ४ घुंघरू। ५ ध्वनि। ६ मजीठ। ७ रेशमी।
८ [illegible]। ९ कामदेव। १० मुख। ११ पूर्णचन्द्र। १२ समुद्र। १३ सूर्य।
१४ [illegible]। १५ [illegible]। १६ मुख से। १७ [illegible]। १८ कठोर। १९ शोभा।
२० संसार। २१ [illegible]। २२ लक्ष्मी। २३ देवता। २४ महादेव। २५ सूर्य
२६ [illegible]। २७ [illegible]। २८ [illegible]। २९ [illegible]।

लघू पुत्रहू लछ्छनं[1] मैथली[2] कौं, तिहीं रील सौं बोध दीनौ तिनीकौं॥३१६५
पतीलंक कौं जीत कीनौ पवारौ, तरे दुंद[3] सिंधु ईला[4] भार टारचौ।
सबै स्वर्ग के देव कीने सुखारी, भई हंस बंसीन[5] की क्रीत[6] भारी॥३१६६
अहों पुत्र है तोर मेरी असीसै, बढै बंस बृद्धी प्रजाहू बसीसै।
सिधाये जबै स्वर्ग कौं दासरथ्थं, पधारे तिही वार में देव पत्तं[7]॥३१६७
करी बर्नना जोर कै हाथ क्रीती, प्रकासी हीयै ग्रंथ[8] कौं खोल प्रीती।
माहाबाहु[9] लंकापती खेत मारचौ, त्रहू लोक भूमाद[10] कौ भार टारचौ॥३१६८
हितू इष्ट मेरे सदा दुष्ट हंता, अगाधा अबाधा अरूपा अनंता।
कछू काज है सो हमैंहू कहीजै, प्रभू प्रेम सौं चित्त मेरौ पतीजै॥३१६९
बिड़ोजा बिलोकै कही राँम बाचा, सबै मर्कटी बीर बिक्रांत[11] साचा।
परे जूझकै खेत में त्याग प्राँना, अरे येक सौं एक बाहू अजाँना[12]॥३१७०
अबाधा सबै होय कै जीव ऊठै, बसै देस जाँही घनौ बार बूठै।
करीजे ऊभै काँम मेरै कहे तैं, सिधावैं अजोध्या सीता कै सहेतैं[13]॥३१७१
जबै इंद्र नै कीस सेना जगाई, मरी जो परी देखकै भूँम माहीं।
निहारी सबै फौज राजीव नैना[14], बिड़ोजा कहे राँम सौं फेर बैनाँ॥३१७२
भरथ्थं[15] मिलौ जाय सत्रुघ्न भ्राता, मनावौ सबै माय[16] कौं नाय माथा।
कह्यौ इंद्र कौं राँम ऐसैं करैंगे अजोध्या पुरी सोक सौं ऊद्धरैंगे॥३१७३
सुनैं तै सबै देव ह्वैकै सुखारी, चले आपने आपने लोकचारी।
सीया राँमहू बीच डेरा सिधारे, पतीऔध सीता सती प्राँन प्यारे॥३१७४
बसे रात बासौ भई प्रात बेरी, ऊग्यौ गैन[17] पै भाँन[18] बीती अँधेरी।
बिजै राँन लीनी ईकै अब्द[19] बीतै, नमें ईस[20] के पाय ह्वैकै नचीतैं[21]॥३१७५
लगे पाय बभीखनं लंकधीसा, करी बीनती संग लीनै कपीसा।
बनोबास को औध[22] सारी बिताई, पतीलंक कौं जीत कै सीय पाई॥३१७७
करे मार्जना[23] अंग पौसाक कीजै, सुगंधी अलंकार नीकै सजीजै।
निहारं सबै रावरे[24] दास नैना, सुखारी जबै होय है कीस सैना॥३१७७

१ लक्ष्मण। २ सीता। ३ युद्ध। ४ पृथ्वी। ५ सूर्यवंश। ६ कीर्ति। ७ इन्द्र। ८ गांठ। ९ महा। १० भूमि आदि। ११ वीर। १२ आजानु भुजा। १३ सहित। १४ कमल नयन। १५ भरत। १६ माताओं। १७ गगन। १८ भानु=सूर्य। १९ वर्ष। २० शिवजी। २१ निश्चित। २२ अवधि। २३ स्नान। २४ आपके।

दोहा

बिहस बभीखन सौं बचन, कहे राँम सुखकार।
कौसपती[1] आदक कपन[2], सब्रन करहु सतकार[3] ॥३१७८
सतवादी[4] सुकमार[5] तन, धरम धुरधर धीर।
भरत करत तप भेटहुँ, बय किसोर लघु बीर ॥३१७९
सुभग बेख[6] लघु भ्रात सब, पेखहु निजर[7] पसार।
सखा मनोहर समुझीयै, सकल रूप श्रंगार ॥३१८०
अवलबत[8] पहुँचे वहाँ, अगम पयानो अंत।
घाट विषम अरू बन घने, पुरी अजोध्या पंथ ॥३१८१
करहु जतन[9] ताको कछू समुझहु सखा सिधंत[10]।
मात भ्रात मिल मोद मय, होय प्रजा हरखंत[11] ॥३१८२

छंद पद्धरी

बिध जुक्त बभीखन सुनी बात, हित बिहत[12] जाँन दहुँ[13] जोर हाथ।
रघुनाथ सुनहु राजाधिराज, कीजै सोई गनीयै ऊचत[14] काज ॥३१८३
बलवाँन भ्रात मम हाथ बीस, ईकपिंग[15] जीत अलका[16] अधीस।
पुस्पक[17] विमाँन लीय तिहीं पास, सो धरचौ लंक मह सावकास[18] ॥३१८४
आरोह पधारहु औध[19] ईस, बिच दिवस एक लंका बरीस।
सुन विनय बभीखन राँम आँन आतुर मगाय पुस्पक बिवाँन ॥३१८५
आरोहन लागे औध ईंद्र, रुच पाय कह्यौ जब राखसिंद्र[20]।
कपि सेना अद्भुत करचौ काँम, हित पूजा मेरै हृिदय हाँम ॥३१८६
ईह अज्ञा[21] दीजै समय आज, रघुवंस तिलक राजाधिराज।
रुच जाँन बभीखन कह्यौ राँम, कीजीयै सखा मन ऊचत काँम ॥३१८७
वनचारन दीने तँही वार,[22] अनगनत[23] पटंवर अलंकार।
सब भई दसहु दिस विदा सैन, आपने आपने देस ऐन[24] ॥३१८८
पुन जूथप राजा रहे पास, अनुकंपा रघुवर दरस आस।
रुच देख सयन की राकसिंद्र, करजोर जदही बोले कपिंद्र[25] ॥३१८९

१ सुग्रीव। २ कपियों=वानरों। ३ सत्कार। ४ सत्यवादी। ५ सुकुमार=कोमल। ६ भेस। ७ नजर=दृष्टि। ८ शीघ्र। ९ पल। १० सिद्धान्त। ११ हर्षित। १२ विहित १३ दोनों। १४ उचित। १५ कुबेर। १६ कुबेरपुरी। १७ पुष्पक। १८ खाली। १९ अवध। २० विभीषण। २१ आज्ञा। २२ उसी समय। २३ अगणित। २४ घर। २५ सुग्रीव।

पद पंकज हमरी हिृदय[1] प्रीत, नहिं तजत संग ईह सुनहु नीत।
भरथ कौं मिलन अरू मात भेट, थिरता[2] कौं देखहि चाल थेट ॥३१९०
पुरजन मंत्रिन सौं बढहि प्यार, लै चलीयें हमकौं आप लार[3]।
अज्ञा तब दीनी अवधईस, केऊ जुथ्थप लंकापति कपीस ॥३१९१
बिच बैठे सब पुस्पक बिवाँन, श्री राँम संग ह्वै सावधाँन।
ऊड़ चल्यौ ऊर्द्ध[4] मारग[5] अकास, पुहमी न गिगन[6] बाढ्यौ प्रकास ॥३१९२
कुनकुनत झीँन गत किंकनीय, झलमलत जलज[7] कल[8] झल्लरीय।
रगमगत होरमनी पद्मराग[9], लगथगत पताका ध्वजा लाग ॥३१९३
सावर्न[10] रजत[11] प्रित दीप्त संग, ऐंबास सिखर जनु गिरै ऊतंग।
मिल ईंद्र भवन से भवन माहि, जुर खंभ हेम कंदल जमाय ॥३१९४
बातायन[12] पट्टल[13] अटल बृंद, अरू कोटी कोही जुर अलिंद[14]।
बिच बैठे राघव जिहो बेर, किंनर गन लीनै मनु कुबेर ॥३१९५
सीता अरधंगो[15] लसत संग, अभिराँम ऊभय मनु रति[16] अनंग[17]।
बोले श्री राघव सीय बिलोक, नग[18] दिघ्घ[19] अड़ग तिह तीन लोक ॥३१९६
सिर सिखर[20] पुरी लंका सुधार, तिह करी बिस्वकर्मा तयार।
चोचनन बरानन[21] देख लेह, आधीन बभीखन राज येह ॥३१९७
बोरासन[22] देखहु ताहि बीच, कीनास[23] तरस कपि करचौ कीच।
ईह लखहु बरानन ठौर और, जूटे हम राँवन जुद्ध जोर ॥३१९८
खल मारचौ ईह थल बीर खेत, हे पंकजनयनी तोर हेत।
बध कुंभभरन कीय मार बाँन, भ्राता राँवन कौं अत भयाँन ॥३१९९
प्रतिघातन कीनो फिर प्रहस्त, धूम्राक्ष करचौ हनूँमाँन धूस्त[24]।
बिधुनमाली कौं रन बिहंड, पुन कपि सुखेन बाहू प्रचंड ॥३२००
मारचौ लछमन पुन मेघनाद, अरू अंगद मोर बिकट आद।
माहापारस कौं फिर गरद[25] मेल, जुवराज लयौ रन भार झेल ॥३२०१
बिरूपाख महोदर महाबीर, सुग्रीव मार लीने सधीर।
अतकाय अकंपन असर और, देवांतन रोतहु मरे दौर ॥३२०२

१ हृदय। २ स्थिरता। ३ पीछे। ४ ऊपर। ५ मार्ग। ६ गगन। ७ मोती। ८ सुन्दर। ९ मानिक। १० सोना। ११ चांदी। १२ खिड़की। १३ पटल। १४ बरामदा। १५ अर्धांगिनि। १६ कामदेवी। १७ कामदेव। १८ पर्वत। १९ दीर्घ। २० शिखिर। २१ सुन्दर मुखवाली। २२ युद्ध क्षेत्र। २३ राक्षस। २४ ध्वस्त। २५ धूलि।

युधोनमत्त अरु मत्त आद, बिन्न पुत्र कुंभक्रन[1] परे बाद।
नि:कुंभ कुंभ जिह प्रगट नाँम, कीने तिह अद्भुत समर काँम ॥३२०३
वज्राद वज्र दंष्टकहु वीर, सभ्भ समर तीर्थ त्यागे सरीर।
मकराक्ष माहा[2] दुर्धर्ष मेल, जूझे सोऊ हमरे बाँन झेल ॥३२०४
तन त्याग अकंपन श्रोन ताछ[4], अत बली प्रजंघहु अरू युपांछ।
जिग[5] सत्रु निसाचर बिपु[6] जीह, सत्रुघ्न पराक्रम समर सीह ॥३२०५
सूरजहू सत्रु अरु ब्रह्म सत्र[7], अरू किते मरे राकस अमित्र।
सौतन मंदोदर सुंदरीय, पुन ईहाँ पुकारी पीय-पीय ॥३२०६
सामुद्र घाट ईह लखहु सीय, कल[8] काज ऊतर हम सबर[9] कीय।
सागर पर बाँधी ईहै सेत, हे पंकजनैंनी तोर हेत ॥३२०७
ईह ऊदध परंजन लखहुं ऐंन, निम्नगा-पती[10] ईह कमल नैंन।
नग हिरन नाभ मैनाक नाँम, कीय मारुति[11] को विश्राम काँम ॥३२०८
ऊतरयौ तट सागर कटक आय, पूजे ईहाँ संकर[12] प्रथम पाय।
ईह सेत बंध तीरथ ऊदार, पूजन सौं भव-दुध[13] तिरहि[14] पार ॥३२०९
ईहाँ मिले बभीखन हमहि आय, पद लंकपति कीनौ पसाय[15]।
वाली कौं मारयौ ईहाँ बहोर[16], मित्रता भई सुग्रींव मोर ॥३२१०
पत्तन[17] किसकंधा ईह पुनीत, निरबाहु करत सुग्रींव नीत।
महि गिरी प्रवर्षन च्यार[18] मास, ईहाँ बैठे तेरे हित ऊदास ॥३२११
पुन कटक जोर कीनौ प्रयाँन, अनगनित[19] बंदरी सैन आँन।
सीय देख कहे जब समाचार, निम्भ संग बंदरन[20] लेहु नार ॥३२१२
सब तारा आदक मिलहि संग, अवधपुर देखहै जुत ऊमंग।
सुग्रींव कह्यौ जब राँम सीत[21] पहिचाँन आपनी परम प्रीत ॥३२१३
वसुधा[22] ऊतार पुस्पक विमाँन, सुग्रींव त्रोयन लीय संग सयाँन।
चढकै बिमाँन दीनौ चलाय, द्रग मूक गिरी दीनौ दिखाय ॥३२१४
सीय सौं फिर बोले राँम स्याँम, ध्रुव पंपापुर ईह बालधाँम।
वड अग्र कही रघुनाथ बात, सबरीय दपायी ह्वै सनाथ ॥३२१५

---

१ दोनों। २ कुंभकरण। ३ महा। ४ उसके। ५ जगत। ६ वृंद। ७ शत्रु। ८ युद्ध। ९ शिविर। १० समुद्र। ११ हनुमान। १२ शंकर। १३ भव सागर। १४ [illegible]। १५ अनुग्रह से=द्रवी भूत होकर। १६ फिर। १७ नगरी। १८ चार। १९ अगणित। २० मू० पा० बंदनं। २१ से। २२ भूमि।

मारचौ कबंध कौं दीन मोख[1], रूप रह्यौ दुष्ट सोई गैल रोक।
बरगद तरू दीसत जहाँ बिसेस, दाक्षाय[2] जटायू ईहो देस ॥३२१६
रॉवन सौं ता हित कोन रार, पहुच्यौ भव सागर सोई पार।
द्रग[3] पर्न-कुटी अबहूँ दिखात, बर पंचबटी थाँनक बिख्यात ॥३२१७
दसकंध करचौ तुम हरन दुष्ट, निभ्र पाप आप कुल करचौ नष्ट।
नद गोदावरि[4] जिह बिमल नीर, तरू[5] दीसत ताके[6] तीर-तीर ॥३२१८
मुन[7]कीय अगस्त ईह ठाँ[8]मिलाँन,बध राँवन हित जिह दयौ बाँन।
जरभंग ईहै आँश्रम जगाह[9], निभ्र आये ईहीं ठाँ सचीनाह[10]॥३२१९
सब रिखन[11]बीच सूरज सरूप, अत्री रिख आँश्रम ईह अनूंप।
अनुसुया करचौ ऊपेदस आप, पतिब्रत धरम जो रहित पाप ॥३२२०
मारचौ बिराध हम ईह मुकाँम, नग[12] चित्रकूट बिख्यात नाम।
भेटन कौं आये भरत भ्रात, मंत्रीजन आदक[13] सहित मात ॥३२२१
नद जमना[14] दीसत स्यांम नीर, तिरबैनी[15]सरसुत[16]गंग तीर।
बट अक्षय आगै हरत[17] बेस, मुनि भरद्वाज आंश्रम हमेस ॥३२२२
गुह भिल्ल[18]सखा कौ ईही ग्रांम, निभ्र श्रंगबेरपुर जिही नाँम।
वह सरजू नद दीसत अनूप, भल रजधानी दसरथ्थ[19] भूप ॥३२२३
प्रिय देख करहु जाकौं प्रनाँम[20], ध्रुव सूरज बंसो आद[21] धांम।
सुग्रींव बभीखन आद संग, अवधपुर देख बाढी ऊमंग ॥३२२४

दोहा

अवध दरस कर ऊतरे, तुरत त्रबेनी तीर।
पाँन स्नाँन कीने प्रथम, निरमल[22] संगँम नीर ॥३२२५
बीते जब चवदह बरख पंचम क्रम[23] पांटीय।
भरद्वाज सौं भेट कीय, श्री रघुबर जुत सीय ॥३२२६
पूछी भारद्वाज प्रत, खवर अवधपुर खेम[24]।
सुभख देस कैसौ समय, जनवहु[25] मुनवर जेम ॥३२२७

---

१ मुक्ति=छुटकारा। २ गिद्ध। ३ दृग। ४ गोदावरी। ५ वृक्ष। ६ तट=किनारे। ७ मुनि। ८ स्थान। ९ जगह। १० इन्द्र। ११ ऋषियों। १२ पर्वत। १३ आदिक। १४ यमुना। १५ त्रिबेनी। १६ सरस्वती। १७ हरा। १८ भील। १९ दशरथ। २० प्रणाम। २१ आदि। २२ निर्मल। २३ तिथि। २४ क्षेम। २५ बताइये।

मात भ्रात है कुसल मम, गुरजन मंत्री गेह।
करग जोर रघुवर कही, सबको सीहत सनेह ॥३२२८

छंद पद्धरी

सुन रांम वचन मुनिवर सनेह, ऊर हरख[1] भरथ[2] कथ कही येह।
भ्राता लघु तुनरे परम भक्त, जप ताप करत नित जोग जुक्त ॥३२२९
सिर जटाजूट वलकल सुबास, ईक तुमहि मिलन की दरस श्रास।
पादुका करत सेवा पुनीत, नित राज-काज निखाह[3] नीत ॥३२३०
सुख श्रवधपुरी राजी सकोय, सिख[4] श्रावत जावत कहत सोय।
महि भार टार श्राये मुकांम, राजीव नयन सीय सहित रांम ॥३२३१
सब सुखी करे मुनिवर समाज, रांवन को कीनो नष्ट राज।
श्रातिथ्य[5] गृहऊ पूजा ऊदार, दिन श्राज विराजहु हमहुं द्वार ॥३२३२
श्रज्ञा[6] मुनि पालक श्रीधईन्द्र, चिव-धाँम[7] विराजे रांमचंद्र।
मुनि कहे फेर ईह समाचार, वरदांन लेहु रघुवर विचार ॥३२३३
करजोर कह्यो पुन सीयाकंथ, पथ श्रवधपुरी दहुधाँ[8] प्रजंत।
वन फूल-फलन जुत होय वृच्छ, रूच पाय रहै सब कीस रिच्छ[9] ॥३२३४
मुन[10] तथा श्रस्तु[11] कहि भयो मोद, कुट[12] फूल ऊठे जब चहुं कोद।
श्री रांमचंद्र मुनिवर सराह, रमनीक[13] श्रजोध्या देख राह ॥३२३५
बोले हनमत[14] सों जिही बेर, होय भरत भ्रात की दसा हेर।
पन[15] श्रीघ[16] करी सोई भई पार, सुभ जाय कहो सब समाचार ॥३२३६
कल मिलन करहि हम प्रात काल, हित सहित कहहु तुम कुसल हाल।
गुरु भाल रहत ईक बीच गेल, मुहि सखापनो[17] राखत सुमेल ॥३२३७
[illegible] कहहु कुसल मेरो जरूर, पूछे सोऊ वृत[18] पेम[19] पूर।
ईहों कह्यो जबै रघुवर ऊदार, पहुंचे हनुंमानहु [illegible] पार ॥३२३८
पुर श्रगबेर पथ बीच पेल, वर रांम सखा जाने बसेख[20]।
गुह [illegible] कहो हनमंत ज्ञात, बिध जुक्त रांम को कुसल बात ॥३२३९

---

१ हर्ष। २ [illegible]। ३ निर्वाह। ४ शिष्य। ५ आतिथ्य। ६ आज्ञा। ७ सुन्दरता के स्थान = [illegible]। ८ दोनों ओर। ९ रीछ। १० मुनि। ११ तथास्तु। १२ वृक्ष। १३ रमणीक। १४ हनुमान। १५ [illegible]। १६ [illegible]। १७ मैत्री। १८ वृत्तान्त। १९ प्रेम। २० विशेष।

गये तहाँते हनमत नंदिगाँम, धरमग्य[1] धुरंधर भरथ धाँम।
बपु[2] दुरबल[3] धारें जतो बेख, लघु भ्रात राँम के भक्त लेख ॥३२४०
करजोर बधाई राँम केर, हनमंत दई जब भरथ हेर।
माहा[4] राखस[5] रांवन खेत[6] मार, भूम कौ ऊतारयौ राँम भार ॥३२४१
सब मित्र वरग[7] लीनें समाज, आश्रम मुनि भारद्वाज आज।
रहिहैं सब बासुर[8] जहाँ रात, पद कमल ईहाँ धारहि प्रभात ॥३२४२
सुख दाँनी बाँनी सुनी श्रौंन, मुख भयौ प्रफुल्लत गही मौंन।
आँनद के असुवा[9] ऊमड़ आय, भर छाती सात्वक[10] प्रगट भाय[11] ॥३२४३
भेटे हनमत सौं भुजा भाग, सुख पाय सुभागम साँनुराग।
माँगीयें बधाई अहो मित्त, [12]चाहै कछु बंछत[13] सोय चित्त ॥३२४४
बोले नही हनमत कछू बात, हाजरी खरे[14] रहे जोर हाथ।
जब करी भरथ बगसीस जाँन, दीनी सुरभी[15] ईक लक्ष दाँन ॥३२४५
सात[16] ग्राँम ऊर्बरा[17] ईधक सीम, सइ औधपुरी बाहर ससींम[18]।
बिधु बदन कुमारी त्रीया वेस, कमलाक्षी[19] गूघरवार[20] केस ॥३२४६
ऊन्नत ऊरोज जघा अरोम[21], सुच अंगी सोरह सहस सोम[22]।
ईहीं देत बधाई मत ऊदार, सुख दायक सुनकै समाचार ॥३२४७
पूछी हनमत सौं सहित प्रीत, श्रीराँम लखन अरु खबर सीत।
बोले जब हनमत बिमल बाँन, सुन लेहु हकीकत भरथ श्राँन[23] ॥३२४८
निज पिता दयौ दसरथ नरेस, बनवास चतुर्दस बरख बेस[24]।
दसरथ नृप त्यागी फेर देह, सोकाकुल[25] ह्वैकें सुत सनेह[26] ॥३२४९
जिह दिनन रहे ननिहार[27] जाय, वहतैं तुम पहुचे ईहाँ आय।
मंत्रिन मिल माता कीय मिलाँन, सब चित्रकूट पहुचे सुथाँन ॥३२५०
साँपन[28] तुम लोग राजश्रीय[29], कछु अंगीकृत[30] नही राँम कीह।
पादुका सीस धर ऊभय[31] पाय, अज्ञा लै तुम तौ ईहाँ आय ॥३२५१
सीय राँम लखन त्रहु[32] जने साथ, नग[33] चित्रकूट तज चले नाथ।
डंडकाँरन[34] मग लयौ देख, बतरात[35] चले बातन बसेख ॥३२५२

१ धर्मज्ञ। २ शरीर। ३ दुर्बल। ४ महा। ५ राक्षस। ६ युद्ध क्षेत्र। ७ मित्र वर्ग। ८ दिन। ९ आंसू। १० सात्विक। ११ भाव। १२ मित्र। १३ वाञ्छित। १४ खड़े। १५ गायें। १६ सौ। १७ उपजाऊ। १८ पास। १९ कमल नयनी। २० घूंघर वाले। २१ रोम रहित। २२ सौम्य। २३ कान। २४ वर्ष। २५ शोकाकुल। २६ स्नेह। २७ ननिहाल। २८ सोपंने। २९ राजगद्दी। ३० अंगीकृत = स्वीकार। ३१ दोनों। ३२ तीनों। ३३ पर्वत। ३४ दंडकारण्य। ३५ बातें करते हुए।

पारंद्र[१] जंतु अरू पुंडरीक,[२] दस-दिसा जूथ गज परत दीख।
तरु तरल सरल गिरवर तमाँम, ठट मृघगन[३] बिचरत ठाँम-ठाँम ॥३२५३
बन सघन घोर कुंजत बिहंग, ईक लख्यौ निसाचर दिघ[४] अंग।
अघबदन ऊठाये उद्ध[५] बाह, अघरूप भयंकर बल अथाह ॥३२५४
मार्‍यौ तिह रघुबर बाँन मार, पापी बिराध भव[६] भयौ पार।
सरभंग गये आश्रँम सिधाय, पुन मुनिवर भेटे मोदपाय ॥३२५५
राजीव नयन कर दरस राँम, धर ध्याँन गये मुनि परमधाँम।
श्रीराँम गये फिर जन स्थाँन, अह[७] केऊ कर हे बाहू-अजाँन[८] ॥३२५६
भगनी राँवन की अत भयाँन, कल्पन[९] कीय लछमन नाक काँन।
आये जु निसाचार सुन अहेत, खरदूखन मारे असर खेत ॥३२५७
बिलखाय कुकर्मा गई बहोर, सुरपनखा[१०] कीनौ लंक सोर।
मारीच संग दससिर[११] मदंध, छल सौं मृघ सोब्रन[१२] कर्‍यौ छंद ॥३२५८
रच कपट दिखाई दई राँम, भावी[१३] बस बोली सीया भाम।
मृघ अद्भुत लावहु महाराज[१४] अवलोकन चाहत जिही आज ॥३२५९
लोग धनु लैकै राँम लार,[१५] मृघ भागे त्याँही बन मझार।
अत दूर गये नाये अपूठ, पुन लखन सीया पहुचाय पूठ[१६] ॥३२६०
वँह अवसर राँवन गयौ आय, सीता कौं लेगौ बिन सहाय।
बैठारी रथ में पकर बाँह, रथ हाक चल्यौ पुन लंक राह ॥३२६१
रपट्यौ तिह देखं गृद्धराज, वहु झपट्यौ ताही मार बाज[१७]।
मार्‍यौ तिह राँवन बाँन मार, धरनी पै गिरगये मोहधार[१८] ॥३२६२
लैगयौ सीया कौं लंक बीच, नय[१९] त्याग अघमो[२०] महाँनीच।
ललचाई सीता बहु निलाज,[२१], सीता न तज्यौ पतिब्रत सुकाज ॥३२६३
आश्रँम तिह दीनौ बन असोक, थप्पे[२२] त्रीय राखसि थोक-थोक।
मृघ[२३] मार राँम आये मुकाँम, वैदेही नाहिन लखी वाँम ॥३२६४
पुन खोजन लागे आसपास, अत[२४] सीया बिरह ह्वैकै ऊदास।
प्रभु कंतर[२५] अंतर लयौ पंथ, सु बिलोक जटायू रत[२६] श्रवंत[२७] ॥३२६५

---

१ सिह। २ छोटी राक्षसों की स्त्रियां। ३ मृग = हिरन। ४ दीर्घ। ५ ऊपर। ६ संसार। सागर। ७ दिन। ८ आजानु भुजा। ९ काट डाली। १० सूपनखां। ११ रावण। १२ सोना। १३ होनहार। १४ महा। १५ पीछे। १६ पीछे १७ पंखों। १८ मूर्छित। १९ नीति। २० अधर्मी। २१ निर्लज्ज। २२ मू.प्र. यपे। २३ मृग-हिरन। २४ अति। २५ वन। २६ रक्त। २७ बह रहा था।

तब पूछी रघुवर कही ताहि, बिरतत[1] दयौ राँवन बताय।
गीध[2] की मोक्ष कर करचौ गाँन[3], भेट्यौ कवंध राखस[4] भयाँन ॥३२६६
बिच अटवी[5] मारचौ ऊभय बीर, तीखी[6] बहु भालन मार तीर।
आगे कछु चाले औध-ईस, पहुचे गिर मूक्कहि[7] मिल कपीस ॥३२६७
मित्रता भयौ तासौं समंध[8], सीता की पाई फेर संध[9]।
हित पाय कह्यौ सुग्रींव हाल, बाढ्यौ बिरोध जिह रीत बाल ॥३२६८
मारचौ वाली कौं महाँराज, राजा सुकंठ[10] कौं दयौ राज।
सुग्रींव सखापन[11] के समंध, पुन खोजन सीय कीनौ प्रबंध ॥३२६९
दूतन कौं भेजे चहूँ देस, वलवंत कोस अगनत[12] बसेस।
दखन[13] दिस हमहू गये दौर, अत निरभय साथे कीस और ॥३२७०
बिंध्याचल पहुचे जिही बेर, दिग भूल गये तब लगी देर।
द्राक्षाय[14] जटायू भ्रात देख, बिस्मयत[15] भये तिह छिन बसेख ॥३२७१
संपात नाम पहिचाँन साथ, बिध-बिध-सौं लागे करन बात।
राँम की कथा सुन गिद्धराज[16], सीता की दीनी खबर साज ॥३२७२
पुर लंक बीच दध[17]भरचौ पाथ[18], सब कसे पहुचै जहाँ साथ।
पुन भये अकेले हमहि पार, ज्याँनकी[19] मिले पुर लंक जार ॥३२७३
आयकै पास फ़िर औधईंद्र, [20] करजोर बिनय कीनी कपिंद्र।
कीय राँमचंद्र जब माहा[21] क्रुद्ध, अहि रूप बाँन गहि धनुष ऊद्ध ॥३२७४
आहव[22] कै कारन जुत ऊछाह, रघुनायक लीनी लंक राह।
नल-नील कोस मति के निकेत, सागर पै बाँधी जाय सेत ॥३२७५
ईतनेहु बभीखन मिले आय, भ्राता राँवन कौ भेद पाय।
कपि कटक ऊतारचौ अकू[23] पार, राँवन सौं माड़ी जाय रार ॥३२७६
पुन नील मार लीनौ प्रहस्त, गढ लंकपती ह्वै सोक ग्रस्त।
भट कुंभकरन दै संग भ्रात, बिच समर आयौ बल विख्यात ॥३२७७
खल मार पछारचौ बीर खेत, हट लाग सीयाबर[24] विजय हेत।
घननादहु कौ लीय लखन घेर, द्रुत मार लयौ बहु बाँन देर ॥३२७८

---

१ वृतांत। २ गिद्ध = जटायू। ३ गमन। ४ राक्षस। ५ बन। ६ तीक्ष्ण। ७ ऋषि मूक पर्वत। ८ संबंध। ९ समाचार। १० सुग्रीव। ११ मैत्री। १२ अगणित। १३ दक्षिण। १४ गिद्ध। १५ विस्मित १६ संपाती। १७ समुद्र। १८ जल। १९ सीता। २० राम। २१ महा। २२ युद्ध। २३ समुद्र। २४ सीता पति राम।

राँवन रघुवर कै भई रार, तव सात दिवस लग येक तार[1]।
माहा[2] दुष्ट-तिष्ट[3] दोनौ मिटाय, सकुटंब राँम राजा सुभाय ॥३२७९
ईत इँद्र बरुन जमराज आय, पमरेष्टी[4] सिव बरदाँन पाय।
पितु दसरथ दरसन लै पुनीत, कीनी जग ऊपर अमर क्रीत[5] ॥३२८०
रघुबीर बभीखन दयौ राज, ध्रुव लग्ग अड़ग[6] राजाधिराज।
बृद[7] पाय बिसद लंका बरीस,[8] आये तुम मिलनं अवधईस ॥३२८१
पुस्पक[9] बिमाँन आरोह[10] प्रात, सज्जन गन लीने सबहि साथ।
मुनि भरद्वाज सौं कर मिलाँन, पुर औध[11] करहि निस्चय[12] प्रयाँन ॥३२८२

दोहा

समाचार आगम[13] सुने, भरथ राँम लघु भ्रात।
दई बधाई दूत प्रत, सह अवरोधन[14] साथ ॥३२८३
गुर मंत्री पुर ग्रेह में, गली-गली सुभ गाथ।
आवत लंका जीत ईत, राजा श्री रघुनाथ ॥३२८४

छंद पद्धरी

सत्रुघ्न भरथ सासन[15] सुनाय, जुर करहु तयारी सहर[16] जाय।
सुधराय देव-मंदर[17] सकोय, सोगंध[18] पुस्पमाला समोय ॥३२८५
वाजंत्री बंदी जन बसेस, पोराँनिक आदक आय पेस[19]।
गनका सुच अंबर[20] पहर गात, पथ राँम दरस चालह प्रभात ॥३२८६
सेना चतुरंगी भट सभाय, मंत्रीगन चालै गन मिलाय।
रघुवर अगवाँनी लखै रूप, भल्लुक कपि औरहु लंक-भूप ॥३२८७
सत्रुघ्न जाय कीनी सँभार, लांखन मजूर कौं लीयै लार।
घंटापथ[21] चौहट बाट घाट, ऊन्नतो करी पुन हाट-आट ॥३२८८
धौराय धवर हर दाव धूर,[22] पुन छीज[23] सुगंधत नीर-पूर।
रचना फिर कीनी चित्र रंग, सितरंजन पिंगल[24] सित सुरंग ॥३२८९

---

१ लगातार। २ महा। ३ दुष्ट। ४ ब्रह्मा। ५ कीर्ति। ६ अडिग=अविचलित। ७ विरद=यश। ८ लंकेश्वर बनाने वाले और उसके अधिपति। ९ पुष्पक। १० सवार-होकर। ११ अयोध्यापुरी। १२ निश्चय। १३ आगमन। १४ स्त्रियों। १५ आज्ञा। १६ नगर। १७ मन्दिर। १८ सुगंधित। १९ उपस्थित होकर। २० वस्त्र। २१ राजपथ। २२ धूलि। २३ छिड़काव। २४ पीला।

बहु बंदन माला बार-बार, माला फूलन की तिह मझार।
ध्रुव धजा[1] पताका धाँम-धाँम, लगथगत पौंन[2] लागत ललाँम ॥३२९०
दसहू-दिस पत्तन[3] निकट दूर, जगमगत जोत दीसत जहूर[4]।
पुन राज-पंथ में पौर-पौर, जर तार किनारी जोर-जोर[5] ॥३२९१
गुच्छा[6] मोतिन के गोय-गोय, पन्ना मनि लालन[7] पोय-पोय।
सोवर्न[8] तार जामें सँवार, दहुधाँ[9] मग[10] बाँधे द्वार-द्वार ॥३२९२
बापी तड़ाग अरू बाग बृच्छ,[11]सब बीथी[12]थाँना करे स्वच्छ[13]।
जहाँ तहाँ निसीथनि[14]बीत जात,प्राची[15]दिस आगम लख्यौ प्रात ॥३२९३
जुर मंत्रीगन धृष्टहु जयंत, सिधार्थ बिजय साधक सिधंत।
अरू मिले अर्थ साधक असोक[16], थिर चित्त मंत्र पालक सथोक ॥३२९४
चढ चले सुमंत्रहु जुत-ऊछाह[17], रघुवर अगवाँनी काज राह।
औरहु प्रधाँन कुंजर[18] अरोह, सभ्भ धुजा पताका निभ्भ संदोह ॥३२९५
हयसादी[19] चाले हयन[20] हाक, चहुँ ओर मेदनी चढी चाक।
आरोह चले रथ-रथी आद, निस्सरन[21] होत घरराय नाद[22] ॥३२९६
पैदल मिल चाले पंत-पंत,[23] अंत देत दिखाई अंत-अंत।
अनगनत रतन मनि ऊल्लरीय, झलमलत कुंजरन झुल्लरीय ॥३२९७
जर तारी सिदन[24] जगी जोत, आभा रबि किरनन मनु ऊदोत।
जगमगत जँवाहर हयन जीन, सोवर्न तार मंडत सबीन ॥३२९८
माता सब बंनीतक मझार, लसकर कर आगे चली लार।
प्रोहित गुर आदक सबै पास, सौबिदल प्रस्तयत सावकास ॥३२९९
अरू झुंड-झुंड दासी अनेक, बपु मंगल रूपी करै देख।
माला अरू मोदक मंगलीक, कर लीयै श्रुर्न थारन कितीक ॥३३००
सहनाय नगारे बजत संख, डाँडीये भेरीयन लगत डंक।
गायन मिल गायक रचत गाँन, बज बीन पखावज सुभग बाँन ॥३३०१
पादुका सीस धर चले पाव, भ्राता रघुबर के भरथ भाव।
सोवर्न डंड का चमर सेत, सुभ छत्र लीयै माला सहेत ॥३३०२

१ ध्वजा। २ पवन। ३ नगर। ४ रौनक। ५ जोड़। ६ गुच्छा। ७ लाल। ८ सोना। ९ दोनों ओर। १० मार्ग। ११ वृक्ष। १२ गली। १३ स्वच्छ। १४ रात्रि। १५ पूरब। १६ शोक रहित। १७ उत्साह सहित। १८ हाथी। १९ अश्वारोही। २० घोड़ों। २१ मार्ग। २२ ध्वनि। २३ पंक्तियों में। २४ रथ।

वपु खीन सुधारें जती वेख, रघुवीर भ्रात-लघु धर्म-रेख।
मुच वाँमदेव वासष्ट संग, ऊर राँम दरस धारें ऊमंग ॥ ३३०३
सभ नंदिग्राँम सौं चली सैन, ललकंत राँम अगवाँनि लैन।
रथ कुंजर पावन पंथ रूँघ, खुर तारन घोरन भुँम्म खूँद ॥ ३३०४
बढ आगें चाले दूर बाट, धुन वाढी चँहुवाँ धरधराट।
फहरह निसाँन नभ चहूँ फेर, घहरत अवाज घन बाज घेर ॥ ३३०५
दल हैदल गैंदल मिल दिखात, सालुरे मनहु सामंद्र सात।
सब अवधपुरी वासी समाज, दिस देखत आश्रम भरद्वाज ॥ ३३०६
चित्र[1] सरदचन्द आवत चछोह, याँन[2] कौं देख कीनौ ऊपोह[3]।
सब भये पयादे येक-संग[4], अवधेस दरस बाढी ऊमंग ॥ ३३०७
परनाम[5] करत दहु[6] जोर पाँन,[7] भव हेत कतारथ[8] ऊदय भाँन।
ईतनै में राघव निकट आय, पुरजन अवलोके मोद पाय ॥ ३३०८
सीय राँम लखन सब सखा संग, अवलोक भरथ वाढी ऊमंग।
अवनकौं[9] ऊतारयौ याँन आय, भरथ सौं मिले सात्वक[10] सुभाय ॥ ३३०९
बेठार गोद में लयौ वीर, भेटकै अंक सौं अंक भीर।
पुन लखन भरथ कीने प्रनाँम, भरथहू दरस कीय राँम-भाँम[11] ॥३३१०
सुग्रीव मिले फिर भरथ संग, पुन, जाँमवंत प्रीती प्रसंग।
अंगद मयंद कपि दुविद और, नल-नील रिखभ नीकैं निहोर ॥३३११
गज और गंधमादन गवाख्य, अरु सरभ पनस सौं पकर आच[12]।
पुन संख्यावीन[13] सुसेन पेख, बतराय कुसल वाँनी वसेख ॥३३१२
पतिलंक बभीखन मिल सप्रीत, राजन की जिह विध आद रीत।
सत्रुघ्न राँम पद साँनुराग,[14] ललचाय लखन जुत पाय लाग ॥३३१३
ज्याँनकी पाय कीनौ जुहार, पूछकै[15] कुसल कथ सहित प्यार।
कौसिल्या माता प्रनत कीन, अवधेस सुमंत्रा पद अधीन ॥ ३३१४
कैकई [illegible] कर कुसल साथ, मन मुदत[16] तीन सैं साठ मात।
[illegible] बार-बार, निज गुरु वसष्ट[17] दुजवर[18] निहार ॥ ३३१५

---

१ [illegible]। २ हिरन। ३ विचार। ४ एक साथ। ५ प्रणाम। ६ दोनों। ७ हाथ। ८ कृतार्थ। ९ [illegible]। १० सात्विक। ११ सीता। १२ हाथ। १३ बुद्धिमान। १४ सप्रेम। १५ [illegible]। १६ [illegible]। १७ वसिष्ठ। १८ द्विजवर।

जन अवधपुरी सब करग जोर, ठाढे भये अगनत[1] ठौर-ठौर।
भरपूर निछावर करी भेट, मन बर्ष चतुर्दस सोच मेट ॥ ३३१६
पादुका रांम की रांम पांव[2], पहराय भरथ कीनी पसाव।
आपकौ राज बाहू अजांन[3], मो पास धरोहर धर्यौ मांन ॥ ३३१७
कीजीयै गृहन[4] रघुबर क्रपाल, प्रभु मोर अरज[5] ईह प्रजापाल।
बन चले गये ईक दिवस बीच, कल[6] गई अजोध्यापुरी कीच ॥ ३३१८
ऊधार[7] कीयौ पुन[8] आप आय, सुख मोद हमहु बाढ्यौ सबाय[9]।
ईह क्रपा करी रघुबर अपार, बिनती सुभ मेरी बार-बार ॥ ३३१९
सब देख भरथ रघुबर सनेह[10], लोचन दुख मोचन लाभ लेह।
अत भये अनंदत[11] जुत ऊछाह, रघुबीर भरथ गृह[12] लई राह ॥ ३३२०
गुनधांम[13] ऊतरे नंदिग्रांम, सुख पाय सलोने अवध स्यांम।[14]
सेना सब ऊतरी रांम साथ, पुस्पक[15] बिमान सौं समय प्रात ॥३३२१
पुस्पक विमान सौं सहित प्रेम, निज रांम बचन बोले सनेम।
ऊड़ जावहु अलका पुरी आद, सब कहीयौ लंकापुर सँबाद[16] ॥३३२२
पति तोहि कुबेरहि लोकपाल, बैठावहु करकं चित बहाल[17]।
पुस्पक बिमांन दिस ऊतर-पंथ,[18] तब गयौ पुरी अलका तुरंत ॥३३२३
सबहिन[19] कुबेर निध देत साज, कीनौ रघुबर तिह अभय काज।
बसु[20] रघुबर की रचना बिचत्र[21], चित सुद्ध करे पावन चरित्र ॥३३२४

दोहा

बिहस रांम बासष्ट[22] गरू, पाव पलोटत पाँन[23]।
सोहत मांनहु सुर सभा, बृहसपती मघवांन ॥३३२५
महांबाहु रघुबंस मन, सखा देव गरू साथ।
रांम बिनय कीनी भरथ हरख जोर बिन हाथ ॥३३२६

छंद अर्घ हरगीतका

पथ धर्म रीत प्रमांनीयै, माहाराज अरजी मांनीयै।
रघुबीर बंधव रावरौ, अनजांन बुद्धि ऊतावरौ ॥३३२७

---

१ अगणित। २ पैरों में। ३ आजानु भुजा। ४ ग्रहण। ५ विनती। ६ सुन्दरता। ७ उद्धार। ८ पुनि। ९ सवाया। १० स्नेह। ११ आनंदित। १२ घर। १३ गुणधाम। १४ स्वामी। १५ पुष्पक। १६ संदेश। १७ स्वस्थ। १८ उत्तर-दिशा का मार्ग। १९ सभी को। २० पृथ्वी। २१ विचित्र। वशिष्ठ : २३ हाथों में।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], धोरेय बोझा धारकैं।
[illegible] [illegible] [illegible] जाहि को, पद केम धंसै पाय को ॥३३२८
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] राज भारहि धारीये।
[illegible] [illegible] [illegible] मो, निरवाह नय का नीत सौं ॥३३२९
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], परवाह पुंज प्रताप के।
[illegible] [illegible] निज [illegible] मो, गुन रहिहि कैसै सेम सौं ॥३३३०
[illegible] [illegible] [illegible], ईहां दरस दीनी आयकें।
[illegible] [illegible] [illegible] कै, [illegible] सफल करही देन कै ॥३३३१
[illegible] [illegible] मन मैं मोद को, अभलाप पूरहु मोध को।
[illegible] [illegible] दीन दे, [illegible] नूपर भीन के ॥३३३२
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], प्रभु [illegible] निव धांम रे।
[illegible] [illegible] मोर को, [illegible] [illegible] प्रभु भोर को ॥३३३३
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को, [illegible] [illegible] [illegible] गेह को।
[illegible] [illegible] [illegible] कें, [illegible] [illegible] [illegible] कें ॥३३३४
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कें, [illegible] मो [illegible] [illegible] कें।
[illegible] [illegible] [illegible] को [illegible], [illegible] पद अनुरागीये ॥३३३५
[illegible]
[illegible] ॥३३३६
[illegible]
[illegible] ॥३३३७
[illegible]
[illegible] ॥३३३८
[illegible]
[illegible] ॥३३३९
[illegible]
[illegible] ॥३३४०

[illegible]

बगसे अलंकृत[1] वीर कौं, सब सखा आद सधीर कौं।
सोगंध[2] फूल सनेह[3] की, दुत[4] बढी तासौं देह की ॥३३४१
सुभ सिंघ-आसन स्वर्न कौ, जगमगत रत्नन जरन कौ।
थिर भरथ थप्पे थाँन कौं, अवधेस भुज-आजाँन[5] कौं ॥३३४२
बैंठार गृहकै बाह[6] कौं, ऊर लाय अमित ऊछाह कौं।
लघु भ्रात लछ्मन लेख कै, पुन भरथ प्रति परेख कै ॥३३४३
सतकार[7] कीनौ सौगुनौ, घट लायक आँनद घनौ।
सब मातहू ईक साथ सौं, होय हरख अपने हाथ सौं ॥३३४४
सीय बधू-सुत[8] श्रङ्गार कै, सुच बेस अंग सँवार कै।
कीय संसकार[9] कितेकहू, जसदाय सुभग जितेकहू ॥३३४५
मुदपाय कौसल मात[10]हू, श्री बंदरन की साथ हू।
पवसाक[11] पट पहराय कै, श्रङ्गार तन सरसाय कै ॥३३४६
सत्रुघ्न बोल सुमंत्र कौं, तिथ महूरत लै तंत्र कौं।
सत्तंग[12] साभ्र संवार कै, बुलवाय लीन बिचार कै ॥३३४७
द्रग दिव्य रथ कौं देख कै, बिनती सु कीन बसेख कै।
चढ अवधपुर कौं चालीयै, बाजार पंथ बिचालीयै[13] ॥३३४८
जन देख है द्रग जोरकै[14], भज भाव दिनमनि[15] भौर कै।
ऊठ चले राँम ऊतावरे, सिर मुकट धारे साँवरे ॥३३४९
कुंडलहु सोहत कांन में, मीन[16] माल गल मुक्ताँन[17] में।
बहुटा[18] कटक[19] भुज बीय[20] में, अरु ऊर्मका[21] अँगुलीय में ॥३३५०
पुन श्रङ्खला जुग पाव के, जगमगत स्वर्न जराव के।
आरोह रथ में आय कै, भूतांन स्रौंन भिराय कै ॥३३५१
कोडंड[22] लै भुजडंड कै, मध[23] बैठ आसन मंड कै।
सीय बैठ रथ में सुंदरी, बहु नार लै संग बंदरी ॥३३५२
द्रग नगर सोभा देखनै, बर हृदय मोद बिसेखनै।
मंत्री पुरोहित मेल कै, ठट सुभट चाले ठेल कै ॥३३५३

---

१ अलंकार = आभूषण। २ सुगंधित। ३ तेल। ४ द्युति। ५ घोंटू तक लम्बी भुजाओं वाले। ६ भुजा। ७ सत्कार। ८ पुत्र-वधू। ९ संस्कार। १० कौशल्या माता। ११ पोशाक। १२ रथ। १३ बीच से। १४ आँख जोड़कर। १५ सूर्य। १६ मणि। १७ मोतियों। १८ भुजबंद। १९ कड़े। २० दोनों। २१ अंगूठी। २२ धनुष। २३ मध्य।

महाराज[1] बैठे रथमही, जगमगत अत[2] सोभा जहीं।
स्वारथी[3] बाग सँभाय कै. ईत भरत बैठे आय कै ॥३३५४
ध्रुव छत्र रघुवर धार कै, सत्रुघ्न पाँन[4] सँभार कै।
बर लछ्न[5] करत बयार[6] कौं, सोगध[7] मंद सुधार कौं ॥३३५५
धर करग लंकाधीसहू, सित चमर ढोरें सीसहू।
द्रग राँम सोभा देखनैं, बढ प्रेम नेम बिसेखनैं ॥३३५६
ऊप बाभय दसरथ ईस कै. चढ सत्रुँजय गज सीस कै।
संग करचौ मग संचार हू कपि इँद्र[8] पवनकुमार[9] हू ॥३३५७
चढ बिमाँनन नभ छाय कै, अनगिनत[10] सुर मुनि आयकै।
कर स्तुत[11] जय जय कहत है, लख लाभ लोचन लहत है ॥३३५८
गज चले माँन गिरंद[12] के, नव सँहस राँम नरिंद के।
भट चढे आवध[13] भीर कै, सभ्र सिलह[14] बेख सधीर कै ॥३३५९
गनती[15] न है दलगात की, संख्या न पैदल साथ की।
रथ-रथी चाले राह सौं, अतरथी[16] रांम ऊछाह सौं ॥३३६०
अतचली सैन ऊमंड कै, मनु घटा भादब मंड कै।
बुक[17] पंत सम बहुलात[18] है, फीलन[19] धुजा फहरात है ॥३३६१
कर हेत दमकत रिव[20] कला, चमकंत माँनहु चंचला[21]।
घन जेम नभ घरराय कै, आवाज दुंदभ आयकै ॥३३६२
धुन मिली धू-धू धूक ज्यां, कर नाल मोर कुहूक ज्याँ।
बिथुरी पपीयन[22] बाँन की, गुन गायकन के गाँन की ॥३३६३
बरतंत बाजत बीन की, झनकार झिल्ली झीनकी।
हाकनन की बन होल कै, बढ सोर दद्दुर[23] बोल कै ॥३३६४
चिब[24] रंग कुंकम[25] चैल[26] कै, फूली सु संध्या फैल कै।
झुक मुदर[27] चहु दिस लग झरी, आनंद धारा औसरी ॥३३६५
चित अवधवासी चाव सौं, भीजे सु रघुवर भाव सौं।
आयौ मनौ सुर इँद्र कै, निज नग्र[28] अवध नरिंद्र कै ॥३३६६

---

१ मू. प्र. माहाराज। २ अति। ३ सारथी। ४ हाथ। ५ लक्ष्मण। ६ वायु = हवा। ७ सुगंधित। ८ सुग्रीव। ९ हनुमान। १० अगणित। ११ स्तुति। १२ पर्वत। १३ अयोध्या। १४ वस्त्र। १५ गिनती। १६ अतिरथी। १७ बगुलों की पंक्ति। १८ बाहुल्य। १९ हाथी। २० सूर्य। २१ बिजली। २२ पपीहा। २३ मेंढक। २४ सुन्दर। २५ केसर। २६ वस्त्र। २७ बादल। २८ नगर।

चढ अटा ऊपर चाँदनी, मुद पायकै मोती मनी।
वारै सु कर-कर आरती, प्रज[1] देखकै कोसलपती ॥३३६७
केसर, कुलोनसु[2] कुमकुमा, भर करत पुरजन झमझमा।
गावत बधाई गीत कौं, पहिचाँन रघुवर प्रीत[3] कौं ॥३३६८
करजोर प्रभू दरसन करयौ बनवास कौं दुख बीसरयौ[4]।
हरखे अनंदत[5] होय कै, जनु कमल दिनकर[6] जोय कै ॥३३६९
बतरात आपस बात कौं, संबोध कर-कर साथ[7] कौं।
प्रभु लक्षमन[8] कै प्रेम की, निज भरथ भ्राता नेम की ॥३३७०
सत्रुघ्न साधक साच की, जन मंत्रिगन के जाच की।
सीय पतीबृत[9] की साधना, अरू पवनसुत[10] आराधना ॥३३७१
पुन वानरिंद्र[11] सखाननौ,[12] जुगराज[13] अंगद समुभनौ[14]।
जुरनौ सु जूथप-जूथ कौ, बाख्यान कीस बरूथ कौ ॥३३७२
अरू बभीखन कौ आवनौ, पद लंकपत कौ पावनौ[15]।
सागरहू बाँधन सेत कौं, सिव परम पुज्य[16] सहेत कौं ॥३३७३
रन[17] लंकगढ कौ रोपनौ, कल[18] सीयाबर[19] कौ कोपनौ।
जिम निसाचर कौ जूझनौ, ईत कीस सैन अरूझनौ[20] ॥३३७४
अतकाय आदक आवनौ, जमलोक के पथ जावनौ।
घननाद लछमन घेरनौ, चढ कीस दल कौ छेरनौ[21] ॥३३७५
अरू कुंभकरन अहेत में, खल राँम मारयौ खेत[22] में।
दसकंध मारयौ दाव सौं, घट ब्रह्मसर[23] के घाव सौं ॥३३७६
जय पाय रघुवर जंग की, समुदाय बंदर संग की।
लंका बभीखन दैलई, जग कीरती[24] रघुबर जई ॥३३७७
उर सीया सौं अनुरागनौ[25], तहाँ भेटकै फिर त्यागनौ।
ऊठ सीया प्रवसी[26] आग में, महाँ[27] ज्वाल-माला आग में ॥३३७८
बिध[28] आदसुर तिह बेर पै, आये न कीन अबेर[29] पै।
अवधेस कीन ऊराहना, सीय करी बहुत सराहना ॥३३७९

१ प्रजा। २ जल। ३ प्रीति। ४ भूल गया। ५ आनन्दित। ६ सूर्य। ७ साथियों। ८ लक्ष्मण। ९ पतिव्रत। १० हनुमान। ११ सुग्रीव। १२ मैत्री। १३ युवराज। १४ समझ। १५ प्राप्त करना। १६ परमपूज्य। १७ रण = युद्ध। १८ युद्ध में। १९ राम। २० उलझना। २१ छेड़ना। २२ युद्ध क्षेत्र। २३ ब्रह्मास्त्र। २४ कीर्ति। २५ प्रेम करना। २६ प्रवेश किया। २७ मू. प्र. मांहा। २८ ब्रह्मा। २९ विलम्ब।

दीय अगन[1] साखी देवहू, भल जाँन रघुवर भेवहू[2]।
पुन ग्रहन कीनी पतिव्रती, सुख पायकै सीता-सती ॥३३८०
पितु दरस लै पग पूजकै, बाहुरे[3] रघुवर बूझकै।
पुस्पक विमाँन प्रयाँन कौ, दत सितोदर सख[4] दाँन कौ ॥३३८१
कोऊ सुनत कोऊ कथ कहत है, बाजार रघुवर बहत[5] है।
अवधेस देखत औध की, सोभा झरोकन सौंध[6] की ॥३३८२
परजा[7] सु निजर[8] पसाव[9] सौं भर मोद कै हीय भाव सौं।
पहुंच सु राजन पौर कौं, घन दै नगारन घोर कौं ॥३३८३

दोहा

कुल राजा ईख्याक[10] के, भये दसरथ लौं भूप।
जोवत चाले जायगा, राज भवन के रूप ॥३३८४

छंद त्रोटक

चल रांम गये जब चत्वर[11] में, घन आँनद सौं पितु के घर में।
ललना बहु भद्रकरीर[12] लीयँ, सब ही अवरोध[13] मिली सखीयँ ॥३३८५
गुन-गीत वधाईय गावत है, सुख नैनन कौं सरसावत है।
नग कंचन तार[14] निछावर कै झर सांमन-भाद्रव[15] ज्यों झरकै ॥३३८६
सीय देखत पै सब होय सुखी महलै विच लैगई चंदमुखी।
मिलकै मुद पावत है महला, कमनीय मनौ विधू[16] दूज कला ॥३३८७
गुर सासु के पायन लागत है, अहवात असीसऊ[17] पावत है।
अत सोह[18] बढ़ी राय[19] अंगन की, मधुरी धुन बाज मृदंगन की ॥३३८८
धवरोहर[20] धांमन-धांमन में, मुलकै मिल कांमिन[21] कांमिन में।
निज दासि खवासन नायनीयं[22], गहरै सुर गावत गायनीयं[23] ॥३३८९
वनिता[24] कहि बात विसेकत है, द्रग सौं कोऊ आंनन देखत है।
कोऊ पूछत है कुसलात कहे, ललना मिल लाड़लो मोद लहै ॥३३९०

१ अग्निदेव । २ भेद । ३ वापिस लौटे । ४ कुबेर । ५ चले जाते हैं । ६ महल । ७ प्रजा ।
८ भेंट । ९ इनाम, अनुग्रह । १० ईक्ष्वाकु । ११ आंगन । १२ कलश । १३ रनिवास ।
१४ मोती । १५ सावन-भादों । १६ चन्द्रमा । १७ भी । १८ शोभा । १९ राज ।
२० [illegible] । २१ कामिनी । २२ नाइयों की स्त्रियां । २३ गाने वाली ।
२४ वनिता = स्त्री ।

सब सीय सखी लखकै सीय कौं, हरकावत[1] आय मिली हीय कौं।
कोऊ बिझन[2] झेल बयार[3] करै, धुरबीरीय भाजन केक धरै ॥३३९१
सित चौंर ऊड़ावत भौंर सही[4], रूख देखत कै मुख रीझ रही।
पुन पंकज पाव पलोटत है, धनसारहू[5] चंदन घोटत है ॥३३९२
बँसुरी कोऊ बीन बजावत है, दुति[6] दर्पन लै दिखरावत है।
मुद पाय रही सब ही मिलकै, पुतरी-चख[7] ढाँकत ना पलकै ॥३३९३
अवरोध[8] भयौ सीय आवन कौं, परवाह[9] बढ्यौं सुख पावन कौं।
महाँराजहू[10] इंद्रक भौंन[11] मही, जन संजुत[12] ठौर बिराज जँही ॥३३९४
भईया लघु देखकै भारथ[13] कौं, कपिराज सराह[14] कही कथ कौं।
चहुँ भ्रात ज्युँही ईह पंचम है, सब मात के अंगज[15] के सम है ॥३३९५
परनाँम[16] करावहु मात प्रतै, जुगराज[17] तथा हनुंमंत जुतै।
महिलायत[18] भोर निवास मही, तुम जाय ऊतारहु भ्रात तँही ॥३३९६
गहि हाथ सौं हाथ जबै गवने, सुगरींव[19] भरथ्थ सनेह सने।
सब मात जुहारकै होय सुखी, रचना अवलोक कै प्रेम रुखी ॥३३९७
बहुरै बिव[20] आयकै बाहर में, ठहरे रघुवीर के ठाहर में।
सुभ जोग[21] महूरथ[22] देख सही, कपिराज सौं बात भरथ्थ कही ॥३३९८
करीयं रघुबीर सु कारीय[23] कौं, अभिसेख[24] दिवाकर[25] आरीय[26] कौं।
द्रढ़ बंदर भेजहु च्यार[27] दिसा, जल सागर लावहि कुंभ जिसा ॥३३९९
कपिराज सुनी सुभ येह कथा, जल सागर सौं मगवाय जथा।
नद औार निवाँनन नालन सौं, तट तोय[28] अनेकहु तालन सौं ॥३४००
कपि लायेऊ स्वर्न करीरन[29] कौं, निज उतँम ऊतँम[30] नीरन कौं।
कपिराज भरथ्थ सौं जाय कही, सब हाजर है जल कुंभ सही ॥३४०१

दोहा

कही भरथ सत्रुघ्न कौं, बुलवावहु गरू बिप्र।
करहु रांम अभिषेक क्रत[31], छित मंडल कौं छिप्र[32] ॥३४०२

---

१ हर्षित होती है। २ बीजना = पंखा। ३ वायु = हवा। ४ सहेली। ५ कपूर। ६ द्युति। ७ आँख की पुतली। ८ रनवास। ९ प्रवाह। १० मू. प्र माहांराज। ११ राजमहल। १२ संयुक्त = सहित। १३ भरत। १४ प्रशंसा करके। १५ पुत्र। १६ प्रणाम। १७ अंगद। १८ महलों। १९ सुग्रीव। २० दोनों। २१ योग। २२ मुहूर्त। २३ कार्य। २४ अभिषेक। २५ सूर्य। २६ आर्य। २७ चार। २८ जल। २९ कलश। ३० उत्तम। ३१ कृत्य = कार्य। ३२ शीघ्र।

छंद अरध हरगीतका

सुन भरथ बात सुकाज की, रघुबीर चर्चा राज की।
सत्रुघ्न मंत्रि समाज कौं, रचना सु कहि गरुराज कौं॥३४०३
वसिष्ट[1] विप्र बुलाय कै, वेदी अनूप[2] बनाय कै।
धर छत्र कौं कौसल धनी, वामाँग श्रीसीता बनी।३४०४
वासिष्ट[3] कस्यप[4] अरु विजै, रिखी[5] पुनर्बसु गोतम रजै।
जहाँ मिले बहु दुज[6] जायकै, अरु बामदेव हू आयकै॥३४०५
जल कुंभ ऊत्तम जोर कै, घनसार[7] केसर घोर कै।
अभिसेख[8] विप्रन आद कै, वचनात आसीर्बाद कै॥३४०६
धुन[9] वेद करकै धारणा, कीय राँम मँगल कारना।
जहाँ मुनी रित्वज[10] जोरकै, अभिषेक कीनौ औरकै॥३४०७
कंन्या कुवांरी पुन करचौ, अभिसेख रघुवर अनुसरचौ।
अरु मंत्रि वर्ग असेखहू[11], कीय राँम कै अभिषेकहू॥३४०८
सब सुभट आदक संग कै, अभिषेक कीन ऊमंग कै।
पुरजनन गन सुख पाय कै, अभिषेक कीनौ आयकै॥३४०९
सुर आय सुरपथ[12] संजुरे,[13] कल[14] गाँन धुन जय जय करे।
अभिषेक कीन अरंभ सौं, आकास-गंगा[15] अंबु[16] सौं॥३४१०
चहु लोक पालन चाहि कै, अभिषेक कीय ऊमगाय कै।
अभिषेक जैसे ईंद्र की, निरवाह[17] राँम नरिंद की।३४११
वसु आठ कीनौ जिह विधी, हरसाय कै सुख संमृधी[18]।
ईम राँम को अभिषेकहू, प्रज हेत कीय नय पेखहू॥३४१२
अभिसेख पीछे आरती, पुन करी जन कौसलपती।
धुर दयौ दिव मनु धारनै, सोई गरु मुगट सँवारनै॥३४१३
मनु वंस राजा महत्ता, ईख्वाक आद अनंत्ता।
सोई धरयौ रघुवर सीस कै, जन गरु बोल असीस कै॥३४१४

१ [illegible]। २ अनुपम। ३ वसिष्ठ। ४ कश्यप। ५ ऋषि। ६ द्विज = ब्राह्मण। ७ कपूर। ८ [illegible]। ९ [illegible]। १० [illegible]। ११ [illegible]। १२ आकाश। १३ इकट्ठे हुए। १४ [illegible]। १५ [illegible]। १६ जल। १७ निर्वाह। १८ समृद्धि।

बासष्ट के पग बंद कै, अवधेस पाय अनंद कै।
हीय सत्रघन प्रीय हेत कौं, सिर छत्र धारचौ स्वेत कौं ॥३४१५
कर चँवर लेय कपीसहू, ढोरें सु लंकाधोसहू।
उभे दुवाजू आयकै, गुन राँम के पुन गायकै ॥३४१६
सुरपती सासन संध सौं, नीयराय राँम नरिंद सौं।
मनिजुक्त मुक्तामाल कौं, पवमान दाय प्रजपाल कौं ॥३४१७
द्रुत देवता दरबार कै, आये सुक्रीत ऊचार कै।
गंधर्व लागे गावनै, प्रभु दरस सौं सुख पावनै ॥३४१८
श्रंगार कर कर स्वच्छछरी, अरु नटन लागी अच्छरी।
जाचकन[1] बिप्रन[2] जोर कै, वित[3] दाँन दीन बहोर[4] कै ॥३४१९
अनगनत[5] सूखन[6] आद सौं, मनि बसन[7] राज मृजाद सौं।
बगसे अलंक्रत[8] वेख कै अवधेस कै अभिषेक कै ॥३४२०
सतकार[9] कर सुग्रींव कौ, हनुमान कौ हित हीय कौ।
जिह रीत जूथप-जूथ कौ, बहु विदा दीन बरूथ कौं ॥३४२१
पुन लंकपत सुख पायगे, सब धाँम-धाँम सिधायगे।
रघुनाथ अपने राज कौ, संभार कीन समाज कौ ॥३४२२
चित येक[10] भ्राता च्यार[11] कौं, बर राज काज बिचार कौ।
अनभीत[12]जय सारी ईला,[13]कीय राज बहु कौसल[14]कला ॥३४२३
कीय निकंटक प्रज[15] कारनै ध्रुव[16] राज पदवी धारनै।
जन और मंत्री जात कौं, भजमाँन[17] बोले भ्रात कौं ॥३४२४
भये किते पूरब भूपती, मंडलीक पालक बसुमती।
प्रज पालना कीय प्रीत सौं, निबाह नय[18] की नीत सौं ॥३४२५
छित[19] राज भारहि चाहि कै, प्रज हेत दीय सुख पाय कै।
कुल रीत अंगीक्रत करचौ, सुबिचार सासन[20] अनुसरचौ ॥३४२६
हम नीत नय के हाल की, पहिचाँन मति प्रजपाल की।
हम करत जैसै हेर कै, पुहमीन[21] सासन प्रेर[22] कै ॥३४२७

---

१ याचकों। २ ब्राह्मणों। ३ वित्त = धान। ४ बदले में। ५ अगणित। ६ भूषण। ७ वस्त्र। ८ मर्यादा। ९ सत्कार। १० एक। ११ चार। १२ निर्भय। १३ पृथ्वी। १४ कुशलता। १५ प्रजा। १६ अटल। १७ सर्व समर्थ। १८ न्याय नीति। १९ पृथ्वी। २० शासन। २१ पृथ्वी पर। २२ प्रेरणा देकर।

ईह राज भार ऊपारीयै, ध्रुव हुकम[1] मेरौ धारीये।
सब भ्रात बोले साथ सौं, रूच जाँनकै रघुनाथ सौं ॥३४२८
करनीय जैसौ काज है, लघु भ्रात की प्रभु लाज है।
पुन करहि जैसी प्रेरना[2], हित चाहि कर है हेरना ॥३४२९
सुन भ्रात बात सयाँन की, गृहमंत्रि जुत गुरू ज्ञाँन की।
जुगराज[3] पदबो जाँन कै, दीय भरथ निज सुखदाँन कै ॥३४३०
अरू भ्रात मंत्री आद कौं, महि भार राज म्रजाद कौं।
कीय सबै कायम[4] काँम पै महाँराज[5] अवध मुकाँम पै ॥३४३१
परजा बढी दिन-दिन प्रतै, जय कीरती संपत[6] जुतै।
कीय अस्वमेध कितेकहू, जिग[7] पांड़रीक जितेकहू ॥३४३२
पुहमीन सागर पार कै, ध्रुव सीम[8] कीय छत्रधार कै।
हजार ग्यारह वर्षहू, कीय राज जग ऊतकर्षहू[9] ॥३४३३
आजाँनभुज[10] अवधेस कौ, सब बरतमान[11] सुरेस कौ।
भईया सु लछमन भाव सौं, अरू भरथ राज ऊपाव[12] सौं ॥३४३४
सत्रुघ्न साधक साच सौं, बरबीर रघुबर बाच सौं।
कल्याँन[13] कारक कारना, घर रही अवचल[14] धारना ॥३४३५
अन्याय[15] चौर न येकहू[16], बरताव न्याव[17] बसेखहू।
कपटी न बंचक क्रूरता, सरसाय सुभय न सूरता[18] ॥३४३६
नारी पतीव्रत नेम सौं, पति सहित भीनीं प्रेम सौं।
ईती[19] न दुख अहि[20] आद को, बाचालता जुत बाद कौ ॥३४३७
विसनी[21] न दुज्जन[22] वारता, सठता न लंपट सारता।
संताँन वृद्धी सौगुनी, गरूकर्म[23] साधक अरू गुनी[24] ॥३४३८
पितु मात पुत्र प्रसाद सौं, अपक्रीया[25] विगत असाध सौं।
दुरभख्ख[26] कौ दुख देस में, बरत्यौ न काल बिसेस में ॥३४३९
जन धर्म निज निज जात कौं[27], निरवाह स्वक्रीय[28] न्यात कौ।
कृषी[29] कर्म विक्रीय काँम कौं, सुबिचार सासन स्याँम[30] कौ ॥३४४०

१ आज्ञा। २ प्रेरणा। ३ युवराज। ४ स्थिर। ५ मू. प्र. महाँराज। ६ संपत्ति। ७ यज्ञ। ८ सीमा। ९ उत्कर्ष = वृद्धि, उन्नति। १० घोंटू तक लम्बी भुजा वाले। ११ वर्तमान् = उपस्थित। १२ राज्यकाल। १३ कल्याण। १४ अविचल। १५ अन्याय। १६ एक भी। १७ न्याय। १८ शूरवीरता। १९ क्षतिवृष्टि = अनावृष्टि। २० सर्प। २१ व्यसनी। २२ दुर्जन। २३ विद्या। २४ गुणी। २५ दुष्कर्म। २६ दुर्भिक्ष। २७ जाति। २८ स्वकर्म। २९ कृषि। ३० राम।

अवनी बढी अत ऊंन्नती[1], मिल राज परजा[2] संम्मती[3]।
श्री रांमचंद्र सुभाव सौं, भुंव[4] प्रजा बाढी भाव सौं ॥३४४१

दोहा

नवरात्री पूजा नीयम[5], वाहन पूजन वीर।
रांवन मारन जेम[6] रन, विजय दसम रघुवीर ॥३४४२
देवी विजई दंनवन[7], राखस[8] विजई रांम।
छत्री पूजत चाहिकैं, कलह विजह के कांम ॥३४४३
कछू ऊक्त तुलसी कही, व्यास ऊक्त कछू वात।
जुद्ध कथा वरनी जिती, वालमीक वचनात ॥३४४४
कथा राम सुभकारना, जांनत सकल जहांन।
बुद्ध सुकव[9] वरनन करी, करन हेत कल्यांन ॥३४४५

---

१ उन्नति। २ प्रजा। ३ सम्मति। ४ पृथ्वी। ५ नियम। ६ जिस प्रकार। ७ दानवों पर। ८ राक्षस। ९ सुकवि।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

चतुर्थ स्कंध

दोहा

सुनकें त्रतीय सकंध की, कथा अनूपम[1] कांन ।
जनमेजय नृप कीय जहाँ, प्रश्न व्यास परमाँन ॥१
सूरसैन नृप के सुतन, दुज[2] पुज्जक[3] बसुदेव ।
क्रश्नचंद जाके कुवर, देवन हू के देव ॥२

छंद त्रोटक

परमातम[4] क्रश्न के मात पिता, बसुदेव हू देवकी लै बिपता[5] ।
बंधुवा[6] हुय कंस के कैंसे वसे, ग्रह कैद के खेद[7] में अंग ग्रसे ॥३
जिनके खट[8] पुत्र भये जिनकौं, तन[9] नासत कंस करे तिनकौं ।
ध्रमहीन[10] कहा अपराध धरचौ, कुल भूप जजात[11] कौ नास करचौ ॥४
ऊपजे पुन क्रश्न[12] ईही अरसे, बिच गोकुल जायकें कैंसे बसे ।
प्रगटे कुल छत्रीय[13] में पहिले, मभ्क[14] गोपन[15] वंसीय जाय मिले ॥५
गृह नंद घने दिन बीत गया, दुखीया पितु मात न कीन दया ।
जनमे जिह कूख[16] में क्रश्न जई, भयतव्य कहा ईह खेद[17] भई ॥६
करटे जिन कोनसे कर्म करे, वँह क्रश्न पसाव[18] नहीं ऊधरे[19] ।
भगनी ईक क्रस्न कें ग्रौर भई, दुक्रती[20] जिह कंस पछाट दई ॥७
सट[21] भ्रातहु क्रस्न की येक सुता[22], महाँदुष्टहू कंस ने प्रांन मुसा[23] ।
कहा कीन जहीं बिपरीत क्रीया, जनमे पैं नहीं दीरघायु[24] जीया ॥८

---

१ अनुपम । २ ब्राह्मण, द्विज । ३ पूजा करने वाले । ४ परमात्मा । ५ विपत्ति
६ बंधन में । ७ दुःख । ८ छह । ९ शरीर । १० धर्महीन । ११ ययात । १२ कृष्ण ।
१३ क्षत्री । १४ मध्य । १५ गोपालक=ग्वालियों । १६ गर्भ से । १७ दुःख ।
१८ कृपा । १९ उद्धार हुआ । २० दुष्ट कर्म करने वाला । २१ छहों । २२ छोटी बहिन ।
२३ मार दिया । २४ दीर्घायु ।

ईह पूरब जन्म के कोन ईते, बय[1] बालपनै में सरीर बिते[2] ।
कहीयै फिर क्रश्न बिभौ[3] कितनौ, जुवतीगन आद भयौ जितनौ ॥९
नर और नाँरायन रूप नृभैं[4], ईह अर्जुन क्रश्न भये सु ऊभैं ।
प्रगटे जिह रीत कहौ प्रवृती[5], चित्त जाँनन की अभिलाख छती[6] ॥१०
बदरी[7] में बने रहे रूप वहाँ, अथवा तन त्याग कै आये ईहाँ ।
दिव[8] ब्राँमन[9] होय के खत्री बने, हित कोन बिचारकै सत्रु हने ॥११
ऊलटा-पलटी को बिचार ईही, जर पेढ़[10] सौं पूछत बात जँही ।
हरि-पूत प्रदुम्न[11] तही हरनो[12], कहा कारन ब्याज[13] भयौ करनौ ॥१२
जदुबंस वढ्यौ अत जाहीय कौ, ततकाल भयौ खय[14] ताहीय कौ ।
भरपूर जहाँ ऊतपात भये, गऊलोक[15] कौं क्रश्न सिधाय गये ॥१३
हरी[16] के रनवास[17] कौं लेय हले, मग आवत अर्जुन चोर मिले ।
कुमती मिलकै धन लूट करी, घबराय गये नर[18] ताहि घरी[19] ॥१४
नही स्याहि[20] बनी हरिनारन[21] की, रनवासहु कौं रुखवारन[22] की ।
अवतार भौ[23] बिश्नु को क्रश्न ईहीं, जगती[24] कौ ऊतारन भार जँही ॥१५
द्रढता बिन सत्रुन के ड़रतै, मथुरा-तज द्वारका चाल मतै[25] ।
नजदीक[26] बने रहे चोर लुका, पहिचाँन लये नही सत्रु पका ॥१६
जिनकौं न संघारेऊ कोन जथा, कहीयै बिध संजुत ऐहु कथा ।
सतवादीय[27] भीसम[28] द्रोन[29] सही, जुध[30] आपुस में करवाय जही ॥१७
कुल छत्रिन को हरि नास करचौ, तिह मारनतैं भुव[31] भार टरचौ ।
खल चोरन मारेऊ भार खिती, कहा जाँन बचाय लये कुमती ॥१८
पंच पंडव सौं पहिचाँन पखा, सोई अर्जुन के भये क्रश्न सखा ।
जिग राजसू फेर कराय जँही, बनवास भयौ दुख फेर वही ॥१९
नही क्रश्न लखी ईह घात नई, हरि की मतिहू कहा ऊँनी हुई ।
द्रुपदा अवतार रमा दुसरी, बिपता भुगती सुख कौ बिसरी ॥२०

---

१ आयु । २ नष्ट हुए । ३ वैभव । ४ निर्भय । ५ वार्ता । ६ छाती = हृदय । ७ बद्रिकाश्रम । ८ दोनों । ९ ब्राह्मण । १० पूर्णतया । ११ प्रद्युम्न । १२ हरण होना । १३ कपट । १४ क्षय । १५ गोलोक । १६ कृष्ण । १७ स्त्रियों । १८ अर्जुन । १९ समय = घड़ी । २० सहायता । २१ कृष्ण की स्त्रियों । २२ रक्षा । २३ हुआ । २४ पृथ्वी । २५ विचार । २६ पास । २७ सत्यवादी । २८ भीष्म । २९ द्रोणाचार्य । ३० युद्ध । ३१ भूमि = पृथ्वी ।

हीय संसय येहु बड़ौ हमरै, कहियै निरनै भ्रम दूर करै।
सुक्रती सब पंडव येक समा, जुधमें कीय छत्रीय जात जमा ॥२१
कुलनास भयौ किह कारन सौं, निज बात कहौ निरधारन सौ।
पुनवाँन परीक्षत मेहि पिता, रहनी करनी दुज भक्ति रता ॥२२
ऊपहास करचौ गल डार अही, तन आपत होयकै खोय तही।
ईतने सब संसय है उरमें, भय व्याकुल चित्त सदा भरमैं ॥२३
सुन व्यास निवारहु होय सुखी, ऊर में ऊपजै मोहि ज्ञाँन-अखी।
जितने हम प्रश्न करे जिनकौ, ततकाल प्रबोध करौ तिनकौ ॥२४
श्रवनां नृप बाहक व्यास सुने, क्रम की गति गूढ लगे कहनै।
गिरबाँन न जाँनत कर्मगती, मनुजाद लखै कहा मंदमती ॥२५
क्रम ही ईह ईंह ईंड़ कटाह करै, परपंच जतौ जग जाँन परै।
कछु जीव की रीत न जात कही, नही आद न अंतहु मध्य नही ॥२६
क्रम बीज सरूप में वेद कहै, ऊपजै बिनसै नित जीव अहैं।
क्रम-जोग तै देह संजोग करै, भ्रम भूल सुभासुभ भाव भरै ॥२७
प्रारब्ध तथा क्रीयमाँन पखै, लहि संचत[1] तीन प्रकार लखै।
ध्रुव संगही संचर[2] धारन कै, क्रम जीव सदा तिह कारन कै ॥२८
विध[3] आदक देव जिते बहुरै, क्रम[4] सौ सुखहू दुख भोग करै।
हरखै[5] कहु सोक गृहै हीयरा[6], जिह देह के संग लहै जीयरा[7] ॥२९
ऊरमी[8] ऊरपंच प्रकार ईहै, गुन देह के संग ही जीव गहै।
पसु पक्षिहु मांनस के पुतला, केऊ,देव बनावत ऊद्ध कला ॥३०
क्रमतै भ्रमना रवि व्योम[9] करै, धुर रोग कुचांवली[10] इंदु[11] धरै।
गवरीपति[12] मुंड की माल गलै, पुन मागत भीख सदा प्रचलै ॥३१
लछमीपति[13]हू अवतार लहै, सोऊ संकट जोनीय[14] नित्त[15] सहै।
जग जंगम थावर जीव जिते, रचना क्रम बंधन बीच रते ॥३२
पुन नित्य अनित्य विचार प्रतै मुनि बूढत तैरत बुद्धि मतै।
ऊर नित्यता मांनत पक्ष अजा, परतीत प्रकासत ईस प्रजा ॥३३

---

१ संचित। २ शरीर। ३ ब्रह्मा। ४ कर्म। ५ हर्षित होता है। ६ हृदय। ७ जीव। ८ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह। ९ आकाश। १० कफ। ११ चन्द्रमा। १२ महादेव। १३ विष्णु। १४ योनि। १५ नित्य।

जितनै नित कारन[1] जाँन जही, निज कारज[2] ताहि अभाव नही ।
ईहतै जग जाँनहु नित्य अहै, क्रम ही वँह बीज-बिचार कहै ॥३४

भव कर्म के बंधन माँहि भ्रमै, जीव जोनीय-जोनीय में जनमै ।
तिह कारनतै मुनि भोग तजै, जय ज्ञाँन अराधन जोग[3] जजै ॥२५

दुख ना गृभवास[4] तै और दुऐ[5], मुरभ्रात रहै जनमै रु मुऐ[6] ।
जनमे जग अंतर जीव जिते, रचना बस प्रेरत कर्म रते ॥३६

सुक्रती तप कै मख[7] साधन तै अथवा कहु ईस अराधन तै ।
कहू मानव तै पुरहूत[8] करै, पुन छीन[9] भयै दुख कूँप परै ॥३७

अवतार सीयापत भौ ईतनै, बर अंम्मर[10] बंदर-रूप बनै ।
जनमै फिर जादव कश्न जबै, स्वरगीय भये फिर जाय सबै ॥३८

जिम प्रेरत ब्रह्म जनार्दनहूँ, किसना[11] अवतार भयौ सु कहूँ ।
क्रतु कारज कै मुनि कस्यप नै, बित चोरन कौं परपंथी बनै ॥३९

जिह लायकै गाय परंजन की, मख कारन सिद्ध करी मनकी ।
सुरभीन परंजन बात सुनी, मग खोजत आयकै पास मुनी ॥४०

सुरभी तिह माँगीय कस्यप सौं, बित दैन नटे ममता वस सौं ।
घट क्षोभ ऊपज्जीय ताहि घरी, कमलासन जाय पुकार करी ॥४१

कमलासन[12] बोलकै कस्यप कौं, रिसकै बस श्राप दयौ रिस कौं ।
सठता कर चोर लई सुरभी[13], ईह मागत पै नही देत अभी ॥४२

स्त्रीय संजुत[14] जाय बिपत्त सहौ, कुल बल्लव जादव होहु कहो ।
बिध श्राप दीयौ जिम बारुनहू[15], ध्रुव कस्यप कीन सु धारनहू ॥४३

अदिती दिती श्राप दयौ ईम हूँ करकै बिसतार सुनौ सु कहूँ ।
दुहिता[16] परजापत[17] दछ्छ[18] ही की कमनीय दहू[19] त्रीय कछ्छ[20] ही की॥४४

अदती सुत इंद्र जबै ऊपजा, रिख सौं दिती माँगीय पुत्र रजा ।
दिती नार रजा[21] मुनिराज दई, सुत हेत पयोबृत कीन सई ॥४५

बृत साधत केतक औध[22] बिती, द्रढ़ धारन गर्भहु कीन दिती ।
अदिती हीय क्षोभ सुनै ऊपजी, तिह पुत्र के हेत सौं सूक[23] तजी ॥४६

---

१ कारण । २ कार्य । ३ योग । ४ गर्भवास । ४ दूसरा । ६ मरता है । ७ यज्ञ । ८ इन्द्र । ९ क्षीण । १० देवता । ११ कृष्ण । १२ ब्रह्मा । १३ गाय । १४ युक्त, सहित । १५ वरुण मू० प्र० वारन । १६ पुत्री । १७ प्रजापति । १८ दक्ष । १९ दोनों । २० कश्यप । २१ आज्ञा । २२ अवधि । २३ दया ।

सुत इंद्र कह्यौ मम मंत्र सुनौ, हर-येक[1] ऊपायतै गर्भ हनौ ।
सोई वासव[2] मात सलाह सुनी, कर ब्याज[3] चलाय गयौ कुहनी[4] ॥४७

वृत क्षीन[5] भई फिर गर्भवती, सुनीयै अरजी[6] दिती मात सती ।
हम भ्रात तथा भगनी हुयहै, लख कै तब आनँद कौं लहिहै ॥४८

सुत हेत सदा सिवकाईय[7] तै, जननी ढिग चाहीय जाहीय तै ।
कहिकै ईह जाय दबावन कौं, पुरहूत लग्यौ जिती पावन[8] कौं ॥४९

सुत जाँन कीयौ बिसदास[9] सुतै, अत सुप्त[10] भई तम घेर ईतै ।
सोई गुर्विनी[11] वृत लहै समकौं, गुरबो तन भूल गई गम कौं ॥५०

तनकौं कर सुक्षम[12] रूप तही सतकोटीय[13] कौं गहि इंद्र सही ।
चुपकै गृभ काटन काज चह्यौ, बन सुक्षम रूप पिचंड[14] बह्यौ ॥५१

कीय सात टुका[15] सतकोटीय सौं, खल रूप बन्यौ मत खोटीय सौं ।
सोई लेस[16] कलेस[17] कौं पाय सबै, जुत भीत[18] कै रोवन लाग जबै ॥५२

करुना तज वासव कीन कटा, बट[19] येकहु के फिर सात बटा[20] ।
ऊनचास भये गृभ[21] येकही तै, पवमाँन[22] सरूप तै भिन्न प्रतै ॥५३

पुरहूत सौं बोल ऊठे पवना, गृह रावरे[23] क्यौं[24] न करौ गवना[25] ।
कबहूँ तुम द्वेष करैं न कहू, सुनीयै[26] हम रावरे भ्रात सहू ॥५४

कर इंद्र चल्यौ निज काजही कौं, समल्यौ सोई देव समाज ही कौं ।
दिती जाग ऊठी ईतनै दुख सौं, रचना अदिती की लखी रुख सौं ॥५५

कर क्रोध दिती अदिती सौं कह्यौ, सुत[27] राज के कारन पाप सह्यौ ।
पुन राज कै वैभव हीन पनौ,[28] सुत तोर सहैं मम श्राप सुनौ ॥५६

तुम बंधन में परहै अरती, पिछतावहुगो[29] लहि संग पती ।
मम श्राप अभीक्षन[30] पुत्र मरैं, करुना कर नित्त[31] विलाप करै ॥५७

सुत सोक कौ दुःख घनौ[32] सहिहौ, लगए तरु के फल कौं लहि हौ ।
गुनकै दिती इंद्र कही सुनीयै, गुनकौं तज औगुन[33] ना गुनीयै ॥५८

ऊनचास प्रभंजन[34] होय ईहैं, बलवंत महाँ मम भ्रात वहै ।
तव श्राप मृषा[35] नँहि होय तहू, अठविसत[36] द्वापुर[37] में ऊतहू ॥५९

---

१ प्रत्येक । २ इन्द्र । ३ कपट । ४ धूर्त । ५ क्षीण । ६ प्रार्थना । ७ सेवा । ८ पैर ।
९ विश्वास । १० सोगई । ११ गर्भवती । १२ सूक्ष्म । १३ वज्र । १४ पेट ।
१५ टुकड़ा । १६ टुकड़ा । १७ क्लेश=कष्ट । १८ भय । १९ खंड । २० टुकड़े ।
२१ गर्भ । २२ मरुतगण । २३ आपने । २४ क्यों । २५ गमन । २६ मू.प्र. त्यों ।
२७ पुत्र । २८ अनाथ । २९ पश्चात्ताप करोगी । ३० बार-बार । ३१ नित्य ।
३२ अधिक । ३३ अवगुण । ३४ वायु=मरुत । ३५ मू.प्र. माहां । ३६ मिथ्या ।
३७ अट्ठाईसवें । ३८ द्वापर ।

जननी मम मांनुखी जोन[1] जही, सुत कौ दुख देखहिंगी सबही।
दुसरो तिह बारून[2] श्राप[3] दीयौं, अनभोग नही मिटहै ऊभयौं[4] ॥६०
मिटहै दुख अल्प ही काल मही, सुन लीजीयं मान ऊदत[5] सही।
ईतनै मुनि कस्यप आय ईनै, समझाय बुझाय कही सबनै ॥६१
अदती सोई देवकी रूप ईही, निरसंसय श्राप लीयं निबही।
ईह पूरब जन्म की बात ईती, ईतीहास कह्यौ अदतीहू दिती ६२

दोहा

कही नृपत सौं व्यास कथ, समरथ बुद्धि सयाँन।
कीयौ प्रश्न दहू जोर कर, ईहधू कवन अयांन ॥६३
कस्यप सुत कीय पापक्रम, पतित लोक पुरहूत।
सेवा मिस कर मात के पाव छेदे परसूत ॥६४
नृपत जुधष्टर धर्म-निध, करन भीस्म तज काँन।
द्रोनाचारीय आद द्वज, प्रहरन विनसे प्राँन ॥६५
जरासंध बध हेत जहाँ, बने क्रस्न तहाँ बिप्र।
बिजई ऐसे बीर कौं, छल कर मारयौ छिप्र ॥६६
करी ढिटाई बिजय क्रतु, कीयौ क्रूर तिह कर्म।
फल पायौ बिपरीत फिर, धर्मराज पथ धर्म ॥६७
सत्य प्रथम पद धर्म सो, सऊच दुतीय पद सोय।
दया त्रतीय चौथौ सुदत, कोविद कहत सकोय ॥६८
पाद[6] हीन किम धर्म पथ, चाल सके नही चार।
जाँनगे कैसे जिनहिं, को ठग साहूकार ॥६९
बल[7] राजा दांनी बहुर, छल बावन[8] कर चाह।
सुतल पठायौ क्रतु[9] समय, रही कहाँ ध्रम-राह[10] ॥७०

कवित छप्पय

सुन ऊदंत[11] नृप श्रवन, व्यास कहि तास बिचारे।
त्रयलोकीपत[12] तऊ, हरी[13] सोई बल सौं हारे॥

---

१ योनि। २ वरुण। ३ शाप। ४ दोनों। ५ वार्ता, समाचार। ६ चरण। ७ राजा बलि ८ भगवान वामन। ९ यज्ञ। १० धर्मपथ। ११ वार्ता। १२ त्रिलोकीपति = विष्णु। १३ विष्णु।

सुतल जाय तिह संग, द्वार-पालक भये देखौ।
लघुतापन[1] तन लहिहु, बनोपक[2] बने बिसेखौ ॥
त्रिबिक्रम नाम तिनहि, भार[3] दाँन झेल्यो सुभुव[4]।
नीकै बिचार लीजै नृपत, धर्मं सत्य कौं जाँन ध्रुव ॥७१
माया प्रबल महाँन, जाहि निर्मत[5] जग जाँनौ।
बिध आदक बिस्तरै, मिले त्रहु-गुन[6] मय माँनौ ॥
काँम क्रोध मद मोह, लोभ ऊरमी[7] ललचावत।
अहंकार आरूढ, प्रमापन[8] संचर[9] पावत।
जिह हेत जाहि लीनौ जनम, कारज जैसौ करन कौं।
चल[10] बल ऊपाय तैसो चहत,[11] जोत जुक्त[12] पटु नरनकौ ॥७२

छंद पद्धरी

ब्यास पुन कहन लागे बृतंत,[13] ऊर समुझ लेहु नृप आद अंत।
बारता कहा हम कह बिसेस, पर द्रोह बुद्धि जाकै प्रबेस ॥७२
जग थावर जंगम भरे जीव, सब राग-द्वेष संजुत[14] सदीव[15]।
देवता कपट छल रचत द्रोह, मानबी[16] कहा बस सदा मोह ॥७४
द्रोही सौं जो कोऊ करत द्रोह, सम-धर्म[17] ताहि जानहु समोह[18]।
बिन द्रोह-द्रोह की करै बात, खलता[19] की जाँनहु ईही ख्यात ॥७५
रिख[20] ध्यांन करत केऊ ज्ञाँन रंग, बिद्वेष करत तप जाय भंग।
जब देवराज[21] ईह रचत जाल,[22] हर येक सुरन के कहा हाल ॥७६
थिर[23] गनहु बासना धर्म थान, ह्वै मलिन ताहि तैं धर्म हाँन।
बासना-मलिन मूलहो बिनास, जाँनहु निरसंसय सदा जास ॥७७
ईतिहास कहत नृप सुनहु एक, बिध-जुक्त[24] बिचारहु लहि बिवेक।
परमेष्ठी[25] होय सौं ऊपज पूत, ईक धर्म नाम जानहु अभूत ॥७८
धरमातम[26] सत्यबादी सधीर, निरमल[27] तप मानहु गंग नीर।
दस सुता प्रजापत[28] दक्ष दीन, पति धर्म प्रीया जाँनहु प्रबीन[29] ॥७९

१ छोटापन। २ भिक्षुक, भिखारी। ३ बोझ। ४ पृथ्वी। ५ निर्मित। ६ तीनों-गुण सत, रज तम,। ७ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह। ८ मृत्यु। ९ शरीर। १० छल। ११ चाहता है। १२ चतुर। १३ वृतांत। १४ संयुक्त। १५ सदैव। १६ मनुष्य। १७ समानधर्मी। १८ मोह-सहित। १९ दुष्टता। २० ऋषि। २१ इन्द्र। २२ छल, कपट। २३ स्थिर। २४ विधियुक्त। २५ ब्रह्मा। २६ धर्मात्मा। २७ निर्मल = पवित्र। २८ प्रजापति। २९ प्रवीण।

नर नारांयन जनमे निदाँन, ऊनले[1] हरी क्रस्नहू भयें आँन।
तप करन बद्रकासृम[2] सहेत, नर नारांयन[3] रच्व बन-निकेत ॥८०
परब्रह्म[4] चित्त चिंतत सप्रेम, निरवहत[5] जोग-अभ्यास नेम।
अनुबछ्छर[6] बीते सहँस एक, बपु[7] तेज-पुंज-मय भये बिसेख ॥८१
आखंडल[8] ऊपजी संक आँन, मम थाँन[9] स्वर्ग लैहै महाँन।
जिह हेत जत्न कीजै जरूर, दुस्साध[10] तपस्या होय दूर ॥८२
गज ऐरावत चढ कीयौ गौंन, थित[11] जास लखे रिख बिपन-थाँन।
लवलीन भये परबृह्म लाग, रिखराज[12] लखे द्रग बिगत राग ॥८३
धगधगत तेज थिर[13] जोग ध्याँन, भ्राजत तन दीपत[14] मनहु भाँन[15]।
बोले तव वासव कर बिचार, सुनीयैं ईह हमरे समाचार ॥८४
वंचत[16] मन लेवहु ऊभय बीर, पुर कवन हेत तप सहँत[17] पीर[18]।
बासव कीय बिनती बार-बार, नारायन बोले नही निहार ॥८५
तब बिघ्न करन लागे तुरंत, ऊलकाँन पांत नाना अनंत।
वृक सिंघ[19] मृघादन[20] बर्नबिलाव, बिकराल घोरबासी[21] बिराव[22] ॥८६
व्याघ्रनिस[23] भल्लुक अरू बराह ऊल्लूक हूक बर्जंत ऊछाह।
चलचंड[24] प्रभंजन[25] दिसा च्यार, बिन बद्दर[26] गजंत बार-बार ॥८७
भूकंप डार तरु होत भंग, सकपकत सिलोचय[27] डुलत अंग।
अनेक भयाँनक कीय ऊपाय, द्रढ जोग-बृत्तका[28] साँ डराय ॥८८
गवने सु हार पुरहूत[29] ग्रेह, ऊर संसय बाढ्यौ तब अछेह।
माया निज साधत बीज-मंत्र, तप भंग करन कहा करै तंत्र ॥८९
अब और ऊपाय न बनै येक, बासव बिचार सोचेऊ बिसेक।
बिषमायुद्ध[30] बोले अरू बसंत, मम कारज सिध कीजै महंत ॥९०
नर नारायन हत[31] करहु नेम, ऊरबसी आद संग लेहु एम।
तप ऊभय करावहु जाय त्याज, राखहु तुम मेरौ अचल राज ॥९१
सुरराज श्रवन कारज सुनाय, मधुदीपन[32] मधु[33] चाले मिलाय।
रितुराज चल्यौ बढ प्रथम राह, अतसग्र[34] ऊर धारं चित ऊछाह ॥९२

---

१ छोटे। २ वद्रिकाश्रम। ३ नारायण। ४ परब्रह्म। ५ निर्वाह करते थे। ६ वर्ष। ७ शरीर। ८ इन्द्र। ९ स्थान। १० दुःसाध्य। ११ स्थित। ऋषिराज। १३ स्थिर। १४ दीप्त। १५ भानु। १६ वाञ्छित। १७ सहते हो। १८ पीड़ा। १९ सिंह। २० जरख। २१ सियार। २२ शब्द। २३ गेंडी। २४ भयंकर = प्रचण्ड। २५ वायु। २६ बादल। २७ पर्वत। २८ योगवृत्ति। २९ इन्द्र। ३० कामदेव। ३१ नष्ट। ३२ कामदेव। ३३ वसन्त। ३४ अतिशय।

अन अंतर कंतर[1] जाय आद, बिसतारी माया हित विवाद।
अंकुरत भये आगम अनंत, बिध-बिध बहार बाढी बसंत ॥९३
कोमल नव पल्लव[2]-गुच्छ केर, लहलहत प्रभंजन[3] संग लेर।
परछाँह परत तापै पतंग,[4] रक्तांक[5] झरत जनु लाल रंग ॥९४
अनीयारी. कोमल-कली और, कांमो हीय वेधन कौं कठोर।
ऊत्फुल्ल[6] प्रभा ईम ऊद्धरीय, संजोगन[7] आनन सुंदरीय ॥९५
निद्रान-पुस्प[8] कोऊक लखाय, विरहीन भुजांतर[9] गनहु भाय।
लपटाय रही तरु लता लाग, पीय कांतीय भेटत प्रीत पाग ॥९६
वर तरवर पर मंजर बिसाल, किधू सेखर[10] सोहत पुस्पकाल।
बिस्तार बढी बेली बिसेख, येक सौं समिल[11] पुन रही येक ॥९७
ऊरझाय रहे गत तंतु एह, सुकीया तीय मानहु पीय सनेह।
कहु रुस्व[12] साख आनंद-कंद, वृष नार सहेली मनहु वृंद ॥९८
द्रुत गुंज भरत रोलंब[13] दांम,[14] कर गौंन जगावत मनहु कांम।
सोगंध मंद सीतल समीर,[15] भट विजई मांनहु जराभीर ॥९९
सुन परत मंजु कलकंठ[16] सोर, बिरदावत रितुराजा बहोर।
चटकत गुलाब कलिका चमेल, खटकत खग खुरली[17] समर खेल ॥१००
पुन पुहप मुकल फलत पराग, फागुन रितुराजा खिलत फाग।
सोगंध-संग सरसत समीर, ऊड़ रह्यौ मनहुं चहुधां अबीर ॥१०१
मधु[18]पांन करत मधुकर[19] मदंध, मधुबार[20] लेत परकर समंध।
कहु मृदुल बीजकोसी[21] अँकूर, मुग्धा मनु पीय हीय प्रेम मूर ॥१०२
किधु बिरही पिंजा[22] करन क्रूर, रितुराज आयौ सराहूर।
मनु सिसरकाल सिंधुर[23] मदंध, कंठीर[24] मरोरन जास कंध ॥१०३
पैने नख मनिवक[25] तरु पलास, हीय पुस्पकाल धारै हुलास।
बिसतारी माया ईह बसंत, जुर[26] कांम चढो सब जोव जंत ॥१०४
नर नारायन जागे निदांन, मिट गई जोग-निद्रा महांन।
नारायन ऊधरे जुगल नैन, बोले नर सेती ईहो बैन ॥१०५

१ वन। २ नये कोमल पत्ते। ३ पवन। ४ सूर्य। ५ मूंगा। ६ प्रफुल्लित। ७ संयोगिनी। ८ अधखिले अथवा संकुचित फूल। ९ छाती, हृदय। १० आभूषण। ११ मिली हुई। १२ ह्रस्व = छोटी शाखा। १३ भ्रमर, भौंरे। १४ समूह। १५ वायु। १६ कोमल। १७ एक खेल। १८ पुष्परस। १९ भ्रमर, भौंरा। २० मनोहारी करना। २१ फली। २२ पीडित करने, मारने। २३ हाथी। २४ कंठीरव = सिंह। २५ फूल। २६ ज्वर।

बृत भंग करन आयौ बसंत, लक्ष्मी बिपन[1] सोभा-ल त[2]।
साखी[3] असोक पल्लव[4] सुरंग, छिब[5]-धाँम पंचसाखा[6] सुचंग ॥१०६
बर-चरन अरुन किंसुक बिनद्ध, अरु नील असोकहु बार[7] ऊद्ध।
अतमंजु कंज-आँनन अनूप, सुच लोचन इंदीबर[8]-स्वरूप ॥१०७
कली कुंद दसन[9]-छिब हसन केर, पुन ओष्ठ दुपहरी पुस्प फेर।
तुलसी मंजर तिह करन[10] तेम, जिह करज[11] बज्र-तरु[12] तिछ्छ तेम ॥१०८
अंबर[13] कदंब तिह लसत अंग, स्वर मधुर कोकला मोर संग।
घूघरू छुद्रघंटा जु घोर, सारस बिहंग चलचंचु[14] सोर ॥१०९
मदमत्त अनूपम पद मराल,[15] चित चोर लेत सोई मंद चाल।
इहीं इंद्र कीयौ ऐसौ ऊपाय, भेजौ बसंत ब्रत भंग भाय[16] ॥११०
बतरावत आपुस ऊभय[17] बात, सब आय गयौ कंदर्प[18] साथ।
मैनका[19]-हास मुख मंद-मंद, चित चोरत रंभा[20] बदन-चंद ॥१११
सरसात पुस्पगंधा[21] सुगंध, सुंदरी सुसीके[22] प्रेम-संध।
अतरमा[23] महास्वेता[24] अनूप, सोमा[25] रुचरांगी जुत स्वरूप ॥११२
गीतज्ञा[26] मोहत चित्त गाँन, अरु मनोरमा[27] मन-हरन आँन।
पुन प्रमदबरा[28] ऊर सहित प्रीत, सुच सोमा[29] रस राचत सुचीत ॥११३
बपु चंद्रप्रभा[30] जिम प्रभाबृंद, कंचनामाल[31] आँनंद कंद।
कोकल-इलाप[32] मंडता कंठ, गत मंद घृताची[33] गुनन-गंठ ॥११४
बर बिद्युनमाला[34] दुति बिसेक, अंबजाअक्ष[35] सोभा असेख।
मुख चारुहासनी[36] पास[37] मोह, द्रग देखत मंजुल हिदय द्रोह[38] ॥११५
सोड़स सहस्र सत-पंच[39] संग, अनुराग ऊदत जोवन[40] ऊमंग।
अभिबंदन कीनौ आय पास, हीय जुगल मूर्ति धारै हुलास ॥११६
कीय आदरपूर्बक सतकार, अभ्यागत[41] पूजा-बिध अपार।
इंद्र कौ लख्यौ परपंच[42] येह, अहंकार हीयै बाढ्यौ अछेह ॥११७

१ वन। २ सुशोभित होती थी। ३ वृक्ष। ४ पत्ते। ५ छवि। ६ अंगुली। ७ केश। ८ कमल। ९ दाँत। १० कान। ११ नख। १२ थूहर का वृक्ष। १३ वस्त्र। १४ चकोर। १५ हंस। १६ भावना से। १७ दोनों। १८ कामदेव। १९ से ३६ तक अप्सराओं के नाम हैं। ३७ पाश। ३८ क्षोभ, उथल-पुथल। ३९ पाँच सो। ४० यौवन। ४१ अतिथि। ४२ प्रपंच, षड्यंत्र।

हम मोहित होवहि इनही हेर, ऐसौ तप अंतर कहा अँधेर।
इन तै हम सुंदर करहि आँन,[1] नर नारायन समझे निदाँन ॥११८
थित जंघदेस[2] पै हनी थाप,[3] पुन प्रगट भई ताही प्रताप।
अछ्छरी[4] प्रथम आई इतीक, जंघ तै भई ऊतपत[5] जितीक ॥११९
श्रीनारायन परताप सोय,[6] कर सकै न समता अवर[7] कोय।
ऊरबसी[8] नार ता में अनूप, रचना गुन भूधन[9] रग रूप ॥१२०
सेवार्थ और सब सुँदरोय, षोड़स सहस्र सतपंच कोय।
श्रीनारायन परसंस[10] साथ, हाजर[11] हजूर[12] पुन जोर हाथ ॥१२१
बोले नारायन बिमल बाँन,[13] नूतन नारन[14] कौं तव निदाँन।
बरदाँन लहहु सो कहहु बात, सब जावहु तुम ऊर्वसी साथ ॥१२२
ईंद्र कौं रमावहु जुत अनंग,[15] सुख पाय रहहु तुम जिहीं संग।
नारायन सेती कह्यौ नार, आँनन सौं सुन कै समाचार ॥१२३
तुमकौं हम कैसै जाय त्याग, रमनी न राजपद साँनुराग[16]।
ऊरबसी जाय सुर-लोक ओर, जाचत हम तुम कौं हाथ जोर ॥१२४
सोड़स हजार हम चहै संग, पाँचसत[17] इधक[18] समुझहु प्रसंग।
पति होय भजहु हम सहित प्यार, इह त्याग करहु जन[19] अनाचार ॥१२५
पुरष सौं चहै रति-सीहत पेम,[20] नारी कौं त्यागन नही नेम[21]।
नय-परपाटी[22] देखहु निहार, आद सौं अंतु प्रबृत[23] अधार ॥१२६
वस रहहु सुरालय[24] विपन बास, पर रहिहै हम तौ तुमहि पास।
अछ्छरी[25] सुधारस[26] सत अमोल, बिनती-जुत बोली मधुर बोल ॥१२७
सोई अंतरजाँमी सुने आँन, प्रीत की रीत हीय की पिछाँन।
नारायन समुझे ऊर निदाँन, इह अहंकार बाढ्यौ अज्ञाँन ॥१२८
संसार-वृक्ष कौ मूल सोय, कल[27] अहंकार बिन नहिन कोय।
तरू-धर्म[28] काटबे काज तेम, जाकौं वृक्षादन[29] गनहु जेम ॥१२९
ऊतपत्त करी नारन अनेक, इह अहंकार ही काँम येक।
हमही सौं चाहत रति-हुलास, बनहै पुन कैसै सुख-बिलास ॥१३०

---

१ आय। २ जाँघ। ३ थप्पड़। ४ अप्सराएँ। ५ उत्पन्न। ६ प्रताप। ७ और। ८ उर्वशी। ९ शरीर। १० प्रशंसा। ११ उपस्थित। १२ सेवा में। १३ वाणी। १४ नारियों। १५ कामदेव। १६ से अनुराग। १७ पाँच सौ। १८ अधिक। १९ नहीं। २० प्रेम। २१ नियम। २२ नीति की परम्परा। २३ वार्ता। २४ देवपुरी। २५ अप्सरा। २६ अमृत। २७ कलि = संसार। २८ धर्म रूपी वृक्ष। २९ कुल्हाड़ा।

निज आँननतैं तंतव निकाल, जंतव फिर बाँधत जेम जाल।
आपहि बिच बंधत जेम आँन, नहि निकसन कौं सूझत निदाँन ॥१३१
हम कुसुम कीट के होय हाल, जाँन कै आप सौं फसे जाल।
इह अहंकार फल भयौ येम जापै फिर करहै क्रोव जेम ॥१३२
कर क्रोध छाँड़ जावहि कहूँक, आप कौं देहगी त्याग सूक।
अब अहंकार फल लहे एम, जाहि पै क्रोध फल मिलहि जेम ॥१३३
काँम अरू लोभ फिर वढहि क्रूर, धर्म औ कर्म सब मिलहि धूर[1]।
धाँनुख[2] पुन ह्वैहै त्याग धीर, पर नरक-मध्य तन सहहि पीर[3] ॥१३४
नर बोले नारायन निहार, अब तौ तुम जीतहु अहंकार।
सुर-अब्द[4] सहँस[5] तप कीयौ सोय बस क्रोध प्रथम बैठे बिगोय[6] ॥१३५
प्रहलाद लरे जब क्रोध पाय, बहुरैं बाढहिगी वँह बलाय।
अहंकार जीत कै ह्वै अभीत[7], बिचरहु नारायन दंभ बीत ॥१३६

कवित्त

नर नारायन निकट बारता कही सु बीती।
जनमेजय नृप जाहि प्रस्न[8] कीय लाय प्रतीती ॥
प्रथम जुद्ध प्रहलाद भयौ सो कैसैं भाखहु।
व्यास देव मति बिमल रंज जन हीय में राखहु ॥
चित सांत ऊभय[9] पंडित चतुर भये क्रोधबस सोऊ भलैं।
निक्रमन धर्म पाँवर[10] नरन चित बिचार कैसैं चलैं ॥१३७

छंद मौतीदाम

कही नृप व्यास सुनी सोई काँन, बखाँनन लागेऊ ज्ञाँन बिधाँन।
भलैं कहु कारिज[11] कारन[12] भेद, निहारहु भाव लहै निरबेद ॥१३८
कहै कोऊ कंकन कंचन केर, बिलाय[13] न कंचन[14] ता कहु बेर।
बिचारहु या बिध[15] सौं बृहमंड,[16] मंडी अहंकारहू सौं ईह मंड ॥१३९

---

१ धूलि = मिट्टी। २ हिंसक। ३ पीड़ा। ४ देवताओं के वर्ष। ५ सहस्र। ६ खोकर। ७ निर्भय। ८ प्रश्न। ९ दोनों। १० नीच। ११ कार्य। १२ कारण। १३ नष्ट। १४ सोना। १५ तरह। १६ ब्रह्मांड।

अजा[1] गुन[2] तीन जुतै अहंकार, स्वयंभू आदक येह संसार।
वसष्टहु नारद आद बिसेख, अहंकृत-वीत[3] न जाँनहु येक ॥१४०
जिते जग संचर[4]-धारक जीव, सबै बस[5] काँम रू क्रोध सदीव।
ज्युंही फिर लोभ रू मोह जँजाल, बढै मद मछ्छर[6] होय बिहाल ॥१४१
सँपेखहु मोह बिना कोऊ संत, महाँ मद मछ्छर[7] हीन महंत।
सुनौ प्रहलाद-कथा कहुं सोय, जथा इतीहास बिचारहु जोय ॥१४२
तबै नरसंघ भयौ अवतार, सँडे रन हाटक-कस्यपं मार।
सिंघासन राज दीयौ निज संत, अखी प्रहलाद उधार अनंत ॥१४३
सँडे अधलोकही राज मुकाँम, करयौ मन-बंचत पूरन काम।
बसै ढ्रज भक्त निरंतर बास, हरी-पद ध्यावत जुक्त हुलास ॥१४४
जबै कथ येक भई बिधजोग,[8] बिसंभर[9] आश्रत[10] जोग-बिजोग।
भृगू-सुत चिम्मन[11] हू मुनि भेस, अराधन तीर्थ गयौ ऊपदेस ॥१४५
गये तट तीरथ पूरब गंग, अराध कै लागेऊ मंजन अंग।
धसे जब मेकलजा[12] बिच-धार, बिलेसय[13] बंध परे तिह बार ॥१४६
लपट्टीय देह कपट्टीय[14] लाग, महाँद्रह अद्ध लपट्टीय माग।
पताल कौं ब्याल लह्यौ जिह पंथ, करे मुनि याद जबै श्रीयकंथ[15] ॥१४७
रसातल बीच गये मुनिराज, बिना बिष संचर[16] ह्वै निरब्याज।
भई प्रहलादहु सौं मुनि भेट, मिले सुख पाय कै संसय मेट ॥१४८
कह्यौ मुनि आगम-भौ[17] किह काँम, मिले अधलोक[18] कै आय मुकाँम।
कही मुनिराज भई जिम कथ्थ, तहाँ प्रहलाद बिचारीय तथ्थ[19] ॥१४९
मिले हरीभक्त लह्यौ मन मोद, बढ्यौ ऊर आय ऊदंत[20] बिनोद।
महाँतम[21] तीरथ पूछ्छ मुनिंद्र, दया रस सांत जबै दनुजिंद्र[22] ॥१५०
सुके प्रहलाद के बायक[23] स्राँन,[24] दयौ प्रति ऊत्तर संत निदाँन।
सदाँ मन बाँनीय[25] संचर सुद्ध,[26] पिछाँनहु पैंड़[27] ही पैंड़ प्रसिद्ध ॥१५१
लहै नित तीरथ कौ सोई लम्भ,[28] सदाँ होय ग्याँन पिछानहु सम्भ[29]।
वसै तट गंग मलेछ[30] हु बास, दिपै खस हूँन[31] अभीरहु दास ॥१५२

१ माया, प्रकृति। २ गुण। ३ अहंकार-रहित। ४ शरीर। ५ वश। ६ मत्सर। ७ सदैव। ८ दैवयोग से। ९ विश्वम्भर - परब्रह्मा। १० आश्रित। ११ च्यवन। १२ नर्म्मदा। १३ सर्प। १४ कपटी। १५ विष्णु भगवान्। १६ शरीर। १७ आगमन हुआ। १८ पाताल। १९ तथ्य। २० वार्ता। २१ माहात्म्य। २२ प्रह्लाद। २३ वाक्य। २४ कान। २५ वाणी। २६ शुद्ध। २७ पग। २८ लाभ। २९ पण्डित। ३० म्लेच्छ। ३१ हूण।

नहावत लावत पीवत नीर, सुधातम[1] नाँहिन होत सरीर।
सुधातम लाभ लहै मन सुद्ध, इही थित-तीरथ जाँनहु ऊद्ध ॥१५३
तथा भुव[2] मंडल तीरथ तौन, जथारथ होहु कृतारथ जौंन।
सबै जग तीरथ को सिरताज, रसा-मध[3] ऊत्तम पुस्कर-राज[4] ॥१५४
ज्यूँही निमखारन[5] तीरथ जाँन, सबै अघ नासन जास सिनान[6]।
ऊजागर तीरथ है इह आद, बिनासन अक्रम[7] और विषाद ॥१५५
सुनी मुनि भासन तीर्थ सराह,[8] रसातल ऊद्ध लई धर[9] राह।
पहूँचीय आय जबै प्रहलाद, इहाँ निमखारन तीरथ आद ॥१५६
जहाँ बिध पूर्बक पुज्जीय जान, गह्यौ सुख साँत अपूरब[10] गात।
सरस्वती तीरथ कीन सिनान, गये प्रहलाद सु पूरन ज्ञाँन ॥१५७
अराधकै ब्रह्मसुता[11] पुन अग्ग, महाँ गिर ऊद्ध लखो तिह मग्ग।
हिमाँचल बद्रीयनाथ के हेत, सबै दनुजातन सथ्थ समेत ॥१५८
जहाँ हरी सूरत पूज्जीय जाय, ऊपज्जीय मोद अनंद-अघाय।
लखे बहु-पात[12] करालक[13] नैन, अनूपम दाँन[14] धरे बिच ऐन[15] ॥१५९
भये तिह देख अचंभत[16] भाव, इहै इखू[17] राखत कोन ऊपाव।
कहा मुनि आश्रम आयुध काँम, बिलोकत बाढत चित्त बिराँम ॥१६०
बिधोबिध[18] सोचत औ बतरात, नरायन[19] आय गये नर साथ।
बिलोकीय सीस जटा मुनि बेस, असंभव बाढेऊ हीय अँदेस[20] ॥१६१
बसे बन त्यागीय वेस बनाय, रखे इखु अक्षय दंभ रचाय।
बिलोकत धर्म बिरोधीय बात, इनंतस[21] देख हीयै अकुलात ॥१६२
प्रकासीय येह कथा प्रहलाद, बढ्यो उर आयकै घोर विषाद।
नारायन बोलेऊ ताहि निहार, संबोधन भासन में कहा सार ॥१६३
करै चित[22] नीक[23] लगै सोई काज बिचारहु कोन इहै हम ब्याज[24]।
जनावत आप हमै कछु जोर, चले तुम जावहु आश्रम छोर[25] ॥१६४
चहै हित जीव इहै चित-चाह, रहै बिच धर्म चलावत राह।
अधर्पन[26] देखकै दंड ऊपाय, करै हठ लाग सदा बल काय ॥१६५

१ शुद्धात्मा। २ भूमि। ३ पृथ्वी के मध्य। ४ पुष्करराज। ५ नैमिषारण्य। ६ स्नान। ७ दुष्कर्म। ८ सराहना। ९ तीर्थ यात्रा। १० अपूर्व। ११ सरस्वती। १२ वटवृक्ष। १४ बाण। १५ स्थान = अयन। १६ आश्चर्य, चकित। १७ बाण। १८ अनेक प्रकार से। १९ नारायण। २० सुरक्षित। २१ धूर्तता। २२ चित्त, मन। २३ अच्छा। २४ कपट। २५ छोड़कर। २६ अधर्मियों।

भये बच[1] केतक संकुल[2] भाव, चढे रस बीर बढ्यौ रन[3] चाव।
इतै प्रहलाद ऊठ्यौ अनखाय, बिचारकै येह कही जब बात ॥१६६
इतै प्रहलाद बली असुरेस,[4] भिरे नर आय भयाँनक भेस।
हटै नहि पाँव जुटै हमगीर,[5] भई दहु ओर कलंबन[6] भीर ॥१६७
अनेकन होन लगे ऊतपात, परै मनु पब्बय[7] बिद्दुत[8] पात।
मँड़े धमचक्क मिटे जग माँम, धरा अकबक्क पतालन धाँम ॥१६८
बढ़ी त्रहु[9] लोकन में इह बात, सुरासुर मानव लौ इक साथ।
कही तब नारदहू इह कथ्थ, परेखहु जुद्ध मुनी परबत्त[10] ॥१६९
भयौ मधु कैटभ जुद्ध भयाँन, मँडै रन ब्रत्त[11] तथा मघवाँन[12]।
जुरे प्रहलाद ज्युहीं नर जेम, बढै रन बाँन ज्युहीं पटबेम ॥१७०
पराक्रम येह लखौ प्रहलाद, बढै हरी अंस के तुल्य बिवाद।
जुरे स्वर[13] देखन कौं सोई जुद्ध, अलोकिक देख पराक्रम ऊद्ध ॥१७१
मँडै झर फूलन अंबर[14] मग्ग, इतै झर[15] बाँनन होत ऊदग्ग।
रचै रव[16] गंध्रुव सिंधव राग, इतै बिसफार अवाज अथाग ॥१७२
बिवाँनन[17] अच्छर[18] गाँन बिसेख, इतै सननंकत बाँन[19] असेख।
नृभै[20] नर अक्षय बाँन निखंग,[21] भये प्रहलाद किते धनु भंग ॥१७३
इतै नर जोग-बली अप्रमाँन,[22] ऊतै दनुविद्रहू[23] बाहूअजाँन[24]।
पहै नही दोऊन कौ बल पार, रूपे बिव[25] ओर बरोबर रार ॥१७४
इतै नर धोर सुतै हरी-अंस,[26] पतीदनु भक्त हरी परसंस[27]।
चढै इक येकहु सौं बिवछेद[28] भलै बिध लच्छत[29] दीपत[30] भेद ॥१७५
झुकै सर दिग्ध सौं दिग्धन झेल मुकै[31] कहु तहल-तहल मेल।
छुरप्रन हूँतै छुरप्रन हेर, खिचै गुन तोरन-तोरन खेंद ॥१७६
महाँ क्रतहस्त[32] हीयै मगरूर, चलावत बाँन करै चकचूर।
करै चख[33] लाल जुरै अत कुप्त,[34] समा मनु[35] आय गयौ समसुप्त[36] ॥१७७

---

१ वचनों के। २ परिपूर्ण। ३ रण। ४ दैत्यराज। ५ अग्रणी। ६ वाण। ७ पर्वत। ८ विजली। ९ तीनों। १० पर्वत। ११ वत्रासुर। १२ इन्द्र। १३ देवता। १४ आकाश। १५ भड़ी। १६ शब्द। १७ विघवों में। १८ वाण। २० निर्भय। २१ तर्कश। २२ अप्रमाण = अपरिमित। २३ प्रह्लाद। २४ आजानुवाहु। २५ दोनों। २६ विष्णु भगवान का अंश। २७ प्रशंसित। २८ प्रहार करने में। २९ निशाना लगाते। ३० शीघ्रता से भेद करते। ३१ छोड़ते थे। ३२ हस्त कौशल युक्त। ३३ आंख। ३४ क्रोधित। ३५ समय। ३६ प्रलय।

बढ़ी अत चित असंभव बात, हरी[1] चक्र संख गदा लीय हाथ।
प्रभू प्रहलाद के आयकै पास, बिलोकीय अष्ट-अमी[2] बिसवास[3] ॥१७८
बली दनु बिग्रहु बुद्ध बिसाल, कीयौ अभिबंदन बिस्नु क्रपाल।
करी हरि सौं बिनती कर जोर, मिट्यौ किह रीत पराक्रम मोर ॥१७९
जये सत-बच्छ्छर[4] देव जितेक, इहाँ भिर जुद्ध करै नर येक।
समापत ह्वैगये अब्द[5] सहंस, तपस्वन बीर लखे अवतंस ॥१८०
हटै नहीं वाज लाँ मानत हार, कहौ गत कान[6] भई करतार।
जनार्दन कथ्थ-कही जन[7] जाँन, अहो प्रहलाद बली अप्रमाँन ॥१८१
करचौ जुध-तुल्य[8] बढी करतूत, असंभव बात इहै अदभूत[9]।
इहै मम-अंस सरूप[10] अनाद, पराक्रम ऊद्ध लखौ प्रहलाद ॥१८२
सुनी प्रहलाद इहै कथ आँन[11], ऊदै निरबेद हिदै भय आँन।
गयौ प्रहलाद तबै निज ग्रेह, अहंक्रत[12] निंदत भाव अछेह ॥१८३
नारायन फेर गह्यौ नर-नेम, अराधन जोग लगे रिख[13] येम।
पतीदनु संत महा परबीन[14], लखी अहंकार ऊतै फल लीन ॥१८४
सुनौ इह राजन कथ्थ सयाँन, विना अहंकार न तंत व बाँन।
सतोगुन और रजोगुण संग, अहंक्रत[15] जाँनत मो गुन अंग ॥१८५
लगे सोई आयकै जीव की लार[16], ऊदै जग येह करै अहंकार।
कीयौ अहंकार ही के इह काज, तिही मुनिराज करै किम त्याज[17] १८६
मुनी भृगु श्रापत देव मुरार, अनेकन आप लेय अवतार।
बिवस्वत जास मुनंतर[18] बेर, हकीकत[19] आँन[20] सुनौ हीय-हेर ॥१८७
बने बपु कच्छ्छ रु मच्छ्छ बिसेस, धरै ऊर दाँनव जात सौं द्वेस।
सुनी जनमेजय ब्यास सौं आंन, असंभव संक[21] हीये अनुमाँन ॥१८८
जनार्दन[22] स्यापक[23] बिप्रन[24] जोन कहौ अपराध कीयौ मुनि कोन।
बिचारकै ब्यास कही इह बात, भयौ नृप भू हिरनाँख[25] को भ्रात ॥१८९

१ विष्णु भगवान। २ अमृतदृष्टि। ३ विश्वास। ४ सौ वर्ष। ५ वर्ष। ६ कौनसी = क्या।
७ भक्त। ८ बराबरी का युद्ध। ९ अद्‌भुत। १० स्वरूप। ११ कान। १२ अहंकार।
१३ ऋषि। १४ प्रवीण। १५ अहंकारयुक्त व्यक्ति। १६ पीछे। १७ त्याग।
१८ मनवन्तर। १९ वास्तविक घटना या बात। २० कानों। २१ शंका। २२ विष्णु।
२३ शापदाता। २४ ब्राह्मणों। २५ हरिण्याक्ष।

अनेकन जाहि करे ऊतपात, सुधाभुक[1] बिप्रन हू मुनिनाथ।
मुनी द्वज[2] देवन काज मुरार, इतै नरसिंघ[3] भयौ अवतार ॥१६०
प्रहारीय हाटक कस्यप[4] प्राँन, दीयौ प्रहलाद कौ राज निदाँन।
जिही प्रहलाद गह्यौ बल जोर, मँहे रन बासव[5] मुच्छ-मरोर[6] ॥१६१
भयौ सत बच्छर[7] जुद्ध भवाँन[8], मिली जय संगर में मघवाँन[9]।
पराजय देवन लै प्रहलाद, बढी ऊर अंतर आय विषाद ॥१६२
तज्यौ पद-राज बली कह तत्र, प्रभूपन[10] दीनेऊ आप पऊत्र[11]।
गही तब आश्रम बद्रीय गैल, सोऊ तप हेत ऊतंग ही सैल ॥१६३
बली प्रथमी-पत[12] होय बलिष्ट तिबिष्टप-बासिन सौं रन तिष्ट।
सिहायक[13] पाय हरी सुरगीय, दले दनुजात[14] पराजय दीय ॥१६४
दिती-सुत दंत गरू[15] अरदास[16], भये सरनागत[17] बेदना-भास।
अभै पद[18] दीन मघाभव एम, जितौ दनुबिद्र भरोस ही जेम ॥१६५
सदेसन-हारक[19] सौं सुन आँन, महा ऊर सोच गयौ मघवाँन।
बिचारीय इंद्र सलाह की बात, निरंतर बिस्नु अनाथ के नाथ ॥१६६
जुहार कै कथ्थ कही कर-जोर, ऊपद्रव बाढहिगौ द्रढ और।
गये भृगु-सिख्ख सबै भृगु ग्रेह, अभै पद दीन सुनी हम येह ॥१६७
सबै स्वर्गीयन सथ्थ समेत, हरी कीय संम्मत[20] संगर हेत।
लगे दनुजादन के कुल लार[21], प्रहारीय[22] ठौर ही ठौर प्रचार ॥१६८
भगे दनु फेर किते भयभीत, परे कुज पावन[23] प्राँनन प्रीत।
जबै दनुजात घट्यौ लख जोर, चले सुर संगर की तथ[24] छोर ॥१६९
कही भृगु-सिख्खन सौं कुज कथ्थ, सिहायक देवन बिस्नु समथ्थ[25]।
हमे हरनाक्ष कौं होय बराह, ऊधारीय प्रथीय सिंधु अथाह ॥२००
सदा हरी देवन[26] काज सहाय, करै नही जत्न कहूँ किह काय।
नही हम मंत्रन सक्ति निदाँन, बचाव[27] कौं बिस्नु के अग्र विधाँन ॥२०१
समै[28] लख बैरिन सौं कर संध, बचाव के कारन बाँधहि बंध।
विचारहि मंत्र कछू हम बेस, मिलायकै जायकै पास महेस ॥२०२

---

१ देवता। २ ब्राह्मण। ३ नृसिंह। ४ हरिण्यकसिप। ५ इन्द्र। ६ मूछें मरोड़कर। ७ वर्ष। ८ भयानक। ९ इन्द्र। १० राज्यपद। ११ पौत्र=नाती। १२ राजा, भूमिपति। १३ सहायक। १४ दैत्य। १५ शुक्राचार्य। १६ विनती। १७ शरणागत। १८ अभयपद। १९ दूत। २० मंत्रणा। २१ पीछे। २२ मारा, बध किया। २३ पैरों, चरणों। २४ पृथ्वी। २५ समर्थ। २६ विष्णु। २७ रक्षा। २८ समय, अवसर।

मिले रहौ देवन सौं तुम मित्त[1], तितै लहि आवहिगे हम तत्त।
कहे इह सुक गये कयलास[2], बिचारन कारन मंत्र बिसास ॥२०३
सबै प्रहलादिक दाँनव संग, प्रकासीय[3] देवन सौं परसंग।
करौ सुर देव ज्युहीं तप कर्म, धरै हम सब्ब गहै तुम धर्म ॥२०४
कही प्रहलादक आदन कथ्थ[4], सही सोई माँनीय देवन सथ्थ।
लगे स्वय[5] कारज में स्वर[6] लेख, बिश्रंभ[7] कौं पाय कै राह बिसेख ॥२०५
दईतन[8] सथ्थहु पूर्बक दंभ, सबै तप साधन कीन समुंभ[9]।
सबै सरनागत जाँन सहेत, दयौ ऊपदेस ज्यूही गरू देत ॥२०६

दोहा

सुक्र[10] गये कयलास कौं, मिले जाय गाहेस[11]।
आगम पूछौ सिभु अरू, मतलब कह्यो मुनेस ॥२०७
सुराचार्य[12] तै इधक[13] सोई, मंत्र बतावहु मोहि।
मम सिख्खन[14] कौं जय मिलै हृथ देवन जय होय ॥२०८
सोचे मन में सिभु सुन, कथ्थ मघाभव केर।
मंत्र दीयै दनु जय मिलहि, जिग्यभुक्त ह्वै जेर[15] ॥२०९
सरनागत[16] हू सलाह कौं, जो कछू पूछै जाब।
वाकौं हित कैबौ[17] ऊचत, है परीआय[18] हिसाब ॥२१०

छंद भुजंग प्रीयात

बिचारैं कही सिभु कैलासबासी, अहो सुक्र मेटौ हीयै को ऊदासी।
करै तै तपस्या सरै[19] सर्व काजा, सुपर्वा-गरू[20] स्याहि[21] राखै समाजा ॥२११
बतावै तपस्या अनूपं बिधाँनं, परं बच्छरं लौं करौ धूम्र पाँनं।
सतं बच्छरं होयगी पूर्न संख्या, अखो सिद्ध मंत्रं मिलैगे असंख्या ॥२१२
हमी दहगें औंर कौं काँम हैना[22], इही हाथ दैना जिहो हाथ लहैना।
सुनी सुक्र नै सिभु की बात सारी, पीयै धूँमृ[23] आगं तपस्या प्रचारी ॥२१३

१ मित्र। २ कैलाश। ३ प्रकट की। ४ कथा = बात। ५ अपने। ६ देवता। ७ विश्वास। ८ दैत्य। ९ अंगीकृत। १० शुक्राचार्य। ११ महादेव। १२ बृहस्पति। १३ अधिक। १४ शिष्यों। १५ नीचा-दिखाना, पराजित करना। १६ शरणागत। १७ कहना। १८ परम्परा। १९ पूर्ण हो। २० बृहस्पति। २१ सहायता। २२ नहीं है। २३ धुंवा।

सुपर्वं[1] सुनी सुक्र की बात सोई, हीयै द्वेष बाढ्यौ महाँ क्रुद्ध[2] होई।
धरै अस्त्र-सस्त्रं सबै ऊठ धाये, अदेवं[3] छली जाँनकै रूठ[4] आये ॥२१४
अदेवं जबै कथ्थ ऐसी ऊचारी हथं[5] कीजीयै ना तपस्या हमारी।
हनो देख कैसै हमै सस्त्र-हीनं, प्रपाटो[6] कहूँ नीत लेखो प्रबीनं ॥२१५
जथा बोल ऊठे सुपर्वं जहाँ ही, कथा सुक्र[7] कैलास साँची कहाँ ही।
सुनी पूर्वदेवं[8] जहाँ बात सारी, चले भाजकै व्याज[9] छंड्यौ बिचारी ॥२१६
सुपर्वं लगे पीठकौं दौर सारै, मिलै आसुरं जाहि कौं चाहि मारै।
चले सुक्र की मात की सर्न[10] चाही, सुरं-आसुरं बैर बाप्यौ[11] सबाँहीं ॥२१७
कही सुक्र की माय सौं स्याहि[12]कीजै छतै[13]रावरे आसुरं बंस छीजै[14]।
धरै सस्त्र-अस्त्रं सबै देव धावै, दलै दाँनवी जात कौं बैर-दावै[15] ॥२१८
सुनी सुक्र की मातनै बात सोऊ, कह्यौ दाँनवी जात त्रासौ[16] न कोऊ।
भली-भाँत कै दीन बिस्रंभ[17] भारी, सबै वेदना छेद ड़ारी सुरारी[18] ॥२१९
निपाई जबै सुक्र की मात निद्रा, सुपबँ मिटे चेत आदं सुरंद्रा[19]।
गही बिस्नु की चर्न[20] की सर्न ज्ञाता, महाँनीद बिक्तं करी सुक्र नात ॥२२०
सुनी बिस्नु नै जिस्नु की बात सारी, महा मंत्र कौ जत्न कीनौ मुरारी[21]।
हितू जाँन कै सर्न आये हमारै, सुपर्वा करौ देह परवेस[22] सारै ॥२२१
सुपर्वं भली-भाँत बिस्नु सरीरं, धरी पीर मेटं सुनासीर धीरं।
जहाँ सुक्र की मात ने बात जाँनी, परी दौरकै भक्षनं चक्रपाँनी[23] ॥२२२
लखी आवती सुक्र की मात की लेखा, बढ्यौ सोक बिस्नु पुकारे विसेखा।
हरी कष्ट में स्याहि[24] कीजे हमारी, मुरारी[25] मुरारी मुरारी मुरारी ॥२२३
कीयौ चक्र कौं याद लै मुज्जकेसी, कट्यौ ताहि सौं सीस दुष्टा कलेसी।
भृगूनार कौं मारकै मेट भीती[26], प्रकासो सबै देव बिस्नु प्रतीती ॥२२४
भृगू बात ऐसी भाँमनी[27] की, हीयै क्रुद्ध ह्वै ओर चाले हरी की।
द्रगं देखतै ही मुनी श्राप दीनौ, लगी ब्रंह्म-हथ्या[28] महाँ पाप लीनौ ॥२२५

---

१ देवता। २ क्रोधित। ३ दैत्य। ४ रुष्ट। ५ मारो। ६ परंपरा। ७ शुक्राचार्य। ८ दैत्य। ९ कपट। १० शरण। ११ व्यापगया। १२ सहायता। १३ जीवित-रहते। १४ नष्ट हो रहा है। १५ बैर-भाव। १६ भयभीत न हो। १७ विश्वास। १८ दैत्य। १९ इन्द्र। २० चरण। २१ विष्णु। २२ प्रवेश। २३ विष्णु। २४ सहायता। २५ विष्णु। २६ भय। २७ स्त्री, भार्या। २८ ब्रह्महत्या।

तज्यौ सातुकी[1] धर्म मारी श्रीया कौं, हरी ज्ञान कैसे न आयौ हीया कौं।
बसू[2] जन्म लेहो सही बार-बारं, सदा गर्भ कौ दुःख पैहो संसार ॥२२६
हरी कौं भृगू श्राप दीनौ जँही तै, कमो धर्म की ह्वै जमी पै तहो तै।
लखै तै सदा बिस्नु औतार[3] लेवै, भली-रीत जाँनौ पुनि श्राप भेवै ॥२२७
भृगू श्राप दैकै चले आप भानं[4], मरी देख स्त्री सोक बाढ्यौ महाँनं।
जिते पुंन्य[5] के काज कीने जहाँ ही, त्रीया[6] हेत संकल्प दीने तहाँ ही ॥२२८
मुनी भारजा जीव ऊठी मिलाई, प्रमीला[7] मनौ नैन छूटी पलाई[8]।
भृगू कौं इहो काँम कै देख भारी, अँदेसौ[9] परयौ आयकै आसुरारी[10] ॥२२९
पिता सुक्र की मात क्रामात[11]पेखी,द्रुतं[12] आय है ताहि कौ पुत्र द्वेषी।
कहा हाल गिर्बाँन[13] जाती करैंगे, इहै दुःख सौं कोन तै ऊद्धरैंगे ॥२३०
सुनासीर[14] ऐसी सुनी बात साची, जयंती-सुता[15] इंद्र की इंद्र जाची।
अहो अंगजा सुर्ग मेटौ असाता, गहौ सुक्र[16] की सेव कौं जाय ज्ञाता ॥२३१
जबै सुक्र की आगन्या लै जयंती, चली सुक्र कै पास ह्वैकै नचिंती[17]।
मुनी जाय देखी तपस्याँ महाँनं, पीयै नासका[18] आँननं[19] धुमृपानं ॥२३२
करं पत्र[20] लीनौ हरी तत्र केली, करै सुक्र कौं पौंन[21] ऊभी अकेली।
महाँ मिष्ट लावै फलं कंद-मूलं, त्रनातल्प[22] राचै इला[23] तुल्य तूलं[24] ॥२३३
मुनी आश्रमं सुछ्छ[25] रखै मही कौं,जिही रीत सौं सुःख ह्वै देख जी कौं।
करै भावना-भाव सौं काँमना कौं इकै सेव रूपी लीयै आमना कौं ॥२३४
सतं[26] बर्ष बीते जबै सुक्र सारे, पती पार्वती अष्टमूर्ती[27] पधारे।
द्रढं देखकै सुक्र बरदाँन दीनौ, पदार्थ जिते-जक्त[28] जांनौ प्रबानौ ॥२३५
रहैंगे बसीभूत[29] तेरी रजा[30] में, परंपुज्ज ह्वै ईस हू की प्रजा में।
दये सुक्र बाचा गये सिभु दांनी, जयंतो कँहू सुक्र पूछौ जबाँनी ॥२३६
कहा चाहती हो कहौ तोहि काँमं भली-भाँत सेवा करी मोहि भाँमं।
जबै चित्त बृतंत भख्यौ जयंती सुनासीर कौ हेत जामैं सिद्धती ॥२३७
सुनं सुक्र बोले जयंती सभागी, सही काँम की काँमना सानुरागी।
कछू काल तोसौं बिहारं करैंगे, होयै काँम-की-काँमना[31] कौं हरैंगे ॥२३८

---

१ सात्विक २ पृथ्वी। ३ अवतार। ४ भवन, घर। ५ पुण्य। ६ स्त्री, भार्या। ७ निद्रा। ८ भागकर। ९ शंका। १० देवताओं ११ करामात, चमत्कार। १२ शीघ्र। १३ देवता। १४ इन्द्र। १५ पुत्री। १६ शुक्राचार्य। १७ निश्चित। १८ नाक। १९ मुख। २० पत्ता। २१ पवन, हवा। २२ सेज। २३ पृथ्वी। २४ रुई। २५ स्वच्छ। २६ सौ। २७ महादेव। २८ जगत। २९ वशीभूत। ३० आज्ञा। ३१ कामवासना।

गहो मन ज्ञान लहै गीत गूढ, मनाँ[1] पिछतावहुगे मति मूढ ।
गरू[2] तुम है हम सुक्र गभीर, सदा दिती-पूतन काज सधीर ॥२६३
लखे इक रूप ऊभै[3] चितलाय भये दितीपूत अचंभत[4] भाय ।
गरू तब खोलीय गूढ गिराह[5], अमोलीय बोलीय सौं अवगाह ॥२६४
अरे इह देवन कौ गरू आद, बढावत दैतन सौं नित बाद ।
सुनो हम जावन की कयलास[6], इहाँ फिर आवन की अभिलास ॥२६५
लग्यो सोई आवत मोपह लार[7], सिधंत कौ देखन को ततसार ।
तुमारेई अर्थ लीये हम तंत्र, महाँ केऊ ओसध[8] हू फिर मंत्र ॥२६६
तजो तुम देवन को भय तात, बिचारत ज्ञाँन ऊचारत बात ।
सुनी इह दाँनव ज्ञाँन सकोय, हमैं गरू येही जु होय तौं होय ॥२६७
न माँनीय सुक्र की बात निदाँन, सराप[9] कौं दै चले ऊठ सुथाँन[10] ।
पराजय देवन सौं तुम पाय, निरादर होवहुगे इह न्याय ॥२६८
जबै पहिचाँनहुगे कवि[11]जीव[12], कहै हम कथ्थ कही दनु क्लीव[13] ।
इहै कहु बात न माँनीय अग्ग[14],मघाभव[15]रूठ[16]गये निभ मग्ग ॥२६९
रहो थिर चित्रसिखंडज राह, अदेवन[17] ज्ञाँन गह्यो अवगाह ।
लगे स्वय कारज में लवलीन, अनूपम ज्ञाँन के जाँन अधीन ॥२७०
गये तब देवगुरू कर गाँन[18], प्रकासीय[19] आपन रूप प्रधाँन ।
जबै सुरराज[20] मिले गरु जाय, सबै कथ ज्ञाँन कही समुझाय ॥२७१
बिना भय जाँन कै दाँनव बृंद्र, इतै बल जोर चढ्यो जहाँ इंद्र ।
पहूँचीय देवन लाग प्रपात[21], घनी दनु जातन सौं बनी घात ॥२७२
जहाँ तहाँ ढूंढत मारत जाय, परे तब दाँनव हार पलाय[22] ।
जबै गरु-देवहु कौं लीय जाँन, भगे सोई भार्गव के गये थाँन ॥२७३
कह्यो प्रहलादन आदन कथ्थ, परी पहिचाँन हमै बृसपत्त ।
निरादर आप कीयो लख नैन, ऊपज्जीय आय कै एहु अचैन[23] ॥२७४
मंपेख कै सुक्र कह्यो कथ सार, लगे तुम धूरत[24] की सठ लार[25] ।
जहाँ बृसपत्त तहाँ तुम जाहु, संबोधन कारन लेहु सलाह ॥२७५

१ नहीं । २ गुरु । ३ दोनों । ४ आश्चर्य चकित । ५ वाणी । ६ कैलाश । ७ पीछे ।
८ औषध । ९ शाप । १० अपने स्थान । ११ शुक्र (कवि पुत्र) । १२ बृहस्पति । १३ कायर ।
१४ आगे । १५ शुक्राचार्य । १६ रुष्ट होकर । १७ दैत्य । १८ गमन । १९ प्रकट किया ।
२० इन्द्र । २१ किया । २२ भागकर । २३ बेचैनी । २४ धूर्त । २५ पीछे ।

जबै प्रहलाद कही कर जोर, अहो गरू[1] जानत और की और।
निहारकै रूप तथा तुम नाँम, गहे पद जाँन गरू गुन-ग्राँम[2] ॥२७६
पिछाँन न पाईय भूल पसाय, इहै हम चूक परयौ कछु आय।
क्षमापन[3] लायकै चाहिकै खेम[4], निभावहु आद मघाभव नेम ॥२७७
त्रकालग[5] जाँनत बीतीय तथ्थ[6], बनायकै और कहै कहा बत्त[7]।
बसै थिर होयकै बंस बचाय, पताल को जावहि राहि पलाय[8] ॥२७८
सुने प्रहलाद के सुक्र सवाल, बिसासकै किन्नेऊ चित्त बहाल[9]।
नही घबरावहु दाँनव-नाथ[10], बिचारहु एक कहै हम बात ॥२७९
हुवै सोई जो कछु होवनहार, सुभासुभ नाँहि बिचार कै सार।
मिटाय न सक्किहि[11] बिस्नु महेस[12], इतै पर कोन करै ऊपदेस ॥२८०
भये इह बेर कहू हथभाग[13], लरो जन देवन सौं हट-लाग[14]।
बसो अधलोक[15] लहो बिसराँम[16], समै लख जीतहुगे संगराम[17] ॥२८१
कीयौ पंचदून अहो जुग काज, रसा पर देवन ऊपर राज।
मुँनंतर साबरनीक महाँन, इहै सक्र आसन लेवहु आँन ॥२८२
बली बर दीनेऊ बाँवनदेव[18], भली बिध ताहि बिचारहु भेव।
मनू-नवमे[19] महँ बुद्ध महाँन, बली सुख देखहुगे बलवाँन ॥२८३
सबै विध नीत की रीत सलाह, जहाँ पहलाद करी कहि जाहि।
गही प्रहलादहु धीरज गात, बली सन येक भई नइ बात ॥२८४
बली निभ्र[20] पालट[21] रूप बिधाँन, चले कहु होयकै चक्रीय[22] बाँन।
मिले कहू सूंन्य[23] के सुथाँन के माँहि, पिछाँनकै[24] इंद्र कही परचाय ॥२८५
कही इह रूप कीयौ किह काज, बड़े हुय राचत हौ छल ब्याज[25]।
बली तहाँ बोल बिवेक बिचार, महाँप्रभू जाँनन नाँहि मुरार[26] ॥२८६
भये सोई मच्छ रू कच्छ के भेस, बराह के रूप कहूँक बिसेस।
जहाँ बिध[27] पाप लग्यौ कहु जौर, दुरे[28] तुम पंकजनालीय[29] गौर ॥२८७
बढ्यौ दोऊ ओर तै बात बिनोद, बिचारकै इंद्र गह्यौ हीय बोध।
गये दोऊ आपनै आपनै गृह, अहो परमाँतम[30] की गत येह ॥२८८

१ गुरू। २ गुण = निधान। ३ क्षमाभाव। ४ क्षेम। ५ त्रिकालज्ञ। ६ तथ्य। ७ वात। ८ भागकर। ९ स्वस्थ। १० प्रहलाद। ११ सकते। १२ महादेव। १३ भाग्यहीन। १४ हठ करके। १५ पाताल। १६ विश्राम। १७ संग्राम। १८ वामन भगवान। १९ सवर्णिक, मनवंतर। २० बदलकर। २१ अपने। २२ गधा। २३ शून्य = एकान्तघर। २४ पहिचानकर। २५ कपट। २६ विष्णु। २७ प्रकार। २८ छिपे रहे। २९ कमलनाल. ३० परमात्मा।

चले सग लैकै जयंती छलाये[1], लखै ठौर येकंत[2] आगार लाये।
जयंती बिहारं रच्यौ सुक्र जाई, रूची लायकै कांम-क्रीड़ा रचाई ॥२३६
लगी सुक्र की ठोक[3] पाताल–लोका, अभै[4] सिभु बरदांन दीनौ अदोखा।
ऊमाहे सबै सुक्र के द्वार आये परी ठोक नांही कहूँ दर्स[5] पाये ॥२४०
लगे सोचनै सर्ब पाताल–लोका, धरचौ चित्त की चाहि में आय धोखा।
जबै सक्र नै सुक्र[6] की बात जांनी, गरू[7] कौं कह्यौ काज-कीजं सुज्ञांनी ॥२४१
गरू सुक्र कौ रूप कीनौ सुज्ञाता, दिती-पुत्र[8] कौं जाय ह्वं दर्स[9] दाता।
सबै आयकै पाय लागे सुरारी, करी बर्नना[10] चाहिकै स्याहिकारी[11] ॥२४२
गरू सिख्ख[12]सथं कही कथ्थ ग्यांनी,नवीनी लई ईस[13]बिद्या-निधांनी।
करैंगे सुखी ताहि सौं सिद्ध काजा, सबै बोध दैकै सुरारी-समाजा ॥२४३
गरू की सुनी सिख्ख कै साथ गाढी, चह्यौ क्षेम नेमं रजा[14] लोस चाढी।
परंपुज[15] मांन्यौ गरू कौ प्रभावं,भृगू-सिस्य[16]जांन्यौ गरू-सुक्र[17]भाव ॥२४४

दोहा

श्रवन कथा जबही सुनी, गरू-इंद्र की गाथ।
जनमेजय पूछी जबही, बिहस ब्यास सौं बात ॥२४५
साख्र बेद स्रुति सुमृती[18], पढे जु सकल पुरांन[19]।
कपट बेख[20] तिह गरू कीयौ, ऐसे भये अग्यान[21] ॥२४६
अमर-गरू सुत अंगरा, पूरन कला प्रवीन।
कीनौ जिह ऐसौ कपट, निज तत कहहु नवीन ॥२४७
बांम देव वासष्ट वर, मुनी गरू बिसवामित्र[22]।
धर्म बिसय[23]में बचन ध्रुव[24], मानहिंगे किह मंत्र ॥२४८
जगत पिता बिध[25] जांनीयै, अग्न इंदु[26] अरू इंद्र।
परदारा[27] रति[28]जिनहु पुन चाहि करै छल-छंद्र[29] ॥२४९
हंसग और हर[30] हरी, धरी जथा ऊर ध्यांन।
ब्यास कथा बहु बिसतरो, परी न धरम पिछांन[32] ॥२५०

१ ठगेजाकर। २ एकान्त। ३ पता। ४ निर्भय। ५ दर्शन। ६ शुक्राचार्य। ७ बृहस्पति। ८ दैत्यों। ९ दर्शन। १० स्तुति। ११ सहायक। १२ शिष्य। १३ शिव। १४ आज्ञा। १५ परमपूज्य। १६ दैत्यगण। १७ गुरु शुक्राचार्य। १८ स्मृति। १९ पुराण। २० वेश। २१ मूर्ख, अज्ञानी। २२ विश्वामित्र। २३ विषय। २४ अटल। २५ ब्रह्मा। २६ चंद्रमा। २७ दूसरे की स्त्री। २८ प्रेम। २९ कपट-छल। ३० शिव। ३१ विष्णु। ३२ पहचान।

व्यास नृपत इह सत बचन, सरल कही समुझाय।
देह धरैं देखहु द्रगन[1], जानहु रागी जाहि ॥२५१
पुन ये सकल प्रबीन पन, पंडत परम-पुनीत।
ऊधरन[2] देत है ऐब[3] काँ, जग में पाव न जीत ॥२५२
कथा सुरगरू कहत हू, इक सुनीयै इह और।
त्रीया हरन कर ताहि सौं, चंद लेगयौ चोर ॥२५३
लघु भ्राता भ्रा नर्तकी, लई त्रीया ललचाय।
गृहन करी ताकौं गरू, इह कीनौ अंन्याय ॥२५४
जनमे जेते जगत मैं, मरहै सोऊ मुरझाय[4]।
वय[5] दीरघ[6] कोऊ अल्प[7] वय, लखहु भेद चितलाय ॥२५५
सबही रागी समुझीयैं, नही बिरागी नेम।
द्वेखी[8] सबही दुखन कैं, पुन सुख चाहत पेम ॥२५६
ऊर धारहु पद ईस्वरी, जग में जाकी जोत[9]।
ताको इछ्छा[10] तैं तिही, इह जग कीयौ ऊद्योत[11] ॥२५७

छंद मौतीदांम

सुने जनमेजय बायक[12] स्राँन,[13]गह्यौ ऊर सौंत तजी मन ग्लाँन।
वने गरू[14] चित्र सिखंडज बेस, दयौ कहा दैतन[15] कौं ऊपदेस ॥२५८
जबै सुन ब्यास दीयौ नृप जाब[16], सबै बस दाँनव कीन सताय।
बिते दस वर्ष बिहार बिधाँन, जयंतीय सुक्र तीया निझ[17] जाँन ॥२५९
कह्यौ हम जावहिगे हित काज, सँभारन कारन दैत समाज।
जयंतीय बोल ऊठी कर जोर, भलै तुम बेर सिधावहु भोर[18] ॥२६०
मघाभव[19] ऊठ चले जुत मोद, बिचारत दैतन बात-बिनोद।
सँपेखीय आयकैं दाँनव सथ्थ, बने सुक्र वेख लखे ब्रसपत्त ॥२६१
बदै[20] जहाँ ब्याज[21]सरूप बखाँन,गहै सब दाँनव केवली[22] ज्ञाँन।
कही जब दैतन सौं कवी[23] कथ्थ, बन्यौ मम रूप इहै ब्रसपत्त ॥२६२

१ आंखों। २ उदाहरण। ३ दोष। ४ जीर्ण होकर। ५ आयु। ६ दीर्घ, बड़ी। ७ थोड़ी। ८ द्वेषी। ९ ज्योति। १० इच्छा। ११ प्रकाशित। १२ वाक्य। १३ कान। १४ गुरु-बृहस्पति। १५ दैत्य। १६ उत्तर। १७ अपनो। १८ प्रभात। १९ शुक्राचार्य। २० कहते-थे। २१ कपट। २२ कैवल्य, मोक्ष। २३ शुक्राचार्य।

इहाँ प्रहलाद सत्रै असुराँन[1], कही जिम सुक्र की सत्य कहाँन[2]।
बनै जुध देवन सौं इहबार, हलै तऊ पावहिगे मिल हार ।२८९
बसै अधलोक[3] जहाँ कर बास, हृदै[4] बिसवास[5] कौं पाय हुलास।
नमूँचीय[6] आदक बोल निहार, रचै नही देवन सौं फिर रार ॥२९०
कहै सब बीरहु आदक लकोव[7], जबै सुख कोन लहै हम जीव[8]।
इहै कहि लै प्रहलाद कौं अग्ग[9], ऊठे दनु आयुध धार ऊदग्ग ॥२९१
बकारीय आसुर देवन बृंद, दसूँ दिस मार मचाईय दुंद[10]।
प्रपातहु[11] दाँनव की भरपूर, सँघारन लग्गीय देवन सूर ॥२९२
कुलाहल सद्द[12] भयौ चहुँ कोद. जहाँ तहाँ दाँनव जुट्टत[13] जोध।
पल्लट्टीय दीह ऊछ्छट्टीय पाव दुघट्टीय घट्टीय लट्टीय दाव ॥२९३
भयौ सत बच्छर[14] जुद्ध भयाँन, न-पुज्जीय[15] देवन घाव निदाँन।
हुई रन देवन की जब हार, पहूँचीय श्री जगतंब[16] पुकार ॥२९४
चढी अरुनानुज[17] आयकै चाल, निहार कै देवन कीन निहाल।
संबोधन दै बिसवास सिवाय, चलो फिर दाँनव के दल चाह ।२९५
तहाँ प्रहलाद लख्यौ जगतंब, दहू[18] कर जोर कह्यौ तज दंभ।
ऊभै[19] हम देव अदेवहु येक, बिचारहु रावरौ[20] भाव बिसेख ॥२९६
जबै जगतंब[21] कह्यौ तज जुद्ध, पताल कौं दाँनव[22] जाहु प्रबुद्ध[23]।
समौ[24] तुम आवहगौ ततसार, बिचारकौं पावहुगे तिह बार ॥२९७
इहै कथ बैंस्नबी[25] की सुन आद, पताल कौं जाय बस्यौ[26] प्रहलाद।
सबै दनुजात गये तिह सथ्थ, अभै[27] सब देव भये असमथ्थ[28] ॥२९८

कवित्त

जनमेजय नृप जहाँ, श्रवन प्रहलाद चरित सुन।
व्यास करी फिर बिनय, अहो कछु कथा कहहु अन[29]।
मुनी भृगू श्राप मुरार[30], भये अवतार किते भुव[31]।
सख्या तिनकी सुनन हृदै अभिलाख[32] अधिक हुव।

---

१ दैत्यगण। २ कथन, वात। ३ पाताल। ४ हृदय। ५ विश्वास। ६ दैत्य ७ कायर। ८ आत्मा। ९ आगे। १० द्वंद्व। ११ सेना। १२ शब्द १३ जुटते थे। १४ वर्ष १५ पूर्ण नहीं हुई। १६ जगदंबा। १७ गरुड़। १८ दोनों। १९ दौनों। २० आपका। २१ जगदंबा। २२ दैत्य। २३ बुद्धिमान। २४ समय। २५ वैष्णवी। २६ बस गये। २७ निर्भय। २८ असमर्थ। २९ अन्य। ३० विष्णु भगवान। ३१ भूमि, पृथ्वी। ३२ अभिलाषा।

कर कृपा व्यास लागेऊ कहन, सुनत सभासद श्रवन सब।
बिस्नु के भये अवतार बर, येते सुनीयें नृपत अब ॥२९९

मन्वंतर चाक्षक[1] महाँन, सुत धम भये सुन।
नर नारायन[2] नाम, महा तप तेज ऊभय मुन[3]।
सुत अत्री दत बिस्नु[4], मुनंतर[5] बैईबस्वत[6] मह।
इंदु बिरंचन अखल, उगृ[7] दुरवासा आपह।
अनसुया ऊदर सोइ ऊपजे, त्रहू देव जाँनहु तँहो।
अवतार सोइ गुनजुक्त ये, कथा पुराँनन मै कही ॥३००

जुग चौथे मह जाँन, हिरनकस्यप[8] मारन हित।
श्री अवतार नृसंघ[9], महाँ बलवंत क्रूर मति।
बल[10] छलनं कौं बने, जहाँ बाँवन[11] त्रता जुग।
कस्यप अदती निकाय, दनुज भय-दाय लखेऊ द्रग।
उन ईस[12] फेर त्रेता अखल, क्षत्रीय कुल कौं करन खय[13]।
भये परसराँम अवतार भुव, जांमदग्न गृहजुद्ध जय ॥३०१

रघुकुल दसरथ राज, सुवन[14] तिह परम सयाँनौ।
रांमचंद्र महाराज, जिहो पावन जस जाँनौ।
अष्टाबिसत[15] इही जिही जुग द्वापुर जाँनौ।
नर नारांयन क्रस्न, विजय अवतार बखाँनौ।
ह्वै धरम हाँन जबही हरी, आय आय जग अवतरैं।
इच्छा प्रभाव सोइ आपनं, कर बिहार लीला करैं ॥३०२

दोहा।

पूछी कथा सु व्यास प्रत, जनमेजय राजाँन।
नर नारायन तेज निध, करन सदाँ कल्याँन[16] ॥३०३
इंद्र पटाई[17] अफछरा[18], जुगल मूर्ति ढिग जास।
काँमातुर लख काँमनी, अत चित भये ऊदास ॥३०४
अहंकार ऊतपत हुव, नारांयन लख नैन।
श्राप निवारन कीन सुन, बिमल कहे नर बैन ॥३०५

---

१ चाक्षुष। २ नारायण। ३ मुनि। ४ दत्तात्रेय। ५ मन्वंतर। ६ वैवस्वत। ७ रुद्र। ८ हिरण्य कशिपु। ९ नृसिंह। १० बलि। ११ वामन। १२ ईश। १३ क्षय। १४ पुत्र। १५ अट्ठाईसवें। १६ कल्याण। १७ भेजी। १८ अप्सरा।

कीयौक तिनसौं द्वारक्रम[1], बेमुख[2] करी क[3] बाँम।
बासव[4] की बारंगना[5], कीयौ कहा तिन काँम ॥३०६
बिदा करी बारंगना[6], नारायन तज नेह।
तजकै बिसय[7] जु करत तप, अब हमरौ पन येहु ॥३०७
अठ-बिसत[8] द्वापुर[9] अबै. बिधवत समय बसाय।
वँह जुग में हम अवतरहि[10], जदुबंसिन[11] में जाय ॥३०८
जब तुमही लैहौ जनम, हम त्रीय तबही होय।
सिद्ध मनोरथ करहु सब, मिथ्या[12] पन[13] नहि मोहि ॥३०६
स्वर्गलोक कौं अप्सरा, गई पुरंदर गृह।
सकल कह्यौ बृतांत सुन, अचरच[14] भयौ अछेह ॥३१०
नारांयन अरू धन्य नर, जिह तप साधन जोग[15]।
ऊखसी आदक अछ्छरा, प्रगटी ताहि प्रीयोग ॥३११
वँह नारायन नर वँही, अरजुन[16] हरि[17] अवतार।
भृगू श्राप सौं ऊभय भये, नृप समुझहु निरधार ॥३१२

छंद त्रोटक

अरजी[18] नृप हू जुत[19] आतुरता, चित कीन विचारकै चातुरता।
क्रसना अवतार चरित्र कहौ, अध-हारक[20] तारक[21] मंत्र अहो ॥३१३
मिट जाय सदेह सबै मन कौं, तिन सौं सुख लाभ मिलै तन कौं।
वसुदेव तै देवकी गर्भ वसे, तिनकौं बहु रीत सौं कंस त्रसे[22] ॥३१४
कहौ क्रस्न प्रभाव गयौ किनकौं, तिह भ्रात मरे जितकौं तितकौं।
गवेन मथुरा तज गोकुल कौं, कीय पावन गोपन[23] के कुल कौं ॥३१५
कंस मातुल[24] मारकै कीन कहा, मधुपन्नपुरी[25] सुख रूप महा।
गृह छोरकै पछ्छम[26] लीन गलो, थित कोन इकंत[27] कुसस्थ थली[28] ॥३१६
अरू विप्रन श्राप लगाय इतौ, कुल आपनौ गारत[29] कीन कितौ।
हट लागकै भूम कौ भार हर्यौ, कुल छत्रिन जात संघार कर्यौ ॥३१७

१ विवाह। २ विमुख। ३ क्या। ४ इन्द्र। ५ वैश्या = अप्सरा। ६ मू० प्र० वरांगना। ७ विषय। ८ अट्ठाइसवें। ६ द्वापर। १० अवतार लेंगे। ११ यदुवंश। १२ झूठ। १३ प्रण। १४ आश्चर्य। १५ योग। १६ अर्जुन। १७ कृष्ण। १८ प्रार्थना। १६ युक्त। २० पापनाशक। २१ उद्धार करने वाला। २२ दुःख दिया। २३ ग्वालियों। २४ मामा। २५ मथुरा। २६ पश्चिम। २७ एकांत। २८ द्वारका। २६ नष्ट।

परलोक गये बयकुंठ-पती,[1] केऊ जात पुलिंद[2] मिले कुमती।
हरके अवरोध[3] कौं बित्त हरयौ,कहौ ताही को नास हू क्यांन[4] करयौ ॥३१८

द्रुपदा अवतार रमाँ[5] दुख सौं, सपन[6] नहि भेट भई सुख सौं।
सुभद्रा बहिनी-लघु[7] के सुत[8] कौं, जुध में न बचाय सके जिन कौं ॥३१९

इन आद सँदेह घने ऊरकें, तिह व्यास मिटावहु आतुर कैं।
जब व्यास कही जनमेजय कौं, इह चित्त बिचारहु आसय[9] कौं ॥३२०

जब दुष्ट नृपाल भये जगती, महा पाप रता अरू मंदमती।
धर धेनु[10]को रूप गई धरनी[11],बिच लोक तिविष्ट[12]पवै बरनी ॥३२१

तब इंद्र कही कहा कष्ट तुमैं, भहरावत पाप के भार भूमैं[13]।
धुर बोल ऊठी तिह वेर धरा, भरपूरत पाप नरेस भरा ॥३२२

सिसपाल ज्युही मगधेस सही, दुख कासीयराज कै फेर उही।
रुकमी रुच फेर गृही जु रसा, नरकास्वर साल्व कुहू की-निसा[14] ॥३२३

कहुँ केसीय[15] धेनुक वच्छ[16] किते, रचना क्रम निदंत पाप रते।
स्वय कर्म न जाँनत धर्म सहो, निस द्योस[17] विरोध अघात नही ॥३२४

मगरूर[18] में सूर मदंध महा, पुतला बस ओगुन के सुपहा[19]।
नृप दुष्टन भार नही[20] निवहै. रजनी दिन में अकुलात रहै ॥३२५

बिच वार रसातल डूब वही, कीय रूप वराह ऊधारक[21] ही।
अब तौ हम निदंत है ऊन कौं, कर और पुकार कहै किन कौं ॥३२६

जब तै न्हो लावत तौ जल मैं, तब तै गलजात रसातल मैं।
नृप दुष्टन कौं दुख देखत ना, बढकैं वहु भार बिसेकत ना ॥३२७

कलि[22] अबतौ कालहु आवत है, भय सौं मम बुद्धि भ्रमावत है।
सुरराज[23] सहाय करौ सुनकैं, परभाव[24] गहौ तुमरे पन कैं ॥३२८

सुन इंद्र कह्यौ अवनी सुनीयैं, भल भेद विरंचन[25] सौं भनीयैं[26]।
संग लीन चले जब बृद्धश्रवा, अवनी हित चाह बने अगुवा[27] ॥३२९

---

१ कृष्ण। २ भील। ३ जनाना = स्त्रियाँ। ४ क्यों। ५ लक्ष्मी। ६ स्वप्न में। ७ छोटी-बहिन। ८ अभिमन्यु। ९ आशय। १० गाय। ११ पृथ्वी। १२ काशिराज। १३ राजा-नरक। १४ अमावस्या की रात्रि। १५ केशी। १६ वत्सक। १७ दिन। १८ घमंड। १९ सरदार। २० मू० प्र० नहीं। २१ उद्धार करने वाले। २२ कलियुग। २३ इन्द्र। २४ प्रभाव। २५ ब्रह्मा। २६ कहो। २७ अग्रणी।

सुरजेष्ट[1] के लोक गये सबही, सुरराज[2] कह्यौ इह भेद सही।
अचला[3] विचला[4] कीय नाथ अबै, सिसपाल हु कंस के आद सबै ॥३३०
महि कौ कहु जाबिध[5] भार मिटै, दुखदायक भूप घटै रु दटै।
कँमलासन हू कहि कारन कैं, असमर्थ भार ऊतारन कैं ॥३३१
मिलकै चल बिस्नु[6] के लोक मही, बिपुला[7] बरतंत कहै सबही।
गवने सुर बिस्नु के लोक गये, प्रभू पूरन ब्रह्म[8] के दर्स[9] पये ॥३३२
नुत[10] कीनीय श्रीजगँनाथ हु की, रचना धरनी ब्रनी रुख की।
सुरजेष्ट कही हरो आँन[11] सुनी, नृप भूँम कौ भार दयौ निगुनी ॥३३३
अब द्वापुर[12] अंत सु आय गयौ- कलिकाल हू चाहत फैल कीयौ।
अवतार चहै हीर कौ अचला कम भार कौ कीजीयै पूर्नकला[13] ॥३३४
सुनकै बिधसौं हरी बात सबै, तिन उत्तर येहु दीयौ सु तबै।
तुम हू हम हू सिव आद तितै, जम श्रीद[14]परंजन जिस्नु[15]जितै ॥३३५
परब्रह्म सनातन औ प्रक्रती, सब ताहि अधीन गनौं सुक्रती।
सुरराज बिरंचन बात सुनी, प्रक्रती परभाव[16] गह्यौ निपुनी ॥३३६
गुन ताहीके गावन लोग गिरा[17], पुन बिस्नु प्रसंसाय कीन परा[18]।
भगवंतीय देख प्रसंन[19] भई, करुना सुन देवन बात कही ॥३३७
मगधाधिप आदक मंदमती, जिह भार दयौ कतसै[20] जगती।
तिह मारन कारन देव तितै, अवतार लहौ तुम जाय इतै ॥३३८
सगती[21] हम जुक्त चलौ सबही, मिल भार ऊतारहि जाय मही।
अदती जुत सस्यप जाय वहाँ; जदुवंस लहै अवतार जहाँ ॥३३९
वसुदेव रु देवकी होय वसै, दिती श्राप निवारन त्याँ दरसै।
हुय है भृगु श्राप सौं पुत्र हरो, पुन होवहु मै जसुदा पुतरी[22] ॥३४०
करहू हित देवन काज हू सौं, इल[23] भार ऊतारव आजहुसौं।
गृह गुप्त निकारहु गोविंद कौं, वसुदेव त्रीयाहु तजै बँध[24] कौं ॥३४१
गृभ देवकी सेस[25] हु काँ गहिकै, विच रोहनी गर्भ धरू वहिकै।
फुल गोपन गोकुल दिव्य कला, ऊर आनद गोपीय लै अबला ॥३४२

---

१ ब्रह्मा। २ इन्द्र। ३ पृथ्वी। ४ विचलित। ५ जिस प्रकार। ६ विष्णु भगवान। ७ विस्तृत। ८ पूर्ण। ९ दर्शन। १० स्तुति। ११ कान। १२ द्वापर। १३ पूर्ण। १४ कुबेर। १५ इन्द्र। १६ प्रभाव। १७ वाणी। १८ परा-प्रकृति = जगदंबा। १९ प्रसन्न २० पतिताय। २१ शक्ति। २२ पुत्री। २३ पृथ्वी। २४ बंधन। २५ शेष नाग।

बलदेव रु क्रस्न[1] कौ नाम बढै, महिमा जगती बिच जाहि मढै ।
नृप दुष्टन भार निवारहिंगे, अवनी दुख ताहि ऊधारहियगे[2] ॥३४३
अरु इंद्र किरीटीय[3] होय इहै, दल दुष्टन कौं सर[4] मार दहै ।
जमराज[5] जुजष्ठर[6] ह्वै जनमै, किरमीर-निसूदन[7] बायु[8] क्रमैं ॥३४४
नकुलौ सहदेव बड़े निपुना[9], सुरबैद[10] के अंसहु तै सगुना ।
बसु अंस सौं भीसम[11] देव बनै, सुत सांतन गंग अभंग सनै ॥३४५
महिमाय[12] कही जब बात मुखी[13], सब देव चले सुन होय सुखी ।
गवनी अवनी[14] निभ बिंब[15] गह्यौ, लवलीन भई बिसवास[16] लह्यौ ॥४४६
अवतौ मम भार ऊतारन कौं, कहि दीन सबै सुरकारन कौं ।
कुरुक्षेत्र मैं कौरव[17] बंस कटै, जदुबंस प्रभास[18] में जुद्ध जुटै ॥३४७
ऊर कौ सब सोक गयौ अचला, कीय सक्तिहु धारन आप कला ।
गृह[19] कौं सब ही गिरबाँन[20] गये, सुन सासन[21] सीस चढाय लये ॥२४८
भगवंतीय[22] अंतर ध्याँन भई, सब देवन कारज कीन सही ।
द्रढ ह्वै विसवास हु देवन कौं, उपज्यौ अनकाज[23] अदेवन[24] कौं ॥३४६

दोहा

भार ऊतारन भूम कौ, कथा सुनहु दे काँन ।
क्रस्नचंद्र[25] अवतार की, माया कारन[26] माँन ॥३५०
अमर नाँम निरजर[27] अवर, कहत जु देव कहाँन ।
जुरा[28] पायकै मरत जोई, माया क्रत अनुमान ॥३५१
करता बेदहु जगकमन[29], होनहार बस होय ।
भये बिकल लख भारथी[30], माया संजुत मोहि ॥३५२
सती जरी मख[31] दक्ष मह, करे बिथत[32] कंदर्प[33] ।
दिगवासा जल में दुरे, दूह छाँड़ मन दर्प ॥३५३
अघ मेटत जग आप सौं, पावन क्रस्न प्रसंग ।
कारौ जल जमना कीयौ, अजाँ[34] न पलट्यौ[35] अंग ॥३५४

१ कृष्ण । २ उद्धार करेंगे । ३ अर्जुन । ४ वाण । ५ यमराज । ६ युधिष्ठिर । ७ भीम । ८ पवन । ९ निपुण । १० अश्विनी कुमार । ११ भीष्म । १२ महामाया । १३ मुख से । १४ पृथ्वी । १५ स्वरूप । १६ विश्वास । १७ कौरव । १८ युद्ध क्षेत्र । १९ गृह = घर । २० देवता । २१ शासन । २२ भगवती, जगदंबा । २३ अहित । २४ दुष्ट, दानवगण । २५ कृष्णचन्द्र । २६ कारण । २७ वृद्धावस्था रहित । २८ वृद्धावस्था । २९ ब्रह्मा । ३० सरस्वती । ३१ यज्ञ । ३२ व्यथित । ३३ महादेव । ३४ आज तक भी । ३५ बदला ।

भृगु वन में आये भ्रमत, फिरत रहे चहु फेर।
विकल भये सोइ काँम वस, हरहू त्रीया रिख[1] हेर ॥३५५
भृगु रिख दोनौ श्राप भव, तवही सेय[2] गये तुट।
जथा पुराँनन कहीय ज्यू इह इक कथा अनूठ ॥३५६
प्रेरक माया है परा, जाहि ऊपाये जीव।
सुर नर मानव असुर सब, शृष्ट[3] हु आद सदीव[4] ॥३५७
प्रथम वनावत पुत्तरी[5], निरख नचावत नाथ।
सैलूखी[6] माया सुनहु, रही जगत सोइ राच ॥३५८

छंद ऊधोर

अवतार क्रस्न[7] अनूप, भल चिरत[8] सुनीयै भूप।
तट सूर्यजा[9] नद ताँम, तभ्रदीक[10] मधुवन नाँम ॥३५९
मधु दैत[11] सुत वृज माँहि, तिह लवन नाँम तथाँहि।
द्वज[12] जात कौं दुख दात, रत[13] पाप अत दिन रात ॥३६०
दिग विजय पर्म[14] दयाल, सत्रुघ्न दुष्टन साल।
वँह ठौर[15] निकरे आय, तहाँ दइत मारचौ ताहि ॥३६१
दनु मार मधुरा द्रंग[16], आवाद कीन अभंग।
सुत राज दै सरसाय, स्वस्थाँन गयेऊ सिधाय ॥३६२
रघुवंसीयन[17] कौं राज, केऊ दिवस रहेऊ सकाज।
भये नष्ट सोऊ किह भाय[18], जदुवंसीयन[19] लीय जाय ॥३६३
कुल जास में तिह काल, भये सूरसेन भूआल।
अवतार कस्यप येव, द्रढ पुत्र भये वसुदेव ॥३६४
उग्रसेन नृप के और, जिह कंस भये सुत जोर।
कंन्या सु देवकी केर, हुव अदति[20] जिह घर घेर ॥३६५
निभ्र देवकी तिह नाम, सोइ मात हूव घनस्याँम।
वसुदेद संग विवाह, कीय देवकी कंन्याह ॥३६६

---

१ स्त्रि। २ लिग। ३ सृष्टि। ४ सदैव। ५ पुतली। ६ नटिनी। ७ कृष्ण। ८ चरित्र। ९ यमुना। १० निकट, पास। ११ दैत्य। १२ द्विज, ब्राह्मण। १३ लीन। १४ परम। १५ स्थान। १६ मथुरा नगर। १७ रघुवंशी। १८ यदुवंशी। १९ भाव, कारण। २० अदिति।

परनाय[1] हरन-पसाय[2] दीय, सीख ताहि दिवाय।
पत-बहन[3] बहनी[4] प्यार, संग कंस चलेऊ सिधार ॥३६७
रथ बैठ लीनौ राह, अस[5] हाँक सहत[6] ऊछाह[7]।
हित अहित होवनहार, नभ गिरा भईय निहार ॥३६८
मिल कंस तूं मतिमंद, संग वहन जात समंध।
इह गर्भ अष्टम अंस, कर व्यथत[8] मारहि कंस ॥३६९
इह सुनत भयेऊ ऊदास, वढ वयर[9] तज विसवास।
संकलप विकलप साथ, अत बढ्यौ जहाँ उतपात ॥३७०
देवकी-मारन दुष्ट, कीय मतौ[10] कंस कलिष्ट[11]।
वसुदेव दक्ष[12] विचार, तिह पकर[13] लीय तरवार ॥३७१
कर तुमहि बहनी[14] कान,[15] मम वचन लेवहु मान।
इह प्रसव[16] ऊपजहि आय, तुम लाय सौंपहुँ ताहि ॥३७२
वसुदेव की सुन वात, विसवास[17] हृदय वसात।
मानी सु कंस मलिष्ट, दहूँ[18] छाँड़ चलेऊ दविष्ट[19] ॥३७३
वसुदेवहू तिह वार गवने सु गयेऊ अगार।
बिहु संग वसत बसेर,[20] केऊ दिवस बीतत केर ॥३७४
सुख दंपती रति साद, आपंन्नसत्वा[21] आद।
निभ्र देवकी तिह नाँम, वसुदेव जाँनी वाँम ॥३७५
सुख अवध जात सिधाय, ऊपज्यौ सु अगज[22] आय।
मुखँ देख देवकी मात, ऊर हेत सौ न अघात[23] ॥३७६
वसुदेव कौं तिहवार, अकुलाय बोल अगार[24]।
तुम पुत्र देखहु ताहि द्युत[25] कहा मुख दरसाय ॥३७७
सुत देख कै वसुदेव, भल कंस जानत भेव[26]।
सुत देहुँ आवहु सूंप,[27] क्यूं मोह डारत कूंप[28] ॥३७८

१ विवाह करके। २ दहेज। ३ बहिन के पति = वसुदेव। ४ भगिनी, देवकी। ५ घोड़ा। ६ सहित। ७ उत्साह। ८ व्यथित। ९ वैर। १० विचार। ११ क्रूर। १२ चतुर। १३ पकड़। १४ बहिन, देवकी। १५ सम्मान। १६ गर्भ। १७ विश्वास। १८ दोनों। १९ दूर। २० घर। २१ गर्भवती। २२ पुत्र। २३ तृप्त। २४ घर। २५ द्युति। २६ भेद, भाव। २७ सोंप। २८ कुँआ।

जो लिखी बिध के जोग, सुख-दुःख हरखहु[1] सोग[2] ।
वसुदेव की सुन बात, वस दुःख के बिललात ॥३७९
दीय सौंप सुत वसुदेव, चाले सु गृह कर चेव ।
गये कंस कै सोइ ग्रेह, अह पुत्र लेवहु येह ॥३८०
वसुदेव कंस बिलोक, सुध साच-वाच[3] स-सोक ।
सुत तोहि अष्टम सोय, हम ताहि सौं भय होय ॥३८१
इह कंस सुनीय ऊदंत,[4] चालै सु लै तज चिंत ।
सुत देवकी दीय सूँप, अत बढ़ीय हरख अनूप ॥३८२
इत कालकारक[5] आय, सिद्धांत कंस सुनाय ।
जब आठ मिलहै जोग, अरी[6] वनहि कर ऊद्योग[7] ॥३८३
सब होए जाय समाँन, आग्रै न पाछै आँन ।
मम कही माँन मगाय तुम सत्रु मारहु ताहि[8] ॥३८४
सुन कालकारक[9] सीख, तिह कंस समुझी तीख[10] ।
मगवाय तिह सिसु[11] मार, निहचित[12] भयेऊ निहार ॥३८५
नृप व्यास पूछीय न्याय, इह पिसुन कीय अंन्याय ।
मुनिराज होय महाँन, इहाँ वनै क्याँ अज्ञाँन[13] ॥३८६
सुन व्यास बोलेऊ सत्य, पुन नृपत हू के प्रत्य[14] ।
पुन कलह तै मुनि पेम[15], नारद ही जाँनौ नेम[16] ॥३८७
हीय देव कारज हेत, सो करत प्रन[17] ही समेत ।
सो पूर्व जन्म ही श्राप, पुन मरे अपने पाप ॥३८८
सुत मरीची के सोय, जिह वालपन वय[18] जोय ॥
वस काँम होय विरंच,[19] ब्राँह्मी सु-कन्या वंच[20] ।
वढ चले देख विचार, येह से छहहु अपार ॥३८९
सुन दीयौ ब्रँह्मा श्राप, तन भोगहौ तुम पाप ।
दनु-जाय[21] पावहु देह, इह हास[22] कौ फल लेहु ॥३९०

---

१ हर्ष । २ शोक । ३ सत्य, वचन । ४ वार्ता, वात । ५ नारद । ६ वैरी । ७ उपाय । ८ उसको । ९ नारद । १० तीखे, तीक्ष्ण । ११ शिशु । १२ निश्चित । १३ अज्ञानी । १४ प्रति । १५ प्रेम । १६ नियम । १७ प्रण । १८ अवस्था । १९ ब्रह्मा । २० इच्छा की । २१ दैत्य । २२ हँसी करने का ।

सो कालनेम सुतंन[1], इक जन्म भये ऊतपंन[2]।
भये हिरन कस्यप भौंन, सुत ताहि के सुग्यौंन ॥३९१
वँह जन्म दूसर आय, तप करेऊ विध हित ताह।
विध दीन तिह वरदाँन, सब रीत सौं सुखदाँन ॥३९२
द्वै जन्म भुगतहु दोख, मिलहौ तुमहु फिर मोख[3]।
सुन ब्रह्मवाँनी सोय, सरसात हरख सकोय ॥३९३
गवने सु पितु के ग्रेह, दुख मेट आपत देह।
सुन हिरन कश्यप आँन,[4] वस क्रोध भये बलवाँन ॥३९४
मम पुत्र होय मृजाद[5], तुम मेट कीय इत्पाद[6]।
विन हुकम[7] तप कीय वेह, द्रढ दमन कीनी देह ॥३९५
पाताल छहहु पलाय,[8] जहाँ वसहु केऊ दिन जाय।
पितु प्रथम जन्म प्रधाँन, निज कालनेमी नाँम ॥३९६
जोई कंस ह्वै है जाय, पुन वँही अवसर पाय।
सुत देवकी इक साथ, हथ[9] होहु ताके हाथ ॥३९७
जिहो पाय ऊपज्यौ जोग, सोऊ मरे श्राप[10] सँजोग।
वरदाँन विध[11] हो बिचत्र, नभ जाय भयेऊ नछत्र[12] ॥३९८
सोइ वसे अवस सुतंत्र, कहु मिटहि नहि कलपंत्र[13]।
सिस[14] मरे छह श्राप, पुन प्र थम जन्म ही पाप ॥३९९
भई देवकी निभ भाँन,[15] आपन्नसत्वा[16] आँन।
सप्तमहु गर्भ सँपेख, सो आय स्थिती[17] भये सेख[18] ॥४००
जव जोगनिद्रा[19] जाहि, आकर्ष[20] कीने आय।
गहि रोहिनी के गर्भ, वँह जाय मेल्यौ अर्भ ॥४०१
कहि चले जन[21] सब कोय, हथ[22] देवकी ग्रभ[23] होय।
जान्यौ न ताकौं जात, इह भयौ कहा ऊतपात ॥४०२
सुन कंस वानी सोर, ऊर भयौ विस्मय और।
अरू आठमै ग्रभ आय, श्रीक्रस्न आप समाय ॥४०३

१ पुत्र। २ उत्पन्न। ३ मोक्ष। ४ कानों से। ५ मर्यादा। ६ उत्पात। ७ आज्ञा। ८ भागकर। ९ नष्ट। १० शाप। ११ ब्रह्मा। १२ नक्षत्र। १३ कल्पांत। १४ शिशु। १५ भवन। १६ गर्भवती। १७ स्थित। १८ शेष=अनंत। १९ योगनिद्रा। २० निकाला। २१ लोगों में। २२ नष्ट। २३ गर्भ।

सोई निगुन[1] ब्रह्म स्वरूप, भये सगुन जांनहु भूप।
कही व्यास ऐसी कथ्थ, सोई सुनी भूप समथ्थ[2] ।।४०४
विध-जुक्त पूछी बात, सुर अवतरे हरी साथ।
किह अंस इहाँ भये कौन, तुम कहहु संख्या तौन ।।४०५
वाले सु व्यास विचार, नृप सुनहु इह निरधार।
सुर-असुर जनमे साथ, खल साधु जांनहु ख्यात[3] ।।४०६
वसुदेव क्षत्री विचार, इह कस्यपा[4] अवतार।
अदिती सु देवकी आप, सो भई दिती वस श्राप ।।४०७
वलदेव सेख[5] वलिष्ट, जे भ्रात हरी[6] के जेष्ट।
नारायनाय[7] सुनांम, श्रीक्रस्न[8] भये घनस्यांम ।।४०८
अर्जुन हु नर अवतार, धृम जुधष्टर[9] निरधार।
अरू भीम मारूत[10] अंस, पुन भुजा बल परसंस[11] ।।४०९
दुइ नकुल अरू सहदेव, सुखंद[12] लखहु सभेव।
भये कर्न[13] अंस जु भाँन,[14] ऊद्दीर्न[15] बल अप्रसान[16] ।।४१०
जम अंस विदुर जनाय, गुन नीयत कुसल गनाय।
गरू[17] द्रोन भयेऊ गरिष्ट, सिव[18] अस्वथाँमा श्रेष्ट ।।४११
साँतनु[19] समुद्रहु सोय, जिह गंग त्रीय भई जोय।
गंधर्व पति गुन ग्राँम निभ्र चित्ररथ तिह नाँम ।।४१२
वसू[20] भस्मि[21] भये वलवाँन, वैराट[22] पवन[23] वखान।
नेमी-अरिष्ट[24] सु नाँम, सोई दनुज जित संग्राँम ।।४१३
हुव ताहि अंगज[25] हंस, वँह भयेऊ ताके अंस।
क्रतवर्म क्रप धर काय, सोऊ पवन अंस सिवाय ।।४१४
नृप सुजोधव[26] निरधार, इहाँ कलू को अवतार।
सकुनो सु वचंहु[27] सोय, जादव हु जैसे जोय ।।४१५
प्रद्युम्न[28] वीर प्रसंस, उपजे सु अग्न ही अंस।
निभ्र तन सिखंडी नाँम, कऊमार-सनत[29] .सक म। १६

१ निर्गुण। २ समर्थ। ३ ख्याति। ४ कश्यप। ५ शेष। ६ कृष्ण। ७ नारायण। ८ धर्म। ९ युधिष्ठिर। १० वायु। ११ प्रशंसित। १२ अश्विनी कुमार। १३ कर्ण। १४ सूर्य। १५ उदार। १६ अप्रमाण। १७ बृहस्पति। १८ रुद्र। १९ शांतनु। २० वसु। २१ भीष्म। २२ विराट। २३ मरुत। २४ अरिष्टनेमि। २५ पुत्र। २६ दुर्योधन। २७ द्वापर। २८ धृष्टद्युम्न। २९ सनत्कुमार

नृप द्रुपद लेहु निहार, इह बरुन[1] कौ अवतार।
अरू द्रुपदजा अनुरेह, इंदरा[2] जाँनहु येह ॥४१७
सुत पाँच द्रोपदी सोय, हितु बिस्वदेवो[3] होय।
कुँन्ती सु सिद्धी[4] काय, माद्री सु धृती[5] महमाय ॥४१८
गंधारजा मती[6] गूढ, विधो-जुक्त पतिवृत व्यूढ।
अ क्रस्न तीयहु सुवेस, वारांगना मु बिसेस ॥४१९
अरू दुष्ट केतक आंन, भये असुर अंस भयांन।
सिसपाल[7] आद बिसेस, भये हिरनकस्यप[8] भेस ॥४२०
अरू जरासंध अभीत, इह विप्र-चित्त[9] अनीत।
पुन साल्व[10] भये प्रहलाद, अरू धृष्ट-ध्वज[11] अनु-आद[12] ॥४२१
पुन कालनेमी पेख, केसी हु आदक केक।
भगदंत भेस भयाँन, अवतरे बास्कल आँन ॥४२२
हयगृींव दानव हृष्ट, अघ पूर गनहू अरिष्ट।
ये गनहु याही अंस, बढ दाँनवन के वंस ॥४२३
अरू लंब और प्रलंब, खर धेनु[13] पातक खंभ।
वाराह अत बल वंड, चानूर[14] मुख कर चंड ॥४२४
कुवलया[15] पीड़ कितेक, बपु दुरद[16] पुष्ट बिसेख।
दनु[17] बकासुर अत दूष्ट, अस्वस्थथाँमा इष्ट ॥४२५
बल-सुता[18] उपजी वाँम, निज पूतना जिह नाँम।
इह दनुज[19] अंस[20] अभंग, सब भये परगट[21] संग ॥४२६
विध देव गये वयकुंठ[22], अचला[23] हु साथेहु ऊठ।
जब करी बिनती जाय, श्री रमापत[24] ररसाय ॥४२७
वरदाँन ह्वै तय वार, सित[25] क्रस्न[26] रंग सु धार।
श्रीक्रस्न भये तन स्याँम, रंग गौर सोई बलराम ॥४२८
पुन क्रस्न[27] जन्म प्रसंग, ऊत्तपत्त पालन अंग।
सब सुनहु श्रोता आँन[28], वर व्यास कोय व्याख्याँन[29] ॥४२९

१ वरुण। २ लक्ष्मी। ३ विश्वेदेवा। ४ सिद्धि। ५ धृति। ६ मति। ७ शिशुपाल। ८ हिरण्यकशिपु। ९ विप्रचित्ति। १० शल्य। ११ धृष्टकेतु। १२ अनुह्लाद। १३ धेनुक। १४ चाणूर। १५ कुवलय नामक कंस का हाथी। १६ अरिष्ट। १७ दैत्य। १८ वलि की पुत्री। १९ दैत्य। २० अंश। २१ प्रकट। २२ वैकुंठ। २३ पृथ्वी। २४ विष्णु। २५ श्वेत। २६ काला। २७ कृष्ण। २८ कानों। २९ बखान, वर्णन।

सुत देवकी के सोय, जिह कंस मारे जोय।
बलरांम कौं गृभ[1] बीच, खल भीत[2] सौं लीय खींच ॥४३०
जब जोग-निंद्रा[3] जाय, रोहिनी गर्भ रचाय।
अव क्रस्न गृभ ऊत्तपत्त, सोई ऊदर देवकी सत्त ॥४३१
गृह नंद गोकुल गाँम, नारी सु जसुमत नाँम।
देवकी वचन सु दीन, इह ईस कै आधीन ॥४३२
तुव पुत्र ह्वै तौ ताहि वँहाँ मोहि सौंपहु[4] आय।
पुन पालकै जुत पेम[5], तुम गेवगी हम तेम ॥४३३
जीय जोगमाया[6] जाँन, वँह ऊदर थित भई आँन।
गत देवकी भई ग्रेह, अब सुनहु प्रवृत[7] येह ॥४३४
आकासवाँनी[8] आद, सुन कंस भये सविषाद।
हीय अष्टमौ गृभ हेर, बहु जतन कीय तिह बेर ॥४३५
देवकी पग[9] वसुदेव, बेरी[10] सु डार सभेव।
गृह देख कारागार, विन लाग ताही वार ॥४३६
बैठाय दीने बीच, मन समुझ कारक मीच[11]।
पहरूआ[12] आसुर पास, खल जाँन अपने खास[13] ॥४३७
मेले सु चहुधाँ मग्ग, आयुधन झेल ऊदग्ग।
मिल हाक मारत मूढ, गीत नहिन जाँनत गूढ ॥४३८
दिन रैन[14] बहुधा दुष्ट, पुन फिरत पापी पुष्ट।
सभ दिवस रहे केऊ सेस[15], सुर आद आय सुरेस[16] ॥४३९
कीय वर्नना[17] श्रीक्रस्न, पुन चले सोऊ ह्वै प्रस्न[18]।
दस मास गयेऊ दुरंत[19], अब भयौ दुख कौ अंत ॥४४०
मिस-प्रोष्ट-पद[20] लग मास, अष्टमी छंद ऊजास[21]।
वाँह्नी[22] नछत्र[23] विसेस, सुभ घरी वरतत सेस ॥४४१
देवकी बोली देख, वसुदेव वात विवेक।
अब प्रसव[24] वेला आय, रूख दूर जाय रहाय ॥४४२

१ गर्भ। २ भय। ३ योगनिद्रा। ४ सौंप देना। ५ प्रेम। ६ योगमाया। ७ वृतांत। ८ आकाशवाणी। ९ पैर। १० बेड़ी। ११ मृत्यु। १२ पहरेदार। १३ विशेष। १४ रात्रि। १५ शेष। १६ इन्द्र। १७ स्तुति। १८ प्रसन्न। १९ कठिन, कष्ट के। २० भादों का कृष्ण पक्ष। २१ उजाला। २२ रोहिणी। २३ नक्षत्र। २४ बच्चा होने का।

मुख फेर रहि गहि मूँन[1], धर काँपकै सिर धून।
द्रुत[2] दूर गये वसुदेव, भाँमनी[3] लखकै भेव ॥४४३
ऊतपंन्न[4] भयेऊ अनूप, श्री क्रस्न[5] स्याँम सरूप[6]।
मुख देख बोली मात, तुम प्रसव आवहु तात ॥४४४
इह वचै करहु ऊराय, जसुदाह[7] सौं पहुचाय।
कीय जाहि हमसौं कौल[8], विध[9] नीत-रीत सु बोल ॥४४५
वचै सु जीवत वाल, लख लैहगी सुख लाल।
वसुदेव कहि तव वात, सुन देवकी सिसु[10] मात ॥४४६
परचरी[11] घेर प्रचंड, झिल रहे झुंडन-झुंड।
केऊ खड्ग लीनै क्रूर, गहि भिंडपाल[12] गरूर ॥४४७
केऊ सर कोड़ंड़[13], द्रढ दंड लहै भुजडंड।
फरसा सु धारै फेर, धन्सूल[14] लीनै घेर ॥४४८
करपालका[15] धर केक, धर परघ[16] धारै ध्वेक।
धर सर्बला[17] गहि धूप, सब दुष्ट काल सरूप[18] ॥४४९
फिर रहे सोई चहु फेर, अवसर्प[19] बीच अंधेर[20]।
गृह बीच चावहि[21] गौंन[22], पंछी न पावहि पौंन[23] ॥४५०
पुन लहै नाँहि परेख, इहाँ आय चीटी येक।
कीय द्वार बंध कपाट, थित रहे आटन थाट ॥४५१
पहराय वेरी[24] पाय, बहु कष्ट-दुष्ट बसाय।
बसुदेव बोले बाँन[25], सोई देवकी सुन स्राँन ॥४५२
भई सुस्क-तरू[26] दल[27] भेस, ऊर कष्ट आय अंदेस।
जब भई अवसर जाँन, आकासवाँनी आँन ॥४५३
सब सुनी दंपत[28] सोय, होय अभय हरखत होय।
इही कही कथ्थ[29] ऊचार, कढ जाहु खोल किवार[30] ॥४५४

---

१ मौन । २ शीघ्र । ३ स्त्री । ४ उत्पन्न । ५ कृष्ण । ६ स्वरूप । ७ यशोदा । ८ प्रतिज्ञा । ९ विधि । १० शिशु । ११ पहरेदार । १२ भाला । १३ धनुष । १४ त्रिशूल । १५ छुरी । १६ लुहानी, बरछी । १७ गुर्ज । १८ स्वरूप । १९ संदेश वाहक । २० अँधेरा । २१ चाहें । २२ गमन जाना । २३ पवन । २४ बेड़ी । २५ वाणी । २६ सूखे वृक्ष । २७ पत्ता । २८ पति, पत्नि-वसुदेव-देवकी । २९ कथा, वाणी । ३० किवाड़ ।

पर सबही पातक-पीन,[1] लखहौ प्रमीला[2] लीन ।
श्रीक्रस्न जसुमत[3] सूंप[4], इह ग्रेह आप अनूंप ॥४५५
बस रहहु निर्भय वास, ऊर भरहु नहिन ऊसास[5] ।
इह सुनत बांनि[6] ऊचार, बेरी[7] झरी तिह बार ॥४५६
लीय मांग देवकी लाल, वसुदेव चित्त वहाल[8] ।
गवने सु तज निझ[9] ग्रेह, लालहु[10] ऊछंग[11] ही लेह ॥४५७
खुल अरर[12] पाये खेम, जब बढे अग्रहु[13] जेम ।
सब लखे दनुज सवेस[14], अनचेत जुक्त असेस ॥४५८
वसुदेव लीनी वाट[15], अतवेग सहित ऊचाट ।
जमुना सु तट लीय जाय, पर ठयौ जल में पाय[16] ॥४५९
बढ जांनु[17] वक्षन बार[18], नही परचौ ऊद्ध निहार ।
जब पार ऊतरे जाय, हीय हरख[19] मन हुलसाय ॥४६०
गही गली-गोकुल-गांम, त्वर[20] जाय पहुंचे तांम ।
तब भगवती अवतार, वर ऊपज ताही बार[21] ॥१६१
वन जोग माया[22] बीय[23], कुटहारका[24] कमनीय ।
ले सुता जसुमत[25] लाय, वसुदेव हाथ बसाय ॥४६२
ब्रजनाथ[26] कों तिह बार, निझ हाथ लीय निरधार ।
जसुमतहि आगें जाय, कमनीय सयन कराय ॥४६३
वत किन्यका[27] वसुदेव, देवकी दीनी देव ।
जांनी न काहूं जांन, इह ईस सिव अवसांन ॥४६४
किन्या सु रोदन कीन, पहरुवा पापी-पीन ।
जय कंस कों कहि जाय, अरी[28] ऊठ्यो अत-अकुलाय ॥४६५
गृह-सुतका कीय गौन, जनम्यौ नृ अंगज[29] जांन ।
गृह बंध अरर[30] गरिष्ट, द्रुत देख बोल्यौ दुष्ट ॥४६६
वसुदेव लावहु बाल, कर देहु हम ततकाल ।
सुन श्रम बांनी घोर, दीय कंन्यका लीय दोर ॥४६७

१ [illegible] । २ निद्रा । ३ यशोदा । ४ सौंपकर । ५ दुःख से उच्छ्वास । ६ वाणी । ७ बेड़ी । ८ [illegible] । ९ निज, अपने । १० शिशु कृष्ण । ११ उत्संग । १२ किवाड़ । १३ [illegible] । १४ [illegible] । १५ मार्ग । १६ पैर । १७ घोंटू । १८ पानी । १९ हर्ष । २० [illegible] । २१ [illegible] । २२ [illegible] । २३ [illegible] । २४ [illegible] । २५ यशोदा । २६ कृष्ण । २७ [illegible] । २८ वैरी । २९ पुत्र । ३० किवाड़ ।

झटकी[1] सुमन मुरझाँन, पटकी सु सीस पखाँन।
कटकी[2] सु विद्दुत[3] कीन, छुटकी[4] सु नभ गई वीन ॥४६८
भटकी[5] सु आग भयाँन, हटको न पाई हाँन।
कछु भयौ बिसमत[6] कंस, धर धीर कै मति ध्वंस ॥४६९
जब जोगमाया[7] जास, बोली सुबाक विलास।
मतिमंद मोकह[8] मार, नही कुसल तोहि निहार ॥४७०
तन कदन-करता[9] तोर, अवतरेऊ ठौरहि और।
जिह मारहै कँहु जोय, तव कुसल जाँनहु तोहि ॥४७१
कहि वचन कर करतूत[10], वँह चालगइय[11] अभूत।
जब कंस जीय में जाँन, हम करी दंपत[12] हाँन ॥४७२
पुन देवकी गये पास, वसुदेव दै विसवास।
निझ भवन गवनौ नीच, बैठ्यौ सु दुष्टन बीच ॥४७३
बक मिले केसी बछ्छ, रहि धेनुकासुर रछ्छ[13]।
पूतना बैठी पास, मत होय चित्त ऊदास ॥४७४
हित कंस समझहु हीय, क्रम[14] है इहै करनीय[15]।
दिस बिदिस जावहै दौर, मारै सु बाल[16] मरोर ॥४७५
केऊ गये किस दिस क्रूर, पूतना पापनी[17] पूर।
गवनी सु गोकुल गाँम, मध[18] करे जाय मुकाँम ॥४७६
सिसु[19] हथन काज सलाह, ऊर करत इह अवगाह।
जनम्यौ सु अंगज[20] जाँन, ग्रह नंद मंगल-गाँन[21] ॥४७७
सु सुनी कंस सपष्ठ, कछु ऊपज[22] हीय में कष्ट।
वसुदेव मित्त[23] विचार, संदेह सोक सुमार[24] ॥४७८
बँह वात कर कर याद, बढ कंस ऊवर विषाद।
नारद्द[25] कहीय निहार, इह गोप सुर-अवतार[26] ॥४७९

---

१ झड़क दी। २ कड़की। ३ बिजली। ४ छूट गई। ५ भड़क उठी। ६ आश्चर्य चकित। ७ योगमाया। ८ मुझे। ९ मारने वाला। १० चमत्कार। ११ चली गई। १२ दंपती, वासुदेव-देवकी। १३ राक्षस। १४ कर्म। १५ करने योग्य। १६ बालकों को। १७ पापिन। १८ मध्य, बीच में। १९ शिशु। २० पुत्र। २१ मंगल-गीत। २२ उत्पन्न। २३ मित्र। २४ विचार कर। २५ नारद। २६ देवावतार।

हीय कंस निश्चय होय, सुत-नंद[१] वैरी सोय[२]।
कर कंस क्रोध करूर, जोय रूठ ऊठ जरूर ॥४८०
बोले बकासुर बीर, घर धेनुकासुर धीर।
बछ्छाहु सुरस विषाद, अरू प्रलंबासुर आद ॥४८१
कहि दाँनवन सौं कंस, वसुदेव ऊपजे वंस।
नही नंद के इह नंद[३], ऊर लखहुं मोहि अरंद[४] ॥४८२
जिह तिह ऊपाय सु जाय, तुम करहु प्रसमन[५] ताहि।
जव सुनी दुष्टन जाल[६], कर धाव दाव कराल ॥४८३
नित फिरत रहत सु नीच, बढ सीम[७] गोकुल बीच।
पुन करत सिसु[८] पय[९] पाँन[१०], पूतना सोख्यौ[११] प्रांन ॥४८४
वपु[१२] पुष्ट भये बलरांम, श्री क्रस्न सुंदर स्यांम।
सिसु भये पुष्ट सरीर, बछरा[१३] चरावत बीर ॥४८५
मिल बकासुर कौं मार, वपु वछ्छ रछ्छ[१४] विड़ार।
धेनुक मिलायौ धूर, परलंब पापी पूर ॥४८६
परवत[१५] ऊठायौ पाँन[१६], इह आद परचय आँन[१७]।
सु सुनी कंस सभीत, पर[१८] बढ़ो होय परतीत[१९] ॥४८७
अरू मरन केसी येह, ऊर सोक ग्रस्त अछेह।
कर व्याज[२०] सौं करतूत, धनु ज्याग[२१] कीनौं धूत[२२] ॥४८८
विहूं क्रस्न अरू बलरांम, क्रतु हित बुलावन कांम।
सिदन[२३] सुवार सवार, अक्रूर भेज अगार ॥४८९
संग जाय लायेऊ सोय, आये सु निर्भय होय।
सोइ स्यांम गौर सरीर, विच जज्ञ आये वीर ॥४९०
अत कंस कीय ऊतपात, घनस्यांम ऊपर घात।
कुवलया पीड़क केक, पेल्यौ सु कुंजर[२४] पेख ॥४९१

१ नंद का पुत्र। २ वही। ३ पुत्र। ४ मुख्य वैरी। ५ मारो। ६ कपट, षड्यन्त्र। ७ सीमा। ८ शिशु। ९ दूध। १० पीना, स्तनपान। ११ सोख लिया। १२ शरीर। १३ बछड़े। १४ राक्षस। १५ पर्वत। १६ हाथों पर। १७ अन्य। १८ वैरी। १९ विश्वास। २० कपट। २१ यज्ञ। २२ धूर्त्त। २३ रथ। २४ हाथी।

बँह हन्यौ दंत ऊखार, चाँनूर[1] दयेऊ पछार।
मारे सु आदक मुष्ट, द्रढ हाथ गहि गहि दुष्ट ॥४९२
तोरचौ सु धनुष तुरंत, अरू कस कीनौ अंत।
पितु मात दुख्खत[2] पेख, बंधनहु काट बिसेख ॥४९३
उग्रसैन बैभव अप्प[3], थिर राजगादी[4] थप्प[5]।
बसुदेव ग्रह गये वीर, सुभ स्याँम गोर सरीर ॥४९४
सुत राँम[6] क्रस्न सुभाय, मिल देवकी निझ[7] माय।
सुत देख आँनन[8] सोय, होय लाय हरखत[9] होय ॥४९५
बसुदेव करेऊ बसाय, जग्योपवीत सु जाहि।
कीय ग्रौर हू सुभकार[10], बिध-जुक्ति[11] कुल विवहार[12] ॥४९६
कासी सु गवन ही कीन, पढ भये अत परबीन[13]।
वय[14] भयेऊ द्वादस वर्ष, क्रम[15] छत्रि-धृम[16] ऊतकर्ष ॥४९७
नृप जरासंध निदाँन, जामातु-हंता[17] जाँन।
अछोहनी[18] दल आय, तेईस संख्या ताहि ॥४९८
जिह कीय भयानक जुद्ध, अरी दाव कर कर ऊद्ध।
इहाँ राँम[19] क्रस्न[20] अभंग, जीत्यौ न कोऊ जंग ॥४९९
विढ[21] सोय सत्रह वार, हट गयौ फिर फिर हार।
पुन कालजवन पठाय, आयौ सोई अकुलाय ॥५००
मुनि त्रास सौं मुरझाय[22], जदुवसीयन कोऊ जाय।
नही जुद्ध दीनी नीम[23], सब हार रहे बल-सीम[24] ॥५०१
जब क्रस्न जीय में जाँन, थित छोर मथुरा थाँन।
गये द्वारका रच ग्रेह, छित-विरज[25] सौं कर छेह ॥५०२
वस रहे सुवस वसाव, पुरी दुवारका[26] सुख पाय।
थिर करे जन सब थाप, आये सु मथुरा आप ॥५०३
जहाँ कालजवन ही जाय, द्रग आय रूप दिखाय।
आगै सु भागे आप, पर लग्यौ पाछै पाप[27] ॥५०४

---

१ चाणूर मल्ल । २ दुःखी । ३ अर्पण कर । ४ राजगद्दी । ५ स्थापित कर । ६ बलराम । ७ निज, अपना । ८ मुख । ९ हर्षित । १० शुभकार्य । ११ विधियुक्त । १२ व्यवहार । १३ प्रवीण । १४ आयु । १५ कर्म । १६ क्षत्रिय-धर्म । १७ दामाद का मारने वाला । १८ अक्षौहिणी । १९ बलराम । २० कृष्ण । २१ भिडकर । २२ उदास होकर । २३ बुनियाद, प्रारम्भ । २४ अत्यंत बली । २५ व्रज-भूमि । २६ द्वारिका । २७ पापी ।

पत अवधपुर सुख पाय, मुचकंद सूतौ[1] मांहि ।
जिह् किदरा[2] जोय जांन, पहुंचे सु सारंगपांन[3] ॥५०५
वंहां जाय दीयेऊ ऊडाय, तन पीत-अंबर[4] ताहि ।
हुर भये अंतरध्यांन, जहां जवन[5] पहूच्यो जांन ॥५०६
नृजनाथ[6] जांन वलिष्ट, तिह लात मारी तिष्ट ।
लख रिष्ट द्रष्ट नरिंद, वंह नष्ट भयऊ अरिंद ॥५०७
हरी काज अपनों हेर[7], वपु प्रगट ह्वै तिह वेर ।
गिरधरन देव गोविंद, कीय वर्नना[8] मुचकुंद ॥५०८
द्वारावती निभ्भ द्रंग[9], सुभ्भ वास कीय सुख संग ।
सिसपाल रुकमनी साय, वसुदेव-सुत सुन वात ॥५०९
इतनें हु अंतर आय, पातीहु रुकमनी पाय ।
जव कृस्न जहवां[10] जाय, कंन्या हरी[11] वलकाय ॥५१०
विध-जुक्त[12] कीनेऊ व्याह, दीय चेदपति[13] ऊर दाह ।
[illegible] जामवंती आंन, पुन करेऊ पीड़न-पांन[14] ॥५११
वर सत्यभामा वांम, सुभ करेऊ व्याह सकांम ।
निज मित्र-विंदा नार, व्याही सु ताहि विचार ॥५१२
लछमना भद्रा साय, परनें[15] सु तिह गुन पाय ।
[illegible] नग्नजिती अभिरांम, भज व्याह जाहि सुभांम ॥५१३
ए पटरांनी[16] अष्ट[17], थी कृष्न प्रेम सपष्ट ।
प्रद्युम्न[18] रुकमनी पुत, अवतार कांम[19] अद्भुत ॥५१४
[illegible] धर्म[20], [illegible] सौं निज धर्म ।
[illegible] पाय, [illegible] आय ॥५१५
[illegible] जाय, [illegible] नें [illegible] ।
[illegible] ॥५१६
[illegible] ॥५१७

[illegible]

ब्रृजनाथ पूछी बात, घट भई सुत कहा घात।
प्रदुमन्न हुय ऊतपंन्न[1], छित भयौ कहाँ अप्रछंन्न[2] ॥५१८
सुन अंबका निज स्राँन, सुत रावरौ सुखदाँन।
मत करहु सोच मुरार, वँह कांम कौ अवतार ॥५१९
हर संवरासुर हाथ, सो लेगयौ निज साथ।
सब रीत कुसल सुभाय, सो सुता हित सरसाय ॥५२०
मायावती पति माँन, इह कीयौ तिह अवसाँन।
सोइ अब्द सोरह संग, वँह करहि व्याह अनंग ॥५२१
पहुचाय है तुम पास, ऊर नहिन होहु ऊदास।
सुख दाय सुनीय सु बात, हीय क्रस्न कीय हरखात ॥५२२
कर इही रीत कहाय, मध-लोक गइ महमाय।
गोविंद पुलकत गात, महमाय कीय जगमात ॥५२३
नृप कहीय व्यास निदाँन, इहाँ क्रस्न भये अनजाँन।
इह ईस सुनीयत आद[3], सो बने क्यौं सविषाद ॥५२४
सो करहु मेट संदेह, गति गूढ मति के गेह।
श्री सुनीय व्यास सुजाँन[4], नृप कहीय बात निदाँन ॥५२५
ईस्वरी माया आद, जो प्रबल जाँनहु ज्याद[5]।
सोई बीच इह संसार, नही मोह करत निहार ॥५२६
इह माँनुखी[6] तन[7] आय, बढ तीन गुन[8] विलगाय[9]।
सुर आद असुराराद, सब मोह वस सविषाद ॥५२७
जुत सुधा त्रस्नाँ[10] जाँन, निद्रा सु भयहु निदाँन।
है सोक संसय[11] हर्ष, अभिमाँन मद ऊतकर्ष ॥५२८
अरु वृद्धता अज्ञाँन, इम मरनहू अनुँमाँन।
अंसुया[12] म्लाँनी और, अप्रीत प्रीत अथोर ॥५२९

---

१ उत्पन्न। २ अदृष्ट। ३ आदि। ४ चतुर, ज्ञानी। ५ अधिक। ६ मनुष्य का। ७ शरीर। ८ गुण। ९ अलग-अलग हो जाते हैं। १० तृष्णा। ११ संशय। १२ असूया, निन्दा।

ये होत ऊदय अनेक, सब जानीयै सविवेक।
अवतार राँम अनूप, भये अवधपुर के भूप ॥५३०

सीय हरन भयेऊ सुभाय, जहाँ मरन आद जटायु।
अंन्नेक[1] भये ऊतपात,[2] सब देह मानव साथ ॥५३१

सब पूच[3] और सुकर्म, परठे सु कारज पर्म।
श्रीक्रस्नहू तन साथ, हित-काँम[4] कीने हाथ ॥५३२

सो सत्यभाँमा सीख, तीय बात राखी तीख[5]।
दुश्चवन[6] सौं कर द्वेख[7], लीय पारजातहु[8] लेख ॥५३३

जीय जामवंती जाँन, सो पुत्र-हित सुखदाँन।
मन-वंचना[9] महाराज, करीयै सु पूरन काज ॥५३४

सुन चले पर्वत सीस[10], गहि ऊवर हित गवरीस[11]।
कीय मंत्र ग्रहन सकाँम, नित जपत सिव के नाम ॥५३५

करने लगे तप काय, खिर[12] पेर वनफल खाय।
इक मास बीत्यौ येम, जलपान दूसर जेम ॥५३६

तीसरे मासहू तौन, पुन करेऊ भक्षन पौंन[13]।
अगुष्ठ[14] पाव अडोल, तन रहे तार्प तोल ॥५३७

छह मास कीय सुत छाह, तप सिभु हेत अथाह।
सब संग लै सुरगीय[15], द्रुत आय दरसन[16] दीय ॥५३८

कीय ऊग्र तप तुम क्रस्न[17], पै भये हम बहु[18] प्रस्न[19]।
ज्यू मनोवंचत[20] जाँन, वँह लोजीयै वरदाँन ॥५३९

पदवंद[21] क्रस्न प्रवीन, कर जोर विनती कीन।
धुर मूल गृही धर्म, करनीय[22] कारक कर्म ॥५४०

स्त्री प्रथम जात सुभाव, चित आपने हित चाव।
ईरखा[23] सौतन[24] आद, वस रहत वाद विखाद ॥५४१

---

१ अनेक। २ उत्पात। ३ नीच। ४ हित-कार्य। ५ तीक्ष्ण, तीखी। ६ इन्द्र। ७ द्वेष। ८ कल्पवृक्ष। ९ इच्छा। १० शिखर। ११ महादेव। १२ झड़कर गिरे हुए। १३ पवन। १४ अँगूठा। १५ देवता। १६ दर्शन। १७ कृष्ण। १८ बहुत। १९ प्रसन्न। २० मनोवाञ्छित। २१ चरणों की वंदना। २२ करने-योग्य। २३ ईर्ष्या। २४ सौतों, सपत्नियों।

हम रहे व्याकुल होय, गृह-काज में चित गोय।
भय[1] रुखमनी[2] वस भाग, वह करत सुत अनुराग ॥५४२
जिह जांमवंती जोय[3], मन बिकल इंह कहि मोहि।
सुत होय मोहि सुहाय, इह करहु सीघ्र[4] ऊपाय ॥५४३
अब कीयौ तप हित आप, जज[5] आपही कौ जाप।
मन मुदत[6] होय महेस[7], बरदांन दीयेऊ बिसेस ॥५४४
निज गनहु इक इक नार, दस दस हु पुत्र दवार।
अब होयगे ऊतपात, मम वाच सुनहु महात[8] ॥५४५
सुन गवर[9] बोली संग, धर ध्यांन सिव अरधंग[10]।
परवार बाढहि पूर, जदुवंसीयनहु जरूर ॥५४६
सत वरख[11] पाछे सोय, हुय[12] स्राप विप्रन होय।
पश्चात कर कुल प्यार, नहि सोक करहु निहार ॥५४७
निज लोक जावहु नाथ, भज रूप निज जुग भ्रात।
कहि गये सिव कयलास[13], ऊर क्रस्न पुज्जीय[14] आस ॥५४८
गवने सु हरि निज गृह, लीय द्वारका वर लेह।
माया सु वस जग मोह, हित रहे पर-वस होय ॥५४९
सोइ रचत इह संसार, विसमता रहित विकार।
सोइ पूर्व जन्म प्रसंग, सुख देख देही संग ॥५५०
सब देत जीवन साथ, है निमत न्याय स्वहाथ।
जुत प्रेरना नित जीव, संसार रचत सदीव ॥५५१
ऊतपत्त पालन आद, मिल अंतलौं मरजाद।
व्रहमाद[15] देव विसेस, ऊर गनहु नहिन अंदेश[16] ॥५५२
आधीन माया येह, द्रग लखहु धारै देह।
सो नाहि गनहु सुतंत्र,[17] परीयाय[18] सौं परतंत्र ॥५५३

---

१ होकर। २ रुक्मिणी। ३ देखकर। ४ शीघ्र। ५ यज्ञ। ६ मुदित। ७ महादेव। ८ महान् बड़े। ९ गौरी, पार्वती। १० अर्धांगिनी। ११ वर्ष। १२ नष्ट। १३ कैलाश। १४ पूर्ण हुई। १५ ब्रह्मादिक। १६ शंका। १७ स्वतंत्र। १८ परम्परा।

[illegible] [illegible] [illegible] सेष, सखी-पराजित मेव।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥५५४
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] सुनाय ॥५५५
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] भाव, [illegible] [illegible] भाव ॥५५६
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥५५७

[illegible]

[illegible]